DIONYSI

HALICARNASENSIS

ANTIQVITATVM ROMANARVM

QVAE SVPERSVNT

RECENSVIT

ADOLPHVS KIESSLING

VOL. III

LIPSIAE

IN AEDIBVS B. G. TEVBNERI

MDCCCLXVII

LIPSIAE TYPIS B. G. TEVBNERI

ADNOTATIO CRITICA

LIBER VII

1, 1 *Καμερίου B Καμερίνου A Μακερίνου* Sigonius | 3 *ἀποστασίας* libri, correxit Sintenis Emend. Dionys. III p. 2 | 8 *εὐχερέστεροι* libri, *χαριέστεροι* Sintenis l. l. II p. 13 | 18 *κεκακωμένην* libri, correxit Sylburg | *πολλῆς A*.

2, 1 *πρὸς A εἰς B* | 18 *οἱ* addidi ex *B* | 23 *τοῦ* addidi ex *B* | 28 *ὡρογραφίαις A* et *Ba* ut videtur | 30 *εὑρεῖν* mauolt Sintenis l. l. III p. 3.

3, 1 *ἦν*] *ὃν* Reiske | *οὐκέτι μὴν ABb οὐκέτι Ba* | 5 *Σικελίας* libri, corr. Stephanus | 9 *τὸ* om. *B* | *κατὰ τὸ θέρος* maluerunt Sylburg et Portus | 18 *ἐν ταύτῃ τῇ πόλει A αὐτόθι B* | 23 *ταῦτα B αὐτὰ A* | 30 *ἐπεκαλεῖτο*? | *Μάλκος Ba* | 31 *κλῆσιν A* Suidas v. *Ἀριστόδημος*.

4, 2 *εἰς ὀργὴν A* Suidas *πρὸς ὀργὴν B* quod fortasse praestat | 11 *δὲ οἱ A οἱ BaC οἱ δὲ Bb τε οἱ* maluit Sylburg | 12 *ἐκεῖθεν δὲ*? *τε* abest a *AaC* | 17 *ἢ* om. *B* | 28 *γὰρ* inserui.

5, 4 *τότε* add. *B* | 15 *ἁρπασόμενοι* libri, corr. Reiske | *αυτὸς περὶ ἑαυτῷ σφαλεὶς*? cf. Thuc. I 69 | 26 *ἔφυγεν A*.

6, 3 *γὰρ* om. *B* | 5 *καταλυθέντος* coniecit Reiske | 11 *ἅπας* addidi ex *B* | 20 *Μαλακὸς* melius abesset.

7, 7 *κακὸν*] *καινὸν* mauolt Sintenis l. l. III p. 5 | 11 *ἐπὶ συμμαχίᾳ* Sylburg.

8, 1 *ἐν ταῖς ναυσὶ* libri, quod correxi | 8 *δ' ἐκ παρατάξεως ἀγῶνος A* | 18 *αὐτοῦ AB* | 27 *πᾶσι* libri.

9, 4 *αὐτοῦ B* | 25 *πονηρὰς B* | *διαλλαγὰς B* | 30 *συνελθότων B*.

10, 6 post *δρόμος* vel *ἐγένετο* vel simile verbum intercidisse suspicatur Sintenis l. l. III p. 5 | 16 *ὑφ' αὐτοῦ B* | 23 *πᾶσα* libri | 25 *ποιήσασθαι Ba* | 27 *καταστήσονται Bb*.

11, 11 *καὶ* om. *B* | 16 *ἡ μία* libri *ἦν μία* Reiske | *τε καὶ πονηροτάτων* quae a *Ba* abfuerant eicienda videntur, siquidem hoc additamento sermonis aequabilitas corrumpitur | 19 *αὐτῶν AB* | 27 *χρυσίον καὶ ἀργύριον B*.

12, 2 *καὶ* abesse malim | 3 *υποτρέφεσθαι* coniecit Stephanus | 10 *ἀπεῖναι* libri, correxit Sylburg | 26 *ἐξανθιζομένας* libri, correxit Stephanus | 28 *τε καὶ ποικίλους B* | 31 *τὰς διδασκαλίας AB*.

13, 5. *ἐκπληρώσωσιν Ba ἐκπληρώσουσιν ABb* | 15 *πάντας* libri | 18 *ἐκέλευσε?* | *διατρίβειν κατεμέλησεν* coniecit Reiske | 20 *αὐτῶν* addidit *B* | 21 *διαχρησάμενος* maluit Reiske | 29 *οἱ* addidi.

14, 3 *ἀγρίους B* | 10 *χρὴν B* | 19 *αὐτῷ B* | 21 *προαχθεὶς B* | 27 *κατασκευάσας ταῦτα A* | *ἀκριβεῖς AB* | 31 *τε* add. *B*.

15, 14 *καὶ δὴ καὶ τοῦτο* coniecit Reiske | 16 *δι' αὐτῆς B* | 17 *τοῦτο* in *τότε* mutare et in praecedens comma transferre maluit Sylburg | 18 *εὐπέτειαν*] *ἄδειαν A* | 19 *παρὰ* Sintenis l. l. III p. 10 *περὶ* libri.

16, 14 *τὰς παρακλήσεις B* articulum omisit *A* | 24 *βραχὺν χρόνον τινα B* | 26 *αὐτοὺς*] *αὖθις* maluit Reiske | 27 *ἔτι* om. *B* | 28 *τὰ μὲν* om. *B* | 30 *παρημελημένοις ABa*, quod recipiendum erat | 31 *διὰ τὴν πενίαν* Reiske.

17, 1 *ἀπορρήτων?* | 8 *φθόρος ὁ λοιμικὸς ὅσος B φθύρος ἐνέσκηψε ὅσος A* | 9 *τόπῳ ἄλλῳ AB* | 10 *οὔθ' Ἑλλάδος* om. *AB*, ex *C* ante *οὔτε βαρβάρου γῆς* inserui; cf. I 5. 24 II 19. 31. passim. | 14 *οὐέντραι AB* | 17 *τελευτῶντες οὖν* Reiske | 23 aut *οὐδὲν ᾤοντο δεῖν* aut *οὐκ ᾤοντο δεῖν* Dionysium scripsisse probabile est; *δεῖν* enim altero loco poni quaevis fere pagina docet. cf. exempli gratia IIII 10. 19. 24. 28. 54. 73. 74. 75. V 10. 17. 48. 55. | 26 *Οὐέντρας AB* | *ἀναλαμβάνειν* maluit Reiske.

18, 5 *τὸν στόλον?* | 12 *τὴν* inserui | 15 *ἡ* add. *B* | *ἐγένετο?* | 17 *ἐδόκει τῷ δήμῳ A* | *ἦν* om. *A* | 21 *πόλει πολὺς?* | 22 *ἀποίκους Bb*.

19, 1 *Οὐέντρας AB* | 7 *ἀλλ' οἱ*] *ἄλλοι B* | 11 *γινομένης B* | 13 *Σικίνιος*, quod hic et cap. 17 libri praebent, in *Ἰκίλιος* mutare voluit Sylburg | 30 *ἀποκειμένας* Sintenis l. l. III p. 11, *παρακειμένας* libri.

20, 6 *οὖς?* | 10 *εἰ μὴ βουληθεῖεν A* | 12 *ἐπὶ τούτοις διελύετο* c. Reiske | 17 *ἐν* add. *BCm* | 20 *προσηνείᾳ* maluit Reiske | 23 *κοινοῦ* libri, quod correxi | 24 *καὶ* om. *AB*, unde malim *μηδὲν* [*ἐνδιδόναι*] *μαλακίζεσθαι* | 25 *τὸν δῆμον* om. *B*; in *A* leguntur post *συμφέροντος* v. 23 unde huc transtulit Reiske | *θρασείᾳ AB* | 26 *ἀνυπολόστῳ — μανίᾳ AB*.

21, 1 *πολλῆς πάνυ?* | 19 aut *κρίνειν τε καὶ ψηφίζεσθαι* aut *κρῖναί τε καὶ ψηφίσασθαι* maluit Sylburg | 20 *συνηγωνίζετο B* apud Hudsonum *συνηγωνίζοντο* relicui | 30 *παρελθών?* | 31 *δοῦναι* Reiske Sintenis l. l. III p. 11 *δοθῆναι* libri.

22, 10 *παθόντες Bb* | 12 *ὁ* add. *Cm* | 23 *φανερὸν* Sylburg *φανερὰν* libri | *καὶ ὑμεῖς δὲ?* | 26 *γνώσεσθε δὲ B*.

23, 15 *αὐτοῖς ἔθος B* | 18 *οὐδέπω ἐδόκει AC οὔπω ποτε ἐδόκει B οὔπω ποτε εἰώθει* Sintenis l. l. I p. 21, idem postea III p. 13 proposuit *οὐπώποτε δοκεῖ*; *οὐδεπώποτε ἐκεῖ* Reiske | 24 *δυνάμεθα B* | 30 *ἐξῇ A ἐξεῖναι B*, quod correxi | 31 *μὴ* add. *BCm*.

24, 4 *ἀναδίδωσι*] *ἅμα δίδωσι* Sintenis l. l. III p. 13, quod recipere debueram | 26 *ἀνήκεστόν τι B*.

25, 6 *παιδευόμενοι τοὺς υἱούς? πολιτευόμενοι* uix sanum est | 22 *ἐπιδρομάς τε καὶ λεηλασίας B* | 25 *ἐπιλογιζομένοις* libri, corr. Reiske | 29 *ἐκ πολεμίων* sive *ἐκ τῆς πολεμίας* c. Sylburg.

26, 2 *τε* om. *B* | 17 *πόνου* addidi praeter libros; alterum quo insolita haec praepositionis *δίχα* significatio defendi posse videbatur exemplum, apud Aesch. Sept. c. Theb. 25, iam diu correctum est | 19 *καὶ οὐ μετ' οὐ πολὺ* libri *καὶ οὐ μετὰ πολὺ* Sintenis l. l. III p. 11, quem male secutus sum; *καὶ μετ' οὐ πολὺ* scribendum erat ex more Dionysi | 22 *ἀποστερεῖσθαι* libri, quod correxi, *ἀπεστερῆσθαι* maluit Sylburg.

27, 6 *χρησαμένων?* | 8 *ὅτε*] *ὅθεν?* | 12 *ἰδίᾳ ἀμείβεσθαι?* | 27 *ἅπασι*] *ἁπάσαν* mavolt Sintenis l. l. III p. 11, sed cf. VIII 20.

28, 21 *προτέρων?*

29, 20 *περιβαλλόμενος B* | 29 *ἐλευθέραν φωνὴν C* |

31 ἀνομολογήσετε *A* quod recipere debui, ἂν ὁμολογήσετε *B*.

30, 23 ἐὰν οὐκ ἄρχοντες Reiske | 24 ἀλλ' add. *B* | τοῦτο δρῶσιν?

31, 9 ἧς] καὶ *B* | 12 ἃ τέως *Cmg* ἅ τε *AB* | 28 τὰς γοῦν ἀγορὰς?

32, 6 ἄλλα τινὰ ἠδικῆσθαι *B* ἄλλα πολλὰ ἠδίκησθε *A* correxit Sylburg | 7 ἵνα δὴ καὶ γνῶμεν maluit Reiske | 23 verba οἱ μὲν ἐπὶ ταῖς περὶ τὰ συμβόλαια βλάβαις, οἱ δὲ ἐπὶ τῇ περὶ τὰς τιμὰς ἐλαττώσει addidi ex *B*.

33, 4 νῦν om. *Ba* | 5 ὃν] καὶ *B* | περιωθεῖτο *B* | 19 δημαγωγοῦντες *B*.

34, 3 τε add. *B* | 4 τὴν om. *B* | 9 καὶ σουκέλλιος *AB*, quod in καὶ Γάιος Οὐισέλλιος mutavi, idemque nomen reponere debueram VI 89 | 12 τινας libri, correxit Reiske | 19 βίων?

35, 10 τῶν μὲν ἐν τῇ βουλῇ? | 16 διαλυθείη *ABb*, διαλυθῇ *Ba* | 28 ἔσται?

36, 6 ἀποστροφὴν *ABa* quod recipere debui | 13 ἀναγκαίως *B* | 20 μαθόντες? | 24 τῇ νεωστὶ γενομένῃ βουλῇ? | 31 ἐργασάμενοι libri, quod correxi.

37, 1 τοῦ τε σίτου? | 7 οἵγε Sintenis l. l. III p. 11 εἴγε libri | 13 ἐστι] οὖσα *B* | 25 καὶ add. *B* | 26 εἴπομεν *B*.

38, 3 αὐτῶν *B* | 6 τὴν addidit Reiske | 7 καὶ] ἢ libri, correxit Sintenis l. l. III p. 11 | 9 παθόντες *A* | 11 εἰ om. *Ba* | ἐν delendum censet Reiske | μὴ cum Reiskio abesse malim | 13 τί δ' ἂν libri, quod correxi | 21 ἐγὼ δὴ?

39, 1 λέγοντες *Ba* | 6 ἐνέγκαιτε *ABa* | 8 ἀγανακτήσετε *AB*, quod correxit Sylburg sed inserere debui ἄν. | 18 καὶ συμφέροντα addidit Reiske | 23 ἐνέγκητε *AB* | 30 ἐχρησάμεθα maluerunt Sylburg et Portus | 31 ὑμᾶς] ὑμῖν Portus idque recipere debui.

40, 2 ἀναγκαζόμενοι libri, corr. Sylburg et Sintenis l. l. III p. 3 | 10 ὑμῖν *Ba* | 20 εἴτε] ἤτοι Sylburg ἢ Portus | 26 ἐπαγόμενον maluit Stephanus | 31 πολιτῶν libri, correxit Reiske.

41, 2 οἰόμενος ὁμονοῆσαι? | 3 οὐ γὰρ οἷον? | 5 κακῶς *Ba* κακὸς *ABb* | 10 δὴ Sylburg δὲ libri | χρῆν *B* | 24 ἑαυτοῦ *Bb* αὐτοῦ *A* | 32 ἄρα delere malim; σοὶ δ' ἄρ' οὐ Sylburg.

42, 3 ὑπομένει *AB* | 20 ἀπαιτῶν *Cm* ἀπαιτεῖν *AB*.

43, 1 ὑπὸ χεῖρας *ABa* | 4 ἐγίνετο *B* | μεθελκομένοις libri, correxit Sylburg | 12 ἐπιόντα ὄχλον maluit Sylburg | 13 ὀργάς? | 16 προσῆν *AB* ἦν *C* | 19 βουλεύμασι? | 23 τῇ κατηγορίᾳ τέλος ἐπήνεγκε mavolt Krüger ad Dionysi historiogr. p. 474.

44, 5 κατελύθη coniecit Portus | 10 τίμημα libri σχῆμα Sintenis l. l. III p. 20 | 24 ὄντας *B* ἅπαντας *A* | 25 δὲ *B* τε *A*.

45, 1 καθαίρουσι *B* | γὰρ addidi ex *A* | 5 ὑπατικὸν libri, correxit Sylburg | 11 τίθενται *CD* | 12 γε add. *B* | 15 ἀφαιροῦνται αὐτόν? | 17 οὐδὲν μίμημα *B* οὐδὲν νόμιμα *A* | 20 εἶναι libri, quod correxi | 22 οὐ πολὺ *A*; an μετ' οὐ πολὺ παρεσόμενον? | 26 αὐτὸν *Bb* | 29 αὐτοὶ inserui ex coniectura Reiskii.

46, 10 ἐξήνεγκον? | 12 ἀναγκαίων add. *B* | 27 τῶν *ABa* τὸν *Bb*.

47, 5 στρατείας *B* | 7 εἶπεν libri, quod correxi | 9 ἀθρόως *AB* ἀθρόους *C* | 18 γινόμενον *A* | 23 τάδε. ὑμῖν *B* | 30 προβουλεύματα libri, quod correxi | 31 δύνασθε libri, quod correxi.

48, 3 ἐψήφισεν *AB* | 4 τὰ δ' delevit Sintenis l. l. II p. 33 | 7 ἀρχαῖον καὶ καλόν? | 12 Δεκίου ubique scribendum erat ex certissima emendatione Gelenii | 17 τοῖς ὑπ' αὐτοῖς *Ba* τοὺς ὑπ' αὐτοῖς *Bb* | 19 συναγορεύουσιν libri, correxit Reiske | 22 φέρειν δὲ libri, quod correxi | 25 σ. δ. τῶν δημάρχων, ὦ. ἤ. οἱ ὕπατοι maluit Sylburg | 31 ὁ λεύκιος *B* λεύκιος *A* Δέκιος Gelenius.

49, 1 ὑμᾶς *B* | 2 ἃς οἰόμεθα libri ἐσόμεθα Reiske | 3 καὶ add. *BCm* | 4 βουλεύματος? | 6 αἰτεῖν] ἔτι *B* | 8 μὴ ὡς maluit Reiske | 9 αἴσχιστα *A* | 14 τηλικούτων καὶ τοσούτων scripsi coll. VI 79; τηλικούτων καὶ libri | 21 ἀπηλλάξατε *ABa* ἀπηλάσατε *BbC* | 25 δὴ pro δ' ἦν *Ba* | 27 χρησαμένου *AB* | 29 τῶν δήμων *ABa* | 31 ἀπώσασθε libri, quod correxi.

50, 1 ἅπαντας libri, correxit Sintenis l. l. II p. 36 | 5 προβουλεῦσαι? | 9 οἷς quod in libris ante περὶ legitur huc transposuit Sylburg | 12 παρακιν-

31 *ἀνομολογήσετε A* quod recipere debui, *ἂν ὁμολογήσετε B.*

30, 23 *ἐὰν οὐκ ἄρχοντες* Reiske | 24 *ἀλλ'* add. *B* | *τοῦτο δρῶσιν?*

31, 9 *ἧς*] *καὶ B* | 12 *ἃ τέως Cmg ἅ τε AB* | 28 *τὰς γοῦν ἀγορὰς?*

32, 6 *ἄλλα τινὰ ἠδικῆσθαι B ἄλλα πολλὰ ἠδίκησθε A* correxit Sylburg | 7 *ἵνα δὴ καὶ γνῶμεν* maluit Reiske | 23 verba *οἱ μὲν ἐπὶ ταῖς περὶ τὰ συμβόλαια βλάβαις, οἱ δὲ ἐπὶ τῇ περὶ τὰς τιμὰς ἐλαττώσει* addidi ex *B.*

33, 4 *οὖν* om. *Ba* | 5 *ὃν*] *καὶ B* | *περιωθεῖτο B* | 19 *δημαγωγοῦντες B.*

34, 3 *τε* add. *B* | 4 *τὴν* om. *B* | 9 *καὶ σουκέλλιος AB*, quod in *καὶ Γάιος Οὐισέλλιος* mutavi, idemque nomen reponere debueram VI 89 | 12 *τινας* libri, correxit Reiske | 19 *βίων?*

35, 10 *τῶν μὲν ἐν τῇ βουλῇ?* | 16 *διαλυθείη ABb*, *διαλυθῇ Ba* | 28 *ἔσται?*

36, 6 *ἀποστροφὴν ABa* quod recipere debui | 13 *ἀναγκαίως B* | 20 *μαθόντες?* | 24 *τῇ νεωστὶ γενομένῃ βουλῇ?* | 31 *ἐργασάμενοι* libri, quod correxi.

37, 1 *τοῦ τε σίτου?* | 7 *οἵγε* Sintenis l. l. III p. 11 *εἴγε* libri | 13 *ἐστι*] *οὖσα B* | 25 *καὶ* add. *B* | 26 *εἴπομεν B.*

38, 3 *αὐτῶν B* | 6 *τὴν* addidit Reiske | 7 *καὶ*] *ἢ* libri, correxit Sintenis l. l. III p. 11 | 9 *παθόντες A* | 11 *εἰ* om. *Ba* | *ἐν* delendum censet Reiske | *μὴ* cum Reiskio abesse malim | 13 *τί δ' ἂν* libri, quod correxi | 21 *ἐγὼ δή?*

39, 1 *λέγοντες Ba* | 6 *ἐνέγκαιτε ABa* | 8 *ἀγανακτήσετε AB*, quod correxit Sylburg sed inserere debui *ἄν.* | 18 *καὶ συμφέροντα* addidit Reiske | 23 *ἐνέγκητε AB* | 30 *ἐχρησάμεθα* maluerunt Sylburg et Portus | 31 *ὑμᾶς*] *ὑμῖν* Portus idque recipere debui.

40, 2 *ἀναγκαζόμενοι* libri, corr. Sylburg et Sintenis l. l. III p. 3 | 10 *ὑμῖν Ba* | 20 *εἴτε*] *ἤτοι* Sylburg *ἢ* Portus | 26 *ἐπαγόμενον* maluit Stephanus | 31 *πολιτῶν* libri, correxit Reiske.

41, 2 *οἰόμενος ὁμονοῆσαι?* | 3 *οὐ γὰρ οἷον?* | 5 *κακῶς Ba κακὸς ABb* | 10 *δὴ* Sylburg *δὲ* libri | *χρῆν B* | 24 *ἑαυτοῦ Bb αὐτοῦ A* | 32 *ἄρα* delere malim; *σοὶ δ' ἄρ' οὐ* Sylburg.

42, 3 ὑπομένει *AB* | 20 ἀπαιτῶν *Cm* ἀπαιτεῖν *AB*.

43, 1 ὑπὸ χεῖρας *ABa* | 4 ἐγίνετο *B* | μεθελκομένοις libri, correxit Sylburg | 12 ἐπιόντα ὄχλον maluit Sylburg | 13 ὀργάς? | 16 προσῆν *AB* ἦν *C* | 19 βουλεύμασι? | 23 τῇ κατηγορίᾳ τέλος ἐπήνεγκε mavolt Krüger ad Dionysi historiogr. p. 474.

44, 5 κατελύθη coniecit Portus | 10 τίμημα libri σχῆμα Sintenis l. l. III p. 20 | 24 ὄντας *B* ἅπαντας *A* | 25 δὲ *B* τε *A*.

45, 1 καθαίρουσι *B* | γὰρ addidi ex *A* | 5 ὑπατικὸν libri, correxit Sylburg | 11 τίθενται *CD* | 12 γε add. *B* | 15 ἀφαιροῦνται αὐτὸν? | 17 οὐδὲν μίμημα *B* οὐδὲν νόμιμα *A* | 20 εἶναι libri, quod correxi | 22 οὐ πολὺ *A*; an μετ' οὐ πολὺ παρεσόμενον? | 26 αὐτὸν *Bb* | 29 αὐτοὶ inserui ex coniectura Reiskii.

46, 10 ἐξήνεγκον? | 12 ἀναγκαίων add. *B* | 27 τῶν *ABa* τὸν *Bb*.

47, 5 στρατείας *B* | 7 εἶπεν libri, quod correxi | 9 ἀθρόως *AB* ἀθρόους *C* | 18 γινόμενον *A* | 23 τάδε. ὑμῖν *B* | 30 προβουλεύματα libri, quod correxi | 31 δύνασθε libri, quod correxi.

48, 3 ἐψήφισεν *AB* | 4 τὰ δ' delevit Sintenis l. l. II p. 33 | 7 ἀρχαῖον καὶ καλὸν? | 12 Δεκίου ubique scribendum erat ex certissima emendatione Gelenii | 17 τοῖς ὑπ' αὐτοῖς *Ba* τοὺς ὑπ' αὐτοῖς *Bb* | 19 συναγορεύουσιν libri, correxit Reiske | 22 φέρειν δὲ libri, quod correxi | 25 σ. δ. τῶν δημάρχων, ὦ. ἠ. οἱ ὕπατοι maluit Sylburg | 31 ὁ λεύκιος *B* λεύκιος *A* Δέκιος Gelenius.

49, 1 ὑμᾶς *B* | 2 ἃς οἰόμεθα libri ἐσόμεθα Reiske | 3 καὶ add. *BCm* | 4 βουλεύματος? | 6 αἰτεῖν] ἔτι *B* | 8 μὴ ὡς maluit Reiske | 9 αἴσχιστα *A* | 14 τηλικούτων καὶ τοσούτων scripsi coll. VI 79; τηλικούτων καὶ libri | 21 ἀπηλλάξατε *ABa* ἀπηλάσατε *BbC* | 25 δὴ pro δ' ἦν *Ba* | 27 χρησαμένου *AB* | 29 τῶν δήμων *ABa* | 31 ἀπώσασθε libri, quod correxi.

50, 1 ἅπαντας libri, correxit Sintenis l. l. II p. 36 | 5 προβουλεῦσαι? | 9 οἷς quod in libris ante περὶ legitur huc transposuit Sylburg | 12 παρακιν-

δυνεύοντες Portus | 13 ὑφ' ἡμῖν *AB*, correxi ex *C* | 14 γράφω *B* | 15 τῷδε libri, correxit Sintenis l. l. II p. 36 | μή libri, correxit Sintenis l. l. II p. 36 | 16 γε ουν *B* γε *A* | οἱ delevi cum *B* | 17 καὶ om. *B* | 18 πολεμίων? | 19 τῷ libri του Reiske | 22 τῶν μνημειων *Ba* | 24 κωλύητε *Bb* | 25 ὑφιστάντες libri, correxit Reiske | 27 ὑμῶν libri, correxit Sintens l. l. II p. 36i | 29 κοινὰ πᾶσι τοῖς ἅμα πολιτευομένοις? | 32 εἰρῆσθαι *B*.

51, 8 τίς libri τίς δ' scripsi auctore Sylburg τίς οὖν Reiske | 13 ἀφέλεσθε *B* ἀφέλησθε *A* correxit Sylburg | 20 ἄχθωνται *AbB* | τοῖς om. *B* | 21 κωλύωσιν *B* | 22 ἐλαχίστους libri, correxit Reiske | 23 ἃ libri ἣν Reiske | 26 ὑμῖν *B* | 27 ἐνθυμουμένοις *B* | 28 πολλὰ γὰρ παρὰ *Ba* | 32 μισοδημόταις libri, correxit Sintenis l. l. II p. 36.

52, 4 προειδόμενοι *ABb* προιδόμενοι *Ba*; an προελόμενοι? cf. de Thucyd. 14, 6 | 7 εἴτε libri εἰ δὲ Reiske | 8—10 verba εἴτε κατὰ λογισμὸν γέγονε ταῦτα ὀρθὸν καὶ τὸ συμφέρον σκοποῦντα τῆς πόλεως om. *ABC* | 11 συγχωρήσειν *AB*, correxit Sylburg | 12 συγχωρήσαντες *ABa* | 14 lacunas indicavi auctore Sintenisio l. l. III p. 9 | 18 ἐγγόνοις *ABa* | ἐκγόνοις *Bb* | 20 ἃ καὶ *BbC* om. *ABa* | ἡμᾶς *B* | 21 ὡς προιδότας *B* ὥσπερ εἰδότας Sintenis l. l. III p. 9. ego delere malim verba ὡς πρὸς εἰδότας ἅπαντας ex versu 28 male repetita | 30 ὑμῶν *B* | ἐνθάδε καθ' ἡμῶν maluit Reiske.

53, 1 τοῖον *B* | ημῖν *B* | 18 ἡμῖν libri, correxit Reiske | 22 ὡς libri ἐν ᾧ Reiske | 23 ἀχρηστίας *AB*, sed cf. VII 24 | 24 ὥστε om. *B* | αὐτῷ *AB* αὐτὸ *Cmg* | 25 ἐπιτρέψαι *AB*, correxit Sintenis l. l. I p. 10 et *Cmg* | 26 ἀνθέξειν ἡμᾶς ἔτι? | 29 τῇ πόλει *B* | ἐκλιπόντας *Bb* | 30 λιμῷ addidi coll. VI 86 | 32 ἡμᾶς *B*.

54, 1 δι' ὧν maluit Reiske | τὰς τῆς βουλῆς *A* τῇ βουλῇ *B* | 8 οὐδὲ om. libri, addidit Reiske | 9 τοῦ πατρικίου *ABa* | 16 ὑμῖν *A*· quod recipiendum erat | 19 διαστήσειν libri, correxit Sylburg | 20 ἐπεβάλλετο *ABa* | 21 περὶ ἑαυτὸν coniecit Sylburg | 26 ἐπὶ τούτῳ maluit Sylburg, sed cf. Lobeck ad Phrynichum p. 275 | 27 ἐπιχλεύασμα *B* | 28 ἔργων *Bb* | 29 πῶς γὰρ ἂν?

55, 4 ἄρα libri ἄρ' οὐκ Sylburg | 7 προσκαλούμενοι

maluit Grimm | 8 *βουλομένοις*? | 9 *ὦ* om. *B* | 12 *εἴτε* delevi, *εἰ ABa* | 13 *συνήνεγκαν ἂν AB συνήνεγκεν* Sylburg | 15 *εἴτε οὐχ ὡς* libri, correxit Sylburg | 17 *ὅτι μή ποτε AB* | 18 *ἔχης B* | 20 *δημοτικὸν A δημοτικώτατον B* quod correxi | 28 *αὐτὸς B νῦν A* | 30 *διεξελθεῖν*?

56, 5 *σιτοδασίαν* maluit Reiske | 15 *δεῖσθαί γε* libri, correxit Reiske | 16 *ἅπαντες* libri | 24 *αὐτὸν AB* | 25 *ὧν ἐχρῆν B* | *ἀναδέχεσθαι — ἐψηφίσασθε* maluit Gelenius.

57, 8 *τούτων AB* | *περιψύχοντες καὶ περικροτοῦντες* Reiske | 9 *ἡμῶν AB* | *αὐτὸν ABa* | 12 *ὡς και ABb καὶ Ba*; *ἢ καὶ* Stephanus | 13 *φύσει* non intellego; an *σφίσι*? | 14 *καὶ μὴ τὸ AB*; an *ἢ μὴν τὸ*? | 17 *καὶ χρόνον* libri, correxit Sylburg | 26 *οἱ πρεσβύτατοι καὶ ἐντιμότατοι τῶν ὑπ.* maluit Gelenius | 32 *ἐπεκύρουν* libri, correxit Reiske.

58, 2 *παροῦσι* libri, corr. Sintenis l. l. III p. 12 | 10 *τῆς γνώμης*? | 12 *ἡμῖν A* | 14 *ἂν* om. *B* | *προσετέθη B* | 16 *ὑμᾶς τε* libri, corr. Casaubonus | 21 *ὡς οὐκ ᾤμην ABb ὡς οἰόμην Ba* | 23 *ἡμῖν* libri, corr. Portus | *ἡμᾶς B* | 25 *προελθόντα* libri, correxit Reiske | 28 *πειρασόμεθα* libri, quod correxi | 31 *ἐνθυμούμενος ABb* | *εἶχε AB*.

59, 1 *λογιζόμενος ABb λογιζομένοις Ba* ut videtur | 8 *ἀφέλξει* maluit Reiske | 10 *οὖν* addidit Reiske | 17 *οὗτος Ba ὡς οὕτως Bb* | 18 *ἡμῖν B* quod correxi; om. relicui libri | 20 *συμβεβηκόσι B* | 21 *καὶ ἐψηφίσασθε* libri, correxit Sintenis l. l. III p. 12 | 24 *πάντας γε B πάντες γε A* quod recipere debueram | 25 *παρακρουσθέντας AB* | *ἀκυρῶσαι Ba ἐπικυρῶσαι ABb* | 28 *δεδεημένος* maluit Reiske.

60, 7 *παραγενόμενον C* | 12 *προβέβηκε λέγοντος* libri, correxit Sylburg | 13 *ὑμῖν A* | 17 an *ἡμῖν ἔτι μᾶλλον ἐνέκειτο καὶ ἱερὰν*? | 21 *τιμίων B* | 22 *προγόνων* libri, correxit Sylburg | 23 *ἡμῖν B*.

61, 2 *ωσπερ ἐχρῆν* Sintenis l. l. III p. 22 *ὥσπερ ἔφην* libri | 6 *ἃ*? | 10 *φιλοπόλεμον* libri, corr. Sylburg | 17 *πάντες*? | 18 *οἱ* om. *AB* | 20 *ἔσχετε* coniecit Sylburg | 22 *οὐκ ἂν*? | 23 verba corrupta sic restitui posse coniecit Sintenis l. l. III p. 21 ut scribatur *ἀλλὰ τὰς ψυχὰς ἂν πρότερον προέμενοι ἢ ταῦτα, ἀνῄρησθε ἄν, οἱ μὲν* etqs.

62, 7 *ἔπαθε ἀγαθῶν πολλῶν*? | 9 *παρ' ὑμῶν* maluit Sylburg | 10 *κἀκεῖνο Bb* | *μετὰ τούτων B* | 18 *αὐτὸς* om.

B; malim ὁ αὐτὸς coll. VII 36 | 21 ἀντέστητε *A* | 23 ὅταν *AB*, correxit Sylburg | 25 ἧς om. *B* | ὑφεῖται *A* ὑφ' ἧ τε *B* | 30 ἡμῖν *B*.

63, 8 ἔξω τούτων Grimm | 10 προτρέπειν libri ἐπιτρέπειν Camerarius | 11 ἀντιπράττειν cum Reiskio scribendum ex more Dionysi | 12 ἁμάρτοι libri, correxit Sylburg | 23 οὖν delet Sintenis l. l. III p. 12 | 24 ᾧ scripsi ὃν libri | ἐκρατύνετο *C* quod praestat | 28 αὐτός γε libri, correxit Reiske | 29 τοῦτο *B* | 31 ἐννεακαιδεκαέτης *ABb*.

64, 1 οὐδὲ *B* | 12 ἐπὶ τῷ νόμῳ maluit Reiske; an ἐν τῷ δήμῳ? | δεδοκιμασμένην libri, correxit Reiske | 6 ἡμᾶς *ABa* | 11 κωλύσεως τῶν ἀδικούντων maluit Sylburg | 17 ἀξιώσει ἔτι *A*; an ἀξιώσειεν ἔτι? | 18 δίκαιον δὴ libri, quod correxi | 19 ἡμᾶς libri, quod correxi | 20 ἅς γε libri, correxit Reiske | 23 δίκην libri, quod correxi | 27 ἢ om. *Ba* | 31 ἂν addidit Reiske | 32 αὐτῷ *AB* | πρὸς ἀνδρὸς libri, correxit Reiske.

65, 1 γένωνται *B* | 6 ἀξιῶ libri ἄξιον Reiske | ὑμᾶς post βουλῆς add. *AC* | σκοπεῖν libri ὑποτοπεῖν Casaubonus | 23 πολιτεύσονται *AB* | 30 αὐτοῖς *B*.

66, 10 περὶ θεῶν maluit Sylburg | 11 τί ἂν ἄλλο maluit Reiske | 19 πολέμων οὐδὲ libri, correxit Sintenis l. l. II p. 35 | 20 οἷς *ABa* | 22 ἐπαναταθείσας Sylburg | 24 δὴ περιδράσετε *Ba*; malim εἴπερ δή.

67, 1 μὴ περιέχεσθαι *ABb*, μὴ om. *Ba* | 5 ἡμῖν *AB* | 7 εἴη Casaubonus ἢ libri | 17 πολέμου προφάσεις *A* πολέμους προφάσεις *B*, correxit Reiske | 26 οἰομένων δεῖν coniecit Casaubonus | 27 γενήσοιτο? | 30 τὴν αὐτὴν χάριν libri, correxit Sintenis l. l. I p. 29.

68, 2 μηδὲν διαγνῶναι maluit Sylburg | 5 οὐ μικρὰ.... εἰς σωτηρίας ῥοπὴν libri, quod correxi | 10 προτέραν libri, correxit Sylburg | 12 χρηστὸν delevi | 14 πάσχειν? | 29 ἀπολυσόμενον maluit Reiske.

69, 11 τὸ λοιπὸν add. *B* | ἐξύφαινε maluit Sylburg | τὸν λόγον *Ba* | 16 προσλαβοῦσαν maluit Reiske | 17 τῆς δόξης scripsi, δόξης libri | 18 τὰ add. Reiske | 20 μηδὲ τὴν ἰσχὺν? | 21 πάντων Sylburg, τούτων libri, | 24 ἄκρατον μήτε μοναρχίαν μήτε ὀλιγαρχίαν? cf. II 3 | 27 ἀποτρέπει *B* | 29 γενόμενον Stephanus | 32 ἔθεσι?

70, 1 *μὲν οὖν μὴ AB*, quod correxi; *μὲν οὖν ὡμὴ (D)* | 12 *τε* add. *B* | 15 *ἀποδείκνυνται* libri, correxit Reiske; an *ὥεσθε δεῖν ἀποδεικνύναι*? | 17 *ἥ δη βουλὴ A ἤδη ἡ βουλὴ B*, correxit Reiske | 31 *ὑμῖν* add. *B* | *ἐνθάδε* libri, correxit Sylburg.

71, 1 *συννοεῖν* libri, correxit Reiske | 6 *καὶ κἂν B κἂν A* | 7 *δὲ δὴ Bb δὲ δὲ Ba δὲ A* quod praestat | 12 *ἀνὴρ φρονήσει B* | 24 *ἀποδείκνυτε AB*, correxit Portus | 25 *ἡγησαμένας B* | 32 *σκευαζόμενος* libri, quod correxit Reiske.

72, 2 *κακῶν B* | 22 *ἐφ' οὗ* libri, correxit Sylburg | *μου*] *με Ba* | 30 *ᾐτήσαντο Bb, ᾐτιάσαντο Ba* ut videtur.

73, 6 *ἐπίδικον*] *ἐπὶ δίκην*? | 18 *ἀγορῶν ABa* | 23 *ὀκτὼ ἡμέρας* maluit Casaubonus | 27 *διεξελθόντες*?

74, 4 *ὡς*] *ὁ* maluit Sylburg | 11 *ἐν αἷς* libri, correxit Hudson | 12 *κατ' αὐτὰς* libri, correxit Sylburg | 14 *δὲ ἐναντιουμένων* libri *διεναντιουμένων* Sintenis l. l. III p. 13 | 18 *ὁ* om. *B* | *ἐπιτρέψει B* | 25 *ἅμα* addidi; *οὐχ ἅμα πάντες ἀναλ.* mavolt Sintenis l. l. III p. 13.

75, 3 *μαχομένων* delendum censuit Reiske; *ἐν ταῖς μάχαις* contra spuria esse iudicavit Grimm | 6 *λόχοι* Portus *φυλαὶ* libri | 11 *ἐλάττονα* seiunxit Hudson | 17 *σαλπικτῶν Ba*, correxit *Bb* | 23 *ἔσχατον AB* | 24 *στρατιῶται* libri *στρατειῶν τε* Sylburg et Portus | 30 *φρονήσειαν*?

76, 1 *μὴ τοῦτο*] *μετὰ τοῦτο B μετὰ τούτων A*, correxit Hudson | 9 *πέρας* libri, quod correxi coll. IIII 20 *τοῦτο δὲ ἦν σπάνιον καὶ οὐ μακρὰν ἀπέχον ἀ δ υ ν ά τ ο υ* | 15 *ἀπὸ τῆς πρώτης κλήσεως* libri, quod correxi | 19 *ᾤοντο δεῖν συνάγειν A*, quem verborum ordinem recipere debui | 21 *φυλετικοὶ* libri *ψιλοὶ* Sylburg | 24 *ψήφων* quod om. *B* delevi | 27 *αὐτοὶ* libri, quod correxi | 32 *λέγεσθαι*] *γενέσθαι*?

77, 5 *ἀνταποδοθῆναι*? | 7 *χρείαν* libri *χάριν* Sintenis l. l. I p. 27 | 15 *προορᾶν*? cf. VIIII 53 | 19 *δικαίως Ba δικαιώσωσιν ABb*; an *ὥστε οὐκ ἂν δικαίως — ἀπιστεῖν*? | 23 *δι' αὐτὸν B*.

78, 6 *ἀδίκημ' ἀνδρὸς*? | 7 *καὶ τὰ παραπλήσια*? | 29 *Σικίνιος B*.

79, 23 *τὸ* delevit Reiske | 27 *τις* om. *B*.

80, 1 τὴν om. *Ba* | 7 ἢ delevi cum *B* | 16 οὐδ' *AB* οὐχ scripsi | 25 ἀπεμπολᾷ? 29 οὗτος μὲν οὖν ὁ Μάρκιος? | 30 πρῶτος καὶ addidi ex *B*.

81, 3 περιβαλλομένων *B* | ταῦθ' ὑπέδειξεν *Bb* | 9 ἐκ add. *B* | 32 γινομένη *B*.

82, 8 αὐτὴ καθ' ἑαυτήν? | 11 ἄξειν libri ἐξάγειν scripsi | 27 ὄχλῳ libri, quod correxi | 32 ὁ om. *B*.

83, 1 ἐπιφανείσης σφίσι malim cum Reiskio | 6 τιμήσαντες *B* correxit Reiske; θανάτῳ αὐτὸν τιμήσαντες *A* | 8 de tribuum numero falso a Dionysio relato cf. Mommsen de Tribubus p. 9 et Schwegler Hist. rom. II p. 352 | 13 πρόσκλησις Reiske | 14 καὶ add. *B* | 17 ὑπὸ τοῦ δήμου libri, quod correxi | 22 μεταλαμβάνειν? | 26 λέγω δὲ addidi ex *B* | 28 ἐγίνετο τότε κύριος?

84, 11 οἱ add. *B* | 14 ἐμὲ delevi cum *B* | 24 προιὼν libri, quod correxi | 25 ἀλλοτρίας *B*.

85, 3 ὑπὲρ αὐτῆς maluit Sylburg | 10 εἶναι λόγος *B* | 11 εἰ] οὐ *ABb*; οὐ *Ba* ut videtur, quod stare possit si λογιζόμενος reposueris | 15 μᾶλλον δὲ διὰ τοῦτο *A* | 17 μεθηρμόσαντο maluit Reiske | 31 comma, quo volgo post ἄξιον distinguitur oratio, delendum est | 32 πολλὰ add. *B*.

86, 3 ἐργασαμένοις *B* | 9 καὶ ante δικαίων addidi; in *B* post δικαίων tres litterae erasae sunt | 18 προειληφὼς *B* | 28 καὶ τὴν καρτερίαν? cf. Suidam s. v. Μάρκιος.

87, 1 γὰρ add. *B*; οὐδὲ πρὸς Suidas l. l. | 4 παραθέμενος libri, correxit Reiske | 7 οὔτε διοικησάμενος addidit Sintenis l. l. I p. 24 | 18 καὶ βοσκημάτων Sintenis l. l. III p. 11 ἢ β. libri | 29 ἀλλὰ ταῦτα πάντα *Bb* ἀλλὰ..... ταῦτα καὶ τἆλλα πάντα *Ba*; quinque litterae post ἀλλὰ a *Bb* erasae legi nequeunt. | 32 Λατῖνος libri, quod correxi.

88, 6 Λατίνιε scribere debueram | 16 καὶ δεύτερον τὸ ὄναρ coniecit Sintenis l. l. III p. 16 | 18 ἔχειν delevi cum Reiskio | 19 ἐκφέρειν libri, correxit Reiz ad Lucian. rhet. praec. 24 | 22 νέον ὄντα maluit Reiske | 23 ἀναρπασθέντα? | 25 καὶ om. *B* | 31 προθεῖναι?

89, 1 καταστάσεως libri, correxit Sylburg | 4 ἧκεν *Bb* ἥκειν *Ba* | 11 πρὸ delevi secundum *CD* | 12 ἡγούμενος

scripsi, ἀγόμενος *B* προαγόμενος *A* προηγούμενος maluit Sylburg | 25 ἐν abesse malim | 28 ἐποιεῖτο *A* ἐκινεῖτο *B* idemque legerat Plutarchus Coriol. 24.

90, 4 συνοικήσαντα *Bb* | 16 δεῖν αὐταῖς? | 20 πατρίου σεβασμοῦ *B*.

91, 4 πρῶτα ἱερὰ libri, correxi auctore Reiskio | 6 πᾶσιν *B* | 13 ἐπὶ τῇ πόλει libri, quod correxi | 14 ἀπολαβεῖν coniecit Sintenis l. l. III p. 10; ego ὑπολαβεῖν prorsus abesse malim | 16 εἴτε delerunt Portus Reiske, εἴτε κατ' ἄλλην εἴτε κατ' ἐκείνην mavolt Sintenis l. l. III p. 10 | 23 ἀνὴρ scripsi, ὁ ἀνὴρ *A* ἀνὴρ *B*.

92, 5 πανηγυριασμοὺς *B* | 11 ἐξουσίαν] οὐσίαν mavolt Mommsen de tribubus p. 66 | 14 οἱ πρόσηβοι *B* πρόσηβοι relicui | 18 κατ' ἴλας τε καὶ λόχους? | 19 ὡς add. *Bb*, om. *Ba* | 22 τοὺς ἀζεύκτους ἵππους libri, quod correxi | 25 τὰ δὲ Reiske | 29 ἀποδῦναι *Ba* | ὅλον τὸ σῶμα maluit Reiske.

93, 1 ἀναφαίνειν *A* | 6 μέσον *AB* | 21 διαφυλάττοντες Sintenis l. l. I p. 17 οἱ φυλάττοντες libri | 25 πολλοὶ inserui ex *B* | 28 τε addidit *B* | 30 καὶ abesse malim.

94, 3 περιηρτημένα libri, correxit Reiske | 6 χωρίον *AB* correxit Sylburg | 7 ἀνεδίδου libri, correxit Sylburg | 8 an σχήματα· ὁ μὲν πρῶτος εἰδοφορῶν? | 9 προκελεύσμασιν *AB* | 13 τοῖς addid. *BC* | 17 ἐνρύθμῳ scripsi ἐν ῥυθμῷ *B* ῥυθμῷ *Aa* τε ῥυθμῷ *Ab* καὶ ῥυθμῷ vulgo | 23 καθίστη *AB*, correxit Sylburg | 25 καὶ delere maluit maluit Sylburg | 30 ἐν addidit Reiske.

95, 3 ἤσκησε *AB* | 13 προκατορχουμένους *B* | εἰσάγων Sylburg ἄγων *AB* | 17 μέσους *AB*.

96, 4 στρατηλάτας *B* | 5 τοῖς delevit Hudson | 6 παρορχουμένοις libri, correxit Sylburg | 9 σατυριστάς libri, correxit Sylburg | 20 ὅλην τὴν ὁδὸν? | 24 ἔχουσαι? | 27 παραδέδονται?

97, 2 ἀφ' ὧν *AB* | 3 Φερσεφόνης *AB* | 8 Ἑλένης vix sanum; an Σειληνοῦ? | 9 οἰκήσαντες *B* | 11 πάντας libri | 15 οὐχ ὡς ὑγιῆ *B* | 17 ὁ add. *B* | 20 δήμητρος libri, correxit Meineke | 22 ὁ μὲν — ἔπαιεν? | 28 ἐπιθέντες?

98, 3 προὐβάλοντο *B*; ceterum versus ex Il. α 449 et

458 conflatus est | 18 δ' omisit *B* | 28 βαρβάρους καὶ τινὰς libri, quod correxi | 30 ἔτι scripsi ἔστι libri.

99, 1 ὥσπερ libri ὡς παρ' Sylburg | 2 lacunam statuit Reiske et totum locum sic restituit: Ὀλυμπιᾶσί τε καὶ Πυθιᾶσι ἐποίουν καὶ μέχρι τοῦ νῦν παρόντος ἔτι ποιοῦσιν | 5 διατελεῖ? | 7 ὃν addidi | 12 τε add. *B* | μὴ add. Valesius | 13 ἕτερόν τε Reiske | 16 αἱ om. *B* | ἵππων Gelenius | 18 καλοῦσιν add. *B* | 27 τινὰς οἷς ἐτίμων libri, correxit Reiske.

100, 7 ἄρχοντα?

LIBER VIII

101, 8 ἐπὶ scripsi ἐκ libri | 12 ἐλασθείς *Ba* | τ' addidi ex *A*, om. *B* | 18 γοῦν libri, correxit Sintenis l. l. III p. 12.

102, 7 ἀντίον *B* | 24 ἐρριμμένος libri, quod correxi.

103, 4 αὐτὸν *B* | 5 post καὶ aliquod vocabulum, ut εὐεργεσίαν vel tale quid intercidisse videtur | 13 ἀπειροπολέμους scripsi ἀπολέμους libri | 16 πράξεσι δικαίαις maluit Reiske | 26 ταῖς addidi | 31 ἀπάτης?

104, 2 ἐπὶ μέσον libri, correxit Reiske | 13 ὡς om. *B* | 19 ἀρχῆς libri ἑορτῆς Sylburg | 23 κατασκηνοῦν *B*.

105, 1 αὐτὸς delevi cum *A* τε τῆς αὐτὸς αὐτοῦ *B* | 3 ἐκφέρει malim cum Reiskio | 11 προσελθεῖν libri quod correxi, συνελθεῖν Sintenis l. l. III p. 22 | 13 ἅπασιν libri | 19 ἀπεῖναι libri, correxit Sylburg.

106, 11 πάντας libri | ἰέναι libri, correxit Reiske | 16 καλλίστη κεῖσθαι συνόδῳ *Ba* ἐν καλλίστῃ κεῖσθαι συνόδῳ *ABb* quod correxi; ἐν καλλίστῳ κ. συνόδου maluerunt Reiske et Lobeck ad Phryn. p. 280 | 20 παρὰ τὰς σπονδὰς *AB*.

107, 1 πάντας *B* | 4 ἤθεσιν] πλήθεσιν? cf. VII 35 | 11 προσῆκε *B* | 17 μικτὸν add. *B* | 31 πρεσβυτάτων libri, correxit Reiske.

108, 4 βουλόμενοι add. *B* | 5 ἔχειν delevi cum *B* | 17 προσεκαλέσαντο maluit Reiske | 21 ἐκ τῆς πόλεως ὁ τύραννος ἀναιρεῖ *B* τῆς πόλεως ἀναιρεῖ *A*.

109, 13 ὑμῖν Reiske τὴν libri | 16 πρότερόν γε etsi

dubitanter scripsi, *ποτε ὄντες* libri; *ποτε ἐχθροὶ ὄντες* Reiske | 23 *παρ' ὑμῶν A* | 24 *εἰ* addidi ex *B* | 32 *ὡς* om. *AB*.

110, 3 *πολεμίων* maluit Sylburg | 6 *ἀποδείξωσι Bb* | 7 *ἔχουσι*] *ἀποδείξουσι B*, de *A* non mihi constat | 11 *περὶ τοῦ πολέμου?* | 23 *ἔχουσι* addidit Sintenis l. l. III p. 6.

111, 6 *ἂν ὁμολογήσουσιν* libri, correxit Stephanus | 11 *'Αλβανοὶ* Dionysium scripsisse vix crediderim, itaque aut *Λατῖνοι* aut *Σαβῖνοι* legendum videtur | 14 *πρότερον* libri, correxit Reiske. | 17 *ἀπολήψεσθαι Ba οὐκ ἀπολήψεσθε Bb* | 25 *ἕκαστα A* | 26 post *ἐπιτρέψατε* nonnulla velut *περὶ δ' ἐμοῦ ἀξιῶ ὑμᾶς ὡς περὶ φίλου βεβαίου* intercidisse suspicatus est Reiske | 30 *καταχρῆσθαι AB*.

112, 6 *ἐπεσήμηναν* libri, correxit Reiske | *ὑποτιθεμένῳ Ba* | *ὑποτιθεμένου ABb* | 7 *προθέντες Ba προσθέντες ABb* | *ἔτι κυροῦσι* mavolt Sintenis l. l. III p. 3 | 11 *τε* add. *B* | 17 *ἐπεῤῥώσθησαν?* | 18 *ῥωμαίων B*.

113, 7 *τε* add. *B* | 9 *οὐκ ἀδικεῖσθε* Sintenis l. l. III p. 14; ego transposito *νῦν* vocabulo malim *εἰ — δόντες —ἔπειτα μεταδόξαν ὑμῖν ἀπαιτεῖτε, ἀδικεῖσθε μὴ κομιζόμενοι· νῦν δὲ πολέμῳ ἀφαιρεθέντες — ἀδικεῖτε* eqs. | 14 *αὐτῶν Bb* | 15 *ἅπαντας δὲ* Reiske | 17 *ἔτι ABb ὅτι Ba* | 18 *δορικτήτων A* | 22 *ἄρχητε* maluit Reiske.

114, 4 *τὰ* add. *B* | 27 *χώρα* Sintenis l. l. III p. 15 *χωρία B τα χωρία A* | 31 *αὐτὰ* coniecit Sylburg.

115, 5 *ἐξαιρεθῇ* scribendum erat | 19 *ἐκεῖ* libri *ἐκεῖνοι* scripsi | 26 *ἤδη* add. *B*.

116, 10 *αὐταῖς?* idemque suaserat Portus | 12 *ἤδη*] *ἢ δεῖ* vel *νῦν ἤδη* Reiske; an *ἡμῶν?* | 13 *ὀρθοῦν AB* | 22 *ἐπιτυχὲς ταῖς μάχαις AC* | 30 verba *ὁμόσε τοῖς πολεμίοις* abesse malim.

117, 20 *παρασκευάσασθαι?* | 23 *τῶν* om. *B* | 27 *ὡς* delere voluit Sylburg.

118, 6 *ἀποδεῖξαι ἕως* scripsi *ἐκπέμπειν τε ὅσην* libri, sed *ὅσην* in *B* in rasura positum; pro *ἕως* fortasse reponendum *τέως* | 16 *ἅπαντα* libri | 22 *φρουρίοις* libri *χωρίοις* scripsi | 26 *αὐτοῖς* maluit Sylburg | 27 *ἐνδεῖν* maluit Reiske.

119, 12 *ταῖς πόλεσιν* vix recte dictum; an *τοῖς πλήθεσιν? ἐν τοῖς πολέμοις* coniecit Reiske | 20 *εἴ τινα B*.

120, 11 *στρατηγὸς* delevi cum Reiskio | 21 *πόλεις* add. *B* | 25 *τὸν* addidit Sylburg.

121, 2 *ἐπὶ τὰς πύλας ἀναλαβὼν* libri, correxit Sylburg | 5 *ἐφεστηκὸς* coniecit Sylburg | 24 *ἐξεκόμιστο, AB* | 25 *Βωλανῶν ἑτέραν* libri, correxit Sintenis l. l. II p. 29 praeeunte Reiskio | 27 *παρασκευασμένοι ABa.*

122, 2 *τούτων* om. *B* | 6 *χωρίῳ* add. *B* | 8 *συνίσταται καὶ B* | 13 *οἱ B* | 22 *ἐκβιασάμενος* libri, quod correxi.

123, 3 *αἱ ἄλλαι* Sylburg *καὶ ἄλλη* libri | 6 *ἐγκατεσκευασμένον* libri *εὖ κατεσκευασμένον* Gelenius | 9 *ἀπήρραξαν* libri, quod correxi | 26 *τοῦ τείχους πλησίον B* | 28 *ἀπαντῶσι πάντες προτείνοντες?* in *B* inter *ἀντι* et *προ* quattuor litterae erasae sunt. | 31 *τε* add. *B*.

124, 1 *Κοπιολανῶν AB Κοριολανῶν* vulgo. *Καρυεντανῶν* maluit Niebuhr Hist. rom II, 198 | 2 *ὡς* delevi cum *A* | 5 *δὴ* inserui ex *A* | 6 *αὐτοῖς* libri, quod correxi | 14 *Βολὰς B Βωλὰς A*, correxit Gelenius ex Steph. Byz. s. v. *Βοίλλαι* | *τε* omisi cum *B* | 24 *Βολανοὶ B* | *ἐξέθεον ἀνοίγοντες* libri, correxit Reiske | 26 *ἐφισταμένους* libri, correxit Sylburg | 28 *πολὺς* om. *B*.

125, 1 *οὐ λόγος B* | *εἰς τὸ εὔψυχον?* | 4 *δὲ ταύτης* omisso *καὶ B* | 10 *τῶν ἄλλων χωρίων?* | 11 *χώραν AB* | 13 *τε* Reiske *γε* libri | 17 *πογόνους Ba προγόνους ABb*, corr. Sylburg | 21 *ἡ πολιορκία* libri, corr. Reiske | 22 *πολιορκίας AB*, sed in *A* additum *γρ τειχομαχίας* quod recepi | 23 *περιετάφρευσε* libri, corr. Sylburg | 25 *αὐτῶν AB*, corr. Sylburg | 32 *τόδε* om. *B* | *χωρίον* mavolt Sintenis l. l. III p. 15.

126, 3 *τοῦτο* add. *B* | 8 *προσθεῖναι ABa* | 13 *ἑκάστῳ* om. *B* | *καὶ τῷ*] *ἢ τῷ* libri, quod correxi | 15 *ἰδίας* Sintenis l. l. I p. 19 *ἴσας B* om. reliqui | 18 *βούλημα Ba* | 24 *κλοιλίας A κλν ...ίας B*, tribus literis erasis | 27 *τὸν πόλεμον* Portus | 31 *τείχεσι* libri, correxit Sylburg | 32 *τοὺς ἄλλους τοὺς ἐρυμνοὺς AB.*

127, 11 *προδιδόμενοι* libri, correxit Reiske | 17 *ποστούμιος ABb.*

128, 13 *διαλύσεσθαι Bb* | 19 *ἧκον*] *ἀπῆγον?* | 23 *ἐπὶ δίκῃ* libri, correxit Stephanus | 28 *ἐπιχειρεῖν* Sintenis l. l. III p. 7 *ἐπὶ* libri.

129, 6 *δυσὶ γὰρ* (*D*) | 18 *καὶ εἰ* Reiske *καὶ B εἰ δὲ*

A, in archetypo fuerat *κεὶ* 20 *τὰ* add. *B* | 21 *ἅπαντα* libri | 29 *αὐτῶν* add. *B*.

130, 3 *ἀφαιρέσει δὲ δὴ* libri, correxit Sintenis l. l. I p. 27 | *μὲν* om. *B* | 10 *ἀνθρώπων* add. *B* | 13 *ὡς* om. *B* | 15 *οὖν* om. *B* | 23 *φιλονεικοῦντες A φίλων ἥκομεν* Reiske; an *φίλων εἴκοντι*? | 29 *ἅπαντα* libri.

131, 2 *πάντων* libri | 26 *μὴ τυχόντι AB ἐπιτυχόντι D*.

132, 2 *καθίστασθαι* maluit Stephanus | 5 *συμμάχων ἀποίκων* libri, correxit Sylburg | 8 *ὅσοι παρὰ πάσαις* libri, quod correxi | 15 *μηδὲ πεδανοῖς* libri, correxit Reiske | 19 *φαυλότητα τοιούτων ἐρυμάτων* coniecit Reiske | 23 *ἐπαγόμενος*? | 26 *ὄντες*] *παρόντες*?

133, 4 *μὴ* add. *B* | 5 *πέσωσι B* | 13 *κρίνεις AB* | 16 *φωτί A* ut videtur | 20 *μαθήματα φέρει A πάθη μεταφέρει B* quod correxi | *ἐπιχειρεῖν Ba* | 27 *ἐπὶ τουτοις B*.

134, 1 *ὑπάρξῃ κατὰ γνώμην*? | 2 *ὑποδεξαμένοις μέμψῃ δὲ καὶ αὐτὸς σεαυτόν A* | 3 *καὶ ἀδυνάτοις* scripsi *ἢ δυνατοῖς A ἢ ἀδυνάτοις B* | 9 *ἀποκτείνων AB* | 17 *τὰ ἔσχατα* maluit Reiske | 19 *ἔσται* Sylburg *ἐστί AB* | 21 *τε* add. *B*.

135, 1 *εἰς* om. *C* | | *ὅμοια*] *οἰκεῖα*? | 3 *δεινοὺς* add. *B* | 6 *σὺ* addidit Reiske | 7 *δὴ* add. *B* | 8 *δὴ* add. *B* 10 *καὶ* om. *B* | 31 *καὶ κόμισαι* add. *B* | 32 *γυναικὸς τε φιλ.* libri correxit Reiske.

136, 6 *τοῖς ἄλλοις* om. *B* | 22 *τὴν* add. *B* | 24 *δὴ* scripsi *δὲ* libri.

137, 8 *ἠγωνισάμεθα*? | 18 *εἰ μὴ καὶ* libri, correxit Sylburg.

138, 12 *ἀλλ'* addidi ex *ACm* | 15 *διατελεῖς B* | 20 *διαμένει A διαμένῃ B*.

139, 3 *ἀποδοθείσης*? | 4 *ἥξοντα* libri *ἑκόντα* Reiske | 14 *ἀπ' ἀνάγκης* maluit Reiske | 18 *μου* om. *B* | 19 *φέρε θὴ καὶ C*.

140, 5 *τὴν πόλιν* add. *B* | 13 *παρέδωκα B* | 25 *οὐδὲν* om. *B* | *οἷοί τε B βούλησθε A*, correxit Sintenis l. l. III p. 25 | 28 *μὲν* add. *B* | 31 *ἢ τιμὴν* abesse malim.

141, *τούτοις Οὐολούσκοις B τοῖς Οὐολούσκοις A*; Volscorum nomen ex glossemate ortum expunxi | 7 *ἐγίνετο Bb* | 8 *ἀνέτρεψε Bb καὶ ἀνέστρεψε A*; *ἀλλ' ἀνέστρεψε* maluit Reiske | 10 *τούτοις* add. *B* | 11 *δεινότατα* coniecit

Reiske | 25 πάλιν προδοσία libri, correxit Sylburg | 26 οὐκ delevit Sylburg οὐκ ἂν ἐμπτύσειε maluit Reiske.

142, 8 τὰ add. *B* | 28 φυλάξων addidi ex A.

143, 4 ὄψεως] φύσεως? | 9 αὐτῶν *Ba* | 10 τοῦ add. *B* | 13 φιλοποιούμεθα *B* φίλους ποιούμεθα *A* | 18 οὕτως addidit Sylburg | 22 ταῦτα add. *B* | 24 τὰ expunxi cum *B* qui omisit.

144, 4 ἐγὼ μὲν Reiske | δὲ add. *B* | 6 αἰτεῖσθε γε ἀνοχὰς ἐπὶ διαλλαγαῖς *B* | 16 ἀποίκους *Bb* | 20 οὔ — in cuius loco nescio quo casu μὴ typys expressum est — inserui; in *B* post δὲ duo litterae erasae | post ταῦτα trium litterarum rasura in *B*; an ταῦτα δη ἀπαγγέλλετε? | 27 δὴ om. *B* | 29 εἰς ἃ libri ἴσα Hudson | τε add. *B*.

145, 2 πρὸς τούτοις maluit Reiske | 9 αἱρήσοιντο *B* | 25 ἢ delevi cum *B* | 27 λογγάδι libri, correxit Sylburg | 32 αὐτῶν delevit Portus.

146, 6 Ἀλβίητας *AB*, Λαβινιάτας Sylburg | 7 Μογιλλίνους *B* | 8 χωριελανοὺς libri, Κοριολανοὺς Stephanus | 18 καὶ ante καταλυσάμενοι add. Portus | 30 τοῖς om. *B*.

147, 16 αὐτοῖς add. *B* | 26 ὑπαίθριον scripsi ὑπερόριον libri.

148, 1 δι' οἰωνῶν Reiske οἰωνῶν *B* οἷον *A* | ἢ ἄ λ λ η ς τινὸς ὀττείας? | 6 δὲ add. *B* | 21 ἐπέστειλεν? | 26 μὴ] μηδένα *Ba* | 29 ὑπὸ libri ἐπὶ Sintenis l. l. III p. 15.

149, 17 θελήσωσι *B* | 22 δεόμεναι libri, correxit Sintenis l. l. III p. 15 | 23 ἀπελήλακεν? | 24 εὐνοίας libri, correxit Reiske | 28 βαδίζομεν B.

150, 13 προῆλθον *B* | 17 οὐελουμνία *B* | 21 αὗται *B*.

151, 5 νήπια καὶ ταυτὶ τὰς γενναίας ἴθι *AB*, correxit Sintenis l. l. III p. 29 | 8 σπείσεσθαι *B* | 17 ἀληθῶς add. *B* | 17 ἔκγονοι *ABb* ἔγγονοι *Ba* | 19 αὗται *AB* | διελύσαντο libri, quod correxi | 21 τὴν add. *B* | 24 ἐγγόνοις om. *B* | 29 ἐσίγα· συνοδυρομένων? | 31 ἡ om. *B*.

152, 7 τὴν δύστηνον οἰκίαν *A* | 9 μαθοῦσαι λέγειν add. *B* | 10 τῇ δίκῃ *ABb* | 11 καθημένας add. *B* | 14 ἀνακαλουμένας libri, corr. Portus | 15 ἄποθεν *Bb* | 23 ἡμῶν libri, corr. Gelenius.

153, 2 τὸ νεώτερον *B* | 31 ταῦτα addidi auctore Reiskio, qui maluit καὶ ταῦτα μηδένα μηδὲν ἀδικῶν.

154, 5 εἰς αὐτὸν add. *B* | 16 παρουσῶν add. *B* | 26 οὐετουρία καὶ τέλος ἀπῄει τὴν. π. ὑ. τ. π. ποιησαμένη ἣν ὑπέσχετο *A* | 31 post ἐλπίδος septem litterarum litura in *B*; an fuerat τέλος ἀπῄεσαν?

155, 5 ἀπορoῦντες add. *B* | 7 στρατόπεδα *B* | 28 τὰ κράτιστα καὶ γενησόμενα correxerunt Sylburg qui καὶ delevit et Sintenis l. l. III p. 16 qui τὰ transposuit.

156, 16 δεήσει libri, correxit Reiske | τὴν add. *B* | 18 προιοῦσαι hic et v. 20 προιὼν *ABb*, προσιοῦσα et προσιὼν *Ba* | 28 τοῦ μὴ — ὁρᾶσθαι maluit Sylburg.

157, 6 καὶ addidit Reiske | 13 αὐτὸν *A* | 19 περιλαβὼν *A* | 23 προσελθοῦσαν add. *B* | 27 ἐμοί τε?

158, 2 ἀσμένως libri, quod correxi | 3 πολλῇ add. *B* | 5 ποιησόμενας maluit Casaubonus | 19 aut Μάρκιε delendum aut ὦ Μάρκιε τέκνον transponendum videtur | 31 εὐνοίαν ἔτι libri, correxit Reiske.

159, 3 πρὸς ἡμᾶς καὶ παραμυθουμέναις omisi cum *B* | 6 ἡ ante συνοικουροῦσα add. Reiske | 23 αὐτοὺς add. *B* | 29 αὐτοὺς add. *B*.

160, 5 ἄλλον *Ba* ἄλλων *ABb* | 6 ἐν τῷ μέρει? | 7 μή με παρακαλεῖν? | 11 οἶκον κεκτῆσθαι, ὃν maluit Reiske | 14 καὶ συγγενεῖς om. *B* | 17 τῷ add. *B* | 21 ποιεῖ maluit Gelenius.

161, 3 καταλύσεσθαι *B* | 4 μὴ δὴ ὑπολάβῃς *A* | 22 Οὐολούσκοι δὲ νῦν μὲν πολὺ maluit Reiske; Οὐολούσκοις *A* | 24 δὲ om. libri, add. Sylburg; an Οὐολοῦσκοι δὲ πολὺ τὸ αὔθαδες ἔχοντες, ἐὰν διδάσκῃς αὐτοὺς — ὑποβήσονται? | 26 γενομένη? | 29 εἰς ταπεινὰ καὶ φαῦλα? φαύλους *A*.

162, 1 σπουδάζετε addidi auctore Sintenisio l. l. I p. 22 | εὖ addidit Reiske | 14 ἀποίσεσθαι? | 21 καὶ πλήθει add. *B* | 23 ἀγαθὸν *A* | 25 ἀλλὰ καὶ πεποίηκας Reiske | 26 αὐτῆς ἀρχὴν *Bh* ἀρχὴν *A* correxit Reiske | 27 καταστησάμενος *B*.

163, 3 ἐγὼ μὲν οὖν οὐκ ο. *A* | εἰς addidi coll. VIII 27 | 9 ταύτην τὴν γνώμην? | 14 οὐδ' ἂν οὕτω maluit Reiske | 19 ἄδικος *B* | 22 λυποῦσι? | 24 ἱκανὸν ἐν παράδειγμα οἰκεῖον sine καὶ *B*, quae verba delevi auctore

Cobetio V. L. p. 371 | ὃς *Ba* ὃ *ABb* | 28 ἐξελαθεὶς καὶ αὐτὸς maluit Reiske.

164, 9 κτησαμένη κατέσχεν libri, correxit Sylburg | 11 μέχρι Reiske περὶ libri | 13 προάγεις *Ba* προσάγεις *Bb* | 18 ἔχοντας γηραιοὺς ἄνδρας προτείνοντας *AB*, correxit Portus | 19 verba τοὺς τῶν θεῶν σεβασμοὺς ἐδέξω, om. *AB* | 22 αἰνέσω *B* | τὰ om. *AB* | verba inde a versu 25 prorsus turbata vix lenius restitui posse videntur quam sic: ἱκετηρίας καὶ λιτάς, ὑφ' ὧν μαραίνεται πᾶσα ὀργὴ καὶ ἀντὶ τοῦ μισεῖν τὸν ἐχθρὸν ἐλεεῖ τὸ ἀδικοῦν καταφυγὸν ἐπὶ τοὺς ἠδικημένους (vel τὸ ἠδικημένον), [τὸ ταπεινὸν] θεῶν ἡμῖν ταῦτα τὰ ἔθη καταστησαμένων.

165, 1 παραστησαμένου libri, correxit Portus | 3 ἐξαμαρτάνοντες libri, correxit Portus | 8 ἀφεὶς αὐτῇ? | 9 μετανοούσῃ τε καὶ δ.? | 18 οὔτε — οὔτε *B* | αἱ add. *B*.

166, 1 οὖν add. Reiske | 2 ἀνεῖλε libri, correxit Cobet V. L. p. 35 | 7 σε add. *B* | 20 τὴν add. *B* | 24 ἐξ οὗ maluit Gelenius.

167, 6 δὴ add. *B* | 20 τὸν βίον? | 22 τὰς ἀνθρωπίνους *B*.

168, 21 προσήκει maluit Reiske | 25 αἴσιον libri correxit Sylburg | 26 προκυλίεσθαι *A*.

169, 5 περιλαβὼν *A* | 8 μὲν add. *B* | 14 τέλος *B* μήτε ἄλλο *A* | 16 τὰ om. *AB* | 27 ὑπομένειν *AB*.

170, 7 ἔτι δεινότερον maluit Reiske | 9 ἦν om. *AB* | 15 εὖ add. *B* | 31 ἀναβαλέσθαι *AB*.

171, 2 πάλιν libri, πάλαι Sintenis l. l. III p. 16; an στήλης δημοσίας ἐπιγραφῇ? | 5 verba καὶ ὁ δῆμος ἐπεκύρωσε ταῦτα om. *B* | 6 γνώμη εἰσῆλθεν? ἐδόκει pro εἰσῆλθεν *A* | 8 ἐπὶ delevi auctore Reiskio | 12 ἐψηφίσατο *ABa* | 16 ἂν add. *Bb* | 17 αὗται libri, correxit Sylburg | 25 νεὼ *B* | ἀνατεθῆναι? | 29 δευτέρῳ scripsi ἑτέρῳ libri | 30 Κυντιλλίου *ABb*.

172, 1 Κυντιλλίων *ABb* | 2 νόννων *ABb* | 9 ἀλλὰ add. *B* | καὶ om. *B* | 16 ἀναθέσθαι ᾗ Reiske, malim περιῇ | 18 ἀπεχθάνεσθαι libri, quod correxi | 20 νεὼ *B* | 22 αὗται libri, correxit Sylburg | 25 κατεσκευάσαντο? | 27 γεγωνὸς *Bb*.

173, 11 *τῇ* add. *B* | 12 *ἐπιτεθῆναι* libri, correxit Hudson | 13 *χήρας A χεῖρας B* | 20 *μετὰ τοίνυν τὴν* maluit Reiske | 25 *ὑπολιπόμενος* maluit Sylburg | 27 *βαρεῖ Bb*.

174, 3 *ἐτετράχυντο* mavolt Cobet N. L. p. 582 | 4 *μίσους* libri, correxit Reiske | 6 *Ἄττιδος B* | 7 *αὐτῷ A αὐτοῖς* Suidas s. v. *παραθήγων* | 11 *ὑποτάξας ἔλθοι A* | 17 *γενομένοις* malim cum Stephano | 20 *ἡγεμὼν* add. *B* | 22 *βούλοιντο B*.

175, 2 *ἀνὴρ*, libri, quod correxi | 3 *μένειν* maluit Reiske | 5 *προδότου* maluit Sylburg | 9 *ἀψιμαχιῶν* scripsi *ἀντιμαχήσεων ABb*, in Ba fuerat *ἀντιμ* . . . . . *ήσεων* | 10 *καὶ κατὰ τὴν βουλὴν* coniecit Reiske | 18 *παρελθὼν* maluit Sylburg. | 21 *παύσειν* libri, correxit Sylburg | *πάσῃ* libri | 28 *χαμαὶ* add. *B*.

176, 2 *ἀνοσίου ἔργου?* | 11 *ἐκπρεπεστάτης AB* | 20 *πολλὰ* add. *B* | 26 *διὰ πολυχειρίας A* | 29 *καὶ* add. *B*.

177, 11 *ἀλλὰ γὰρ ἐν ἀδυνάτῳ* Suidas s. v. *Μάρκιος* | 12 *ἄρα πάσας* libri et Suidas, *ἅμα πάσας* scripsi | 13 *φύσεται* libri, correxi ex Suida | 17 *ἐπῆν* libri et Suidas, quod correxi | 19 *προσαγορεύσεσι A* Suidas | 24 *ἄκριτος* Suidas | 29 *λείπουσα* Suidas.

178, 4 *τε* add. *B* | 11 *δοθείη* libri, quod correxi | 26 *χρόνον μετὰ τὴν ἀπαλλαγήν τινα* libri, correxit Reiske | *ἐνδιαμένουσι* libri Suidas *ἔτι, διαμένουσι* scripsi.

179, 4 *αἱ* add. Reiske | 8 *αὐτὸν ἐνιαύσιον?* | 13 *ἐκ τῶν Οὐολούσκων AB* | 18 *ὀλίγον B* | 23 *καταστησάμενον* addidi | 24 *γε*] *τε B* | *οὔτε μεῖζον οὔτε ἔλαττον* scripsi auctore Sylburgio, *οὐδὲν μεῖζον* libri, sed in *B οὐδὲν* in litura positum.

180, 4 *λύουσι ABb* | 14 *καὶ* ante *ἀτάκτους* addidit Reiske.

181, 11 *αἰτιῶνται*] *οἴονται* Gelenius ut videtur | 26 *τριτημερίδα?* coll. VIII 77 | 30 *σημείαις* libri, correxit Sylburg.

182, 2 *Ἀτράτιον AB* | 16 *καὶ* ante *πρῶτον* v. 14 transponere maluit Sylburg | 28 *ἀπεῖναι AB* | 31 *ἀλλήλους Ba*.

183, 3 *καὶ γὰρ καὶ οἱ τ. Ἑ.* Reiske | 7 *δὴ* inseruit

Sylburg | 13 Ῥωμαίου libri, correxit Sylburg | 23 τέως *Ba* | κέρας Sylburg μέρος libri | 25 παρέμινε *Ba* παρέμενε *Bb*.

184, 3 σὺν om. *B* | 6 τότε μὲν οὖν· ἤδη γὰρ ἦν maluit Reiske | 15 τέ om. *B* | ἀλλήλους add. *B* | 28 ἔθεον add. *B*.

185, 8 καὶ ταῦτα μὲν maluit Reiske | 12 ἀναλαβὼν addidit Sylburg | εἰςέβαλλεν *B* εἰσέβαλεν *A* | 13 Ἄττιδος *B* | 29 δοκῇ *Ba* | 32 τοῦ κάμνοντος μέρους?

186, 3 ἀνθρώπων ἰσάριθμον maluit Reiske | 7 οἱ add. *B* | 15 διὰ τοῦ λόφου *B* | 10 verba uncis inclusa expunxit Reiske | 23 στάσεως? | 25 γὰρ add. *A* | 30 ἐπέχοντες maluit Reiske.

187, 3 ἐν add. Stephanus | 14 Ἀττίδιος *A* Ἄττιδος *B* | 28 προσέθεσαν *Ba* προέθεσαν *ABb* | 30 τῶν Οὐολούσκων *Ba*.

188, 4 ὥσπερ libri ὡς περὶ Reiske | 6 ὥαν *B* εὐάστην *A*, correxit Casaubonus | 7 πρότερον *B* | 12 Πρόκλος scribendum esse vidit Sigonius | 13 τὸ add. Reiske | 26 περιορᾶν libri, quod correxi | 27 τὴν πόλιν libri, correxit Portus | 28 ἀναλήψεσθαι?

189, 1 δεησομένας? | 10 πρότερον? | 13 λεγόντων om. *AB* | 15 ἐξ add. ex coniectura Sylburgi | διὰ μηνὸς] an διμήνου? coll. VIIII 36. 59. | 16 τέως *Ba* | συμπορίσωσι scripsi εὐπορήσωσι libri, in *B* tres litterae ante εὐπορ. erasae | 20 τῆς add. *B* | 25 καταστήσασθαι maluit Reiske.

190, 4 φθόνον abesse malim | 13 τῆς τε ὑπεροψίας libri, correxit Reiske | 14 ὡς *B* | 29 οὐθὲν *Cm*.

191, 4 totum locum recte constituisse videtur Sintenis l. l. III p. 13 συμπεριλαμβάνων corrigens et sermonem post τὰ ἔθνη v. 7 distinguens. | 11 ἀπέδωκε maluit Sintenis l. l. III p. 13 | 18 μὲν add. *B*.

192, 16 πάντας libri | 27 αἴσχιστα coniecit Sylburg.

193, 3 ἑκατέρων *B* | 7 τιθέμενον om. *B* | 11 μὴ δοκεῖν *B* μηδ' ἐκεῖνο *A* | 17 καὶ om. libri, add. Reiske, qui praeterea τοῦτο delevit | 18 λάμβανον *B* | γινομένην *B*, quod correxi | 24 αὐτῶν maluit Portus.

194, 4 συμπεριλαβεῖν? | 6 κωλύσεως *Ba* κωλῦσαι *ABb* | 8 ὅμως vel βεβαίως maluit Reiske | 20 λαβόντας libri, λαβεῖν Sylburg | 24 θάτερον μονον coniecit Reiske | 27 διανέμεσθαι maluit Reiske.

195, 22 τέως *Ba*.

196, 9 ὑπάρξει maluit Sylburg | ἐνὶ Reiske ἐπὶ libri | 21 οὐκ εἶναι et ὑπὲρ αὐτῆς v. 22 maluit Reiske | 22 τὴν δὲ scripsi, om. *B* καὶ *A* | 23 προσιὸν *Ba* προιὸν *ABb* | 28 βίᾳ κατέχουσι Sintenis l. l. III p. 23.

197, 4 διδάξομεν maluit Reiske | 7 ἔχον Sintenis l. l. III p. 24 | γὰρ om. *B* | 9 τὸν ante γείτονα add. Reiske | 15 ἕκαστον εἰσφέρειν malim cum Reiskio | 21 νῦν ἐγὼ ἄρχομαι coniecit Reiske | 29 ταύτην] τὴν αυτὴν maluit Reiske | aut προστιθεὶς aut προσθήσων coniecit Reiske | 30 δοκεῖ maluit Sylburg.

198, 4 ἀποκρινόμεθα *ABb* | τε] δὲ? | 13 εὐπρεπεστάτων libri, correxit Sylburg.

199, 3 ἔχοι *A* | 7 τὴν κληρουχίαν coniecit Sylburg | 15 χαλεπώτερα *Bb* | 16 ἀποτίσειαν *ABb* ὀτ . . σείαν *Ba* ἀπαντήσειαν Stephanus | 22 πάντα libri | 25 αὐτοῖς *Bb*.

200, 1 δέκα ἄνδρας ἀποδεῖξαι καὶ maluit Reiske | 8 μεθ' ἑαυτὴν *A* μετὰ ταύτην *B* quod correxi | 13 ἐν abesse malim | 14 τὴν γνώμην Reiske | 20 ἀποδειχθῆναι om. *AB*.

201, 6 γε Stephanus τε libri | 10 ἀδελφιδοῦς vel ἀδελφοπαῖς maluit Glareanus | 21 ὡς add. *B* | 24 πολιτείαν *B* υπατείαν *A* ἰσοπολιτείαν maluit Sylburg | 28 ἔχρην *B* | 31 ἣν ἐὰν *AB* ἣν ἂν *C* Portus.

202, 9 τριτημορίδος *A* τριτημερίδος *Ba* | 10 vocabula ἢ οὐχ ἕξειν ὅτι δώσουσιν ἐκείνοις μέρος volgo omissa, addidi ex *AB* | 12 πρὸς δὴ libri, correxit Sylburg | 13 ἐπιβαλλόμενος libri, correxit Reiske | 23 ἧς οὐδὲν αὐτοῖς libri, quod correxi.

203, 1 τε οὖν ἐνέγκαιεν *B* | 6 αὐτῶν *B* | 12 πολλὴν *AB* correxit *Cm* | 14 δι' ἅ? | 15 λαβὼν *ACm*, om. *B* | 21 δράσῃ libri, quod correxi | διαβαλὼν libri, correxit Sylburg | 22 ἐπανάγῃ *A* | 28 παραδιδομένων *B*.

204, 4 ἐλθεῖν libri, ἐξελθεῖν etsi dubitanter scripsi | 8 υἱοὺς addidi cum Sylburgio | 10 πρόφασιν libri, cor-

rexit Sintenis l. l. III p. 17 | 15 ὁ ἐν scripsi ἐν libri | 18 ἐγκαλῶν maluit Sylburg | 26 οὔτε ἀπίθανα addidi ex *A*.

205, 5 οἰκία sine articulo *B* | 1 μεστεῖναι *AB*.

206, 4 τε libri τέως Reiske | 5 ἤχθησαν libri, correxit Reiske | 19 ἐν ἀφανεῖ τῇ δόξῃ *C*, idemque voluit Sintenis l. l. III p. 27 | βίου *ABC*, probante Sintenisio l. l., ego malim ἐν ἀφανεῖ τῆς δόξης φ. καὶ βίου, εἰς ταπεινὰ συνεστάλησαν.

207, 1 καταστεῖλαι addidi ex *A* | 4 μὲν addidi ex *A* | 11 ἐκλιπόντων *ABb* | 30 οἱ add. *B*.

208, 7 σκοπὰς *ABa* | 11 παράδοξον *B* | 14 οὐδεμία οὐδενὶ ἔτ' ἦν φροντὶς coniecit Reiske | 17 τι add. *B*.

209, 1 διανομὴν libri, correxit Reiske | 5 μετεῖναι *AB* | 14 τὰ add. *B* | 18 κύριον *AB* | 26 τε add. *A*.

210, 7 ἐκπολεμωμένου *B* (?) | 10 εἴτε ἐπὶ om. libri, addidit Sylburg | 26 ὀρέων *A*.

211, 15 οἱ add. *B* | 18 ἐπιγένωνται vel ἀγωνίσανται maluit Sylburg | 27 οἱ add. *B*.

212, 5 περὶ σκῦλα libri, correxit Sylburg | 6 ὑποχωρεῖν *A* | 7 καὶ γὰρ καὶ οὗτοι maluit Sylburg | 9 ὑπὸ τοῦ ὄρους *B* | 26 τε add. *B* | 27 προελθόντες *ABb* προςελθόντες *Ba*.

213, 6 εἰ om. *Ba*, unde malim ἀγαπητῶς δ' ἂν ἀπῆλθον | 10 τῶν ἐκ om. *Ba* | 18 τὰ πέριξ σταυρώματα coniecit Sylburg | 32 πλέω libri, quod correxi.

214, 1 ἀπεχώρησαν? | 5 οἱ add. *B* | 6 τὰς ἐκ τ. π. δυνάμεις? | 9 ἢ καὶ ὁμολογίαις *AB* | 21 ὁδῶν ἀφανῶν libri, correxit Sintenis l. l. III p. 8 | 26 ἐκεῖ libri εἰκῇ Reiske | 29 αὐτοῖς libri, αὐτοὺς Sylburg.

215, 4 βέλος τε libri, βέλος δὲ Reiske | πεπιλημένων γε libri, correxit Reiske | 5 ἀπαρράττονται *Bb* | 6 οἱ add. *B* | 9 vel τέως vel ἤδη delendum esse censuit Reiske | 21 οὐκ αὐτοὶ libri, correxit Sylburg | 22 ἥκοντες mavolt Sintenis l. l. III p. 18 | 25 κεχαρισμένοις Reiske.

216, 2 δόγμα ποιησαμένης τῆς βουλῆς? | 5 ὅλην add. *B* | 14 ζωπυρεῖν *B* | Μάνιος *B*.

217, 12 Ἀλβανὸν? | 15 τὸν add. Stephanus | 17 μεί-

ζων addidi ex *A* | 18 μόνη add. Reiske | 20 τὰ add. *B* | 22 τῇ add. *B* | 25 ἡ πᾶν ἄγει *ABb* πὰν ἄγει *Ba*, correxit Sylburg.

218, 1 σημείας *AB* | 17 φόβῳ libri ἐν φόβῳ Stephanus | 20 ἐδόκει libri ἔδει Reiske | 26 ποθὲν libri οἴκοθεν scripsi | ἐπικουρία addidit Sintenis l. l. I p. 22, nisi forte id ipsum vocabulum in participio ἐπιοῦσα latet.

219, 10 μένειν *B* | 11 προβολὰς maluit Reiske | τετραμμένων libri, correxit Stephanus | 13 κόπου τέως *Ba* τοῦ κόπου τε ὃς *Bb* τοῦ κόπου ὃς *A* | 16 ἐν πνίγει ὥρα *A* et *Ba* ut videtur | 26 μηδὲν ἠθέλησεν ἐργάσασθαι maluit Sylburg; an μηδὲν εἰργάσατο?

220, 1 δημοτικὰ *Ba* | 2 ἀληθεῖς *Ba* | 5 ὅτι addidit Sintenis l. l. III p. 26 duce Reiskio | χολοῦσθαι om. *AB* | 13 ἀδίκημα abesse malim | 14 κεφαλῆς? | 18 παραχρῆμα ἀπέκτειναν καὶ μετὰ τοῦτο libri, correxit Reiske | 19 αὐτοῖς libri, αὖθις scripsi.

221, 5 αποδείξαντες *B* | 8 ἀρχαιρεσιάζοντα *AB* | 11 ἐγίνοντο συνεχεῖς καὶ ἀψιμαχίαι? | 18 ἀρχαιρεσίων *B* | 25 τε καὶ τιμιωτάτους om. *B* | 28 ἐκλειπόντων *B* | 29 ἀποδείκνυνται *AB*, correxit *Cm* | 30 μεσοβασιλεῖς *AB*, correxit *Cm*; an ἀποδείκνυνται — μεσοβασιλεῖς, πρῶτος μὲν Αὖλος *Σ. Α.*?

222, 3 κατὰ] καὶ libri, correxit Sylburg | 4 ἀποδεικνύουσιν *AB* | 5 Ἴουλλον libri | 7 μὲν addidit Reiske | 8 ἕνεκα libri ἐκ Reiske | 9 τῆς om. *B* | 26 Ὀρῶνα libri, correxit Sylburg | 28 ἐπαγόμενοι maluit Reiske.

223, 3 τε om. *B* | 10 καινὸν maluit Reiske | ἀποφαίνοντες τὸν πόλεμον? | 12 στρατιωτῶν libri, correxit Sylburg | 17 ἀπὸ add. *B*.

LIBER IX

224, 6 τέλος Portus ἕως libri | 10 φρούριος *B* | 12 ἐστρατοπέδευσε libri, correxit Portus | 13 δὲ om. *B*.

225, 7 συναραμένη *B* | 17 Σικίλιος libri, correxit Sylburg | 16 συγχωρήσειν ἐπὶ τῶν πολεμίων libri, correxerunt Sylburg et Sintenis l. l. III p. 10 | 18 πρῶτον

libri, quod correxi | 25 verba inde a *ταύτην* usque ad *ἐξουσίαν ἐχόντων* v. 28 addita ex *B*. | 29 *γίνηται B* | *μη* add. Reiske.

226, 8 *Σικίλλων B*, correxit Sylburg | 10 *διώμνυ Ba* | 11 *αὐθαδέστερον* libri, correxit Sylburg | 14 *τὴν χώραν ABb* | 16 *τοῦ* addidi ex *A* | 17 *κωλύσειν* Reiske | 19 *Σικίλιος* libri, correxit Sylburg | 25 *φρούριος B* | 28 *στρατιᾶς* libri, correxit Sylburg | 32 *δοκῶν τε AB*.

227, 2 *στρατηγίας* et 3 *στρατείας* fortasse sedem mutarunt | 3 *ἀπάγων*? | 9 *οὐκ εἶχε μένον* libri, correxit Sintenis l. l. III p. 26 | 12 *τῷ προθύμῳ ἐπιτρέποντας καὶ χρ.*? *τῷ προθύμῳ καὶ πρέποντι χρ. AB* | 14 *ἀντιπολέμων* libri, correxit Reiske | 17 *μὲν* om. *AB* | 18 *τῷ ἡγεμόνι B* | 19 *δὲ ἧττον* libri, correxit Reiske | 20 *ἄξια* libri *αἴτια* scripsi | 20 *κίνδυνον* . . (duabus literis erasis) *οὐ Ba*; an *κίνδυνόν τε οὐ*? | 29 *αὐτῶν AB* | 31 *ἐμβοησάντων* libri, correxit Sylburg | 32 *τῇ τε φωνῇ A τε φωνῇ B* | *καὶ* om. *B*.

228, 1 *ἀγαθοὺς ἄνδρας* maluit Reiske | 8 *οὔτε τὰς ἀπειλάς* maluit Reiske | *ἀναστάσεις Ba* | 25 *ἕως* om. *B* | *τε* add. *B* | 30 *ἐκ παντὸς* libri et Suidas s. v. *ἐκ παντὸς*, *ἐκ ποδὸς* Sylburg.

229, 8 *ἦσαν ἐσκευασμέναι ὡς εἰς χ. π. παρεσκευασμέναι AB* | 10 *ὡς δημοκρατοῦντες AB*; an *ὡς δῆλοι κρατοῦντες*? *ὡς ἤδη κρ.* maluit Sylburg | 30 *ἐπικουρικοῦ* libri, correxit Reiske.

230, 4 *τὸν ἐν ἀκμῇ* libri, quod correxi.

231, 2 *αὐτοῖς AB* | 5 *ἀνέστρεψε* libri, correxit Sylburg | 15 *καὶ* delendum? | 18 *τοῖς* om. *B*.

232, 5 *μετεστρατοπεδεύσαντο B* | 18 *πονησόμενοι κατὰ τῆς ἑτέρας*? | 23 *τῶν* om. *B*.

233, 11 *πρὸς τὸν ὕπατον* libri, correxit Reiske | 23 *οὔτε* libri, correxit Reiske | 24 *ἔσεσθαι* add. *B* | 27 *πολλῷ πλήθει* maluit Reiske.

234, 1 *γινομένης B*, quod correxi, *γενομένης A*, unde Sintenis l. l. III p. 4 effecit *γενομένοις* | 2 *ἑκουσίους Ba* | 9 *ἔπειταν B* | 20 *τε* add. *B* | 32 *εἴγε* libri, correxit Reiske.

235, 1 *ἐστιν* om. *B* | 2 *εἰ γοῦν Bb* | 4 *νῦν δὴ φ. AB*, *νῦν δὲ* Sylburg; an *κατείληφεν ὑμᾶς. φοβούμεθα δὲ μή?* | 20 *καὶ τουδὶ καὶ B*.

236, 6 *νῦν* om. *B* | 11 *καὶ* ante *καταβαλόντες* add. Sintenis l. l. II p. 35 | *νῦν* delet Reiske | 12 *εἴ γε δὴ B*, om. *A*, correxit Sintenis l. l. | 13 *ἤδη* om. *B* | 19 *ἡμῖν* om. *B* | 26 *πολὺ* add. *B* | 29 *δὴ* om. *B* | 32 *τε* om. *B*.

237, 6 *ὅτι σώζων Ba* | 9 *προσῆκεν A*, quod correxi; om. *B* | 10 *ἀνδρῶν*] *ἀνδρείως* sive *ἀνδρωδῶς* maluit Reiske | 17 *ἐν* om. *B* | 21 *ἀναβοήσεις τε ἐξ B* | 23 *ἐπειδὴ τε Ba* ut videtur | *προσέρχεται AB* | 24 *ἀνὴρ* om. *B* | 30 *ὁ* ante *νόμος* addidi.

238, 2 *ἐπὶ τοῦτο A ἐπὶ τούτῳ B* correxit Sintenis l. l. III p. 27 praeeunte Reiskio | 6 *ὅσοι δὴ ἐγνώκατε* maluit Reiske | 10 *κάρτιστον* Reiske | 18 *θράσος B* | 20 *ἐνέβαλλον Bb* | 23 *καὶ θυσίαις* om. *Ba καὶ λιταῖς* om. *A καὶ θυσίαις* fortasse delendum, sed cf. IX 15.

239, 20 *ἐπὶ* delevit Gelenius | 21 *παρήλλαξαν* libri, quod correxit Portus | 27 *μείζων*] *πλείων A* | 28 *καὶ μείζων* om. *B*.

240, 1 *πρότεροι B* | 3 *ἔνθα ὁ Μάλλιος ἦν* transponenda post *κέρας* | 11 *δὴ* malim cum Gelenio | 12 *κέρας A μέρος B* | 20 *ἀπὸ τοῦ στρατηγίου* maluit Reiske | 30 *Μάλλιος* delevi.

241, 5 *ἔσχον* maluit Stephanus | 9 *τὸ λοιπὸν* add. *B*, in quo fortasse latet *τὸν κόπον* | 19 *τὸ χωρίον* libri, correxit Reiske | 20 *τῇ μάχῃ* libri, correxit Sylburg | 20 *Σικίλιος B* | 28 *οἱ Τυρρηνοὶ* add. *B*.

242, 2 *ἀπεσώζοντο?* | 7 *μὲν* add. *B* | 12 *τοσαύτη δύναμις* maluit Reiske | 14 *νίκας τε καὶ ἥττας ABa* | 18 *οὔπω?* | 29 *Σικιλίῳ B* | 30 *ἀνασώσασθαι* libri, correxit Reiske | 32 *ὁρμῆς?*

243, 9 *σημείας* libri, correxit Sylburg | 16 *ὄχλους* libri, correxit Schwegler hist. rom. II p. 466 | 28 *τῆς λείας* libri *ἄλλης λείας* Sintenis l. l. I p. 23 praeeunte Reiskio.

244, 11 *δὲ οἱ ιενταvοὶ B* | 18 *πολλά τε ἄλλα* maluit Reiske | 21 *ὡς* om. *B* | 23 *κινδυνεύουσιν* maluit Sylburg.

245, 10 τὴν στρατιὰν delenda videntur | 12 σημείων *B* | 21 οὐκ ἂν ἐλπίσαντες *B* οὐκ ἐλπίσαντες *A*, quod correxi | 23 ποιήσασθαι *AB* | 26 ἐν ταῖς πάνυ libri, quod correxi | 28 Ἰανούκλου *B* | 29 κωλύσουσα γὰρ *Bb* ἡ δὲ κωλύσουσα *Ba* ut videtur ἡ κωλύσουσα *A* | 31 ἐπὶ σημείαις libri, correxit Portus.

246, 3 τῆς add. Sylburg | 14 προκείμενον *B* προσκειμένων *A;* an προκαθημένων? | 17 δύο add. *B* | 28 ἐνίκησε libri, correxit Sylburg | 30 ἑτέρων *B*.

247, 1 ἧς om. *Ba* | 11 τὰ delevit Reiske | 20 τοῖς στρατευομένοις ἰδιώταις] τοῖς στρατιώταις? | 22 βοεικα *AB* | 28 δέχεσθαι add. *Bb*.

248, 5 μένοντες *AaB* μὲν εἰς *Ab* | 7 οὕτως add. Reiske | 9 Σεργίου libri, correxit Sigonius hic et p. 249, 7. 17 | 10 λευκανοὶ *A* et *Ba* ut videtur, Αἰκανοὶ *Bb* | 14 τὰς ἰδίας δυνάμεις maluit Reiske | 18 ἐκπολεμεῖσθαι *B*.

249, 6 ἀνθυπάτου? | 8 φρουρίου *AB* | 11 ἐλάττων— δύναμις? | 28 μίαν addidi | 31 γενομένου coniecit Reiske.

250, 7 φυγοῦσι *B* | 19 ἐν ταῖς μάχαις ἐκπρεπεστάταις libri, correxit Reiske; possis quoque ἐν ταῖς μάχαις servare coll. IX, 33 | 20 ἐγκαταλειφθέντα libri, correxit Reiske | 24 γὰρ ἤδη *B* | 26 ὑπεραγόμενον *AB*, correxit Reiske; περιαγόμενον maluerunt Gelenius et Schwegler hist. rom. II, 739.

251, 3 τοὺς πρεσβευτὰς *AB*, correxit Reiske | 5 ἀποστεῖλαι πρὸς τὴν βουλὴν διαλεξομένους libri, transposui auctore Sylburgio | 15 θέσθαι *Ba* | 23 ἄλλην vel ἄλλως maluit Reiske | 24 ἐν delevit Reiske.

252, 5 ὡς add. *B* | 10 ποστὸν coniecit Reiske | 11 καὶ delevi; lacunam statuere mavolt Sintenis l. l. III p. 10 auctore Reiskio, qui συνείρας ante καὶ intercidisse suspicatus est | 14 φρουρίου *AB* | 28 στρατιᾶς *AB*, correxit Sylburg.

253, 8 πρῶτον add. *B* | 14 ἦν om. *B* | 16 ἀποστειλάντων libri, correxit Reiske | 30 οὖν add. *B*.

254, 2 ὑπὸ σημεῖα *B* | 5 ἐλόχισαν *B* | 17 σημείαις *AB* | 26 περὶ libri ὑπὲρ Reiske | 28 ὅδε om. *B*.

255, 14 σκοπὰς libri praeter Suidam s. v. σκοπιαί,

correxit Reiske | 20 αὐτὸ *ABb* αὐτῶν *Ba* | 29 αὐτοῖς om. *B*.

256, 5 ὀμόσε *ABb* ὅμως *Ba* ut videtur | φάλαγγα libri correxit Sylburg | 13 ἥξει *A* ἔσται *B* | 15 χωρίῳ libri, quod correxi.

257, 8 ἐαγότα *B* | 29 συγγενῶν libri, articulum addidit Sylburg.

258, 5 ἀπὸ libri, correxit Reiske | 13 ἐπανάγκαις *Ba* | 18 γε add. *B* | 21 ἑκόντες γε *B* | 26 ταῦτα, quod om. *AB*, delendum erat.

259, 1 λεγόμενον μόνον? | 2 δὲ inseruit Sintenis l. l. III p. 27 | τῷ *ABa* τὸ *Bb* | 10 γοῦν om. *Ba* | 20 φθόνῳ *Ba* | 22 γὰρ om. *B*.

260, 1 τῆς om. *Ba* | πλεονέκτημα om. *B* | 5 τῆς om. *B* | 11 ἀπήγαγε coniecit Sintenis l. l. III p. 13 | 14 μετὰ αἰσχύνης *AB* | 15 ἐφόδους dubitanter coniecit Reiske.

261, 1 ἐν πτώσει *B* | 2 πεσόντων δὲ πολλῶν τῶν ἑ. *A* | 5 σημείας *AB* | 17 ἐκ τῆς πολλῆς τροπῆς ἔτι νυκτὸς οὔσης libri, quod correxi | 23 ὅλην add. *B* | 26 νυκτὶ καὶ σκότῳ διαιτά τε ὑπὸ *A* νυκτὶ σκότῳ (σκότος *Bb*) διαιτᾶται ὑπὸ *B*, quod correxi, nisi malis νυκτὶ σκοταιοτάτῃ | 27 στεγῶν? | τοσοῦτον *ABb* τοσοῦτοι *Ba*.

262, 3 μετατουχήματος *Ba* μεγάλου αὐχήματος *ABb*, quod correxi | 11 τότε δὲ δὴ maluit Reiske | 15 περὶ? | 19 ποιησάμενοι delevit Sintenis l. l. III p. 28 | καὶ delevit Sylburg | 24 τοὺς om. *B* | 25 χρηστὸς libri χρυσός Cobet. Var. lect. p. 236 | 26 πρὸς maluit Reiske | 29 ἔτι *A* ὅτι *B*.

263, 4 τῶν om. *B* | 7 ῥᾳδίως *AB* | 12 αὐτοῖς *A* ἐν αὐτοῖς *B* | 16 post τύχην συνέβη vel tale quid intercidisse coniecit Sylburg | 18 πέμπουσι *A* ὥστε *B* | 20 τὸν *A* τῶν *B* | 25 ἐπιστροφήν maluit Stephanus.

264, 7 ὡς add. *B* | 10 ὡς ἐν τῷ τότε *B* | 20 βάδην add. *B*.

265, 24 aut ἀνείχοντο aut ἀντεῖχον scribendum videtur.

266, 6 τοῖς ὑπάτοις *A* αὐτοῖς *B* | 9 πάντα maluit Sylburg | 18 τῶν om. *B* | 19 Κοιντίνου *B*, correxit Gelenius | 21 λαβόντος?

267, 3 ἀφ' ἧς libri ἀφυὲς Casaubonus | 6 καὶ ὅμως τοῦτο coniecit Reiske | 12 ἐπιβουλαῖς *AaC* ἐπιβολαῖς *Ab* | 25 ἀποχῆς maluit Sylburg | 29 ἱρούινος hic et p. 269, 9 *B* pro Σερουίλιος.

268, 1 δίκιος *Bb* | 6 ἀθρόον *ABb* ἀθρόων *Ba* ut videtur | 14 ὑφ' ὧν Reiske σφῶν libri | 22 δίκιος *Bb* | 28 κωλύσαν *B*.

269, 3 καταχεόμενος *B* | 15 ἀκρίτῳ add. *B* | 17 ἂν οὐ σὺν δίκῃ coniecit Reiske | 26 τοι add. *B* | 31 οἱ om. *B* | 32 ἀρχῆς delevit Reiske.

270, 11 εἰς ἃ maluit Sylburg | 14 κατὰ τὴν μάχην add. *B* | εὐτυχῶς libri, quod correxi | 15 σερούινος *B* | 31 λέγειν add. *A*.

271, 2 ὡς δεῖ κἂν μηδὲν *A*; ὡς δ' delevi | 18 ῥάστου libri ἀρίστου scripsi | 20 πρὸ ὀφθαλμῶν ἔχοντες maluit Reiske | αὐτοὶ *A* ἑαυτοῖς *B* | 22 τῶν om. *B* 26 δ' add. *A*.

272, 7 αἰσθήσει *B* | 12 ὑμῖν add. *B* | 13 ἐπιβαλλόμενος *AB* | 19 ἦλθεν ἐπὶ νοῦν *A* ἔπεισι *B* | 21 σημείας *AB* | 24 ἔμψυχον *ABa*.

273, 17 συμφέρει *AB* | 28 τῶν ἀστῶν *B*, quod recepissem, si exemplis firmari potuisset.

274, 4 πάρεστιν libri, quod correxi | ὑμῖν *ABb* | 8 καλὰ καὶ om. *B* | ἐξ ἑκατέρων *Ba* | 17 ἦν om. *B* | 20 δημαγωγοὶ καὶ οὔτε *B* | 23 δὲ *ABb* δὴ *Ba* δ' ἡ Reiske | 24 πλεῖν add. Reiske.

275, 9 στρατηγεῖν mavolt Sintenis l. l. III p. 3 | 16 ὁ πείθων *Ba* | 17 ἀγαθός?

276, 3 τὰς ante Ῥωμαίων add. *B* | 7 καὶ inserui ex *Cm* | 9 οὐ περιμένοντες coniecit Reiske | 12 κατεργασόμενοι *AB* | 13 ἔτι *A* ἔτει *B* | 18 προσελθὼν *Ba* | 21 ἐν τάξει quod correxi | 30 αὐτῆς *B*.

277, 1 δὲ om. *B* | 3 ἵππων *AB* | 9 φυγόντες mavolt Sintenis l. l. III p. 13 | 26 ἔφυγον Sylburg.

278, 1 ἦν δ' ὁ *A* ὁ δὲ *B* | 9 ἀπῆγε mavolt Sintenis l. l. III p. 23 | 10 χώρας libri πόλεως Sylburg | 25 ἀπειρίᾳ maluit Sylburg | 30 ὅπερ *AB*.

279, 6 ἐπεὶ *B* | τῇ add. *B* | 10 πάνυ add. *B* | 16 φρούριος *AB* | 19 ἦν ἔθος *B* | 27 τοῦ λιμοῦ melius abesset | 30 ἀργύριον om. *Ba*.

280, 8 verba inde a *πολλῶν* usque ad *πολέμου* v. 11 propter homoeoteleuta omisit *Ba*, quorum priora usque ad *μέρη λόγων* v. 9 supplevit *Bb* in margine codicis | 18 *τρισχιλίων τε καὶ τρισκαίδεκα B*, quod casu factum ut non receptum sit | 22 *δάτις A δάντιυς Ba δάντις Bb* | 29 *στρατιῶν AB* | 32 *ὁ* add. *B*.

281, 4 *οὐχ* om. *B* | 6 *περὶ Κάσσιον* coniecit Portus | 7 *καὶ* om. *ABa* | 20 *δέκα B* | 24 *ἀεί ποτε ὄντας* maluit Reiske | 29 *ἦγεν* libri *ἥκειν* Sylburg | 30 *ἐμμένειν* et 31 *κατηγορεῖν* libri, quae correxi.

282, 9 *τῆς δίκης* libri, quod correxi; *πρὸ τῆς δίκης* Reiske | 15 *ἐλέλυτο B* | 27 *ἀπὸ τῆς τοιαύτης B*.

283, 3 *τε* om. *B* | 9 *τῆς δίκης* add. *B* | 14 *τι* add. *B* | 23 *στάσις* add. ex *Cm* | 24 *ἕτερον* libri, quod correxi | *μεῖζον Ba* | 27 *ἐπιβάλλειν ABb* | *ἐπιβ. τὰς χεῖρας* maluit Reiske | 31 *κατ' αὐτῶν* maluit Sylburg.

284, 11 *φρούριος AB* | *εὐθὺς* add. *Bb* | 17 *ἡ* add. Reiske | 18 *πρότερος Ba* | 19 *δ'* add. Reiske | 23 *αὐτοῖς B* | 27 *Ὀρνιβία B*.

285, 12 *ὅτι* libri, correxit Sylburg | 13 *ὑπὸ τοῦ τῶν πενήτων δήμου, προστάτης* libri, correxit Sylburg | 25 *καλοῦσι κυράτιν B*, sed *καλοῦσι* additum in fine versus e *Bb* | 29 *φρατρίας AB*.

286, *ἱερῶν* libri, correxit Reiske | 5 *ταῦτα AB*, correxit Sylburg | 26 *θορυβοῦντες* libri, quod correxi | 28 *ψήφοις ἐχομένης μηνύματα A*, unde mavolt Sintenis l. l. III p. 28 *τῆς ἐν ταῖς ψήφοις ἀρχομένης*.

287, 8 verba *οὔτε* (*οὐκ* libri) *ἄλλο τι τῶν δοκούντων κουφίζειν τὴν νόσον* quae in libris post *οὐ τέχνην* v. 10 leguntur huc transposui auctore Reiskio. | 10 *τέχνην*] *τύχην*? nisi fortasse praestat haec quoque verba *οὔτε τέχνη* post *προσωφέλουν* inserere. | 12 *μὴν* om. *B* | 24 *ἐλαττώσαντα AB* | 27 *ὃν καὶ αὐτὸν* maluit Reiske | 30 *ἐψήφισαν AB*.

288, 2 *Κόιντος* libri hic et passim pro *Κοίντιος* | 5 *ἐπὶ τὰς ἔξω* maluit Sylburg *περὶ ταῖς ἔξω στρατείαις* Reiske | 10 *συνδιοικοῦσι A συνοικοῦσι B* correxit Sylburg | 13 *ἔτι φθονουμένη* maluit Stephanus *ἐπιφανῶς*

φθονουμένη Reiske | 16 κατὰ] μετὰ maluit Sylburg | 30 νόμον ἐπικυρωθῆναι *B*.

289, 2 ἐπικουρεῖσθαι libri, correxit Gelenius | 6 λόγος libri, quod correxi | 10 πρὸς om. *Ba*; πρὸς τὰ ὅπλα melius abessent | 17 παραληφθέντων om. *B* | 24 παρῄεσαν mavolt Sintenis l. l. III p. 12 | 26 δυναμένῳ ante λόγῳ inserere voluit Stephanus.

290, 2 ὑπ' delevi cum *A* Porto | 14 ὅπλα περιγινομένης *B* | αὐτοῖς *AB* | 19 ἐπὶ δὲ] ἐπειδὴ *AB* | 24 εἶναι *B* | ἀφ' ἑαυτῶν maluit Sylburg | 26 τῶν om. *B* | ἐσχάτων scripsi αἰσχίστων libri | κινδύνων add. *B* | 29 ἐχρῆτο *B* ἔδωκε κρίνειν *A* | 31 ὅτε *A* ὁτὲ *B* | 32 ἀνίσους *AB*.

291, 2 καταλιπόντες libri, corr. Reiske | 20 παροῦσα libri, corr. Sintenis l. l. II p. 4 | καὶ ὀττείαις om. *Ba* | 23 ἐπεί, quod om. *Ba*, delevi | 26 ποτε add. *B* | 27 περίεστιν libri περιττόν ἐστιν Sintenis l. l. II p. 4.

292, 6 προβουλεύσῃ Sintenis l. l. II p. 4 | 8 οὐδὲν *AB*, correxit Reiske | 12 δὴ om. *B* | 19 πρὸς Ἀππίου maluit Sylburg | 21 ἂν add. *B* | 32 ἔδωκαν addidi ex *A*.

293, 3 πάντων libri | 8 ᾧ pro ὡς malim cum Porto | 10 ἔτι] εἶχε *AB* | 11 λοχῖτιν] κουριάτην maluit Reiske | ἐκκλησίαν *A* ἐξουσίαν *B* | τὴν φυλετικὴν maluit Reiske | 18 τινι? | 19 τῶν καθ' ὑμᾶς *Bb* | οἱ σοὶ *ABa* οσοι *Bb* | 32 πᾶσα om. *B*.

294, 17 δυναμένη σε *B* | 19 ἕξομαι Cobet Var. Lect. p. 41 | 26 τὸν ἄλλον ὄχλον *A* | 29 ἀπάγειν addidi ex *A*.

295, 20 καὶ γὰρ ὁ *A*.? | 24 αὐτοῦ om. *B* | 30 ἀντεῖχεν libri, quod correxi.

296, 16 ὑπὸ maluit Sylburg | 20 μὲν addidi ex *A*.

297, 4 ταραχῆς *ABb* τῆς τύχης *Ba* ut videtur | 23 διατρίψας *AB* | 25 συνελθοῦσα libri, correxit Reiske | 27 στρατιᾷ *ABa* | 32 οἱ μὲν erasa a *Bb* | ῥίψαντες οἱ δὲ τὴν τάξιν om. *B*.

298, 17 οἱ add. *B* | 20 τῇ πατρίῳ Reiske, om. *B*; τῇ *A* | 29 δωδεκάδος *A*.

299, 19 τῇ βασιλείᾳ maluit Sylburg | 24 ἀναιρούμενος *A* Casaubonus | πρὸς *AB*, correxit Stephanus | 25 προσθήσειν *AB* | 27 τῇ ἐπικυρώσει maluit Reiske | 28

συναιρεῖσθαι libri, correxit Reiske | 29 *παρῆσαν* mavolt Sintenis l. l. III p. 12.

300, 8 *ἠξίουν B* | 13 *τῆς* add. Reiske | 15 *ἀπέφαινεν B* | 16 *οἰκῶν* maluit Reiske | 17 *καθηται* intercidisse suspicatus est Reiske | *ὄχλος* addidi ex *A* | 18 *δὲ* om. *AB* | 19 *πατρίοις B* | 20 *καὶ* addidi ex *A* | 21 *χρηματων* libri, correxit Sylburg; *χρημάτων πρὸς ἃ μ.* maluit Reiske | 22 *ἀνάγκη* ante *ἢ* inserere voluit Reiske | 24 *οὐδενὶ εὐτυχῆ* Reiske.

301, 2 *πράγματα* om. *B* | 4 *εἰς χρόνον ἕτερον καὶ διάγνωσιν* maluit Stephanus | 8 *λαβόντες* libri, correxit Reiske; *λαβόντες ὑπατείαν* maluit Sylburg | 12 *αὐτοῖς AB* | 13 *συνεφέρετο A συνέφερε τῷ B*, quod correxi *κοινῷ* addendo | 32 *οὗτός τε AB*.

302, 1 *τὸ* om. *B* | *δοκοῦν νῦν ἔτι* maluit Reiske | 2 *μεταδιδόναι* addidi auctore Reiskio | 5 *μέχρι παντὸς προιὸν* maluit Reiske | 16 *ἐν ταῖς διανομαῖς* add. *B* | 20 *ἐβουλόμην δ' ἂν B* | 21 *οἱ* om. *B* | 24 *πλείω* add. *B* | 27 *σύμπασαι πάντων βασιλέων* maluit Reiske | 29 *τε B τι A γε* Reiske.

303, 1 *δεῖ* om. *Ba* | 3 *ἔθη* libri, correxit Sylburg sive *νῦν γὰρ ὁρᾶτε* sive *ὁρᾶτε* maluit Portus | 12 *κράτος* scripsi *πάθος* libri; *τρόπαιον* Casaubonus *κλέος* Reiske | 13 *ὑμετέροις AB* | 15 *αἱ* om. *AB* | 16 *κατασφαγης B* | *ὑμετέρων AB* | 23 *στήθεσιν?* | *ἐνοικεῖ?* | 28 *ἡλίκα* add. *B* | 29 *τὸ πανοῦργως σοφὸν AB*; *σοφὸν* delevi | 31 *μηδενὸς B* | *εὐπειθεῖν A*.

304, 5 *κοινοῦ ABa* ut videtur | 14 *τιμωρήσωνται ABb*.

305, 5 *αὐτὸν A*, quod correxi, om. *B* | 11 *διεχρήσατο* Reiske et fortasse *Ba*, *διεχειρίσατο ABb* | 21 *ἠνέσχετο τὴν ὕβριν οὐδὲ περιεῖδεν ἄτιμον?*

306, 4 *προιόντι* libri, quod correxi | 5 *ἐξ αἰθρίου A* | 8 *τε* add. *B* | 10 *ἔτι* Sintenis l. l. III p. 29 *ὅτι B*, om. relicui | 11 *γῆν ἐξ αὐτῶν ABa* | 21 *τε οἱ ἡγεμόνες τοὺς ἑαυτῶν ἐκήδευσαν καὶ B* | 28 *παρμενίτης B* | 29 *δὲ* delevi cum *A* | 30 *Νομενταν̣ὸς AB*. correxit Gelenius.

307, 2 *ἐξ ἐφόδου* add. *B* | 32 *ἑάλω* om. *AB*, add. *Cm*.

308, 14 *ἑκατέρων Bb* | 15 *στρατιὰ* libri, corr. Sylburg | 18 *Τίτου* om. libri, add. Sylburg | *Καπετωλίου AB* | 22 *στρατίαν* libri, corr. Sylburg | 32 *στρατιὰ* libri, corr. Sylburg.

309, 11 *πάντα* libri | 14 *ἀεὶ δὲ* Reiske | 15 *τοῖς ἐπὶ ταῖς ἐφεδρίαις A τοῖς σφετέροις B* | 24 *ὁ μάλιστα ἔκαμνεν* maluit Sylburg; *ἔκαμνεν Ba* | 30 *ἀληθῆ Bb.*

310, 6 *οἱ* om. *ABa* | 12 *ἑταίρων* maluerat Sylburg | 19 *νεκρῶν* add. *B* | 21 *τῶν* om. *B.*

311, 10 *τε* om. *B* | *ἅμα* om. *B* | 11 *καὶ* add. *B.* | 13 *οὖν* om. *B* | 15 *τε* add. *B* | 29 *ἐγκρατεῖς καὶ* om. *B* | *ἐγκατελείφθη AB.*

312, 1 *παρεσκευασάμενος Ba* | 6 *ἀποδρασμὸν?* | 14 *ὑπὸ Ῥωμαίων* abesse malim | 23 *Κρέμερα AB.*

313, 1 *φρούριος AB* | 2 *οὐκ ἀγαπῶσι* scripsi *οὐκ ἀγὼν πᾶσιν ἀλλὰ A οὐκ ἀγὼν πᾶσι B οὐκ ἀγὰν ἀσπαστὴ* Reiske | 4 *ὀλίγων γε* maluit Reiske | 5 *ὁ* om *B* | 10 *στρατια* libri, corr. Sylburg | 31 *παραγγέλλῃ* libri, corr. Sylburg | 32 *αὐτὰς* delevi.

314, 3 *οἱ* addidi | 4 *λαουίνιος AB* | 10 *ἀφορισθέντα ABb ἀφεριθέντα Ba* ut videtur, quod correxi | 22 *ἑλόμενοι] ἀπέστειλαν? ἀπέστειλαν* post *ποιησάμενος* inserere volt Sintenis l. l. III p. 6 | 26 *εἰς* add. *B* | 32 *ἐκδότους αἰτεῖν* libri *ἐκδ. παραλαβεῖν* Reiske *ἐκδ. ἄγειν* Sintenis l. l. III p. 6.

315, 1 *οἱ* add. *B* | 5 *ἐν τῷ πεδίῳ* libri, correxit Sintenis l. l. I p. 28 | 6 *αὐτὸν* libri *αὐτῶν* Sylburg | 11 *τόπων Ba* | *δημοσίων τε καὶ ἱερῶν* libri, corr Sintenis l. l. III p. 7 | 12 *πλήρη δρῶν* om libri, add. Sintenis l. l. III p. 7 | 16 *ἀπήγγελλε B* | 28 *Κυίντιος B.*

316, 3 *ἐπ' ἐκείνου* maluit Portus | 4 *δὲ* inserui ex *A* | 11 *ἰουλανὸς B βωλανὸς A,* corr. Sylburg | 26 *τὸ* om. *B.*

317, 9 *κρατίστην* om. *B* | 31 *φρούριον AB.*

318, 3 *ἐπὶ τῆς βουλῆς* vel *ἐπὶ τῇ βουλῇ* maluit Reiske | 8 *καὶ* om. *B* | 24 *φρούριον AB* | 26 *εἰς τὴν Ἐρνίκων* libri, corr. Gelenius | 27 *ὤφθησάν τε καὶ εἶδον?*

319, 27 *ἐπέφωσκε* c. Dindorf. in Steph. Thes. s. v

διεπιφώσκω; malim *διέφωσκε* | 31 *ἔμενον* libri, corr. Sylburg | 32 *καὶ* addidi.

320, 2 *αὐτοὺς AB* | 5 *βελῶν ἀπὸ* om. *B* | *τοξοτῶν* libri, corr. Sylburg | 13 *τεταγμένους* om. *B* | 15 *λήμματος Bb* | *τε* om. *B* | 16 *ἐκφερόμενος* maluit Reiske.

321, 13 *οἱ* add. *B* | 15 *ἀπερύκειν ABb ἀπο .. ου.ειν Ba*, unde effeci *ἀποκρούειν* | 22 *ἐγένετο ABa* | 32 *γε* add. *B*.

322, 3 *μένοντας* libri, corr. Sylburg | 11 *τὰς ἐσχάτας ἔσχον ABb παρέσχον Ba* ut videtur | *ἀπαλλαγέντες* libri, correxit Reiske | 13 *πολεμουμένοις* libri, quod correxi | 22 *ἤδη διεσκεδασμένοι A* om. *B*, correxit Reiske | 24 *δὲ* maluit Sylburg | 26 *ἀποληφθέντες B* | *αὐτοὶ* c. Sylburg | 28 *πελάσαντες* libri, correxit Hudson | 30 *μέρος* add. *B*.

323, 3 *αὐτὸν* om. *B* | 14 *μετὰ τὴν μάχην*. add. *B*. | 17 *ὑστερίσαντας ABb* | 30 *φαβίου* libri *Αἰβουτίου* Sylburg | 31 *σερουΐου* libri, corr. Sylburg | 32 *πολέμου B*.

324, 2 *ὅσης οὔπω*? | 10 *τε* libri *μὲν* Reiske, quamquam librorum scriptura fortasse defendi potest | 11 *τε* libri *δὲ* Sylburg | 21 *καιρὸν εἶναι*?

325. 14 *πολλοὺς μὲν ἀποβαλόντες τῶν σφετέρων, πολλῷ δ᾽ ἔτι πλείους ἀποκτείναντες τῶν πολεμίων* libri, quae correxi | *μὲν* add *B* | 20 *Σαβίνων* libri *Γαβίνων* scripsi coll. Liv. III 6 | 30 *ἐστιν* add. Reiske.

326, 4 *ὁ* maluit Sylburg | 7 *εἰσκυλίνων A ἰσκυλίνων Bb*, de *Ba* non mihi constat | 8 *κολλίμων ABa* | 12 *προσεχόμενον B προσκεχωμένον* maluit Reiske | 28 *γεμίνιον AB* | 32 *Τίτου* libri *Τιτίου* Gelenius.

327. 10 *φρούριος* libri; *φάβιος* ex Livio III 8 maluit Sylburg | 21 *πρῶτον* add. *B* | 23 *πύθοιτο ἕκαστος Ba* | 24 *ἡγήσεσθαι* libri, quod correxi | 30 *τε* add. *B*.

328, 9 *ἀλαλαγμῶν ABb* | *κτύπων Bb* | 17 *Οὐολούσκων* Sylburg *ἐκείνων* libri | 19 *καὶ αὐτοί*?

329, 13 *τινός A* | *ἀπ᾽ ὄχθου* maluit Reiske | 27 *τοῦ* om. Reiske | 30 *τίμια* scripsi *ταμεῖα ABb τάμια Ba τὰ τιμῆς* Sintenis l. l. I p. 28 | *πάντα* maluit Schnelle.

Corrigenda.

P. 13, 9 lege τυραννίδα, 13, 10 l. ἤδη δίκας. 19, 13 l. Σικίνιος. 23, 18 l. Σικίνιος. 37, 19 l. ἔχειν· 38, 9 l. ἐμέλλετε. 38, 18 l. ὅρους. 53, 12 l. δημαρχικὴν. 65, 3 l. ἐπιορκίαν. 71, 24 l. ἀποδεικνύναι. 80, 16 l. οὐδ'. 88, 5 l. Λατίνιε. 94, 17 l. ἐνρύθμῳ. 102, 19 l. ἀποδείκνυσθαι. 102, 21 l. ἀνθρώπων. 144, 20 l. δὲ οὔ. 115, 9 l. ἐπαγόντων. 118, 6 l. ἰδίους ἀποδεῖξαι. 124, 15 l. ἐν. 238, 3 l. λόγοις. 291, 27 l. ἀρχὰς. 309, 17 l. περιῆσαν τῶν. 314, 32 l. ἄγειν.

ΔΙΟΝΥΣΙΟΥ

ΑΛΙΚΑΡΝΑΣΕΩΣ

ΡΩΜΑΙΚΗΣ ΑΡΧΑΙΟΛΟΓΙΑΣ

ΛΟΓΟΣ ΕΒΔΟΜΟΣ.

Reiskianae editionis

p. 1307 *Τίτου δὲ Γεγανίου Μακερίνου καὶ Ποπλίου Μη-
νυκίου τὴν ὕπατον ἐξουσίαν παραλαβόντων, σίτου
σπάνις ἰσχυρὰ τὴν Ῥώμην κατέσχεν, ἐκ τῆς ἀποστά-
σεως λαβοῦσα τὴν ἀρχήν. ὁ μὲν γὰρ δῆμος ἀπέστη
1308 τῶν πατρικίων περὶ τὴν μετοπωρινὴν ἰσημερίαν, ὑπ'
αὐτὴν μάλιστα τὴν ἀρχὴν τοῦ σπόρου· ἐξέλιπον δὲ
τὴν χώραν οἱ γεωργοῦντες ἅμα τῇ κινήσει, καὶ διέ-
στησαν οἱ μὲν χαριέστεροι πρὸς τοὺς πατρικίους, τὸ
δὲ θητικὸν μέρος ὡς τοὺς δημοτικούς· καὶ διέμειναν
ἐξ ἐκείνου χωρὶς ἀλλήλων ὄντες, ἕως οὗ κατέστη καὶ
συνῆλθεν ἡ πόλις εἰς ἑαυτὴν οὐ πολλῷ πρότερον
διαλλαγεῖσα τῆς χειμερινῆς τροπῆς. τὸν δὲ μεταξὺ
χρόνον, ἐν ᾧ ὁ πᾶς ἐπιτελεῖται σπόρος ὡραῖος, ἔρημος
ἡ χώρα τῶν ἐπιμελησομένων ἦν καὶ ἐπὶ πολὺν χρό-
νον διετέλεσεν, ὥστε μηδὲ κατελθοῦσι τοῖς γεωργοῖς
ἀναλαβεῖν αὐτὴν ἔτι ῥάδιον εἶναι, δούλων τε ἀπο-
στάσει καὶ κτηνῶν ὀλέθρῳ μεθ' ὧν αὐτὴν ἔμελλον
ἐργάζεσθαι κεκακωμένοις, ἀφορμῆς τε οὐ πολλοῖς εἰς
τὸν ἐπιόντα ἐνιαυτὸν ὑπαρχούσης οὔτε σπερμάτων
οὔτε τροφῆς. ταῦτα ἡ βουλὴ μαθοῦσα πρέσβεις διέ-*

πεμπε πρὸς Τυρρηνοὺς καὶ Καμπανοὺς καὶ τὸ κα- 1309
λούμενον Πωμεντῖνον πεδίον σῖτον ὅσον ἂν δύναιντο
πλεῖστον ὠνησομένους· Πόπλιος δὲ Οὐαλέριος καὶ
Λεύκιος Γεγάνιος εἰς Σικελίαν ἀπεστάλησαν, Οὐα-
λέριος μὲν υἱὸς ὢν Ποπλικόλα, Γεγάνιος δὲ θατέρου
τῶν ὑπάτων ἀδελφός. τύραννοι δὲ τότε κατὰ πόλεις 1310
μὲν ἦσαν, ἐπιφανέστατος δὲ Γέλων ὁ Δεινομένους 1311
νεωστὶ τὴν Ἱπποκράτους τοῦ ἀδελφοῦ τυραννίδα παρ- 1312
ειληφώς, οὐχὶ Διονύσιος ὁ Συρακούσιος, ὡς Λικίν- 1313
νιος γέγραφε καὶ Γέλλιος καὶ ἄλλοι συχνοὶ τῶν Ῥω-
μαίων συγγραφέων, οὐθὲν ἐξητακότες τῶν περὶ τοὺς
χρόνους ἀκριβῶς, ὡς αὐτὸ δηλοῖ τοὔργον, ἀλλ' εἰκῇ
τὸ προστυχὸν ἀποφαινόμενοι. ἡ μὲν γὰρ εἰς Σικελίαν
ἀποδειχθεῖσα πρεσβεία κατὰ τὸν δεύτερον ἐνιαυτὸν
τῆς ἑβδομηκοστῆς καὶ δευτέρας ὀλυμπιάδος ἐξέπλευ-
σεν ἄρχοντος Ἀθήνησιν Ὑβριλίδου, ἑπτακαίδεκα
διελθόντων ἐτῶν μετὰ τὴν ἐκβολὴν τῶν βασιλέων,
ὡς οὗτοί τε καὶ οἱ ἄλλοι σχεδὸν ἅπαντες συγγραφεῖς
ὁμολογοῦσι· Διονύσιος δὲ ὁ πρεσβύτερος ὀγδοηκο-
στῷ καὶ πέμπτῳ μετὰ ταῦτα ἔτει Συρακουσίοις ἐπα-
ναστάς, κατέσχε τὴν τυραννίδα κατὰ τὸν τρίτον
ἐνιαυτὸν τῆς ἐνενηκοστῆς καὶ τρίτης ὀλυμπιάδος
ἄρχοντος Ἀθήνησι Καλλίου τοῦ μετ' Ἀντιγένη. ὀλί-
γοις μὲν οὖν ἔτεσι διαμαρτεῖν τῶν χρόνων δοίη τις
ἂν ἱστορικοῖς ἀνδράσιν ἀρχαίας καὶ πολυετεῖς
συνταττομένοις πραγματείας, γενεαῖς δὲ δυσὶν ἢ
τρισὶν ὅλαις ἀποπλανηθῆναι τῆς ἀληθείας οὐκ ἂν
ἐπιτρέψειεν. ἀλλ' ἔοικεν ὁ πρῶτος ἐν ταῖς χρονογρα- 1314
φίαις τοῦτο καταχωρίσας, ᾧ πάντες ἠκολούθησαν οἱ
λοιποί, τοσοῦτο μόνον ἐν ταῖς ἀρχαίαις εὑρὼν ἀνα-
γραφαῖς, ὅτι πρέσβεις ἀπεστάλησαν ἐπὶ τούτων τῶν
ὑπάτων εἰς Σικελίαν σῖτον ὠνησόμενοι καὶ παρῆσαν

ἐκεῖθεν ἄγοντες ἣν ὁ τύραννος ἔδωκε δωρεάν, οὐκέτι μὴν παρὰ τῶν Ἑλληνικῶν ἐξετάσαι συγγραφέων ὅστις ἦν τύραννος τότε Σικελίας, ἀβασανίστως δέ πως καὶ κατὰ τὸ προστυχὸν θεῖναι τὸν Διονύσιον.

II. Οἱ μὲν οὖν ἐπὶ Σικελίαν πλέοντες πρέσβεις χειμῶνι χρησάμενοι κατὰ θάλατταν καὶ κύκλῳ τὴν νῆσον περιπλεῖν ἀναγκασθέντες, χρόνιοί τε κατήχθησαν πρὸς τὸν τύραννον, καὶ τὴν χειμερινὴν ἐκεῖ διατρίψαντες ὥραν μετὰ [τὸ] θέρος ἐπανῆλθον εἰς Ἰταλίαν πολλὰς κομίζοντες ἀγοράς. οἱ δ' εἰς τὸ Πωμεντῖνον ἀποσταλέντες πεδίον, ὀλίγου μὲν ἐδέησαν ὡς κατάσκοποι πρὸς τῶν Οὐολούσκων ἀναιρεθῆναι διαβληθέντες ὑπὸ τῶν ἐκ Ῥώμης φυγάδων, χαλε-
1315 πῶς δὲ πάνυ διὰ τὴν προθυμίαν τῶν ἰδίων ξένων αὐτὰ διασῶσαι δυνηθέντες τὰ σώματα, δίχα τῶν χρημάτων ἀνέστρεψαν εἰς τὴν Ῥώμην ἄπρακτοι. ὅμοια δὲ τούτοις συνέβη παθεῖν καὶ τοῖς εἰς τὴν Ἰταλιῶτιν ἀφικομένοις Κύμην. καὶ γὰρ ἐν ταύτῃ τῇ πόλει πολλοὶ Ῥωμαίων διατρίβοντες, οἱ σὺν τῷ βασιλεῖ Ταρκυνίῳ διασωθέντες ἐκ τῆς τελευταίας μάχης φυγάδες, τὸ μὲν πρῶτον ἐξαιτεῖσθαι παρὰ τοῦ τυράννου τοὺς ἄνδρας ἐπεχείρησαν ἐπὶ θανάτῳ· ἀποτυχόντες δὲ τούτου ῥύσια κατασχεῖν ταῦτα τὰ σώματα παρὰ τῆς ἀπεσταλκυίας πόλεως ἠξίουν, ἕως ἀπολάβωσι τὰς ἑαυτῶν οὐσίας, ἃς ἔφασαν ὑπὸ Ῥωμαίων ἀδίκως δεδημεῦσθαι, καὶ ταύτης ᾤοντο δεῖν τῆς δίκης τὸν τύραννον αὐτοῖς γενέσθαι κριτήν. ὁ δὲ τυραννῶν τότε τῆς Κύμης Ἀριστόδημος ἦν ὁ Ἀριστοκράτους, ἀνὴρ οὐ τῶν ἐπιτυχόντων ἕνεκα γένους, ὃς ἐκαλεῖτο Μαλακὸς ὑπὸ τῶν ἀστῶν καὶ σὺν χρόνῳ γνωριμωτέραν τοῦ ὀνόματος ἔσχε τὴν ἐπίκλησιν, εἴθ'
1316 ὅτι θηλυδρίας ἐγένετο παῖς ὢν καὶ τὰ γυναιξὶν ἁρ-

μόττοντα ἔπασχεν ὡς ἱστοροῦσί τινες, εἴθ' ὅτι πρᾷος ἦν φύσει καὶ μαλακὸς εἰς ὀργήν, ὡς ἕτεροι γράφουσιν. ἀφορμαῖς δὲ τῆς τυραννίδος ὁποίαις ἐχρήσατο, καὶ τίνας ἦλθεν ἐπ' αὐτὴν ὁδούς, καὶ πῶς διῴκησε τὰ κατὰ τὴν ἀρχήν, καταστροφῆς τε ὁποίας ἔτυχεν, οὐκ ἄκαιρον εἶναι δοκῶ μικρὸν ἐπιστήσας τὴν Ῥωμαϊκὴν διήγησιν κεφαλαιωδῶς διεξελθεῖν.

III. *Ἐπὶ τῆς ἑξηκοστῆς καὶ τετάρτης ὀλυμπιάδος ἄρχοντος Ἀθήνησι Μιλτιάδου Κύμην τὴν ἐν Ὀπικοῖς Ἑλληνίδα πόλιν, ἣν Ἐρετριεῖς τε καὶ Χαλκιδεῖς ἔκτισαν, Τυρρηνῶν [δὲ] οἱ περὶ τὸν Ἰόνιον κόλπον κατοικοῦντες ἐκεῖθέν θ' ὑπὸ τῶν Κελτῶν ἐξελαθέντες σὺν χρόνῳ, καὶ σὺν αὐτοῖς Ὀμβρικοί τε καὶ Δαύνιοι καὶ συχνοὶ τῶν ἄλλων βαρβάρων ἐπεχείρησαν ἀνε-* 1317
λεῖν, οὐδεμίαν ἔχοντες εἰπεῖν τοῦ μίσους δικαίαν πρόφασιν ὅτι μὴ τὴν εὐδαιμονίαν τῆς πόλεως. ἦν γὰρ [ἡ] Κύμη κατ' ἐκείνους τοὺς χρόνους περιβόητος ἀνὰ τὴν Ἰταλίαν ὅλην πλούτου τε καὶ δυνάμεως καὶ τῶν ἄλλων ἀγαθῶν ἕνεκα, γῆν τε κατέχουσα τῆς Καμπανῶν πεδιάδος τὴν πολυκαρποτάτην, καὶ λιμένων κρατοῦσα τῶν περὶ Μισηνὸν ἐπικαιροτάτων. τούτοις ἐπιβουλεύσαντες τοῖς ἀγαθοῖς οἱ βάρβαροι στρατεύουσιν ἐπ' αὐτήν, πεζοὶ μὲν οὐκ ἐλάττους πεντήκοντα μυριάδων, ἱππεῖς δὲ δυεῖν χιλιάδων ἀποδέοντες εἶναι δισμύριοι. ἐστρατοπεδευκόσι δ' αὐτοῖς οὐ μακρὰν ἀπὸ τῆς πόλεως τέρας γίνεται θαυμαστόν, οἷον ἐν οὐδενὶ χρόνῳ μνημονεύεται γενόμενον οὔθ' Ἑλλάδος οὔτε βαρβάρου γῆς οὐδαμόθι. οἱ γὰρ παρὰ τὰ στρατόπεδα ῥέοντες αὐτῶν ποταμοί, Οὐολτοῦρνος ὄνομα θατέρῳ, τῷ δ' ἑτέρῳ Γλάνις, ἀφέντες τὰς κατὰ φύσιν ὁδοὺς ἀνέστρεψαν τὰ νάματα, καὶ μέχρι πολλοῦ διετέλεσαν ἀπὸ τῶν στομάτων ἀναχωροῦντες ἐπὶ

1318 τὰς πηγάς. τοῦτο καταμαθόντες οἱ Κυμαῖοι τότε ἐθάρρησαν ὁμόσε τοῖς βαρβάροις χωρεῖν, ὡς τοῦ δαιμονίου ταπεινὰ μὲν τἀκείνων μετέωρα θήσοντος, ὑψηλὰ δὲ τὰ δοκοῦντα εἶναι τότε σφῶν ταπεινά. νείμαντες δὲ τὴν ἐν ἀκμῇ δύναμιν ἅπασαν τριχῇ, μιᾷ μὲν τὴν πόλιν ἐφρούρουν, τῇ δ' ἑτέρᾳ τὰς ναῦς εἶχον ἐν φυλακῇ, τῇ δὲ τρίτῃ πρὸ τοῦ τείχους ταξάμενοι τοὺς ἐπιόντας ἐδέχοντο. τούτων ἱππεῖς μὲν ἦσαν ἑξακόσιοι, πεζοὶ δὲ τετρακισχίλιοι καὶ πεντακόσιοι· καὶ οὕτως ὄντες τὸν ἀριθμὸν ὀλίγοι τὰς τοσαύτας ὑπέστησαν μυριάδας.

IIII. Ὡς δὲ κατέμαθον αὐτοὺς οἱ βάρβαροι μάχεσθαι παρεσκευασμένους, ἀλαλάξαντες ἐχώρουν ὁμόσε τὸν βάρβαρον τρόπον ἄνευ κόσμου πεζοί τε καὶ ἱππεῖς ἀναμὶξ ὡς ἅπαντας ἀναρπασόμενοι. ἦν δὲ τὸ πρὸ τῆς πόλεως χωρίον, ἐν ᾧ συνέμισγον ἀλλήλοις, αὐλὼν στενὸς ὄρεσι καὶ λίμναις περικλειόμενος, τῇ μὲν ἀρετῇ τῶν Κυμαίων σύμμαχος, τῷ δὲ πλήθει τῶν βαρβάρων πολέμιος. ἀνατρεπόμενοι γὰρ ὑπ' ἀλλήλων καὶ συμπατούμενοι πολλαχῇ μὲν καὶ ἄλλῃ,
1319 μάλιστα δὲ περὶ τὰ τέλματα τῆς λίμνης, οὐδ' εἰς χεῖρας ἐλθόντες τῇ φάλαγγι τῶν Ἑλλήνων αὐτοὶ δι' αὑτῶν οἱ πλείους διεφθάρησαν· καὶ ὁ μὲν πεζὸς αὐτῶν στρατὸς ὁ πολὺς περὶ ἑαυτῷ σφαλείς, ἔργον δὲ γενναῖον οὐδὲν ἀποδειξάμενος, ἄλλος ἄλλῃ διασκεδασθεὶς ἔφευγεν· οἱ δ' ἱππεῖς συνῆλθον μὲν ὁμόσε, καὶ πολὺν τοῖς Ἕλλησιν οὗτοι παρέσχον πόνον. ἀδύνατοι δὲ ὄντες κυκλώσασθαι τοὺς πολεμίους διὰ στενοχωρίαν, καί τι καὶ τοῦ δαιμονίου κεραυνοῖς καὶ ὕδασι καὶ βρονταῖς συναγωνισαμένου τοῖς Ἕλλησι, δείσαντες εἰς φυγὴν τρέπονται. ἐν ταύτῃ τῇ μάχῃ πάντες μὲν οἱ τῶν Κυμαίων ἱππεῖς λαμπρῶς ἠγωνίσαντο, καὶ

τῆς νίκης οὗτοι μάλιστα ὡμολογοῦντο αἴτιοι γενέ-
σθαι, ὑπὲρ ἅπαντας δὲ τοὺς ἄλλους Ἀριστόδημος ὁ
Μαλακὸς ἐπικαλούμενος· καὶ γὰρ τὸν ἡγεμόνα τῶν
πολεμίων οὗτος ἀπέκτεινε μόνος ὑποστὰς καὶ ἄλλους
πολλοὺς καὶ ἀγαθούς. λυθέντος δὲ τοῦ πολέμου τὰς χα-
ριστηρίους θυσίας ἀποδόντες οἱ Κυμαῖοι τοῖς θεοῖς καὶ
ταφὰς τῶν ἀποθανόντων ἐν τῇ μάχῃ λαμπρὰς ποιη- 1320
σάμενοι, περὶ τῶν ἀριστείων, ὅτῳ χρὴ τὸν πρῶτον
ἀποδοῦναι στέφανον, εἰς πολλὴν κατέστησαν ἔριν.
οἱ μὲν γὰρ ἀκέραιοι κριταὶ τὸν Ἀριστόδημον ἐβού-
λοντο τιμῆσαι, καὶ ἦν ὁ δῆμος ἅπας μετ' ἐκείνου· οἱ
δὲ δυνατοὶ τὸν ἱππάρχην Ἱππομέδοντα, καὶ ἡ βουλὴ
πᾶσα τούτῳ συνελάμβανεν· ἦν δ' ἀριστοκρατικὴ τότε
παρὰ τοῖς Κυμαίοις ἡ πολιτεία, καὶ ὁ δῆμος οὐ πολ-
λῶν τινων κύριος. στάσεως δὲ διὰ ταύτην τὴν ἔριν
ἀνισταμένης, δείσαντες οἱ πρεσβύτεροι μὴ πρὸς ὅπλα
καὶ φόνους χωρήσῃ τὸ φιλότιμον ἔπεισαν ἀμφοτέρας
τὰς τάξεις συγχωρῆσαι τὰς ἴσας λαβεῖν τιμὰς ἑκατέ-
ρου τῶν ἀνδρῶν. ἀπὸ ταύτης γίνεται τῆς ἀρχῆς δή-
μου προστάτης ὁ Μαλακὸς Ἀριστόδημος, καὶ λόγου
πολιτικοῦ δύναμιν ἀσκήσας ἐξεδημαγώγει τὸ πλῆθος,
πολιτεύμασί τε κεχαρισμένοις ἀναλαμβάνων καὶ τοὺς
σφετεριζομένους τὰ κοινὰ τῶν δυνατῶν ἐξελέγχων καὶ
ἀπὸ τῶν ἑαυτοῦ χρημάτων πολλοὺς τῶν πενήτων εὖ 1321
ποιῶν· καὶ ἦν τοῖς προεστηκόσι τῆς ἀριστοκρατίας
διὰ ταῦτα ἐπαχθὴς καὶ φοβερός.

V. Εἰκοστῷ δ' ὕστερον ἔτει τῆς πρὸς τοὺς βαρ-
βάρους μάχης ἦλθον ὡς τοὺς Κυμαίους Ἀρικηνῶν
πρέσβεις σὺν ἱκετηρίαις ἀξιοῦντες αὐτοὺς βοηθῆσαι
σφίσιν ὑπὸ Τυρρηνῶν πολεμουμένοις. μετὰ γὰρ τὰς
διαλλαγὰς ἃς ἐποιήσατο πρὸς τὴν Ῥωμαίων πόλιν ὁ
βασιλεὺς τῶν Τυρρηνῶν Πορσίνας, τὸν υἱὸν Ἄρροντα

δοὺς τὴν ἡμίσειαν τῆς στρατιᾶς ἔπεμψεν ἰδίαν ἀρχὴν κτήσασθαι βουλόμενον, ὡς ἐν τοῖς πρὸ τούτου δεδήλωκα λόγοις· ὃς ἐπολιόρκει τότε τοὺς Ἀρικηνοὺς καταπεφευγότας εἰς τὸ τεῖχος καὶ οὐ διὰ μακροῦ λιμῷ τὴν πόλιν αἱρήσειν ᾤετο. ταύτης τῆς πρεσβείας ἀφικομένης οἱ προεστηκότες τῆς ἀριστοκρατίας μισοῦντες τὸν Ἀριστόδημον καὶ δεδιότες, μή τι κακὸν ἐξεργάσηται περὶ τὴν πολιτείαν, κάλλιστον ὑπέλαβον
1322 εἰληφέναι καιρὸν ἐκποδὼν αὐτὸν ποιήσασθαι σὺν εὐσχήμονι προφάσει. πείσαντες δὴ τὸν δῆμον ἀποστεῖλαι Ἀρικηνοῖς δισχιλίους ἄνδρας ἐπὶ συμμαχίαν, καὶ στρατηγὸν ἀποδείξαντες τὸν Ἀριστόδημον ὡς δὴ τὰ πολέμια λαμπρόν, τὰ μετὰ ταῦτα ἔπραττον, ἐξ ὧν ἢ κατακοπήσεσθαι μαχόμενον ὑπὸ τῶν Τυρρηνῶν αὐτὸν ὑπελάμβανον, ἢ κατὰ πέλαγος διαφθαρήσεσθαι. γενόμενοι γὰρ ὑπὸ τῆς βουλῆς κύριοι καταλέξαι τοὺς ἐπὶ τὴν συμμαχίαν ἐξελευσομένους, τῶν μὲν ἐπισήμων καὶ λόγου ἀξίων οὐδένα κατέγραψαν, ἐπιλέξαντες δὲ τοὺς ἀπορωτάτους τε καὶ πονηροτάτους τῶν δημοτικῶν, ἐξ ὧν ἀεί τινας ὑπώπτευον νεωτερισμούς, ἐκ τούτων συνεπλήρωσαν τὸν ἀπόστολον· καὶ ναῦς δέκα παλαιὰς κάκιστα πλεούσας καθελκύσαντες, ὧν ἐτριηράρχουν οἱ πενέστατοι Κυμαίων, εἰς ταύτας αὐτοὺς ἐνεβίβασαν θάνατον ἀπειλήσαντες ἐάν τις ἀπολειφθῇ τῆς στρατείας.

1323 VI. Ὁ δ' Ἀριστόδημος τοσοῦτον εἰπὼν μόνον, ὡς οὐ λέληθεν αὐτὸν ἡ διάνοια τῶν ἐχθρῶν, ὅτι λόγῳ μὲν ἐπὶ συμμαχίαν αὐτὸν ἀποστέλλουσιν, ἔργῳ δ' εἰς προὖπτον ὄλεθρον, δέχεται μὲν τὴν στρατηγίαν, ἀναχθεὶς δ' ἅμα τοῖς πρέσβεσι τῶν Ἀρικηνῶν διὰ ταχέων καὶ τὸ μεταξὺ πέλαγος ἐπιπόνως καὶ κινδυνωδῶς διανύσας ὁρμίζεται κατὰ τοὺς ἔγγιστα τῆς

Ἀρικείας αἰγιαλούς· καὶ καταλιπὼν ἐπὶ ταῖς ναυσὶ φυλακὴν ἀποχρῶσαν, ἐν τῇ πρώτῃ νυκτὶ τὴν ἀπὸ θαλάσσης ὁδὸν οὐ πολλὴν οὖσαν διανύσας, ἐπιφαίνεται τοῖς Ἀρικηνοῖς περὶ τὸν ὄρθρον ἀπροσδόκητος. θέμενος δὲ πλησίον αὐτῶν τὸν χάρακα καὶ τοὺς καταπεφευγότας εἰς τὰ τείχη πείσας προελθεῖν εἰς ὕπαιθρον, προὐκαλεῖτο τοὺς Τυρρηνοὺς εὐθὺς εἰς μάχην. γενομένης δὲ παρατάξεως καὶ ἀγῶνος καρτεροῦ οἱ μὲν Ἀρικηνοὶ βραχὺν πάνυ διαμείναντες χρόνον ἐνέκλιναν ἀθρόοι, καὶ γίνεται πάλιν εἰς τὸ τεῖχος αὐτῶν φυγή· ὁ δὲ Ἀριστόδημος σὺν τοῖς περὶ αὐτὸν λογάσι Κυμαίων ὀλίγοις οὖσι πᾶν τὸ τοῦ πο- 1324
λέμου βάρος ὑποστὰς καὶ τὸν ἡγεμόνα τῶν Τυρρηνῶν αὐτοχειρίᾳ κτείνας τρέπει τοὺς ἄλλους εἰς φυγὴν καὶ νίκην ἀναιρεῖται πασῶν λαμπροτάτην. διαπραξάμενος δὲ ταῦτα καὶ τιμηθεὶς ὑπὸ τῶν Ἀρικηνῶν πολλαῖς δωρεαῖς ἀπέπλει διὰ ταχέων, αὐτὸς ἄγγελος τοῖς Κυμαίοις τῆς αὐτοῦ νίκης βουλόμενος γενέσθαι· εἵποντο δὲ αὐτῷ πολλαὶ πάνυ τῶν Ἀρικηνῶν ὁλκάδες τὰ λάφυρα καὶ τοὺς αἰχμαλώτους τῶν Τυρρηνῶν ἄγουσαι. ὡς δὲ πλησίον ἐγένοντο τῆς Κύμης, ὁρμίσας τὰς ναῦς ἐκκλησίαν τοῦ στρατοῦ ποιεῖται, καὶ πολλὰ μὲν τῶν προεστηκότων τῆς πόλεως κατηγορήσας, πολλοὺς δὲ τῶν ἀνδραγαθησάντων κατὰ τὴν μάχην ἐπαίνους διελθὼν, ἀργύριόν τε διαδοὺς αὐτοῖς κατ᾽ ἄνδρα, καὶ τὰς παρὰ τῶν Ἀρικηνῶν δωρεὰς εἰς κοινὸν ἅπασι καταθεὶς, ἠξίου μεμνῆσθαι τῶν εὐεργεσιῶν ἂν καταπλεύσωσιν εἰς τὴν πατρίδα, καὶ ἄν τις αὐτῷ ποτε συμβαίνῃ κίνδυνος ἐκ τῆς ὀλιγαρχίας ὡς δύναμις ἑκάστῳ βοηθεῖν. ἁπάντων δὲ πολλὰς ὁμολογούν- 1325
των αὐτῷ χάριτας εἰδέναι τῆς τε ἀνελπίστου σωτηρίας ἣν δι᾽ ἐκεῖνον ἔσχον καὶ τῆς ἐπὶ τὰ οἰκεῖα οὐ

σὺν κεναῖς χερσὶν ἀφίξεως, καὶ τὰς ἑαυτῶν ψυχὰς θᾶττον ἢ τὴν ἐκείνου προήσεσθαι τοῖς ἐχθροῖς ἐπαγγειλαμένων, ἐπαινέσας αὐτοὺς ἀπέλυσε τὴν ἐκκλησίαν. καὶ μετὰ τοῦτο καλῶν εἰς τὴν αὑτοῦ σκηνὴν τοὺς πονηροτάτους ἐξ αὐτῶν καὶ κατὰ χεῖρα γενναιοτάτους, δωρεῶν τε δόσει καὶ λόγων φιλανθρωπίᾳ καὶ ταῖς ἅπαντας ἐξαπατώσαις ἐλπίσι διαφθείρας, ἑτοίμους ἔσχε συγκαταλῦσαι τὴν καθεστῶσαν πολιτείαν.

VII. Οὓς συνεργοὺς καὶ συναγωνιστὰς λαβὼν καὶ ἃ δεήσει πράττειν ἑκάστοις ὑποθέμενος, τοῖς τε αἰχμαλώτοις οὓς ἐπήγετο προῖκα δοὺς τὴν ἐλευθερίαν, ἵνα καὶ τὴν ἐκείνων εὔνοιαν προσλάβῃ, κατέπλει κε-
1326 κοσμημέναις ταῖς ναυσὶν εἰς τοὺς τῶν Κυμαίων λιμένας. οἱ δὲ τῶν στρατευομένων πατέρες τε καὶ μητέρες καὶ πᾶσα ἡ ἄλλη συγγένεια παιδία τε καὶ γαμεταὶ γυναῖκες ὑπήντων ἐξιοῦσιν αὐτοῖς μετὰ δακρύων περιπλεκόμενοι καὶ καταφιλοῦντες καὶ ταῖς ἡδίσταις ἕκαστον ἀνακαλούμενοι προσηγορίαις. καὶ ἡ ἄλλη δὲ πληθὺς ἡ κατὰ τὴν πόλιν ἅπασα χαρᾷ καὶ κρότῳ δεξιουμένη τὸν ἡγεμόνα προὔπεμπεν εἰς οἶκον ἀπιόντα. ἐφ' οἷς οἱ προεστηκότες τῆς πόλεως ἀνιώμενοι, μάλιστα δὲ οἱ τὴν στρατηγίαν αὐτῷ παραδόντες καὶ τἆλλα τὰ πρὸς τὸν ὄλεθρον μηχανησάμενοι, πονηροὺς ὑπὲρ τοῦ μέλλοντος εἶχον διαλογισμούς. ὁ δὲ διαλιπὼν ὀλίγας τινὰς ἡμέρας, ἐν αἷς τὰς εὐχὰς ἀπεδίδου τοῖς θεοῖς καὶ τὰς ὑστεριζούσας ὁλκάδας ἀνεδέχετο, ἐπειδὴ καιρὸς ἦν ἔφη βούλεσθαι τὰ πραχθέντα κατὰ τὸν ἀγῶνα πρὸς τὴν βουλὴν ἀπαγγεῖλαι καὶ τὰ ἐκ τοῦ πολέμου λάφυρα ἀποδεῖξαι. συνελθόντων δὲ τῶν ἐν τέλει κατὰ πλῆθος εἰς τὸ βουλευτή-
1327 ριον, ὁ μὲν ἐδημηγόρει παρελθὼν καὶ πάντα τὰ γενό-

μενα κατὰ τὴν μάχην διεξῄει, οἱ δὲ παρασκευασθέντος ὑπ' αὐτοῦ συνεργοὶ τῆς ἐπιθέσεως ἔχοντες ὑπὸ τοῖς ἱματίοις ξίφη κατὰ πλῆθος εἰσδραμόντες εἰς τὸ βουλευτήριον ἀποσφάττουσιν ἅπαντας τοὺς ἀριστοκρατικούς. φυγὴ δὲ μετὰ τοῦτο τῶν κατ' ἀγορὰν καὶ δρόμος, τῶν μὲν ἐπὶ τὰς οἰκίας, τῶν δὲ ἔξω τῆς πόλεως, πλὴν τῶν συνειδότων τὴν ἐπίθεσιν· οὗτοι δὲ τὴν ἄκραν καὶ τὰ νεώρια καὶ τοὺς ἐρυμνοὺς τόπους τῆς πόλεως κατελάμβανον. τῇ δ' ἐπιούσῃ νυκτὶ λύσας ἐκ τῶν δεσμωτηρίων τοὺς ἐπιθανατίους πολλοὺς ὄντας καὶ καθοπλίσας ἅμα τοῖς ἄλλοις φίλοις, ἐν οἷς ἦσαν καὶ οἱ τῶν Τυρρηνῶν αἰχμάλωτοι, φυλακὴν ἐκ τούτων καθίσταται περὶ τὸ σῶμα. ἡμέρας δὲ γενομένης συγκαλέσας τὸν δῆμον εἰς ἐκκλησίαν, καὶ πολλὴν κατηγορίαν διαθέμενος τῶν φονευθέντων ὑπ' αὐτοῦ πολιτῶν, ἐκείνους μὲν ἔφη τετιμωρῆσθαι σὺν δίκῃ πολλάκις ἐπιβουλευθεὶς ὑπ' αὐτῶν, τοῖς δὲ ἄλ- 1328
λοις πολίταις ἐλευθερίαν φέρων παρεῖναι καὶ ἰσηγορίαν καὶ ἄλλα πολλὰ ἀγαθά.

VIII. *Ταῦτ' εἰπὼν καὶ θαυμαστῶν ἅπαντας ἐμπλήσας ἐλπίδων τοὺς δημοτικοὺς δύο τὰ κάκιστα τῶν ἐν ἀνθρώποις καθίσταται πολιτευμάτων, οἷς ἅπασα χρῆται προοιμίοις τυραννίς, γῆς ἀναδασμὸν καὶ χρεῶν ἄφεσιν· τούτων δὲ τὴν ἐπιμέλειαν αὐτὸς ἀμφοτέρων ὑπισχνεῖται ποιήσεσθαι στρατηγὸς ἀποδειχθεὶς αὐτοκράτωρ, ἕως ἐν ἀσφαλεῖ τὰ κοινὰ γένηται καὶ δημοκρατικὴν καταστήσωνται πολιτείαν. ἀσμένως δὲ τοῦ δημοτικοῦ καὶ πονηροῦ πλήθους τὴν ἁρπαγὴν τῶν ἀλλοτρίων δεξαμένου, λαβὼν τὴν αὐτοκράτορα ἀρχὴν αὐτὸς παρ' ἑαυτοῦ ἕτερον ἐπιφέρει βούλευμα, δι' οὗ παρακρουσάμενος αὐτοὺς ἁπάντων ἀφείλετο τὴν ἐλευθερίαν. σκηψάμενος γὰρ ὑπο-* 1329

πτεύειν ταραχὰς καὶ ἐπαναστάσεις ἐκ τῶν πλουσίων
εἰς τοὺς δημοτικοὺς διὰ τὸν ἀναδασμὸν τῆς γῆς καὶ τὰς
τῶν δανείων ἀφέσεις, ἵνα μὴ γένοιτο πόλεμος ἐμφύ-
λιος μηδὲ φόνοι πολιτικοὶ μίαν εὑρίσκειν ἔφη πρὶν
εἰς τὰ δεινὰ ἐλθεῖν φυλακήν, εἰ τὰ ὅπλα προενεγκόν-
τες ἐκ τῶν οἰκιῶν ἅπαντες τοῖς θεοῖς καθιερώσειαν,
ἵνα κατὰ τῶν ἔξωθεν ἐπιόντων πολεμίων ἔχοιεν αὐ-
τοῖς ὅταν ἀνάγκη τις καταλάβῃ χρῆσθαι καὶ μὴ καθ'
ἑαυτῶν, κεῖσθαι δ' αὐτὰ τέως παρὰ τοῖς θεοῖς ἐν
καλῷ. ὡς δὲ καὶ τοῦτ' ἐπείσθησαν, αὐθημερὸν
ἀπάντων παρελόμενος Κυμαίων τὰ ὅπλα [καὶ] ταῖς
ἑξῆς ἡμέραις ἔρευναν ἐποιεῖτο τῶν οἰκιῶν, ἐν αἷς
πολλοὺς καὶ ἀγαθοὺς ἀποκτείνας τῶν πολιτῶν, ὡς
οὐχ ἅπαντα τοῖς θεοῖς ἀποδείξαντας τὰ ὅπλα, μετὰ
ταῦτα φυλακαῖς τρισὶ κρατύνεται τὴν τυραννίδα·
ὧν ἣν μία μὲν ἐκ τῶν ῥυπαρωτάτων τε καὶ πονηροτά-
1330 των πολιτῶν μεθ' ὧν κατέλυσε τὴν ἀριστοκρατικὴν
πολιτείαν, ἑτέρα δὲ ἐκ τῶν ἀνοσιωτάτων δούλων οὓς
αὐτὸς ἠλευθέρωσεν ἀποκτείναντας τοὺς αὐτῶν δε-
σπότας, τρίτη δὲ μισθοφόρος ἐκ τῶν ἀγριωτάτων βαρ-
βάρων· οὗτοι δισχιλίων οὐκ ἐλάττους ἦσαν καὶ τὰ
πολέμια μακρῷ τῶν ἄλλων ἀμείνους. ὧν δὲ ἀπέ-
κτεινεν ἀνδρῶν τὰς εἰκόνας ἀνελὼν ἐκ παντὸς ἱεροῦ
καὶ βεβήλου τόπου, φέρων εἰς τοὺς αὐτοὺς τόπους
τὰς ἰδίας ἀντ' ἐκείνων ἀνέστησεν· οἰκίας δὲ αὐτῶν
καὶ κλήρους καὶ τὴν λοιπὴν ὕπαρξιν ἀναλαβών, ἐξε-
λόμενος χρυσὸν καὶ ἄργυρον καὶ εἴ τι ἄλλο τυραννίδος
ἦν ἄξιον κτῆμα, τὰ λοιπὰ τοῖς συγκατασκευάσασι τὴν
ἀρχὴν ἐχαρίσατο· πλείστας δὲ καὶ μεγίστας δωρεὰς τοῖς
ἀποκτείνασι τοὺς ἑαυτῶν δεσπότας ἐδίδου· οἱ δ' ἠξίουν
ἔτι καὶ γυναιξὶ τῶν δεσποτῶν καὶ θυγατράσι συνοικεῖν.

VIIII. Γενεὰν δὲ τῶν πεφονευμένων τὴν ἄρρενα

κατ᾽ ἀρχὰς ἐν οὐθενὶ λόγῳ ποιησάμενος, ὕστερον
εἴτ᾽ ἐκ θεοπροπίου τινὸς εἴτε καὶ κατὰ τὸν εἰκότα
λογισμὸν οὐ μικρὸν αὑτῷ δέος ἐπιτρέφεσθαι νομίσας 1331
ἐπεχείρησε μὲν ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ πάσαν ἀπολέσαι· δεή-
σει δὲ πολλῇ χρησαμένων ἁπάντων, παρ᾽ οἷς ἔτυχον
αἵ τε μητέρες αὐτῶν οὖσαι καὶ οἱ παῖδες τρεφόμενοι,
χαρίσασθαι βουλόμενος αὐτοῖς καὶ ταύτην τὴν δω-
ρεάν, θανάτου μὲν ἀπολύει παρὰ γνώμην, φυλακὴν
δὲ ποιούμενος αὐτῶν, μή τι συστάντες μετ᾽ ἀλλήλων
βουλεύσωσι κατὰ τῆς τυραννίδος, ἀπιέναι πάντας
ἐκέλευσεν ἐκ τῆς πόλεως ἄλλον ἄλλῃ καὶ δίαιταν
ἔχειν ἐν τοῖς ἀγροῖς μηθενὸς τῶν προσηκόντων ἐλευ-
θέροις παισὶ μήτε ἐπιτηδεύματος μήτε μαθήματος
μεταλαμβάνοντας, ἀλλὰ ποιμαίνοντάς τε καὶ τἆλλα
τὰ κατὰ τοὺς ἀγροὺς ἔργα πράττοντας· θάνατον
ἀπειλήσας εἴ τις ἐξ αὐτῶν εὑρεθείη παρελθὼν εἰς
τὴν πόλιν. οἱ δὲ καταλιπόντες τὰς πατρῴας ἑστίας
ἐν τοῖς ἀγροῖς ὥσπερ δοῦλοι διετρέφοντο τοῖς ἀπο-
κτείνασι τοὺς πατέρας αὐτῶν λατρεύοντες. ἵνα δὲ
μηδὲ τῶν ἄλλων πολιτῶν ἐν μηθενὶ γένηται μήτε
γενναῖον μήτε ἀνδρῶδες φρόνημα, πᾶσαν ἐκθηλῦναι
ταῖς ἀγωγαῖς τὴν ἐπιτρεφομένην νεότητα τῆς πόλεως 1332
ἐπεβάλετο, ἀνελὼν μὲν τὰ γυμνάσια καὶ τὰς ἐνο-
πλίους μελέτας, ἀλλάξας δὲ τὴν δίαιταν ᾗ πρότερον
οἱ παῖδες ἐχρῶντο. κομᾶν τε γὰρ τοὺς ἄρρενας ὥσπερ
τὰς παρθένους ἐκέλευσε ξανθιζομένους καὶ βο-
στρυχιζομένους καὶ κεκρυφάλοις τὰς πλοκαμίδας ἀνα-
δοῦντας, ἐνδύεσθαί τε ποικίλους καὶ ποδήρεις χιτω-
νίσκους, καὶ χλανιδίοις ἀμπέχεσθαι λεπτοῖς καὶ
μαλακοῖς, καὶ δίαιταν ἔχειν ὑπὸ σκιαῖς· ἠκολούθουν
τε αὐτοῖς εἰς τὰ διδασκαλεῖα τῶν ὀρχηστῶν καὶ αὐ-
λητῶν καὶ τῶν παραπλησίων τούτοις μουσοκολάκων

παραπορευόμεναι παιδαγωγοὶ γυναῖκες σκιάδεια καὶ
ῥιπίδας κομίζουσαι, καὶ ἔλουον αὐτοὺς αὗται κτένας
εἰς τὰ βαλανεῖα φέρουσαι καὶ μύρων ἀλαβάστρους
1333 καὶ κάτοπτρα. τοιαύτῃ διαφθείρων ἀγωγῇ τοὺς παῖ-
δας ἕως ἐκπληρώσωσιν εἰκοστὸν ἔτος, τὸν ἀπὸ τοῦδε
χρόνον εἰς ἄνδρας εἴα τελεῖν. πολλὰ δὲ καὶ ἄλλα Κυ-
μαίοις ἐνυβρίσας καὶ λωβησάμενος, καὶ οὔτε ἀσελ-
γείας οὔτε ὠμότητος οὐδεμιᾶς ἀποσχόμενος, ὅτε ἀσφα-
λῶς κατέχειν ὑπελάμβανε τὴν τυραννίδα γηραιὸς
ὢν ἤδη, δίκας ἔτισεν οὐ μεμπτὰς θεοῖς τε καὶ ἀν-
θρώποις πρόρριζος ἀπολόμενος.

X. Οἱ δ' ἐπαναστάντες αὐτῷ καὶ τὴν πόλιν
ἐλευθερώσαντες ἀπὸ τῆς τυραννίδος οἱ παῖδες τῶν
πεφονευμένων ὑπ' αὐτοῦ πολιτῶν ἦσαν, οὓς κατ'
ἀρχὰς ἅπαντας ἀποκτεῖναι ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ προελόμενος,
ἐπέσχεν ὥσπερ ἔφην ὑπὸ τῶν σωματοφυλάκων οἷς
ἔδωκε τὰς μητέρας αὐτῶν ἐκλιπαρηθείς, καὶ κατ'
ἀγροὺς κελεύσας διατρίβειν. ὀλίγοις δὲ ἔτεσιν ὕστε-
ρον, ἐπειδὴ τὰς κώμας διεξιὼν πολλὴν καὶ ἀγαθὴν
εἶδεν αὐτῶν νεότητα, δείσας μὴ συμφρονήσαντες
ἐπαναστῶσιν αὐτῷ φθάσαι διαχειρισάμενος ἅπαντας
1334 ἐβούλετο πρὶν αἰσθέσθαι τινά· καὶ παραλαβὼν τοὺς
φίλους ἐσκόπει μετ' αὐτῶν δι' οἵου τρόπου ῥᾷστά τε
καὶ τάχιστα λαθόντες ἀναιρεθήσονται. τοῦτο καταμα-
θόντες οἱ παῖδες, εἴτε μηνυθὲν ὑπὸ τῶν συνειδότων
τινός, εἴτε αὐτοὶ κατὰ τὸν ἐκ τῶν εἰκότων λογισμὸν ὑπο-
τοπήσαντες, φεύγουσιν εἰς τὰ ὄρη τὸν γεωργικὸν ἁρ-
πάσαντες σίδηρον. ἧκον δὲ αὐτοῖς ἐπίκουροι κατὰ τάχος
οἱ ἐνδιατρίβοντες ἐν Καπύῃ Κυμαίων φυγάδες, ὧν
ἦσαν ἐπιφανέστατοί τε καὶ πλείστους Καμπανῶν
ἔχοντες ξένους οἱ Ἱππομέδοντος παῖδες τοῦ κατὰ τὸν
Τυρρηνικὸν ἱππαρχήσαντος πόλεμον, αὐτοί τε ὁπλι-

σμένοι κἀκείνοις κομίζοντες ὅπλα Καμπανῶν τε μισθοφόρων καὶ φίλων χεῖρα συγκροτήσαντες οὐκ ὀλίγην. ἐπεὶ δὲ καθ᾽ ἓν ἅπαντες ἐγένοντο, τοὺς ἀγροὺς τῶν ἐχθρῶν καταθέοντες ἐφόδοις λῃστρικαῖς ἐλεηλάτουν, καὶ τοὺς δούλους ἀφίστασαν ἀπὸ τῶν δεσποτῶν, καὶ τοὺς ἐκ τῶν δεσμωτηρίων λύοντες καθώπλιζον, καὶ ὅσα μὴ δύναιντο φέρειν τε καὶ ἄγειν χρήματα καὶ βοσκήματα, τὰ μὲν ἐνεπίμπρασαν, τὰ δὲ κατέσφαττον. ἀπορουμένῳ δὲ τῷ τυράννῳ τίνα 1335
χρὴ τρόπον αὐτοῖς πολεμεῖν διὰ τὸ μήτ᾽ ἐκ τοῦ φανεροῦ τὰς ἐπιχειρήσεις αὐτοὺς ποιεῖσθαι μήτε ἐν τοῖς αὐτοῖς χρονίζειν τόποις, ἀλλὰ νυκτὶ μὲν εἰς ὄρθρον, ἡμέρᾳ δ᾽ εἰς νύκτα συμμετρεῖσθαι τὰς ἐφόδους, καὶ πολλάκις ἀποστείλαντι τοὺς στρατιώτας ἐπὶ τὴν βοήθειαν τῆς χώρας διὰ κενῆς, παραγίνεταί τις ἐξ αὐτῶν ᾐκισμένος τὸ σῶμα μάστιξιν ἀποσταλεὶς ὑπὸ τῶν φυγάδων ὡς αὐτόμολος, ὃς ἄδειαν αἰτησάμενος ὑπέσχετο τῷ τυράννῳ παραλαβὼν τὴν ἀποσταλησομένην σὺν αὐτῷ δύναμιν ἄξειν ἐπὶ τὸν τόπον, ἐν ᾧ τὴν ἐπιοῦσαν ἔμελλον αὐλίζεσθαι νύκτα οἱ φυγάδες. ᾧ πιστεῦσαι παραχθεὶς ὁ τύραννος αἰτοῦντι οὐθέν καὶ τὸ ἑαυτοῦ σῶμα ὅμηρον παρεχομένῳ, πέμπει τοὺς πιστοτάτους τῶν ἡγεμόνων ἄγοντας ἱππεῖς τε πολλοὺς καὶ τὴν μισθοφόρον δύναμιν, οἷς ἐνετείλατο μάλιστα μὲν ἅπαντας τοὺς φυγάδας, εἰ δὲ μή γε ὡς πλείστους ἐξ αὐτῶν δήσαντας πρὸς αὐτὸν ἄγειν. ὁ μὲν οὖν κατασκευαστὸς αὐτόμολος κατά τε ἀτριβεῖς 1336
ὁδοὺς καὶ διὰ δρυμῶν ἐρήμων ἦγε τὴν στρατιὰν ταλαιπωροῦσαν δι᾽ ὅλης νυκτὸς ἐπὶ τὰ πλεῖστον ἀπέχοντα τῆς πόλεως μέρη.

XI. *Οἱ δὲ ἀποστάται τε καὶ φυγάδες ἐν τῷ περὶ τὸν Ἄορνον ὄρει πλησίον ὄντι τῆς πόλεως λοχῶντες,*

ὡς ἔμαθον ἐξεληλυθυῖαν ἐκ τῆς πόλεως τὴν τοῦ τυ-
ράννου στρατιὰν συνθήμασι μηνυθεῖσαν ὑπὸ τῶν
σκοπῶν, πέμπουσιν ἐξ αὐτῶν περὶ ἑξήκοντα μάλιστα
τοὺς εὐτολμοτάτους διφθέρας ἔχοντας καὶ φακέλλους
φρυγάνων κομίζοντας. οὗτοι περὶ λύχνων ἁφὰς ἄλλοι
κατ' ἄλλας πύλας ὡς χερνῆται παρεισπεσόντες ἔλα-
θον· ὡς δ' ἔνδον ἐγένοντο τοῦ τείχους ἐξελκύσαντες
ἐκ τῶν φακέλλων ἃ κατέκρυπτον ξίφη, καὶ συνελ-
θόντες εἰς τὸν αὐτὸν ἅπαντες τόπον, ἔπειτ' ἐκεῖθεν
ὁρμήσαντες ἀθρόοι πρὸς τὰς ἐπὶ τὸν Ἄορνον φερού-
1337 σας πύλας, τούς τε φύλακας αὐτῶν ἀποκτείνουσι
κοιμωμένους καὶ τοὺς σφετέρους ἅπαντας ἤδη τῷ
τείχει πλησίον ὄντας ἀναπεπταμέναις ταῖς πύλαις
ὑποδέχονται, καὶ τοῦτο πράξαντες ἔλαθον. ἔτυχε γὰρ
ἐκείνῃ τῇ νυκτὶ ἑορτή τις οὖσα δημοτελής, καὶ δι'
αὐτὴν ἅπας ὁ κατὰ πόλιν ὄχλος ἐν πότοις ὢν καὶ
ταῖς ἄλλαις εὐπαθείαις. τοῦτο παρέσχεν αὐτοῖς κατὰ
πολλὴν εὐπέτειαν ἁπάσας διελθεῖν τὰς ἐπὶ τὴν τυ-
ραννικὴν οἰκίαν φερούσας ὁδούς· καὶ οὐδὲ παρὰ ταῖς
θύραις πολλήν τινα καὶ ἐγρηγορυῖαν εὗρον φυλακήν,
ἀλλὰ κἀνταῦθα τοὺς μὲν ἤδη καθεύδοντας, τοὺς δὲ
μεθύοντας ἀποσφάξαντες δίχα πόνου καὶ κατὰ πλῆ-
θος εἰς τὴν οἰκίαν ὠσάμενοι, τοὺς μὲν ἄλλους σύμ-
παντας οὔτε τῶν σωμάτων ἔτι καρτεροὺς ὄντας οὔτε
τῶν φρενῶν διὰ τὸν οἶνον προβάτων δίκην κατέσφα-
ξαν· τὸν δ' Ἀριστόδημον καὶ τοὺς παῖδας αὐτοῦ καὶ
1338 τὴν ἄλλην συγγένειαν συλλαβόντες, ἄχρι πολλῆς
νυκτὸς αἰκιζόμενοί τε καὶ στρεβλοῦντες καὶ πᾶσιν ὡς
εἰπεῖν λυμαινόμενοι κακοῖς ἀπέκτειναν. ἀνελόντες
δὲ τὴν τυραννικὴν οἰκίαν πρόρριζον, ὡς μήτε παιδία
μήτε γυναῖκας μήτε συγγένειαν μηθενὸς αὐτῶν κα-
ταλιπεῖν, καὶ δι' ὅλης νυκτὸς ἅπαντας ἐξερευνησά-

μενοι τοὺς συνεργοὺς τῆς τυραννίδος, ἡμέρας γενομένης προῆλθον εἰς τὴν ἀγοράν. ἔπειτα συγκαλέσαντες τὸν δῆμον εἰς ἐκκλησίαν ἀποτίθενται τὰ ὅπλα καὶ τὴν πάτριον καθίστανται πολιτείαν.

XII. Ἐπὶ τοῦτον δὴ τὸν Ἀριστόδημον ἔτος ὁμοῦ τι τεσσαρεσκαιδέκατον ἤδη τυραννοῦντα Κύμης οἱ σὺν Ταρκυνίῳ φυγάδες καθιστάμενοι τὴν κατὰ τῆς πατρίδος ἐβούλοντο συντελέσασθαι δίκην. οἱ δὲ πρέσβεις τῶν Ῥωμαίων τέως μὲν ἀντέλεγον, ὡς οὔτε ἐπὶ τοῦτον ἥκοντες τὸν ἀγῶνα οὔτ' ἐξουσίαν ἔχοντες ἣν οὐκ ἐπέτρεψεν αὐτοῖς ἡ βουλὴ περὶ τῆς πόλεως ἀπολογήσασθαι δίκην. ὡς δ' οὐθὲν ἐπέραινον, ἀλλ' ἐγκεκλικότα τὸν τύραννον ἑώρων ἐπὶ θάτερα μέρη διὰ τὰς σπουδὰς καὶ τὰς παρακλήσεις τῶν φυγάδων, αἰτησάμενοι χρόνον εἰς ἀπολογίαν, καὶ διεγγυήσαντες 1339
τὰ σώματα χρημάτων, ἐν τῷ διὰ μέσου τῆς δίκης οὐθενὸς ἔτι φυλάττοντος αὐτοὺς ἀποδράντες ᾤχοντο. θεράποντας δὲ αὐτῶν καὶ τὰ ὑποζύγια καὶ τὰ ἐπὶ τῇ σιτωνίᾳ κομισθέντα χρήματα ὁ τύραννος κατέσχε. ταύταις μὲν οὖν ταῖς πρεσβείαις τοιαῦτα παθούσαις ἀπράκτοις ἀναστρέψαι συνέβη· ἐκ δὲ τῶν ἐν Τυρρηνίᾳ πόλεων οἱ πεμφθέντες κέγχρους τε καὶ ζέας συνωνησάμενοι ταῖς ποταμηγοῖς σκάφαις κατεκόμισαν εἰς τὴν πόλιν. αὕτη βραχύν τινα χρόνον ἡ ἀγορὰ Ῥωμαίους διέθρεψεν· ἔπειτα ἐξαναλωθεῖσα εἰς τὰς αὐτὰς ἀπορίας κατέστησεν αὐτούς. ἦν δὲ οὐθὲν εἶδος ἀναγκαίας τροφῆς ὃ οὐκ ἐπείραζον ἔτι, συνέβαινέ τε οὐκ ὀλίγοις αὐτῶν, τὰ μὲν διὰ τὴν σπάνιν, τὰ δὲ διὰ τὴν ἀτοπίαν τῆς οὐκ εἰωθυίας ἐδωδῆς, τοῖς μὲν ἀρρώστως διακεῖσθαι τὰ σώματα, τοῖς δὲ παρημελημένως διὰ πενίαν καὶ παντάπασιν ἀδυνάτως· ὡς δὲ τοῦτ' ἔγνωσαν οἱ νεωστὶ κεκρατημένοι τῷ πολέμῳ

1340 Οὐολοῦσκοι, πρεσβειῶν ἀπορρήτοις διαποστολαῖς ἐνῆγον ἀλλήλους εἰς τὸν κατ' αὐτῶν πόλεμον, ὡς ἀδυνάτων ἐσομένων εἴ τις αὐτοῖς ἐπίθοιτο κεκακωμένοις πολέμῳ τε καὶ λιμῷ ἀντέχειν. θεῶν δέ τις εὔνοια, οἷς φροντὶς ἦν μὴ περιιδεῖν ὑπὸ τοῖς ἐχθροῖς Ῥωμαίους γενομένους, ἐκφανέστατα καὶ τότε τὴν ἑαυτῆς δύναμιν ἀπεδείξατο. τοσοῦτος γάρ τις ἄφνω εἰς τὰς πόλεις τῶν Οὐολούσκων φθόρος λοιμικὸς ἐνέσκηψεν, ὅσος ἐν οὐδενὶ ἄλλῳ τόπῳ μνημονεύεται γενόμενος οὔθ' Ἑλλάδος οὔτε βαρβάρου γῆς, πᾶσαν ἡλικίαν καὶ τύχην καὶ φύσιν ἐρρωμένων τε καὶ ἀσθενῶν σωμάτων ὁμοίως διεργαζόμενος. ἐδήλωσε δὲ τὴν ὑπερβολὴν τῆς συμφορᾶς πόλις ἐπιφανὴς τῶν Οὐολούσκων, Οὐέλιτραι ὄνομα αὐτῇ, μεγάλη τε καὶ πολυάνθρωπος
1341 οὖσα τέως, ἧς ὁ λοιμὸς μίαν ὑπελείπετο μοῖραν ἐκ τῶν δέκα, τὰς δὲ ἄλλας ὑπολαβὼν ἀπήνεγκε. τελευτῶντες δ' οὖν ὅσοι περιῆσαν ἐκ τῆς συμφορᾶς πρεσβευσάμενοι Ῥωμαίοις ἔφρασαν τὴν ἐρημίαν καὶ παρέδοσαν τὴν πόλιν. ἔτυχον δὲ καὶ πρότερον ἐποίκους ἐκ τῆς Ῥώμης εἰληφότες, ἀφ' ἧς αἰτίας καὶ τὸ δεύτερον τοὺς κληρούχους παρ' αὐτῶν ᾔτουν.

XIII. Ταῦτα τοῖς Ῥωμαίοις μαθοῦσι τῆς μὲν συμφορᾶς οἶκτος εἰσῄει, καὶ οὐ δεῖν ᾤοντο τοῖς ἐχθροῖς ἐπὶ τοιαύταις τύχαις μνησικακεῖν, ὡς ἱκανὰς δεδωκόσι τοῖς θεοῖς ὑπὲρ σφῶν δίκας ἀνθ' ὧν ἔμελλον δράσειν· Οὐελίτρας δὲ παραλαμβάνειν ἐδόκει κληρούχων οὐκ ὀλίγων ἀποστολῇ πολλὰ τὰ συμφέροντα ἐκ τοῦ πράγματος ἐπιλογιζομένοις. τό τε γὰρ χωρίον ἱκανὸν εἶναι ἐφαίνετο φυλακῇ ἀξιοχρέῳ καταληφθὲν οἷς ἂν νεωτερίζειν ἢ παρακινεῖν τι βουλο-
1342 μένοις ᾖ μέγα κώλυμα καὶ ἐμπόδιον εἶναι· ἥ τε ἀπορία τῆς τροφῆς ἡ κατέχουσα τὴν πόλιν οὐ παρ'

ὀλίγον μετριωτέρα γενήσεσθαι ὑπωπτεύετο, εἰ μετασταίη τις ἐξ αὐτῆς ἀπὸ τοῦ πλήθους μοῖρα ἀξιόλογος. μάλιστα δὲ ἡ στάσις ἀναρριπιζομένη πρὶν ἢ πεπαῦσθαι καλῶς ἔτι τὴν προτέραν ἐνῆγεν αὐτοὺς ψηφίζεσθαι τὸν ἀπόστολον. πάλιν γὰρ ὥσπερ καὶ πρότερον ὁ δῆμος ἠρεθίζετο καὶ δι' ὀργῆς εἶχε τοὺς πατρικίους, πολλοί τε καὶ χαλεποὶ κατ' αὐτῶν ἐγίνοντο λόγοι, τῶν μὲν ὀλιγωρίαν ἐγκαλούντων καὶ ῥαθυμίαν, ὅτι οὐκ ἐκ πολλοῦ προείδοντο τὴν ἐσομένην τοῦ σίτου σπάνιν καὶ προεμηχανήσαντο τὰ πρὸς τὴν συμφορὰν ἀλεξήματα· τῶν δ' ἐξ ἐπιβουλῆς ὑπ' αὐτῶν γεγονέναι τὴν σιτοδείαν ἀποφαινόντων δι' ὀργήν τε καὶ ἐπιθυμίαν τοῦ κακῶσαι τὸ δημοτικὸν ἀναμνήσει τῆς ἀποστάσεως. διὰ ταύτας μὲν δὴ τὰς αἰτίας ἡ τῶν κληρούχων ἀποστολὴ ταχεῖα ἐγίνετο τριῶν ἀποδειχθέντων ἀνδρῶν ὑπὸ τῆς βουλῆς ἡγεμόνων. τῷ δήμῳ δὲ κατ' ἀρχὰς μὲν ἦν ἀσμένῳ τοὺς κληρούχους διαλαγχάνειν, ὡς λιμοῦ τε ἀπαλλαχθησο- 1343
μένῳ καὶ χώραν οἰκήσοντι εὐδαίμονα· ἔπειτα ἐνθυμουμένῳ τὸν λοιμόν, ὃς ἐν τῇ μελλούσῃ αὐτὸν ὑποδέχεσθαι πολὺς γενόμενος τούς τε οἰκήτορας διεφθάρκει καὶ δέος παρεῖχε μὴ καὶ τοὺς ἐποίκους τὸ αὐτὸ ἐργάσηται, μεθίστατο κατὰ μικρὸν εἰς τἀναντία ἡ γνώμη, ὥστε οὐ πολλοί τινες ἐφάνησαν οἱ μετέχειν βουλόμενοι τῆς ἀποικίας, ἀλλὰ πολὺ ἐλάττους ὧν ἡ βουλὴ ἐψηφίσατο, καὶ οὗτοι δὲ ἤδη σφῶν αὐτῶν κατεγνώκεσαν ὡς κακῶς βεβουλευμένων καὶ ὑπανεδύοντο τὴν ἔξοδον. κατελήφθη μέντοι τοῦτο τὸ μέρος καὶ τὸ ἄλλο τὸ μὴ ἑκουσίως συναράμενον τῆς ἐξόδου, ψηφισαμένης τῆς βουλῆς ἐξ ἁπάντων γενέσθαι Ῥωμαίων κλήρῳ τὴν ἔξοδον, κατὰ δὲ τῶν λαχόντων εἰ μὴ ἐξίοιεν χαλεπὰς καὶ ἀπαραιτήτους θεμένης ζημίας.

οὗτός τε δὴ ὁ στόλος εἰς Οὐελίτρας εὐπρεπεῖ ἀνάγκῃ
1344 καταληφθεὶς ἀπεστάλη, καὶ ἕτερος αὖθις οὐ πολλαῖς ἡμέραις ὕστερον εἰς Νῶρβαν πόλιν, ἥ ἐστι τοῦ Λατίνων ἔθνους οὐκ ἀφανής.

XIIII. Ἐγένετο δὲ οὐδὲν τῶν ἐκ λογισμοῦ τοῖς πατρικίοις, κατὰ γοῦν τὴν ἐλπίδα τοῦ λωφήσειν τὴν στάσιν, ἀλλ' οἱ περιλειφθέντες ἔτι χείρους ταῖς ὀργαῖς ἦσαν καὶ πολλῇ τῇ καταβοῇ τῶν βουλευτῶν ἐχρῶντο κατά τε συστροφὰς καὶ ἑταιρίας, ὀλίγοι μὲν συνιόντες τὸ πρῶτον, ἔπειτα ἀθρόοι συντονωτέρας ἤδη γενομένης τῆς ἀπορίας, καὶ συνδραμόντες εἰς τὴν ἀγορὰν τοὺς δημάρχους ἐβόων. συναχθείσης δὲ ὑπ' αὐτῶν ἐκκλησίας, παρελθὼν Σπόριος Σκίνιος, ὃς ἦν τοῦ ἀρχείου τότε ἡγεμών, αὐτός τε πολὺς ἔρρει κατὰ τῆς βουλῆς αὔξων ὡς μάλιστα ἐνῆν τὸν κατ' αὐτῆς φθόνον, καὶ τοὺς ἄλλους ἠξίου λέγειν ἃ φρονοῦσιν εἰς τὸ κοινόν, μάλιστα δὲ τὸν Σικίνιον καὶ
1345 τὸν Βροῦτον ἀγορανόμους τότε ὄντας ἀνακαλῶν ἑκάτερον ἐξ ὀνόματος, οἳ καὶ τῆς πρώτης ἀποστάσεως τῷ δήμῳ ἦρξαν, καὶ τὴν δημαρχικὴν ἐξουσίαν εἰσηγησάμενοι πρῶτοι αὐτῆς ἔτυχον. παρελθόντες δὲ οὗτοι τοὺς κακοηθεστάτους τῶν λόγων ἐκ πολλοῦ παρεσκευασμένοι διεξῄεσαν, ἃ τοῖς πολλοῖς ἀκούειν ἦν βουλομένοις, ὡς ἐκ προνοίας τε καὶ ἐπιβουλῆς ὑπὸ τῶν πλουσίων γένοιτο ἡ περὶ τὸν σῖτον ἀπορία, ἐπειδὴ τὴν ἐλευθερίαν ἀκόντων ἐκείνων ὁ δῆμος ἐκ τῆς ἀποστάσεως εὕρετο. ἰσομοιρεῖν τε οὐδὲ κατὰ μικρὸν ἀπέφαινον τῆς συμφορᾶς τοῖς πένησι τοὺς εὐπόρους· ἐκείνοις μὲν γὰρ εἶναι καὶ τροφὰς ἐν ἀφανεῖ ἀποκειμένας καὶ χρήματα, οἷς ὠνούμενοι τὰς ἐπεισάκτους ἀγορὰς ἐν πολλῇ ὑπεροψίᾳ ἦσαν τοῦ κακοῦ, τοῖς δὲ δημόταις ἀμφότερα ταῦτα ἀπόρως ἔχειν·

τήν τε ἀποστολὴν τῶν κληρούχων, ἣν ἐποιήσαντο εἰς νοσερὰ χωρία, ἐκβολὴν ἀποφαίνοντες εἰς προφανῆ καὶ μακρῷ χείρονα ὄλεθρον, αὔξοντες ὡς μάλιστα δυνατοὶ ἦσαν τῷ λόγῳ τὰ δεινά, καὶ τί πέρας ἔσται τῶν κακῶν ἀξιοῦντες μαθεῖν, ὑπομιμνήσκοντές τε τῶν παλαιῶν αὐτοὺς αἰκισμῶν, οἷς ὑπὸ τῶν πλου- 1346
σίων ἔτυχον αἰκισθέντες, καὶ τἆλλα τὰ ὅμοια τούτοις κατὰ πολλὴν ἄδειαν διεξιόντες. τελευτῶν δὲ ὁ Βροῦτος εἰς ἀπειλήν τινα τοιάνδε κατέκλεισε τὸν λόγον, ὡς εἰ βουληθεῖεν αὐτῷ πείθεσθαι διὰ ταχέων προσαναγκάσων τοὺς ἐκκαύσαντας τὸ δεινὸν κατασβέσαι. ἡ μὲν δὴ ἐκκλησία διελύετο.

XV. *Οἱ δὲ ὕπατοι τῇ κατόπιν ἡμέρᾳ συνεκάλουν τὴν βουλὴν περίφοβοι ὄντες ἐπὶ τοῖς καινοτομουμένοις, καὶ τὴν τοῦ Βρούτου δημοκοπίαν εἰς μέγα τι κακὸν ἀποσκήψειν οἰόμενοι. πολλοὶ μὲν δὴ καὶ παντοδαποὶ ὑπό τε αὐτῶν ἐκείνων ἐρρήθησαν ἐν τῷ συνεδρίῳ λόγοι καὶ ὑπὸ τῶν ἄλλων πρεσβυτέρων, τῶν μὲν οἰομένων δεῖν θεραπεύειν τὸν δῆμον ἁπάσῃ προσηγορίᾳ λόγων καὶ ὑποσχέσει ἔργων, καὶ τοὺς ἡγεμόνας αὐτοῦ μετριωτέρους παρασκευάζειν, τιθέντας εἰς μέσον τὰ πράγματα καὶ μετὰ σφῶν ὑπὲρ τοῦ κοινῇ συμφέροντος παρακαλοῦντας σκοπεῖν. τῶν δὲ μηθὲν ἐνδιδόναι καὶ μαλακίζεσθαι συμβουλευόντων πρὸς [τὸν δῆμον] ὄχλον αὐθάδη καὶ ἀμαθῆ, θρασεῖάν* 1347
τε καὶ ἀνύποιστον δημοκόπων ἀνθρώπων μανίαν, ἀλλ' ἀπολογεῖσθαι μὲν ὡς οὐδὲν εἴη τῶν γεγονότων παρὰ τῶν πατρικίων αἴτιον, καὶ ὑπισχνεῖσθαι πρόνοιαν ἕξειν τοῦ κακοῦ τὴν δυνατήν, τοῖς δὲ ταράττουσι τὸν δῆμον ἐπιτιμᾶν καὶ προαγορεύειν, ὡς εἰ μὴ παύσονται τὴν στάσιν ἀναρριπίζοντες ἀξίας τίσουσι δίκας. ταύτης ἡγεῖτο τῆς γνώμης Ἄππιος, καὶ ἦν ἡ νικῶσα

αὕτη πολλῆς ἐμπεσούσης πάνυ τοῖς συνέδροις φιλο-
νεικίας· ὥστε καὶ τὸν δῆμον ὑπὸ τῆς βοῆς αὐτῶν
ἐξακουομένης ἐπὶ πολὺ ταραχθέντα συνδραμεῖν
ἐπὶ τὸ βουλευτήριον, καὶ πᾶσαν ὀρθὴν ἐπὶ τῇ
προσδοκίᾳ γενέσθαι τὴν πόλιν. μετὰ δὲ τοῦτο
οἱ μὲν ὕπατοι προελθόντες συνεκάλουν τὸν δῆ-
μον εἰς ἐκκλησίαν· ἦν δὲ οὐ πολὺ τῆς ἡμέρας ἔτι
τὸ λειπόμενον· καὶ παρελθόντες ἐπειρῶντο τὰ
δόξαντα σφίσιν ἐν τῇ βουλῇ λέγειν. ἐνίσταντο
δὲ αὐτοῖς οἱ δήμαρχοι, καὶ οὐκ ἦν ἐν μέρει οὐδ᾽
1348 ἐν κόσμῳ γινόμενος παρ᾽ ἀμφοῖν ὁ λόγος. ἐβόων
γὰρ ἅμα καὶ ἐξέκλειον ἀλλήλους, ὥστε μὴ ῥᾴδιον
εἶναι τοῖς παροῦσι τὰς διανοίας αὐτῶν ὅ τι βούλον-
ται συνιδεῖν.

XVI. Ἐδικαίουν δὲ οἱ μὲν ὕπατοι τὴν κρείττονα
ἔχοντες ἐξουσίαν ἁπάντων ἄρχειν τῶν ἐν τῇ πόλει,
οἱ δὲ δήμαρχοι τὴν ἐκκλησίαν ἑαυτῶν εἶναι χωρίον
ὥσπερ ἐκείνων τὴν βουλήν, καὶ ὁπόσα ἐπὶ τοῖς δη-
μόταις ἦν κρῖναί τε καὶ ψηφίζεσθαι, τούτων αὐτοὶ
πᾶν ἔχειν τὸ κράτος. συνηγωνίζετο δὲ τοῖς μὲν ἡ
πληθὺς ἐπιβοῶσα καὶ ὁμόσε χωρεῖν εἰ δέοι τοῖς κω-
λύουσι παρεσκευασμένη, τοῖς δὲ ὑπάτοις οἱ πατρίκιοι
συστρέψαντες αὑτούς. ἐγίγνετο δὲ πολὺς ἀγὼν περὶ
τοῦ μὴ εἶξαι ἑκατέροις, ὡς ἐν μιᾷ τῇ τότε ἥττῃ πα-
ραχωρουμένης τῆς εἰς τὸν λοιπὸν χρόνον ἑκατέρων
δικαιώσεως. ἥλιός τε περὶ καταφορὰν ἦν ἤδη, καὶ
συνέτρεχεν ἐκ τῶν οἰκιῶν τὸ ἄλλο πλῆθος εἰς τὴν
ἀγοράν, καὶ ἔμελλον εἰ νὺξ ἐπιλαμβάνοι τὴν ἔριν εἰς
1349 πληγάς τε καὶ λίθων χωρήσειν βολάς. ἵνα δὴ μὴ
τοῦτο γένοιτο, προελθὼν ὁ Βροῦτος τοὺς ὑπάτους
ἠξίου δοῦναι λόγον αὐτῷ, παύσειν ὑπισχνούμενος
τὴν στάσιν. κἀκεῖνοι δόξαντες σφίσι παρακεχωρῆσθαι,

ὅτι τῶν δημάρχων παρόντων οὐ παρ' ἐκείνων ὁ δημαγωγὸς ᾐτήσατο τὴν χάριν, ἐπιτρέπουσιν αὐτῷ λέγειν. σιωπῆς δὲ γενομένης, ἄλλο μὲν οὐδὲν ὁ Βροῦτος εἶπεν, ἠρώτησε δὲ τοὺς ὑπάτους τοιάνδε τινὰ ἐρώτησιν· Ἀρά γε, ἔφη, μέμνησθ', ὅτι διαλυομένοις ἡμῖν τὴν στάσιν τοῦτο συνεχωρήθη τὸ δίκαιον ὑφ' ὑμῶν, ὅταν οἱ δήμαρχοι συναγάγωσι τὸν δῆμον ὑπὲρ ὁτουδήτινος, μὴ παρεῖναι τῇ συνόδῳ τοὺς πατρικίους μηδ' ἐνοχλεῖν; Μεμνήμεθα, ἔφησεν ὁ Γεγάνιος. καὶ ὁ Βροῦτος ὑποφέρει· Τί οὖν μαθόντες ἐμποδὼν ἵστασθε ἡμῖν καὶ οὐκ ἐᾶτε τοὺς δημάρχους ἃ βούλονται λέγειν; ἀποκρίνεται πρὸς ταῦτα ὁ Γεγάνιος· Ὅτι οὐκ αὐτοὶ συνεκάλεσαν τὸν δῆμον εἰς τὴν ἐκκλησίαν, ἀλλ' ἡμεῖς οἱ ὕπατοι. εἰ μὲν οὖν ὑπὸ τούτων ἡ σύνοδος ἐγένετο, οὐθὲν ἂν ἠξιοῦμεν οὔτε κωλύειν οὔτε πολυπραγμονεῖν· ἐπειδὴ δὲ ἡμεῖς συνηγάγομεν τὴν ἐκκλησίαν, οὐχὶ τούτους ἀγορεύειν 1350 κωλύομεν, ἀλλ' ὑπὸ τούτων αὐτοὶ κωλύεσθαι οὐ δικαιοῦμεν. καὶ ὁ Βροῦτος ὑποτυχών· Νικῶμεν, ἔφησεν, ὦ δημόται, καὶ παρακεχώρηται ἡμῖν ὑπὸ τῶν διαφόρων ὅσα ἠξιοῦμεν. νῦν μὲν οὖν ἄπιτε καὶ παύσασθε φιλονεικοῦντες· αὔριον δὲ ὑμῖν ὑπισχνοῦμαι φανερὸν ποιήσειν ὅσην ἔχετε ἰσχύν. καὶ ὑμεῖς γε, ὦ δήμαρχοι, παραχωρήσατε αὐτοῖς τῆς ἀγορᾶς ἐν τῷ παρόντι· οὐ γὰρ εἰς τέλος παραχωρήσετε· μαθόντες δὲ ὅσον ἔχει κράτος ὑμῶν ἡ ἀρχή· γνώσεσθε γὰρ οὐκ εἰς μακράν· ἐγὼ τοῦθ' ὑμῖν ὑποδέχομαι ποιήσειν φανερόν· μετριωτέραν αὐτῶν ἀποδώσετε τὴν ὑπερηφανίαν. ἐὰν δὲ φενακίζων ὑμᾶς εὑρεθῶ, χρήσασθε ὅ τι βούλεσθέ μοι.

XVII. *Οὐθενὸς δὲ πρὸς ταῦτα ἀντιλέξαντος*, ἀπήεσαν ἐκ τῆς ἐκκλησίας οὐ τὰς ὁμοίας ὑπολήψεις

ἔχοντες ἑκάτεροι· ἀλλ᾽ οἱ μὲν ἄποροι δοκοῦντές τι
1351 περιττὸν ἐξευρηκέναι τὸν Βροῦτον καὶ οὐκ εἰκῇ
ὑποσχέσθαι πρᾶγμα τηλικοῦτον· οἱ δὲ πατρίκιοι πε-
ριφρονοῦντες τὴν κουφότητα τοῦ ἀνθρώπου, καὶ τῶν
ὑποσχέσεων τὴν τόλμαν ἕως λόγου χωρήσειν οἰόμε-
νοι· μηθὲν γὰρ ὑπὸ τῆς βουλῆς συγκεχωρῆσθαι τοῖς
δημάρχοις ἔξω τοῦ βοηθεῖν τοῖς ἀδικουμένοις τῶν
δημοτικῶν. οὐ μὴν ἅπασί γε εἰσήει καὶ μάλιστα τοῖς
πρεσβυτέροις ὀλιγωρία τοῦ πράγματος, ἀλλὰ προσέ-
χειν, μή τι ἀνήκεστον ἡ τοῦ ἀνδρὸς ἐξεργάσηται
μανία. τῇ δ᾽ ἑξῆς νυκτὶ κοινωσάμενος τοῖς δημάρ-
χοις ὁ Βροῦτος τὴν ἑαυτοῦ γνώμην, καὶ παρασκευα-
σάμενος χεῖρα οὐκ ὀλίγην δημοτῶν, κατέβαινε μετ᾽
αὐτῶν εἰς τὴν ἀγοράν· καὶ πρὶν ἡμέραν λαμπρὰν
γενέσθαι καταλαβόμενοι τὸ Ἡφαιστεῖον, ἔνθα ἦν ἔθος
αὐτοῖς ἐκκλησιάζειν, ἐκάλουν μὲν εἰς ἐκκλησίαν τὸν
δῆμον. πληρωθείσης δὲ τῆς ἀγορᾶς· ὄχλος γὰρ ὅσος
οὐπώποτ᾽ εἰώθει συνῆλθε· παρελθὼν Σκίνιος ὁ δήμ-
αρχος πολὺν μὲν ἐποιήσατο κατὰ τῶν πατρικίων
λόγον, ἅπαντα ὑπομιμνήσκων ὅσα κατὰ τῶν δημοτι-
1352 κῶν αὐτοῖς ἐπράχθη· ἔπειτα ὑπὲρ τῆς παρελθούσης
ἡμέρας ἐδίδασκεν, ὡς κεκωλυμένος ὑπ᾽ αὐτῶν εἴη
λόγου τυχεῖν καὶ τὴν ἐξουσίαν τῆς ἀρχῆς ἀφῃρημέ-
νος. Τίνος γὰρ ἂν ἔτι γενοίμεθα, ἔφη, κύριοι τῶν ἄλ-
λων, εἰ μηδὲ τοῦ λέγειν ἐσόμεθα; πῶς δ᾽ ἄν τινι
ὑμῶν ἀδικουμένῳ πρὸς αὐτῶν βοηθεῖν δυναίμεθα,
εἰ τὴν ἐξουσίαν τοῦ συναγαγεῖν ὑμᾶς ἀφαιρεθείημεν;
ἄρχουσι γὰρ δήπου παντὸς ἔργου λόγοι, καὶ οὐκ ἄδη-
λον ὅτι οἷς εἰπεῖν ἃ φρονοῦσιν οὐκ ἔξεστιν, οὐδὲ
πρᾶξαι ἂν ἐξείη ἃ βούλονται. ἢ κομίζεσθε οὖν, ἔφη,
τὴν ἐξουσίαν ἣν δεδώκατε ἡμῖν, εἰ μὴ μέλλετε βε-
βαιοῦν αὐτῇ τὸ ἀσφαλές, ἢ νόμῳ γραφέντι κωλύσατε

τοὺς ἐμποδὼν ἡμῖν τὸ λοιπὸν ἐσομένους. τοιαῦτα διαλεχθείς, ἐπικελεύσαντος αὐτῷ τοῦ δήμου μεγάλῃ βοῇ τὸν νόμον εἰσφέρειν, ἔχων αὐτὸν ἤδη γεγραμμένον ἀνεγίνωσκε, καὶ ψῆφον ἀναδίδωσι τῷ πλήθει περὶ αὐτοῦ παραχρῆμα ἐπενεγκεῖν. οὐ γὰρ ἐδόκει τὸ 1353
πρᾶγμα δεῖσθαι ἀναβολῆς οὐδὲ μελλησμοῦ, μή τι ἄλλο κώλυμα γένηται πρὸς τῶν ὑπάτων. ἦν δὲ τοιόσδε ὁ νόμος· Δημάρχου γνώμην ἀγορεύοντος ἐν δήμῳ μηδεὶς λεγέτω μηδὲν ἐναντίον, μηδὲ μεσολαβείτω τὸν λόγον. ἐὰν δέ τις παρὰ ταῦτα ποιήσῃ, διδότω τοῖς δημάρχοις ἐγγυητὰς αἰτηθεὶς εἰς ἔκτισιν ἧς ἂν ἐπιθῶσιν αὐτῷ ζημίας. ὁ δὲ μὴ διδοὺς ἐγγυητὴν θανάτῳ ζημιούσθω, καὶ τὰ χρήματα αὐτοῦ ἱερὰ ἔστω. τῶν δ' ἀμφισβητούντων πρὸς ταύτας τὰς ζημίας αἱ κρίσεις ἔστωσαν ἐπὶ τοῦ δήμου. τοῦτον τὸν νόμον ἐπιψηφίσαντες οἱ δήμαρχοι διέλυσαν τὴν ἐκκλησίαν· καὶ ὁ δῆμος ἀπῄει πολλῆς γεγονὼς μεστὸς εὐθυμίας, τῷ δὲ Βρούτῳ μεγάλην χάριν εἰδώς, ἐκείνου δοκῶν εἶναι τὸ ἐνθύμημα τοῦ νόμου.

XVIII. *Μετὰ τοῦτο πολλαὶ καὶ περὶ πολλῶν ἐγίνοντο τοῖς δημάρχοις πρὸς τοὺς ὑπάτους ἀντιλογίαι, καὶ οὔτε ὁ δῆμος ὁπόσα ἡ βουλὴ ψηφίσαιτο κύρια ἡγεῖτο, οὔθ' ὧν ὁ δῆμος γνοίη τῇ βουλῇ φίλιόν τι ἦν· ἀντιπαρατεταγμένοι δὲ καὶ δι' ὑποψίας 1354
ἔχοντες ἀλλήλους διετέλουν. οὐ μὴν τό γε μῖσος αὐτῶν εἰς ἔργον τι ἀνήκεστον ἐχώρησεν, οἷα ἐν ταῖς τοιαύταις φιλεῖ γίνεσθαι ταραχαῖς. οὔτε γὰρ οἱ πένητες ἐπὶ τὰς οἰκίας ὥρμησαν τῶν πλουσίων, ἔνθα ὑπελάμβανόν τινας εὑρήσειν ἀποκειμένας τροφάς, ἢ τὴν ἐν τῷ φανερῷ ἀγορὰν ἁρπάζειν ἐπεβάλοντο, ἀλλ' ὑπομένοντες ὠνεῖσθαι πολλοῦ διαφόρου μικρά, καὶ ὁπότε ἐξαπορηθεῖεν ἀργυρίου τὰς ἐκ γῆς ῥίζας*

τε καὶ βοτάνας σιτούμενοι ἀνείχοντο· οὔτε οἱ πλούσιοι βιασάμενοι τοὺς ἀσθενεστέρους τῇ τε οἰκείᾳ δυνάμει καὶ τῇ παρὰ τῶν πελατῶν πολλῇ οὔσῃ κατασχεῖν αὐτοὶ τὴν πόλιν ἠξίωσαν, τοὺς μὲν ἐξελάσαντες ἐξ αὐτῆς, τοὺς δὲ ἀποκτείναντες, ἀλλὰ διέμενον
1355 ὥσπερ οἱ σωφρονέστατα πολιτευόμενοι πρὸς τοὺς υἱοὺς πατέρες εὐνοούσῃ καὶ κηδομένῃ τῇ ὀργῇ πρὸς τὰς ἁμαρτάδας αὐτῶν χρώμενοι. τοιαύτης δὲ καταστάσεως οὔσης περὶ τὴν Ῥώμην αἱ πλησιόχωροι πόλεις ἐκάλουν τοὺς βουλομένους οἰκεῖν παρὰ σφίσι Ῥωμαίων πολιτείας τε μεταδόσει καὶ ἄλλων φιλανθρώπων ἐλπίσιν ὑπαγόμεναι, αἱ μὲν ἀπὸ τοῦ βελτίστου δι᾽ εὔνοιάν τε καὶ ἔλεον τῆς συμφορᾶς, αἱ δὲ πλείους διὰ φθόνον τῆς πάλαι ποτὲ εὐτυχίας. καὶ ἦσαν οἱ ἀπαναστάντες πανοικεσίᾳ καὶ μεταθέμενοι τὰς οἰκήσεις ἑτέρωσε πολλοὶ πάνυ· ὧν οἱ μὲν ἀνέστησαν αὖθις, ἐπειδὴ κατέστη τὰ πράγματα τῆς πόλεως, οἱ δὲ καὶ διέμειναν.

XVIIII. Ταῦτα δὲ ὁρῶσι τοῖς ὑπάτοις ἐδόκει τῆς βουλῆς ἐπιτρεπούσης στρατοπέδου ποιεῖσθαι καταγραφὴν καὶ ἐξάγειν ἔξω τὴν δύναμιν. εἰλήφεσαν δὲ ἀφορμὴν τῷ ἐγχειρήματι πρέπουσαν, ἐπιδρομαῖς τε καὶ λεηλασίαις κακουμένης τῆς χώρας ὑπὸ τῶν πο-
1356 λεμίων θαμινά, τά τε ἄλλα ὅσα ἐκ τοῦ πράγματος χρηστὰ ἦν ἐπιλογιζόμενοι, ὑπερορίου στρατιᾶς ἐκπεμφθείσης ὡς εὐπορωτέρᾳ μὲν ἕξουσι τῇ ἀγορᾷ χρῆσθαι οἱ ὑπολειφθέντες ἐλάττους γενόμενοι, ἐν ἀφθονωτέροις δὲ διάξουσι τοῖς ἐπιτηδείοις οἱ τὰ ὅπλα ἔχοντες ἐκ τῶν πολεμίων ἐπισιτιζόμενοι, λωφήσει δὲ ἡ στάσις ὅσον ἂν ἡ στρατεία κατέχῃ χρόνον· μάλιστα δὲ ἐφαίνετο ἔργῳ βεβαιώσειν αὐτῶν τὰς διαλλαγὰς συστρατευόντων ἀλλήλοις πατρικίων

καὶ δημοτῶν ἡ γενησομένη παρὰ τοὺς κινδύνους κακῶν τε καὶ ἀγαθῶν ἰσομοιρία. ἀλλ' οὐκ ἦν τὸ πλῆθος ὑπήκοον αὐτοῖς, οὐδ' ὥσπερ πρότερον ἑκούσιον ὑπήντα πρὸς τὴν καταγραφήν· ἀνάγκην δὲ προσφέρειν τοῖς μὴ βουλομένοις οὐκ ἐδικαίουν τὴν ἐκ τῶν νόμων οἱ ὕπατοι· ἀλλ' ἐκ τῶν πατρικίων ἐθέλονταί τινες κατεγράφησαν ἅμα τοῖς πελάταις, καὶ αὐτοῖς ἐξιοῦσιν ὀλίγον τι ἀπὸ τοῦ δήμου μέρος συνεστράτευεν. ἡγεμὼν δὲ τῶν ἐξελθόντων ἦν Γάιος Μάρκιος ὁ τὴν Κοριολάνων πόλιν ἑλὼν καὶ τῇ 1357 *πρὸς Ἀντιάτας ἀριστεύσας μάχῃ, καὶ οἱ πλεῖστοι τῶν συναραμένων τὰ ὅπλα δημοτῶν τοῦτον ἐξιόντα ὁρῶντες ἐπερρώσθησαν, οἱ μὲν δι' εὔνοιαν, οἱ δὲ τοῦ κατορθώσειν ἐλπίδι· περιβόητος γὰρ ἦν ἤδη ὁ ἀνήρ, καὶ δέος αὐτοῦ μέγα παρὰ τοῖς πολεμίοις ἐγεγόνει. αὕτη προελθοῦσα ἡ στρατιὰ μέχρι πόλεως Ἀντίου δίχα πόνου σίτου πολλοῦ καταληφθέντος ἐν τοῖς ἀγροῖς καὶ ἀνδραπόδων καὶ βοσκημάτων συχνῶν ἐγκρατὴς ἐγένετο, καὶ οὐ μετὰ πολὺ παρῆν εὐπορωτέρα γεγονυῖα τοῖς κατὰ τὸν βίον, ὥστε τοῖς ὑπομείνασι πολλὴν κατήφειαν καὶ κατάμεμψιν τῶν δημαγωγῶν ἐμπεσεῖν, δι' οὓς ἀποστερέσθαι ἐδόκουν τῆς ὁμοίας εὐτυχίας. ὁ μὲν δὴ Γεγάνιος καὶ Μηνύκιος οἱ τοῦτον τὸν ἐνιαυτὸν ὑπατεύοντες ἐν μεγάλοις καὶ παντοδαποῖς χειμῶσι γενόμενοι καὶ πολλάκις ἀνατρέψαι κινδυνεύσαντες τὴν πόλιν, οὐθὲν δεινὸν εἰργάσαντο, ἀλλὰ διέσωσαν τὰ κοινὰ φρονιμώτερον* 1358 *μᾶλλον ἢ εὐτυχέστερον τοῖς συμβαίνουσι χρησάμενοι.*

XX. *Οἱ δὲ μετ' αὐτοὺς ἀποδειχθέντες ὕπατοι Μάρκος Μηνύκιος Αὐγουρῖνος καὶ Αὖλος Σεμπρώνιος Ἀτρατῖνος δεύτερον καταστάντες ἐπὶ τὴν ἀρχήν,*

ἄνδρες οὔθ' ὅπλων οὔτε λόγων ἄπειροι, προνοίᾳ μὲν
ἐχρήσαντο πολλῇ σίτου τε καὶ τῆς ἄλλης ἀγορᾶς
ἐμπλῆσαι τὴν πόλιν, ὡς ἐν τῇ κατ' αὐτὴν εὐετηρίᾳ
τῆς ὁμονοίας τοῦ πλήθους κειμένης, οὐ μὴν ἐξεγένετό
γε αὐτοῖς ἀμφοτέρων ἅμα τούτων τυχεῖν, ἀλλὰ συν-
εισῆλθεν ἅμα τῷ κόρῳ τῶν ἀγαθῶν ἡ τῶν χρησο-
μένων αὐτοῖς ὕβρις. καὶ τότε δὴ μέγιστος κατέλαβε
τὴν Ῥώμην κίνδυνος ἐξ ἀρχῆς, ὅτε ἥκιστα ἐδόκει.
οἵ τε γὰρ ἐπὶ τὴν σιτωνίαν ἀποσταλέντες ὑπ' αὐτῶν
πρέσβεις ἐκ τῶν παραθαλαττίων τε καὶ μεσογείων
ἐμπορίων σῖτον ὠνησάμενοι κατήγαγον δημοσίᾳ, οἵ
τε διαμείβεσθαι τὰς ἀγορὰς εἰωθότες ἐκ παντὸς τό-
1359 που συνῆλθον, παρ' ὧν ἡ πόλις ὠνησαμένη τὸν
φόρτον ἐκ τῶν κοινῶν χρημάτων εἶχεν ἐν φυλακῇ.
ἦλθον δὲ καὶ οἱ πρότερον ἀποσταλέντες πρέσβεις εἰς
Σικελίαν Γεγάνιος καὶ Οὐαλέριος πολλὰς ἄγοντες
ὁλκάδας, ἐν αἷς ἐκομίζοντο πυρῶν πέντε μυριάδες
μεδίμνων Σικελικῶν, ὧν τὸ μὲν ἥμισυ μέρος ὠνητὸν
ἦν βραχείας πάνυ τιμῆς, τὸ δὲ λοιπὸν ὁ τύραννος
ἀπεστάλκει προῖκα δοὺς καὶ τέλεσι παρακομίσας τοῖς
ἰδίοις. ὡς δ' ἀπηγγέλθη τοῖς ἐν τῇ πόλει ὁ κατά-
πλους τῶν σιτηγῶν ὁλκάδων τῶν ἀπὸ Σικελίας,
πολλὴ ζήτησις ἐνέπιπτε τοῖς πατρικίοις ὑπὲρ τῆς
διαθέσεως αὐτοῦ. οἱ μὲν γὰρ ἐπιεικέστατοι αὐτῶν
καὶ φιλοδημότατοι πρὸς τὰς κατεχούσας τὸ κοινὸν
ἀνάγκας ἀποβλέποντες, τήν τε παρὰ τοῦ τυράννου
δωρεὰν παρῄνουν ἅπασι διανεῖμαι τοῖς δημοτικοῖς,
καὶ τὸν ὠνηθέντα ἐκ τῶν δημοσίων χρημάτων σῖτον
ὀλίγης αὐτοῖς ἀπεμπολῆσαι τιμῆς, διδάσκοντες ὡς
ἐκ τούτων ἂν γένοιντο μάλιστα τῶν χαρίτων ἐπιει-
κέστεραι πρὸς τοὺς εὐπόρους αἱ τῶν πενήτων ὀργαί·
1360 οἱ δὲ αὐθαδέστεροι καὶ ὀλιγαρχικώτεροι πάσῃ προ-

θυμίᾳ τε καὶ μηχανῇ κακοῦν ᾤοντο δεῖν τοὺς δημοτικούς, καὶ συνεβούλευον τιμίας ἐ'ς ἑνὶ μάλιστα ποιεῖν αὐτοῖς τὰς ἀγοράς, ἵνα σωφρονέστεροι διὰ τὴν ἀνάγκην γένοιντο καὶ πρὸς τὰ λοιπὰ τῆς πολιτείας δίκαια νομιμώτεροι.

XXI. Τούτων ἦν τῶν ὀλιγαρχικῶν καὶ ὁ Μάρκιος ἐκεῖνος ὁ Κοριολάνος ἐπικληθείς, οὐχ ὥσπερ οἱ λοιποὶ κρύφα καὶ δι' εὐλαβείας τὴν ἑαυτοῦ γνώμην ἀποφαινόμενος, ἀλλ' ἄντικρυς καὶ θρασέως, ὥστε πολλοὺς ἀκοῦσαι καὶ τῶν δημοτικῶν. εἶχε γάρ τινας ἔξω τῶν κοινῶν ἐγκλημάτων καὶ ἰδίας προφάσεις νεωστὶ γενομένας, ἐξ ὧν εἰκότως ἐδόκει μισεῖν τοὺς δημοτικούς. ὑπατείαν γὰρ αὐτῷ μετιόντι ταῖς ἔγγιστα γενομέναις ἀρχαιρεσίαις καὶ τοὺς πατρικίους ἔχοντι συναγωνιζομένους, ὁ δῆμος ἐναντιωθεὶς οὐκ εἴασε δοῦναι τὴν ἀρχήν, τήν τε λαμπρότητα τοῦ ἀνδρὸς καὶ τὴν τόλμαν δι' εὐλαβείας ἔχων, μή τι διὰ ταῦτα νεωτερίσῃ περὶ τὴν τῶν δημάρχων κατάλυσιν, καὶ μάλιστα δεδιώς, ὅτι συνελάμβανεν αὐτῷ 1361
πάσῃ προθυμίᾳ τὸ τῶν πατρικίων πλῆθος ὡς οὐδενὶ τῶν πρότερον. ταύτης τε οὖν τῆς ὕβρεως ὀργῇ ἐπαρθεὶς ὁ ἀνὴρ καὶ τὴν μεταβολὴν τοῦ πολιτεύματος εἰς τὸν ἐξ ἀρχῆς κόσμον ἀποκαταστῆσαι προθυμούμενος, αὐτός τε ἀναφανδόν, ὥσπερ καὶ πρότερον ἔφην, ἔπραττε τὴν τοῦ δήμου κατάλυσιν, καὶ τοὺς ἄλλους ἐνῆγεν. ἦν δὲ περὶ αὐτὸν ἑταιρία μεγάλη νέων εὐγενῶν, οἷς ἦν τὰ μέγιστα τιμήματα βίων καὶ πελάται συχνοὶ συνεστηκότες ἐπὶ ταῖς ἐκ τῶν πολέμων ὠφελείαις· οἷς ἐπαιρόμενος ἐφρυάττετο καὶ λαμπρὸς ἦν καὶ προῆλθεν ἐπὶ μήκιστον ἐπιφανείας. οὐ μὴν εὐτυχοῦς γε διὰ ταῦτα καταστροφῆς ἔτυχε· συναχθείσης γὰρ ὑπὲρ τούτων βουλῆς,

καὶ τῶν πρεσβυτέρων, ὡς ἔθος ἦν αὐτοῖς, πρώτων
ἀποφηναμένων τὰς ἑαυτῶν διανοίας, ἐν οἷς οὐ πολ-
λοί τινες ἦσαν οἱ τὰς κατὰ τοῦ δήμου γνώμας ἄντι-
1362 κρυς ἀγορεύσαντες, ἐπειδὴ καθῆκεν εἰς τοὺς νεωτέ-
ρους ὁ λόγος, αἰτησάμενος ἐξουσίαν παρὰ τῶν ὑπά-
των εἰπεῖν ὅσα βούλεται, καὶ τυχὼν ἐπισημασίας τε
μεγάλης καὶ προσοχῆς, λόγον διεξῆλθε κατὰ τοῦ δή-
μου τοιόνδε.

XXII. Ὅτι μὲν οὐχ ὑπ' ἀνάγκης τε καὶ ἀπορίας
βιασθεὶς ὁ δῆμος ἐποιήσατο τὴν ἀπόστασιν, ὦ πα-
τέρες, ἀλλὰ πονηρᾷ ἐλπίδι ἐπαρθείς, ὡς καταλύσων
τὴν ἀριστοκρατίαν ὑμῶν καὶ πάντων αὐτὸς ἐσόμενος
τῶν κοινῶν κύριος, σχεδὸν οἶμαι πάντας ὑμᾶς ᾐσθῆ-
σθαι τὰ περὶ τὰς διαλλαγὰς αὐτοῦ πλεονεκτήματα
ὁρῶντας· ᾧ γε οὐκ ἀπέχρησε διαφθείραντι τὴν περὶ
τὰ συμβόλαια πίστιν καὶ τοὺς ἐπὶ ταύτῃ κειμένους
ἀνελόντι νόμους μηθὲν ἄλλο πολυπραγμονεῖν, καινὴν
δὲ καταστησάμενος ἀρχὴν ἐπὶ τῷ καθελεῖν τὴν τῶν
ὑπάτων, ἱερὰν καὶ ἄσυλον ἐποίησεν αὐτὴν νόμῳ, καὶ
νῦν τυραννικὴν ἐξουσίαν περιβαλόμενος, ὦ βουλή,
1363 τῷ νεωστὶ κυρωθέντι νόμῳ λέληθεν ὑμᾶς. ὅταν γὰρ
ἐπ' ἐξουσίας πολλῆς οἱ προεστηκότες αὐτοῦ πρόφασιν
εὐπρεπῆ προβαλλόμενοι τὸ δὴ τοῖς ἀδικουμένοις τῶν
δημοτῶν βοηθεῖν, διὰ τῆς ἐξουσίας ταύτης ἄγωσι
καὶ φέρωσιν ὅσα ἂν αὐτοῖς δοκῇ, καὶ μηθεὶς ὁ κω-
λύσων τὰς παρανομίας αὐτῶν ᾖ, μήτε ἰδιώτης μήτε
ἄρχων δεδοικὼς τὸν νόμον, ὃς ἀφαιρεῖται καὶ τὸν
λόγον ἡμῶν ἅμα τοῖς ἔργοις θάνατον ἐπιτιθεὶς ζη-
μίαν τοῖς ἐλευθέραν τὴν φωνὴν ἀφιεῖσι, τί προσῆκεν
ὄνομα θέσθαι τῇ δυναστείᾳ ταύτῃ τοὺς νοῦν ἔχοντας
ἕτερον, ἢ τοῦθ' ὅπερ ἐστὶν ἀληθὲς καὶ πάντες ἂν ὁμο-
λογήσαιτε, τυραννίδα; εἰ δ' οὐχ ὑφ' ἑνὸς ἀνδρός, ἀλλ'

ὑφ' ὅλου τυραννούμεθα δήμου, τί τοῦτο διαφέρει; τὸ γὰρ ἔργον ἐξ ἀμφοῖν τὸ αὐτό. κράτιστον μὲν οὖν ἦν μηδὲ τὸ σπέρμα τῆς ἐξουσίας ταύτης ἐᾶσαι καταβαλλόμενον, ἀλλὰ πάντα ὑπομεῖναι πρότερον, ὡς Ἄππιος ὁ βέλτιστος ἐκ πολλοῦ τὰ δεινὰ προορώμενος ἠξίου· εἰ δὲ μή, νῦν γε ὁμοθυμαδὸν ἅπαντας ἐξορύξαντας αὐτὴν πρόρριζον ἐκ τῆς πόλεως ἐκβαλεῖν ἕως ἀσθε- 1364
νής ἐστι καὶ προσπολεμηθῆναι ῥᾳδία. καὶ τοῦτ' οὐ πρώτοις ἡμῖν, ὦ βουλή, οὐδὲ μόνοις ἐξεγένετο παθεῖν, πολλοῖς δὲ καὶ πολλάκις ἤδη τοῖς εἰς ἀβουλήτους ἀνάγκας καταστᾶσι γνώμης ἁμαρτοῦσι τῆς ἀρίστης περὶ τὰ μέγιστα, ἐπειδὴ τὰς ἀρχὰς οὐκ ἐκώλυσαν τοῦ κακοῦ, τὰς αὐξήσεις πειρᾶσθαι καθαιρεῖν· καὶ ἡ μετάνοια τῶν ὀψὲ ἀρχομένων σωφρονεῖν ἥττων οὖσα τῆς προνοίας, καθ' ἕτερον αὖ τρόπον οὐ χείρων οὖσα ἀναφαίνεται τῇ κωλύσει τοῦ τέλους ἀφανίζουσα τὸ ἐν τῇ ἀρχῇ ἀγνοηθέν.

XXIII. *Εἰ δέ τισιν ὑμῶν δεινὰ μὲν τὰ τοῦ δήμου ἔργα εἶναι δοκεῖ, καὶ κεκωλῦσθαι αὐτὸν οἴονται δεῖν τὰ λοιπὰ ἐξαμαρτάνοντα, δέος δὲ εἰσέρχεται, μὴ δόξωσι λύειν τὰς ὁμολογίας πρότεροι καὶ παραβαίνειν τοὺς ὅρκους, γνώτωσαν ὅτι οὐκ ἄρχοντες 1365
ἀλλ' ἀμυνόμενοι, οὐδ' ἀναιροῦντες τὰς ὁμολογίας ἀλλὰ τοὺς ἀνῃρηκότας τιμωρούμενοι αὐτὸ δρῶσιν, ἀναίτιοί τε πρὸς θεοὺς ἔσονται καὶ ἐπὶ τῷ σφετέρῳ συμφέροντι τὰ δίκαια πράξουσι. μέγα δ' ὑμῖν γενέσθω τεκμήριον, ὅτι τοῦ λύειν τὰς ὁμολογίας καὶ παρασπονδεῖν οὐχ ὑμεῖς, ἀλλὰ τὸ δημοτικὸν ἄρχει μέρος οὐκ ἀξιοῦν ἐμμένειν ἐφ' οἷς εὕρετο τὴν κάθοδον· οὐ γὰρ ἐπὶ τῷ κακῶς δρᾶσαι τὴν βουλήν, ἀλλ' ἐπὶ τῷ μὴ ὑπ' ἐκείνης κακοῦσθαι τὴν τῶν δημάρχων ἐξου-

σίαν ᾐτήσατο. χρῆται δὲ αὐτῇ οὐκέτι εἰς ἃ δεῖ οὐδ' ἐφ' οἷς εὕρετο, ἀλλ' ἐπὶ διαφθορᾷ καὶ συγχύσει τῆς πατρίου πολιτείας. μέμνησθε γὰρ δήπου τὴν νεωστὶ γενομένην ἐκκλησίαν καὶ τοὺς ὑπὸ τῶν δημαγωγῶν ῥηθέντας ἐν αὐτῇ λόγους ὅσην ἐπεδείξαντο αὐθάδειάν τε καὶ ἀκοσμίαν, καὶ νῦν ἐφ' οἷον εἰσὶν αὐχήματος οἱ μηδὲν ὑγιὲς φρονοῦντες, ἐπειδὴ ἔγνωσαν ὡς ἐν τῇ ψήφῳ ἐστὶν ἅπαν τὸ τῆς πόλεως κράτος,
1366 *ἧς αὐτοὶ κρατήσουσι πλείους ἡμῶν ὄντες. τί οὖν καταλείπεται ποιεῖν ἡμῖν ἀρξάντων ἐκείνων παρασπονδεῖν καὶ παρανομεῖν, εἰ μὴ τὸ ἀμύνεσθαι τοὺς ἄρξαντας, καὶ ἃ τέως ἀδίκως ἔχουσιν ἀφελέσθαι σὺν δίκῃ, καὶ εἰς τὸ λοιπὸν παῦσαι πλειόνων ἐφιεμένους· χάριν εἰδότας τοῖς θεοῖς, ὅτι οὐκ εἴασαν αὐτοὺς τὰ πρῶτα πλεονεκτήσαντας εἰς τὰ λοιπὰ σωφρονεῖν, ἀλλὰ ταύτην ἐνέβαλον αὐτοῖς τὴν ἀναισχυντίαν τε καὶ πολυπραγμοσύνην, ὑφ' ἧς ὑμεῖς ἀναγκασθέντες τά τ' ἀπολωλότα πειρᾶσθε ἀναλαβεῖν, καὶ τὰ λοιπὰ δι' ἧς προσῆκε φυλακῆς λαβεῖν.*

XXIIII. *Καιρὸς δὲ ὁ παρὼν οἷος οὐχ ἕτερος, εἴπερ γε ἄρχεσθαι μέλλετε σωφρονεῖν, ἐν ᾧ κεκάκωται αὐτῶν τὸ πλεῖστον μέρος ὑπὸ τοῦ λιμοῦ, καὶ τὸ λοιπὸν οὐκ ἂν ἔτι δύναιτο πολὺν ἀντισχεῖν χρόνον ὑπ' ἀχρηματίας, εἰ σπανίους τε καὶ τιμίας ἔχοι*
1367 *τὰς ἀγοράς· ἀναγκασθήσονται δὲ οἱ μὲν κάκιστοι καὶ οὐδέποτε τῇ ἀριστοκρατίᾳ χαίροντες ἐκλιπεῖν τὴν πόλιν, οἱ δ' ἐπιεικέστεροι πολιτεύεσθαι κοσμίως μηθὲν ἔτι ἐνοχλοῦντες ὑμῖν. τάς τ' οὖν ἀγορὰς διὰ φυλακῆς ἔχετε, καὶ τῆς τιμῆς τῶν ὠνίων μηθὲν ἀνίετε, ἀλλ' ὅσου πλείστου ποτὲ ἦν τὰ ὤνια, τοσούτου καὶ νῦν αὐτὰ πωλεῖν ψηφίσασθε δικαίας ἀφορμὰς ἔχοντες καὶ προφάσεις εὐλόγους, τήν τε ἀχάριστον*

τοῦ δήμου καταβοήν, ὡς ὑφ' ἡμῶν κατασκευασθείσης τῆς σιτοδείας, ἢ διὰ τὴν ἀπόστασιν τὴν ἐκείνων ἐγένετο καὶ τὴν καταφθορὰν ἣν ἐποιήσαντο τῆς γῆς, ἄγοντες αὐτὴν καὶ φέροντες ὥσπερ πολεμίαν, καὶ τὰς ἐξαιρεθείσας ἐκ τοῦ δημοσίου δαπάνας εἰς τοὺς ἀποσταλέντας ἐπὶ τὴν σιτωνίαν ἄνδρας, καὶ ἄλλα πολλά, ἃ ἠδίκησθε ὑπ' αὐτῶν· ἵνα καὶ γνῶμεν ἤδη τί ποτ' ἐστὶν ἐκεῖνο τὸ δεινόν, ὃ διαθήσουσιν ἡμᾶς, ἂν μὴ ποιῶμεν ἅπαντα τῷ δήμῳ τὰ καθ' ἡδονάς, ὡς οἱ δημαγωγοὶ αὐτῶν δεδιττόμενοι ἔλεγον. εἰ δὲ 1368
ἀφήσετε καὶ τοῦτον ἐκ τῶν χειρῶν τὸν καιρόν, πολλάκις εὔξεσθε τοιούτου τυχεῖν ἑτέρου· καὶ εἰ γνοίη τοῦτο ὁ δῆμος, ὅτι βουληθέντες καταλύειν αὐτοῦ τὴν ἰσχὺν ἀπετράπεσθε, πολὺ μᾶλλον ὑμῖν βαρὺς ἐγκείσεται, πολέμιον μὲν τὸ βουλόμενον ὑμῶν ἡγούμενος, δειλὸν δὲ τὸ μὴ δυνάμενον.

XXV. Τοιαῦτ' εἰπόντος τοῦ Μαρκίου, διέστησαν αἱ γνῶμαι τῶν συνέδρων, καὶ θόρυβος ἐν αὐτοῖς ἐγίνετο πολύς. οἱ μὲν γὰρ ἐξ ἀρχῆς ἐναντίοι τοῖς δημοτικοῖς καὶ τὰς διαλλαγὰς παρὰ γνώμην ὑπομείναντες, ἐν οἷς ἥ τε νεότης ὀλίγου δεῖν πᾶσα ἦν καὶ τῶν πρεσβυτέρων οἱ πλουσιώτατοί τε καὶ φιλοτιμότατοι, βαρέως φέροντες οἱ μὲν ἐπὶ ταῖς περὶ τὰ συμβόλαια βλάβαις, οἱ δ' ἐπὶ τῇ περὶ τὰς τιμὰς ἐλαττώσει, ἐπῄνουν τὸν ἄνδρα ὡς γενναῖον καὶ φιλόπολιν καὶ τὰ κράτιστα τῷ κοινῷ λέγοντα· οἱ δὲ δημοτικὰς ἔχοντες τὰς προαιρέσεις τῶν τρόπων καὶ τὸν 1369
πλοῦτον οὐ πέρα τοῦ δέοντος ἐκτετιμηκότες, τῆς τε εἰρήνης οὐδὲν ἀναγκαιότερον ὑπολαμβάνοντες, ἤχθοντο τοῖς λεγομένοις ὑπ' αὐτοῦ καὶ τὴν γνώμην οὐ προσίεντο· ἠξίουν τε μὴ τοῖς βιαίοις, ἀλλὰ τοῖς εὐγνώμοσι περιεῖναι τῶν ταπεινοτέρων, μηδ' ἀπρε-

πὲς ἀλλ᾿ ἀναγκαῖον ἡγεῖσθαι τὸ ἐπιεικές, ἄλλως τε καὶ πρὸς τοὺς συμπολιτευομένους ἐπ᾿ εὐνοίᾳ γινόμενον· μανίαν τε ἀπέφαινον αὐτοῦ τὴν συμβουλήν, οὐ παρρησίαν οὐδὲ ἐλευθερίαν. βραχὺ μὲν οὖν τοῦτο τὸ μέρος καὶ ἀσθενὲς ὂν περιεωθεῖτο ὑπὸ τοῦ βιαιοτέρου. ταῦτα δὲ ὁρῶντες οἱ δήμαρχοι· παρῆσαν γὰρ τῷ συνεδρίῳ παρακληθέντες ὑπὸ τῶν ὑπάτων· ἐβόων τε καὶ ἤσπαιρον καὶ τὸν Μάρκιον λυμεῶνα καὶ ὄλεθρον τῆς πόλεως ἀπεκάλουν πονηροὺς διεξιόντα κατὰ τοῦ δήμου λόγους, καὶ εἰ μὴ κωλύσειαν αὐτὸν οἱ πατρίκιοι πόλεμον ἐμφύλιον εἰς τὴν πόλιν εἰσάγοντα θανάτῳ ζημιώσαντες ἢ φυγῇ, αὐτοὶ
1370 ποιήσειν τοῦτ᾿ ἔλεγον. θορύβου δ᾿ ἔτι πλείονος ἐπὶ τοῖς λόγοις τῶν δημάρχων γενομένου, καὶ μάλιστα ἐκ τῶν νεωτέρων τὰς ἀπειλὰς δυσανασχετούντων, ἐπαρθεὶς τούτοις ὁ Μάρκιος αὐθαδέστερον ἤδη καθήπτετο τῶν δημάρχων καὶ θρασύτερον· Εἰ μὴ παύσεσθε μέντοι, λέγων, ταράττοντες τὴν πόλιν ὑμεῖς καὶ ἐκδημαγωγοῦντες τοὺς ἀπόρους, οὐκέτι λόγῳ διοίσομαι πρὸς ὑμᾶς, ἀλλ᾿ ἔργῳ.

XXVI. Ἠγριωμένης δὲ τῆς βουλῆς, ὡς ἔμαθον οἱ δήμαρχοι πλείους ὄντας τοὺς βουλομένους ἀφελέσθαι τὴν δοθεῖσαν ἐξουσίαν τῷ δήμῳ τῶν ἐμμένειν ταῖς ὁμολογίαις ἀξιούντων, ἐξέδραμον ἐκ τοῦ βουλευτηρίου κεκραγότες καὶ θεοὺς τοὺς ὁρκίους ἐπικαλούμενοι. καὶ μετὰ τοῦτο συναγαγόντες εἰς ἐκκλησίαν τὸν δῆμον, ἐδήλωσαν αὐτῷ τοὺς ἐν τῇ βουλῇ ῥηθέντας λόγους ὑπὸ τοῦ Μαρκίου, καὶ τὸν ἄνδρα εἰς ἀπολογίαν ἐκάλουν. ὡς δ᾿ οὐ προσεῖχεν αὐτοῖς, ἀλλὰ καὶ τοὺς ὑπηρέτας ὑφ᾿ ὧν ἐκαλεῖτο προπηλακίζων τοῖς λόγοις ἀνεῖρξεν, ἀγανακτήσαντες
1371 ἔτι μᾶλλον οἱ δήμαρχοι παραλαβόντες τούς τε ἀγο-

ρανόμους καὶ τῶν ἄλλων πολιτῶν συχνοὺς ὥρμησαν ἐπ' αὐτόν· ὁ δ' ἔτυχεν ἔτι διατρίβων πρὸ τοῦ βουλευτηρίου τῶν τε πατρικίων πολλοὺς ἐπαγόμενος καὶ τὴν ἄλλην ἑταιρίαν [τὴν] περὶ αὐτὸν ἔχων. ὡς δὲ συνεῖδον αὐτὸν οἱ δήμαρχοι, προσέταξαν τοῖς ἀγορανόμοις ἐπιλαβέσθαι τοῦ σώματος καὶ εἰ μὴ ἑκὼν βούλεται ἀκολουθεῖν βίᾳ ἄγειν· εἶχον δὲ τότε τὴν ἀγορανομικὴν ἐξουσίαν Τῖτος Ἰούνιος Βροῦτος καὶ Γάιος Οὐισέλλιος Ῥούγας. οἱ μὲν δὴ προσήεσαν ὡς ἐπιληψόμενοι τοῦ ἀνδρός, οἱ δὲ πατρίκιοι δεινὸν ἡγησάμενοι τοὔργον ὑπὸ τῶν δημάρχων πρὸ δίκης ἄγεσθαί τινα σφῶν βίᾳ, προὔστησαν τοῦ Μαρκίου καὶ τύπτοντες τοὺς ὁμόσε χωροῦντας ἀπήλασαν. διαβοηθέντος δὲ τοῦ πάθους ἀνὰ τὴν πόλιν ὅλην, ἐξεπήδων ἅπαντες ἐκ τῶν οἰκιῶν· οἱ μὲν ἐν τοῖς ἀξιώμασιν ὄντες καὶ χρημάτων ἔχοντες εὖ τὸν Μάρκιον ὑπερασπιοῦντες ἅμα τοῖς πατρικίοις καὶ τὴν ἀρχαίαν ἀνακτησόμενοι πολιτείαν, οἱ δὲ ταπεινοὶ ταῖς 1372
τύχαις καὶ βίου σπανίζοντες ἀμύνειν παρεσκευασμένοι τοῖς δημάρχοις καὶ ποιεῖν ὅ τι ἂν ἐκεῖνοι κελεύσωσιν· ἥ τε αἰδώς, ὑφ' ἧς κρατούμενοι τέως οὐδὲν ἐτόλμων εἰς ἀλλήλους παρανομεῖν, τότε ἀνῄρητο ὑπ' αὐτῶν. οὐ μὴν ἔδρασάν γε οὐδὲν ἀνήκεστον τὴν ἡμέραν ἐκείνην, ἀλλ' εἰς τὴν ἐπιοῦσαν ἀνεβάλοντο, γνώμῃ τε καὶ παρακλήσει τῶν ὑπάτων εἴξαντες.

XXVII. Τῇ δ' ἑξῆς ἡμέρᾳ πρῶτοι καταβάντες εἰς τὴν ἀγορὰν οἱ δήμαρχοι συνεκάλουν τὸν δῆμον εἰς ἐκκλησίαν, καὶ παριόντες ἐκ διαδοχῆς πολλὰ μὲν τῶν πατρικίων κατηγόρουν ὡς ἐψευσμένων τὰς συνθήκας καὶ παραβεβηκότων τοὺς ὅρκους, οὓς ἐποιήσαντο πρὸς τὸν δῆμον ὑπὲρ ἀμνηστίας τῶν πάλαι,

πίστεις παραφέροντες τοῦ μὴ βεβαίως αὐτοὺς διηλλάχθαι πρὸς τὸ δημοτικὸν τήν τε τοῦ σίτου σπάνιν, ἣν αὐτοὶ κατεσκεύσαν, καὶ τὰς ἀποστολὰς τῶν κληρούχων ἀμφοτέρων καὶ τὰ ἄλλα ὅσα ἐμηχανήσαντο μειώσεως τοῦ πλήθους ἕνεκα. πολλὰ δὲ τοῦ Μαρκίου
1373 καθήπτοντο τοὺς ῥηθέντας ὑπ' αὐτοῦ λόγους ἐν τῇ βουλῇ διεξιόντες, καὶ ὅτι καλούμενος εἰς ἀπολογίαν ὑπὸ τοῦ δήμου οὐ μόνον οὐκ ἠξίωσεν ἐλθεῖν, ἀλλὰ καὶ τοὺς ἀφικομένους ἐπ' αὐτὸν ἀγορανόμους τύπτων ἀπήλασεν. ἐκάλουν δὲ μάρτυρας τῶν ἐν τῇ βουλῇ γενομένων τοὺς ἐντιμοτάτους τῶν ἐκεῖ, τῆς δὲ περὶ τοὺς ἀγορανόμους ὕβρεως ἅπαντας τοὺς τότε παρόντας κατὰ τὴν ἀγορὰν δημοτικούς. ταῦτα δ' εἰπόντες ἐδίδοσαν εἰ βουλομένοις εἴη τοῖς πατρικίοις ἀπολογίαν, κατέχοντες ἐπὶ τῆς ἐκκλησίας τὸν δῆμον, ἕως ἡ βουλὴ διαλυθῇ. ἔτυχον γὰρ ὑπὲρ αὐτῶν τούτων συνεδρεύοντες οἱ πατρίκιοι διαποροῦντες, εἴτε ἀπολογητέον αὐτοῖς εἴη πρὸς τὸν δῆμον ὑπὲρ ὧν διεβλήθησαν, εἴτε μενετέον ἐφ' ἡσυχίας. ἐπεὶ δ' αἱ πλείους γνῶμαι τὰ φιλανθρωπότερα τῶν αὐθαδεστέρων προείλοντο, διαλύσαντες οἱ ὕπατοι τὸν σύλλογον προῆλθον εἰς τὴν ἀγοράν, τάς τε κοινὰς ἀπολυσόμενοι διαβολὰς καὶ περὶ τοῦ Μαρκίου τὸν δῆμον ἀξιώσοντες μηθὲν βουλεῦσαι ἀνήκεστον. καὶ παρελθὼν ὁ πρεσβύτερος αὐτῶν Μηνύκιος ἔλεξε τοιάδε.

1374 XXVIII. Ἡ μὲν ὑπὲρ τῆς σιτοδείας ἀπολογία πάνυ βραχειά ἐστιν, ὦ δημόται, καὶ οὐκ ἄλλους τινὰς παρεξόμεθα ὧν ἂν λέγωμεν ἢ ὑμᾶς μάρτυρας. τήν τε γὰρ ἀφορίαν τῶν σιτικῶν καρπῶν ἐπίστασθε δήπου καὶ αὐτοὶ διὰ τὸν ἐκλειφθέντα σπόρον γενομένην· τήν τε ἄλλην καταφθορὰν τῆς χώρας οὐ παρ'

ἑτέρων ὑμᾶς δεῖ μαθεῖν, ἀφ᾽ ἧς αἰτίας συνέβη, καὶ ὡς τελευτῶσα ἡ πλείστη τε καὶ ἀρίστη γῆ πάντων ἐσπάνικε καρπῶν τε καὶ ἀνδραπόδων καὶ βοσκημάτων, τὰ μὲν ὑπὸ τῶν πολεμίων διαρπαζομένη, τὰ δὲ ὑμῖν μὴ ἐπιχορηγοῦσα τοσούτοις οὖσι καὶ μηδεμίαν ἄλλην ἀποτροφὴν ἔχουσιν. ὥστε οὐκ ἐξ ὧν οἱ δημαγωγοὶ διαβάλλουσιν, ἀλλ᾽ ἐξ ὧν αὐτοὶ ἴστε, τὸν λιμὸν ἡγούμενοι γεγονέναι παύσασθε προσάπτοντες ἐπιβουλὴν ἡμετέραν τῷ πάθει, καὶ δι᾽ ὀργῆς ἔχοντες ἡμᾶς οὐδὲν ἀδικοῦντας. αἱ δ᾽ ἀποστολαὶ τῶν κληρούχων ἐκ τοῦ ἀναγκαίου ἐγένοντο, κοινῇ δόξαν ὑμῖν ἅπασι διὰ φυλακῆς ἔχειν χωρία εἰς πόλεμον ἐπιτήδεια, καὶ μεγάλα ὤνησαν ἐν καιρῷ σφόδρα ἀναγκαίῳ 137
γενόμεναι τούς τε ἐξιόντας καὶ τοὺς ὑπολειπομένους ὑμῶν. οἱ μέν γε ἀφθονωτέρων εὐποροῦσιν ἐκεῖ τῶν ἐπιτηδείων· οἱ δ᾽ ἐνθάδε ὑπομείναντες ἧττον σπανίζουσι τῆς ἀγορᾶς· ἥ τε ἰσομοιρία τῆς τύχης, ἧς μετέσχομεν ὑμῖν τοῖς δημοτικοῖς οἱ πατρίκιοι κλήρῳ ποιησάμενοι τὸν ἔξοδον, οὐ ψέγεται.

XXVIIII. Τί οὖν παθόντες οἱ δημαγωγοὶ περὶ τούτων ἡμῖν ἐγκαλοῦσιν, ὧν κοινὰς ἔσχομεν τὰς γνώμας καὶ τὰς τύχας, εἴτε δεινῶν ὄντων ὡς οὗτοί φασιν, εἴτε ὠφελίμων ὥσπερ ἡμεῖς οἰόμεθα; ἃ μὲν γὰρ ἐπὶ τῇ νεωστὶ βουλῇ γενομένῃ διαβεβλήμεθα ὑπ᾽ αὐτῶν, ὡς οὐκ ἀξιοῦντες μετριάσαι περὶ τὰς τιμὰς τῆς ἀγορᾶς, ὡς ἐπιβουλεύοντες ἀφελέσθαι τὴν ἐξουσίαν τῶν δημάρχων, ὡς μνησικακοῦντες ὑμῖν τῆς ἀποστάσεως καὶ παντὶ τρόπῳ προθυμούμενοι κακῶσαι τὸ δημοτικόν, καὶ πάντα τὰ τοιαῦτα ἐγκλήματα ἔργοις ἀπολυσόμεθα οὐκ εἰς μακράν, οὔτε κακὸν οὐθὲν ὑμᾶς ἐργασόμενοι, τήν τε ἐξουσίαν τῶν δημάρχων ἐφ᾽ οἷς τότε συνεχωρήσαμεν ὑμῖν ἔχειν καὶ νῦν βεβαιοῦν- 137

τες, τοῦ δὲ σίτου τὴν διάπρασιν ὡς ἂν ὑμῖν ἅπασι
δόξῃ ποιησόμενοι. περιμείναντες οὖν, ἐάν τι μὴ γέ-
νηται τούτων, τότε κατηγορεῖτε ἡμῶν. εἰ δὲ βουλη-
θείητε ἀκριβῶς ἐξετάσαι τὰ διάφορα, δικαιότερον ἂν
ἡμεῖς οἱ πατρίκιοι τοῦ δήμου κατηγοροίημεν, ἢ τὴν
βουλὴν ὑμεῖς ἔχοιτε δι' αἰτίας. ἀδικεῖτε γὰρ ἡμᾶς,
ὦ δημόται, καὶ μηθὲν ἀχθεσθῆτε ἀκούοντες, οἵ γε
οὐκ ἀναμείναντες τῆς γνώμης ἡμῶν μαθεῖν τὸ τέλος
κατηγορεῖν ἤδη αὐτῆς ἀξιοῦτε. καίτοι τίς οὐκ οἶδεν,
ὅτι παντὶ τῷ βουλομένῳ ῥᾷστον ἔργον ἂν γένοιτο
συγχέαι καὶ ἀνελεῖν ὁμόνοιαν ἐκ πόλεως, τοιαῦτα
1377 ἐγκαλοῦντι, ὧν ἡ πίστις μέλλουσα καὶ ἐν ἀδήλῳ ἔτι
οὖσα οὐ φυλακή ἐστι τοῦ μὴ παθεῖν τι κακόν, ἀλλὰ
πρόφασις τοῦ ἀδικεῖν; καὶ οὐ τοῖς προεστηκόσιν
ὑμῶν μόνον ὧν διαβάλλουσι τὴν βουλὴν καὶ συκο-
φαντοῦσιν ἐπιτιμᾶν ἄξιον, ἀλλὰ καὶ ὑμῖν οὐχ ἧττον
ὧν πιστεύετε αὐτοῖς καὶ πρὶν πειραθῆναι ἀγα-
νακτεῖτε. ἐχρῆν γὰρ ὑμᾶς, εἰ τὰ μέλλοντα ἐφοβεῖσθε
ἀδικήματα, καὶ τὰς ἐπ' αὐτοῖς ὀργὰς μελλούσας ἔχειν.
νῦν δὲ φαίνεσθε ταχύτερα μᾶλλον ἢ φρονιμώτερα
ἐγνωκέναι, καὶ τὸ ἀσφαλέστερον ἐν τῷ κακουργοτέρῳ
τιθέναι.

XXX. Περὶ μὲν δὴ τῶν κοινῶν ἀδικημάτων, ἐφ'
οἷς τὴν βουλὴν οἱ δήμαρχοι διέβαλον, ἀποχρῆν οἴομαι
τοσαῦτα εἰρῆσθαι. ἐπεὶ δὲ καὶ καθ' ἕνα ἕκαστον
ἡμῶν, περὶ ὧν ἂν εἴπωμεν ἐν τῇ βουλῇ, συκοφαν-
τοῦσι, καὶ διιστάναι τὴν πόλιν αἰτιῶνται, καὶ νῦν
1378 Γάιον Μάρκιον ἄνδρα φιλόπολιν ἐλευθέρᾳ φωνῇ
χρησάμενον ὑπὲρ τῶν κοινῶν ἀποκτεῖναι ζητοῦσιν ἢ
φυγάδα ποιῆσαι τῆς πατρίδος, βούλομαι καὶ περὶ
τούτου τὰ δίκαια εἰπεῖν πρὸς ὑμᾶς· καὶ σκοπεῖτε, εἰ
μετρίους καὶ ἀληθεῖς ἐρῶ τοὺς λόγους. ὑμεῖς, ὦ δη-

μόται, διαλλαττόμενοι πρὸς τὴν βουλὴν ἀποχρῆν ὑμῖν
ᾤεσθε τῶν δανείων ἀφεῖσθαι, καὶ βοηθείας ἕνεκα
τῶν κατισχυομένων πενήτων ἄρχοντας ἐξ αὐτῶν
ᾐτήσασθε ἀποδεικνύναι, καὶ ταῦτα ἀμφότερα πολ-
λὴν εἰδότες ἡμῖν χάριν ἐλάβετε· καταλῦσαι δὲ τὴν
ἀρχὴν τῶν ὑπάτων, ἢ τὴν βουλὴν ἄκυρον ποιῆσαι
τῆς ὑπὲρ τῶν κοινῶν προστασίας καὶ τὴν τάξιν ἀνα-
τρέψαι τῆς πατρίου πολιτείας οὔτε ᾐτήσασθε οὔτε
μέλλετε. τί οὖν μαθόντες ἐπιχειρεῖτε πάντα συγχεῖν
ταῦτα νυνί; καὶ τίνι δικαίῳ πιστεύοντες τὰς τιμὰς
ἡμῶν ζητεῖτε ἀφαιρεῖσθαι; εἰ γὰρ ἐν τοῖς μετέχουσι
τῆς βουλῆς φοβερὸν ποιήσετε τὸ μὴ μετὰ παρρησίας
ἃ φρονοῦσι λέγειν, τί ἂν εἴποιεν οἱ προεστηκότες
ὑμῶν ἐπιεικές; ἢ ποίῳ χρησάμενοι νόμῳ θανάτῳ ζη- 1379
μιοῦν ἢ φυγῇ τῶν πατρικίων τινὰς ἀξιώσουσιν; οὔτε
γὰρ οἱ παλαιοὶ νόμοι ταύτην διδόασιν ὑμῖν τὴν ἐξου-
σίαν, οὔτε αἱ νεωστὶ γενόμεναι πρὸς τὴν βουλὴν
ὁμολογίαι. τὸ δ' ἐκβαίνειν τοὺς νομίμους ὅρκους καὶ
τὴν βίαν κρείττονα ποιεῖν τῆς δίκης οὐκέτι δημο-
τικόν ἐστιν, ἀλλ' εἰ τἀληθῆ βούλεσθε ἀκούειν τυραν-
νικόν. ἐγὼ δὲ παραινέσαιμ' ἂν ὑμῖν, ὧν μὲν εὕρεσθε
παρὰ τῆς βουλῆς φιλανθρώπων μηδενὸς ἀφίστασθαι·
ὧν δὲ οὐκ ἠξιώσατε διαλυόμενοι τὴν ἔχθραν τότε τυ-
χεῖν μηδὲ νῦν ἀντιποιεῖσθαι.

XXXI. Ἵνα δὲ μᾶλλον ὑμῖν γένηται φανερόν,
ὅτι οὐθὲν οὔτε μέτριον οὔτε δίκαιον ἀξιοῦσιν οἱ δημ-
αγωγοί, ἀλλὰ παρανόμων τε καὶ ἀδυνάτων ἐφίεν-
ται μετενεγκόντες τὸ πρᾶγμα ἐφ' ἑαυτούς, οὕτω σκο-
πεῖτε, καὶ ὑπολάβετε τοὺς μετέχοντας τοῦ συνεδρίου
τοῖς ἐν ὑμῖν πολιτευομένοις ἐγκαλεῖν, ὅτι πονηροὺς
κατὰ τῆς βουλῆς διατίθενται λόγους ἐν ὑμῖν, καὶ
καταλύουσι τὴν πάτριον ἀριστοκρατίαν, καὶ διαστα- 1380

σιάζουσι τὴν πόλιν, ἅπαντα ταῦτα λέγοντας ἀληθῆ· ποιοῦσι γὰρ ταῦτα· καὶ τὸ πάντων χαλεπώτατον, ὅτι δυναστείαν περιβάλλονται μείζονα τῆς συγκεχωρημένης αὐτοῖς ἄκριτον ἀποκτείνειν ἐπιχειροῦντες ὃν ἂν ἐθέλωσιν ἐξ ἡμῶν, καὶ ὅτι δεῖ τοὺς ταῦτα ποιοῦντας τεθνάναι νηποινί. πῶς ἂν ὑμεῖς ἐνέγκοιτε τὴν αὐθάδειαν τοῦ συνεδρίου; καὶ τί ἂν εἴποιτε; ἆρ' οὐκ ἀγανακτήσαιτε καὶ δεινὰ φαίητε πάσχειν, εἰ τὴν παρρησίαν ἀφαιρήσεταί τις ὑμᾶς καὶ τὴν ἐλευθερίαν, τὸν ὑπὲρ τῶν ἐσχάτων κίνδυνον ἐπιθεὶς τοῖς ἐλευθέραν φωνὴν ὑπὲρ τοῦ δήμου φθεγξαμένοις; οὐκ ἔνεστ' ἄλλως εἰπεῖν. ἔπειθ' ἃ παθεῖν οὐκ ἂν ὑπομείναιτε αὐτοί, ταῦθ' ἑτέρους πάσχοντας ἀνέχεσθαι δικαιοῦτε; πολιτικά γε, ὦ δημόται, καὶ μέτρια ὑμῶν τὰ βουλεύματα. τοιαῦτα ἀξιοῦντες, οὐκ αὐτοὶ βεβαιοῦτε τὰς καθ' ἑαυτῶν διαβολὰς ἀληθεῖς εἶναι, καὶ τοὺς συμβουλεύοντας τὴν παράνομον ὑμῶν δυναστείαν μὴ περιορᾶν αὐξομένην, τὰ δίκαια καὶ συμ-
1381 φέροντα τῷ κοινῷ φρονοῦντας ἀποδείκνυτε; ἐμοὶ μὲν γὰρ δοκεῖ. ἀλλ' εἴ γε τἀναντία βούλεσθε ὧν διαβέβλησθε ποιεῖν, ἐμοὶ συμβούλῳ χρησάμενοι μετριάσατε καὶ τοὺς λόγους ἐφ' οἷς ἄχθεσθε πολιτικῶς καὶ μὴ δυσοργήτως ἐνέγκετε. περιέσται γὰρ ὑμῖν μὲν εἰ τοῦτο ποιήσετε ἀγαθοῖς εἶναι δοκεῖν, τοῖς δὲ ἀπεχθῶς διακειμένοις πρὸς ὑμᾶς μετανοεῖν.

XXXII. *Δίκαια* μὲν δὴ ταῦτα προεχόμενοι πρὸς ὑμᾶς μεγάλα, ὥς γε οὖν οἰόμεθα, πείθομεν ὑμᾶς μηδὲν ἐξαμαρτάνειν· χρηστὰ δὲ καὶ φιλάνθρωπα ἔργα, οἷς χρησόμεθα οὐκ ὀνειδίσαι βουλόμενοι ὑμᾶς ἀλλ' ἐπιεικεστέρους ποιῆσαι, χωρὶς τῶν παλαιῶν τὰ νεωστὶ γενόμενα περὶ τὴν κάθοδον ὑμῶν,

ὧν ἡμεῖς μὲν ἐπιλελῆσθαι βουλόμεθα, ὑμεῖς δὲ δί-
καιοί ἐστε μεμνῆσθαι. ἀναγκαζόμεθα δὲ αὐτὰ παραφέ-
ρειν νυνί, χρήζοντες ἀντὶ πολλῶν καὶ μεγάλων, ὧν 1382
ὑμῖν δεομένοις ἐχαρισάμεθα, ταύτην παρ' ὑμῶν ἀν-
τιλαβεῖν τὴν χάριν, μήτε ἀποκτεῖναι μήτε ἐκβαλεῖν
τῆς πόλεως ἄνδρα φιλόπολιν καὶ τὰ πολέμια πάντων
κράτιστον. ζημιωσόμεθα γὰρ οὐ μικρά, εὖ ἴστε, ὦ
δημόται, τοιαύτης ἀποστερήσαντες ἀρετῆς τὴν πόλιν.
μάλιστα μὲν οὖν δι' αὐτὸν ἐκεῖνον ὑφεῖναι τῆς ὀρ-
γῆς δίκαιοί ἐστε, μνησθέντες ὅσους ὑμῶν ἔσωσεν ἐν
τοῖς πολέμοις, καὶ μὴ λόγων μνησικακεῖν φαύλων,
ἀλλ' ἔργων μεμνῆσθαι καλῶν. ὁ μὲν γὰρ λόγος
ὑμᾶς τοῦ ἀνδρὸς οὐδὲν ἔβλαψεν, αἱ δὲ πράξεις αὐ-
τοῦ μεγάλα ὠφέλησαν. εἰ δὲ πρὸς τοῦτον ἀδιαλ-
λάκτως ἔχετε, ἡμῖν γέ τοι καὶ τῇ βουλῇ χαρίσασθε
αὐτὸν δεομένοις, καὶ διαλλάγητε ἤδη ποτὲ βεβαίως
τήν τε πόλιν ὥσπερ ἐξ ἀρχῆς εἶχε μίαν εἶναι ποιή-
σατε. εἰ δὲ πείθουσιν ἡμῖν οὐ συγχωρήσετε, εὖ
ἴστε, ὅτι οὐδ' ἡμεῖς βιαζομένοις ὑμῖν εἴξομεν, ἀλλ'
εἴτε φιλότητος ἀδόλου καὶ χαρίτων ἔτι μειζόνων 1383
ἥδε ἡ πεῖρα τοῦ δήμου πᾶσιν αἰτία ἔσται, ἢ πο-
λέμου ἐμφυλίου αὖθις ἄρξει καὶ κακῶν ἀνηκέ-
στων.

XXXIII. Τοιαῦτα τοῦ Μηνυκίου διεξελθόντος, ὁρῶντες οἱ δήμαρχοι τῇ τε μετριότητι τῶν λόγων καὶ τῇ φιλανθρωπίᾳ τῶν ὑποσχέσεων ὑπαγόμενον τὸ πλῆθος, ἤχθοντο καὶ χαλεπῶς ἔφερον, μάλιστα δὲ Γάιος Σικίννιος Βελλοῦτος, ὁ πείσας τοὺς πένητας ἀποστῆναι τῶν πατρικίων καὶ στρατηγὸς ἀποδειχθεὶς ὑπ' αὐτῶν ἕως ἦσαν ἐν τοῖς ὅπλοις, ἔχθιστος ἀνὴρ ἀριστοκρατίᾳ καὶ διὰ τοῦτο προηγμένος ὑπὸ τῶν πολλῶν εἰς ἐπιφάνειαν τήν τε δημαρχικὴν ἐξουσίαν δεύ-

τερον ἤδη παρειληφώς, ἁπάντων ἥκιστα τῶν δημαγωγῶν ἑαυτῷ συμφέρειν ὁμονοῆσαι οἰόμενος τὴν πόλιν καὶ τὸν ἀρχαῖον ἀναλαβεῖν κόσμον. οὐ γὰρ ὅσον τὰς τιμὰς καὶ τὰς δυνάμεις ἕξειν ἔτι τὰς αὐτὰς ὑπελάμβανεν ἀριστοκρατίας πολιτευομένης, γεγονώς τε κακῶς καὶ τεθραμμένος ἀδόξως καὶ λαμπρὸν οὐθὲν ἀποδειξάμενος οὔτε κατὰ πολέμους οὔτε ἐν εἰρήνῃ,
1384 ἀλλὰ καὶ περὶ τῶν ἐσχάτων κινδυνεύσειν, ὡς ἐστασιακὼς τὴν πόλιν καὶ πολλῶν αὐτῇ κακῶν γεγονὼς αἴτιος. ἐνθυμηθεὶς δὴ ὅσα χρὴ λέγειν τε καὶ πράττειν καὶ μετὰ τῶν συναρχόντων βουλευσάμενος, ἐπειδὴ κἀκείνους ἔσχεν ὁμογνώμονας, ἀνέστη καὶ μικρὰ περὶ τῆς κατεχούσης τὸν δῆμον ἀτυχίας ἀποδυράμενος, τούς τε ὑπάτους ἐπήνεσεν, ὅτι λόγον ἠξίωσαν ὑποσχεῖν τοῖς δημόταις οὐχ ὑπεριδόντες αὐτῶν τῆς ταπεινότητος, καὶ τοῖς πατρικίοις εἰδέναι χάριν ἔφησεν, εἴ τις αὐτοῖς ἤδη ποτὲ φροντὶς εἰσέρχεται τῆς σωτηρίας τῶν πενήτων· καὶ ἔτι μᾶλλον ἔφη μετὰ πάντων ἐκμαρτυρήσειν, ἐὰν ὅμοια παράσχωνται τοῖς λόγοις τὰ ἔργα.

XXXIIII. Εἰπὼν δὲ ταῦτα καὶ δόξας μέτριος ὀργὴν εἶναι καὶ διαλλακτικὸς ἐπιστρέφει πρὸς τὸν Μάρκιον παρεστηκότα τοῖς ὑπάτοις καὶ λέγει· Σὺ δὲ τί οὐκ ἀπολογῇ πρὸς τοὺς σαυτοῦ πολίτας, ὦ γενναῖε, περὶ ὧν εἶπας ἐν τῇ βουλῇ; μᾶλλον δὲ τί οὐκ ἀντιβολεῖς καὶ παραιτῇ τὰς ὀργὰς αὐτῶν, ἵνα μετριω-
1385 τέραν ἐπιθῶσί σοι ζημίαν; ἀρνεῖσθαι μὲν γὰρ οὐκ ἂν ἀξιώσαιμί σε τοσούτων ἀνδρῶν εἰδότων, οὐδ' εἰς ἀναισχύντους καταφεύγειν ἀπολογίας, Μάρκιον ὄντα καὶ φρόνημα μεῖζον ἢ κατ' ἰδιώτην ἔχοντα· εἰ μὴ ἄρα τοῖς ὑπάτοις καὶ τοῖς πατρικίοις καλῶς ἔχει πείθειν ὑπὲρ σοῦ τὸν δῆμον, σοὶ δὲ οὐκ ἄρα καλῶς

ἕξει τὸ αὐτὸ τοῦτο περὶ σεαυτοῦ ποιήσαντι. Ταῦτα
δ' ἔλεγεν οὐκ ἀγνοῶν, ὅτι μεγαλόφρων ἀνὴρ οὐχ
ὑπομενεῖ κατήγορος ἑαυτοῦ γενόμενος ὡς ἡμαρτηκὼς
ἄφεσιν αἰτεῖσθαι τῆς τιμωρίας, οὐδ' εἰς ὀλοφυρμοὺς
καὶ δεήσεις καταφεύξεται παρὰ τὸν ἑαυτοῦ τρόπον,
ἀλλ' ἤτοι καὶ τὸ παράπαν ἀπαξιώσει τὴν ἀπολογίαν,
ἢ τὴν ἔμφυτον αὐθάδειαν φυλάττων οὐθὲν ὑποθω-
πεύσει τὸν δῆμον μετριάσας περὶ τοὺς λόγους· ὅπερ
καὶ συνέβη. γενομένης γὰρ ἡσυχίας καὶ πολλῆς ἐμ-
πεσούσης ὀλίγου δεῖν πᾶσι τοῖς δημοτικοῖς προθυ-
μίας ἀπολύειν αὐτόν, εἰ τὸν παρόντα θεραπεύσειε
καιρόν, τοιαύτην αὐθάδειαν ἐπεδείξατο λόγων, καὶ
τοσοῦτον αὐτῶν κατεφρόνησεν, ὥστε παρελθὼν ἔξαρ- 1386
νος μὲν ὑπὲρ οὐθενὸς ἦν τῶν πρὸς τὴν βουλὴν εἰρη-
μένων κατὰ τοῦ πλήθους, οὐδ' ὡς μεταγινώσκων ἐπ'
αὐτοῖς εἰς οἴκτους καὶ παραιτήσεις ἐτρέπετο· ἀρχὴν
δὲ οὐδὲ δικασταῖς αὐτοῖς ἠξίου χρῆσθαι περὶ οὐδενὸς
πράγματος, ὡς οὐδεμίαν ἔχουσιν ἐξουσίαν νόμιμον·
εἰ δὲ βουλήσεταί τις ἐπὶ τῶν ὑπάτων αὐτοῦ κατηγο-
ρεῖν εἴτ' ἔργων εὐθύνας ἀπαιτῶν εἴτε λόγων, ἔνθα
νόμος ἐστὶν ἕτοιμος εἶναι δίκην ὑπέχειν. παρεληλυ-
θέναι δὲ πρὸς τοὺς δημότας ἔλεγεν, ἐπειδὴ καλοῦσιν
αὐτοί, τὰ μὲν ἐπιτιμήσων ταῖς παρανομίαις αὐτῶν
καὶ πλεονεξίαις, αἷς ἐχρήσαντο περί τε τὴν ἀπόστα-
σιν καὶ μετὰ τὴν κάθοδον· τὰ δὲ συμβουλεύσων
ἐπισχεῖν ἤδη ποτὲ καὶ συστεῖλαι τὰς ἀδίκους ἐπιθυ-
μίας. καὶ μετὰ τοῦτ' ἐπιστρεφῶς πάνυ καὶ θρασέως
ἁπάντων αὐτῶν καθήπτετο καὶ μάλιστα τῶν δημάρ-
χων. προσῆν δ' αὐτοῦ τοῖς λόγοις οὐχ ὡς πολίτου 1387
δῆμον ἀναδιδάσκοντος εὐλόγιστος αἰδώς, οὐδ' ὡς
ἰδιώτου πολλοῖς ἀπεχθομένου σώφρων εὐλάβεια πρὸς
τὰς τοῦ κρατοῦντος ὀργάς, ἀλλ' ὡς ἐχθροῦ προπηλα-

κίζοντος ἀδεῶς τοὺς ὑπὸ χεῖρα ἄκρατός τις χολὴ καὶ βαρεῖα τοῦ κακῶς πάσχοντος ὑπεροψία.

XXXV. Τοιγάρτοι λέγοντός τε αὐτοῦ μεταξὺ πολὺς θόρυβος ἐγένετο τῇδε καὶ τῇδε θαμινὰ μεθελκομένων, ὡς ἐν διαφόροις πλήθεσι καὶ οὐ τὰ αὐτὰ βουλομένοις, τῶν μὲν ἡδομένων ἐπὶ τοῖς λόγοις αὐτοῦ, τῶν δὲ πάλιν ἀχθομένων. καὶ ἐπειδὴ ἐπαύσατο λέγων, ἔτι πλείων ἀνέστη βοὴ καὶ θόρυβος. οἱ μὲν γὰρ πατρίκιοι κράτιστον ἀνδρῶν λέγοντες ἐπῄνουν αὐτὸν ἐπὶ τῇ παρρησίᾳ, καὶ μόνον ἀπέφαινον ἐξ ἁπάντων σφῶν ἐλεύθερον, ὃς οὔτε πολεμίων ἔδεισεν ἐπιόντων ὄχλον, οὔτε πολιτῶν αὐθάδεις καὶ παρανό-
1388 μους ἐκολάκευσεν ὁρμάς· οἱ δὲ δημοτικοὶ δυσανασχετοῦντες ἐπὶ τοῖς ὀνειδισμοῖς βαρὺν καὶ πικρὸν καὶ πολεμίων ἁπάντων ἔχθιστον αὐτὸν ἀπεκάλουν. προθυμίαν δὲ πολλὴν εἶχόν τινες ἤδη, οἷς πολὺ προσῆν τὸ εὐχερές, ἐν χειρῶν αὐτὸν διαφθεῖραι νόμῳ. συνήργουν δ' αὐτοῖς εἰς τοῦτο καὶ συνελάμβανον οἱ δήμαρχοι, καὶ μάλιστα Σικίννιος ἐνεδίδου τοῖς βουλήμασι τὰς ἡνίας. τελευτῶν γοῦν, ἐπειδὴ πολλὴν αὐτοῦ καταδρομὴν ἐποιήσατο καὶ τοὺς θυμοὺς ἐξέκαυσε τῶν δημοτῶν πολὺς ἐμπνεύσας τῇ κατηγορίᾳ, τέλος ἐξήνεγκεν, ὅτι θάνατον αὐτοῦ καταψηφίζεται τὸ ἀρχεῖον τῆς εἰς τοὺς ἀγορανόμους ὕβρεως ἕνεκεν, οὓς τῇ προτέρᾳ τῶν ἡμερῶν ἄγειν αὐτὸν κελευσθέντας ὑφ' αὐτῶν τύπτων ἀπήλασεν· οὐ γὰρ ἑτέρων τινῶν εἶναι τὸν προπηλακισμὸν τὸν εἰς τοὺς ὑπηρέτας σφῶν γενόμενον ἢ τῶν κελευσάντων. καὶ ταῦτ' εἰπὼν ἐπέταξεν ἄγειν αὐτὸν ἐπὶ τὸν ὑπερκείμενον
1389 τῆς ἀγορᾶς λόφον· ἔστι δὲ τὸ χωρίον κρημνὸς ἐξαίσιος, ὅθεν αὐτοῖς ἔθος ἦν βάλλειν τοὺς ἐπιθανατίους. οἱ μὲν οὖν ἀγορανόμοι προσήεσαν ὡς ἐπιληψόμενοι

τοῦ σώματος, οἱ δὲ πατρίκιοι μέγα ἐμβοήσαντες ὥρμησαν ἐπ' αὐτοὺς ἀθρόοι· ἔπειθ' ὁ δῆμος ἐπὶ τοὺς πατρικίους· καὶ ἦν πολλὴ μὲν ἔργων ἀκοσμία, πολλὴ δὲ λόγων ὕβρις παρ' ἀμφοῖν, ὠθισμοί τε καὶ χειρῶν ἐπιβολαί. κατελήφθη δὲ καὶ σωφρονεῖν ἠναγκάσθη τὰ παρακινοῦντα ὑπὸ τῶν ὑπάτων βιασαμένων εἰς μέσους καὶ τοῖς ῥαβδούχοις ἀναστέλλειν κελευσάντων τοὺς ὄχλους· τοσαύτη ἄρα τῆς ἀρχῆς αἰδὼς ἦν τοῖς τότε ἀνθρώποις, καὶ οὕτω τίμιον τὸ τῆς βασιλικῆς ἐξουσίας σχῆμα. ἐφ' οἷς ὁ Σικίννιος ἀδημονῶν καὶ διαταραττόμενος, εὐλαβείας τε μεστὸς ὢν μὴ προσαναγκάσῃ τοὺς διαφόρους τοῖς βιαίοις τὰ βίαια λῦσαι, ἀποστῆναί τε οὐκ ἀξιῶν τοῦ ἐγχειρήματος, ἐπειδὴ ἅπαξ ἐπεβάλετο, καὶ μένειν ἐφ' οἷς ἔκρινεν οὐ δυνατὸς ὤν, πολὺς ἐν τῷ σκοπεῖν ὅ τι πρακτέον ἦν.

XXXVI. *Κατιδὼν δ' αὐτὸν ἀμηχανοῦντα Λεύ-* 138
κιος Ἰούνιος Βροῦτος, ἐκεῖνος ὁ δημαγωγὸς ὁ τεχνησάμενος ἐφ' οἷς ἔσονται δικαίοις αἱ διαλλαγαί, δεινὸς ἀνὴρ τά τε ἄλλα καὶ πόρους εὑρεῖν ἐν ἀπόροις, προσέρχεται μόνος μόνῳ καὶ ὑποτίθεται μὴ φιλονεικεῖν ἐγχειρήματι θερμῷ καὶ παρανόμῳ συναγωνιζόμενον, ὁρῶντα τούς τε πατρικίους ἅπαντας ἠρεθισμένους καὶ ἑτοίμους ὄντας, εἰ κληθεῖεν ὑπὸ τῶν ὑπάτων, ἐπὶ τὰ ὅπλα χωρεῖν, τοῦ δὲ δήμου τὸ καρτερώτατον μέρος ἐνδοιάζον καὶ οὐκ ἀγαπητῶς δεχόμενον ἀνδρὸς ἐπιφανεστάτου τῶν ἐν τῇ πόλει παράδοσιν ἐπὶ θανάτῳ καὶ ταῦτα ἀκρίτου. συνεβούλευε δὲ αὐτῷ τότε μὲν εἶξαι, καὶ μὴ χωρεῖν ὁμόσε τοῖς ὑπάτοις, μή τι μεῖζον κακὸν ἐργάσηται, προθεῖναι δὲ τῷ ἀνδρὶ δίκην ὁρίσαντα χρόνον ὅσον δή τινα, καὶ ψῆφον ἀναδοῦναι τοῖς πολίταις ὑπὲρ αὐτοῦ κατὰ φυλάς· ὅ τι δ' ἂν αἱ πλείους 139

ψῆφοι καθαιρῶσι, τοῦτο ποιεῖν· τυραννικὸν μὲν γὰρ εἶναι καὶ βίαιον, ὃ νῦν ἐπειρᾶτο διαπράττεσθαι, τὸν αὐτὸν ὑπάρχειν καὶ κατήγορον καὶ δικαστὴν καὶ τοῦ μέτρου τῆς τιμωρίας κύριον· πολιτικὸν δὲ τὸ κατὰ νόμους ἀπολογίας τυχόντα τὸν ὑπαίτιον ὅ τι ἂν τοῖς πλείοσι δικασταῖς δόξῃ τοῦτο παθεῖν. πείθεται τούτοις ὁ Σικίννιος μηδὲν ὁρῶν βούλευμα κρεῖττον, καὶ παρελθὼν ἔφη· Τὴν μὲν σπουδὴν ὁρᾶτε τῶν πατρικίων τὴν εἰς τὰ φονικὰ καὶ βίαια ἔργα, ὦ δημόται, ὡς ἑνὸς ἀνδρὸς αὐθάδους ὅλην ἀδικοῦντος τὴν πόλιν ἧττον τίθεται τὸ πλῆθος τὸ ὑμέτερον. οὐ μὴν ὁμοίους γε αὐτοῖς γίνεσθαι χρὴ καὶ ἐπὶ κεφαλὴν ὠθεῖσθαι, οὔτε ἄρχοντας πολέμου οὔτε ἀμυνομένους· ἀλλ' ἐπειδὴ πρόφασιν εὐπρεπῆ προβάλλονταί τινες τὸν νόμον, ᾧ βοηθοῦντες ἀφαιροῦνται τῆς κολάσεως, ὃς οὐκ ἐᾷ τῶν πολιτῶν οὐθένα ἀποκτεῖναι ἄκριτον, συγ-
1392 χωρήσωμεν αὐτοῖς τὸ δίκαιον τοῦτο, καίπερ οὐδὲ νόμιμα πάσχοντες οὐδὲ δίκαια ὑπ' αὐτῶν· καὶ δείξωμεν, ὅτι τοῖς εὐγνώμοσι μᾶλλον ἢ τοῖς βιαίοις περιεῖναι τῶν ἀδικούντων ἡμᾶς πολιτῶν βουλόμεθα. ὑμεῖς μὲν οὖν ἄπιτε καὶ τὸν μέλλοντα καιρὸν ἐκδέχεσθε οὐ πολὺν ἐσόμενον· ἡμεῖς δὲ παρασκευασάμενοι τὰ κατεπείγοντα προθήσομεν χρόνον τῷ ἀνδρὶ εἰς ἀπολογίαν, καὶ τὴν δίκην ἐφ' ὑμῶν συντελέσομεν. ὅταν δὲ γένησθε τῆς ψήφου κατὰ τὸν νόμον κύριοι, τιμήσατε αὐτῷ ἧς ἂν ἄξιον εὕρητε ζημίας. καὶ περὶ μὲν τούτου τοσαῦτα. τῆς δὲ τοῦ σίτου διαπράσεώς τε καὶ διαθέσεως, ἵν' ἐκ τοῦ δικαιοτάτου γένηται, εἰ μή τις ἔσται τούτοις καὶ τῇ βουλῇ φροντίς, αὐτοὶ ἐπιμελησόμεθα. ταῦτα εἰπὼν διέλυσε τὴν ἐκκλησίαν.

XXXVII. *Μετὰ τοῦτο οἱ μὲν ὕπατοι συναγαγόντες*

τὴν βουλὴν ἐσκόπουν ἐφ' ἡσυχίας, τίς ἂν γένοιτο
τῆς παρούσης ταραχῆς λύσις. καὶ ἔδοξεν αὐτοῖς πρῶ- 1393
τον μὲν ἀποθεραπεῦσαι τοὺς δημότας, εὐώνους πάνυ
καὶ λυσιτελεῖς ποιήσαντας αὐτοῖς τὰς ἀγοράς· ἔπειτα
πείθειν τοὺς προεστηκότας αὐτῶν χάριτι τῆς βουλῆς
παύσασθαι καὶ μὴ παράγειν τὸν Μάρκιον. εἰ δὲ μὴ
πείθοιεν εἰς μακροτάτους ἀναβάλλεσθαι χρόνους,
ἕως ἂν μαρανθῶσιν αἱ τῶν πολλῶν ὀργαί. ταῦτα
ψηφισάμενοι τὸ μὲν ὑπὲρ τῆς ἀγορᾶς δόγμα εἰς τὸν
δῆμον ἐξήνεγκαν καὶ πάντων ἐπαινεσάντων ἐκύρω-
σαν. ἦν δὲ τοιόνδε· Τὰς τιμὰς εἶναι τῶν ὠνίων τῶν
πρὸς τὸν καθ' ἡμέραν βίον ἀναγκαίων, αἵτινες ἐγέ-
νοντο ἐλάχισται πρὸ τῆς ἐμφυλίου στάσεως. παρὰ δὲ
τῶν δημάρχων πολλὰ λιπαρήσαντες, τὴν μὲν ὁλο-
σχερῆ πάρεσιν οὐχ εὕροντο, τὴν δὲ εἰς χρόνον
ὅσον ἠξίουν ἀναβολὴν ἔλαβον· αὐτοί τε προσεμη-
χανήσαντο διατριβὴν ἑτέραν ἀφορμῇ τοιᾷδε χρησά-
μενοι. τοὺς ἐκ Σικελίας ἀποσταλέντας ὑπὸ τοῦ τυ-
ράννου πρέσβεις καὶ παρακομίσαντας τῷ δήμῳ τὴν
τοῦ σίτου δωρεὰν ἀποπλέοντας οἴκαδε Ἀντιάται πει- 1394
ρατήριον στείλαντες κατήγαγον ἀποσαλεύοντας οὐ
πρόσω τῶν λιμένων, καὶ τά τε χρήματα αὐτῶν ὡς πο-
λεμίων δι' ὠφελείας ἔθεντο, καὶ τὰ σώματα κατα-
κλείσαντες εἶχον ἐν φυλακῇ. ταῦτα μαθόντες οἱ ὕπα-
τοι ἔξοδον ἐψηφίσαντο ἐπὶ τοὺς Ἀντιάτας, ἐπειδὴ
πρεσβευομένοις αὐτοῖς οὐδὲν ἠξίουν τῶν δικαίων
ποιεῖν· καὶ ποιησάμενοι τῶν ἐν ἀκμῇ κατάλογον
ἐξῄεσαν ἀμφότεροι, ψήφισμα κυρώσαντες ὑπὲρ ἀνα-
βολῆς τῶν τε ἰδίων καὶ τῶν δημοσίων δικῶν, ὅσον
ἂν χρόνον ὦσιν ἐν τοῖς ὅπλοις. ἐγένετο δ' οὗτος οὐχ
ὅσον ὑπέλαβον, ἀλλὰ πολλῷ ἐλάττων. οἱ γὰρ Ἀν-
τιάται μαθόντες ἐξεστρατευμένους πανδημεὶ Ῥω-

μαίους οὐδὲ τὸν ἐλάχιστον ἀντέσχον χρόνον, δεόμενοι
δὲ καὶ λιπαροῦντες τά τε σώματα τῶν ἁλόντων Σι-
1395 κελιωτῶν ἀπέδοσαν καὶ τὰ χρήματα, ὥστε ἠναγκά-
σθησαν οἱ Ῥωμαῖοι εἰς τὴν πόλιν ἀναστρέψαι.

XXXVIII. Διαλυθείσης δὲ τῆς στρατιᾶς, ὁ μὲν
Σικίννιος ὁ δήμαρχος συναγαγὼν τὸ πλῆθος εἰς ἐκ-
κλησίαν προεῖπεν ἡμέραν, ἐν ᾗ συντελεῖν ἔμελλε
τὴν περὶ τοῦ Μαρκίου κρίσιν· καὶ παρεκάλει τούς
τε κατὰ πόλιν ὑπάρχοντας ἀθρόους ἥκειν ἐπὶ τὴν διά-
γνωσιν τῆς δίκης, καὶ τοὺς ἐπὶ τῶν ἀγρῶν διατρί-
βοντας ἀφεμένους τῶν ἔργων εἰς τὴν αὐτὴν ἡμέραν
ἀπαντᾶν, ὡς ὑπὲρ ἐλευθερίας καὶ σωτηρίας ὅλης τῆς
πόλεως τὴν ψῆφον ἀναληψομένους· παρήγγελλε δὲ
καὶ τῷ Μαρκίῳ παρεῖναι πρὸς τὴν ἀπολογίαν ὡς
οὐδενὸς ἀτυχήσοντι τῶν περὶ τὰς κρίσεις νομίμων.
τοῖς δὲ ὑπάτοις ἐδόκει βουλευσαμένοις μετὰ τοῦ
συνεδρίου μὴ περιορᾶν τὸν δῆμον ἐξουσίας τηλικαύ-
της κύριον γενόμενον. εὕρητο δ᾽ αὐτοῖς τῆς κωλύ-
σεως ἀφορμὴ δικαία καὶ νόμιμος, ᾗ χρώμενοι πάντα
διαλύσειν ᾤοντο τὰ τῶν ἀντιδίκων βουλεύματα. καὶ
μετὰ τοῦτο παρεκάλεσαν εἰς λόγους ἐλθεῖν τοὺς
1396 προεστηκότας τοῦ δήμου, συνόντων αὐτοῖς τῶν ἐπι-
τηδείων. καὶ ἔλεξε Μηνύκιος τοιάδε· Ἡμῖν, ὦ δήμ-
αρχοι, δοκεῖ χρῆναι τὴν στάσιν ἐξελαύνειν ἐκ τῆς
πόλεως ἁπάσῃ δυνάμει, καὶ μὴ φιλονεικεῖν ἐναντία
τῷ δήμῳ περὶ μηδενὸς χρήματος· μάλιστα δ᾽ ὅταν
ὁρῶμεν ὑμᾶς ἀπὸ τῶν βιαίων ἐπὶ τὰ δίκαια καὶ τοὺς
λόγους ἥκοντας. ταύτης μέντοιγε τῆς γνώμης ἐπαι-
νοῦντες ὑμᾶς, τὴν βουλὴν οἰόμεθα δεῖν ἄρξαι προ-
βούλευμα ποιησαμένην, ὥσπερ ἐστὶν ἡμῖν πάτριον.
δύναισθε δὲ ἂν καὶ αὐτοὶ τοῦτο μαρτυρεῖν, ὅτι ἐξ οὗ
τήνδε τὴν πόλιν ἔκτισαν ἡμῶν οἱ πρόγονοι τοῦτο τὸ

γέρας ἔχουσα ἡ βουλὴ διατετέλεκε, καὶ οὐθὲν πώποτε ὁ δῆμος ὅ τι μὴ προβουλεύσειεν ἡ βουλὴ οὔτ' ἐπέκρινεν οὔτ' ἐπεψήφισεν, οὐχ ὅτι νῦν, ἀλλ' οὐδ' ἐπὶ τῶν βασιλέων [τὰ δ'], ἀλλ' ὅσα τῷ συνεδρίῳ δόξειε, ταῦτα οἱ βασιλεῖς εἰς τὸν δῆμον ἐκφέροντες ἐπεκύρουν. μὴ δὴ τοῦτο ἀφαιρεῖσθε τὸ δίκαιον ἡμῶν, μηδὲ ἀρχαῖον καλὸν ἔθος ἀφανίζετε· διδάξαντες δὲ τὸ συνέδριον ὅτι δικαίου δεῖσθε καὶ μετρίου πράγ- 1397
ματος, ὃ ἂν ἐκείνῳ δοκῇ, τούτου τὸν δῆμον ἀποδείξατε κύριον.

XXXVIIII. Ταῦτα τῶν ὑπάτων λεγόντων, ὁ μὲν Σικίννιος οὐκ ἠνείχετο τῶν λόγων οὐδὲ ἠξίου τὴν βουλὴν οὐδενὸς ποιεῖν κυρίαν· οἱ δὲ τὴν αὐτὴν ἔχοντες ἐξουσίαν ἐκείνῳ Λευκίου γνώμῃ χρησάμενοι συνεχώρουν γενέσθαι τὸ προβούλευμα, δικαίαν τινὰ καὶ αὐτοὶ ποιησάμενοι πρόκλησιν, ἣν οὐχ οἷόν τε μὴ δέξασθαι τοῖς ὑπάτοις. ἠξίουν γὰρ τοὺς βουλευτὰς λόγον ἀποδόντας αὐτοῖς τε τοῖς ὑπὲρ τοῦ δήμου πράττουσι, καὶ τοῖς συναγορεύειν ἢ τἀναντία λέγειν βουλομένοις, ἐπειδὰν ἀκούσωσιν ἁπάντων τῶν βουλομένων ὅ τι ἂν αὐτοῖς φανῇ δίκαιόν τε καὶ τῷ κοινῷ συμφέρον ἀποφήνασθαι, φέρειν δὴ τὴν γνώμην ἅπαντας ὥσπερ ἐν δικαστηρίῳ τὸν νόμιμον ὅρκον ὀμόσαντας· ὅ τι δ' ἂν αἱ πλείους γνῶμαι καθαιρῶσι, τοῦτ' εἶναι κύριον. συγχωρησάντων δὲ τῶν ὑπάτων 1398
ὥσπερ ἠξίουν οἱ δήμαρχοι τὸ προβούλευμα γενέσθαι, τότε μὲν διελύθησαν· τῇ δὲ κατόπιν ἡμέρᾳ παρῆν μὲν εἰς τὸ συνέδριον ἡ βουλή· οἱ δὲ ὕπατοι δηλώσαντες αὐτῇ τὰ συγκείμενα τοὺς δημάρχους ἐκάλουν, καὶ περὶ ὧν ἤκουσιν ἐκέλευον λέγειν. παρελθὼν δὲ ὁ Λεύκιος ὁ συγχωρήσας τὸ προβούλευμα γενέσθαι τοιούτοις ἐχρήσατο λόγοις.

XXXX. *Οὐ λανθάνει μὲν ἡμᾶς, ὦ βουλή, τὸ συμβησόμενον, ὅτι δι' αἰτίας ἐσόμεθα παρὰ τῷ δήμῳ τῆς εἰς ὑμᾶς ἀφίξεως ἕνεκα, καὶ κατήγορον ἕξομεν τοῦ προβουλεύματος ἄνδρα τὴν αὐτὴν ἐξουσίαν ἔχοντα ἡμῖν, ὃς οὐκ ᾤετο δεῖν ἃ δίδωσιν ἡμῖν ὁ νόμος ταῦτα παρ' ὑμῶν αἰτεῖν, οὐδ' ἐν εὐεργεσίας μέρει τὸ δίκαιον λαμβάνειν. κίνδυνον δὲ οὐ τὸν ἐλάχιστον ἀναρρίψομεν εἰς δίκην ὑπαχθέντες, ἀλλ' ὡς αὐτό-*
1399 *μολοι καὶ προδόται καταγνωσθέντες τὰ ἔσχατα πεισόμεθα. ἀλλὰ καίπερ ἐπιστάμενοι ταῦτα, ὅμως ὑπεμείναμεν εἰς ὑμᾶς ἐλθεῖν τῷ τε δικαίῳ πεποιθότες καὶ τοῖς ὅρκοις ἐπιτρέψαντες, οἷς ὀμόσαντες οἴσετε τὰς γνώμας. φαῦλοι μὲν οὖν ἡμεῖς γε ὡς περὶ τηλικούτων καὶ τοσούτων λέγειν, καὶ πολὺ τοῦ προσήκοντος ἐνδεέστεροι· τὰ δὲ πράγματα οὐ φαῦλα ὑπὲρ ὧν λέξομεν. τούτοις οὖν προσέχετε τὸν νοῦν, καὶ ἐὰν ὑμῖν δόξῃ δίκαιά τε καὶ συμφέροντα τῷ κοινῷ, προσθήσω δ' ὅτι καὶ ἀναγκαῖα, συγχωρήσατε ἡμῖν αὐτῶν τυχεῖν ἑκόντες.*

XXXXI. *Ἐρῶ δὲ περὶ τοῦ δικαίου πρῶτον. ὑμεῖς δή, ὦ βουλή, ὅτε τοὺς βασιλεῖς ἀπηλάσατε συμμάχους ἔχοντες ἡμᾶς, καὶ τὴν πολιτείαν ἐν ᾗ νῦν ἐσμεν κατεστήσατε, ἣν οὐ ψέγομεν, μειονεκτοῦντας ἐν ταῖς*
1400 *δίκαις τοὺς δημοτικοὺς ὁρῶντες ὁπότε συμβαίη τι διάφορον αὐτοῖς πρὸς τοὺς πατρικίους· πολλὰ δ' ἦν ταῦτα· νόμον ἐκυρώσατε Ποπλίου Οὐαλερίου θατέρου τῶν ὑπάτων γνώμῃ χρησάμενοι, ἐξεῖναι τοῖς κατισχυομένοις ὑπὸ τῶν πατρικίων δημόταις προκαλεῖσθαι τὰς κρίσεις ἐπὶ τὸν δῆμον· καὶ παρ' οὐδὲν οὕτως ἕτερον ὡς τὸν νόμον τόνδε τήν τε πόλιν ἐν ὁμονοίᾳ διεφυλάξατε καὶ τοὺς βασιλεῖς ἐπιόντας ἀπεώσασθε. τοῦτον δὴ προφερόμενοι τὸν νόμον, ὑπὲρ ὧν*

ἅπαντες ἀδικεῖσθαί τε καὶ κατισχύεσθαι λέγομεν ὑπὸ Γαΐου Μαρκίου τουδί, καλοῦμεν αὐτὸν ἐπὶ τὸν δῆμον καὶ τὰ δίκαια παραγγέλλομεν ἐκεῖ λέγειν. καὶ προβουλεύματος ἐνταῦθα οὐκ ἔδει. περὶ ὧν γὰρ οὐκ εἰσὶ νόμοι, περὶ τούτων ὑμεῖς τοῦ προβουλεύεσθαι κύριοι καὶ ὁ δῆμος ἐπιψηφίσαι· νόμου δὲ ὄντος ἀκινήτου, κἂν μηδὲν ὑμεῖς προβουλεύσητε, τούτῳ δήπου χρηστέον. οὐ γὰρ δὴ τοῦτό γ' ἂν εἴποι τις, ὅτι τῶν μὲν ἰδιωτῶν ὄντων οἷς τὸ μειονεκτεῖν συμβαίνει περὶ 1401 τὰς κρίσεις κυρίαν εἶναι δεῖ τὴν ἐπὶ τὸν δῆμον πρόκλησιν, ἡμῖν δὲ τοῖς δημάρχοις ἄκυρον. νόμου μὲν δὴ συγχωρήματι τῷδε ἰσχυριζόμενοι, καὶ διὰ τοῦτο παρακινδυνεύσαντες ὑφ' ὑμῖν γενέσθαι δικασταῖς ἥκομεν. ἀγράφῳ δὲ καὶ ἀνομοθετήτῳ φύσεως δικαίῳ τόδε ἀξιοῦμεν, ὦ βουλή, μήτε πλεῖον ἔχειν ὑμῶν τὸν δῆμον μήτε μεῖον, ἐν γοῦν τῷ δικαίῳ, [οἱ] πολλοὺς καὶ μεγάλους συνδιενεγκόντες ὑμῖν πολέμους, καὶ περὶ τὴν ἀπαλλαγὴν τῶν πολέμων πλείστην ἐπιδειξάμενοι προθυμίαν, καὶ τοῦ μηδενὶ τὸ κελευόμενον ποιεῖν τὴν πόλιν, ἀλλ' αὐτὴν ἑτέροις ἐπιτάττειν τὰ δίκαια, οὐκ ἐλαχίστην μοῖραν παρασχόμενοι. οὕτω δ' ἂν ἡμῖν τὸ μὴ μεῖον ἔχειν τῶν δικαίων ἀποδοίητε, ὦ πατέρες, εἰ τοὺς ἐπιχειροῦντας εἰς τὰ σώματα ἡμῶν καὶ τὴν ἐλευθερίαν παρανομεῖν κωλύοιτε, τὸν ἐκ τῆς δίκης ἐφιστάντες αὐτοῖς φόβον. ἀρχὰς μὲν δὴ καὶ προε- 1402 δρίας καὶ τιμὰς τοῖς ἀρετῇ καὶ τύχῃ προὔχουσιν ἡμῶν οἰόμεθα δεῖν ἀπονέμειν· τὸ δὲ μηδὲν ἀδικεῖσθαι καὶ τὸ δίκας ὧν ἄν τις πάθῃ προσηκούσας λαμβάνειν ἴσα καὶ κοινὰ τοῖς ἅμα πολιτευομένοις εἶναι δικαιοῦμεν. ὥσπερ οὖν τῶν λαμπρῶν καὶ μεγάλων ἀφιστάμεθ' ὑμῖν, οὕτως τῶν ἴσων καὶ κοινῶν οὐ μεθιέμεθα. ἱκανὰ ταῦτα εἰρήσθω περὶ

τοῦ δικαίου, πολλῶν ἐνόντων καὶ ἄλλων λέγεσθαι.

XXXXII. Ὡς δὲ καὶ συνοίσει τῷ κοινῷ ταῦτα ὡς ὁ δῆμος ἀξιοῖ γινόμενα, μικρὰ διεξιόντων ἀνέχεσθε. φέρε γάρ, εἴ τις ὑμᾶς ἔροιτο, τί μέγιστον οἴεσθε εἶναι τῶν καταλαμβανόντων κακῶν τὰς πόλεις, καὶ τοῦ ταχίστου τῶν ὀλέθρων αἴτιον, ἆρ' οὐχὶ τὴν διχοστασίαν εἴποιτ' ἄν; ἐμοὶ γοῦν δοκεῖ. τίς δ' ὑμῶν οὕτως ἠλίθιός ἐστιν ἢ σκαιὸς ἢ πέρα τοῦ μετρίου μισῶν τὴν ἰσηγορίαν, ὃς οὐκ οἶδεν, ὅτι δοθείσης 1403 ἐξουσίας τῷ δήμῳ κρίνειν ἃς ἔξεστιν αὐτῷ δίκας κατὰ τὸν νόμον ἐν ὁμονοίᾳ πολιτευσόμεθα; εἰ δὲ τἀναντία γνοίητε καὶ ἀφέλοισθε ἡμῶν τὴν ἐλευθερίαν· ἐλευθερίαν γὰρ ἀφαιρήσεσθε δίκην καὶ νόμον ἀφαιρούμενοι· στασιάξειν ἡμᾶς αὖθις ἀναγκάσετε καὶ πολεμεῖν ὑμῖν; ἐξ ἧς γὰρ ἂν ἐξελαθῇ πόλεως δίκη καὶ νόμος, εἰς ταύτην στάσις εἰσπορεύεσθαι φιλεῖ καὶ πόλεμος. καὶ ὅσοι μὲν οὐκ ἦλθον εἰς πεῖραν ἐμφυλίων συμφορῶν, οὐδὲν θαυμαστόν, εἰ δι' ἀπειρίαν τῶν κακῶν μήτε ἄχθονται τοῖς γεγονόσι δεινοῖς, μήτε κωλύουσιν ἐκ πολλοῦ τὰ μέλλοντα. ὅσοι δ' ὥσπερ ὑμεῖς εἰς τοὺς ἐσχάτους κινδύνους καταστάντες ἀγαπητῶς ἀπηλλάγησαν, ἣν ὁ καιρὸς ἀπῄτει ποιησάμενοι τῶν κακῶν λύσιν, τίς εὐπρεπὴς ἢ μετρία πρόφασις ἀπολείπεται τούτοις, ἐὰν ἔτι ταῖς αὐταῖς συμφέρωνται τύχαις; τίς δ' οὐκ ἂν ὑμῶν καταγνοίη πολλὴν ἄνοιαν καὶ μανίαν ἐνθυμούμενος, ὅτι μικροῦ μὲν 1404 ἔμπροσθεν ὑπὲρ τοῦ μὴ στασιάξειν τοὺς δημότας πολλὰ παρὰ γνώμην ὑπεμείνατε, ὧν ἔνια οὔτε κάλλιστα ἦν ἴσως οὔτε λυσιτελέστατα· νῦν δ' οὔτ' εἰς χρήματα βλάπτεσθαι μέλλοντες οὔτ' εἰς εὐδοξίαν οὔτ' εἰς ἄλλο τῶν κοινῶν οὐδ' ὁτιοῦν, ἵνα χαρίζησθε τοῖς μισο-

δημοτάτοις, τὸ δημοτικὸν αὖθις ἐκπολεμώσετε; οὔκ, ἐάν γε σωφρονῆτε. ἡδέως δ' ἂν ὑμᾶς ἐροίμην, τίνα γνώμην λαβόντες τότε τὴν κάθοδον ἡμῖν συνεχωρήσατε ἐφ' οἷς ἠξιοῦμεν, πότερα λογισμῷ προϊδόμενοι τὸ κράτιστον, ἢ τῇ ἀνάγκῃ εἴξαντες; εἴπερ γὰρ ταῦτα ὑπελαμβάνετε ὠφελιμώτατα εἶναι τῇ πόλει, τί οὐ μένετε καὶ νῦν ἐν αὐτοῖς; εἰ δὲ ἀναγκαῖα καὶ οὐκ ἐνδεχόμενα ἄλλως γενέσθαι [εἴτε κατὰ λογισμὸν γέγονε ταῦτα ὀρθὸν καὶ τὸ συμφέρον σκοποῦντα τῆς πόλεως] τί χαλεπαίνετε γενομένοις; τὴν ἀρχὴν γὰρ ἴσως ἔδει μὴ συγχωρῆσαι εἰ δύναμις ἦν ὑμῖν, συγχωρήσαντας δὲ μηκέτι τοῖς πεπραγμένοις ἐγκαλεῖν.

XXXXIII. Ἐμοὶ μὲν γὰρ δοκεῖτε, ὦ βουλή, περὶ 1405 μὲν τὰς διαλύσεις γνώμῃ τῇ βελτίστῃ κεχρῆσθαι... οἷς ἀνάγκῃ εἴκειν... τοῦ βέβαια τηρεῖν τὰ συγκείμενα. θεοὺς γὰρ ἡμῖν ἐγγυητὰς ἐδώκατε τῶν ὁμολογιῶν, πολλὰ καὶ δεινὰ ἐπαρασάμενοι τοῖς παραβᾶσι τὰς συνθήκας αὐτοῖς τε καὶ ἐγγόνοις εἰς τὸν ἀεὶ χρόνον. ἀλλ' ὅτι μὲν δὴ τά τε δίκαια ἀξιοῦμεν καὶ τὰ συμφέροντα, καὶ πολλὴ ἀνάγκη ποιεῖν ὑμᾶς ταῦτ' ἐστὶ μεμνημένους τῶν ὅρκων, ὡς πρὸς εἰδότας ἅπαντας οὐκ οἶδ' ὅ τι δεῖ πλείω λέγοντα ἐνοχλεῖν. ὡς δὲ οὐ μικρὰ τὰ διαφέροντα ἡμῖν ἐστι τόνδε μὴ ἐκλιπεῖν τὸν ἀγῶνα μήτε βίᾳ εἴξαντας μήτε ἀπάτῃ παραχθέντας, ἀλλὰ κατὰ πολλὴν ἀνάγκην εἰς αὐτὸν ἀφίγμεθα, 1406 δεινὰ καὶ πέρα δεινῶν πεπονθότες ὑπὸ τοῦδε τοῦ ἀνδρός, μάθετε, ὦ πατέρες, μᾶλλον δὲ ἀναμνήσθητε· οὐδὲν γὰρ ὅ τι οὐ πρὸς εἰδότας ὑμᾶς ἅπαντας ἐρῶ· καὶ ἅμα γνώμῃ χρήσασθε οἰκείᾳ πρὸς τὰ λεγόμενα ἐνθυμηθέντες, εἰ τῶν δημοτῶν ἡμῶν ἐπεχείρησέ τις ἐν τῷ πλήθει τοιαῦτα λέγειν ἢ πράττειν καθ' ὑμῶν, οἷα Μάρκιος ἐτόλμησεν ἐνθάδε

εἰπεῖν, ποῖόν ποτ᾿ ἂν ὑμῖν παρέστη πρὸς αὐτὸν
πάθος.

XXXXIIII. Τὰς γὰρ ὑπὲρ τῆς ὁμονοίας τῇ βου-
λῇ ἀκινήτους ὁμολογίας καὶ μόνον οὐκ ἀδαμαντίνοις
δεσμοῖς ἠσφαλισμένας, ἃς οὔτε ὑμῖν τοῖς ὀμωμοκό-
σιν οὔτε τοῖς ἐξ ὑμῶν ἐσομένοις καταλύειν θέμις ἕως
ἂν ἡ πόλις ἥδε οἰκῆται, πρῶτος ἐπεχείρησε λύειν ἐξ
ὑμῶν οὑτοσὶ Μάρκιος οὔπω τέταρτον ἔτος ἐξ οὗ γε-
γενημένας, οὐ σιγῇ πράττων τὴν κατάλυσιν, οὐδ᾿ εἰς
ἀφανές που καταδὺς χωρίον, ἀλλ᾿ ἀναφανδὸν ἐν
τῷδε τῷ τόπῳ πάντων παρόντων ὑμῶν γνώμην ἀπο-
1407 φηνάμενος, ὡς χρὴ τὴν δημαρχικὸν ἐξουσίαν μηκέτι
συγχωρεῖν ἡμῖν, ἀλλ᾿ ἀνελεῖν, ᾗ πρώτῃ καὶ μόνῃ
τῆς ἐλευθερίας φυλακῇ πιστεύσαντες ἐποιησάμεθα
τὰς διαλύσεις. καὶ οὐκ ἐνταῦθα ἔστη τῆς ἀλαζονείας,
ἀλλ᾿ ὕβριν τὴν ἐλευθερίαν τῶν πενήτων καὶ τυραν-
νίδα τὴν ἰσηγορίαν ὀνομάζων, ἀφελέσθαι παρῄνει
ταύτην ὑμῖν. ὃ δὲ πάντων ἀνοσιώτατον ἦν τῶν τότε
ὑπὸ τούτου ἀξιωθέντων, ἀναμνήσθητε, ὦ πατέρες,
ὅτε ἀπέφαινε καλὸν εἶναι καιρὸν ἀπομνημονεῦσαι
πρὸς τὸ δημοτικὸν ἁπάσας τὰς ἐπὶ τοῖς προτέροις
ἐγκλήμασιν ὀργάς, καὶ παρῄνει νῦν, ἐν ᾧ τετρύχωταί
τε ὑπ᾿ ἀχρηματίας καὶ πολὺν ἤδη χρόνον τῆς ἀναγ-
καίου σπανίζεται τροφῆς, [ὥστε] ἅπαν αὐτὸ ἐπι-
τρῖψαι, διακατασχόντας ἐπὶ τῆς αὐτῆς ἀπορίας τῶν
ἐπιτηδείων τὴν ἀγοράν. οὐ γὰρ ἀνθέξειν ἡμᾶς ἐπὶ
πολὺν χρόνον ὀλίγα σιτία πολλοῦ ὠνουμένους ἀργυ-
ρίου πένητας ἀνθρώπους, ἀλλὰ τοὺς μὲν οἰχήσεσθαι
1408 τὴν πόλιν ἐκλείποντας, ὅσοι δ᾿ ἂν ὑπομείνωσι τῷ
κακοδαιμονεστάτῳ διαφθαρήσεσθαι τῶν μόρων, λι-
μῷ. οὕτως δὲ ἄρα παρεφρόνει καὶ θεοβλαβὴς ἦν
ταῦτα πείθων ὑμᾶς, ὥστε οὐδ᾿ ἐκεῖνο ἠδυνήθη κα-

ταμαθεῖν, χωρὶς τῶν ἄλλων ὧν προσετρίβετο τὰς τῆς βουλῆς σπονδὰς λύειν ἀξιῶν, ὅτι πένητες ἄνθρωποι τῆς ἀναγκαίου τροφῆς ἀποκλειόμενοι τοσοῦτοι τὸ πλῆθος ὄντες ὁμόσε χωρεῖν ἀναγκασθήσονται τοῖς αἰτίοις τῆς συμφορᾶς οὐθὲν ἔτι φίλιον ἡγούμενοι. ὥστ᾽ εἰ μανέντες ὑμεῖς ἐπεκυρώσατε τὰς γνώμας αὐτοῦ, μηθὲν ἂν γενέσθαι τὸ διὰ μέσου, ἀλλ᾽ ἤτοι τὸ δημοτικὸν ἀπολωλέναι πλῆθος ἅπαν, ἢ οὐδὲ τὸ τῶν πατρικίων περιλελεῖφθαι γένος. οὐ γὰρ ἂν οὕτως ἀνδραποδωδῶς παρέσχομεν ἑαυτούς, οἱ μὲν ἐκπεσεῖν, οἱ δ᾽ ἀποθανεῖν, ἀλλὰ θεοὺς μάρτυρας ὧν ἐπάσχομεν καὶ δαίμονας ἐπικαλεσάμενοι, πολλῶν ἂν 1409 ἐξεπληρώσαμεν, εὖ ἴστε, τὰς ἀγορὰς καὶ τοὺς στενωποὺς νεκρῶν, καὶ μέγαν αἵματος κρατῆρα πολιτικοῦ στήσαντες οὕτως ἂν ἐδεξάμεθα τὴν ὀφειλομένην μοῖραν. τοιούτων ἡμῖν δυσσεβημάτων εἰσηγητής, ὦ πατέρες, ἐγένετο, καὶ τοιαῦτα δημηγορεῖν ᾤετο δεῖν.

XXXXV. *Καὶ οὐχὶ λέγειν μὲν ὁ Μάρκιος ἐξ ὧν διαστήσει τὴν πόλιν ἐπεχείρησε, πράττειν δὲ οὐχ οἷα ἔλεγεν ἐπεβάλετο, ἀλλὰ καὶ στῖφος ἀνθρώπων εἰς ἅπασαν ὑπηρεσίαν ἑτοίμων παρ᾽ ἑαυτῷ ἔχων, καλούμενος ἐπὶ τὴν ἀρχὴν ἡμῶν οὐκ ἀπαντᾷ, καὶ τοῖς ὑπηρέταις τοῖς ἡμετέροις, ὁπότε κελευσθέντες ἄγειν αὐτὸν ἐπιβάλοιντο, πληγὰς ἐντρίβεται, καὶ οὐδὲ τῶν ἡμετέρων σωμάτων τὼ χεῖρε τελευτῶν ἀπέχεται. ὥστε περίεστιν ἡμῖν, τό γ᾽ ἐπὶ τοῦτον εἶναι μέρος, ὄνομα εὐπρεπὲς ἀσύλου ἀρχῆς ἐπὶ χλευα- 1410 σμῷ κείμενον ἔχειν, ἔργον δὲ τῶν ἀποδεδομένων τῇ ἀρχῇ μηδ᾽ ὁτιοῦν πράττειν. πῶς δ᾽ ἂν ἑτέροις ἀδικεῖσθαι λέγουσι βοηθήσαιμεν, οἷς γε μηδ᾽ αὐτοῖς ὑπάρχει τὸ ἀσφαλές; ταύτας μέντοι τὰς ὕβρεις οἱ πένητες ὑβριζόμενοι πρὸς ἑνὸς ἀνδρὸς οὔπω τυραν-*

νοῦντος, ἀλλ' ἔτι μέλλοντος, καὶ τὰ μὲν ἤδη πεπον-
θότες, ὦ βουλή, δεινά, τὰ δ' εἰ μὴ τὸ πλεῖον ὑμῶν
μέρος ἐμποδὼν ἐγένετο παρὰ σχεδὸν ἐλθόντες πα-
θεῖν, ἆρ' οὐκ εἰκότως ἀγανακτοῦμεν καὶ βοηθείας
τινὸς οἰόμεθα δεῖν οὐκ ἄνευ τῆς ὑμετέρας συναγα-
νακτήσεως τυχεῖν, ἐπὶ δίκην αὐτὸν ἴσην καὶ νόμιμον,
ὦ βουλή, προκαλούμενοι, περὶ ἣν ἅπασα ἡ πληθὺς
μερισθεῖσα κατὰ φυλὰς λόγου δοθέντος τοῖς δεομέ-
νοις ἔνορκον ἐποίσει τὴν ψῆφον; ἴθι ἐκεῖ, ὦ Μάρ-
1411 κιε, καὶ ταῦτα, ἃ μέλλεις λέγειν ἐνθάδε, πρὸς ἅπαν-
τας τοὺς πολίτας ἀθρόους ἀπολογοῦ, εἴτε ὡς ἀπὸ τοῦ
βελτίστου τὰ κράτιστα συνεβούλευες τούτοις [εἴτε]
καὶ συνήνεγκεν ἂν τῇ πόλει ταῦτα γενόμενα, εἴτε
ὡς οὐκ ἔστι δίκαιον λόγων εὐθύνας ὑπέχειν τοὺς
ἀποφαινομένους ἐνθάδε τὰς γνώμας, εἴτε ὡς οὐκ ἐκ
προνοίας οὐδὲ ἐπιβουλῆς, ἀλλ' ὀργῇ ἐπιτρέψας τὰ
μιαρὰ ταῦτα παραινεῖν προήχθης, εἴθ' ὁτιδήποτε
ἄλλο ἀπολόγημα ἔχεις. καταβίβασον ἀπὸ τῶν ὑπερη-
φάνων καὶ τυραννικῶν αὐχημάτων ἐκείνων σεαυτὸν
ἐπὶ τὸ δημοτικώτερον, ὦ πονηρέ, καὶ ποίησον ἤδη
ποτὲ τοῖς ἄλλοις ἀνθρώποις ὅμοιον. ἡμαρτηκότος
λάβε καὶ παραιτουμένου σχῆμα ταπεινόν. ἐλεεινόν,
οἷον ἀπαιτοῦσιν αἱ συμφοραί. μὴ βιαζόμενος τοὺς
κακῶς πεπονθότας ἀλλὰ ὑπερχόμενος ἀξίου σώζεσθαι.
1412 γενέσθω σοι παράδειγμα τῆς ἐπιεικείας, ᾗ χρώμενος
ἂν εἴης πρὸς τοὺς ἅμα πολιτευομένους ἀνεπίληπτος,
τὰ τῶν ἀγαθῶν τούτων ἔργα, οἳ τοσοῦτοι μὲν ὄντες
τὸ πλῆθος ὅσους αὐτὸς ὁρᾷς, τοσαύτας δὲ ἀρετὰς ἀπο-
δεδειγμένοι καὶ πολεμικὰς καὶ πολιτικάς, ἃς οὐδ' ἐν
πολλῷ πάνυ χρόνῳ διελθεῖν ῥᾴδιον, οὐδὲν ὠμὸν
οὐδ' ὑπερήφανον ἐξήνεγκαν τέλος καθ' ἡμῶν τῶν
φαύλων καὶ ταπεινῶν οἱ σεμνοὶ καὶ μεγάλοι, ἀλλὰ

καὶ λόγων ἦρξαν συμβατηρίων αὐτοὶ πρότεροι προτείνοντες διαλλαγάς, ὅτε διεῖλεν ἡμᾶς ἀπ' ἀλλήλων ἡ τύχη, καὶ τὰς συμβάσεις οὐχ ὡς ἑαυτοῖς ὑπελάμβανον ἄριστα ἕξειν, ἀλλ' ὡς ἡμεῖς ἠξιοῦμεν συνεχώρησαν γενέσθαι, καὶ τὰ τελευταῖα ταυτὶ τὰ περὶ τὴν σιτοδοσίαν ἔναγχος τοῦ χρόνου προσκρούματα, ἐφ' οἷς δι' αἰτίας εἴχομεν αὐτούς, περὶ πολλοῦ ἐποιήσαντο ἀπολύσασθαι.

XXXXVI. Ἐῶ τἆλλα, ἀλλ' ὑπὲρ αὐτοῦ σοῦ καὶ τῆς σῆς θεοβλαβείας τίνας οὐκ ἐποιήσαντο δεήσεις ἁπάντων κοινῇ τε καὶ καθ' ἕκαστον τῶν δημοτικῶν, παραιτούμενοί σε τῆς τιμωρίας; ἔπειτα τοῖς μὲν 1413 ὑπάτοις καὶ τῇ βουλῇ τοσαύτην πόλιν ἐπιτροπευούσῃ καλῶς εἶχεν, ὦ Μάρκιε, δικαστὴν τὸν δῆμον ὑπὲρ ὧν ἐνεκαλοῦντο ὑπομένειν, σοὶ δὲ ἄρα οὐχὶ καλῶς ἔχει; καὶ δεῖσθαι μὲν τῶν δημοτῶν ὑπὲρ ἀφέσεως τῆς σῆς οὗτοί γε πάντες οὐδὲν αἰσχρὸν εἶναι νομίζουσι, σὺ δὲ δι' αἰσχύνης λαμβάνεις τὸ αὐτὸ τοῦτο; καὶ οὐκ ἀπόχρη σοι ταῦτα, ὦ γενναῖε, ἀλλ' ὥσπερ τι καλὸν ἐξειργασμένος ὑψαυχενῶν καὶ μεγαληγορῶν περιέρχῃ καὶ μηδὲν ὑφεῖναι τοῦ φρονήματος ἀπομαχόμενος· ἐῶ γάρ, ὅτι καὶ λοιδορούμενος τῷ δήμῳ καὶ προσεγκαλῶν καὶ ἀπειλῶν. ἔπειτα οὐ νεμεσᾶτε αὐτῷ τῆς ὑπερηφανίας, ὦ πατέρες, εἰ τηλικούτων αὐτὸν ἀξιοῖ μόνος, ἡλίκων οὐδ' ἅπαντες ὑμεῖς ἑαυτούς; ὃν ἐχρῆν, εἰ καὶ πάντες ὑμεῖς ἀνεδέχεσθε τὸν ὑπὲρ αὐτοῦ πόλεμον ψηφίσασθαι, τὸ μὲν εὔνουν καὶ πρόθυμον ὑμῶν ἀγαπᾶν, μὴ δέχεσθαι δὲ χάριν ἰδίαν ἐπὶ κοινῇ βλάβῃ, ἀλλ' ὑπομένειν ἀπολογούμενον καὶ 1414 δίκην ὑπέχοντα εἰ δέοι καὶ πάντα πάσχοντα. ταῦτα γὰρ ἦν ἔργα ἀγαθοῦ πολίτου καὶ τὸ καλὸν ἔργοις ἀσκοῦντος οὐ λόγοις. ἃ δὲ νῦν οὗτος βιάζεται τίνος ἐστὶ σημεῖα βίου; ποίων μηνύματα προαιρέσεων,

ὅρκους παραβαίνειν, δεξιὰς παρασπονδεῖν, ὁμολογίας ἀναιρεῖν, δήμῳ πολεμεῖν, εἰς ἀρχόντων σώματα ὑβρίζειν, καὶ μηδ' ἐφ' ἑνὶ τούτων τὸ σῶμα ὑπεύθυνον ποιεῖν, ἀλλ' ἄκριτον ἀναπολόγητον μηδενὸς δεηθέντα μηθένα φοβηθέντα μηθενὶ τῶν τοσούτων πολιτῶν ἴσον γενόμενον ἀδεῶς περινοστεῖν; ἆρ' οὐ τυραννικοῦ τρόπου σημεῖα ταῦτ' ἐστίν; ἔμοιγε δοκεῖ. καὶ τοῦτον ὅμως εἰσί τινες οἱ παραψύχοντες καὶ παρα-
1415 κροτοῦντες ἐξ ὑμῶν αὐτῶν, οἷς ἐντέτηκε τὸ πρὸς τοὺς δημοτικοὺς μῖσος ἀδιάλλακτον, καὶ οὐ δύνανται συνιδεῖν, ὅτι οὐθὲν μᾶλλον κατὰ τοῦ ταπεινοτέρου μέρους τῶν ἐν τῇ πόλει φύεται τουτὶ τὸ κακὸν καὶ κατὰ τοῦ σεμνοτέρου· ἀλλ' οἴονται τοῦ διαφόρου φύσει καταδουλωθέντος καὶ τὸ καθ' ἑαυτοὺς ἕξειν ἀσφαλῶς. οὐχ οὕτως ἔχει τἀληθές, ὦ γνώμης ἁμαρτάνοντες τῆς ἀρίστης· διδάσκαλον δὲ τὴν πεῖραν ἣν ὁ Μάρκιος παρέχεται καὶ τὸν χρόνον λαβόντες, ὀθνείοις τε ἅμα καὶ οἰκείοις σωφρονισθέντες παραδείγμασι γνοίητ' ἄν, ὅτι μοσχευομένη κατὰ τοῦ δήμου τυραννὶς καθ' ὅλης τῆς πόλεως μοσχεύεται, καὶ νῦν μὲν ἀφ' ἡμῶν ἄρχεται, κρατήσασα δὲ οὐδ' ὑμῶν φείσεται.

XXXXVII. Τοιαῦτα διεξιόντος τοῦ Δεκίου, καὶ τῶν ἄλλων δημάρχων ἃ παραλιπεῖν αὐτοῖς ἐκεῖνος ἐδόκει συναγορευσάντων, ἐπειδὴ γνώμας ἔδει τοὺς συνέδρους ἀποφαίνεσθαι, πρῶτοι μὲν οἱ πρεσβύτατοι τῶν ὑπατικῶν καλούμενοι κατὰ τὸν εἰωθότα
1416 κόσμον ὑπὸ τῶν ὑπάτων ἀνίσταντο· ἔπειτα οἱ τούτων ὑποδεέστεροι κατ' ἄμφω ταῦτα· τελευταῖοι δὲ οἱ νεώτατοι λόγον μὲν οὐθένα λέγοντες· ἔτι γὰρ ἦν δι' αἰσχύνης τότε Ῥωμαίοις τοῦτο, καὶ νέος οὐδεὶς ἠξίου ἑαυτὸν σοφώτερον εἶναι πρεσβύτου· ἐπικυ-

ροῦντες δὲ τὰς κειμένας ὑπὸ τῶν ὑπατικῶν γνώμας. ἅπασι δὲ προσετάττετο παριοῦσι καθάπερ ἐν δικαστηρίῳ μεθ' ὅρκου τὴν ψῆφον ἐπιφέρειν. Ἄππιος μὲν οὖν Κλαύδιος, ὑπὲρ οὗ καὶ πρότερον ἔφην, ὅτι μισοδημότατος ἦν τῶν πατρικίων καὶ οὐδέποτε ταῖς πρὸς τὸ δημοτικὸν ἠρέσκετο διαλλαγαῖς, οὐκ εἴα γενέσθαι τὸ προβούλευμα τοιούτοις λόγοις χρώμενος.

XXXVIII. Ἐβουλόμην ἂν ἔγωγε καὶ τοῖς θεοῖς ηὐξάμην πολλάκις, ἐμαυτὸν μὲν ἁμαρτεῖν γνώμης ἣν εἶχον ὑπὲρ τῶν πρὸς τὸν δῆμον διαλύσεων, ὡς οὔτε καλὴν καὶ δικαίαν οὔτε συμφέρουσαν ὑμῖν ὑπελάμβανον ἔσεσθαι τὴν τῶν φυγάδων κάθοδον· καὶ διὰ παντός, 1417
ὁσάκις [ἂν] περὶ τούτου προετέθη σκοπεῖν, πρῶτός τε τῶν ἄλλων καὶ τελευτῶν μόνος, ἐπειδὴ οἱ λοιποὶ ἀπέστησαν, ἠναντιούμην· ὑμᾶς δ', ὦ βουλή, τοὺς ἐπὶ τὰ κρείττω τὴν ἐλπίδα λαμβάνοντας καὶ πάντα τῷ δήμῳ δίκαιά τε καὶ ἄδικα προθύμως χαριζομένους ἄμεινον ἐμοῦ δόξαι φρονεῖν. ἐπειδὴ δ' οὐχ ὡς ἐβουλόμην τε καὶ τοῖς θεοῖς ηὐχόμην τὰ πράγματα ὑμῖν κεχώρηκεν, ἀλλ' ὡς ᾠόμην, καὶ περιεστήκασιν αἱ χάριτες ὑμῖν εἰς φθόνους καὶ μίση, τὸ μὲν ἐπιτιμᾶν τοῖς ἡμαρτημένοις ὑμῖν καὶ λυπεῖν ὑμᾶς διὰ κενῆς, ὃ ῥᾷστόν ἐστι καὶ πᾶσιν ὡς τὰ πολλὰ ποιεῖν σύνηθες, οὐκ ἐν καιρῷ νυνὶ γενησόμενον ὁρῶν ἐάσω· ἐξ ὧν δὲ τά τε παρελθόντα ἐπανορθωσόμεθα, ὅσα μὴ παντάπασιν ἀνιάτως ἔχει, καὶ περὶ τῶν παρόντων ἄμεινον φρονήσομεν, ταῦτα πειράσομαι λέγειν. καίτοι με οὐ λέληθεν, ὅτι 1418
μαίνεσθαι καὶ θανατᾶν δόξω τισὶν ὑμῶν γνώμην περὶ τούτων ἐλευθέραν ἀποφαινόμενος, ἐνθυμουμένοις ἡλίκους ἔχει κινδύνους ὁ μετὰ παρρησίας λόγος, καὶ τὰς Μαρκίου συμφοράς, ὃς οὐ δι' ἕτερόν τι νυνὶ

τὸν ὑπὲρ τῆς ψυχῆς ἀγῶνα τρέχει, λογιζομένοις. ἀλλ' οὐκ οἴομαι δεῖν τῆς ἰδίας ἀσφαλείας πλείω ποιεῖσθαι πρόνοιαν ἢ τῆς κοινῆς ὠφελείας. δέδοται γὰρ ἤδη τοῖς ὑπὲρ ὑμῶν κινδύνοις τὸ σῶμα τοὐμόν, ὦ βουλή, καὶ καθωσίωται τοῖς ὑπὲρ τῆς πόλεως ἀγῶσιν, ὥστε ὅ τι ἂν τῷ δαίμονι δοκῇ, μετὰ πάντων τε καὶ σὺν ὀλίγοις, εἰ δὲ ἀνάγκη καὶ μόνος εὐγενῶς πείσομαι· ἕως δ' ἂν ἔχω τὴν ψυχὴν οὐδείς με ἀφέξει φόβος μὴ οὐχ ἃ φρονῶ λέγειν.

XXXXVIIII. Πρῶτον μὲν οὖν τοῦθ' ὑμᾶς ἤδη ποτὲ ἀξιῶ βεβαίως μαθεῖν, ὅτι δυσμενῆ καὶ πολέμιον ἔχετε τῇ καθεστώσῃ πολιτείᾳ τὸν δημοτικὸν ὄχλον, καὶ πάνθ' ὅσα μαλακισθέντες αὐτῷ συνεχωρήσατε μάτην τε ὑμῖν ἀνήλωται καὶ καταφρονήσεως αἴτια
1419 γέγονεν, ὡς διὰ τὴν ἀνάγκην συγχωρηθέντα ὑφ' ὑμῶν, ἀλλ' οὐκ ἀπ' εὐνοίας οὐδὲ κατὰ κρίσιν. σκοπεῖτε γὰρ οὕτως. ὅτε ἀπέστη λαβὼν τὰ ὅπλα ὁ δῆμος ἀφ' ὑμῶν καὶ πολέμιος ὑμῖν ἐτόλμησεν ἐκ τοῦ φανεροῦ γενέσθαι, ἀδικηθεὶς μὲν οὐδέν, τὸ μὴ δύνασθαι δὲ τὰ χρέα τοῖς συμβεβληκόσι διαλῦσαι σκηπτόμενος, καὶ εἰ ψηφίσαισθε ὑμεῖς χρεῶν τε ἀποκοπὰς καὶ ἄδειαν ὧν ἥμαρτε κατὰ τὴν ἀπόστασιν οὐθενὸς ἔτι δεήσεσθαι ἔφη, ἔγνωσαν οἱ πλείους
1420 ὑμῶν, οὐ γὰρ δὴ πάντες, παρακρουσθέντες ὑπὸ τῶν συμβούλων ὡς μή ποτε ὤφελον ἀκυρῶσαι τοὺς ἐπὶ τῇ πίστει τεθέντας νόμους καὶ μηθενὸς τῶν τότε γεγενημένων ἀδικημάτων μνησικακεῖν. οὐκ ἠγάπησε ταύτης τυχὼν τῆς χάριτος, ἧς μόνης μεμνημένος ἔφη πεποιῆσθαι τὴν ἀπόστασιν, ἀλλ' εὐθὺς ἑτέραν ἔτι ταύτης ᾔτει μείζω καὶ παρανομωτέραν δωρεάν, ἐξουσίαν αὐτῷ δοθῆναι δημάρχους ἐξ αὐτοῦ καθ' ἕκαστον ἔτος ἀποδεικνύναι, πρόφασιν μὲν ποιούμενος τὴν

ἡμετέραν ἰσχύν, ἵνα δὴ τοῖς ἀδικουμένοις καὶ κατι-
σχυνομένοις τῶν πενήτων ἐπικουρία τις ὑπάρχῃ καὶ
καταφυγή· ὡς δὲ τἀληθὲς εἶχεν, ἐπιβουλεύων τῷ
κόσμῳ τῆς πολιτείας καὶ εἰς δημοκρατίαν περιστῆσαι 1421
τὰ πράγματα βουλόμενος. καὶ τοῦτ' ἔπεισαν ἡμᾶς
οἱ σύμβουλοι τὸ ἀρχεῖον ἐᾶσαι παρελθεῖν εἰς τὴν
πόλιν ἐπὶ τῷ κοινῷ παραγινόμενον κακῷ, καὶ μά-
λιστα ἐπὶ τῷ κατὰ τῆς βουλῆς φθόνῳ, πολλὰ εἴπερ
ἄρα μέμνησθε κεκραγότος ἐμοῦ καὶ μαρτυρουμένου
θεούς τε καὶ ἀνθρώπους, ὅτι πόλεμον ἐμφύλιον
ἄπαυστον εἰς τὴν πόλιν εἰσάξετε, καὶ πάνθ' ὅσα ὑμῖν
ἐκβέβηκε προλέγοντος.

L.. Τί οὖν ἐποίησεν ὁ χρηστὸς ἡμῖν δῆμος,
ἐπειδὴ καὶ ταύτην αὐτῷ συνεχωρήσατε τὴν ἀρχήν;
οὐκ ἐταμιεύσατο τὴν τοσαύτην χάριν οὐδ' ἔλαβεν
αἰσχυνομένως αὐτὴν καὶ σωφρόνως, ἀλλ ὡς δεδοι-
κόσι τὴν ἰσχὺν αὐτοῦ καὶ κατεπτηχόσιν ἡμῖν· ἔπειτα 1422
ἱερὰν καὶ ἄσυλον ἔφη δεῖν ἀποδειχθῆναι τὴν ἀρ-
χὴν ὅρκοις ἐμπεδωθεῖσαν, κρείττω τιμὴν αἰτούμενος
ἧς δεδώκατε ὑμεῖς τοῖς ὑπάτοις. ὑπεμείνατε καὶ
τοῦτο, καὶ στάντες ἐπὶ τῶν τομίων κατ' ἐξωλείας
ἑαυτῶν τε καὶ τῶν ἀπογόνων ὠμόσατε. τί οὖν
ἐποίησε καὶ τούτου τυχών; ἀντὶ τοῦ χάριτας ὑμῖν
εἰδέναι καὶ σώζειν τὸν πάτριον κόσμον τῆς πολιτείας,
ἀρξάμενος ἀπὸ τούτων τῶν πλεονεξιῶν καὶ ταύταις
ταῖς παρανομίαις ἀφορμαῖς τῶν ὕστερον χρησάμενος
νόμους τε ἀπροβουλεύτους εἰσφέρει, καὶ τούτους
ἐπιψηφίζει δίχα τῆς ὑμετέρας γνώμης, καὶ οἷς ἂν
ὑμεῖς ἐκφέρητε δόγμασιν οὐ προσέχει τὸν νοῦν, καὶ
τῶν ὑπάτων ὡς οὐκ ὀρθῶς τὴν πόλιν ἐπιτροπευόν-
των κατηγορεῖ, καὶ τοῖς ἐκβαίνουσι παρὰ τὰς ὑμε- 1423
τέρας συνθήκας· πολλὰ δ' ἐστὶν ὧν οὐ δύναται

στοχάσασθαι λογισμὸς ἀνθρώπινος· οὐ τὴν τύχην ὥσπερ ἐχρῆν, ἀλλὰ τὴν ὑμετέραν ἐπιγράφει διάνοιαν, ἐπιβουλεύεσθαί τε ὑφ' ὑμῶν σκηπτόμενος καὶ δεδιέναι, μὴ τὴν ἐλευθερίαν ἀφέλησθε ἢ τῆς πατρίδος ἐκβάλητε, αὐτὸς ἐφ' ὑμῖν ταῦτα μηχανώμενος διατελεῖ, καὶ τὸ μὴ παθεῖν ὃ δεδοικέναι φησίν, οὐκ ἄλλῳ τινὶ φυλαττόμενος δῆλός ἐστιν, ἢ τῷ δρᾶσαι φθάσας. ἐδήλωσε δὲ τοῦτο πολλάκις μὲν καὶ πρότερον καὶ ἐπὶ πολλῶν ὧν ἐξείργομαι μεμνῆσθαι κατὰ τὸ παρόν· μάλιστα δὲ Μάρκιον τουτονὶ τὸν φιλόπολιν ἄνδρα, οὔτε προγόνων ἀφανῶν ὄντα οὔτ' αὐτὸν ἀρετῇ λειπόμενον οὐθενὸς ἡμῶν, αἰτιασάμενος ἐπιβουλεύειν αὐτῷ καὶ πονηρὰς ἐνθάδε γνώμας λέγειν,
1424 ἄκριτον ἐπεχείρησεν ἀποκτεῖναι. καὶ εἰ μὴ δεινὸν ἡγησάμενοι τὸ πρᾶγμα οἵ τε ὕπατοι καὶ ὑμῶν οἱ τὰ κρείττω φρονοῦντες συνεστράφητε, καὶ τὴν παρανομίαν ἐπέσχετε αὐτῶν, ἐν μιᾷ τῇ τότε ἡμέρᾳ πάντα ἂν ἀφῃρέθητε, ὅσα [οἱ] πατέρες τε ὑμῖν σὺν πολλοῖς κτησάμενοι πόνοις κατέλιπον, καὶ αὐτοὶ ὑμεῖς οὐκ ἐλάττους ἀγῶνας ἐκείνων ὑποστάντες ἔχετε, τὸ ἀξίωμα τὴν ἡγεμονίαν τὴν ἐλευθερίαν· οἱ δὲ γενναιότεροι καὶ οὐκ ἀγαπήσαντες αὐτὸ τὸ ζῆν, εἰ μὴ μετὰ τούτων ἐμέλλετε τῶν ἀγαθῶν βιώσεσθαι, τὰς ψυχὰς ἂν πρότερον ἢ ταῦτα ἀφῃρέθητε, οἱ μὲν εὐθὺς οἱ δ' οὐκ εἰς μακράν. τί γὰρ ἂν τὸ κωλῦσον ἦν, οὕτως αἰσχρῶς καὶ κακῶς Μαρκίου τοῦδε ἀναρπασθέντος ὥσπερ ἐν ἐρημίᾳ, κἀμὲ μετὰ τοῦτον ἀπολωλέναι διασπασθέντα ὑπὸ τῶν ἐχθρῶν, καὶ πάντας ὅσοι πώποτε ἠναντιώθησαν καὶ τὸ λοιπὸν ἔμελλον ἐναντιώσεσθαι ταῖς παρανόμοις ἐπιθυμίαις τοῦ δήμου; οὐ γὰρ ἂν ἠρκέσθη τοὺς δύο μόνους ἡμᾶς ἐκποδῶν ποιησάμενος, οὐδὲ μέχρι δεῦρ' ἐλθὼν ἀπέστη

τῆς παρανομίας, εἰ δεῖ τὰ μέλλοντα τεκμαίρεσθαι 1425
τοῖς γεγονόσιν, ἀλλ' ἀφ' ἡμῶν ἀρξάμενος ἅπαν τὸ ἀντίπαλον καὶ μὴ εἶκον ὥσπερ χειμάρρους πολὺς ἐμπεσὼν παρέσυρεν ἂν καὶ κατήνεγκεν, οὔτ' εὐγενείας φειδόμενος οὔτ' ἀρετῆς οὔθ' ἡλικίας.

LI. Ταύτας ὑμῖν ὁ δῆμος, ὦ βουλή, τὰς καλὰς ἀμοιβὰς ἀνθ' ὧν ἔπαθε πολλῶν ὄντων καὶ μεγάλων τὰς μὲν ἀπέδωκεν ἤδη, τὰς δ' ἀποδώσειν ἔμελλεν, εἰ μὴ τὸ κωλῦσον παρ' ὑμᾶς ἐγένετο. ἄγε δὴ νῦν κἀκεῖνα ἐνθυμήθητε πάλιν, ἃ μετὰ τοῦτο τὸ γενναῖον καὶ σῶφρον ὑμῶν ἔργον ἔδρασεν, ἵνα γνῶτε ὅντινα χρὴ τρόπον αὐτῷ προσφέρεσθαι. ἐκεῖνος τοίνυν ὡς ἔμαθεν ὑμᾶς οὐκέτι φέροντας αὐτοῦ τὴν ὕβριν, ἀλλ' ὁμόσε χωρεῖν παρεσκευασμένους, ἔπτηξε καὶ μικρὸν ἀναλαβὼν ἑαυτὸν ὥσπερ ἐκ μέθης καὶ μανίας ἀπὸ μὲν τοῦ βιάζεσθαι κατέβη, ἐπὶ τὸ δικάζεσθαι δ' ἐτράπετο· καὶ προειπὼν ἡμέραν ῥητήν, εἰς αὐτὴν ἐκάλει 1426
τὸν ἄνδρα ὡς δίκην ὑφέξοντα, ἧς αὐτὸς ἔμελλεν ἔσεσθαι κατήγορός τε καὶ μάρτυς καὶ δικαστὴς καὶ τοῦ μεγέθους τῆς τιμωρίας κύριος. ἐπειδὴ δὲ καὶ πρὸς τοῦτο ἐνέστητε νομίσαντες οὐκ ἐπὶ δίκην ἀλλ' ἐπὶ τιμωρίαν καλεῖσθαι τὸν ἄνδρα, ὁρῶν ὡς οὐδενὸς αὐτοκράτωρ ἐστὶ πράγματος, ἀλλ' ὅσ' ἂν ὑμεῖς προβουλεύσητε, ταῦτα ἐπιψηφίσαι κύριος, τῆς τε αὐθαδείας, ἧς πολὺς ἔπνει τότε, ὑφεῖται νυνί, καὶ δεησόμενος ὑμῶν ἥκει συγχωρῆσαι καὶ ταύτην αὐτῷ τὴν χάριν. ἐνθυμούμενοι δὴ ταῦτα αἴσθεσθε ἤδη ποτὲ καὶ μάθετε, ὅτι πάνθ' ὅσα μὲν εὐηθέστερα βουλευσάμενοι μᾶλλον ἢ φρονιμώτερα ἐχαρίσασθε αὐτῷ συμφορὰς ὑμῖν ἐνήνοχε καὶ βλάβας· ὅσα δὲ μετὰ τοῦ γενναίου στάντες τοῖς παρανόμοις αὐτοῦ καὶ βιαίοις ἠναντιώθητε, ταῦθ' ὑμῖν εἰς δέον ἐκβέ-

βηκε. τί οὖν ὑμῖν ἐπισταμένοις ταῦτα παραινῶ πράττειν, καὶ τίνα γνώμην ὑπὲρ τῶν παρόντων 1427 ἀποφαίνομαι; ὅσα μὲν ἐχαρίσασθε καὶ συνεχωρήσατε τῷ δήμῳ τὴν ἔχθραν διαλλαττόμενοι ὁπωσδήποτε φυλάττειν κύρια, καὶ μὴ λύειν τῶν τότε συγχωρηθέντων μηθέν, οὐχ ὡς καλῶν καὶ τῆς πόλεως ἀξίων ὄντων· πόθεν γάρ; ἀλλ' ὡς ἀναγκαίων καὶ μηκέτι δεχομένων διόρθωσιν· ὅσα δ' ἂν ἔξω τούτου βιαζόμενος καὶ παρανομῶν ἀκόντων ὑμῶν ἐπιχειρῇ λαμβάνειν μήτε συγχωρεῖν αὐτῷ μήτε ἐπιτρέπειν, ἀλλ' ἀντιπράττεσθαι λόγοις τε καὶ ἔργοις καὶ ὁμοῦ πάντας καὶ ἕνα ἕκαστον ἰδίᾳ. οὐ γάρ, ἂν ἅπαξ ἁμάρτῃ τις εἴτε ἀπατηθεὶς εἴτε ἀναγκασθείς, καὶ τὰ λοιπὰ ὅμοια δεῖ πράττειν, ἀλλ' ἐκείνου μεμνημένους τἆλλα ὅπως μὴ τοιαῦτα γενήσεται σκοπεῖν. ταῦτα μὲν οὖν ἐστιν, ἃ κοινῇ πάντας ὑμᾶς οἴομαι δεῖν ἐγνωκότας εἶναι, καὶ παρεσκευάσθαι πρὸς τὰς ἀδίκους τοῦ δήμου πλεονεξίας παραινῶ.

1428 LII. Ὡς δὲ καὶ τοῦτο περὶ οὗ νυνὶ πρόκειται σκοπεῖν ὅμοιόν ἐστι τοῖς ἄλλοις ἐγχειρήμασιν αὐτοῦ τοῖς ἀδίκοις καὶ παρανόμοις, καὶ οὐχ οἷον ὁ δήμαρχος ἐξαπατῶν ὑμᾶς ἐπειρᾶτο ἀποφαίνειν δίκαιον καὶ μέτριον, μάθετε οἱ μήπω σαφῶς εἰδότες. ὁ μὲν οὖν νόμος ὁ περὶ τῶν δικαστηρίων τῶν δημοτικῶν, ᾧ Δέκιος ἐκρατύνατο μάλιστα, οὐ καθ' ὑμῶν ἐγράφη τῶν πατρικίων, ἀλλ' ὑπὲρ ἀσφαλείας τῶν κατισχυομένων δημοτικῶν, ὡς αὐτός τε δηλοῖ γραφὰς ἔχων οὐκ ἀμφιβόλους, καὶ ὑμεῖς τοῦτο ἅπαντες ἀεὶ λέγετε καλῶς ἐπιστάμενοι. μέγα δὲ τούτου σημεῖόν ἐστιν, ὃ καὶ παντὸς ἀμφισβητουμένου δικαίου κριτήριον εἶναι δοκεῖ κράτιστον, ὁ χρόνος ἐννεακαιδεκέτης ἤδη γεγονὼς ἐξ οὗ ὁ νόμος οὗτος ἐτέθη· ἐν ᾧ παντὶ

Δέκιος οὐκ ἂν ἔχοι δεῖξαι δίκην οὐδεμίαν, οὔτε δημοσίαν κατ᾽ οὐδενὸς τῶν πατρικίων ἐν τῷ νόμῳ δεδικασμένην, οὔτ᾽ ἰδίαν· εἰ δὲ φήσει, δειξάτω καὶ μηθὲν ἔτι δεόμεθα λόγου. αἱ δὲ ὁμολογίαι καθ᾽ ἃς διελύσασθε πρὸς τοὺς δημότας αἱ νεωστὶ γενόμεναι· χρὴ γὰρ καὶ περὶ τούτων ὑμᾶς μαθεῖν, ἐπειδὴ πονηρὸς ἐξηγητὴς ὁ δήμαρχος αὐτῶν ἐγένετο· δύο 1429 ταῦτα συγχωρήματα περιέχουσιν· ἀφεῖσθαι τοὺς δημοτικοὺς τῶν χρεῶν, καὶ τὴν ἀρχὴν τήνδε ἀποδείκνυσθαι καθ᾽ ἕκαστον ἐνιαυτὸν ἐπικουρίας ἕνεκα τῶν κατισχυομένων καὶ κωλύσεως, ἄλλο δὲ παρὰ ταῦτα οὐδέν. μέγιστον δὲ ὑμῖν γενέσθω τεκμήριον, ὅτι οὔτε ὁ νόμος οὔτε αἱ συνθῆκαι κατ᾽ ἀνδρὸς πατρικίου δικάζειν τῷ δήμῳ δεδώκασιν ἐξουσίαν, ὃ ποιεῖ νῦν αὐτὸς ὁ δῆμος. αἰτεῖται γὰρ αὐτὸ παρ᾽ ὑμῶν τήμερον, ὡς πρότερόν γε οὐκ ἔχων· οὐδεὶς δ᾽ ἂν ἀξιώσειέ τι παρ᾽ ἄλλων λαμβάνειν, ὧν ἐστι νόμῳ κύριος. δίκαιον δὲ φύσεως ἀνομοθέτητον, ὦ βουλή, πῶς ἂν εἴη τοῦτο· καὶ γὰρ τοῦτο Δέκιος ὑμᾶς ᾤετο δεῖν σκοπεῖν· τοῖς μὲν δημόταις ἅς τ᾽ ἂν φύγωσι δίκας ὑπὸ τῶν πατρικίων καὶ ἃς ἂν ἐκείνους διώκωσι τὸν δῆμον δικάζειν· τοῖς δὲ πατρικίοις μήθ᾽ ὅταν ὑπάγωσί τινα τῶν δημοτικῶν δίκῃ μήθ᾽ ὅταν 1430 αὐτοὶ κινδυνεύσωσι τοὺς πατρικίους τὰ νείκη διαιτᾶν, ἀλλὰ τούτοις μὲν ἀμφότερα ἐξεῖναί πλεονεκτεῖν, ἡμῖν δὲ οὐδετέρου τῶν δικαίων μετέχειν; εἰ δέ τι Μάρκιος ἀδικεῖ τὸν δῆμον, [ἢ] καὶ ἄλλος τῶν πατρικίων ὁστισοῦν καὶ δίκαιός ἐστιν ἀποθανεῖν ἢ τῆς πόλεως ἐκπεσεῖν, μὴ παρ᾽ αὐτοῖς ἀλλ᾽ ἐνθάδε κριθεὶς διδότω δίκας, ὥσπερ ἐστὶ νόμιμον. εἰ μὴ ἄρα, ὦ Δέκιε, ὁ μὲν δῆμος ἴσος ἔσται δικαστὴς καὶ οὐθὲν ἂν χαρίσαιτο αὐτῷ περὶ ἀνδρὸς ἐχθροῦ τὴν ψῆφον ἐπιφέρων·

οὗτοι δὲ εἰ γένοιντο τῆς ψήφου κύριοι τὸν ἀδικοῦντα περὶ πλείονος ποιήσονται τῆς ἀδικουμένης ὑπ' αὐτοῦ πόλεως, μέλλοντες ἀρὰν καὶ ἐπιορκίαν καὶ μῖσος μὲν παρ' ἀνθρώπων, χόλον δὲ παρὰ θεῶν ἐκ τῆς δίκης ἀποίσεσθαι καὶ μετὰ πονηρῶν ἐλπίδων ζῆν. οὐκ ἄξιον ταῦτα περὶ τῆς βουλῆς, ὦ δημόται, ὑποτοπεῖν,
1431 ᾗ τιμὰς καὶ ἀρχὰς καὶ τὰ κράτιστα τῶν ἐν τῇ πόλει παραχωρεῖν ὁμολογεῖτε δι' ἀρετήν, καὶ πολλὰς χάριτας εἰδέναι φατὲ τῆς προθυμίας ἣν ἀπεδείξατο περὶ τὴν κάθοδον ὑμῶν. μάχεται ταῦτα ἀλλήλοις· καὶ οὐκ ἔχει λόγον οὓς ἐπαινεῖτε τούτους φοβεῖσθαι, καὶ ἅμα τοῖς αὐτοῖς περὶ μὲν τῶν μειζόνων ἐπιτρέπειν, περὶ δὲ τῶν ἄλλων ἀπιστεῖν. τί δ' οὐχὶ μιᾷ χρώμενοι γνώμῃ ἢ πάντα πιστεύετε αὐτοῖς ἢ περὶ πάντων ἀπιστεῖτε; ἀλλὰ προβουλεῦσαι μὲν αὐτοὺς τὰ δίκαια ἱκανοὺς εἶναι νομίζετε, δικάσαι δὲ περὶ αὐτῶν τούτων ὧν προβουλεύουσιν οὐχ ἱκανούς. πολλὰ καὶ ἄλλα περὶ τῶν δικαίων εἶχον, ὦ βουλή, λέγειν, ἀλλὰ καὶ ταῦτα ἱκανά.

LIII. Ἐπειδὴ δὲ καὶ περὶ τοῦ συμφέροντος ἐπειρᾶτο λέγειν Δέκιος, ὡς ἀγαθὸν μὲν ὁμόνοια, δεινὸν δὲ στάσις, καὶ θεραπεύοντες μὲν τὸν δῆμον ἐν ὁμονοίᾳ πολιτευσόμεθα, κωλύσαντες δὲ οὓς βούλονται τῶν πατρικίων ἀνδρηλατεῖν ἢ μιαιφονεῖν εἰς πόλεμον ἐμφύλιον καταστησόμεθα, πολλὰ λέγειν ἔχων
1432 ὀλίγοις πάνυ χρήσομαι. πρῶτον μὲν οὖν θαυμάσαι ἔχω Δέκιον τῆς εἰρωνείας· οὐ γὰρ ἠλιθιότητός γε· εἰ κρεῖττον οἴεται τὰ συμφέροντα τῷ κοινῷ φρονεῖν ἑαυτόν, ὃς ἄρτι παρελήλυθεν εἰς πολιτικὰς πράξεις, ἡμῶν τῶν καταγεγηρακότων ἐν αὐταῖς καὶ μεγάλην ἐκ μικρᾶς πεποιηκότων τὴν πόλιν. ἔπειτα εἰ πείσειν ὑπέλαβεν ὑμᾶς, ὡς χρὴ παραδοῦναί τινα ἔκδοτον

ἐπὶ τιμωρίᾳ τοῖς ἐχθροῖς, καὶ ταῦτα πολίτην ὑμέτε-
ρον, καὶ οὐχὶ τῶν ἀφανῶν τινα πολιτῶν ἢ φαύλων,
ἀλλ' ὃν αὐτοὶ καὶ τὰ πολέμια λαμπρότατον ἡγεῖσθε
εἶναι καὶ τὸν βίον σωφρονέστατον τά τε πολιτικὰ
πράττειν οὐθενὸς χείρονα. καὶ ταῦτα ἐτόλμησεν εἰ-
πεῖν εἰδὼς ὑμᾶς πλείστην αἰδῶ ποιουμένους ἱκετῶν,
καὶ μηδὲ πολεμίων τοὺς καταφεύγοντας ἐνθάδε ταύ-
της ἀποκλείοντας τῆς φιλανθρωπίας. εἰ δὲ τἀναντία
ἡμᾶς ἐγίγνωσκες ἐπιτηδεύοντας, ὦ Δέκιε, ἀνόσια
μὲν φρονοῦντας περὶ θεούς, ἄδικα δὲ πράττοντας
πρὸς ἀνθρώπους, τί ἂν ἡμῖν τούτου συνεβούλευες
ἔργον ὑπομεῖναι δεινότερον, ἀφ' οὗ πρόρριζοι καὶ
πανώλεις, μισηθέντες θεοῖς τε καὶ ἀνθρώποις, δια- 1433
φθαρησόμεθα; οὐ δεόμεθά σου συμβούλου, Δέκιε,
οὔτε περὶ πολιτῶν ἐκδόσεως οὔτε περὶ ἄλλου χρή-
ματος ὧν ἡμῖν πρακτέον οὐδενός· οὐδὲ ὀθνείᾳ φρο-
νήσει νέων ἀνδρῶν τὰ οἰκεῖα συμφέροντα κρίνειν
οἰόμεθα δεῖν οἱ μέχρι τῆσδε τῆς ἡλικίας διὰ πολλῆς
πείρας κακῶν τε καὶ ἀγαθῶν ἐληλυθότες. πολέμου
δὲ ἀπειλάς, αἷς χρώμενοι φοβεῖτε ἡμᾶς, οὐ νῦν
πρῶτον ἐπαγομένας ὑφ' ὑμῶν, ἀλλὰ πολλάκις ἤδη
καὶ ὑπὸ πολλῶν ἐπανασεισθείσας τῇ συνήθει πρᾳό-
τητι παραδόντες ἀκαταπλήκτως οἴσομεν. καὶ εἰ δή- 1434
περ δράσετε τὰ ὅμοια οἷς λέγετε, ἀμυνούμεθα θεούς
τε συναγωνιστὰς ἔχοντες οἳ νεμεσῶσι τοῖς ἄρχουσι
πολέμου ἀδίκου, καὶ ἀνθρώπων ἕξοντες χεῖρα οὐκ
ὀλίγην σύμμαχον. Λατῖνοί τε γὰρ ἅπαντες οἷς
νεωστὶ τὴν ἰσοπολιτείαν δεδώκαμεν σὺν ἡμῖν στή-
σονται, ὡς περὶ πατρίδος ἤδη τῆς πόλεως τῆσδε
ἀγωνιζόμενοι, αἵ τε ἐνθένδε ἀποικισθεῖσαι πόλεις
πολλαὶ καὶ ἀγαθαὶ περὶ παντὸς ποιούμεναι σώζεσθαι
τὴν μητρόπολιν ἀμυνοῦσιν αὐτῇ. εἰ δὲ εἰς ἀνάγκην

ἡμᾶς κατακλείσετε τῆς πανταχόθεν ἐπικουρίας περιέχεσθαι, ὑπομενοῦμεν, ὦ Δέκιε, καὶ θεράποντας εἰς ἐλευθερίαν προκαλούμενοι καὶ πολεμίους εἰς φιλίαν καὶ πάντας ἀνθρώπους εἰς κοινωνίαν τῶν ἐκ τῆς νίκης ἐλπίδων ὁμόσε χωρεῖν ὑμῖν. μηθενὸς δὲ τούτων δεήσειεν, ὦ Ζεῦ καὶ θεοὶ πάντες οἵ πόλιν
1435 τῶν Ῥωμαίων κατέχοντες, ἀλλ' εἴη μέχρι λόγων τὰ φοβερὰ ταῦτα ἐλθεῖν, ἔργον δὲ μηθὲν ἐξ αὐτῶν γένοιτο ἄχαρι.

LIIII. Ταῦτα μὲν Ἄππιος εἶπεν. Μάνιος δὲ Οὐαλέριος ὁ δημοτικώτατος τῶν ἐκ τοῦ συνεδρίου καὶ περὶ τὰς διαλλαγὰς πλείστην ἀποδειξάμενος προθυμίαν φανερῶς καὶ τότε τῷ δήμῳ συνελάμβανε, καὶ λόγον διεξῆλθε μετὰ πολλῆς συγκείμενον φροντίδος, ἐπιτιμῶν μὲν τοῖς οὐκ ἐῶσι μίαν εἶναι τὴν πόλιν, ἀλλὰ διαιροῦσι τὸ δημοτικὸν ἀπὸ τῶν πατρικίων καὶ διὰ μικρὰς προφάσεις πολέμους ἀναζωπυροῦσιν ἐμφυλίους· ἐπαινῶν δὲ τοὺς ἓν τό συμφέρον καὶ κοινὸν ἡγουμένους καὶ πάντ' ἐλάττω τῆς ὁμονοίας τιθεμένους, διδάσκων ὡς εἰ γένοιτο τῆς δίκης ὁ δῆμος ὥσπερ ἀξιοῖ κύριος, καὶ ταύτην παρὰ τοῦ
1436 συνεδρίου τὴν χάριν ἑκόντος λάβοι, τάχα μὲν οὐδ' ἐπέξεισιν ἄχρι τέλους, ἀλλ' ἀρκεσθεὶς αὐτῷ τῷ κεκρατηκέναι τοῦ σώματος ἐπιεικέστερον μᾶλλον ἢ χαλεπώτερον αὐτῷ χρήσεται. εἰ δὲ ἄρα ἐκ παντὸς οἰομένων τρόπου τῶν δημάρχων τέλος ἐπιθεῖναι νόμιμον τῇ δίκῃ τῆς ψήφου γενήσεται κύριος, ἀπολύσει τὸν ἄνδρα τῆς αἰτίας, αἰδούμενος μὲν αὐτὸ τὸ κινδυνεῦον σῶμα, οὗ πολλὰ καὶ καλὰ ἔργα ἔχει μεμνῆσθαι, ἀνταποδιδοὺς δὲ ταύτην τὴν χάριν τῇ παρασχούσῃ τὴν ἐξουσίαν αὐτῷ βουλῇ καὶ πρὸς μηδὲν ἐναντιωθείσῃ τῶν μετρίων. παρεῖναι μέντοι τῇ δίκῃ

συνεβούλευε καὶ συναπολογεῖσθαι τῷ ἀνδρὶ, καὶ τὸν δῆμον ἀξιοῦν μηθὲν γνῶναι περὶ αὐτοῦ χαλεπόν, τούς τε ὑπάτους καὶ τοὺς ἐκ τοῦ συνεδρίου πάντας καὶ τοὺς ἄλλους πατρικίους κατὰ πλῆθος ἀφικομένους· συνοίσειν γὰρ οὐ μικρὰν τῷ κινδυνεύοντι καὶ τούτους εἰς σωτηρίαν ῥοπήν· καὶ μὴ μόνον αὐτοὺς οὕτως ἔχειν ταῖς γνώμαις, ἀλλὰ καὶ πελάτας ἕκαστον τοὺς αὐτοῦ παρακαλεῖν καὶ φίλους συνάγειν, καὶ εἴ τινας οἰκείως ἔχειν σφίσι τῶν δημοτικῶν δι' εὐεργεσίας ὑπολαμβάνουσι, καὶ τούτους νυνὶ τὴν πρότερον ὀφειλομένην χάριν ἐπὶ τῆς ψηφοφορίας ἀπαιτεῖν. τό τε φιλόπολι καὶ μισοπόνηρον [χρηστὸν] οὐκ ὀλίγον ἀπέφηνεν ἐκ τοῦ δήμου μέρος ἐσόμενον, καὶ ἔτι πλεῖον τούτου, ὃ πρὸς τὰς τύχας πάσχει τι τὰς ἀνθρωπίνας καὶ ἐλεεῖν οἶδε τοὺς ἐν τοῖς ἀξιώμασιν, ὅταν εἰς ταπεινὰ πέσωσιν αὐτῶν αἱ τύχαι. ὁ δὲ πλείων λόγος ἐγίνετο αὐτῷ πρὸς τὸν Μάρκιον παράκλησιν ἔχων νουθετήσει μεμιγμένην καὶ δέησιν ἀνάγκῃ. ἠξίου γὰρ αὐτὸν ἐπεὶ διιστάναι τὸν δῆμον ἀπὸ τῆς βουλῆς αἰτίαν ἔχει, καὶ τυραννικὸς εἶναι διαβάλλεται διὰ τὴν αὐθάδειαν τοῦ τρόπου, δέος τε παρέστηκεν ἅπασι μὴ δι' αὐτὸν ἀρχὴ γένηται στάσεως 1438 καὶ κακῶν ἀνηκέστων ἃ φέρουσιν ἐμφύλιοι πόλεμοι, μὴ ποιεῖν ἀληθεῖς καὶ κυρίας τὰς κατ' αὐτοῦ διαβολὰς μένοντα ἐν τῷ φθονουμένῳ τοῦ βίου, ἀλλὰ σχῆμα ταπεινὸν μεταλαβεῖν καὶ τοῖς ἀδικεῖσθαι λέγουσι τὴν ἐξουσίαν τοῦ σώματος παρασχεῖν, καὶ μὴ φεύγειν ἄδικον ἔγκλημα λόγῳ μετὰ δίκης ἀπολυόμενον. ταῦτα γὰρ αὐτῷ πρός τε σωτηρίαν ἀσφαλέστατα εἶναι, καὶ πρὸς εὐδοξίαν ἧς ὀρέγεται λαμπρότατα, καὶ τοῖς προυπηργμένοις ἔργοις ἀκόλουθα. εἰ δὲ αὐθαδέστερος ἔσται μᾶλλον ἢ μετριώτερος, καὶ

τὴν βουλὴν ἀξιώσει πάντα κίνδυνον δι᾿ ἑαυτὸν ὑπομένειν, κακὴν μὲν ἧτταν, αἰσχρὰν δὲ νίκην τοῖς πεισθεῖσι προσάψειν αὐτὸν ἀπέφαινεν· ἥν τε ἐνταῦθα πολὺς ὀλοφυρόμενος καὶ τῶν καταλαμβανόντων κακῶν τὰς πόλεις ἐν ταῖς διχοστασίαις τὰ μέγιστα καὶ φανερώτατα ἐπιλεγόμενος.

1439 LV. *Διεξιὼν δὲ ταῦτα μετὰ πολλῶν δακρύων οὐ προσποιητῶν καὶ πεπλασμένων, ἀλλ᾿ ἀληθινῶν, ἀνὴρ ἡλικίας τε καὶ ἀρετῆς ἀξιώσει προὔχων, ὡς ἔμαθε κινούμενον ἐπὶ τοῖς λεγομένοις τὸ συνέδριον, ἐκ τοῦ τεθαρρηκότος ἤδη τὸ λοιπὸν ἐξέφαινε τῶν λόγων· Εἰ δέ τινες ὑμῶν, ὦ βουλευταί, λέγων, ταράττονται δοκοῦντες ἔθος εἰσάγειν πονηρὸν εἰς τὴν πόλιν, ἐὰν τῷ δήμῳ συγχωρήσητε ψῆφον ἐπιφέρειν κατὰ τῶν πατρικίων, καὶ ἐπ᾿ οὐδενὶ ἀγαθῷ νομίζουσι τὴν τῶν δημάρχων ἐξουσίαν πολλὴν ἰσχὺν λαβοῦσαν γενήσεσθαι, μαθέτωσαν ἁμαρτάνοντες τῆς δόξης καὶ τἀναντία ἢ τὰ προσήκοντα ὑπειληφότες. εἰ γάρ τι καὶ ἄλλο σωτηρίας αἴτιον ἔσται τῇ πόλει τῇδε καὶ τοῦ μηδέποτε τὴν ἐλευθερίαν μήτε τὴν ἰσχὺν ἀφαιρε-*
1440 *θῆναι, ὁμονοοῦσαν δὲ ἀεὶ καὶ μιᾷ γνώμῃ περὶ πάντων χρωμένην διατελεῖν, ὁ δῆμος αἰτιώτατος ἔσται συμπαραληφθεὶς ἐπὶ τὰ πράγματα· καὶ τὸ μὴ μίαν εἶναι τὴν διοικοῦσαν τὰ κοινὰ πολιτείαν ἄκρατον μήτε ὀλιγαρχίαν μήτε δημοκρατίαν, ἀλλὰ τὴν μικτὴν ἐξ ἁπασῶν τούτων κατάστασιν, τοῦτο ὑπὲρ πάντα ἡμᾶς ὠφελήσει. ῥᾷστα γὰρ εἰς ὕβρεις ἀποσκήπτει καὶ παρανομίας τούτων ἕκαστον τῶν πολιτευμάτων αὐτὸ καθ᾿ ἑαυτὸ γινόμενον· ὅταν δ᾿ ἀνακερασθῇ πάντα μετρίως τὸ παρακινοῦν μέρος αἰεὶ καὶ ἐκβαῖνον ἐκ τοῦ συνήθους κόσμου ὑπὸ τοῦ σωφρονοῦντος καὶ μένοντος ἐν τοῖς ἰδίοις ἤθεσι κατείργεται. μον-*

αρχία μὲν ὠμὴ καὶ αὐθάδης γενηθεῖσα καὶ τυραννικὰ διώκειν ἀρξαμένη ζηλώματα, ὑπ᾽ ἀνδρῶν ὀλίγων καὶ ἀγαθῶν καταλύεται. ὀλιγαρχία δ᾽ ἐκ τῶν ἀρίστων ἀνδρῶν συνεστηκυῖα, ᾗ χρῆσθε καὶ ὑμεῖς νυνί, ὅταν πλούτῳ καὶ ἑταιρίαις ἐπαρθεῖσα δικαιοσύνης καὶ τῆς ἄλλης ἀρετῆς μηθένα ποιῆται λόγον 1441
ὑπὸ δήμου φρονίμου καταλύεται. δῆμος δὲ σωφρονῶν καὶ κατὰ νόμους πολιτευόμενος, ὅταν ἀκοσμεῖν ἄρξηται καὶ παρανομεῖν ὑπὸ τοῦ κρατίστου ἀνδρὸς βίᾳ καταληφθεὶς δικαιοῦται. ὑμῖν δέ, ὦ βουλή, μονάρχου μὲν ἐξουσίας ἵνα μὴ τυραννὶς γένηται τὰ δυνατὰ εὕρηται βοηθήματα. δύο τε γὰρ ἀνθ᾽ ἑνὸς ἀποδείξαντες τῆς πόλεως κυρίους, καὶ τούτοις οὐκ ἀόριστον χρόνον ἐπιτρέψαντες ἔχειν τὴν ἀρχήν, ἀλλ᾽ ἐνιαύσιον, οὐδὲν ἧττον ἀποδείκνυτε φύλακας αὐτῶν τριακοσίους ἄνδρας ἐκ τῶν πατρικίων τοὺς κρατίστους τε καὶ πρεσβυτάτους, ἐξ ὧν ἥδε ἡ βουλὴ συνέστηκεν· ὑμῶν δὲ αὐτῶν, ἵνα μένητε ἐν τῷ προσήκοντι κόσμῳ, φυλακὴν οὐδεμίαν ἄχρι τοῦδε φαίνεσθε πεποιημένοι. καὶ περὶ μὲν ὑμῶν οὔπω ἔδεισα, μὴ διαφθαρῆτε τὰς διανοίας ὑπό τε μεγέθους καὶ πλήθους ἀγαθῶν, οἳ τυραννίδος τε πολυχρονίου ἠλευθερώκατε τὴν πόλιν ἔναγχος, καὶ οὔπω σχολὴν ἐσχήκατε ὑβρίζειν καὶ τρυφᾶν διὰ τοὺς συνεχεῖς καὶ μακροὺς πολέμους· περὶ δὲ τῶν μεθ᾽ ὑμᾶς ἐσο- 1442
μένων ἐνθυμούμενος ὅσας ὁ μακρὸς αἰὼν φέρει μεταβολὰς δέδοικα, μή τι παρακινήσαντες οἱ δυνατοὶ ἐκ τοῦ συνεδρίου λάθωσιν εἰς μοναρχίαν τὸ πολίτευμα περιστήσαντες τυραννικήν.

LVI. Ἐὰν οὖν κοινωνήσητε καὶ τῷ δήμῳ τῶν πολιτευμάτων, οὐθὲν ὑμῖν ἐνθένδε φύσεται κακόν, ἀλλ᾽ ὁ πλέον ἔχειν τῶν ἄλλων ἀξιῶν καὶ τῆς βου-

λῆς προσεταιρισάμενος τὸν βουλόμενον συννοσεῖν καὶ συναδικεῖν· πάντα γὰρ τὰ εἰκότα χρὴ περὶ πόλεως βουλευομένους προνοεῖν· κληθεὶς ὑπὸ τῶν δημάρχων εἰς τὸ πλῆθος ὁ μέγας ἐκεῖνος καὶ σεμνὸς ἀποδώσει τῷ δήμῳ τῷ φαύλῳ καὶ ταπεινῷ λόγον ὧν πράττει τε καὶ διανοεῖται, καὶ ἂν ἀδικῶν φαίνηται δίκης ἧς ἂν ἄξιος ᾖ τεύξεται. αὐτὸν δὲ δὴ τὸν δῆμον, ἵνα μὴ τρυφᾷ τηλικαύτης ἐξουσίας γενόμενος κύριος, μηδ' ὑπὸ τῶν κακίστων ἐκδημαγωγούμενος
1443 τοῖς κρατίστοις πολεμῇ· καὶ γὰρ ἐν ὄχλῳ φιλεῖ γίνεσθαι τυραννίς· φυλάξει τε καὶ οὐδὲν ἐάσει παρανομεῖν ὁ διαφέρων φρονήσει ἀνὴρ δικτάτωρ ὑφ' ὑμῶν αἱρεθείς, ὃς αὐτοκράτορι καὶ ἀνυπευθύνῳ χρ 'μενος ἐξουσίᾳ τό τε νοσοῦν ἐξελεῖ τῆς πόλεως μέρος, καὶ τὸ μήπω διεφθαρμένον οὐκ ἐάσει κακωθῆναι, ἔθη τε καὶ νόμιμα καὶ ζηλώματα βίων τὰ κράτιστα μεθαρμοσάμενος ἀρχάς τε ἀποδείξας ἃς ἂν ἡγῆται σωφρονέστατα τ ῶν κοινῶν ἐπιτροπεύσειν· καὶ ταῦτα ἐντὸς ἓξ μηνῶν διοικησάμενος ἰδιώτης αὖθις ἔσται τὸ τιμᾶσθαι μόνον ἐκ τούτων λαβών, ἄλλο δ' οὐθέν. ταῦτ' οὖν ἐνθυμηθέντες, καὶ τὸ σχῆμα τῆς πολιτείας τοῦθ' ἡγησάμενοι κράτιστον εἶναι, μηθενὸς ἀπελαύνετε τὸν δῆμον, ἀλλ' ὥσπερ ἀρχὰς ἀποδεικνύναι τὰς καθ' ἕκαστον ἐνιαυτὸν ἡγησομένας τῆς πόλεως, καὶ νόμους τοὺς μὲν ἐπικυροῦν
1444 τοὺς δ' ἀναιρεῖν, καὶ περὶ πολέμου καὶ εἰρήνης διαγιγνώσκειν, ἃ μέγιστα καὶ κυριώτατά ἐστι τῶν ἐν τῇ πόλει διαπραττομένων, μεταδεδώκατε αὐτῷ καὶ οὐθενὸς τούτων αὐτοκράτορα πεποιήκατε τὴν βουλήν· οὕτως καὶ τῶν δικαστηρίων μεταδίδοτε, καὶ μάλιστα ὑπὲρ ὧν ἄν τις αἰτίαν ἔχῃ τὴν πόλιν ἀδικεῖν στάσιν εἰσάγων ἢ τυραννίδα κατασκευαζόμενος

ἢ περὶ προδοσίας τοῖς πολεμίοις διαλεγόμενος ἤ τοιοῦτόν τι ἄλλο κακὸν ἐπιχειρῶν πράττειν. ὅσῳ γὰρ ἂν φοβερώτερον κατασκευάσητε τὸ παραβαίνειν τοὺς νόμους καὶ τὰ ἔθη κινεῖν τοῖς ὑβρισταῖς καὶ πλεονέκταις, πολλοὺς ὀφθαλμοὺς καὶ φύλακας αὐτῶν ἀποδείξαντες, τοσούτῳ κρεῖττον ὑμῖν ἕξει τὰ κοινά.

LVII. Ταῦτα καὶ τὰ παραπλήσια τούτοις εἰπὼν ἐπαύσατο. τῶν δὲ βουλευτῶν οἱ μετ' αὐτὸν ἀνιστάμενοι πλὴν ὀλίγων οἱ λοιποὶ ταύτῃ προσέθεντο τῇ γνώμῃ. καὶ ἐπειδὴ τὸ προβούλευμα ἔδει γράφεσθαι, λόγον αἰτησάμενος ὁ Μάρκιος εἶπεν· Οἷος μέν, ὦ βουλή, πρὸς τὰ κοινὰ ἐγὼ γέγονα, καὶ ὡς διὰ τὴν πρὸς ὑμᾶς εὔνοιαν εἰς τοῦτον τὸν κίνδυνον ἐλήλυθα, 1445
καὶ ὅτι παρὰ γνώμην ἀπήντηταί μοι τὰ παρ' ὑμῶν, ἅπαντες ἴστε καὶ ἔτι μᾶλλον εἴσεσθε, ὅταν τὰ κατ' ἐμὲ σχῇ τέλος. ἐπεὶ δὲ ἡ Οὐαλερίου γνώμη νικᾷ, συνενέγκοι μὲν ταῦτα ὑμῖν, καὶ γενοίμην ἐγὼ κακὸς εἰκαστὴς τῶν ἐσομένων. ἵνα δὲ καὶ ὑμεῖς οἱ τὸ προβούλευμα γράφοντες εἰδῆτε ἐφ' οἷς παραδιδόναι με τῷ δήμῳ μέλλετε, κἀγὼ μὴ ἀγνοῶ περὶ τίνος ἀγωνιοῦμαι, κελεύσατε δὴ τοὺς δημάρχους εἰπεῖν ἐναντίον ὑμῶν, τί τὸ ἀδίκημά ἐστιν ἐφ' ᾧ μέλλουσί μου κατηγορεῖν, καὶ ποταπὸν ὄνομα ἐπιγράψουσι τῇ δίκῃ.

LVIII. Ὁ μὲν δὴ ταῦτα ἔλεγε δοκῶν ἐπὶ τοῖς λόγοις οἷς εἶπεν ἐν τῇ βουλῇ τὴν δίκην ὑφέξειν, καὶ βουλόμενος ὁμολογῆσαι τοὺς δημάρχους, ὅτι ταύτης ἕνεκα τῆς αἰτίας μέλλουσιν αὐτοῦ κατηγορεῖν. οἱ δὲ δήμαρχοι βουλευσάμενοι κατὰ σφᾶς τυραννίδι ἐπιβουλεύειν αὐτὸν ᾐτιάσαντο, καὶ πρὸς ταύτην ἐκέ- 1446
λευον ἥκειν τὴν αἰτίαν ἀπολογησόμενον, οὐ βουλόμενοι τὸ ἔγκλημα εἰς μίαν αἰτίαν κατακλεῖσαι καὶ

ταύτην οὔτε ἰσχυρὰν οὔτε τῇ βουλῇ κεχαρισμένην, ἀλλ᾽ ἑαυτοῖς τε πράττοντες ἐξουσίαν ὅσα βούλονται ἐγκαλεῖν, καὶ βοήθειαν ἀφαιρήσεσθαι τοῦ Μαρκίου τὴν ἐκ τῶν συνέδρων οἰόμενοι. καὶ ὁ Μάρκιος εἶπεν· Ἀλλ᾽ ἤτοι, εἰ ἐπὶ ταύτῃ γε κριθήσομαι τῇ διαβολῇ, δίδωμι ἐμαυτὸν ἐπίδικον τοῖς δημόταις, καὶ μηδὲν ἔστω τὸ κωλῦον γράφεσθαι τὸ προβούλευμα. ἐγένετο δὲ καὶ τοῖς πλείστοις τῶν συνέδρων ἀσμένοις ἐπὶ τούτῳ γενέσθαι τῷ ἐγκλήματι τὴν δίκην κατ᾽ ἀμφότερα, καὶ ὅτι οὐκ ἔσται τὸ λέγειν ἃ φρονεῖ τις ἐν τοῖς συνέδροις ὑπαίτιον, καὶ ὅτι ῥᾳδίως ἀπολύσεται τὴν διαβολὴν ὁ ἀνὴρ βίον ἐξηλωκὼς σώφρονα καὶ ἀνεπίληπτον. γράφεται τὸ προβούλευμα μετὰ ταῦτα ὑπὲρ τῆς δίκης, καὶ χρόνος εἰς παρασκευὴν τῆς ἀπολογίας ὁρίζεται τῷ ἀνδρὶ μέχρι τῆς τρίτης ἀγορᾶς·
1447 αἱ δὲ ἀγοραὶ Ῥωμαίοις ἐγίνοντο ὡς καὶ μέχρι τῶν καθ᾽ ἡμᾶς χρόνων δι᾽ ἡμέρας ἐνάτης. ἐν δὲ ταύταις συνιόντες ἐκ τῶν ἀγρῶν εἰς τὴν πόλιν οἱ δημοτικοὶ τάς τε ἀμείψεις ἐποιοῦντο τῶν ὠνίων, καὶ τὰς δίκας παρ᾽ ἀλλήλων ἐλάμβανον, τά τε κοινὰ ὅσων ἦσαν κύριοι κατὰ τοὺς νόμους καὶ ὅσα ἡ βουλὴ ἐπιτρέψειεν αὐτοῖς ψῆφον ἀναλαμβάνοντες ἐπεκύρουν· τὰς δὲ μεταξὺ τῶν ἀγορῶν ἑπτὰ ἡμέρας αὐτουργοί τε ὄντες οἱ πολλοὶ καὶ πένητες ἐν τοῖς ἀγροῖς διέτριβον. ἐπειδὴ δὲ τὸ προβούλευμα ἔλαβον οἱ δήμαρχοι, προελθόντες εἰς τὴν ἀγορὰν συνεκάλεσαν εἰς ἐκκλησίαν τὸν δῆμον, καὶ πολλὰ ἐγκώμια τῆς βουλῆς διελθόντες καὶ τὰ δόγματα αὐτῆς ἀναγνόντες προεῖπον ἡμέραν ἐν ᾗ τὴν δίκην ἔμελλον ἐπιτελεῖν, εἰς ἣν ἅπαντας ἠξίουν ἥκειν τοὺς πολίτας ὡς ὑπὲρ τῶν μεγίστων διαγνωσομένους.

1448 LVIIII. Ὡς δὲ διεβοήθη ταῦτα, πολλὴ σπουδὴ

καὶ παράταξις ἐγίνετο τῶν τε δημοτικῶν καὶ τῶν πατρικίων· τῶν μὲν ὡς τιμωρησομένων τὸν αὐθαδέστατον, τῶν δὲ ἵνα μὴ γένοιτο ὑποχείριος τοῖς ἐχθροῖς ὡς ὑπὲρ τῆς ἀριστοκρατίας ἀγωνιζόμενος. ἐδόκει δὲ πᾶσα κινδυνεύεσθαι ἡ τοῦ βίου καὶ τῆς ἐλευθερίας δικαίωσις ἐν τῷ τότε ἀγῶνι ἀμφοτέροις. ἐπιστάσης δὲ τῆς τρίτης ἀγορᾶς, ὁ μὲν ἐκ τῶν ἀγρῶν ὄχλος ὅσος οὔπω πρότερον συνεληλυθὼς εἰς τὴν πόλιν ἕωθεν ἔτι κατεῖχε τὴν ἀγοράν· οἱ δὲ δήμαρχοι συνεκάλουν τὸ πλῆθος ἐπὶ τὴν φυλέτιν ἐκκλησίαν, χωρία τῆς ἀγορᾶς περισχοινίσαντες, ἐν οἷς ἔμελλον αἱ φυλαὶ στήσεσθαι καθ' αὑτάς. καὶ τότε πρῶτον ἐγένετο Ῥωμαίοις ἐκκλησία κατ' ἀνδρὸς ψηφοφόρος ἡ φυλετική, πολλὰ διεναντιουμένων τῶν πατρικίων, ἵνα μὴ τοῦτο γένηται, καὶ τὴν λοχῖτιν ἀξιούντων συνάγειν ἐκκλησίαν, ὥσπερ αὐτοῖς πάτριον ἦν. ἐν γὰρ τοῖς πρότερον χρόνοις, ὅτε μέλλοι ψῆφον 1449 *ἐπιφέρειν ὁ δῆμος ὑπὲρ ὁτουδήτινος ὧν ἐπιτρέψειεν ἡ βουλή, ἐκάλουν μὲν οἱ ὕπατοι τὴν λοχῖτιν ἐκκλησίαν, ἱερὰ πρότερον ἐπιτελέσαντες ἃ νόμος αὐτοῖς ἐστι, καὶ μέχρι τοῦ καθ' ἡμᾶς χρόνου τινὰ ἐξ αὐτῶν ἔτι γίνεται. συνῄει δὲ τὸ πλῆθος εἰς τὸ πρὸ τῆς πόλεως Ἄρειον πεδίον ὑπό τε λοχαγοῖς καὶ σημείοις τεταγμένον ὥσπερ ἐν πολέμῳ, ἐπέφερον δὲ τὴν ψῆφον οὐχ ἅπαντες ἅμα ἀναλαβόντες, ἀλλὰ κατὰ τοὺς ἰδίους ἕκαστοι λόχους, ὁπότε κληθεῖεν ὑπὸ τῶν ὑπάτων. ὄντων δὲ τῶν συμπάντων τριῶν καὶ ἐνενήκοντα καὶ ἑκατὸν λόχων, καὶ τούτων εἰς ἓξ διῃρημένων συμμορίας, πρώτη μὲν ἐκαλεῖτο συμμορία καὶ τὴν ψῆφον ἐπέφερεν ἡ τῶν ἐχόντων τὸ μέγιστον τίμημα τῆς οὐσίας καὶ τὴν πρώτην λαμβανόντων τάξιν ἐν πολέμοις· ἐν οἷς ἦσαν ἱππέων μὲν ὀκτωκαίδεκα λό-*

χοι, πεζῶν δὲ ὀγδοήκοντα. δευτέρα δὲ ἐψηφοφόρει
συμμορία τῶν ὑποδεεστέρων τοῖς βίοις καὶ τὴν
1450 ὑποβεβηκυῖαν τάξιν ἐν ταῖς μάχαις [μαχομένων] καὶ
ὁπλισμὸν οὐ τὸν αὐτὸν ἐχόντων τοῖς πρωτοστάταις
ἀλλ᾽ ἐλάττονα· τοῦτο δὲ τὸ πλῆθος εἰς εἴκοσι λόχους
συντεταγμένον ἦν, προσέκειντο δὲ αὐτοῖς δύο λόχοι
τεκτόνων καὶ χαλκοτύπων καὶ ὅσοι ἄλλοι πολεμικῶν
ἔργων ἦσαν χειροτέχναι. οἱ δ᾽ ἐν τῇ τρίτῃ συμμορίᾳ
καλούμενοι, λόχους μὲν ἐξεπλήρουν εἴκοσι, τίμημα δ᾽
εἶχον ἔλαττον τῶν δευτέρων, καὶ τάξιν τὴν ἐπ᾽ ἐκεί-
νοις [ἐλάττονα,] καὶ ὅπλα οὐκ ἴσα τοῖς πρὸ αὐτῶν
ἔφερον. οἱ δὲ μετὰ τούτους καλούμενοι, τίμημά τε
οὐσίας ἔλαττον εἶχον καὶ τάξιν ἐν πολέμῳ τὴν ἀσφα-
λεστέραν ἐλάμβανον καὶ ὁπλισμὸν εὐσταλέστερον
εἶχον· διῄρηντο δὲ εἰς εἴκοσι καὶ οὗτοι λόχους· συν-
ετάττοντο δὲ καὶ τούτοις δύο λόχοι βυκανιστῶν καὶ
σαλπιστῶν. πέμπτη δ᾽ ἐκαλεῖτο συμμορία τῶν ὀλί-
1451 γου πάνυ τετιμημένων ἀργυρίου, ὅπλα δὲ ἦν αὐτῶν
σαυνία καὶ σφενδόναι· οὗτοι τάξιν οὐκ εἶχον ἐν φά-
λαγγι, ἀλλὰ ψιλοὶ καὶ κοῦφοι συνεστρατεύοντο τοῖς
ὁπλίταις εἰς τριάκοντα λόχους διῃρημένοι. οἱ δ᾽
ἀπορώτατοι τῶν πολιτῶν οὐκ ἐλάττους τῶν ἄλλων
ἁπάντων ὄντες ἔσχατοι τὴν ψῆφον ἀνελάμβανον, ἕνα
μόνον ἔχοντες λόχον· οὗτοι στρατειῶν τε ἦσαν ἐλεύ-
θεροι τῶν ἐκ καταλόγου καὶ εἰσφορῶν τῶν κατὰ τι-
μήματα γινομένων ἀτελεῖς καὶ δι᾽ ἄμφω ταῦτα ἐν
ταῖς ψηφοφορίαις ἀτιμότατοι. εἰ μὲν οὖν ἐπὶ τῶν
πρώτων λόχων, οὓς οἵ τε ἱππεῖς ἐξεπλήρουν καὶ τῶν
πεζῶν οἱ την πρώτην τάξιν ἐν τοῖς πολέμοις λαμβά-
νοντες, τὸ αὐτὸ φρονήσαιεν ἑπτὰ καὶ ἐνενήκοντα
1452 λόχοι, τέλος εἶχεν ἡ ψηφοφορία, καὶ οὐκέτι τοῖς λοι-
ποῖς ἓξ καὶ ἐνενήκοντα λόχοις ἀνεδίδοτο ἡ ψῆφος·

εἰ δὲ μὴ τοῦτο γένοιτο, ἡ δευτέρα συμμορία τῶν δύο καὶ εἴκοσι λόχων ἐκαλεῖτο, καὶ ἡ τρίτη· καὶ τοῦτο συνέβαινεν ἕως οὗ τὸ αὐτὸ φρονήσωσιν ἑπτὰ καὶ ἐνενήκοντα λόχοι. καὶ τὰ μὲν πολλὰ τῶν ἀγωνισμάτων ἐπὶ τῶν πρώτων κλήσεων τέλος ἐλάμβανεν, ὥστε μηδὲν ἔτι δεῖν τῶν ἐσχάτων. σπανίως δέ που πρᾶγμα οὕτως ἐνδοιαζόμενον ἐνέπιπτεν, ὥστε μέχρι τῆς ἐσχάτης ψήφου τῆς τῶν ἀπορωτάτων προελθεῖν· καὶ ἦν ὥσπερ τέρας τοῦτο σχισθέντων δίχα τῶν προτέρων δύο καὶ ἐνενήκοντα καὶ ἑκατὸν λόχων, τὴν τελευταίαν ψῆφον ἐπενεχθεῖσαν ἐκείναις αἰτίαν γενέσθαι τῆς ἐπὶ θάτερα ῥοπῆς. οἱ μὲν οὖν συναγωνιζόμενοι Μαρκίῳ ταύτην ἠξίουν καλεῖν τὴν ἀπὸ τῶν τιμημάτων ἐκκλησίαν, ὑπολαμβάνοντες τάχα μὲν ἐπὶ τῆς πρώτης κλήσεως ὑπὸ τῶν ὀκτὼ καὶ ἐνενήκοντα λόχων ἀπολυθήσεσθαι τὸν ἄνδρα· εἰ δὲ μή γε ὑπὸ τῆς δευτέρας ἢ τρίτης. οἱ 1453
δὲ δήμαρχοι ταῦτα ὑφορώμενοι καὶ αὐτοί, τὴν φυλετικὴν ἐκκλησίαν ᾤοντο συνάγειν δεῖν καὶ τοῦ ἀγῶνος ἐκείνην ποιῆσαι κυρίαν· ἵνα μήτε οἱ πένητες τῶν πλουσίων μειονεκτῶσι, μήτε οἱ ψιλοὶ τῶν ὁπλιτῶν ἀτιμοτέραν χώραν ἔχωσι, μήτε ἀπερριμμένον εἰς τὰς ἐσχάτας κλήσεις τὸ δημοτικὸν πλῆθος ἀποκλείηται τῶν ἴσων [ψήφων], ἰσόψηφοι δὲ καὶ ὁμότιμοι πάντες ἀλλήλοις γενόμενοι μιᾷ κλήσει τὴν ψῆφον ἐπενέγκωσι κατὰ φυλάς. καὶ ἐδόκουν δικαιότερα οὗτοι τῶν ἑτέρων ἀξιοῦν, δημοτικὸν οἰόμενοι δεῖν, ἀλλ' οὐκ ὀλιγαρχικὸν εἶναι τὸ τοῦ δήμου δικαστήριον, καὶ τὴν περὶ τῶν ἀδικούντων τὸ κοινὸν διάγνωσιν ἁπάντων εἶναι κοινήν.

LX. Συγχωρηθέντος δὲ αὐτοῖς καὶ τούτου μόγις ὑπὸ τῶν πατρικίων, ἐπειδὴ τὴν δίκην ἐχρῆν λέ-

γεσθαι, πρῶτος ἀνέβη Μηνύκιος ἅτερος τῶν ὑπά-
των καὶ ἔλεξεν, οὓς ἐπέστειλεν αὐτῷ λόγους ἡ βου-
λή· πρῶτον μὲν ἁπάσας τὰς εὐεργεσίας ὑπομιμνή-
1454 σκων ὅσας ἦν εἰληφὼς ὁ δῆμος παρὰ τῶν πατρικίων·
ἔπειτα ἀξιῶν ἀντὶ πολλῶν καὶ καλῶν ἔργων μίαν ἀπο-
δοθῆναι παρὰ τοῦ δήμου δεομένοις σφίσιν ἀναγκαίαν
χάριν ἐπὶ τῷ κοινῷ τῆς πόλεως ἀγαθῷ. πρὸς δὲ τούτοις
ἐπαινῶν μὲν ὁμόνοιαν καὶ εἰρήνην, καὶ ὅσης εὐδαι-
μονίας ἑκάτερον τούτων αἴτιόν ἐστι ταῖς πόλεσιν
ἐπιλεγόμενος, κατηγορῶν δὲ διχοστασίας καὶ πολέ-
μων ἐμφυλίων, ἐξ ὧν πόλεις αὐτάνδρους ἀπέφαινεν
ἀνῃρῆσθαι καὶ ἔθνη ὅλα διολωλέναι· παρακαλῶν δὲ
μὴ τὰ χείρω αἱρεῖσθαι πρὸ τῶν κρειττόνων ὀργῇ
ἐπιτρέψαντας, ἀλλὰ ἐκ λογισμοῦ σώφρονος τὰ μέλ-
λοντα ὁρᾶν, μηδὲ τοῖς κακίστοις τῶν πολιτῶν χρῆ-
σθαι συμβούλοις περὶ τῶν μεγίστων βουλευομένους,
ἀλλὰ τοῖς κρατίστοις σφίσιν εἶναι δοκοῦσιν, ὑφ' ὧν
ᾔδεσαν ἐν εἰρήνῃ τε καὶ κατὰ πολέμους πολλὰ ὠφε-
λημένην τὴν πατρίδα, οἷς οὐκ ἂν δικαιώσωσιν ὡς
μεταβεβλημένοις τὴν φύσιν ἀπιστεῖν. ἓν δὲ κεφά-
1455 λαιον ἦν ἁπάντων τῶν λόγων, μηδεμίαν αὐτοὺς
ἐπενεγκεῖν κατὰ τοῦ Μαρκίου ψῆφον, ἀλλὰ μάλιστα
μὲν δι' αὐτὸν ἀφεῖναι τῆς δίκης τὸν ἄνδρα, ἀναμι-
μνησκομένους οἷος εἰς τὰ κοινὰ ἐγένετο καὶ ὅσους
κατώρθωσεν ὑπὲρ τῆς κοινῆς ἐλευθερίας τε καὶ ἡγε-
μονίας πολέμους, καὶ ὡς οὔτε ὅσια οὔτε δίκαια οὔτε
προσήκοντα σφίσι ποιήσουσι, λόγων μὲν αὐτῷ μνη-
σικακοῦντες φαύλων, ἔργων δὲ ἀχαριστοῦντες καλῶν.
εἶναι δὲ καὶ τὸν καιρὸν τῆς ἀφέσεως καλόν, ὅτε γε
αὐτὸς ἥκει παρέχων τὸ σῶμα τοῖς διαφόροις καὶ
στέρξων ὅ τι ἂν ἐκεῖνοι περὶ αὐτοῦ διαγνῶσιν. εἰ
δὲ οὐχ οἷοί τέ εἰσι διαλύσασθαι πρὸς ἐκεῖνον, ἀλλὰ

χαλεπῶς καὶ ἀπαραιτήτως ἔχουσιν, ἐνθυμηθέντα ὅτι ἡ βουλὴ δεησομένη περὶ αὐτοῦ πάρεισιν, ἄνδρες οἱ κράτιστοι τῆς πόλεως τριακόσιοι, παθεῖν τι καὶ ἐπικλασθῆναι τὰς γνώμας, καὶ μὴ δι' ἑνὸς ἐχθροῦ τιμωρίαν τοσούτων δέησιν ἀπώσασθαι φίλων, ἀλλὰ πολλῶν καὶ ἀγαθῶν ἀνδρῶν χάριτι δίκην ἀνδρὸς ἑνὸς ὑπεριδεῖν. Ταῦτα καὶ παραπλήσια τούτοις εἰπὼν 14 τελευταῖον ἐκεῖνον ἐπέθηκε τὸν λόγον, ὅτι ψήφου μὲν ἐπενεχθείσης ἐὰν ἀπολύσωσι τὸν ἄνδρα, διὰ τὸ μηδὲν ἀδικεῖσθαι τὸν δῆμον ὑπ' αὐτοῦ δόξουσιν ἀφεικέναι· ἐὰν δὲ κωλύσωσιν ἐπιτελεσθῆναι τὴν δίκην τοῖς δεομένοις ὑπὲρ αὐτοῦ φανήσονται κεχαρισμένοι.

LXI. Παυσαμένου δὲ τοῦ Μηνυκίου, παρελθὼν ὁ δήμαρχος Σικίννιος, οὔτε αὐτὸς ἔφη προδώσειν τὴν ἐλευθερίαν τῶν δημοτῶν οὔτε τοῖς προδιδοῦσιν ἐπιτρέψειν ἑκών· ἀλλ' εἰ τῷ ὄντι παρέχουσιν οἱ πατρίκιοι τὸν ἄνδρα ἐπὶ δίκην τοῖς δημοτικοῖς, ἀναδώσειν περὶ αὐτοῦ ψῆφον, ἄλλο δὲ ποιήσειν παρὰ ταῦτα οὐδέν. μετὰ ταῦτα παρελθὼν ὁ Μηνύκιος εἶπεν· Ἐπειδὴ πάντως, ὦ δήμαρχοι, ψῆφον ἐπενεχθῆναι περὶ τοῦ ἀνδρὸς προθυμεῖσθε, μηθὲν ἔξω τοῦ ἐγκλήματος κατηγορεῖτε· ἀλλ' ἐπειδὴ τυραννίδι αὐτὸν ἐπιχειρεῖν εἰσηγγείλατε, τοῦτο διδάσκετε καὶ περὶ 14 τούτου τὰς πίστεις φέρετε. λόγων δέ, ὧν αὐτὸν αἰτιᾶσθε κατὰ τοῦ δήμου πρὸς τὴν βουλὴν εἰπεῖν, μήτε μέμνησθε μήτε κατηγορεῖτε. ἀφεῖσθαι γὰρ αὐτὸν ἐψηφίσατο ταύτης τῆς αἰτίας τὸ συνέδριον, καὶ ἐπὶ ῥητοῖς ἥκειν εἰς τὸν δῆμον ἐδικαίωσε. καὶ μετὰ τοῦτο ἀνέγνω τὸ προβούλευμα. ὁ μὲν δὴ ταῦτ' εἰπών τε καὶ ἐπιμαρτυράμενος κατέβη. τῶν δὲ δημάρχων πρῶτος μὲν διέθετο τὴν κατηγορίαν Σικίννιος ἐκ πολλῆς ἐπιμελείας καὶ παρασκευῆς, πάνθ' ὅσα πράτ-

των ἢ λέγων ὁ ἀνὴρ κατὰ τοῦ δήμου διετέλεσεν εἰς κατασκευὴν τυραννίδος ἀναφέρων· ἔπειτα μετ' ἐκεῖνον οἱ δυνατώτατοι τῶν δημάρχων εἰπεῖν.

LXII. Ὡς δὲ παρέλαβεν ὁ Μάρκιος τὸν λόγον, ἀρξάμενος ἄνωθεν ἀπὸ τῆς πρώτης ἡλικίας, διῆλθεν ὅσας ἐστρατευμένος ἦν ὑπὲρ τῆς πόλεως στρατείας, καὶ ὅσους εἰληφὼς ἐπινικίους παρὰ τῶν στρατηγῶν στεφάνους, πολεμίων τε τοὺς ληφθέντας 1458 αἰχμαλώτους ὑπ' αὐτοῦ καὶ πολιτῶν τοὺς διασωθέντας ἐν τοῖς ἀγῶσι· καὶ παρ' ἕκαστον τῶν λεγομένων τά τε ἀριστεῖα ἐπεδείκνυτο καὶ τοὺς στρατηγοὺς μάρτυρας παρείχετο καὶ τῶν πολιτῶν τοὺς διασωθέντας ἐξ ὀνόματος ἐκάλει. οἱ δὲ παρῆσαν ὀλοφυρόμενοι καὶ δεόμενοι τῶν πολιτῶν, μὴ τὸν αἴτιον σφίσι τῆς σωτηρίας ὡς πολέμιον ἀπολέσαι, μίαν τε ἀντὶ πολλῶν ψυχὴν αἰτούμενοι καὶ παραδιδόντες ἑαυτοὺς ἀντ' ἐκείνου χρῆσθαι ὅ τι βούλονται. ἦσαν δὲ οἱ πλείους αὐτῶν ἐκ τοῦ δημοτικοῦ γένους καὶ πολλὰ τῷ κοινῷ χρήσιμοι· ὧν τάς τε ὄψεις καὶ τὰς δεήσεις δι' αἰσχύνης ὁ δῆμος λαμβάνων εἰς οἴκτους καὶ δάκρυα ἐτράπετο. ὡς δὲ καὶ τὴν ἐσθῆτα ὁ Μάρκιος περιρρηξάμενος ἐπεδείξατο τὰ στέρνα τραυμάτων μεστὰ καὶ πᾶν [τὸ] ἄλλο μέρος τοῦ σώματος ἀνάπλεων τῶν πληγῶν, καὶ ἐπύθετο, εἰ τῶν αὐτῶν 1459 ἀνθρώπων ἔργα εἶναι νομίζουσι σώζειν μὲν ἐκ τῶν πολέμων τοὺς πολίτας, ἀπολλύναι δὲ τοὺς σωθέντας ἐν εἰρήνῃ· καὶ εἰ τυραννίδα κατασκευαζόμενός τις τὸ δημοτικὸν ἐλαύνει μέρος ἐκ πόλεως, ὑφ' οὗ μάλιστα αὔξεταί τε καὶ τρέφεται τυραννίς· ἔτι δ' αὐτοῦ λέγοντος, ὅσον μὲν ἦν τοῦ δημοτικοῦ μέρους ἐπιεικὲς καὶ φιλόχρηστον ἀπολύειν ἐβόα τὸν ἄνδρα, καὶ δι' αἰσχύνης ἐλάμβανεν, εἰ καὶ δίκην ὑπεῖχε

[τὴν] ἀρχὴν περὶ τοιαύτης αἰτίας ἀνὴρ τοσαυτάκις ὑπεριδὼν τῆς ἑαυτοῦ ψυχῆς ἕνεκα τῆς ἁπάντων φυλακῆς. ὅσοι δ' ἦσαν φύσει βάσκανοι καὶ μισόχρηστοι καὶ πρὸς πᾶσαν εὐκίνητοι στάσιν, ἤχθοντο μὲν ἀπολύειν τὸν ἄνδρα μέλλοντες, οὐκ εἶχον δ' ὅ τι ἂν ἄλλο ποιῶσι διὰ τὸ μηδεμίαν εὑρίσκειν ἀφορμὴν τυραννίδος [ἢ] ἐπιθέσεως φαινομένην, ὑπὲρ ἧς τὰς ψήφους ἀνειλήφεσαν.

LXIII. Τοῦτο καταμαθὼν ὁ Δέκιος ἐκεῖνος, ὁ 1460 καὶ τοὺς ἐν τῇ βουλῇ ποιησάμενος λόγους καὶ τὸ προβούλευμα περὶ τῆς δίκης γραφῆναι παρασκευάσας, ἀνέστη, καὶ σιωπὴν γενέσθαι κελεύσας ἔλεξεν· Ἐπειδή, ὦ δημόται, τῶν ἐν τῇ βουλῇ λεχθέντων ὑπὸ Μαρκίου λόγων, καὶ τῶν διὰ τούτους ἀκολουθησάντων ἔργων βιαίων τε καὶ ὑπερηφάνων ἀπολύουσιν αὐτὸν οἱ πατρίκιοι, καὶ οὐχ' ἡμῖν ἐπιτρέπουσι κατηγορεῖν, ἀκούσατε οἷον ὑμῖν ἔργον ἕτερον ἔξω τῶν λόγων ὁ γενναῖος οὗτος ἀνὴρ τυγχάνει διαπεπραγμένος, ὡς αὔθαδες καὶ τυραννικόν, καὶ οἷον ὑμῶν κατέλυσε νόμον αὐτὸς ἰδιώτης ὢν μάθετε. ἴστε δήπου πάντες, ὅτι τὰ ἐκ τῶν πολέμων λάφυρα ὅσων ἂν ἡμῖν ὑπάρχῃ τυχεῖν δι' ἀρετὴν δημόσια εἶναι κελεύει ὁ νόμος, καὶ τούτων οὐχ ὅπως τις ἰδιώτης γίνεται κύριος, ἀλλ' οὐδ' αὐτὸς ὁ τῆς δυνάμεως ἡγεμών· ὁ δὲ ταμίας αὐτὰ παραλαβὼν ἀπεμπολεῖ καὶ εἰς τὸ δημόσιον ἀναφέρει τὰ χρήματα· καὶ τοῦτον τὸν 1461 νόμον ἐξ οὗ τήνδε οἰκοῦμεν τὴν πόλιν οὐχ ὅπως κατέλυσέ τις, ἀλλ' οὐδ' ᾐτιάσατο μὴ οὐχὶ καλῶς ἔχειν· ἀλλ' οὗτος μόνος Μάρκιος ὑπεριδὼν αὐτοῦ κειμένου καὶ κυρίου ὄντος, πρῶτος καὶ μόνος ἠξίωσε σφετερίσασθαι τὰ κοινὰ ἡμῶν, ὦ δημόται, λάφυρα, πέρυσι καὶ οὐ πάλαι. ποιησαμένων γὰρ ὑμῶν καταδρομὴν

τῆς Ἀντιατῶν γῆς, καὶ πολλὰ μὲν σώματα, πολλὰ δὲ
βοσκήματα, πολὺν δὲ σῖτον, πολλὰ δὲ ἄλλα χρήματα
περιβαλομένων, οὔτε τῷ ταμίᾳ ταῦτ' ἀπέδειξεν οὔτ'
αὐτὸς ἀποδόμενος εἰς τὸ δημόσιον ἀνήνεγκε τὸ ἀργύ-
ριον, ἀλλὰ διένειμε καὶ κατεχαρίσατο τοῖς ἑαυτοῦ
φίλοις ἅπασαν τὴν λείαν· τοῦτο δὴ τυραννίδος τε-
κμήριον εἶναι φημὶ τὸ ἔργον· πῶς γὰρ οὔ; ὃς τοὺς
ἑαυτοῦ κόλακάς τε καὶ σωματοφύλακας καὶ τῆς μελ-
λούσης τυραννίδος συνεργοὺς ἐκ τῶν δημοσίων εὐηρ-
1462 γέτει χρημάτων· καὶ νόμου κατάλυσιν εἶναι φανερὰν
ταύτην λέγω. δυεῖν δὴ θάτερον ἀποφηνάτω παρελ-
θὼν Μάρκιος, ἢ ὡς οὐ διένειμε τὰ λάφυρα τοῖς ἑαυ-
τοῦ φίλοις, ἃ ἔλαβεν ἐκ τῆς πολεμίας, ἢ ὡς ταῦτα
ποιῶν οὐ καταλύει τοὺς νόμους· ὧν οὐδέτερον ἕξει
πρὸς ὑμᾶς εἰπεῖν. αὐτοὶ γὰρ ἀμφότερα ἴστε, καὶ τὸν
νόμον καὶ τὸ ἔργον, καὶ οὐκ ἔνεσθ' ὑμῖν ἀποψηφι-
σαμένοις αὐτοῦ τὰ δίκαια καὶ τὰ εὔορκα δοκεῖν
ἐγνωκέναι. ἐάσας δὴ τοὺς στεφάνους καὶ τὰ ἀριστεῖα
καὶ τὰ τραύματα καὶ τὴν ἄλλην τερατείαν πρὸς
ταῦτα λέγε, ὦ Μάρκιε· παραδίδωμι γὰρ ἤδη σοὶ
τὸν λόγον.

LXIIII. Τοῦτο τὸ κατηγόρημα πολλὴν ἐποίησε
τὴν ἐπὶ θάτερα μεταβολήν. οἱ μὲν γὰρ ἐπιεικέστε-
ροί τε καὶ σπουδάζοντες ὑπὲρ ἀφέσεως τοῦ ἀνδρὸς
μαλακώτεροι τούτων ἀκούσαντες ἐγένοντο· τὸ δὲ κα-
κόηθες ἅπαν, ὃ τοῦ δήμου πλεῖστον μέρος ἦν, ἐκ
παντὸς ἀπολέσαι τὸν ἄνδρα δήπου προθυμούμενον,
1463 ἔτι μᾶλλον εἰς ταῦτα ἐπερρώσθη μεγάλης ἀφορμῆς
καὶ φανερᾶς λαβόμενον. ἦν γὰρ ἀληθὴς ἡ τῶν λαφύ-
ρων διάδοσις, οὐ μὴν ἐκ προαιρέσεώς γε πονηρᾶς
καὶ ἐπὶ κατασκευῇ τυραννίδος, ὡς ὁ Δέκιος ᾐτιᾶτο,
γενομένη, ἀλλ' ἀπὸ παντὸς τοῦ βελτίστου καὶ ἐπαν-

ὀρθώσεως ἕνεκα τῶν κατεχόντων τὰ κοινὰ κακῶν.
στασιάζοντος γὰρ ἔτι καὶ διεστηκότος ἀπὸ τῶν πα-
τρικίων τοῦ πλήθους τότε καταφρονήσαντες οἱ
πολέμιοι καταδρομὰς τῆς χώρας ἐποιοῦντο καὶ λεη-
λασίας συνεχεῖς· καὶ ὁπότε δόξειε τῇ βουλῇ τὴν κω-
λύσουσαν ταῦτα δύναμιν ἐξελθεῖν, οὐδεὶς ἐξῄει τῶν
δημοτῶν, ἀλλ' ἐπέχαιρόν τε καὶ περιεώρων τὰ γινό-
μενα· ἡ δὲ τῶν πατρικίων χεὶρ οὐκ ἦν καθ' ἑαυτὴν
ἀξιόμαχος. τοῦτο καταμαθὼν ὁ Μάρκιος ὑπέσχετο
τοῖς ὑπάτοις, ἐὰν ἐπιτρέψωσιν αὐτῷ τὴν ἡγεμονίαν,
στρατιὰν ἐξάγειν ἑκούσιον ἐπὶ τοὺς πολεμίους καὶ
δίκην λήψεσθαι παρ' αὐτῶν ἐν τάχει. λαβὼν δὲ τὴν
ἐξουσίαν συνεκάλει τούς τε πελάτας καὶ τοὺς φίλους
καὶ τῶν ἄλλων πολιτῶν οἷς ἦν βουλομένοις ἀπολαῦ- 1464
σαί τι τῆς τοῦ στρατηγοῦ τύχης κατὰ τὰ πολέμια καὶ
ἀρετῆς. ὡς δὲ αὐτῷ χεὶρ ἀξιόμαχος ἐδόκει συνεληλυ-
θέναι, προῆγεν ἐπὶ τοὺς πολεμίους οὐθέν πω προει-
δότας. ἐμβαλὼν δ' εἰς χώραν πολλῶν ἀγαθῶν
μεστήν, γενόμενος ἀφθόνου λείας κύριος ἐφῆκε τοῖς
στρατιώταις ἅπαντα τὰ ληφθέντα διανείμασθαι, ἵν'
οἱ μὲν συναράμενοι τοῦ ἔργου τὸν τῶν πόνων καρπὸν
κομισάμενοι προθύμως ἐπὶ τὰς ἄλλας στρατείας
ἀπαντῶσιν· οἱ δὲ ἀποκνήσαντες ἐνθυμηθέντες ὅσων
ἀγαθῶν αὐτοῖς ἐξὸν μεταλαβεῖν διὰ τὸ στασιάζον
ἀπεκωλύθησαν εἰς τὰς λοιπὰς ἐξόδους γένωνται
φρονιμώτεροι. διάνοια μὲν τοῦ ἀνδρὸς ἥδε ἐγένετο
περὶ τὸ ἔργον· χόλῳ δὲ ὑπούλῳ καὶ φθόνῳ δυσ-
μενῶν αὐτὴ καθ' αὑτὴν ἡ πρᾶξις ἐξεταζομένη δη-
μαγωγία τις ἐφαίνετο εἶναι καὶ δεκασμὸς τυραν-
νικός. ὥστε βοῆς καὶ θορύβου πᾶσα ἦν ἀνάπλεως ἡ 1465
ἀγορά, καὶ οὔτε ὁ Μάρκιος πρὸς ταῦτα εἶχεν ὅ τι
ἀπολογήσαιτο, οὔτε ὁ ὕπατος οὔτε ἄλλος οὐδείς, οἷα

δὴ παραδόξου καὶ ἀπροσδοκήτου φανείσης ἐπὶ σφίσι
τῆς αἰτίας. ἐπειδὴ δὲ οὐδεὶς οὐκέτι ἀπελογεῖτο, ἀνέ-
δωκαν οἱ δήμαρχοι τὴν ψῆφον ταῖς φυλαῖς τίμημα
ἐπιγράψαντες τῇ δίκῃ φυγὴν ἀίδιον, κατὰ δέος
οἶμαι τοῦ μὴ ἂν ἁλῶναι τὸν ἄνδρα θανάτου αὐτῷ
τιμησάντων. ὡς δ' ἐπεψήφισαν ἅπαντες, διαριθμου-
μένων τῶν ψήφων οὐ μέγα τὸ διάλλαγμα ἐφάνη.
1466 μιᾶς γὰρ καὶ εἴκοσι τότε φυλῶν οὐσῶν αἷς ἡ ψῆ-
φος ἀνεδόθη, τὰς ἀπολυούσας φυλὰς ἔσχεν ὁ Μάρ-
1467 κιος ἐννέα· ὥστε εἰ δύο προσῆλθον αὐτῷ φυλαί,
διὰ τὴν ἰσοψηφίαν ἀπελύετ' ἂν ὥσπερ ὁ νόμος
ἠξίου.

LXV. *Αὕτη πρώτη κατ' ἀνδρὸς πατρικίου πρό-
κλησις εἰς τὸν δῆμον ἐγένετο ἐπὶ δίκῃ. καὶ ἀπ' ἐκεί-
νου τοῦ χρόνου τοῖς ὕστερον λαμβάνουσι τὴν τοῦ
δήμου προστασίαν ἔθος κατέστη καλεῖν οὓς δόξειε
τῶν πολιτῶν δίκην ὑφέξοντας ἐπὶ τοῦ δήμου· καὶ
ἐνθένδε ἀρξάμενος ὁ δῆμος ἤρθη μέγας, ἡ δὲ ἀρι-
στοκρατία πολλὰ τοῦ ἀρχαίου ἀξιώματος ἀπέβαλε,
1468 βουλῆς τε μετέχειν ἐπιτρέπουσα τοῖς δημοτικοῖς, καὶ
ἀρχὰς μετιέναι συγχωροῦσα, ἱερῶν τε προστασίας
λαμβάνειν οὐ κωλύουσα, καὶ ὅσα ἄλλα τιμιώτατα ἦν
καὶ ἴδια τῶν πατρικίων μόνων ἅπασι κοινωσαμένη,
τὰ μὲν ὑπ' ἀνάγκης τε καὶ ἄκουσα, τὰ δ' ἐκ προνοίας
τε καὶ σοφίας, ὑπὲρ ὧν κατὰ τὸν οἰκεῖον καιρὸν
ἐρῶ. τοῦτο μέντοι τὸ ἔθος, λέγω δὲ τὸ καλεῖσθαι
τοὺς ἐν τῇ πόλει δυναστεύοντας ἐπὶ δίκην, ἧς
ὁ δῆμος ἐγίνετο κύριος, πολλὰς ἂν παράσχοι
λόγων ἀφορμὰς τοῖς ἐπαινεῖν αὐτὸ βουλομένοις ἢ
ψέγειν. πολλοὶ μὲν γὰρ ἤδη καλοὶ καὶ ἀγαθοὶ ἄν-
δρες οὐκ ἄξια τῆς ἀρετῆς ἔπαθον, αἰσχρῶς καὶ κα-
κῶς τὰς ψυχὰς ὑπὸ τῶν δημάρχων ἀφαιρεθέντες·*

πολλοὶ δὲ αὐθάδεις καὶ τυραννικοὶ τοῖς τρόποις λό-
γον ἀναγκασθέντες ὑποσχεῖν τοῦ βίου καὶ τῶν ἐπι-
τηδευμάτων δίκας τὰς προσηκούσας ἔδοσαν. ὁπότε
μὲν οὖν ἀπὸ τοῦ κρατίστου γένοιντο αἱ διαγνώσεις,
καὶ καθαιρεθείη τὰ τῶν μεγάλων αὐχήματα σὺν δί-
κῃ, μέγα τι καὶ θαυμαστὸν ἐφαίνετο εἶναι χρῆμα,
καὶ ὑπὸ πάντων ἐπῃνεῖτο· ὁπότε δὲ ἀρετὴ φθονη- 1469
θεῖσα ἀνδρὸς τὰ κοινὰ εὖ διοικοῦντος ἀδίκως ἀναι-
ρεθείη, δεινόν τι τοῖς ἄλλοις κατεφαίνετο, καὶ οἱ τοῦ
ἔθους ἄρξαντες κατηγοροῦντο. πολλάκις τε βουλευ-
σάμενοι οἱ Ῥωμαῖοι, πότερα χρὴ καταλῦσαι αὐτὸ ἢ
φυλάττειν οἷον παρὰ τῶν προγόνων παρέλαβον, οὐ-
θὲν ἐπέθηκαν τῇ βουλῇ πέρας. εἰ δὲ δεῖ καὶ αὐτὸν
[ἐμὲ] ἀποφήνασθαι περὶ τηλικούτων πραγμάτων
γνώμην, ἐμοὶ δοκεῖ τὸ μὲν ἔθος αὐτὸ καθ' ἑαυτὸ
ἐξεταζόμενον χρήσιμον εἶναι καὶ πόλει τῇ Ῥωμαίων
ἀναγκαιότατον, κρεῖττον δὲ καὶ χεῖρον γίνεσθαι παρὰ
τοὺς τῶν δημάρχων τρόπους. ὅταν μὲν γὰρ τύχωσι
τῆς ἐξουσίας ταύτης ἄνδρες δίκαιοι καὶ σώφρονες
καὶ τὰ κοινὰ ἀναγκαιότερα τῶν ἰδίων τιθέμενοι, ὁ
μὲν ἀδικῶν τὰ κοινὰ τιμωρίαν δοὺς ἣν προσῆκε
πολὺ δέος τοῖς ὅμοια παρεσκευασμένοις δρᾶν ἐνειρ-
γάσατο· ὁ δὲ ἀγαθὸς καὶ ἀπὸ τοῦ κρατίστου πρὸς τὰ
κοινὰ παριὼν οὔτε δίκην ἀσχήμονα ὑπέσχεν οὔτ' εἰς
αἰτίας ἀλλοτρίους τῶν ἐπιτηδευμάτων κατέστη. ὅταν
δὲ πονηροὶ καὶ ἀκόλαστοι καὶ φιλοκερδεῖς ἄνθρωποι 1470
τηλικαύτης ἐξουσίας τύχωσι, τἀναντία τούτων γί-
νεται. ὥστε οὐ τὸ ἔθος ἐπανορθοῦσθαι προσῆκεν ὡς
ἡμαρτημένον, ἀλλὰ σκοπεῖν ὅπως ἄνδρες καλοὶ καὶ
ἀγαθοὶ τοῦ δήμου γενήσονται προστάται καὶ μὴ τοῖς
τυχοῦσι τὰ μέγιστα εἰκῇ ἐπιτραπήσεται.

LXVI. Ἡ μὲν δὴ πρώτη Ῥωμαίοις ἐμπεσοῦσα

μετὰ τὴν ἐκβολὴν τῶν βασιλέων στάσις ἔσχε τοιαύτας αἰτίας καὶ εἰς τοῦτο κατέσκηψε τὸ τέλος· ἐμήκυνα δὲ τὸν ὑπὲρ αὐτῶν λόγον τοῦ μή τινα θαυμάσαι, πῶς ὑπέμειναν οἱ πατρίκιοι τηλικαύτης ἐξουσίας ποιῆσαι τὸν δῆμον κύριον, οὔτε σφαγῆς τῶν ἀρίστων ἀνδρῶν γενομένης οὔτε φυγῆς, οἷον ἐν ἄλλαις πολλαῖς ἐγένετο πόλεσι. ποθεῖ γὰρ ἕκαστος ἐπὶ τοῖς παραδόξοις ἀκούσμασι τὴν αἰτίαν μαθεῖν καὶ τὸ πιστὸν ἐν ταύτῃ τίθεται μόνῃ. ἐλογιζόμην οὖν ὅτι μοι πολλοῦ καὶ τοῦ παντὸς δεήσει πιστὸς εἶναι ὁ λόγος, εἰ τοσοῦτον ἔφην μόνον, ὅτι παρῆκαν οἱ πα-
1471 τρίκιοι τοῖς δημοτικοῖς τὴν ἑαυτῶν δυναστείαν, καὶ ἐξὸν αὐτοῖς ἐν ἀριστοκρατίᾳ πολιτεύεσθαι τὸν δῆμον ἐποίησαν τῶν μεγίστων κύριον, δι' ἃς δὲ συνεχωρήθη ταῦτ' αἰτίας παρέλιπον· διὰ τοῦτο ἐπεξῆλθον ἁπάσας. καὶ ἐπειδὴ οὐχ ὅπλοις ἀλλήλους βιασάμενοι καὶ προσαναγκάσαντες, ἀλλὰ λόγοις πείσαντες μεθήρμοσαν, παντὸς μάλιστα ἀναγκαῖον ἡγησάμην εἶναι τοὺς λόγους αὐτῶν διεξελθεῖν, οἷς τότε οἱ δυναστεύσαντες ἐν ἑκατέροις ἐχρήσαντο. θαυμάσαιμι δ' ἂν εἴ τινες τὰς ἐν τοῖς πολέμοις πράξεις ἀκριβῶς οἴονται δεῖν ἀναγράφειν, καὶ περὶ μίαν ἔστιν ὅτε μάχην πολλοὺς ἀναλίσκουσι λόγους, τόπων τε φύσεις καὶ ὁπλισμῶν ἰδιότητας καὶ τάξεων τρόπους καὶ στρατηγῶν παρακλήσεις καὶ τὰ ἄλλα διεξιόντες ὅσα τῆς νίκης αἴτια τοῖς ἑτέροις ἐγένετο· πολιτικὰς δὲ κινήσεις καὶ στάσεις ἀναγράφοντες οὐκ οἴονται δεῖν ἀπαγγέλλειν
1472 τοὺς λόγους, δι' ὧν αἱ παράδοξοι καὶ θαυμασταὶ πράξεις ἐπετελέσθησαν. εἰ γάρ τι καὶ ἄλλο τῆς Ῥωμαίων πόλεως μέγα ἐγκώμιόν ἐστι καὶ ζηλοῦσθαι ὑπὸ πάντων ἀνθρώπων ἄξιον, κἀκεῖνο ἐγένετο κατ' ἐμὴν δόξαν τὸ ἔργον, μᾶλλον δὲ ὑπὲρ ἅπαντα πολλὰ καὶ

θαυμαστὰ ὄντα λαμπρότατον, τὸ μήτε τοὺς δημοτικοὺς καταφρονήσαντας τῶν πατρικίων ἐπιχειρῆσαι αὐτοῖς, καὶ πολὺν ἐργασαμένους τῶν κρατίστων φόνον ἅπαντα τἀκείνων παραλαβεῖν, μήτε τοὺς ἐν τοῖς ἀξιώμασιν ἢ διὰ σφῶν αὐτῶν ἢ ξενικαῖς ἐπικουρίαις χρησαμένους διαφθεῖραι τὸ δημοτικὸν ἅπαν καὶ τὸ λοιπὸν οἰκεῖν ἀδεῶς τὴν πόλιν· ἀλλ' ὥσπερ ἀδελφοὺς ἀδελφοῖς ἢ παῖδας γονεῦσιν ἐν οἰκίᾳ σώφρονι περὶ τῶν ἴσων καὶ δικαίων διαλεγομένους πειθοῖ καὶ λόγῳ διαλύεσθαι τὰ νείκη, ἀνήκεστον δὲ ἢ ἀνόσιον ἔργον μηθὲν ὑπομεῖναι δρᾶσαι κατ' ἀλλήλων· οἷα Κερκυραῖοί τε κατὰ τὴν στάσιν εἰργάσαντο καὶ Ἀργεῖοι καὶ Μιλήσιοι καὶ Σικελία πᾶσα καὶ συχναὶ ἄλλαι πόλεις. ἐγὼ μὲν οὖν διὰ ταῦτα προειλόμην ἀκριβεστέραν μᾶλλον ἢ βραχυτέραν ποιήσασθαι τὴν 1473 διήγησιν· κρινέτω δ' ἕκαστος ὡς βούλεται.

LXVII. *Τότε δ' οὖν τῆς δίκης τοῦτο λαβούσης τὸ τέλος, ὁ μὲν δῆμος ἀπελύετο προσειληφὼς ἀνόητον αὔχημα καὶ καθῃρηκέναι τὴν ἀριστοκρατίαν οἰόμενος· οἱ δὲ πατρίκιοι κατηφεῖς τε καὶ ταπεινοὶ καὶ δι' αἰτίας ἔχοντες τὸν Οὐαλέριον, ὑφ' οὗ πεισθέντες ἐπέτρεψαν τῷ δήμῳ τὴν δίκην· ἥν τε οἰμωγὴ καὶ δάκρυα τῶν οἰκτειρόντων τε καὶ προπεμπόντων τὸν Μάρκιον. αὐτὸς δὲ ὁ Μάρκιος οὔτε ἀνακλαυσάμενος ὤφθη τὰς αὑτοῦ τύχας οὔτε ἀποιμώξας οὔτε ἄλλο εἰπὼν ἢ δράσας ἀνάξιον τῆς ἑαυτοῦ μεγαλοφροσύνης οὐδ' ὁτιοῦν· ἔτι δὲ μᾶλλον ἐδήλωσε τὴν γενναιότητα καὶ καρτερίαν τῆς γνώμης, ἐπειδὴ οἴκαδε ἀφικόμενος γυναῖκά τε εἶδε καὶ μητέρα καταρρηγνυμένας τοὺς πέπλους καὶ τὰ στέρνα τυπτούσας καὶ οἷα εἰκός 1474 ἐστιν ἐπὶ τοιαύταις συμφοραῖς λέγειν τὰς ἀποζευγνυμένας ἀπὸ τῶν ἀναγκαιοτάτων σφίσι θανάτοις ἢ*

φυγαῖς ἀναβοώσας. οὐθὲν γὰρ πρὸς τὰ δάκρυα καὶ τοὺς θρήνους τῶν γυναικῶν ἔπαθεν, ἀσπασάμενος δὲ αὐτὰς μόνον, καὶ παρακαλέσας γενναίως φέρειν τὰς συμφοράς, τούς τε παῖδας αὐταῖς παρακαταθέμενος· ὁ γὰρ πρεσβύτερος τῶν παίδων ἦν δέκα γεγονὼς ἔτη, ὁ δὲ νεώτερος ἔτι ὑπαγκάλιος· ἄλλο δὲ οὐθὲν οὔτε φιλοφρονησάμενος οὔτε διοικησάμενος οἷς εἰς τὴν φυγὴν χρήσεσθαι ἔμελλεν, ἐξῄει κατὰ σπουδὴν ἐπὶ τὰς πύλας, οὐθενὶ δηλώσας ὅπου τὴν ἀπαλλαγὴν ποιήσοιτο.

LXVIII. Ὀλίγαις δ' ὕστερον ἡμέραις καθῆκε μὲν ὁ τῶν ἀρχαιρεσιῶν καιρός, ὕπατοι δὲ ἀπεδεί-
1475 χθησαν ὑπὸ τοῦ δήμου Κόιντος Σουλπίκιος Καμερῖνος καὶ Σέργιος Λάρκιος Φλαύιος τὸ δεύτερον. ταραχαὶ δέ τινες ἐνέπιπτον ἐκ δειμάτων δαιμονίων τῇ πόλει συχναί· ὄψεις τε γὰρ οὐκ εἰωθυῖαι ἐφαίνοντο πολλοῖς, καὶ φωναὶ ἠκούοντο οὐδενὸς ὄντος τοῦ φθεγγομένου, γοναί τε ἀνθρώπων καὶ βοσκημάτων πολὺ ἐκ τοῦ κατὰ φύσιν ἐκβεβηκυῖαι εἰς τὸ ἄπιστόν τε καὶ τερατῶδες ἐφέροντο, χρησμοί τε ᾔδοντο ἐν πολλοῖς χωρίοις, καὶ θειασμοῖς κάτοχοι γυναῖκες οἰκτρὰς ἐμαντεύοντο καὶ δεινὰς τῇ πόλει τύχας. ἥψατο δέ τις καὶ νόσος τοῦ πλήθους λοιμικὴ καὶ πολλὴν ἐποίησε βοσκημάτων φθοράν· ἀνθρώπων μέντοι θάνατος οὐ πολὺς ἐγένετο, ἀλλ' ἄχρι νόσων τὸ δεινὸν ἐχώρησεν· τοῖς μὲν δὴ ταῦτα ἐδόκει κατὰ θεοῦ γενέσθαι γνώμην νεμεσῶντος, ὅτι τὸν ἄριστον
1476 τῶν πολιτῶν ἐξήλασαν τῆς πατρίδος, τοῖς δὲ οὐθὲν τῶν γινομένων θεοῦ ἔργον, ἀλλὰ τυχηρὰ καὶ ταῦτα καὶ τἆλλα πάντα ἀνθρώπεια εἶναι πάθη. ἔπειτα ἧκέ τις ἐπὶ τὸ συνέδριον τῆς βουλῆς ἄρρωστος ἐπὶ κλινιδίου κομιζόμενος, Τῖτος Λατῖνιος ὄνομα, πρεσβύ-

τερός τε ἀνὴρ καὶ οὐσίας ἱκανῆς κύριος, αὐτουργὸς δὲ καὶ τὸν πλείω χρόνον τοῦ βίου ζῶν ἐν ἀγρῷ. οὗτος εἰς τὴν βουλὴν ἐνεχθεὶς ἔφη δόξαι καθ' ὕπνον ἐπιστάντα τὸν Καπιτώλιον Δία λέγειν αὐτῷ· Ἴθι, Λατῖνε, καὶ λέγε τοῖς πολίταις, ὅτι μοι τῇ νεωστὶ πομπῇ τὸν ἡγούμενον ὀρχηστὴν οὐ καλὸν ἔδωκαν, ἵνα ἀναθῶνται τὰς ἑορτὰς καὶ ἐξ ἀρχῆς ἑτέρας ἐπιτελέσωσιν· οὐ γὰρ δέδεγμαι ταύτας. αὐτὸς δ' ἐκ τῶν ὕπνων ἔφη ἀναστὰς παρ' οὐδὲν ἡγήσασθαι τὸ ὄναρ, ἀλλ' ἕν τι τῶν πολλῶν καὶ ἀπατηλῶν ὑπολαβεῖν. ἔπειτα αὐτῷ πάλιν κατὰ τοὺς ὕπνους ἐπιφανὲν τὸ αὐτὸ εἴδωλον τοῦ θεοῦ χαλεπαίνειν τε καὶ ἀγανακτεῖν, ὅτι οὐκ ἀπήγγειλε πρὸς τὴν βουλὴν τὰ 1477 κελευσθέντα, καὶ ἀπειλεῖν εἰ μὴ τοῦτο δράσει διὰ ταχέων, ὅτι σὺν μεγάλῳ μαθήσεται κακῷ μὴ ὀλιγωρεῖν τῶν δαιμονίων. ἰδὼν δὲ καὶ τὸ δεύτερον ὄναρ, τὴν αὐτὴν ἔφη ποιήσασθαι περὶ αὐτοῦ δόξαν, καὶ ἅμα δι' αἰσχύνης [ἔχειν] τὸ πρᾶγμα λαβεῖν, ἀνὴρ αὐτουργὸς καὶ γέρων ὀνείρατα πρὸς τὴν βουλὴν ἐκφέρων ὀττείας καὶ δειμάτων μεστά, μὴ καὶ γέλωτα ὄφλῃ. ὀλίγαις δ' ὕστερον ἡμέραις τὸν υἱὸν αὐτοῦ νέον καὶ καλὸν οὔτε ὑπὸ νόσων οὔτε ὑπ' ἄλλης τινὸς αἰτίας φανερᾶς συναρπασθέντα αἰφνιδίως ἀποθανεῖν· καὶ αὖθις τὴν τοῦ θεοῦ ὄψιν φανεῖσαν ἐν τοῖς ὕπνοις δηλοῦν, ὅτι τῆς ὑπεροψίας καὶ τῆς καταφρονήσεως τῶν αὐτοῦ λόγων τὴν μὲν ἤδη δέδωκε δίκην τὸν υἱὸν ἀφαιρεθείς, τὰς δὲ ὀλίγον ὕστερον δώσει. 1478 ταῦτα δὲ ἀκούσας, ἔφη καθ' ἡδονὴν δέξασθαι τὸν λόγον, εἰ μέλλοι θάνατος αὐτῷ ἐλεύσεσθαι παρημεληκότι τοῦ βίου· τὸν δὲ θεὸν οὐ ταύτην αὐτῷ προσθεῖναι τὴν τιμωρίαν, ἀλλ' εἰς ἅπαντα τὰ μέλη τοῦ σώματος ἀφορήτους καὶ δεινὰς ἐμβαλεῖν ἀλγη-

δόνας, ὥστε μηδὲν ἄρθρον ἄνευ κατατάσεως τῆς ἐσχάτης δύνασθαι κινεῖν. τότε δὴ τοῖς φίλοις κοινωσάμενος τὰ συμβεβηκότα καὶ κελευσθεὶς ὑπ' ἐκείνων ἥκειν ἐπὶ τὴν βουλήν. διεξιὼν δὲ ταῦτα κατὰ μικρὸν ἐδόκει τῶν ἀλγηδόνων ἀπαλλάττεσθαι· καὶ ἐπειδὴ πάντα διεξῆλθεν ἀναστὰς ἐκ τοῦ κλινιδίου καὶ τὸν θεὸν ἀναβοήσας, ἄπῃει τοῖς ἑαυτοῦ ποσὶ διὰ τῆς πόλεως οἴκαδε ὑγιής.

LXVIIII. *Ἡ δὲ βουλὴ δέους ἀνάπλεως ἐγένετο, καὶ ἀχανὴς ἦν ἕκαστος οὐκ ἔχων συμβαλεῖν, ὅ τι τὸ δηλούμενον ἦν ὑπὸ τοῦ θεοῦ, καὶ τίς ποτε ὁ [πρὸ]* 1479 *τῆς πομπῆς ὀρχηστὴς ἡγούμενος οὐ καλὸς αὐτῷ ἐφάνη. ἔπειτα λέγει τις ἐξ αὐτῶν ἀναμνησθεὶς τὸ γενόμενον, καὶ πάντες ἐμαρτύρησαν. ἦν δὲ τοιόνδε· ἀνὴρ Ῥωμαῖος οὐκ ἀφανὴς θεράποντα ἴδιον ἐπὶ τιμωρίᾳ θανάτου παραδοὺς τοῖς ὁμοδούλοις ἄγειν, ἵνα δὴ περιφανὴς ἡ τιμωρία τοῦ ἀνθρώπου γένηται, δι' ἀγορᾶς αὐτὸν ἐκέλευσε μαστιγούμενον ἕλκειν καὶ εἴ τις ἄλλος ἦν τῆς πόλεως τόπος ἐπιφανὴς ἡγούμενον τῆς πομπῆς, ἣν ἔστελλε τῷ θεῷ κατ' ἐκεῖνον τὸν καιρὸν ἡ πόλις. οἱ δὲ ἄγοντες τὸν θεράποντα ἐπὶ τὴν τιμωρίαν τὰς χεῖρας ἀποτείναντες ἀμφοτέρας καὶ ξύλῳ προσδήσαντες παρὰ τὰ στέρνα τε καὶ τοὺς* 1480 *ὤμους καὶ μέχρι τῶν καρπῶν διήκοντι παρηκολούθουν ξαίνοντες μάστιξι γυμνὸν ὄντα. ὁ δ' ἐν τοιᾷδε ἀνάγκῃ κρατούμενος ἐβόα τε φωνὰς δυσφήμους, ἃς ἡ ἀλγηδὼν ἐβούλετο, καὶ κινήσεις διὰ τὴν αἰκίαν ἀσχήμονας ἐκινεῖτο. τοῦτον δὴ πάντες ἐνόμισαν εἶναι τὸν ὑπὸ τοῦ θεοῦ μηνυόμενον ὀρχηστὴν οὐ καλόν.*

LXX. *Ἐπεὶ δὲ κατὰ τοῦτο γέγονα τῆς ἱστορίας τὸ μέρος, οὐκ οἴομαι δεῖν τὰ περὶ τὴν ἑορτὴν ἐπιτε-*

λούμενα ὑπ' αὐτῶν παρελθεῖν, οὐχ ἵνα μοι χαριεστέρα γένηται προσθήκας λαβοῦσα θεατρικὰς καὶ λόγους ἀνθηροτέρους ἡ διήγησις, ἀλλ' ἵνα τῶν ἀναγκαίων τι πιστώσηται πραγμάτων, ὅτι τὰ συνοικίσαντα ἔθνη τὴν Ῥωμαίων πόλιν Ἑλληνικὰ ἦν ἐκ τῶν ἐπιφανεστάτων ἀποικισθέντα τόπων, ἀλλ' οὐχ ὥσπερ ἔνιοι νομίζουσι βάρβαρα καὶ ἀνέστια· ὑπεσχόμην γὰρ ἐπὶ τῷ τέλει τῆς πρώτης γραφῆς, ἣν περὶ τοῦ γένους αὐτῶν συνταξάμενος ἐξέδωκα, μυρίοις 1481 *βεβαιώσειν τεκμηρίοις τὴν πρόθεσιν, ἔθη καὶ νόμιμα καὶ ἐπιτηδεύματα παλαιὰ παρεχόμενος αὐτῶν, ἃ μέχρι τοῦ κατ' ἐμὲ φυλάττουσι χρόνου οἷα παρὰ τῶν προγόνων ἐδέξαντο· οὐχ ἡγούμενος ἀποχρῆν τοῖς ἀναγράφουσι τὰς ἀρχαίας καὶ τοπικὰς ἱστορίας, ὡς παρὰ τῶν ἐπιχωρίων αὐτὰς παρέλαβον ἀξιοπίστως διελθεῖν, ἀλλὰ καὶ μαρτυριῶν οἰόμενος αὐταῖς δεῖν πολλῶν καὶ δυσαντιλέκτων, εἰ μέλλουσι πισταὶ φανήσεσθαι. ἐν αἷς πρῶτα καὶ κυριώτατα πάντων εἶναι πείθομαι τὰ γινόμενα καθ' ἑκάστην πόλιν περὶ θεῶν καὶ δαιμόνων πατρίους σεβασμούς. ταῦτα γὰρ ἐπὶ μήκιστον χρόνον διὰ φυλακῆς ἔχει Ἑλλάς τε καὶ βάρβαρος χώρα, καὶ οὐθὲν ἀξιοῖ καινοτομεῖν εἰς αὐτὰ ὑπὸ δείματος κρατουμένη μηνιμάτων δαιμονίων. μάλιστα δὲ τοῦτο πεπόνθασιν οἱ βάρβαροι διὰ πολλὰς αἰτίας, ἃς οὐ καιρὸς ἐν τῷ παρόντι λέγειν, καὶ χρόνος οὐθεὶς μέχρι τοῦ παρόντος ἀπομαθεῖν ἢ παρανομῆσαί τι περὶ τοὺς ὀργιασμοὺς τῶν θεῶν ἔπεισεν* 1482 *οὔτ' Αἰγυπτίους οὔτε Λίβυας οὔτε Κελτοὺς οὔτε Σκύθας οὔτ' Ἰνδοὺς οὔτε ἄλλο βάρβαρον ἔθνος οὐδὲν ἁπλῶς· εἰ μή τινες ὑφ' ἑτέρων ἐξουσίᾳ ποτὲ γενόμενοι τὰ τῶν κρατησάντων ἠναγκάσθησαν ἐπιτηδεύματα μεταλαβεῖν. τῇ δὲ Ῥωμαίων πόλει τοιαύ-*

της οὐδέποτε πειραθῆναι συνέβη τύχης, ἀλλ' αὐτὴ τὰ δίκαια τάττει διὰ παντὸς ἑτέροις. εἰ δὴ βάρβαρον αὐτῶν τὸ γένος ἦν, τοσούτου ἂν ἐδέησαν αὐτοὶ τὰ πατρῷα ἱερὰ καὶ τοὺς ἐπιχωρίους ἐθισμοὺς ἀπομαθεῖν, δι' οὓς εἰς τοσαύτην προῆλθον εὐδαιμονίαν, ὥστε καὶ τοῖς ἄλλοις ἅπασιν ὧν ἦρχον ἐν καλῷ κατέστησαν τοὺς θεοὺς τοῖς σφετέροις τιμᾶν νομίμοις· καὶ οὐθὲν ἂν ἐκώλυσεν ἅπαν ἐκβεβαρβαρῶσθαι τὸ Ἑλληνικὸν ὑπὸ Ῥωμαίων ἑβδόμην ἤδη κρατούμενον ὑπ' αὐτῶν γενεάν, εἴπερ ἦσαν βάρβαροι.

1483 LXXI. Ἕτερος μὲν οὖν ἀποχρῆν ἂν ὑπέλαβε καὶ αὐτὰ τὰ νῦν πραττόμενα ἐν τῇ πόλει μηνύματα οὐ μικρὰ τῶν παλαιῶν ἐπιτηδευμάτων ὑπολαβεῖν· ἐγὼ δ', ἵνα μή τις ἀσθενῆ τὴν πίστιν εἶναι ταύτην ὑπολάβῃ [εἴτε] κατ' ἐκείνην τὴν ἀπίθανον ὑπόληψιν, ὅτι παντὸς τοῦ Ἑλληνικοῦ κρατήσαντες ἀσμένως ἂν τὰ κρείττω μετέμαθον ἔθη τῶν ἐπιχωρίων ὑπεριδόντες, ἐξ ἐκείνου ποιήσομαι τοῦ χρόνου τὴν τέκμαρσιν, ὅτ' οὔπω τὴν τῆς Ἑλλάδος εἶχον ἡγεμονίαν οὐδὲ ἄλλην διαπόντιον οὐδεμίαν ἀρχήν, Κοΐντῳ Φαβίῳ βεβαιωτῇ χρώμενος καὶ οὐδεμιᾶς ἔτι δεόμενος πίστεως ἑτέρας· παλαιότατος γὰρ ἀνὴρ τῶν τὰ Ῥωμαϊκὰ συνταξαμένων, καὶ πίστιν οὐκ ἐξ ὧν ἤκουσε μόνον ἀλλὰ καὶ ἐξ ὧν αὐτὸς ἔγνω παρεχόμενος.

Ταύτην δὴ τὴν ἑορτὴν ἐψηφίσατο μὲν ἡ βουλὴ τῶν Ῥωμαίων ἄγειν, ὡς καὶ πρότερον ἔφην, κατὰ τὰς γενομένας εὐχὰς ὑπὸ τοῦ δικτάτορος Αὔλου Ποστομίου, ὅτ' ἔμελλεν ἀγωνίζεσθαι πρὸς τὰς ἀποστάσας
1484 Λατίνων πόλεις κατάγειν ἐπιχειρούσας Ταρκύνιον ἐπὶ τὴν ἀρχήν· ἀναλοῦσθαι δ' ἔταξε καθ'

ἕκαστον ἐνιαυτὸν εἴς τε τὰς θυσίας καὶ τοὺς ἀγῶνας ἀργυρίου πεντακοσίας μνᾶς· καὶ μέχρι τοῦ Φοινικικοῦ πολέμου τοῦτ' ἐδαπάνων εἰς τὴν ἑορτήν. ἐν δὲ ταῖς ἱεραῖς ἡμέραις ταύταις πολλὰ μὲν καὶ ἄλλα ἐγίνετο νόμοις Ἑλληνικοῖς κατά τε πανηγυρισμοὺς καὶ ξένων ὑποδοχὰς καὶ ἐκεχειρίας, ἃ πολὺ ἂν ἔργον εἴη λέγειν. τὰ δὲ περὶ πομπήν τε καὶ θυσίαν καὶ τὰ κατὰ τοὺς ἀγῶνας· ἀπόχρη γὰρ ἐκ τούτων καὶ τὰ μὴ λεχθέντα ἐξετάζειν· τοιάδε.

LXXII. Πρὶν ἄρξασθαι τῶν ἀγώνων πομπὴν ἔστελλον τοῖς θεοῖς οἱ τὴν μεγίστην ἔχοντες ἐξουσίαν, ἀπὸ τοῦ Καπιτωλίου τε καὶ δι' ἀγορᾶς ἄγοντες ἐπὶ τὸν μέγαν ἱππόδρομον. ἡγοῦντο δὲ τῆς πομπῆς πρῶτον μὲν οἱ παῖδες αὐτῶν οἱ πρόσηβοί τε καὶ τοῦ πομπεύειν ἔχοντες ἡλικίαν, ἱππεῖς μὲν ὧν οἱ πατέρες τιμήματα ἱππέων εἶχον, πεζοὶ δὲ οἱ μέλλοντες ἐν τοῖς πεζοῖς στρατεύεσθαι· οἱ μὲν κατ' ἴλας τε καὶ κατὰ λόχους, οἱ δὲ κατὰ συμμορίας τε καὶ τάξεις, 1485
ὡς εἰς διδασκαλεῖον πορευόμενοι· ἵνα φανερὰ γίνοιτο τοῖς ξένοις ἡ μέλλουσα ἀνδροῦσθαι τῆς πόλεως ἀκμή πλῆθός τε καὶ κάλλος οἷά τις ἦν. τούτοις ἠκολούθουν ἡνίοχοι τέθριππά τε καὶ συνωρίδας καὶ ἵππους ἀζεύκτους ἐλαύνοντες· μεθ' οὓς οἱ τῶν ἀθλημάτων ἀγωνισταὶ τῶν τε κούφων καὶ τῶν βαρέων, τὸ μὲν ἄλλο σῶμα γυμνοί, τὸ δὲ περὶ τὴν αἰδῶ καλυπτόμενοι. τοῦτο καὶ εἰς ἐμὲ τὸ ἔθος ἐν Ῥώμῃ διέμενεν, ὡς ἐξ ἀρχῆς ἐγίνετο παρ' Ἕλλησιν· ἐν δὲ τῇ Ἑλλάδι καταλέλυται Λακεδαιμονίων αὐτὸ καταλυσάντων. ὁ δὲ πρῶτος ἐπιχειρήσας ἀποδυθῆναι τὸ σῶμα, καὶ γυμνὸς Ὀλυμπιάσι δραμὼν ἐπὶ τῆς πεντεκαιδεκάτης ὀλυμπιάδος Ἄκανθος ὁ Λακεδαιμόνιος ἦν. τὰ δὲ πρὸ τούτων δι' αἰσχύνης εἶχον ἅπαντες Ἕλληνες ὅλα

1486 γυμνὰ φαίνειν ἐν ταῖς ἀγωνίαις τὰ σώματα, ὡς Ὅμηρος τεκμηριοῖ μαρτύρων ἀξιοπιστότατός τε καὶ ἀρχαιότατος ὤν, ζωννυμένους τοὺς ἥρωας ποιῶν. τὴν γοῦν Αἴαντος καὶ Ὀδυσσέως πάλην ἐπὶ τῇ Πατρόκλου ταφῇ γενομένην ἀφηγούμενός φησι·

Τὼ δὲ ζωσαμένω βήτην ἐς μέσσον ἀγῶνα·

καὶ ἔτι σαφέστερον ἐν Ὀδυσσείᾳ τοῦτο ποιεῖ φανερὸν ἐπὶ τῆς Ἴρου καὶ Ὀδυσσέως πυγμῆς ἐν τοῖσδε τοῖς ἔπεσιν·

Ὣς ἔφαθ'· οἱ δ' ἄρα πάντες ἐπήνεον· αὐτὰρ Ὀδυσσεὺς
Ζώσατο μὲν ῥάκεσιν περὶ μήδεα, φαῖνε δὲ μηροὺς
Καλούς τε μεγάλους τε. φάνεν δέ οἱ εὐρέες ὦμοι
Στήθεά τε στιβαροί τε βραχίονες.

τὸν δὲ πτωχὸν οὐκέτι βουλόμενον μάχεσθαι, ἀλλ' ἀποδειλιῶντα εἰσάγων τάδε εἴρηκεν·

Ὣς ἄρ ἔφαν· Ἴρῳ δὲ κακῶς ὠρίνετο θυμός·
Ἀλλὰ καὶ ὣς μνηστῆρες ἄγον ζώσαντες ἀνάγκῃ.

1487 τοῦτο δὴ τὸ ἔθος ἀρχαῖον ἐν τοῖς Ἕλλησιν ὂν διαφυλάττοντες μέχρι τοῦδε Ῥωμαῖοι δῆλοί εἰσιν οὐ προσμαθόντες παρ' ἡμῶν ὕστερον, ἀλλ' οὐδὲ μεταθέμενοι σὺν χρόνῳ καθάπερ ἡμεῖς. ἠκολούθουν δὲ τοῖς ἀγωνισταῖς ὀρχηστῶν χοροὶ πολλοὶ τριχῇ νενεμημένοι, πρῶτοι μὲν ἀνδρῶν, δεύτεροι δὲ ἀγενείων, τελευταῖοι δὲ παίδων, οἷς παρηκολούθουν αὐληταὶ τε ἀρχαϊκοῖς ἐμφυσῶντες αὐλίσκοις βραχέσιν, ὡς καὶ εἰς τόδε χρόνου γίνεται, καὶ κιθαρισταὶ λύρας ἑπταχόρδους ἐλεφαντίνας καὶ τὰ καλούμενα βάρβιτα κρέκοντες. ὧν παρὰ μὲν Ἕλλησιν ἐκλέλοιπεν ἡ χρῆσις ἐπ' ἐμοῦ πάτριος οὖσα· παρὰ δὲ Ῥωμαίοις ἐν

ἁπάσαις φυλάττεται ταῖς ἀρχαίαις θυηπολίαις. σκευαὶ δὲ τῶν ὀρχηστῶν ἦσαν χιτῶνες φοινίκεοι ζωστῆρσι χαλκέοις ἐσφιγμένοι, καὶ ξίφη παρηρτημένα, καὶ λόγχαι βραχύτεραι τῶν μετρίων· τοῖς δὲ ἀνδράσι καὶ κράνη χάλκεα λόφοις ἐπισήμοις κεκοσμημένα καὶ πτεροῖς. ἡγεῖτο δὲ καθ᾽ ἕκαστον χορὸν εἷς 1488 *ἀνήρ, ὃς ἐνεδίδου τοῖς ἄλλοις τὰ τῆς ὀρχήσεως σχήματα πρῖτος, εἰδοφορῶν τὰς πολεμικὰς καὶ συντόνους κινήσεις ἐν τοῖς προκελευσματικοῖς ὡς τὰ πολλὰ ῥυθμοῖς. Ἑλληνικὸν δὲ ἄρα καὶ τοῦτο ἦν ἐν τοῖς πάνυ παλαιὸν ἐπιτήδευμα, ἐνόπλιος ὄρχησις ἡ καλουμένη πυρρίχη, εἴτε Ἀθηνᾶς πρώτης ἐπὶ Τιτάνων ἀφανισμῷ χορεύειν καὶ ὀρχεῖσθαι σὺν τοῖς ὅπλοις τἀπινίκια ὑπὸ χαρᾶς ἀρξαμένης, εἴτε παλαίτερον ἔτι Κουρήτων αὐτὴν καταστησαμένων, ὅτε τὸν Δία τιθηνούμενοι θέλγειν ἐβούλοντο κτύπῳ τε ὅπλων καὶ κινήσει μελῶν ἐνρυθμῷ καθάπερ ὁ μῦ-* 1489 *θος ἔχει. δηλοῖ δὲ καὶ τούτου τὴν ἀρχαιότητα ὡς ἐπιχωρίου τοῖς Ἕλλησιν Ὅμηρος πολλαχῇ μὲν καὶ ἄλλῃ, μάλιστα δ᾽ ἐν ἀσπίδος κατασκευῇ, ἣν Ἀχιλλεῖ δωρήσασθαί φησιν Ἥφαιστον. ὑποθέμενος γὰρ ἐν αὐτῇ δύο πόλεις τὴν μὲν εἰρήνῃ κοσμουμένην, τὴν δὲ πολέμῳ κακοπαθοῦσαν, ἐν ᾗ τὴν ἀμείνω καθίστησι τύχην ἑορτὰς ποιῶν καὶ γάμους καὶ θαλίας ὥσπερ εἰκὸς καὶ ταῦτα λέγει·*

> *Κοῦροι δ᾽ ὀρχηστῆρες ἐδίνεον· ἐν δ᾽ ἄρα τοῖσιν*
> *Αὐλοὶ φόρμιγγές τε βοὴν ἔχον· αἱ δὲ γυναῖκες*
> *Ἱστάμεναι θαύμαζον ἐπὶ προθύροισιν ἑκάστη.*

καὶ αὖθις ἕτερον ἐν αὐτῇ λέγων διακεκοσμῆσθαι Κρητικὸν ἠιθέων τε καὶ παρθένων χορὸν ὧδε εἴρηκεν·

Ἐν δὲ χορὸν ποίκιλλε περικλυτὸς ἀμφιγυήεις,
1490 Τῷ ἴκελον οἷόν ποτ' ἐνὶ Κνωσσῷ εὐρείῃ
Δαίδαλος ἤσκησεν καλλιπλοκάμῳ Ἀριάδνῃ.
Ἔνθα μὲν ἠίθεοι καὶ παρθένοι ἀλφεσίβοιαι
Ὠρχεῦντ' ἀλλήλων ἐπὶ καρπῷ χεῖρας ἔχουσαι.

κόσμον τε αὐτοῦ ἀφηγούμενος, ἵνα δῆλον ἡμῖν ποιήσειεν, ὅτι ἡ τῶν ἀρρένων κίνησις ἐνόπλιος ἦν, τάδε λέγει·

Καί ῥ' αἱ μὲν καλὰς στεφάνας ἔχον, οἱ δὲ μαχαίρας
Εἶχον χρυσείας ἐξ ἀργυρέων τελαμώνων.

ἡγεμόνας τε τῆς ὀρχήσεως αὐτῶν τοὺς ἐνδιδόντας τοῖς ἄλλοις καὶ προκαταρχομένους εἰσάγων, τοιάδε γράφει·

Πολλὸς δ' ἱμερόεντα χορὸν περιΐσταθ' ὅμιλος
Τερπόμενοι· δοιὼ δὲ κυβιστητῆρε κατ' αὐτοὺς
Μολπῆς ἐξάρχοντες ἐδίνευον κατὰ μέσσους.

οὐ μόνον δ' ἐκ τῆς ἐναγωνίου τε καὶ κατεσπουδασμένης ὀρχήσεως τῶν χορῶν, ἢ παρὰ τὰς θυηπολίας τε καὶ πομπὰς ἐχρῶντο Ῥωμαῖοι, τὸ συγγενὲς ἄν τις
1491 αὐτῶν τὸ πρὸς τοὺς Ἕλληνας ἴδοι, ἀλλὰ καὶ ἐκ τῆς κερτόμου καὶ τωθαστικῆς. μετὰ γὰρ τοὺς ἐνοπλίους χοροὺς οἱ τῶν σατυριστῶν ἐπόμπευον χοροί, τὴν Ἑλληνικὴν εἰδοφοροῦντες σίκιννιν. σκευαὶ δ' αὐτοῖς ἦσαν, τοῖς μὲν εἰς Σιληνοὺς εἰκασθεῖσι μαλλωτοὶ χιτῶνες, οὓς ἔνιοι χορταίους καλοῦσι, καὶ περιβόλαια ἐκ παντὸς ἄνθους· τοῖς δὲ εἰς Σατύρους περιζώματα καὶ δοραὶ τράγων καὶ ὀρθότριχες ἐπὶ ταῖς κεφαλαῖς φόβαι καὶ ὅσα τούτοις ὅμοια. οὗτοι κατέσκωπτόν τε καὶ κατεμιμοῦντο τὰς σπουδαίας κινήσεις ἐπὶ τὰ γελοιότερα μεταφέροντες. δηλοῦσι δὲ καὶ αἱ τῶν θριάμβων εἴσοδοι παλαιὰν καὶ ἐπιχώριον

οὖσαν Ῥωμαίοις τὴν κέρτομον καὶ σατυρικὴν παι-
διάν. ἐφεῖται γὰρ τοῖς κατάγουσι τὰς νίκας ἰαμβί-
ζειν τε καὶ κατασκώπτειν τοὺς ἐπιφανεστάτους ἄν- 1492
δρας αὐτοῖς στρατηλάταις, ὡς Ἀθήνησι τοῖς πομ-
πευταῖς τοῖς ἐπὶ τῶν ἁμαξῶν πρότερον ἅμα [τοῖς]
σκώμμασι παροχουμένοις, νῦν δὲ ποιήματα ᾄδουσιν
αὐτοσχέδια. εἶδον δὲ καὶ ἐν ἀνδρῶν ἐπισήμων τα-
φαῖς ἅμα ταῖς ἄλλαις πομπαῖς προηγουμένους τῆς
κλίνης τοὺς σατυριστῶν χοροὺς κινουμένους τὴν σί-
κιννιν ὄρχησιν, μάλιστα δ' ἐν τοῖς τῶν εὐδαιμόνων
κήδεσιν. ὅτι δὲ οὔτε Λιγύων οὔτε Ὀμβρικῶν οὔτε
ἄλλων τινῶν βαρβάρων τῶν ἐν Ἰταλίᾳ κατοικούντων
εὕρεμα ἡ σατυρικὴ παιδιὰ καὶ ὄρχησις ἦν, ἀλλὰ
Ἑλλήνων, δέδοικα μὴ καὶ ὀχληρὸς εἶναί τισι δόξω 1493
λόγοις πλείοσι πιστοῦσθαι ὁμολογούμενον πρᾶγμα
βουλόμενος.

Μετὰ δὲ τοὺς χοροὺς τούτους κιθαρισταί τε
ἀθρόοι καὶ αὐληταὶ πολλοὶ παρεξῄεσαν· καὶ μετ'
αὐτοὺς οἵ τε τὰ θυμιατήρια κομίζοντες, ἐφ' ὧν ἀρώ-
ματα καὶ λιβανωτὸς παρ' ὅλην ὁδὸν ἐθυμιᾶτο, καὶ
οἱ τὰ πομπεῖα παραφέροντες ἀργυρίου καὶ χρυσίου
πεποιημένα τά τε ἱερὰ καὶ τὰ δημόσια. τελευταῖα
δὲ πάντων αἱ τῶν θεῶν εἰκόνες ἐπόμπευον ὤμοις
ὑπ' ἀνδρῶν φερόμεναι, μορφάς τε ὁμοίας παρέχου-
σαι ταῖς παρ' Ἕλλησι πλαττομέναις καὶ σκευὰς καὶ
σύμβολα καὶ δωρεάς, ὧν εὑρεταὶ καὶ δοτῆρες ἀνθρώ-
ποις ἕκαστοι παραδίδονται, οὐ μόνον Διὸς καὶ Ἥρας
καὶ Ἀθηνᾶς καὶ Ποσειδῶνος καὶ τῶν ἄλλων, οὓς
Ἕλληνες ἐν τοῖς δώδεκα θεοῖς καταριθμοῦσιν, ἀλλὰ
καὶ τῶν προγενεστέρων, ἐξ ὧν οἱ δώδεκα θεοὶ μυ- 1494
θολογοῦνται γενέσθαι, Κρόνου καὶ Ῥέας καὶ Θέμιδος
καὶ Λητοῦς καὶ Μοιρῶν καὶ Μνημοσύνης καὶ τῶν

ἄλλων ἁπάντων, ὅσων ἐστὶν ἱερὰ καὶ τεμένη παρ'
Ἕλλησι· καὶ τῶν ὕστερον ἀφ' οὗ τὴν ἀρχὴν Ζεὺς
παρέλαβε μυθολογουμένων γενέσθαι, Περσεφόνης
Εἰλειθυίας Νυμφῶν Μουσῶν Ὡρῶν Χαρίτων Διο-
νύσου, καὶ ὅσων ἡμιθέων γενομένων αἱ ψυχαὶ τὰ
θνητὰ ἀπολιποῦσαι σώματα εἰς οὐρανὸν ἀνελθεῖν
λέγονται, καὶ τιμὰς λαχεῖν ὁμοίας θεοῖς, Ἡρακλέους
Ἀσκληπιοῦ Διοσκούρων Ἑλένης Πανὸς ἄλλων μυ-
ρίων. καίτοι εἰ βάρβαροι ἦσαν οἱ τὴν Ῥώμην οἰκί-
σαντες καὶ τὴν ἑορτὴν ταύτην καταστησάμενοι, τί
προσῆκεν αὐτοῖς τοὺς μὲν Ἑλληνικοὺς ἅπαντας σέ-
βειν θεούς τε καὶ δαίμονας, τῶν δὲ πατρίων ὑπερο-
ρᾶν; ἢ δειξάτω τις ἡμῖν ἔξω τοῦ Ἑλληνικοῦ φῦλον
ἕτερον, ᾧ πάτριά ἐστι ταῦτα τὰ ἱερά, καὶ τότε δια-
βαλλέτω ταύτην τὴν ἀπόδειξιν ὡς οὐχ ὑγιῆ. συντε-
λεσθείσης δὲ τῆς πομπῆς ἐβουθύτουν εὐθὺς οἵ τε
1495 ὕπατοι καὶ τῶν ἱερέων οἷς ὅσιον, καὶ ὁ τῶν θυηπο-
λιῶν τρόπος ὁ αὐτὸς ἦν τῷ παρ' ἡμῖν. χερνιψάμενοί τε
γὰρ αὐτοὶ καὶ τὰ ἱερὰ καθαρῷ περιαγνίσαντες ὕδατι,
καὶ Δημητρίους καρποὺς ἐπιρράναντες αὐτῶν ταῖς
κεφαλαῖς, ἔπειτα κατευξάμενοι, θύειν τότε τοῖς ὑπη-
1500 ρέταις αὐτὰ ἐκέλευον. τῶν δὲ οἱ μὲν ἑστῶτος ἔτι τοῦ
θύματος σκυτάλῃ τοὺς κροτάφους ἔπαιον, οἱ δὲ πί-
πτοντος ὑπετίθεσαν τὰς σφαγίδας, καὶ μετὰ τοῦτο
δείραντές τε καὶ μελίσαντες ἀπαρχὰς ἐλάμβανον ἐξ
ἑκάστου σπλάγχνου καὶ παντὸς ἄλλου μέλους, ἃς
ἀλφίτοις ζέας ἀναδεύσαντες προσέφερον τοῖς θύου-
σιν ἐπὶ κανῶν· οἱ δ' ἐπὶ τοὺς βωμοὺς ἐπιτιθέντες
ὑφῆπτον καὶ προσέσπενδον οἶνον κατὰ τῶν ἁγνιζο-
μένων. ἕκαστον δ' ὅτι κατὰ νόμους ἐγίνετο τοὺς
ἀμφὶ θυσίαν ὑφ' Ἑλλήνων κατασταθέντας, ἐκ τῆς
1496 Ὁμήρου ποιήσεως γνῶναι ῥᾴδιον. καὶ γὰρ χερνιπτο-

μένους εἰσάγει τοὺς ἥρωας καὶ οὐλαῖς χρωμένους ἐν οἷς φησι·

Χερνίψαντο δ' ἔπειτα καὶ οὐλοχύτας ἀνέλοντο.

τριχοτομοῦντάς τε ἀπὸ τῆς κεφαλῆς τὰς τρίχας καὶ τιθέντας ἐπὶ τὸ πῦρ ὧδε γράφων·

Ἀλλ' ὅ γ' ἀπαρχόμενος κεφαλῆς τρίχας ἐν πυρὶ βάλλε.

σκυτάλαις τε παίοντας τὰ μέτωπα τῶν ἱερείων καὶ τὰ πεσόντα θύοντας, ὡς ἐπὶ τῆς Εὐμαίου ποιεῖ θυσίας·

Κόψε δ' ἀπαρχόμενος σχίζῃ δρυός, ἣν λίπε κείων.
Τὸν δ' ἔλιπε ψυχή· τοὶ δ' ἔσφαξάν τε καὶ εὗσαν.

ἀπαρχάς τε ἀπὸ τῶν σπλάγχνων καὶ ἀπὸ τῶν ἄλλων λαμβάνοντας μελῶν, καὶ ταύτας ἀλφίτοις δεύοντας καὶ καθαγίζοντας ἐπὶ τῶν βωμῶν, ὡς ἐπὶ τῆς αὐτῆς ποιεῖ θυσίας·

ὁ δ' ὠμοθετεῖτο συβώτης, 1497
Πάντοθεν ἀρχόμενος μελέων ἐς πίονα δημόν·
Καὶ τὰ μὲν πυρὶ βάλλε παλύνας ἀλφίτου ἀκτῇ.

Ταῦτα δὲ Ῥωμαίους ἔτι καὶ εἰς ἐμὲ πράττοντας ἐπὶ ταῖς θυσίαις ἰδὼν ἐπίσταμαι· καὶ μιᾷ πίστει τῇδε ἀρκούμενος, οὐ βαρβάρους ἐπείσθην εἶναι τοὺς οἰκιστὰς τῆς Ῥώμης, ἀλλ' ἐκ πολλῶν τόπων συνεληλυθότας Ἕλληνας. ὀλίγα μὲν γὰρ ἐπιτηδεύματα περὶ θυσίας τε καὶ ἑορτὰς ὁμοίως Ἕλλησι βαρβάρους καὶ πλάνητας ἐπιτελεῖν ἐνδέχεται· ἅπαντα δὲ ταὐτὰ πράττειν ἀπίθανον.

LXXIII. *Λοιπὸν δὲ ἔτι μοι καὶ περὶ τῶν ἀγώνων οὓς μετὰ τὴν πομπὴν ἐπετέλουν ὀλίγα διελθεῖν. πρῶτος ὁ τῶν τεθρίππων τε καὶ συνωρίδων καὶ τῶν*

ἀζεύκτων ἵππων ἐγίνετο δρόμος, ὡς παρ' Ἕλλησι τὸ ἀρχαῖον Ὀλυμπιᾶσι τε καὶ μέχρι τοῦ παρόντος. ἐν
1498 δὲ ταῖς ἱππικαῖς ἁμίλλαις ἐπιτηδεύματα δύο τῶν πάνυ παλαιῶν ὡς ἐξ ἀρχῆς ἐνομοθετήθη φυλαττόμενα ὑπὸ Ῥωμαίων μέχρι τῶν κατ' ἐμὲ διάκειται χρόνων, τό τε περὶ τὰ τρίπωλα τῶν ἁρμάτων, ὃ παρ' Ἕλλησι μὲν ἐκλέλοιπεν, ἀρχαῖον ὂν ἐπιτήδευμα καὶ ἡρωικόν, ᾧ ποιεῖ τοὺς Ἕλληνας Ὅμηρος ἐν ταῖς μάχαις χρωμένους· δυσὶ γὰρ ἵπποις ἐξευγμένοις, ὃν τρόπον ζεύγνυται συνωρίς, τρίτος παρείπετο σειραῖος ἵππος ῥυτῆρι συνεχόμενος, ὃν ἀπὸ τοῦ παρηωρῆσθαί τε καὶ μὴ συνεζεῦχθαι παρήορον ἐκάλουν οἱ παλαιοί·
1499 ἕτερον δὲ παρ' ὀλίγαις ἔτι φυλαττόμενον πόλεσιν Ἑλληνίσιν ἐν ἱερουργίαις τισὶν ἀρχαϊκαῖς, ὁ τῶν παρεμβεβηκότων τοῖς ἅρμασι δρόμος. ὅταν γὰρ τέλος αἱ τῶν ἱππέων ἅμιλλαι λάβωνται, ἀποπηδῶντες ἀπὸ τῶν ἁρμάτων οἱ παροχούμενοι τοῖς ἡνιόχοις, οὓς οἱ ποιηταὶ μὲν παραβάτας, Ἀθηναῖοι δὲ καλοῦσιν ἀποβάτας, τὸν σταδιαῖον ἁμιλλῶνται δρόμον αὐτοὶ πρὸς ἀλλήλους. τελεσθέντων δὲ τῶν ἱππικῶν δρόμων, οἱ τοῖς ἑαυτῶν σώμασιν ἀγωνιζόμενοι τότε εἰσῄεσαν
1500 δρομεῖς τε καὶ πύκται καὶ παλαισταί. τρία γὰρ ἀθλήματα παρὰ τοῖς ἀρχαίοις Ἕλλησι ταῦτ' ἦν, ὡς Ὅμηρος ἐπὶ τῇ Πατρόκλου δηλοῖ ταφῇ. ἐν δὲ τοῖς διὰ μέσου τῶν ἀθλημάτων χρόνοις Ἑλληνικώτατον καὶ κράτιστον ἁπάντων ἐθῶν ἀπεδείκνυντο, στεφανώσεις καὶ ἀναρρήσεις ποιούμενοι τιμῶν αἷς ἐτίμων τοὺς ἑαυτῶν εὐεργέτας, ὡς Ἀθήνησιν ἐν ταῖς Διονυσιακαῖς ἐγίνετο θυσίαις, καὶ σκύλων ὅσων ἐκ πολέμων λάβοιεν ἐπιδείξεις τοῖς εἰς θέαν συνεληλυθόσιν. ἀλλὰ γὰρ ὑπὲρ μὲν τούτων οὔτε μηθένα ποιήσασθαι λόγον ἀπαιτούσης τῆς ὑποθέσεως καλῶς εἶχεν,

οὔτε μηκύνειν πέρα τοῦ δέοντος ἥρμοττε. καιρὸς δὲ 1501
ἐπὶ τὴν ἀπολειπομένην διήγησιν ἐπανάγειν. ὡς γὰρ δὴ τὰ περὶ τὸν ἀπαχθέντα ἐπὶ τιμωρίαν ὑπὸ τοῦ δεσπότου καὶ προηγησάμενον τῆς πομπῆς ἔμαθεν ἡ βουλὴ παρὰ τοῦ τὸ πραχθὲν ἀνανεωσαμένου, τοῦτον ὑπολαβοῦσα ὑπὸ τοῦ θεοῦ λέγεσθαι τὸν οὐ καλὸν ἀπάρχοντα τῶν ὀρχηστῶν, ὥσπερ ἔφην, ἀναζητήσασα τὸν τῷ θεράποντι λωβησάμενον καὶ ζημίαν ἐπιβαλοῦσα, ἧς ἄξιος ἦν, ἑτέραν ἐψηφίσατο τῷ θεῷ πομπὴν ἐπιτελεσθῆναι καὶ ἀγῶνας ἐξ ἀρχῆς ἑτέρους ἀπὸ διπλασίων χρημάτων, ἢ πρότερον ἐγένοντο. καὶ τὰ μὲν ἐπὶ τούτων συντελεσθέντα τῶν ὑπάτων τοιάδε ἦν.

1502 # ΔΙΟΝΥΣΙΟΥ

ΑΛΙΚΑΡΝΑΣΕΩΣ

ΡΩΜΑΙΚΗΣ ΑΡΧΑΙΟΛΟΓΙΑΣ

ΛΟΓΟΣ ΟΓΔΟΟΣ.

---

*Οἱ δὲ μετὰ τούτους ἀποδειχθέντες ὕπατοι κατὰ τὴν ἑβδομηκοστὴν καὶ τρίτην ὀλυμπιάδα, καθ' ἣν ἐνίκα στάδιον Ἀστύλος Κροτωνιάτης ἄρχοντος Ἀθήνησιν Ἀγχίσου, Γάιος Ἰούλιος Ἴουλος καὶ Πόπλιος Πινάριος Ῥοῦφος, ἄνδρες ἥκιστα πολεμικοὶ καὶ διὰ
1503 τοῦτο μάλιστα τῆς ἀρχῆς ταύτης παρὰ τοῦ δήμου τυχόντες, εἰς πολλοὺς καὶ μεγάλους ἠναγκάσθησαν κινδύνους καταστῆναι πολέμου καταρραγέντος ἐπὶ τῆς ἐκείνων ἀρχῆς, δι' ὧν ἡ πόλις ὀλίγου ἐδέησεν ἐκ βάθρων ἀναιρεθῆναι. ὁ γὰρ Μάρκιος ἐκεῖνος ὁ Κοριολάνος, ὁ τὴν ἐπὶ τῇ τυραννίδι αἰτίαν ἔχων καὶ φυγῇ ἀιδίῳ ἐλαθείς, ἀγανακτῶν τ' ἐπὶ τῇ συμφορᾷ καὶ τιμωρίαν παρὰ τῶν ἐχθρῶν βουλόμενος λαβεῖν, δι' οὗ δ' ἂν αὕτη γένοιτο τρόπου καὶ δι' οἵας δυνάμεως ἀνασκοπῶν, μίαν εὕρισκε Ῥωμαίοις τότε ἀντίπαλον ἰσχὺν τὴν Οὐολούσκων, εἰ κοινῇ χρησάμενοι γνώμῃ καὶ τυχόντες ἡγεμόνος ἔμφρονος ἐνστήσονται πρὸς αὐτοὺς τὸν πόλεμον. ἐλογίζετο οὖν, ὡς εἰ πείσειε τοὺς Οὐολούσκους δέξασθαί τε αὐτὸν καὶ τὴν ἡγεμονίαν ἐπιτρέψαι τοῦ πολέμου, ῥᾳδίως αὐτῷ διαπε-*

*πράξεται τὸ ἔργον· ἐτάραττε δ' αὐτὸν ἡ συνείδησις,
ὅτι πλειστάκις κατὰ τὰς μάχας δεινὰ δεδρακὼς ἦν
αὐτοὺς καὶ πόλεις συμμαχίδας ἀφῃρημένος. οὐ μὴν
ἀπέστη γε τῆς πείρας διὰ τὸ τοῦ κινδύνου μέγε-
θος, ἀλλ' εἰς αὐτὰ τὰ δεινὰ χωρεῖν ἐβουλεύσατο καὶ* 1504
*πάσχειν ὑπ' αὐτῶν ὁτιοῦν. φυλάξας δὲ νύκτα καὶ
ταύτην σκοταίαν ἧκεν εἰς Ἄντιον τὴν ἐπιφανεστάτην
τῶν ἐν Οὐολούσκοις πόλεων, ἡνίκα περὶ δεῖπνον
ἦσαν οἱ κατὰ τὴν πόλιν, καὶ παρελθὼν εἰς οἰκίαν
ἀνδρὸς δυνατοῦ, δι' εὐγένειάν τε καὶ πλοῦτον
καὶ τὰς ἐν τοῖς πολέμοις πράξεις μέγα ἐφ' ἑαυτῷ
φρονοῦντος καὶ τὸ ἔθνος ὅλον ἄγοντος ὡς τὰ
πολλά, ᾧ Τύλλος Ἄττιος ὄνομα ἦν, ἱκέτης τοῦ ἀν-
δρὸς γίνεται καθεξόμενος ἐπὶ τῆς ἑστίας. διηγησά-
μενος δὲ αὐτῷ τὰς κατασχούσας αὐτὸν ἀνάγκας, δι'
ἃς ὑπέμεινεν ἐπὶ τοὺς ἐχθροὺς καταφυγεῖν, μέτρια
ἠξίου φρονῆσαι καὶ ἀνθρώπινα περὶ ἀνδρὸς ἱκέτου* 1505
*καὶ μηκέτι πολέμιον ἡγεῖσθαι τὸν ὑποχείριον, μηδ' εἰς
τοὺς ἀτυχοῦντας καὶ τεταπεινωμένους ἀνποδείκνυσθαι
τὴν ἰσχὺν ἐνθυμούμενον, ὡς οὐ μένουσιν ἐπὶ τοῖς αὐ-
τοῖς πράγμασιν αἱ τῶν ἀθρώπων τύχαι. Δύναιο δ' ἄν,
ἔφη, τοῦτο ἐξ αὐτοῦ μάλιστα μαθεῖν ἐμοῦ, ὃς ἐν τῇ
μεγίστῃ πόλει κράτιστός ποτε εἶναι τῶν ἄλλων δο-
κῶν, νῦν ἔρημος καὶ ἄπολις καὶ ταπεινὸς ἔρριμμαι
τοῦτο πεισόμενος ὅ τι ἂν ἐχθρῷ ὄντι τοι δοκῇ. ὑπι-
σχνοῦμαι δέ σοι τοσαῦτα ἀγαθὰ ποιήσειν Οὐολού-
σκους φίλος τῷ ἔθνει γενόμενος, ὅσα κακὰ εἰργασά-
μην ἐχθρὸς ὤν. εἰ δέ τι ἄλλο γινώσκεις περὶ ἐμοῦ,
χρῆσαι τῇ ὀργῇ παραχρῆμα, καὶ θάνατον χάρισαί
μοι τὸν τάχιστον, αὐτοχειρίᾳ τε καὶ ἐπὶ τῆς ἑστίας
τῆς ἑαυτοῦ καθιερεύσας τὸν ἱκέτην.*

II. *Ἔτι δὲ αὐτοῦ ταῦτα λέγοντος ἐμβαλὼν τὴν* 1506

δεξιὰν ὁ Τύλλος καὶ ἀπὸ τῆς ἑστίας ἀναστήσας θαρρεῖν τε αὐτὸν ἐκέλευσεν, ὡς μηδὲν ἀνάξιον τῆς ἰδίας ἀρετῆς πεισόμενον καὶ πολλὰς αὐτῷ χάριτας εἰδέναι τῆς πρὸς ἑαυτὸν ἀφίξεως ἔφη, τιμήν τινα οὐ μικρὰν εἶναι καὶ ταύτην ἀποφαινόμενος· Οὐολούσκους τε αὐτῷ πάντας ὑπισχνεῖτο ποιήσειν φίλους ἀρξάμενος ἀπὸ τῆς ἑαυτοῦ πατρίδος· καὶ οὐδεμίαν ἐψεύσατο τῶν ὑποσχέσεων. χρόνου δέ τινος οὐ πολλοῦ διελθόντος βουλευομένοις τοῖς ἀνδράσι κατὰ σφᾶς, Μαρκίῳ τε καὶ Τύλλῳ, κινεῖν ἐδόκει τὸν πόλεμον. ὁ μὲν οὖν Τύλλος αὐτίκα μάλα ἐβούλετο πᾶσαν τὴν Οὐολούσκων δύναμιν παραλαβὼν ἐπὶ τὴν Ῥώμην χωρεῖν, ἕως ἐστασίαζέ τε καὶ ἡγεμόνας ἀπειροπολέμους εἶχεν· ὁ δὲ Μάρκιος αἰτίαν πρῶτον ᾤετο δεῖν εὐσεβῆ καὶ δικαίαν ἐνστήσασθαι τοῦ πολέμου, διδάσκων, ὡς ἁπάσαις μὲν πράξεσι θεοὶ συλλαμβάνουσι, μάλιστα δὲ ταῖς κατὰ πολέμους, ὅσῳ μείζους τέ εἰσι τῶν ἄλλων καὶ εἰς ἀδήλους φιλοῦσι κατασκήπτειν τύχας.
1507 ἐτύγχανον δὲ τότε Ῥωμαίοις καὶ Οὐολούσκοις ἐκεχειρίαι τοῦ πολέμου καὶ ἀνοχαὶ πρὸς ἀλλήλους οὖσαι σπονδαί τε διετεῖς ὀλίγῳ πρότερον χρόνῳ γενόμεναι. Ἐὰν μὲν οὖν ἀπερισκέπτως, ἔφη, καὶ διὰ τάχους τὸν πόλεμον ἐπιφέρῃς, τοῦ λελῦσθαι τὰς σπονδὰς αἴτιος ἔσῃ καὶ τὸ δαιμόνιον οὐχ ἕξεις εὐμενές· ἐὰν δὲ περιμείνῃς, ἕως ἐκεῖνοι τοῦτο ποιήσωσιν, ἀμύνεσθαι δόξεις καὶ λελυμέναις ταῖς σπονδαῖς βοηθεῖν. ὅπως δ᾿ ἂν τοῦτο γένοιτο, καὶ ὅπως ἂν ἐκεῖνοι μὲν ἄρξειαν παρασπονδεῖν, ἡμεῖς δὲ δόξαιμεν ὅσιον καὶ δίκαιον ἐπιφέρειν τὸν πόλεμον, ἐγὼ σὺν πολλῇ φροντίδι ἀνεύρηκα. δεῖ δὲ ὑφ᾿ ἡμῶν αὐτοὺς ἐξαπατηθέντας ἄρξαι τῆς παρανομίας. ὁ δὲ τρόπος τῆς ἐξαπάτης, ὃν ἐγὼ τέως μὲν ἀπόρρητον ἐφύλαττον ἀναμένων

τὸν οἰκεῖον αὐτοῦ καιρόν, νῦν δὲ σοῦ σπουδάζοντος ἔργου ἔχεσθαι θᾶττον ἐκφέρειν εἰς μέσον ἀναγκάζομαι, τοιόσδε ἐστίν· θυσίας ἐπιτελεῖν Ῥωμαῖοι μέλλουσι καὶ ἀγῶνας ἄγειν ἀπὸ πολλῶν χρημάτων σφόδρα λαμπρούς, ἀφίξονταί τε κατὰ θέαν ἐπὶ τούτους πολλοὶ τῶν ξένων. τοῦτον ἀναμείνας τὸν χρόνον ἴθι καὶ σὺ καὶ Οὐολούσκων ὅσους δύνασαι πλείστους 1508
παρασκεύασον ἐλθεῖν ἐπὶ τὴν θέαν· ὅταν δ' ἐν τῇ πόλει γένῃ, τῶν ἀναγκαιοτάτων τινά σοι φίλων κέλευσον ἐλθεῖν ὡς τοὺς ὑπάτους καὶ δι' ἀπορρήτων εἰπεῖν, ὅτι μέλλουσιν ἐπιτίθεσθαι τῇ πόλει Οὐολοῦσκοι νύκτωρ, καὶ ἐπὶ τοῦτο ἥκουσι τὸ ἔργον ἀθρόοι. εὖ γὰρ ἴσθι, ὡς εἰ τοῦτο ἀκούσειαν οὐδὲν ἔτι ἐνδοιάσαντες ἐκβαλοῦσιν ὑμᾶς ἐκ τῆς πόλεως, καὶ παρέξουσιν ἀφορμὴν δικαίας ὀργῆς.

III. Ὡς δὲ ἤκουσε ταῦτα ὁ Τύλλος, ὑπερηγάσθη τε καὶ τὸν παρόντα καιρὸν τῆς στρατείας ἀναβαλόμενος περὶ τὴν παρασκευὴν ἐγίνετο τοῦ πολέμου. ἐπεὶ δὲ καθῆκεν ὁ τῆς ἑορτῆς καιρός, Ἰουλίου τε καὶ Πιναρίου τὴν ὑπατείαν ἤδη παρειληφότων, ἡ κρατίστη τῶν Οὐολούσκων νεότης ἐξ ἁπάσης πόλεως ὡς ὁ Τύλλος ἠξίου παρῆν ἐπὶ τὴν τῶν ἀγώνων θέαν· καὶ κατεσκήνουν οἱ πλείους ἐν ἱεροῖς τε καὶ δημοσίοις τόποις οὐκ ἔχοντες καταγωγὰς ἐν οἰκίαις τε καὶ παρὰ ξένοις, καὶ ὁπότε διὰ τῶν στενωπῶν πορεύοιντο 1509
κατὰ συστροφὰς καὶ ἑταιρίας ἀθρόοι διεξῄεσαν, ὥστε καὶ λόγον ἤδη γίνεσθαι περὶ αὐτῶν ἀνὰ τὴν πόλιν καὶ ὑποψίας ἀτόπους. ἐν δὲ τούτῳ προσέρχεται τοῖς ὑπάτοις ὁ κατασκευασθεὶς ὑπὸ τοῦ Τύλλου μηνυτής, ὡς ὁ Μάρκιος ὑπέθετο, καὶ ὡς δὴ ἀπόρρητον πρᾶξιν κατὰ τῶν αὐτοῦ φίλων ἐχθροῖς μέλλων ἐκφέρειν ὅρκοις καταλαμβάνεται τοὺς ὑπάτους ὑπὲρ ἀσφαλείας

τε [αὐτὸς] τῆς αὐτοῦ καὶ τοῦ μηδένα Οὐολούσκων μαθεῖν, ὅστις ἦν ὁ τὴν μήνυσιν κατ' αὐτῶν πεποιημένος. καὶ μετὰ τοῦτο ἐπιφέρει τὴν περὶ τῆς ἐπιθέσεως τῆς κατεψευσμένης μήνυσιν. ἐδόκει τοῖς ἀνδράσιν ἀληθὴς εἶναι ὁ λόγος, καὶ αὐτίκα ἡ βουλὴ κατ' ἄνδρα ὑπὸ τῶν ὑπάτων κληθεῖσα συνῆκτο, καὶ παραχθεὶς ὁ μηνυτὴς τοὺς αὐτοὺς εἶπε καὶ πρὸς ἐκείνην τὰ πιστὰ λαβὼν λόγους. τοῖς δὲ καὶ πάλαι μὲν εἶναι τὸ πρᾶγμα ἐδόκει μεστὸν ὑποψίας, τοσαύτην νεότητα ἐξ ἑνὸς ἔθνους διαφόρου σφίσιν ἐπὶ τὴν θέαν ἐλθεῖν, προσελθούσης δὲ μηνύσεως, ἧς τὴν
1510 ἀπάτην ἠγνόουν, ἰσχὺν βεβαίαν ἡ δόξα ἔλαβεν, ἐδόκει τε πᾶσιν ἀπαλλάττειν τοὺς ἄνδρας ἐκ τῆς πόλεως πρὶν ἥλιον δῦναι, τοῖς δὲ μὴ πεισθεῖσιν ἐπικηρύξαι θάνατον, ἐπιμεληθῆναι δὲ τῆς ἀπαλλαγῆς αὐτῶν, ἵνα χωρὶς ὕβρεως καὶ μετ' ἀσφαλείας γένοιτο, τοὺς ὑπάτους.

IIII. Ταῦτα τῆς βουλῆς ψηφισαμένης, οἱ μὲν ἐκήρυττον διὰ τῶν στενωπῶν διεξιόντες ἀπιέναι Οὐολούσκους ἐκ τῆς πόλεως αὐτίκα μάλα κατὰ μίαν ἅπαντας ἐξιόντας πύλην τὴν καλουμένην Καπυΐνην, ἕτεροι δὲ παρέπεμπον τοὺς ἀπαλλαττομένους ἅμα τοῖς ὑπάτοις· ἔνθα μάλιστα ὤφθη ὅσον αὐτῶν τὸ πλῆθος ἦν καὶ ὡς ἀκμαῖον ἅπαν ὑφ' ἕνα καιρὸν καὶ κατὰ μίαν ἐξιόντων πύλην. πρῶτος δὲ αὐτῶν ὁ Τύλλος ἐξῄει διὰ ταχέων, καὶ καταλαβὼν οὐ πρόσω τῆς πόλεως τόπον ἐπιτήδειον, ἐν τούτῳ τοὺς ὑστεροῦντας ἀνελάμβανεν. ἐπειδὴ δὲ πάντες συνήχθη-
1511 σαν, ἐκκλησίαν ποιησάμενος πολλῇ καταβοῇ τῆς Ῥωμαίων πόλεως ἐχρήσατο, δεινὴν καὶ ἀφόρητον ἀποφαίνων τὴν ὕβριν, ἣν ὑβρισμένοι πρὸς αὐτῶν ἦσαν Οὐολοῦσκοι μόνοι τῶν ἄλλων ξένων ἐξελαθέν-

τες ἐκ τῆς πόλεως· καὶ λέγειν ἠξίου ταῦτα πρὸς τὴν ἑαυτοῦ πόλιν ἕκαστον, καὶ πράττειν, ὅπως παύσωνται τῆς ὕβρεως Ῥωμαῖοι δίκας παρασχόντες τῆς παρανομίας. ταῦτα εἰπὼν καὶ παραθήξας ἀνθρώπους ἀγανακτοῦντας ἐπὶ τῷ πάθει διέλυσε τὴν ἐκκλησίαν. ὡς δὲ ἀπαλλαγέντες εἰς τὰς ἑαυτῶν ἕκαστοι πατρίδας ἐδήλωσαν τοῖς ἄλλοις τὸν προπηλακισμὸν ἐπὶ μεῖζον ἐξαίροντες τὰ γενόμενα, ἠγανάκτει τε πᾶσα πόλις καὶ κατέχειν τὴν ὀργὴν οὐκ ἠδύνατο· διαπρεσβευομένη δὲ ἄλλη πρὸς ἄλλην εἰς μίαν ἀγορὰν ἅπαντας ἠξίου Οὐολούσκους συνιέναι, ἵνα κοινῇ χρήσαιντο γνώμῃ περὶ τοῦ πολέμου. ἐγίνετο δὲ ταῦτα τοῦ Τύλλου μάλιστα ἐνάγοντος, καὶ συνῆεσαν ἐξ ἁπάσης πόλεως οἵ τε ἐν τοῖς τέλεσι καὶ πολὺς ἄλλος ὄχλος εἰς τὴν Ἐχετρανῶν πόλιν· αὕτη γὰρ ἐδόκει 1512
καλλίστη κεῖσθαι ἐν συνόδῳ ταῖς ἄλλαις ἡ πόλις. ῥηθέντων δὲ πολλῶν λόγων, οὓς εἶπον οἱ δυναστεύοντες ἐν ἑκάστῃ πόλει, ψῆφος ἀνεδόθη τοῖς παροῦσι, καὶ ἦν ἡ νικῶσα γνώμη κινεῖν τὸν πόλεμον, ὡς Ῥωμαίων ἀρξάντων τῆς περὶ τὰς σπονδὰς παρανομίας.

V. Ὑπὲρ δὲ τοῦ τίνα χρὴ πολεμεῖν αὐτοῖς τρόπον προθέντων σκοπεῖν τῶν ἐν τοῖς τέλεσι, παρελθὼν ὁ Τύλλος συνεβούλευσεν αὐτοῖς καλεῖν τὸν Μάρκιον, καὶ παρ' ἐκείνου πυνθάνεσθαι, πῶς ἂν ἡ Ῥωμαίων καταλυθείη δύναμις· κράτιστα γὰρ ἁπάντων ἀνθρώπων εἰδέναι, πῇ τε κάμνει τὰ τῆς πόλεως πράγματα καὶ πῇ μάλιστα ἔρρωται. ἐδόκει ταῦτα, καὶ αὐτίκα πάντες ἐβόων καλεῖν τὸν ἄνδρα. καὶ ὁ Μάρκιος ἧς ἐβούλετο ἀφορμῆς λαβόμενος ἀνέστη κατηφὴς καὶ δεδακρυμένος, καὶ μικρὸν ἐπισχὼν χρόνον τοιούτους διέθετο λόγους· Εἰ μὲν ἡγούμην

ὑμᾶς ἅπαντας ὅμοια γινώσκειν περὶ τῆς ἐμῆς συμφορᾶς, οὐκ ἂν ὑπελάμβανον ἀναγκαῖον εἶναι περὶ
1513 αὐτῆς ἀπολογεῖσθαι· ἐνθυμούμενος δέ, ὡς ἐν πολλοῖς καὶ διαφόροις ἤθεσιν εἰκός, εἶναί τινας, οἷς παραστήσεται δόξα οὔτε ἀληθὴς οὔτε προσήκουσα περὶ ἐμοῦ, ὡς οὐκ ἂν ἄτερ αἰτίας ἀληθοῦς καὶ δικαίας ἐξήλασέ με ὁ δῆμος ἐκ τῆς πατρίδος, παντὸς μάλιστα οἴομαι δεῖν πρῶτον ὑπὲρ τῆς ἐμῆς φυγῆς ἐν κοινῷ πρὸς ἅπαντας ὑμᾶς ἀπολογήσασθαι. ἀλλ' ἀνάσχεσθέ μου, πρὸς θεῶν, καὶ οἱ κράτιστα ἐγνωκότες, ἃ πέπονθα ὑπὸ τῶν ἐχθρῶν καὶ ὡς οὐ προσῆκόν μοι ταύτης πεπείραμαι τῆς τύχης διεξιόντος, καὶ μὴ πρότερον ποθεῖτε ὅ τι χρὴ πράττειν ἀκοῦσαι, πρὶν ὁποῖός τις εἰμὶ ὁ τὴν γνώμην ἀποδειξάμενος ἐξετάσαι. ἔσται δὲ βραχὺς ὁ περὶ αὐτῶν, κἂν πρόσωθεν ἄρξωμαι, λόγος. Ῥωμαίοις τὸ μὲν ἐξ ἀρχῆς πολίτευμα ἦν μικτὸν ἔκ τε βασιλείας καὶ ἀριστοκρατίας· ἔπειτα ὁ τελευταῖος βασιλεὺς Ταρκύνιος τυραννίδα τὴν ἀρχὴν ἠξίου ποιεῖν. συστάντες οὖν ἐπ' αὐτὸν οἱ τῆς
1514 ἀριστοκρατίας ἡγεμόνες, ἐκεῖνον μὲν ἐξέβαλον ἐκ τῆς πόλεως, αὐτοὶ δὲ τὰ κοινὰ κατέσχον ἀρίστην καὶ σωφρονεστάτην ὡς ἅπαντες ὁμολογοῦσι καταστησάμενοι πολιτείαν. χρόνοις δὲ οὐ πολλοῖς τῶν νῦν πρότερον, ἀλλὰ τρίτον ἢ τέταρτον τοῦτο ἔτος, οἱ πενέστατοί τε καὶ ἀργότατοι τῶν πολιτῶν πονηροῖς χρησάμενοι προστάταις ἄλλα τε πολλὰ ἐξύβρισαν, καὶ τελευτῶντες καταλύειν τὴν ἀριστοκρατίαν ἐπεχείρουν. ἐφ' οἷς ἅπαντες μὲν οἱ τῆς βουλῆς προεστηκότες ἤχθοντο, καὶ ὅπως παύσωνται τῆς ὕβρεως οἱ κινοῦντες τὴν πολιτείαν σκοπεῖν ἠξίουν. ὑπὲρ ἅπαντας δὲ τοὺς ἀριστοκρατικούς, ἐκ μὲν τῶν πρεσβυτέρων Ἄππιος ἀνὴρ πολλῶν ἄξιος ἕνεκα ἐπαινεῖσθαι, ἐκ

δὲ τῶν νεωτέρων ἐγώ· καὶ λόγους ἐποιούμεθα διὰ παντὸς ἐπὶ τῆς βουλῆς ἐλευθέρους, οὐ δήμῳ πολεμοῦντες, ἀλλὰ πονηροκρατίαν ὑφορώμενοι, οὐδὲ καταδουλώσασθαί τινα βουλόμενοι Ῥωμαίων, ἀλλὰ τὸ μὲν ἐλεύθερον ἅπασιν ἀξιοῦντες [ἔχειν], τὴν δὲ 1515
προστασίαν τῶν κοινῶν ἀποδεδόσθαι τοῖς κρείττοσι.

VI. Ταῦτα ὁρῶντες οἱ πονηρότατοι τοῦ πλήθους ἐκεῖνοι προστάται, πρώτους ἔγνωσαν ἡμᾶς τοὺς φανερώτατα ἐναντιουμένους σφίσιν ἐκποδὼν ποιήσασθαι, οὐχ ἅμα ἀμφοτέροις ἐπιχειρήσαντες, ἵνα μὴ ἐπίφθονόν τε καὶ βαρὺ τὸ πρᾶγμα γένηται, ἀλλ' ἀπ' ἐμοῦ τοῦ νεωτέρου τε καὶ εὐμεταχειριστοτέρου ἀρξάμενοι. τὸ μὲν οὖν πρῶτον ἄκριτόν με ἐπεχείρησαν ἀπολέσαι, ἔπειτα ἔκδοτον παρὰ τῆς βουλῆς ἠξίουν ἐπὶ θανάτῳ λαβεῖν· ἀποτυχόντες δὲ ἀμφοτέρων προὐκαλέσαντο ἐπὶ δίκην, ἣν αὐτοὶ δικάσειν ἔμελλον, τυραννίδος ἐπιβαλόντες αἰτίαν. καὶ οὐδὲ τοῦτ' ἔμαθον, ὅτι δήμῳ τύραννος οὐδεὶς πολεμεῖ μετὰ τῶν ἀρίστων συστάς, ἀλλὰ τἀναντία μετὰ τοῦ δήμου τὸ κράτιστον ἐκ τῆς πόλεως ἀναιρεῖ μέρος· δικαστήριον τε οὐχ ὅπερ ἦν πάτριον ἀπέδωκάν μοι τὴν λοχῖτιν κα- 1516
λέσαντες ἐκκλησίαν, ἀλλ' ὃ πάντες ὁμολογοῦσι πονηρότατον εἶναι δικαστήριον καὶ ἐπ' ἐμοῦ πρώτου καὶ μόνου γενόμενον, ἐν ᾧ πλέον ἔχειν ἔμελλον οἱ θῆτες καὶ ἀνέστιοι καὶ τοῖς ἀλλοτρίοις ἐπιβουλεύοντες βίοις τῶν ἀγαθῶν καὶ δικαίων καὶ τὰ κοινὰ σῴζεσθαι βουλομένων. τοσοῦτο δὲ ἄρα μοι περιῆν τοῦ μηδὲν ἀδικεῖν, ὥστ' ἐν ὄχλῳ κρινόμενος, οὗ τὸ πλέον μισόχρηστον ἦν καὶ διὰ τοῦτ' ἐχθρὸν ἐμοί, δυσὶ μόνον ἑάλων ψήφοις, ἀποτιθεμένων τὴν ἐξουσίαν τῶν δημάρχων, εἰ μὴ καταδικασθείην ἐγώ, καὶ τὰ ἔσχατα

πείσεσθαι πρὸς ἐμοῦ λεγόντων καὶ πάσῃ σπουδῇ καὶ προθυμίᾳ παρὰ τὸν ἀγῶνα κατ' ἐμοῦ χρησαμένων. τοιαῦτα δὴ πεπονθὼς ἐγὼ πρὸς τῶν ἐμαυτοῦ πολιτῶν ἀβίωτον ἡγησάμην τὸν λοιπὸν ἔσεσθαί μοι βίον, εἰ μὴ λάβοιμι παρ' αὐτῶν δίκας· καὶ διὰ τοῦτ' ἐξόν μοι ζῆν ἀπραγμόνως, εἴτ' ἐν ταῖς Λατίνων πόλεσιν ἠβουλόμην κατὰ τὸ συγγενές, εἴτ' ἐν ταῖς νεοκτίστοις ἃς οἱ πατέρες ἡμῶν ἀπῴκισαν, οὐκ ἠβουλήθην, ἐφ'
1517 ὑμᾶς δὲ κατέφυγον, οὓς ἠπιστάμην πλεῖστά τε ὑπὸ Ῥωμαίων ἠδικημένους καὶ μάλιστα αὐτοῖς ἀπεχθομένους, ἵνα κοινῇ μεθ' ὑμῶν τιμωρησαίμην αὐτούς, ὅση μοι δύναμις, λόγοις τε ἔνθα δεῖ λόγων καὶ ἔργοις ὅταν ἔργων δέῃ. χάριν τε ὑμῖν μεγάλην οἶδα τῆς τε ὑποδοχῆς μου, καὶ ἔτι μᾶλλον τῆς τιμῆς, ᾗ με τιμᾶτε οὐθὲν οὔτε μνησικακήσαντες οὔτε ὑπολογισάμενοι ὧν ὑπ' ἐμοῦ πρότερόν γε ἐπάθετε κατὰ τοὺς πολέμους.

VII. Φέρε δή, τίς ἂν εἴην ἀνήρ, εἰ δόξης καὶ τιμῶν, ὧν προσῆκέ μοι παρὰ τοῖς ἐμαυτοῦ πολίταις τυγχάνειν, παρὰ τῶν εὖ παθόντων ἀποστερηθείς, πρὸς δὲ τούτοις πατρίδος τε καὶ οἴκου καὶ φίλων καὶ θεῶν πατρῴων καὶ τάφων προγονικῶν καὶ παντὸς ἄλλου ἀπελαθεὶς ἀγαθοῦ, παρ' ὑμῖν δὲ ἅπαντα ταῦτα εὑρών, οἷς ἐκείνων χάριν ἐπολέμουν, εἰ μὴ γενοίμην χαλεπὸς μὲν οἷς ἀντὶ πολιτῶν ἐχθροῖς κέχρημαι, χρηστὸς δὲ οἷς ἀντὶ πολεμίων φίλοις; ἀλλ'
1518 ἔγωγε οὐδ' ἐν ἀνδρὸς μοίρᾳ θείην ἄν, ὅστις μήτε τὸ πολεμοῦν δι' ὀργῆς ἔχει μήτε τὸ σῷζον ἑαυτὸν δι' εὐνοίας. πατρίδα τε ἡγοῦμαι οὐ τὴν ἀπαρνησαμένην με πόλιν, ἀλλ' ἧς ἀλλότριος ὢν πολίτης γέγονα· γῆν τε οὐκ ἐν ᾗ ἠδίκημαι φίλην, ἀλλ' ἐν ᾗ τὸ ἀσφαλὲς ἔχω. καὶ ἂν θεός τε συλλαμβάνῃ καὶ τὰ ὑμέτερα ὡς

εἰκὸς πρόθυμα ᾖ, μεγάλην καὶ ταχεῖαν ἐλπίζω γενήσεσθαι μεταβολήν. εὖ γὰρ ἴστε, ὅτι πολλῶν ἤδη πολέμων πειραθέντες Ῥωμαῖοι, οὐθένας μᾶλλον ἔδεισαν ὑμῶν, οὐδ' ἐστὶν ἐφ' ᾧ μᾶλλον σπουδάζοντες διατελοῦσιν, ἢ ὅπως τὸ ὑμέτερον ἔθνος ἀσθενὲς ἀποδείξουσι. καὶ διὰ τοῦτο τὰς μὲν πολέμῳ λαβόντες ὑμῶν ἔχουσι πόλεις, τὰς δὲ φιλίας ἐλπίδι παρακρουσάμενοι, ἵνα μὴ καθ' ἓν ἅπαντες γενόμενοι κοινὸν ἐξενέγκητε κατ' αὐτῶν πόλεμον. ἐὰν οὖν τἀναντία ὑμεῖς ἀντιφιλοτιμούμενοι διατελῆτε, καὶ μίαν ἅπαντες ἔχητε τοῦ πολέμου γνώμην, ὃ ποιεῖτε νυνί, ῥᾳ- 1519
δίως αὐτῶν τὸ κράτος παύσετε.

VIII. Ὃν δὲ τρόπον ἀγωνιεῖσθε καὶ πῶς χρήσεσθε τοῖς πράγμασιν, ἐπειδὴ γνώμην ἀξιοῦτέ με ἀποφήνασθαι, εἴτ' ἐμπειρίαν μοι μαρτυροῦντες εἴτ' εὔνοιαν εἴτε καὶ ἀμφότερα, φράσω καὶ οὐκ ἀποκρύψομαι. πρῶτον μὲν οὖν ὑμῖν παραινῶ σκοπεῖν, ὅπως εὐσεβῆ καὶ δικαίαν ποριήσησθε τοῦ πολέμου πρόφασιν. εὐσεβὴς δὲ καὶ δικαία τοῦ πολέμου πρόφασις ἥτις ἂν γένοιτο καὶ ἅμα συμφέρουσα ὑμῖν ἀκούσατέ μου. Ῥωμαίοις ἡ μὲν ἐξ ἀρχῆς ὑπάρξασα γῆ βραχεῖά ἐστι καὶ λυπρά, ἡ δ' ἐπίκτητος, ἣν τοὺς περιοίκους ἀφελόμενοι ἔχουσι, πολλὴ καὶ ἀγαθή· καὶ εἰ τῶν ἠδικημένων ἕκαστοι τὴν ἑαυτῶν ἀξιοῖεν ἀπολαβεῖν, οὐδὲν οὕτως μικρὸν οὐδ' ἀσθενὲς οὐδὲ ἄπορον, ὡς τὸ Ῥωμαίων ἄστυ γενήσεται. τούτου δὲ οἴομαι δεῖν ὑμᾶς 1520
ἄρξαι. πέμπετε οὖν πρέσβεις ὡς αὐτούς, ἀπαιτοῦντες ἃς κατέχουσιν ὑμῶν πόλεις καὶ ὅσα τείχη ἐν τῇ ὑμετέρᾳ γῇ ἐνετειχίσαντο ἀξιοῦντες ἐκλιπεῖν, καὶ εἴ τι ἄλλο βίᾳ σφετερισάμενοι τῶν ὑμετέρων ἔχουσι πείθοντες ἀποδιδόναι. πολέμου δὲ μήπω ἄρχετε πρὶν ἢ λαβεῖν τὰς παρ' αὐτῶν ἀποκρίσεις. ἐὰν γὰρ

ταῦτα ποιήσητε, δυεῖν ὧν βούλεσθε ὑπάρξει θάτερον ὑμῖν· ἢ τὰ ἑαυτῶν ἀπολήψεσθε ἄνευ κινδύνων καὶ δαπάνης, ἢ καλὴν καὶ δικαίαν πρόφασιν εἰληφότες ἔσεσθε τοῦ πολέμου. τὸ γὰρ μὴ τῶν ἀλλοτρίων ἐπιθυμεῖν, ἀλλὰ τὰ ἑαυτῶν ἀπαιτεῖν καὶ μὴ τυγχάνοντας τούτου πολεμεῖν, ἅπαντες ἀνομολογήσουσιν εἶναι καλόν. φέρε δή, τί ποιήσειν οἴεσθε Ῥωμαίους ταῦτα ὑμῶν προυλομένων; πότερον ἀποδώσειν τὰ χωρία ὑμῖν; καὶ τί κωλύσει πάντων αὐτοὺς ἀποστῆναι τῶν ἀλλοτρίων; ἥξουσι γὰρ Αἰκανοί τε καὶ Ἀλβανοὶ καὶ Τυρρηνοὶ καὶ πολλοὶ ἄλλοι τὴν ἑαυτῶν ἕκαστοι γῆν
1521 *ἀποληψόμενοι. ἢ καθέξειν τὰ χωρία καὶ μηθὲν τῶν δικαίων ποιήσειν; ὅπερ ἐγὼ νομίζω. οὐκοῦν ἀδικεῖσθαι πρότεροι λέγοντες ὑπ' αὐτῶν κατὰ τὸ ἀναγκαῖον ἐπὶ τὰ ὅπλα χωρήσετε, καὶ συμμάχους ἕξετε ὅσοι τὰ ἑαυτῶν ἀφαιρεθέντες ἀπεγνώκασιν ἄλλως ἂν ἔτι αὐτὰ ἢ πολεμοῦντες οὐκ ἀπολήψεσθαι. κράτιστος δὲ ὁ καιρὸς καὶ οἷος οὐχ ἕτερος ἐπιθέσθαι Ῥωμαίοις, ὃν ἡ τύχη τοῖς ἀδικουμένοις οὐδ' ἂν ἐλπισθέντα παρεσκεύασεν, ἐν ᾧ στασιάζουσι καὶ ὑποπτεύουσιν ἀλλήλους καὶ ἡγεμόνας ἔχουσιν ἀπείρους πολέμου. ἃ μὲν οὖν ὑποτίθεσθαι ἔδει λόγοις καὶ παραινεῖν φίλοις, μετὰ πάσης εὐνοίας καὶ πίστεως εἰρημένα ὑπ' ἐμοῦ ταῦτ' ἐστίν. ἃ δὲ παρ' αὐτὰ τὰ ἔργα ἑκάστοτε προορᾶσθαί τε καὶ μηχανᾶσθαι δεήσει, τοῖς ἡγεμόσι τῆς δυνάμεως ἐπιτρέψατε διανοεῖ-*
1522 *σθαι. πρόθυμον γὰρ καὶ τοὐμὸν ἔσται, ἐν ᾧ ἄν με τάττητε τόπῳ, καὶ πειράσομαι μηδενὸς εἶναι χείρων μήτε στρατιώτου μήτε λοχαγοῦ μήτε ἡγεμόνος· ἀλλὰ καταχρῆσθέ μοι λαβόντες, ὅπου ἂν μέλλω τι ὑμᾶς ὠφελήσειν, καὶ εὖ ἴστε ὅτι, εἰ πολεμῶν ὑμῖν μεγάλα*

βλάπτειν δυνατὸς ἦν, καὶ σὺν ὑμῖν ἀγωνιζόμενος μεγάλα δυνήσομαι ὠφελεῖν.

VIIII. Τοιαῦτα μὲν ὁ Μάρκιος εἶπεν. οἱ δὲ Οὐολοῦσκοι λέγοντός τε τοῦ ἀνδρὸς ἔτι δῆλοι ἦσαν ἀγάμενοι τοὺς λόγους, καὶ ἐπειδὴ ἐπαύσατο μεγάλῃ βοῇ πάντες ἐπεσημήναντο, ὡς τὰ κράτιστα ὑποτιθεμένῳ· λόγον τε οὐθενὶ προθέντες ἐπικυροῦσι τὴν γνώμην. γραφέντος δὲ τοῦ δόγματος, εὐθὺς ἐξ ἑκάστης πόλεως τοὺς ἐπιφανεστάτους ἄνδρας ἑλόμενοι πρεσβευτὰς εἰς τὴν Ῥώμην ἀπέστειλαν· τῷ δὲ Μαρκίῳ ψηφίζονται βουλῆς τε μετουσίαν ἐν ἁπάσῃ πόλει, καὶ ἀρχὰς ἐξεῖναι πανταχόσε μετιέναι, καὶ τῶν ἄλλων ὁπόσα τιμιώτατα ἦν παρ' αὐτοῖς μετέχειν. καὶ πρὶν 1523 ἢ τὰς Ῥωμαίων ἀποκρίσεις ἀναμεῖναι, πάντες ἔργου εἴχοντο παρασκευαζόμενοι τὰ πολέμια· ὅσοι τε ἦσαν αὐτῶν ἄθυμοι τέως κακωθέντες ἐν ταῖς προτέραις μάχαις, τότε πάντες ἐρρώσθησαν ὡς τὴν Ῥωμαίων καθαιρήσοντες ἰσχύν. οἱ δ' εἰς τὴν Ῥώμην ἀποσταλέντες ὑπ' αὐτῶν πρέσβεις, καταστάντες ἐπὶ τὴν βουλὴν ἔλεγον· Ὅτι Οὐολούσκοις περὶ πολλοῦ ἐστι καταλύσασθαι τὰ πρὸς Ῥωμαίους ἐγκλήματα, καὶ τὸν λοιπὸν χρόνον εἶναι φίλοις καὶ συμμάχοις ἄνευ δόλου καὶ ἀπάτης. ἔσεσθαι δὲ τὸ πιστὸν αὐτοῖς τῆς φιλίας βέβαιον ἀπέφαινον, εἰ κομίσαιντο γῆν τε τὴν ἑαυτῶν καὶ πόλεις ἃς ὑπὸ Ῥωμαίων ἀφῃρέθησαν· ἄλλως δὲ οὔτε εἰρήνην οὔτε φιλότητα βεβαίαν ὑπάρξειν αὐτοῖς· τὸ γὰρ ἀδικούμενον ἀεὶ πολέμιον εἶναι τῷ πλημμελοῦντι φύσει. ἠξίουν τε μὴ καταστῆσαι σφᾶς εἰς ἀνάγκην πολέμου τῶν δικαίων ἀποτυγχάνοντας.

X. Ὡς δὲ ταῦτ' εἶπον οἱ πρέσβεις, ἐβουλεύοντο κατὰ σφᾶς οἱ σύνεδροι μεταστησάμενοι τοὺς ἄνδρας,

1524 καὶ ἐπειδὴ ἔκριναν ἃς χρὴ ἀποκρίσεις ποιήσασθαι, καλέσαντες αὐτοὺς πάλιν ἐπὶ τὸν σύλλογον ταύτην ἔδοσαν τὴν ἀπόφασιν. Οὐ λανθάνετε ἡμᾶς, ὦ Οὐολοῦσκοι, φιλίας μὲν οὐδὲν δεόμενοι, πρόφασιν δ' εὐπρεπῆ λαβεῖν βουλόμενοι τοῦ πολέμου. ἃ γὰρ ἥκετε παρ' ἡμῶν ἀπαιτοῦντες, καλῶς ἐπίστασθε οὐδέποτε ληψόμενοι· χρῄζετε γὰρ ἀδίκων τε καὶ ἀδυνάτων. εἰ μὲν οὖν δόντες ἡμῖν τὰ χωρία, ἔπειτα μεταδόξαν ὑμῖν νῦν ἀπαιτεῖτε, ἀδικεῖσθε μὴ κομιζόμενοι· εἰ δὲ πολέμῳ ἀφαιρεθέντες οὐκέτι αὐτῶν ὄντες κύριοι, ἀδικεῖτε τῶν ἀλλοτρίων ἐφιέμενοι. ἡμεῖς δὲ κρατίστας ἡγούμεθα κτήσεις, ἃς ἂν πολέμῳ κρατήσαντες λάβωμεν, οὔτε πρῶτοι καταστησάμενοι νόμον τόνδε, οὔτε αὐτὸν ἀνθρώπων ἡγούμενοι εἶναι μᾶλλον ἢ οὐχὶ θεῶν· ἅπαντάς τε καὶ Ἕλληνας καὶ βαρβάρους εἰδότες. αὐτῷ χρωμένους οὐκ ἂν ἐνδοίημεν ὑμῖν μαλακὸν οὐδέν, οὐδ' ἂν ἀποσταίημεν ἔτι τῶν δορυκτήτων. πολλὴ γὰρ ἂν εἴη κακότης, εἴ τις ἃ μετ' ἀρετῆς καὶ ἀνδρείας ἐκτήσατο, ταῦτα ὑπὸ
1525 μωρίας τε καὶ δειλίας ἀφαιρεθείη. πολεμεῖν τε οὔτε μὴ βουλομένους ὑμᾶς ἀναγκάζομεν, οὔτε προθυμουμένους παραιτούμεθα, ἂν δὲ ἄρξησθε ἀμυνούμεθα. ταῦτα Οὐολούσκοις ἀπαγγέλλετε, καὶ λέγετε, ὅτι λήψονται μὲν πρότεροι τὰ ὅπλα ἐκεῖνοι, θήσομεν δὲ ἡμεῖς ὕστεροι.

XI. Ταύτας οἱ πρέσβεις τὰς ἀποκρίσεις λαβόντες ἀπήγγειλαν τῷ πλήθει τῶν Οὐολούσκων. συναχθείσης οὖν αὖθις ἐκκλησίας, μετὰ τοῦτο κυροῦται δόγμα κοινὸν τοῦ ἔθνους προειπεῖν Ῥωμαίοις τὸν πόλεμον. ἔπειτα αἱροῦνται στρατηγοὺς αὐτοκράτορας τοῦ πολέμου Τύλλον τε καὶ Μάρκιον, δυνάμεις τε ψηφίζονται καταγράφειν καὶ χρήματα εἰσφέρειν καὶ τἄλλα παρασκευάσασθαι ὅσων ὑπελάμβανον δεήσειν

τῷ πολέμῳ. μελλούσης δὲ διαλύεσθαι τῆς ἐκκλησίας ἀναστὰς ὁ Μάρκιος ἔφη· Ἃ μὲν ἐψήφισται τὸ κοινὸν 1526
ὑμῶν ἔχει καλῶς καὶ γινέσθω κατὰ τὸν οἰκεῖον ἕκαστα καιρόν· ἐν ὅσῳ δὲ τὰ στρατεύματα μέλλετε καταγράφειν, καὶ τἆλλα εὐτρεπίζειν ἕξοντά τινας ὥσπερ εἰκὸς ἀσχολίας καὶ διατριβάς, ἐγὼ καὶ Τύλλος ἔργου ἐχώμεθα. ὅσοις οὖν ὑμῶν βουλομένοις ἐστὶ προνομεῦσαι τὴν τῶν πολεμίων, καὶ πολλὴν ἀποτεμέσθαι λείαν, ἴτε σὺν ἡμῖν. ὑποδέχομαι δὲ ὑμῖν ἐὰν θεὸς συλλάβῃ, πολλὰς καὶ καλὰς δώσειν ὠφελείας. ἔτι γὰρ ἀπαράσκευοί εἰσι Ῥωμαῖοι δύναμιν οὔπω συνεστηκυῖαν ὁρῶντες ὑμετέραν, ὥστε ἀδεῶς ἡμῖν ὑπάρξει πᾶσαν ὅσην ἂν βουλώμεθα τῆς ἐκείνων χώρας καταδραμεῖν.

XII. Ἀποδεξαμένων δὲ καὶ ταύτην τὴν γνώμην τῶν Οὐολούσκων, ἐξῄεσαν οἱ στρατηγοὶ διὰ ταχέων, πρὶν ἔκπυστα γενέσθαι Ῥωμαίοις τὰ βουλεύματα, πολλὴν ἐπαγόμενοι στρατιὰν ἑκούσιον· ἧς μέρος μὲν ὁ Τύλλος ἔχων εἰς τὴν Λατίνων χώραν ἐνέβαλεν, 1527
ἵνα περισπάσειε τῶν πολεμίων τὴν ἐκεῖθεν ἐπικουρίαν· τὸ δὲ λοιπὸν ὁ Μάρκιος ἄγων ἐπὶ τὴν Ῥωμαίων ἤλασεν. οἷα δὲ ἀπροσδοκήτου κακοῦ τοῖς κατὰ τὴν χώραν διατρίβουσιν ἐπιπεσόντος, πολλὰ μὲν ἑάλω σώματα Ῥωμαίων ἐλεύθερα, πολλὰ δὲ ἀνδράποδα, βοῶν τε καὶ ὑποζυγίων καὶ τῶν ἄλλων βοσκημάτων χρῆμα οὐκ ὀλίγον· σῖτός τε ὅσος ἐγκατελήφθη καὶ σίδηρος καὶ ὅσοις ἄλλοις χώρα γεωργεῖται, τὰ μὲν ἡρπάσθη, τὰ δὲ διεφθάρη. τελευτῶντες γὰρ καὶ πῦρ εἰς τὰς αὐλὰς φέροντες ἐνέβαλλον Οὐολοῦσκοι, ὥστε πολλοῦ χρόνου μηδ' ἀναλαβεῖν αὐτὰς δύνασθαι τοὺς ἀποβαλόντας. μάλιστα δὲ τοῦτ' ἔπασχον αἱ τῶν δημοτῶν κτήσεις, αἱ δὲ τῶν πατρι-

κίων ἔμειναν ἀσινεῖς· εἰ δέ τινες ἐβλάβησαν, εἰς ἀνδράποδα καὶ βοσκήματα ἔδοξαν βλαβῆναι. τοῦτο γὰρ ὑπὸ τοῦ Μαρκίου παρηγγέλλετο τοῖς Οὐολούσκοις,
1528 ἵνα δι᾽ ὑποψίας ἔτι μᾶλλον οἱ πατρίκιοι γένωνται τοῖς δημοτικοῖς, καὶ μὴ ἐξαιρεθείη τὸ στασιάζον ἐκ τῆς πόλεως, ὅπερ καὶ συνέβη. ὡς γὰρ ἠγγέλθη τοῖς Ῥωμαίοις ἡ καταδρομὴ τῆς χώρας, καὶ ἔγνωσαν οὐκ ἐξ ἴσου γεγονυῖαν ἅπασι τὴν συμφοράν, κατεβόων μὲν τῶν πλουσίων οἱ πένητες ὡς ἐναγόντων σφίσι τὸν Μάρκιον, ἀπελογοῦντο δὲ οἱ πατρίκιοι καὶ κακουργίαν τινὰ τοῦ στρατηγοῦ ταύτην ἀπέφαινον. βοηθεῖν δὲ τοῖς ἀπολλυμένοις ἢ σώζειν τὰ περιόντα δι᾽ ὑποψίαν τε ἀλλήλων καὶ δέος προδοσίας οὐθεὶς ἠξίου· ὥστε κατὰ πολλὴν ἄδειαν ὁ Μάρκιος ἀπῆγε τὴν στρατιάν, καὶ κατέστησεν ἅπαντας ἐπὶ τὰ οἰκεῖα παθόντας μὲν οὐδὲν δεινόν, δράσαντας δὲ ὅσα ἠξίουν, καὶ πολλῶν εὐπορήσαντας χρημάτων. ἧκε δὲ καὶ ὁ Τύλλος ὀλίγον ὕστερον ἐκ τῆς Λατίνων χώρας πολλὰς ἐπαγόμενος ὠφελείας· οὐδὲ γὰρ ἐκεῖνοι δύναμιν ἔσχον ὁμόσε χωρεῖν τοῖς πολεμίοις μαχησόμενοι ἀπαράσκευοί τε ὄντες καὶ παρ᾽ ἐλπίδα τοῦ δεινοῦ σφίσιν ἐπιπεσόντος. ἐκ δὲ τούτου πᾶσα πόλις ἐπῆρτο
1529 ταῖς ἐλπίσι, καὶ θᾶττον ἢ ὡς ἄν τις ὑπέλαβεν ἥ τε καταγραφὴ τῶν στρατιωτῶν ἐγίνετο, καὶ τἄλλα ὑπηρετεῖτο ὅσων τοῖς στρατηγοῖς ἔδει.

XIII. Ἐπειδὴ δὲ συνῆκτο ἤδη πᾶσα ἡ δύναμις, ἐβουλεύετο μετὰ τοῦ συνάρχοντος ὁ Μάρκιος, ὅπως χρηστέον τοῖς λοιποῖς πράγμασιν. ἔφη δ᾽ οὖν λέγων· Ἐμοὶ δοκεῖ, ὦ Τύλλε, κράτιστον εἶναι νείμασθαι τὰς δυνάμεις ἡμᾶς διχῇ· ἔπειτα τὸν μὲν ἕτερον ἡμῶν ἄγοντα τοὺς ἀκμαιοτάτους καὶ προθυμοτάτους ὁμόσε χωρεῖν τοῖς πολεμίοις μαχησόμενον, καὶ εἰ

μὲν ὑπομενοῦσιν εἰς χεῖρας ἡμῖν ἰέναι μιᾷ κρῖναι
τὸν ἀγῶνα μάχῃ, εἰ δ' ἀποκνήσουσιν ὡς ἐγὼ πεί-
θομαι στρατιᾷ νεοσυλλέκτῳ καὶ ἡγεμόσιν ἀπείροις
πολέμου τὸν ὑπὲρ τῶν ὅλων κίνδυνον ἐπιτρέπειν,
τήν τε χώραν αὐτῶν ἐπιόντα πορθεῖν καὶ τοὺς συμ-
μάχους περισπᾶν καὶ τὰς ἀποικίας ἀναιρεῖν καὶ πᾶν 1530
ἄλλο κακὸν ὅ τι δύναιτο ποιεῖν. τὸν δὲ ἕτερον ἐν-
θάδε ὑπομένοντα φυλακὴν ποιεῖσθαι τῆς τε χώρας
καὶ τῶν πόλεων, μὴ λάθωσιν ἀφυλάκτοις ἐπιπεσόν-
τες αὐτοῖς οἱ πολέμιοι, καὶ πρᾶγμα αἴσχιστον πάθω-
μεν, ἐν ᾧ τῶν ἀπόντων ἐφιέμεθα τὰ παρόντα ἀφαι-
ρεθέντες. ἀλλὰ χρὴ τὸν ἐνθάδε ὑπομένοντα ἤδη
τείχη τε ἀνορθοῦν ὅσα πέπτωκε καὶ τάφρους ἀνακα-
θαίρειν καὶ φρούρια ὀχυροῦν, ἵνα τοῖς γεωργοῦσι
τὴν χώραν ὑπάρχωσι καταφυγαί, στρατιάν τε ἄλλην
προσκαταγράφειν καὶ τροφὰς τοῖς ἔξω οὖσιν ἐπιχο-
ρηγεῖν καὶ ὅπλα χαλκεύειν καὶ εἴ τι ἄλλο ἀναγκαῖον
ἔσται πρᾶγμα ὀξέως ὑπηρετεῖν. δίδωμι δέ σοι τὴν
αἵρεσιν, εἴτε τῆς ὑπερορίου στρατιᾶς εἴτε τῆς ἐνθάδε
ὑπομενούσης ἐθέλεις στρατηγεῖν. ταῦτα λέγοντος
αὐτοῦ σφόδρα ἠγάσθη τὴν γνώμην ὁ Τύλλος, καὶ
τὸ δραστήριον τοῦ ἀνδρὸς εἰδὼς καὶ ἐπιτυχὲς ἐπέ-
τρεψεν ἐκείνῳ τῆς ἔξω στρατιᾶς ἄρχειν.

XIIII. Καὶ ὁ Μάρκιος οὐθὲν ἔτι διαμελλήσας 1531
ἧκεν ἄγων τὴν δύναμιν ἐπὶ Κιρκαίαν πόλιν, ἐν ᾗ
κληροῦχοι Ῥωμαίων ἦσαν ἅμα τοῖς ἐπιχωρίοις πολι-
τευόμενοι, καὶ παραλαμβάνει τὴν πόλιν ἐξ ἐφόδου.
ὡς γὰρ ἔγνωσαν οἱ Κιρκαῖοι κρατουμένην σφῶν τὴν
χώραν καὶ προσάγουσαν τῷ τείχει τὴν στρατιάν,
ἀνοίξαντες τὰς πύλας ἐξῄεσαν ὁμόσε τοῖς πολεμίοις
ἄνοπλοι παραλαβεῖν τὴν πόλιν ἀξιοῦντες· ὅπερ αὐ-
τοῖς αἴτιον τοῦ μηδὲν παθεῖν ἀνήκεστον ἐγένετο.

οὔτε γὰρ αὐτῶν ἀπέκτεινεν ὁ στρατηγὸς οὐδένα, οὔτε ἐξήλασεν ἐκ τῆς πόλεως· ἐσθῆτα δὲ τοῖς στρατιώταις καὶ τροφὰς εἰς μῆνα ἱκανὰς καὶ ἀργύριόν τι μέτριον λαβὼν ἀπῆγε τὴν δύναμιν, ὀλίγην μοῖραν ἐν τῇ πόλει καταλιπὼν τῆς τε ἀσφαλείας τῶν ἐνοικούντων ἕνεκα, μή τι ὑπὸ Ῥωμαίων πάθωσι κακόν, καὶ τοῦ μηδὲν ὕστερον νεωτερίσαι. εἰς δὲ τὴν Ῥώμην ὡς ἠγγέλθη τὰ γενόμενα πολὺ πλείων ταραχὴ καὶ θόρυβος ἦν, τῶν μὲν πατρικίων τὸν δῆμον ἐχόντων δι' αἰτίας, ὅτι πολεμιστὴν ἄνδρα καὶ δραστήριον καὶ φρονήματος εὐγενοῦς μεστὸν ψευδεῖ περιβαλόντες αἰτίᾳ τῆς πόλεως ἀπήλασαν καὶ παρεσκεύασαν ἡγεμόνα Οὐολούσκοις γενέσθαι· τῶν δὲ προεστηκότων τοῦ δή-
1532 *μου κατηγορίας τοῦ συνεδρίου ποιουμένων, καὶ τὸ πρᾶγμα ὅλον ἐξ ἐπιβουλῆς ὑπ' ἐκείνων κατεσκευάσθαι λεγόντων, τόν τε πόλεμον οὐ κοινὸν ἅπασιν, ἀλλὰ σφίσι μόνοις ἐπάγεσθαι σκηπτομένων· καὶ ἦν τὸ κακοηθέστατον τοῦ δήμου μέρος ἅμα τούτοις. στρατιὰς δὲ καταγράφειν ἢ καλεῖν τοὺς συμμάχους ἢ κατασκευάσασθαι τὰ κατεπείγοντα διὰ τὰ πρὸς ἀλλήλους ἔχθη καὶ τὰς ἐν ταῖς ἐκκλησίαις κατηγορίας οὐδ' εἰς νοῦν ἐλάμβανον.*

XV. *Τοῦτο καταμαθόντες οἱ πρεσβύτατοι [τῶν] Ῥωμαίων, συστραφέντες ἔπειθον ἰδίᾳ τε καὶ ἐν κοινῷ τοὺς στασιωδεστάτους τῶν δημοτικῶν παύσασθαι τῶν εἰς τοὺς πατρικίους ὑποψιῶν τε καὶ κατηγοριῶν· διδάσκοντες ὡς εἰ δι' ἑνὸς ἀνδρὸς ἐπιφανοῦς φυγὴν τοσοῦτος κίνδυνος κατέσχε τὴν πόλιν, τί χρὴ προσδοκᾶν, ἐὰν ἀναγκασθῶσιν οἱ πολλοὶ τῶν πατρικίων προπηλακισθέντες ὑπὸ τοῦ δήμου τὸ αὐτὸ φρονῆσαι· καὶ κατέσχον οὗτοι τὴν ἀκοσμίαν τοῦ πλήθους. παυσαμένου δὲ τοῦ πολλοῦ θορύβου συνελθοῦσα ἡ βουλή,*

τοῖς μὲν ἀπὸ τοῦ κοινοῦ τῶν Λατίνων παροῦσι πρε- 1533
σβευταῖς ἐπὶ συμμαχίας αἴτησιν ἀπεκρίνατο, μὴ ῥᾴδιον εἶναι σφίσι βοήθειαν ἀποστέλλειν κατὰ τὸ παρόν· αὐτοῖς δὲ ἐκείνοις ἐπιτρέπειν τὴν ἑαυτῶν στρατιὰν καταγράφειν καὶ ἡγεμόνας τῆς δυνάμεως ἰδίους, ἀποδεῖξαι ἕως ἂν αὐτοὶ ἐκπέμψωσι δύναμιν. ἐν γὰρ ταῖς συνθήκαις, αἷς ἐποιήσαντο πρὸς αὐτοὺς περὶ φιλίας, ἀπόρρητον ἦν τούτων ἑκάτερον. τοῖς δὲ ὑπάτοις ἐφῆκαν στρατόν τε συναγαγεῖν ἐκ καταλόγου καὶ τὴν πόλιν διὰ φυλακῆς ἔχειν καὶ τοὺς συμμάχους παρακαλεῖν, εἰς ὕπαιθρον δὲ μήπω τὰς δυνάμεις ἐξάγειν, ἕως ἂν ἅπαντα εὐτρεπῆ γένηται. καὶ ὁ δῆμος ταῦτα ἐπεκύρωσεν. ἦν δὲ βραχὺς ὁ λειπόμενος τῆς ἀρχῆς τοῖς ὑπάτοις χρόνος, ὥστε οὐδὲν ἔφθασαν τῶν ἐψηφισμένων ἐπὶ τέλος ἀγαγεῖν, ἀλλὰ παρέδοσαν ἡμιτελῆ πάντα τοῖς μεθ' ἑαυτοὺς ὑπάτοις.

XVI. *Οἱ δὲ παρὰ τούτων τὴν ἀρχὴν παραλαβόντες, Σπόριος Ναύτιος καὶ Σέξτος Φούριος, στρα-* 1534
τιάν τε ὅσην ἐδύναντο πλείστην ἐκ τοῦ πολιτικοῦ κατεστήσαντο καταλόγου, καὶ φρυκτωρίας καὶ σκοποὺς ἐν τοῖς ἐπικαιροτάτοις χωρίοις ἔταξαν, ἵνα μηδὲν ἀγνοήσωσι τῶν ἐπὶ τῆς χώρας πραττομένων· χρήματά τε καὶ σῖτον καὶ ὅπλα ἐν ὀλίγῳ χρόνῳ πολλὰ ἡτοιμάσαντο. τὰ μὲν οὖν οἰκεῖα παρεσκεύαστο αὐτοῖς ὡς ἐνῆν ἄριστα, καὶ οὐδὲν αὐτῶν ἔτι δεῖν ἐδόκει· τὰ δὲ συμμαχικὰ οὐχ ἅπαντα ὑπήκουε προθύμως ἑκούσιά τε οὐκ ἦν, οἷα συνάρασθαι τοῦ πολέμου, ὥστε οὐδὲ προσαναγκάζειν αὐτὰ ἠξίουν φοβούμενοι προδοσίαν. ἤδη δέ τινα καὶ ἀφίστατο αὐτῶν ἐκ τοῦ φανεροῦ καὶ τοῖς Οὐολούσκοις συνελάμβανε. πρῶτοι δὲ ἦρξαν Αἰκανοὶ τῆς ἀποστάσεως,

ἅμα τῷ συστῆναι τὸν πόλεμον εὐθὺς ἐλθόντες ὡς τοὺς Οὐολούσκους καὶ συμμαχίαν μεθ' ὅρκων συν-
1535 θέμενοι, στρατιάν τε ἀπέστειλαν οὗτοι τῷ Μαρκίῳ πλείστην τε καὶ προθυμοτάτην. ἀρξαμένων δὲ τούτων πολλοὶ καὶ τῶν ἄλλων συμμάχων κρύφα συνελάμβανον τοῖς Οὐολούσκοις, οὐκ ἀπὸ ψηφισμάτων οὐδ' ἀπὸ κοινοῦ δόγματος ἀποστέλλοντες αὐτοῖς τὰς συμμαχίας, εἰ δέ τισιν ἦν βουλομένοις μετέχειν τῆς στρατείας τῶν σφετέρων, οὐχ ὅπως ἀποτρέποντες, ἀλλὰ καὶ παρορμῶντες. ἐγεγόνει τ' οὐ πολλῷ χρόνῳ τοσαύτη δύναμις περὶ τοὺς Οὐολούσκους, ὅσην οὐ πώποτε ἔσχον ὅτε μάλιστα ἤκμαζον ταῖς πόλεσιν, ἣν ἐπαγόμενος ὁ Μάρκιος ἐνέβαλεν αὖθις εἰς τὴν Ῥωμαίων γῆν, καὶ ἐγκαθεζόμενος ἡμέρας συχνὰς ἐδῄου τῆς γῆς ὅσην ἐν τῇ πρότερον εἰσβολῇ παρέλιπε. σωμάτων μὲν οὖν ἐλευθέρων οὐκέτι πολλῶν ἐγκρατὴς ἐγένετο κατὰ ταύτην τὴν στρατείαν· οἱ γὰρ ἄνθρωποι τὰ πλείστου ἄξια συσκευασάμενοι παλαίτερον ἔτι κατεπεφεύγεσαν, οἱ μὲν εἰς τὴν πόλιν, οἱ δ' εἰς
1536 τὰ πλησίον φρούρια, ἅτινα ἦν ἐχυρώτατα· τὰ δὲ βοσκήματα αὐτῶν ὅσα οὐχ οἷοί τε ἦσαν ἀπελάσαι καὶ τοὺς νέμοντας θεράποντας λαμβάνει, τόν τε σῖτον ἐπὶ ταῖς ἅλωσιν ἔτι κείμενον καὶ τοὺς ἄλλους καρπούς, τοὺς μὲν ἐν χερσὶν ὄντας, τοὺς δὲ καὶ συγκεκομισμένους ἀναιρεῖται. προνομεύσας δὲ καὶ διαπορθήσας ἅπαντα, οὐθενὸς ὁμόσε χωρῆσαι τολμήσαντος ἀπῆγεν ἐπ' οἴκου τὴν στρατιὰν βαρεῖαν οὖσαν ἤδη τῷ πλήθει τῶν ὠφελειῶν καὶ σχολῇ πορευομένην.

XVII. Οἱ δὲ Οὐολοῦσκοι τὸ μέγεθος τῆς κομιζομένης λείας ὁρῶντες, καὶ περὶ τῆς Ῥωμαίων ἀτολμίας ἀκούοντες, οἳ δὴ τέως τὴν ἀλλοτρίαν λεη-

λατοῦντες ἀδεῶς τότε τὴν αὑτῶν γῆν ἠνείχοντο δῃ-
ουμένην ὁρῶντες, αὐχήματός τε μεγάλου ἐνεπίμ-
πλαντο καὶ ἐν ἐλπίδι ἦσαν ἡγεμονίας, ὡς δὴ ῥᾴδιον
καὶ ἐν ἑτοίμῳ σφίσιν ὂν καταλῦσαι τὴν τῶν ἀντι-
πάλων ἰσχύν, θυσίας τε χαριστηρίους τοῖς θεοῖς
ἐποιοῦντο, καὶ σκύλων ἀναθέσει τοὺς νεὼς καὶ τὰς
ἀγορὰς ἐκόσμουν, καὶ ἦσαν ἅπαντες ἐν ἑορταῖς καὶ 1537
εὐπαθείαις, τόν τε Μάρκιον ἀγάμενοι καὶ ὑμνοῦν-
τες διετέλουν, ὡς εἴη τά τε πολέμια δεινότατος ἀν-
θρώπων καὶ στρατηγὸς οἷος οὔτε Ῥωμαῖος οὔτε
ἄλλος [στρατηγὸς] Ἑλλήνων ἢ βαρβάρων οὐδείς. μά-
λιστα δὲ τῆς τύχης αὐτὸν ἐμακάριζον, ἅπαντα ὅσοις
ἐπιχειρήσειε κατὰ γνώμην αὐτῷ προχωροῦντα ὁρῶντες
δίχα πόνου· ὥστε οὐδεὶς ἦν τῶν ἐχόντων τὴν στρα-
τεύσιμον ἡλικίαν, ὃς ἀπολείπεσθαι τοῦ ἀνδρὸς ἠξίου,
ἀλλὰ πάντες ὥρμηντο μετέχειν τῶν πράξεων καὶ συν-
ῄεσαν ὡς αὐτὸν ἐξ ἁπάσης πόλεως. ὁ δὲ στρατηγός,
ἐπειδὴ τὴν προθυμίαν τῶν Οὐολούσκων ἐπέρρωσε,
καὶ τὸ τῶν πολεμίων ἀνδρεῖον εἰς ταπεινὴν καὶ
ἄνανδρον κατέκλεισεν ἀμηχανίαν, ἐπὶ τὰς συμμαχί-
δας αὐτῶν πόλεις ὅσαι τὸ πιστὸν διεφύλαττον ἦγε
τὴν δύναμιν· καὶ αὐτίκα ἑτοιμασάμενος ὅσα εἰς πο-
λιορκίαν χρήσιμα ἦν ἐπὶ Τολερίνους ἐλαύνει τοῦ
Λατίνων ὄντας ἔθνους. οἱ δὲ Τολερῖνοι πρὸ πολλοῦ
παρασκευασάμενοι τὰ εἰς τὸν πόλεμον καὶ τὰ ἐκ τῆς
χώρας εἰς τὴν πόλιν συγκεκομικότες ἐδέχοντο αὐτὸν 1538
ἐπιόντα, καὶ χρόνον μέν τινα ἀντεῖχον ἀπὸ τῶν τει-
χῶν μαχόμενοι καὶ πολλοὺς τῶν πολεμίων κατέτρω-
σαν· ἔπειτα ὑπὸ τῶν σφενδονητῶν ἀναστελλόμενοι
καὶ μέχρι δείλης ὀψίας ταλαιπωροῦντες πολλὰ μέρη
τοῦ τείχους ἐξέλιπον. τοῦτο καταμαθὼν ὁ Μάρκιος τοῖς
μὲν ἄλλοις στρατιώταις παρήγγειλε κλίμακας προσ-

φέρειν κατὰ τὰ γυμνούμενα μέρη τοῦ περιβόλου, αὐτὸς δὲ τοὺς κρατίστους τῆς στρατιᾶς ἀναλαβὼν ἐπὶ τὰς πύλας ἵεται βαλλόμενος ἀπὸ τῶν πύργων, καὶ διαρρήξας τοὺς μοχλοὺς παρέρχεται πρῶτος εἰς τὴν πόλιν. ἦν δὲ ὑφεστηκὸς ταῖς πύλαις πολὺ καὶ καρτερὸν στῖφος τῶν πολεμίων, οἳ δέχονταί τε αὐτὸν ἐρρωμένως καὶ μέχρι πολλοῦ διεκαρτέρουν ἀγωνιζόμενοι· πολλῶν δὲ ἀναιρεθέντων τρέπονται οἱ λοιποὶ καὶ σκεδασθέντες ἔφευγον ἀνὰ τοὺς στενωπούς. ὁ δ' ἠκολούθει κτείνων τοὺς καταλαμβανομένους, ὅσοι
1539 *μὴ τὰ ὅπλα ῥίψαντες εἰς ἱκεσίας ἐτράποντο· ἐν δὲ τούτῳ καὶ οἱ διὰ τῶν κλιμάκων ἀναβαίνοντες ἐκράτουν τοῦ τείχους. τοῦτον δὲ τὸν τρόπον ἁλούσης τῆς πόλεως ἐξελόμενος ὁ Μάρκιος ἐκ τῶν λαφύρων ὅσα θεοῖς τε ἀναθήματα καὶ κόσμος ταῖς Οὐολούσκων πόλεσιν ἔμελλε γενέσθαι, τὰ λοιπὰ τοῖς στρατιώταις ἐφῆκε διαρπάσαι. ἦν δὲ πολλὰ μὲν αὐτόθι σώματα, πολλὰ δὲ χρήματα, πολὺς δὲ σῖτος· ὥστε μὴ ῥάδιον εἶναι μιᾷ πάντα ἐκκομίσαι τοὺς κρατήσαντας ἡμέρᾳ, ἀλλ' ἐκ διαδοχῆς ἄγοντες καὶ φέροντες τὰ μὲν αὐτοί, τὰ δὲ ἐπὶ τῶν ὑποζυγίων, πολὺν ἠναγκάσθησαν διατρίψαι χρόνον.*

XVIII. *Ὁ δὲ στρατηγός, ἐπειδὴ τὰ σώματα καὶ τὰ χρήματα πάντα ἐξεκεκόμιστο, τὴν πόλιν ἔρημον καταλιπὼν ἀπῆγε τὴν δύναμιν ἐπὶ Βῶλαν Λατίνων ἑτέραν πόλιν. ἔτυχον δὲ καὶ οἱ Βωλανοὶ προεγνωκό-*
1540 *τες αὐτοῦ τὴν ἔφοδον καὶ παρεσκευασμένοι πάντα τὰ πρὸς τὸν ἀγῶνα ἐπιτήδεια. ὁ μὲν οὖν Μάρκιος ὡς ἐξ ἐφόδου τὴν πόλιν αἱρήσων κατὰ πολλὰ μέρη τοῦ τείχους ἐποιεῖτο τὰς προσβολάς· οἱ δὲ Βωλανοὶ περιμείναντες καιρὸν ἐπιτήδειον ἀνοίγουσι τὰς πύλας, καὶ φερόμενοι κατὰ πλῆθος ἐν τάξει τε καὶ*

κόσμῳ συρράττουσι τοῖς κατὰ μέτωπον, καὶ πολλοὺς αὐτῶν ἀποκτείναντες, ἔτι δὲ πλείους [τούτων] κατατραυματίσαντες, τούς τε λοιποὺς αἰσχρῶς ἀναγκάσαντες φυγεῖν, ἀνέστρεψαν εἰς τὴν πόλιν. ὡς δ' ἔγνω τὴν τροπὴν τῶν Οὐολούσκων ὁ Μάρκιος· οὐ γὰρ ἔτυχε παρὼν ἐν ᾧ χωρίῳ τὸ πάθος ἐγένετο· παρῆν σὺν ὀλίγοις κατὰ σπουδήν, καὶ τοὺς ἐκ τῆς τροπῆς σκεδασθέντας ἀναλαβὼν συνίστα τε καὶ παρεθάρρυνε, καὶ ἐπειδὴ κατέστησεν εἰς τάξεις, ὑποδείξας ἃ δεῖ πράττειν, ἐκέλευσε προσβάλλειν τῇ πόλει κατὰ τὰς αὐτὰς πύλας. χρησαμένων δὲ πάλιν τῶν Βωλανῶν τῇ αὐτῇ πείρᾳ καὶ κατὰ πλῆθος ἐκδραμόντων, οὐ δέχονται αὐτοὺς οἱ Οὐολοῦσκοι, ἀλλ' ἐγκλίναντες ἔφευγον κατὰ τοῦ πρανοῦς, ὡς ὁ στρατηγὸς 1541 *αὐτοῖς ὑπέθετο· καὶ οἱ Βωλανοὶ τὴν ἀπάτην οὐκ εἰδότες ἐδίωκον ἄχρι πολλοῦ. ἐπεὶ δὲ πρόσω τῆς πόλεως ἐγένοντο, ἔχων τοὺς ἐπιλέκτους τῶν νέων ὁ Μάρκιος ὁμόσε τοῖς Βωλανοῖς ἐχώρει· καὶ γίνεται πολὺς αὐτῶν ἐνταῦθα φόνος, τῶν μὲν ἀμυνομένων, τῶν δὲ φευγόντων. ὁ δὲ ἀκολουθῶν τοῖς ἐπὶ τὴν πόλιν ὠθουμένοις φθάνει πρὶν ἐπιρραχθῆναι τὰς πύλας εἰςβιασάμενος εἰς τὸ τεῖχος. ὡς δ' ὁ στρατηγὸς ἅπαξ ἐγκρατὴς τῶν πυλῶν ἐγένετο, ἠκολούθει καὶ τὸ ἄλλο τῶν Οὐολούσκων πλῆθος, οἱ δὲ Βωλανοὶ τὸ τεῖχος ἐκλιπόντες ἔφευγον ἐπὶ τὰς οἰκίας. γενόμενος δὲ καὶ ταύτης κύριος τῆς πόλεως, ἐπέτρεψε τοῖς στρατιώταις τά τε σώματα ἐξανδραποδίσασθαι καὶ τὰ χρήματα διαρπάσαι· καὶ τὸν αὐτὸν τρόπον ὥσπερ καὶ πρότερον ἅπασαν ἐκκομίσας τὴν λείαν σὺν χρόνῳ τε καὶ κατὰ πολλὴν ἐξουσίαν, μετὰ τοῦτο τὴν πόλιν ἐνέπρησεν.*

XVIIII. *Ἐντεῦθεν δὲ τὴν δύναμιν ἀναλαβὼν*

1542 ἦγεν ἐπὶ τοὺς καλουμένους Λαβικανούς. ἦν δὲ καὶ
αὐτὴ τότε Λατίνων ἡ πόλις, Ἀλβανῶν ὥσπερ αἱ
ἄλλαι ἄποικος. καταπλήξασθαι δὲ βουλόμενος τοὺς
ἔνδον ἔκαιεν αὐτῶν τὴν χώραν εὐθὺς ἐπιών, ὅθεν
μάλιστα ἔμελλον ὄψεσθαι τὴν φλόγα. οἱ δὲ Λαβικα-
νοὶ τεῖχος εὖ κατεσκευασμένον ἔχοντες, οὔτε κατ-
επλάγησαν αὐτοῦ τὴν ἔφοδον οὔτε μαλακὸν ἐνέδοσαν
οὐδέν, ἀλλ' ἀντεῖχον ἀπομαχόμενοι γενναίως, καὶ πολ-
λάκις ἐπιβαίνοντας τοῦ τείχους τοὺς πολεμίους ἀπή-
ραξαν. οὐ μὴν εἰς τέλος γε ἀντέσχον ὀλίγοι πρὸς
πολλοὺς ἀγωνιζόμενοι καὶ χρόνον οὐδὲ τὸν ἐλάχιστον
ἀναπαυόμενοι. πολλαὶ γὰρ προσβολαὶ καὶ καθ' ὅλην
τὴν πόλιν ἐγίνοντο ὑπὸ τῶν Οὐολούσκων ἐκ δια-
δοχῆς, ὑποχωρούντων μὲν αἰεὶ τῶν κεκμηκότων,
1543 ἑτέρων δὲ προσιόντων νεαρῶν· πρὸς οὓς ἀγωνιζό-
μενοι δι' ὅλης ἡμέρας, καὶ οὐδὲ τὸν τῆς νυκτὸς ἀνα-
παυσάμενοι χρόνον, ἐκλιπεῖν ἠναγκάσθησαν τὸ τεῖχος
ὑπὸ κόπου. παραλαβὼν δὲ καὶ ταύτην ὁ Μάρκιος
τὴν πόλιν ἐξηνδραποδίσατο, καὶ τοῖς στρατιώταις
ἐφῆκε μερίσασθαι τὰς ὠφελείας. ἀναστήσας δὲ τὴν
δύναμιν ἐκεῖθεν ἐπὶ τὴν Πεδανῶν πόλιν· ἦν δὲ καὶ αὐ-
τὴ τοῦ Λατίνων γένους· συντεταγμένην τὴν στρατιὰν
ἔχων ἀφικνεῖται, καὶ αὐτὴν ἅμα τῷ πλησιάσαι τοῖς
τείχεσιν αἱρεῖ κατὰ κράτος. καὶ τὰ αὐτὰ διαθεὶς ὅσα
τὰς πρότερον ἁλούσας, ἕωθεν εὐθὺς ἀναστήσας τὴν
δύναμιν ἦγεν ἐπὶ Κορβιῶνα. ὄντι δὲ αὐτῷ πλησίον
τοῦ τείχους τὰς πύλας ἀνοίξαντες οἱ ἔνδον ἀπαντῶ-
σιν ἀντιπροτείνοντες ἱκετηρίας καὶ παραδιδόντες
ἀμαχητὶ τὸ τεῖχος. οὓς ἐπαινέσας ὡς τὰ κράτιστα
περὶ σφῶν βεβουλευμένους, ἐκέλευσεν ὧν ἔδει τῇ
στρατιᾷ φέροντας ἥκειν ἀργύριόν τε καὶ σῖτον, καὶ
1544 λαβὼν ὅσα προσέταξεν ἀπῆγε τὴν δύναμιν ἐπὶ τὴν

Κοπιολανῶν πόλιν. παραδόντων δὲ κἀκείνην τῶν ἔνδον ἀμαχητί, καὶ [ὡς] μετὰ πολλῆς προθυμίας ἀγοράς τε παρασχόντων τῇ δυνάμει καὶ χρήματα καὶ ὅσα ἄλλα ἐπετέτακτο αὐτοῖς, ἀπῆγε τὴν στρατιὰν ὡς διὰ φιλίας γῆς. πάνυ γὰρ δὴ καὶ τοῦτο ἐσπούδαξεν, ὡς μηδὲν οἱ παραδιδόντες αὐτοὶ τὰς πόλεις πάθοιεν ὧν φιλεῖ δρᾶν ὁ πόλεμος, ἀλλὰ καὶ γῆν ἀδῄωτον ἀπολαμβάνοιεν καὶ βοσκήματα καὶ ἀνδράποδα ὅσα κατέλιπον ἐπὶ τῶν κτήσεων κομίζοιντο, αὐλίζεσθαί τε οὐκ εἴα τὴν δύναμιν ἐν ταῖς πόλεσιν, ἵνα μή τι γένηται δι' ἁρπαγῆς πρὸς αὐτῶν ἢ κλοπῆς κακόν, ἀλλὰ παρὰ τοῖς τείχεσι κατεστρατοπέδευεν.

XX. Ἀπὸ δὲ ταύτης ἀναστήσας τῆς πόλεως ἤλαυνε τὸν στρατὸν ἐπὶ Βοίλλας, ἐπιφανῆ [τε] τότε οὖσαν καὶ ἐκ ὀλίγαις πάνυ ταῖς ἡγουμέναις τοῦ 1545
Λατίνων γένους πόλεσιν ἐξεταζομένην. οὐ προσδεξαμένων δ' αὐτὸν τῶν ἔνδον, ἀλλὰ τῷ τε ἐρύματι πιστευόντων ἐχυρῷ γε σφόδρα ὄντι καὶ τῷ πλήθει τῶν ἀπ' αὐτοῦ μαχησομένων, παρακαλέσας τὴν δύναμιν ἀγωνίζεσθαι προθύμως καὶ τοῖς πρώτοις ἐπιβᾶσι τοῦ τείχους μεγάλας δωρεὰς ὑποσχόμενος ἔργου εἴχετο· καὶ γίνεται μάχη περὶ τῇ πόλει ταύτῃ καρτερά. οὐ γὰρ μόνον ἀπὸ τοῦ τείχους ἠμύνοντο τοὺς προσιόντας οἱ Βοιλλανοί, ἀλλὰ καὶ τὰς πύλας ἀνοίξαν- 1546
τες ἐξέθεον ἀθρόοι, καὶ κατὰ τοῦ πρανοῦς ἐώθουν βίᾳ τοὺς ὑφισταμένους· φόνος τε πλεῖστος αὐτόθι τῶν Οὐολούσκων ἐγένετο καὶ χρόνος τῆς τειχομαχίας [πολύς], τοῦ τε κρατήσειν τῆς πόλεως ἄπορος ἅπασιν ἡ ἐλπίς. ἀλλὰ τῶν ἀπολλυμένων ἄδηλον ἐποίει τὴν ἀπουσίαν ὁ στρατηγὸς ἀντικαθιστὰς ἑτέρους· τῶν δὲ καμνόντων παρεθάρρυνε τὴν ἀθυμίαν, ἐπὶ τὸ πονοῦν μέρος τῆς στρατιᾶς αὐτὸς ὠθούμενος. ἦν τε

οὐχ ὁ λόγος αὐτοῦ μόνον ἐπαγωγὸς ἐπὶ τὸ εὔψυχον, ἀλλὰ καὶ τὰ ἔργα. πάντα γὰρ ὑφίστατο κίνδυνον καὶ οὐδεμιᾶς πείρας ἀπελείφθη, ἕως ἑάλω τὸ τεῖχος. κρατήσας δὲ καὶ ταύτης σὺν χρόνῳ τῆς πόλεως, καὶ τῶν ἁλόντων τοὺς μὲν ἐν χειρῶν νόμῳ διαφθείρας, τοὺς δ' αἰχμαλώτους λαβών, ἀπῆγε τὴν δύναμιν ἐπιφανεστάτην νίκην ἐξενεγκάμενος καὶ λάφυρα κάλλιστα καὶ πλεῖστα ἄγων, χρήμασί τε παμπόλλοις, ὧν
1547 ἐγκρατὴς ἐγένετο· ἣν δ' αὐτόθι ὅσα ἐν οὐδενὶ τῶν ἁλόντων χωρίων· πλουτίσας τὴν στρατιάν.

XXI. Μετὰ τοῦτο χώρα τε ὅσην διαπορεύοιτο ὑποχείριος ἦν καὶ πόλις οὐδεμία ἠναντιοῦτο ἔξω Λαουινίου, ἣν πρώτην τε πόλιν οἱ σὺν Αἰνείᾳ κατάραντες εἰς Ἰταλίαν Τρῶες ἔκτισαν, καὶ ἀφ' ἧς τὸ Ῥωμαίων ἦν γένος, ὡς καὶ πρότερόν μοι δεδήλωται. οἱ δ' ἐν ταύτῃ κατοικοῦντες πάντα πρότερον ᾤοντο δεῖν ὑπομένειν, ἢ τὸ πρὸς τοὺς ἀπογόνους σφῶν Ῥωμαίους πιστὸν ἐγκαταλιπεῖν. ἐγένοντο μὲν οὖν καὶ τειχομαχίαι τινὲς αὐτόθι καρτεραὶ καὶ πρὸ τῶν ἐρυμάτων ὀξεῖαι μάχαι· οὐ μὴν ἑάλω γε τὸ τεῖχος ἀπὸ κράτους τῇ πρώτῃ ἐφόδῳ, ἀλλ' ἐδόκει χρόνου δεῖν τῇ πολιορκίᾳ καὶ τριβῆς. ἀποστὰς οὖν τῆς τειχομαχίας ὁ Μάρκιος, περιετάφρευε κύκλῳ τὴν πόλιν καὶ ἀπεσταύρου, τὰς ὁδοὺς φυλάττων, ἵνα μήτε ἀγορὰ μήτε
1548 ἐπικουρία τις αὐτοῖς ἔξωθεν προσγένοιτο. Ῥωμαῖοι δὲ τῶν τε κεκρατημένων ἤδη πόλεων τὸν ὄλεθρον ἀκούοντες, καὶ τῶν προσθεμένων τῷ Μαρκίῳ τὴν ἀνάγκην, ταῖς τε πρεσβείαις ἐνοχλούμενοι ταῖς ἀφικνουμέναις ὡς αὐτοὺς ὁσημέραι παρὰ τῶν μενουσῶν ἐν τῇ φιλίᾳ καὶ δεομένων βοηθείας, τοῦ τε Λαουινίου τὸν περιτειχισμὸν ὀρρωδοῦντες ἐν χερσὶν ὄντα, καὶ εἰ τόδε τὸ φρούριον ἁλώσεται τὸν πόλεμον ἐπὶ σφᾶς

ἥξειν εὐθὺς οἰόμενοι, μίαν ὑπέλαβον ἔσεσθαι πάντων τῶν κακῶν λύσιν, εἰ ψηφίσαιντο τῷ Μαρκίῳ τὴν κάθοδον. καὶ ὅ τε δῆμος ἅπας ἐβόα τοῦτο, καὶ οἱ δήμαρχοι νόμον εἰσφέρειν ὑπὲρ ἀκυρώσεως τῆς καταδίκης ἐβούλοντο· ἀλλ' οἱ πατρίκιοι ἠναντιώθησαν αὐτοῖς οὐκ ἀξιοῦντες τῶν δεδικασμένων λύειν οὐθέν. μὴ γενομένου δὲ προβουλεύματος ὑπὸ τῆς βουλῆς, οὐδὲ τοῖς δημάρχοις ἔτι προθεῖναι γνώμην εἰς τὸν δῆμον ἐδόκει. ὃ καὶ θαυμάζειν ἄξιον, ἀφ' ἧς δήποτε αἰτίας ἡ βουλὴ σπουδάζουσα τὸν ἔμπροσθεν 1549 *χρόνον ὑπὲρ τοῦ Μαρκίου, τότε βουλομένῳ τῷ δήμῳ κατάγειν αὐτὸν ἠναντιώθη· πότερα πεῖραν αὐτοῦ ποιουμένη τῆς γνώμης καὶ τῷ μὴ συγχωρεῖν [ἑκάστῳ] ἑτοίμως ἐπὶ τὸ μᾶλλον σπουδάζειν αὐτὸν παρορμῶσα, ἢ τὰς ἰδίας καθ' ἑαυτῆς ἀπολύσασθαι βουλομένη διαβολὰς ὑπὲρ τοῦ μηθενὸς ὧν ἔπραττεν ὁ ἀνὴρ μήτε αἰτία μήτε συνεργὸς εἶναι. χαλεπὸν γὰρ ἦν ἀπόρρητον γενόμενον αὐτῆς τὸ βούλευμα συμβαλεῖν.*

XXII. *Ἀκούσας δὲ ταῦτα παρ' αὐτομόλων τινῶν ὁ Μάρκιος, ὡς εἶχεν ὀργῆς εὐθὺς ἀναστήσας τὴν δύναμιν ἦγεν ἐπὶ τὴν Ῥώμην, φυλακὴν τοῦ Λαουινίου τὴν ἀρκοῦσαν καταλιπών· καὶ αὐτίκα τῆς πόλεως σταδίους τετταράκοντα ἀποσχὼν κατεστρατοπέδευσε περὶ τὰς καλουμένας Κλυιλίας τάφρους. μαθοῦσι δὲ τὴν παρουσίαν αὐτοῦ τοῖς κατὰ τὴν πόλιν τοσοῦτος ἐνέπεσε θόρυβος, ὡς αὐτίκα τοῖς τεί-* 1550 *χεσι τοῦ πολέμου προσάξοντος, ὥσθ' οἱ μὲν ἐπὶ τὰ τείχη τὰ ὅπλα λαβόντες ἔθεον ἄνευ παραγγέλματος, οἱ δ' ἐπὶ τὰς πύλας κατὰ πλῆθος ἐφέροντο χωρὶς ἡγεμόνος, οἱ δὲ τοὺς δούλους καθοπλίσαντες ἐπὶ τοῖς τέγεσι τῶν οἰκιῶν ἵστασαν, οἱ δὲ τήν τε ἄκραν καὶ τὸ Καπιτώλιον καὶ τοὺς ἄλλους ἐρυμνοὺς τόπους*

τῆς πόλεως κατελαμβάνοντο, γυναῖκές τε λελυμέναι τὰς κόμας ἐπὶ τὰ τεμένη καὶ τοὺς νεὼς ἔθεον ὀλοφυρόμεναί τε καὶ δεόμεναι τῶν θεῶν ἀποστρέψαι τῆς πόλεως τὸν ἐπιόντα φόβον. ὡς δὲ ἥ τε νὺξ παρῆλθε καὶ τῆς ἐπιούσης ἡμέρας τὸ πλεῖστον, καὶ οὐδὲν ὧν ἐδεδοίκεσαν ἐγίνετο, ἀλλ' ἔμενεν ὁ Μάρκιος ἐφ' ἡσυχίας, συνέδραμον ἅπαντες εἰς τὴν ἀγορὰν οἱ δημοτικοὶ καὶ τοὺς πατρικίους ἐκάλουν εἰς τὸ
1551 βουλευτήριον, καὶ εἰ μὴ προβουλεύσουσι τῷ ἀνδρὶ τὴν κάθοδον, αὐτοὶ βουλεύσεσθαι περὶ σφῶν αὐτῶν ἔφασαν ὡς προδεδομένοι. τότε δὴ συνελθόντες εἰς τὴν βουλὴν οἱ πατρίκιοι ψηφίζονται πρεσβευτὰς πρὸς τὸν Μάρκιον ἀποστεῖλαι πέντε ἄνδρας ἐκ τῶν πρεσβυτάτων, οὓς μάλιστα ἐκεῖνος ἠσπάζετο, περὶ διαλύσεώς τε καὶ φιλίας διαλεξομένους. ἦσαν δὲ οἱ προχειρισθέντες ἀπ' αὐτῶν ἄνδρες οἵδε, Μάρκος Μηνύκιος καὶ Πόστουμος Κομίνιος καὶ Σπόριος Λάρκιος καὶ Πόπλιος Πινάριος καὶ Κόιντος Σολπίκιος, ἅπαντες ὑπατικοί. ὡς δὲ ἀφίκοντο ἐπὶ τὸ στρατόπεδον, καὶ ἔγνω τὴν παρουσίαν αὐτῶν ὁ Μάρκιος, καθεξόμενος ἅμα τοῖς ἐπιφανεστάτοις Οὐολούσκων τε καὶ τῶν ἄλλων συμμάχων, ἔνθα πλεῖστοι ἔμελλον ἀκούσεσθαι τῶν λεγομένων, ἐκέλευσε καλεῖν τοὺς ἄνδρας. εἰσελθόντων δὲ αὐτῶν ἤρξατο τοῦ λόγου Μηνύκιος, ὁ πλεῖστα κατὰ τὸν τῆς ὑπατείας χρόνον σπουδάσας ὑπὲρ αὐτοῦ, καὶ μάλιστα τοῖς δημοτικοῖς ἐναντιωθείς, καὶ ἔλεξε τοιάδε.

1552 XXIII. "Ὅτι μὲν οὐ δίκαια πέπονθας ὑπὸ τοῦ δήμου, ὦ Μάρκιε, μετ' αἰτίας αἰσχρᾶς ἐξελαθεὶς ἐκ τῆς πατρίδος, ἅπαντες ἴσμεν· καὶ οὐδὲν οἰόμεθά σε ποιεῖν θαυμαστόν, εἰ χαλεπαίνεις καὶ ἀγανακτεῖς ἐπὶ ταῖς τύχαις. κοινὸς γὰρ δὴ τῆς ἁπάντων φύσεως

οὗτος ὁ νόμος, ἐχθρὸν εἶναι τῷ δράσαντι τὸ πεπονθὸς κακῶς. ὅτι δ' οὐ μετὰ λογισμοῦ σώφρονος ἐξετάζεις οὓς ἀμύνεσθαί τε καὶ τιμωρεῖσθαί σοι προσήκει, οὐδὲ μετριάζεις περὶ τὴν ἀνάπραξιν τῆς δίκης, ἀλλ' ἐν τῷ αὐτῷ τίθεσαι τά τε ἀναίτια τοῖς αἰτίοις καὶ τὰ φίλια τοῖς πολεμίοις, νόμους τε κινεῖς φύσεως ἀκινήτους καὶ τὰ πρὸς τοὺς θεοὺς συνταράττεις ὅσια, καὶ οὐδὲ σεαυτὸν ἐξ ὧν τε καὶ ὅστις ἔφυς ἔτι μέμνησαι, τοῦτο τεθαυμάκαμεν. ἥκομέν τε ἀποσταλέντες ὑπὸ τοῦ κοινοῦ πρέσβεις οἱ προὔχοντες ἡλικίᾳ τῶν πατρικίων καὶ περί σε προθυμότατοι μεμιγμένην φέροντες δικαιολογίαν παραιτήσει, καὶ ἐφ' οἷς ἀξιοῦμέν σε διαλύσασθαι τὴν ἔχθραν πρὸς τὸν δῆμον 1553 ἀπαγγελοῦντες· πρὸς δὲ τούτοις, ἃ νομίζομεν εἶναι κάλλιστα καὶ συμφορώτατά σοι, ταῦτα παραινέσοντες.

XXIIII. Ἀρχέτω δὲ ὁ περὶ τῶν δικαίων λόγος. συνέστη τὸ δημοτικὸν ἐπὶ σοὶ παροξυνθὲν ὑπὸ τῶν δημάρχων, καὶ ἧκον ὡς ἀποκτενοῦντές σε ἄκριτον οἷς φοβερὸς ἦσθα. τοῦτο τὸ ἔργον ἐκωλύσαμεν ἡμεῖς οἱ ἐκ τοῦ συνεδρίου, καὶ παρέσχομέν σοι μηθὲν ὃ μὴ δίκαιον ἦν τότε παθεῖν. μετὰ τοῦτο προὐκαλοῦντό σε οἱ κωλυθέντες ἀνελεῖν ἐπὶ δίκην, αἰτιασάμενοι πονηροὺς κατ' αὐτῶν εἰπεῖν ἐν τῇ βουλῇ λόγους. ἐνέστημεν καὶ πρὸς τοῦτο, ὡς οἶσθα, καὶ οὐκ ἐπετρέψαμεν οὔτε γνώμης οὔτε λόγων ὑποσχεῖν σε δίκας. ἀποτυχόντες καὶ τούτου τελευτῶντες ἧκον ἐφ' ἡμᾶς αἰτιώμενοί σε τυραννίδι ἐπιχειρεῖν. ταύτην αὐτὸς ὑπέμεινας ἀπολογήσασθαι τὴν αἰτίαν, ἐπειδὴ πάμπολυ ἀπεῖχες αὐτῆς, καὶ παρέσχες τοῖς δημοτικοῖς περὶ σεαυτοῦ τὴν ψῆφον ἀναλαβεῖν. ἡ βουλὴ δὲ καὶ τότε παρῆν, καὶ πολλὰς ἐποιεῖτο δεή- 1554

σεις περὶ σοῦ. τίνος οὖν ἡμεῖς οἱ πατρίκιοι τῶν συμβεβηκότων σοι κακῶν γεγόναμεν αἴτιοι, καὶ διὰ τί πολεμεῖς ἡμῖν τοσαύτην εὔνοιαν ἀποδειξαμένοις περὶ σὲ κατὰ τὸν τότε ἀγῶνα; ἀλλὰ μὴν οὐδὲ τὸ δημοτικὸν ἅπαν ἐξελαθῆναί σε βουλόμενον εὑρέθη· δυσὶ γοῦν ψήφοις ἑάλως μόναις, ὥστε οὐδὲ τούτοις ἂν εἴης σὺν δίκῃ πολέμιος, οἵ σε ὡς οὐδὲν ἀδικοῦντα ἀπέλυσαν. τίθημι δέ, εἰ βούλει, πᾶσι μὲν τοῖς δημόταις δόξαν, ὅλῃ δὲ τῇ βουλῇ φανὲν ταύτῃ χρήσασθαί σε τῇ συμφορᾷ, καὶ δίκαιον εἶναί σοι τὸ πρὸς ἅπαντας ἡμᾶς μῖσος· ἀλλ' αἱ γυναῖκές σε, ὦ Μάρκιε, τί δεινον εἰργάσαντο ἀνθ' ὅτου πολεμεῖς αὐταῖς; ποίαν ἐπενέγκασαι περὶ φυγῆς ψῆφον ἢ τίνας εἰποῦσαι κατὰ σοῦ πονηροὺς λόγους; τί δὲ οἱ παῖδες ἡμῶν δράσαντες ἢ διανοηθέντες ἀδικεῖν περὶ σοῦ κινδυνεύουσιν ὑπὲρ αἰχμαλωσίας καὶ τῶν ἄλλων, ἃ παθεῖν αὐτοὺς εἰκὸς ἐὰν ἡ πόλις ἁλῷ; οὐ τὰ
1555 δίκαια διαιτᾷς, ὦ Μάρκιε, καὶ εἰ τοῦτον οἴει δεῖν τὸν τρόπον τὰ ὑπαίτια καὶ ἐχθρὰ μισεῖν, ὥστε μηδὲ τῶν ἀναιτίων φείδεσθαι καὶ φιλίων, οὐκ ἄρα τὰ προσήκοντα ἀνδρὶ ἀγαθῷ φρονεῖς. ἵνα δὲ πάντα ταῦτα ἀφῶ, τί ἂν ἔχοις εἰπεῖν, ὦ πρὸς Διός, εἴ τις ἔροιτό σε, τοὺς δὲ δὴ τάφους τῶν προγόνων τί παθὼν ὑπ' αὐτῶν ἀνασκάπτεις καὶ τιμὰς ἃς κομίζονται παρὰ ἀνθρώπων ἀφαιρῇ; θεῶν δὲ βωμοὺς καὶ τεμένη καὶ νεὼς τίνος ἀδικήματος ὀργῇ συλᾷς καὶ κατακαίεις καὶ ἀνατρέπεις καὶ σεβασμῶν οὐκ ἐᾷς τυγχάνειν τῶν νομίμων; τί πρὸς ταῦτα φαίης ἄν; ἐγὼ μὲν γὰρ οὐδὲν ὁρῶ. ταῦτά σοι περί τε ἡμῶν αὐτῶν, ὦ Μάρκιε, τῶν ἐκ τοῦ συνεδρίου καὶ περὶ τῶν ἄλλων πολιτῶν, οὓς ἀπολέσαι προθυμῇ κακὸν οὐδὲν ὑπ' αὐτῶν πεπονθώς, τάφων τε καὶ ἱερῶν καὶ

πόλεως τῆς γειναμένης τε καὶ θρεψαμένης τὰ δίκαια εἰρήσθω.

XXV. *Ἀλλὰ, φέρε, εἰ δὲ δὴ πάντας μὲν ἀνθρώπους καὶ τοὺς μηδὲν ἀδικοῦντάς σε γυναιξὶν ὁμοῦ* 1556 *καὶ τέκνοις δίκας σοι δοῦναι προσῆκε, πάντας δὲ θεούς τε καὶ ἥρωας καὶ δαίμονας πόλιν τε καὶ χώραν ἀπολαῦσαι τῆς τῶν δημάρχων ἀνοίας, καὶ μηδὲν ἐξαίρετον μηδ' ἀτιμώρητον ἀφεῖσθαι μέρος ὑπὸ σοῦ, οὐχ ἱκανὰς ἤδη παρὰ πάντων εἰσπέπραξαι δίκας, τοσοῦτον μὲν φόνον ἐργασάμενος ἀνθρώπων, τοσαύτην δὲ χώραν πυρὶ καὶ σιδήρῳ λωβησάμενος, τοσαύτας δὲ πόλεις ἐκ βάθρων ἀναστήσας, ἑορτὰς δὲ καὶ θυσίας καὶ σεβασμοὺς θεῶν καὶ δαιμόνων [ὡς] ἐν πολλοῖς τόποις ἀνεόρτους ἀναγκάσας γενέσθαι καὶ ἀθύτους καὶ τιμῶν νομίμων ἀμοίρους; ἐγὼ μὲν [οὖν] οὐκ ἠξίουν ἄνδρα, ὅτῳ φροντὶς ὁποσηοῦν ἀρετῆς ἐστιν, οὔτε συναναιρεῖν τοῖς ἐχθροῖς τὰ φίλια οὔτε χαλεπὸν ὀργὴν εἶναι καὶ ἀπαραίτητον εἰς τοὺς ἐξαμαρτάνον-* 1557 *τάς τι περὶ αὐτόν, ἄλλως τε καὶ δίκας παρ' αὐτῶν εἰληφότα πολλὰς καὶ μεγάλας. ἃ μὲν οὖν ἀπολογεῖσθαί τε περὶ ἡμῶν αὐτῶν εἴχομεν καὶ παραιτεῖσθαί σε περὶ τῶν δημοτικῶν, ταῦτ' ἐστίν· ἃ δ' ὑποτίθεσθαί σοι δι' εὔνοιαν οἱ τιμιώτατοι φίλων ἥκοντες καὶ ὑπισχνεῖσθαι διαλλαττομένῳ πρὸς τὴν πατρίδα, ταυτί· ἐν ᾧ τὸ δύνασθαί σοι μάλιστα ὑπάρχει καὶ τὸ θεῖον ἔτι συλλαμβάνει μετριάσαι καὶ ταμιεύεσθαι τὴν τύχην ἐνθυμηθέντα, ὅτι μεταβολὰς ἔχει πάντα τὰ πράγματα καὶ οὐδὲν ἐπὶ τῶν αὐτῶν φιλεῖ διαμένειν, νεμεσᾶταί τε πάντα ὑπὸ θεῶν τὰ ὑπερέχοντα, ὅταν εἰς ἄκρον ἐπιφανείας ἀφίκηται, καὶ τρέπεται πάλιν εἰς τὸ μηδέν. μάλιστα δὲ τοῦτο πάσχει τὰ σκληρὰ καὶ μεγάλαυχα φρονήματα καὶ τοὺς ὅρους*

ἐκβαίνοντα τῆς ἀνθρωπίνης φύσεως. ὑπάρχει δέ σοι νῦν ἁπάντων κράτιστα καταλύσασθαι τὸν πόλεμον·
1558 ἥ τε γὰρ βουλὴ πᾶσα ὥρμηται τὴν κάθοδον ψηφίσασθαί σοι, καὶ ὁ δῆμος ἕτοιμός ἐστι νόμῳ κυρωθέντι λῦσαι τὴν ἀειφυγίαν. τί οὖν ἔτι κωλύει σε τὰς ἡδίστας καὶ τιμιωτάτας ὄψεις τῶν ἀναγκαιοτάτων σωμάτων ἀπολαβεῖν καὶ κεκομίσθαι τὴν περιμάχητον πατρίδα ἄρχειν τε ὥσπερ σοι προσῆκεν ἀρχόντων καὶ ἡγεῖσθαι ἡγεμόνων παισί τε καὶ ἐγγόνοις μέγιστον αὔχημα καταλιπεῖν; τούτων μέντοι τῶν ὑποσχέσεων ἡμεῖς ἐγγυηταὶ πασῶν ἐσμεν ὡς αὐτίκα μάλα γενησομένων. νῦν μὲν γὰρ οὐχὶ καλῶς εἶχε ψηφίσασθαί σοι τὴν βουλὴν ἢ τὸν δῆμον οὐθὲν ἐπιεικὲς ἢ μέτριον, ἕως ἀντιπαρεστρατοπέδευκας ἡμῖν καὶ τὰ πολεμίων ἔργα δρᾷς· εἰ δὲ ἀποσταίης τῶν ὅπλων, ἥξει σοι τὸ περὶ τῆς καθόδου ψήφισμα φερόμενον ὑφ᾽ ἡμῶν οὐκ εἰς μακράν.

XXVI. Ἀγαθὰ μὲν δὴ ταῦτα ὑπάρξει σοι διαλλαττομένῳ· μένοντι δὲ ἐπὶ τῆς ὀργῆς καὶ μὴ διαλυομένῳ τὸ μῖσος πρὸς ἡμᾶς πολλὰ καὶ χαλεπά, ἐξ
1559 ὧν ἐγὼ δύο τὰ μέγιστα νυνὶ καὶ φανερώτατα ἐρῶ. πρῶτον μὲν ὅτι δυσκόλου γενέσθαι, μᾶλλον δὲ ἀδυνάτου πράγματος πονηρὸν ἔρωτα ἔχεις, πόλεως τῆς Ῥωμαίων καθελεῖν τὴν ἰσχύν, καὶ ταῦτα τοῖς Οὐολούσκων ὅπλοις· ἔπειθ᾽ ὅτι σοι κατορθώσαντί τε καὶ μὴ τυχόντι πάντων ἀνθρώπων ὑπάρξει δυστυχεστάτῳ νομίζεσθαι. ἐξ ὧν δὲ ταῦτα παρίσταταί μοι περὶ σοῦ φρονεῖν, ἄκουσον, ὦ Μάρκιε, μηθὲν πρὸς τὴν ἐλευθερίαν μου τῶν λόγων τραχυνόμενος. σκόπει δὲ πρῶτον ὑπὲρ τοῦ ἀδυνάτου. Ῥωμαίοις, ὡς οἶσθα καὶ σύ, πολλὴ μέν ἐστι νεότης ἐπιχώριος, ἧς εἰ τὸ στασιάζον ἐξαιρεθείη· γενήσεται δὲ τοῦτο κατὰ

πολλὴν ἀνάγκην νυνὶ διὰ τόνδε τὸν πόλεμον, πάντα
γὰρ ὑπὸ δέους κοινοῦ συνίστασθαι φιλεῖ τὰ διάφορα·
οὐχ ὅτι Οὐολοῦσκοι κρατήσουσιν, ἀλλ' οὐδὲ ἄλλο 1560
τῶν κατὰ τὴν Ἰταλίαν ἐθνῶν οὐθέν· πολλὴ δὲ ἡ
Λατίνων καὶ τῶν ἄλλων συμμάχων τε καὶ ἀποίκων
τῆς πόλεως ἰσχύς, ἣν ὀλίγου πᾶσαν ἐπίκουρον ἥξειν
προσδέχου· στρατηγοί τε οἷος σὺ καὶ πρεσβύτεροι
καὶ νέοι τοσοῦτοι τὸ πλῆθος, ὅσοίπερ ἁπάσαις οὐκ
εἰσὶ ταῖς ἄλλαις πόλεσι. μεγίστη δὲ πασῶν βοήθεια,
καὶ τὰς ἐν τοῖς δεινοῖς ἐλπίδας οὐδέποθ' ἡμῶν ψευσαμένη,
συμπάσης τε ἀμείνων ἀνθρωπίνης ἰσχύος,
ἡ παρὰ τῶν θεῶν εὔνοια, δι' οὓς οὐ μόνον ἐλευθέραν
εἰς τόδε χρόνου τὴν πόλιν τήνδε οἰκοῦμεν ὀγδόην
ἤδη τὴν νῦν γενεάν, ἀλλὰ καὶ εὐδαίμονα καὶ πολλῶν
ἐθνῶν ἄρχουσαν. μὴ δὴ Πεδανοῖς ἡμᾶς εἰκάσῃς μηδὲ
Τυλερίνοις μηδὲ τοῖς ἄλλοις μικροπολίταις, ὧν κατέσχες
τὰ πολίχνια· καὶ γὰρ ἥττων ἄν τίς σου στρατηγός,
καὶ ἀπ' ἐλάττονος ἢ τοσαύτης στρατιᾶς ὀλιγανθρωπίαν
καὶ φαυλότητα ἐρυμάτων ἐβιάσατο· ἀλλ' 1561
ἐνθυμοῦ τὸ μέγεθος τῆς πόλεως καὶ τὴν λαμπρότητα
τῶν ἐν τοῖς πολέμοις πράξεων καὶ τὴν ἐκ τοῦ θείου
παροῦσαν αὐτῇ τύχην, δι' ἣν ἐκ μικρᾶς τοσαύτη γέγονε.
καὶ τὴν σεαυτοῦ δύναμιν, ἣν ἐπάγων ἔργῳ
τοσῷδε ἐπιχειρεῖς, μὴ νόμιζε ἠλλάχθαι, ἀλλὰ μέμνησο
ἀκριβῶς ὅτι Οὐολούσκων τε καὶ Αἰκανῶν στρατιὰν
ἐπάγῃ, οὓς ἡμεῖς οἵδε οἱ νῦν ὄντες ἐν πολλαῖς ἐνικῶμεν
μάχαις, ὁσάκις ἡμῖν ἐτόλμησαν εἰς πόλεμον καταστῆναι·
ὥστε σὺν τοῖς χείροσιν ἀγωνίζεσθαι μέλλων
ἴσθι πρὸς τοὺς κρείττονας, καὶ σὺν τοῖς ἡττωμένοις
διὰ παντὸς πρὸς τοὺς νικῶντας ἀεί. εἰ δὲ δὴ τἀναντία
τούτων ἦν, ἐκεῖνό γέ τοι θαυμάζειν ἄξιον, πῶς
λέληθέ σε πολεμικῶν ὄντα πραγμάτων ἔμπειρον, ὅτι

τὸ παρὰ τὰ δεινὰ εὔτολμον οὐκ ἐξ ἴσου παραγίνεσθαι φιλεῖ τοῖς τε ὑπὲρ οἰκείων ἀγαθῶν ἀγωνιζομένοις καὶ τοῖς ἐπὶ τἀλλότρια πορευομένοις· οἱ μέν γε οὐδὲν ἐὰν μὴ κατορθώσωσι βλάπτονται, τοῖς δ' οὐδὲν
1562 ἐὰν πταίσωσι καταλείπεται· καὶ τοῦ σφάλλεσθαι τὰς μεγάλας δυνάμεις ὑπὸ τῶν ἐλαττόνων καὶ τὰς κρείττους ὑπὸ τῶν φαυλοτέρων τοῦτ' ἐν τοῖς μάλιστα αἴτιον ἦν. δεινὴ γὰρ ἡ ἀνάγκη, καὶ ὁ περὶ τῶν ἐσχάτων κίνδυνος ἱκανὸς θάρσος ἐνθεῖναί τινι καὶ μὴ προϋπάρχον φύσει. εἶχον ἔτι πλείω λέγειν ὑπὲρ τοῦ ἀδυνάτου, ἀλλὰ καὶ ταῦθ' ἱκανά.

XXVII. Εἷς ἔτι μοι καταλείπεται λόγος, ὃν εἰ μὴ μετ' ὀργῆς ἀλλ' ἐκ λογισμοῦ κρινεῖς, ὀρθῶς τε εἰρῆσθαι δόξει, καὶ παραστήσεταί σοι μεταμέλεια τῶν πραττομένων. τίς δ' ἐστιν οὗτος ὁ λόγος; οὐδενὶ θνητῷ φύντι θεοὶ τῶν μελλόντων ἔσεσθαι βεβαίαν ἐπιστήμην ἔδωκαν ἔχειν, οὐδ' ἂν εὕροις ἐκ τοῦ παντὸς αἰῶνος ὅτῳ πάντα κατὰ νοῦν ἐχώρησε τὰ πράγματα μηδὲν ἐναντιωθείσης τῆς τύχης. καὶ διὰ τοῦτο οἱ φρονήσει προὔχοντες ἑτέρων, ἣν ὁ μακρὸς βίος καὶ τὰ πολλὰ παθήματα φέρει, πρὶν ἐγχειρεῖν ὁτῳ-
1563 δήποτε ἔργῳ τὸ τέλος αὐτοῦ πρῶτον οἴονται δεῖν σκοπεῖν, οὐ θάτερον μόνον ὃ βούλονται γενέσθαι σφίσιν, ἀλλὰ καὶ τὸ παρὰ γνώμην ἐκβησόμενον· μάλιστα δὲ οἱ τῶν πολέμων ἡγεμόνες, ὅσῳ μειζόνων τε γίνονται πραγμάτων κύριοι, καὶ τὰς αἰτίας τῶν κατορθωμάτων ἢ σφαλμάτων ἅπαντες ἐπὶ τούτους ἀναφέρουσιν. ἔπειτα ἂν μὲν εὕρωσι μηδεμίαν ἐνοῦσαν ἢ μικρὰς καὶ ὀλίγας ἐν τῷ μὴ κατορθῶσαι βλάβας, ἅπτονται τῶν ἔργων· ἐὰν δὲ πολλὰς καὶ μεγάλας, ἀφίστανται. τοῦτο δὴ καὶ σὺ ποίησον, καὶ σκόπει πρὸ τῶν ἔργων, ἐὰν σφαλῇς κατὰ τὸν πόλεμον καὶ

μὴ πάντα ὑπάρξῃ, τί συμβήσεταί σοι παθεῖν. δι’
αἰτίας μὲν ἔσῃ παρὰ τοῖς ὑποδεξαμένοις σεαυτόν, ὡς
μείζοσιν ἐπιχειρήσας πράγμασιν καὶ ἀδυνάτοις· στρα-
τιᾶς δὲ ἡμετέρας πάλιν ἐκεῖσε ἀφικομένης καὶ φθει-
ρούσης τὴν ἐκείνων γῆν· οὐ γὰρ ἀνεξόμεθα μὴ ἀν-
τιτιμωρούμενοι τοὺς ἄρξαντας ἡμᾶς κακῶς ποιεῖν·
δυεῖν οὐκ ἂν ἁμάρτοις θατέρου, ἢ πρὸς αὐτῶν ἐκεί- 1564
νων οἷς αἴτιος ἔσῃ συμφορῶν μεγάλων αἰσχρῶς ἀναι-
ρεθῆναι, ἢ πρὸς ἡμῶν οὓς ἀποκτενῶν τε καὶ δουλω-
σόμενος ἦλθες. τάχα δ’ ἂν ἐκεῖνοι, πρὶν ἐν τῷ πα-
θεῖν τι κακὸν γενέσθαι, διαλύσεις ποιεῖσθαι πρὸς
ἡμᾶς ἐπιχειροῦντες ἔκδοτον ἀξιώσειαν ἐπὶ τιμωρίᾳ
σε παραδιδόναι· ὃ πολλοὶ βάρβαροί τε καὶ Ἕλληνες
εἰς τοιαύτας καταστάντες τύχας ἠναγκάσθησαν ὑπο-
μεῖναι. ἆρά γε μικρὰ καὶ οὐκ ἄξια λόγου ταῦτ’ εἶναί
σοι δοκεῖ καὶ δέον αὐτῶν ὑπεριδεῖν, ἢ κακῶν συμ-
πάντων ἔσχατα παθεῖν;

XXVIII. Φέρε· ἐὰν δὲ δὴ κατορθώσῃς, τί τὸ
θαυμαστὸν ἔσται σοι καὶ περιμάχητον ἀγαθόν, ἢ
τίνας ἐξοίσῃ δόξας; καὶ γὰρ τοῦτο ἐξέτασον. πρῶτον
μὲν τῶν φιλτάτων τε καὶ ἀναγκαιοτάτων ὑπάρξει σοι
στερέσθαι σωμάτων, μητρὸς ἀθλίας, ἣ γενέσεως καὶ
τροφῆς καὶ τῶν ἄλλων ὧν ἔσχεν ἐπὶ σοὶ πόνων οὐ
καλὰς ἀμοιβὰς ἀποδίδως· ἔπειτα γαμετῆς σώφρονος, 1565
ἣ διὰ τὸν σὸν πόθον ἐν ἐρημίᾳ καὶ χηρείᾳ κάθηται
πᾶσαν ἡμέραν καὶ νύκτα τὰς σὰς φυγὰς ὀδυρομένη·
πρὸς δὲ τούτοις τέκνων δυεῖν, οὓς ἐχρῆν ἀγαθῶν
προγόνων ὄντας ἀπογόνους καρποῦσθαι τὰς ἐκείνων
τιμὰς εὐδοξοῦντας ἐν εὐτυχούσῃ τῇ πατρίδι. ὧν
ἁπάντων οἰκτρὰς καὶ ἀτυχεῖς ἀναγκασθήσῃ θεωρεῖν
καταστροφάς, εἰ τολμήσεις προσάγειν τοῖς τείχεσι
τὸν πόλεμον· οὐ γὰρ δὴ φείσονται τῶν σῶν οὐθενὸς

οἱ περὶ τῶν σφετέρων κινδυνεύοντες καὶ εἰς τὰ ὅμοια
κακῶς ὑπὸ σοῦ πάσχοντες, ἀλλ' εἰς αἰκισμοὺς αὐτῶν
δεινοὺς καὶ ὕβρεις ἀνηλεεῖς καὶ πᾶσαν ἄλλην ἰδέαν
προπηλακισμοῦ χωρήσουσιν ὑπὸ τῶν συμφορῶν βια-
ζόμενοι· καὶ τούτων οὐχ οἱ δρῶντες, ἀλλ' ὁ τὴν
ἀνάγκην αὐτοῖς ἐπιτιθεὶς αἴτιος ἔσῃ σύ· ἡδονὰς μὲν
δὴ τοιαύτας καρπώσῃ κατὰ γνώμην χωρήσαντός
σοι τοῦδε τοῦ ἔργου, ἔπαινον δὲ [δὴ] καὶ ζῆλον καὶ
1566 τιμάς, ὧν ὀρέγεσθαι χρὴ τοὺς ἀγαθοὺς ἄνδρας,
σκόπει ποίας [καὶ] τίνας· μητροκτόνος κεκλήσῃ καὶ
παιδοφόνος καὶ γυναικὸς ἀλιτήριος καὶ πατρίδος
ἀλάστωρ, καὶ οὔτε θυσιῶν οὔτε σπονδῶν οὔθ' ἑστίας
ὅποι ποτ' ἂν ἀφίκῃ κοινωνεῖν ἐθελήσει σοι τῶν εὐ-
σεβῶν καὶ δικαίων οὐθείς, αὐτοῖς τε οὐκ ἔσῃ τίμιος,
οἷς εὔνοιαν ἐνδεικνύμενος ταῦτα δρᾷς, ἀλλὰ καρπω-
σάμενοί τινα ἕκαστος τούτων ἐκ τῶν σῶν ἀσεβημά-
των ὠφέλειαν μισήσουσι τὴν αὐθάδειαν τοῦ τρόπου.
ἐῶ γὰρ λέγειν, ὅτι χωρὶς τοῦ μίσους, ὃ παρὰ τῶν
ἐπιεικεστάτων ἕξεις, καὶ φθόνος ἀπαντήσεται πολὺς
ἐκ τῶν ἴσων καὶ φόβος ἐκ τῶν ἡσσόνων καὶ δι'
ἄμφω ταῦτα ἐπιβουλαὶ καὶ ἄλλα πολλὰ καὶ χαλεπά,
ὅσα εἰκὸς συμπεσεῖν ἀνδρὶ ἐρήμῳ φίλων καὶ ἐν ξένῃ
ὄντι γῇ. τὰς γὰρ δὴ παρὰ θεῶν τε καὶ δαιμόνων
ἐπιπεμπομένας τοῖς ἀνόσια καὶ δεινὰ διαπραξαμένοις
ἐριννύας ἐῶ, ὑφ' ὧν αἰκιζόμενοι ψυχάς τε καὶ σώματα
κακοὺς μὲν διαντλοῦσι βίους, οἰκτρὰς δὲ ὑπομένουσι
1567 τελευτάς. ταῦτα ἐνθυμηθείς, ὦ Μάρκιε, μετάγνωθι
καὶ παῦσαι μνησικακῶν τῇ σεαυτοῦ πατρίδι· τύχην
τε πάντων αἰτίαν ἡγησάμενος ὧν πέπονθας πρὸς
ἡμῶν ἢ δέδρακας ἡμᾶς κακῶν, ἄπιθι χαίρων ἐπὶ τὰ
οἰκεῖα, καὶ κόμισαι μητρός τε περιβολὰς προσηνεστά-
τας καὶ γυναικὸς φιλοφροσύνας ἡδίστας καὶ τέκνων

ἀσπασμοὺς γλυκυτάτους, καὶ σεαυτὸν ἀπόδος ὀφείλημα κάλλιστον τῇ γεννησαμένῃ σε καὶ τηλικοῦτον ἄνδρα παιδευσαμένῃ πατρίδι.

XXVIIII. *Τοιαῦτα διεξελθόντος τοῦ Μηνυκίου μικρὸν ἐπισχὼν ὁ Μάρκιος εἶπε· Σοὶ μέν, ὦ Μηνύκιε, καὶ ὑμῖν [τοῖς ἄλλοις] τοῖς ἅμα τούτῳ πεμφθεῖσιν ὑπὸ τῆς βουλῆς φίλος εἰμὶ καὶ πρόθυμος εἴ τι δύναμαι ποιεῖν ἀγαθόν, ὅτι μοι καὶ πρότερον, ὅτε πολίτης ὑμέτερος ἦν καὶ τὰ κοινὰ ἔπραττον, ἐν πολλοῖς καὶ ἀναγκαίοις ἐγένεσθε καιροῖς χρήσιμοι, καὶ μετὰ τὴν φυγὴν οὐκ ἀπεστράφητέ με καταφρονήσει τῆς τότε τύχης, ὡς οὔτε φίλους εὖ ποιεῖν δυνάμενον ἔτι* 1568 *οὔτ' ἐχθροὺς κακῶς, ἀλλὰ χρηστοὶ καὶ βέβαιοι διεμείνατε φίλοι μητρός τε τῆς ἐμῆς κηδόμενοι καὶ γυναικὸς καὶ τέκνων, καὶ τὰς συμφορὰς αὐτοῖς κουφοτέρας ποιοῦντες ταῖς ἰδίαις ἐπιμελείαις. τοῖς δὲ ἄλλοις Ῥωμαίοις ἀπέχθομαί τε ὡς δύναμαι μάλιστα καὶ πολεμῶ καὶ οὐδέποτε μισῶν αὐτοὺς παύσομαι· οἵ με ἀντὶ πολλῶν καὶ καλῶν ἔργων, ἐφ' οἷς τιμᾶσθαι προσῆκεν, ὡς τὰ μέγιστα ἐξημαρτηκότα περὶ τὸ κοινὸν αἰσχρῶς ἐξήλασαν ἐκ τῆς πατρίδος, οὔτε μητέρα αἰδεσθέντες τὴν ἐμὴν οὔτε παιδία ἐλεήσαντες οὔτ' ἄλλο πάθος ἥμερον οὐδὲν ἐπὶ ταῖς ἐμαῖς λαβόντες τύχαις. μαθόντες δὴ τοῦτο, εἰ μὲν αὐτοὶ δεῖσθέ του παρ' ἡμῶν, λέγετε μηθὲν ὀκνοῦντες, ὡς οὐθενὸς ἀτυχήσοντες τῶν δυνατῶν· περὶ δὲ φιλίας καὶ διαλλαγῶν, ἃς ἀξιοῦτέ με ποιήσασθαι πρὸς τὸν δῆμον ἐπὶ ταῖς ἐλπίσι τῆς καθόδου, παύσασθε διαλεγόμενοι. πάνυ γὰρ ἀγαπητῶς δεξαίμην ἂν εἰς τοιαύτην κατελ-* 1569 *θεῖν πόλιν, ἐν ᾗ τὰ μὲν τῆς ἀρετῆς ἆθλα ἡ κακία φέρεται, τὰς δὲ τῶν κακούργων τιμωρίας οἱ μηδὲν ἡμαρτηκότες ὑπομένουσιν. ἐπεί, φέρε, πρὸς θεῶν*

εἴπατέ μοι, τίνος ἀδικήματος αἰτίᾳ ταύτης ἐγὼ πεπείραμαι τῆς τύχης, ἢ ποῖον ἐπιτηδεύσας ἔργον ἀνάξιον τῶν ἐμαυτοῦ προγόνων; πρώτην ἐστρατευσάμην ἔξοδον κομιδῇ νέος ὤν, ὅτε πρὸς τοὺς βασιλεῖς βίᾳ κατιόντας ἠγωνιζόμεθα. ἐκ ταύτης τῆς μάχης ἀριστείοις ἀνεδούμην ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ στεφάνοις πολίτην ὑπερασπίσας καὶ πολέμιον ἀποκτείνας. ἔπειθ' ὅσας ἄλλας ἱππικὰς καὶ πεζικὰς ἠγωνισάμην μάχας, ἐπιφανὴς ἐν ἁπάσαις ἐγενόμην καὶ τἀριστεῖα ἐξ ἁπασῶν ἔλαβον· καὶ οὔτε πόλις ἐκ τει-
1570 χομαχίας ἑάλω τις, ἧς οὐκ ἐγὼ πρῶτος ἐπέβην ἢ σὺν ὀλίγοις, οὔτε φυγὴ πολεμίων ἐκ παρατάξεως ἐγένετο, ἧς οὐκ ἐμὲ αἰτιώτατον γενέσθαι πάντες οἱ παρόντες ὡμολόγουν, οὔτε ἄλλο τῶν λαμπρῶν ἢ γενναίων ἐν πολέμοις ἔργων οὐθὲν ἄνευ τῆς ἐμῆς εἴτε εὐτολμίας εἴτε εὐτυχίας ἐπράχθη.

XXX. *Καὶ ταυτὶ μὲν ἴσως ἂν ἔχοι τις καὶ ἕτερος ὑπὲρ αὐτοῦ γενναῖος ἀνήρ, εἰ καὶ μὴ τοσαῦτα, λέγειν· ἀλλὰ πόλιν ὅλην τίς δύναιτ' ἂν καυχήσασθαι στρατηγὸς ἢ λοχαγὸς ἑλών, ὥσπερ ἐγὼ τὴν Κοριολανῶν; καὶ τῆς αὐτῆς ἡμέρας ὁ αὐτὸς ἀνὴρ στρατιὰν πολεμίων τρεψάμενος, ὥσπερ ἐγὼ τὴν Ἀντιατῶν ἐπίκουρον τοῖς πολιορκουμένοις ἀφικομένην; ἐῶ γὰρ λέγειν, ὅτι τοιαύτας ἀρετὰς ἀποδειξάμενος, ἐξόν μοι λαβεῖν ἐκ τῶν λαφύρων πολὺν μὲν χρυσόν, πολὺν δὲ ἄργυρον ἀνδράποδά τε καὶ ὑποζύγια καὶ βοσκήματα
1571 καὶ γῆν πολλὴν καὶ ἀγαθήν, οὐκ ἠξίωσα, ἀλλ' ἀνεπίφθονον ὡς μάλιστα βουληθεὶς ἐμαυτὸν παρασχεῖν, πολεμιστὴν ἵππον ἕνα μόνον ἐκ τῶν λαφύρων ἔλαβον καὶ τὸν ἐμαυτοῦ ξένον ἐκ τῶν αἰχμαλώτων, τὸν δὲ ἄλλον πλοῦτον εἰς τὸ κοινὸν ἔθηκα φέρων. πότερον οὖν τιμωρίας ἄξιος ἦν ἐπὶ τούτοις ὑπέχειν, ἢ*

τιμὰς λαμβάνειν, καὶ πότερον ὑπὸ τοῖς κακίστοις γενέσθαι τῶν πολιτῶν, ἢ τὰ δίκαια τάττειν αὐτὸς τοῖς ἥττοσιν; ἀλλ' οὐ διὰ ταῦτά με ἀπήλασεν ὁ δῆμος, ἀλλ' ὅτι περὶ τὸν ἄλλον βίον ἀκόλαστος καὶ πολυτελὴς καὶ παράνομος ἦν; καὶ τίς ἂν ἔχοι δεῖξαί τινα διὰ τὰς ἐμὰς παρανόμους ἡδονὰς ἢ τὴν πατρίδα φεύγοντα ἢ τὴν ἐλευθερίαν ἀπολωλεκότα ἢ χρημάτων στερόμενον ἢ ἄλλῃ τινὶ συμφορᾷ χρησάμενον; ἀλλ' οὐδὲ τῶν ἐχθρῶν με οὐδεὶς πώποτε ᾐτιάσατο οὐδὲ διέβαλεν ἐπ' οὐδενὶ τούτων, ἀλλ' ὑπὸ πάντων ἐμαρτυρεῖτό μοι καὶ ὁ καθ' ἡμέραν ἀνεπίληπτος εἶναι βίος. ἀλλ' ἡ προαίρεσις, νὴ Δία, φαίη τις ἄν, ἡ τῶν πολιτευμάτων σου μισηθεῖσα ταύτην ἐξειργάσατό σοι τὴν συμφοράν. ἐξὸν γὰρ ἑλέσθαι τὴν κρείττω μερίδα τὴν χείρονα εἵλου, καὶ διετέλεις ἅπαντα καὶ 1572 λέγων καὶ πράττων, ἐξ ὧν καταλυθήσεται μὲν ἡ πάτριος ἀριστοκρατία, κύριος δ' ἔσται τῶν κοινῶν ὄχλος ἀμαθὴς καὶ πονηρός. ἀλλ' ἔγωγε τἀναντία ἔπραττον, ὦ Μηνύκιε, καὶ ὅπως ἡ βουλὴ τῶν κοινῶν διὰ παντὸς ἐπιμελήσεται καὶ ὁ πάτριος διαμενεῖ κόσμος τῆς πολιτείας προὐνοούμην. ἀντὶ τούτων μέντοι τῶν καλῶν ἐπιτηδευμάτων, ἃ τοῖς προγόνοις ἡμῶν ζηλωτὰ εἶναι ἐδόκει, τὰς εὐτυχεῖς ταύτας καὶ μακαρίας κεκόμισμαι παρὰ τῆς πατρίδος ἀμοιβάς, οὐχ ὑπὸ τοῦ δήμου μόνον ἐξελαθείς, ὦ Μηνύκιε, ἀλλὰ πολὺ πρότερον ὑπὸ τῆς βουλῆς, ἣ κατ' ἀρχὰς ἐπαίρουσά με κεναῖς ἐλπίσιν, ἡνίκα τοῖς δημάρχοις τυραννίδα περιβαλλομένοις ἠναντιούμην, ὡς αὐτὴ παρέξουσα τὸ ἀσφαλές, ἐπειδὴ κίνδυνόν τινα ἐκ τῶν δημοτικῶν ὑπείδετο, ἀπέστη καὶ παρέδωκέ με τοῖς ἐχθροῖς. σὺ μέντοι τότε αὐτὸς ὕπατος ἦσθα, ὦ Μηνύκιε, ὅτε τὸ προβούλευμα τὸ περὶ τῆς δίκης ἐγένετο, καὶ ἡνίκα

Οὐαλέριος ὁ παραδιδόναι με τῷ δήμῳ παραινῶν
1573 *σφόδρα ἐπὶ τοῖς λόγοις εὐδοκίμει, κἀγὼ δεδιὼς μὴ*
ψήφου δοθείσης ὑπὸ τῶν συνέδρων ἁλῶ, συνέγνων
καὶ παρέξειν ἐμαυτὸν ὑπεσχόμην ἑκόντα ἐπὶ τὴν
δίκην.

XXXI. *Ἴθι δή μοι, Μηνύκιε, ἀπόκριναι πότερα καὶ τῇ βουλῇ τῆς τιμωρίας ἄξιος ἐφάνην εἶναι, ὅτι τὰ κράτιστα ἐπολιτευόμην τε καὶ ἔπραττον, ἢ τῷ δήμῳ μόνῳ; εἰ μὲν γὰρ ἅπασι ταῦτα ἐδόκει τότε καὶ πάντες με ἀπηλάσατε, φανερὸν ὅτι πάντες οἱ ταῦτα βουληθέντες ἀρετὴν μισεῖτε, καὶ τόπος οὐδείς ἐστιν ἐν τῇ πόλει δεχόμενος καλοκαγαθίαν· εἰ δὲ βιασθεῖσα ἡ βουλὴ συνεχώρησε τῷ δήμῳ καὶ τὸ ἔργον αὐτῆς ἀνάγκης ἦν, οὐ γνώμης, ὁμολογεῖτε δήπου πονηροκρατεῖσθαι καὶ μηδενὸς εἶναι τὴν βουλὴν ὧν ἂν προέληται κυρίαν. ἔπειτα εἰς τοιαύτην ἀξιοῦτέ με κατελθεῖν πόλιν, ἐν ᾗ τὸ κρεῖττον μέρος ὑπὸ τοῦ χείρονος ἄρχεται; πολλὴν ἄρα κατεγνώκατέ μου μανίαν. φέρε,*
1574 *καὶ δὴ πέπεισμαι καὶ διαλυσάμενος τὸν πόλεμον ὥσπερ ἀξιοῦτε κατελήλυθα, τίς ἡ μετὰ ταῦτα ἔσται μου διάνοια, καὶ τίνα βίον ζήσομαι; πότερα τἀσφαλὲς καὶ ἀκίνδυνον αἱρούμενος ἀρχάς τε καὶ τιμὰς καὶ τἆλλα ἀγαθὰ ὧν ἄξιον ἐμαυτὸν ἡγοῦμαι μετιὼν θεραπεύειν ὑπομενῶ τὸν ἔχοντα τὴν τούτων ἐξουσίαν ὄχλον; πονηρὸς ἄρα ἐξ ἀγαθοῦ γενήσομαι, καὶ οὐδὲν ἔσται μοι τῆς προτέρας ἀρετῆς ὄφελος. ἀλλ' ἐν τοῖς αὐτοῖς ἤθεσι μένων καὶ τὴν αὐτὴν προαίρεσιν τῆς πολιτείας φυλάττων ἐναντιώσομαι τοῖς μὴ ταὐτὰ προαιρουμένοις; εἶτα οὐ πρόδηλον, ὅτι πολεμήσει μοι πάλιν ὁ δῆμος καὶ δίκας ἑτέρας πάλιν ἀξιώσει λαμβάνειν, τοῦτ' αὐτὸ πρῶτον ἔγκλημα ποιούμενος, ὅτι τῆς καθόδου δι' ἐκείνου τυχὼν οὐ τὰ πρὸς ἡδονὴν*

αὐτῷ πολιτεύομαι; οὐκ ἔνεστ᾿ ἄλλως εἰπεῖν. ἔπειτ᾿ ἀναφανήσεταί τις ἕτερος Ἰκιλίῳ παραπλήσιος ἢ Δεκίῳ θρασὺς δημαγωγός, ὃς αἰτιάσεταί με διιστάναι 1575 τοὺς πολίτας ἀπ᾿ ἀλλήλων ἢ κατὰ τοῦ δήμου πράττειν ἐπιβουλὴν ἢ προδιδόναι τοῖς πολεμίοις τὴν πόλιν ἢ τυραννίδι, ὥσπερ καὶ Δέκιος ἠτιάσατο, ἐπιχειρεῖν ἢ ἄλλο ἀδικεῖν ὁτιδήποτε ἂν αὐτῷ φανῇ· οὐ γὰρ ἀπορήσει τὸ μισοῦν αἰτίας. ἥξει τε πρὸς τοῖς ἄλλοις ἐγκλήμασι καὶ ταυτὶ φερόμενα οὐκ εἰς μακράν, ὅσα ἐν τῷ πολέμῳ πέπρακταί μοι τούτῳ, ὅτι χώραν ὑμῶν τέτμηκα καὶ λείαν ἀπελήλακα καὶ πόλεις ἀφῄρημαι καὶ τοὺς ὑπὲρ τούτων ἀμυνομένους τοὺς μὲν πεφόνευκα, τοὺς δὲ τοῖς πολεμίοις παραδέδωκα. ταῦτ᾿ ἐὰν οἱ κατήγοροι λέγωσι, τί φήσω πρὸς αὐτοὺς ἀπολογούμενος, ἢ τίνι βοηθείᾳ χρήσομαι;

XXXII. Ἆρ᾿ οὐ φανερόν, ὅτι καλλιλογεῖτε καὶ εἰρωνεύεσθε, ὦ Μηνύκιε, ὄνομα καλὸν ἔργῳ περιθέντες ἀνοσίῳ; οὐ γὰρ δὴ κάθοδόν μοι δίδοτε, ἀλλὰ σφάγιόν με τῷ δήμῳ κατάγετε, τάχα μὲν καὶ βεβουλευμένοι τοῦτο πράττειν· οὐθὲν γὰρ ἔτι μοι χρηστὸν 1576 ὑπὲρ ὑμῶν ἐπέρχεται φρονεῖν· εἰ δὲ βούλεσθε, τίθημι γάρ, οὐδὲν ὧν πείσομαι προορώμενοι· τί οὖν ἔσται μοι τῆς ὑμετέρας ἀγνοίας ἢ μωρίας ὄφελος, κωλύειν μὲν οὐδὲν οὐδ᾿ ἂν οἷοι ἦτε δυνησομένων, χαρίζεσθαι δὲ καὶ τοῦτο τῷ δήμῳ σὺν τοῖς ἄλλοις ἀναγκαζομένων; ἀλλὰ γὰρ ὅτι μὲν οὐ συνοίσει μοι πρὸς ἀσφάλειαν ἥδε, ἣν ὑμεῖς μὲν κάθοδον καλεῖτε, ἐγὼ δὲ ταχεῖαν ὁδὸν ἐπὶ τὸν ὄλεθρον, οὐ πολλῶν οἴομαι δεῖν ἔτι λόγων· ὅτι δ᾿ οὐδὲ πρὸς εὐδοξίαν ἢ τιμὴν ἢ πρὸς εὐσέβειαν, ἐπειδὴ καὶ σὺ τούτων, ὦ Μηνύκιε, πρόνοιαν ἔχειν με ἠξίους, εὖ ποιῶν, ἀλλ᾿

αἴσχιστά μοι καὶ ἀνοσιώτατα πραχθήσεται πεισθέντι ὑμῖν, ἄκουσον ἐν τῷ μέρει. ἐγὼ πολέμιος ἐγενόμην τούτοις [Οὐολούσκοις] καὶ πολλὰ ἠδίκησα αὐτοὺς ἐν τῷ πολέμῳ, τῇ πατρίδι πράττων ἡγεμονίαν καὶ
1577 *ἰσχὺν και κλέος. οὐκοῦν προσῆκέ μοι τιμᾶσθαι μὲν ὑπὸ τῶν εὖ πεπονθότων, μισεῖσθαι δὲ ὑπὸ τῶν ἠδικημένων; εἰ γοῦν τι τῶν εἰκότων ἐγένετο. ἀνέστρεψεν ἀμφότερα ταῦτα ἡ τύχη, καὶ εἰς τἀναντία μετέθηκε τὰς ἀξιώσεις. ὑμεῖς μὲν γάρ, ὑπὲρ ὧν τούτοις ἐχθρὸς ἦν, ἀφείλεσθέ με πάντα τἀμὰ καὶ τὸ μηδὲν ποιήσαντες ἐρρίψατε· οὗτοι δὲ οἱ τὰ δεινὰ ὑπ' ἐμοῦ παθόντες, τὸν ἄπορον καὶ ἀνέστιον καὶ ταπεινὸν καὶ ἄπολιν ὑπεδέξαντό με ταῖς ἑαυτῶν πόλεσι. καὶ οὐκ ἀπέχρη αὐτοῖς τοῦτο ποιήσασι μόνον οὕτω λαμπρὸν καὶ μεγαλόψυχον ἔργον, ἀλλὰ καὶ πολιτείαν ἔδοσάν μοι ἐν ἁπάσαις ταῖς ἑαυτῶν πόλεσι καὶ ἀρχὰς καὶ τιμάς, αἳ μέγισται παρ' αὐτοῖς εἰσιν. ἐῶ τἆλλα· ἀλλὰ νυνὶ στρατηγὸν ἀποδεδείχασί με αὐτοκράτορα τῆς ὑπερορίου στρατιᾶς, καὶ πάντα τὰ κοινὰ ἐπ' ἐμοὶ πεποιήκασι μόνῳ. φέρε δή, τίνα λα-*
1578 *βὼν καρδίαν προδοίην ἂν ἔτι τούτους, ὑφ' ὧν τηλικαύταις κεκόσμημαι τιμαῖς, οὐθὲν οὔτε μεῖζον οὔτε ἔλαττον ἀδικηθείς; εἰ μὴ ἄρα αἱ χάριτες αὐτῶν ἀδικοῦσί με, ὥσπερ ὑμᾶς αἱ ἐμαί· καλήν γε δόξαν οἴσει μοι παρὰ πᾶσιν ἀνθρώποις γνωσθεῖσα ἡ παλιμπροδοσία. τίς δ' [οὐκ] ἂν ἐπαινέσειέ με ἀκούσας, ὅτι τοὺς μὲν φίλους ὑφ' ὧν εὖ πάσχειν μοι προσῆκε πολεμίους εὑρών, τοὺς δ' ἐχθροὺς ὑφ' ὧν ἐχρῆν με ἀπολωλέναι φίλους, ἀντὶ τοῦ μισεῖν μὲν τὰ μισοῦντα, φιλεῖν δὲ τὰ φιλοῦντα, τὴν ἐναντίαν γνώμην ἔσχον;*

XXXIII. *Ἴθι δή, σκόπει καὶ τὰ παρὰ θεῶν, Μη-*

νύκιε, οἷά μοι νῦν τε ἀπήντηται, καὶ ἐὰν ἄρα πει-
σθεὶς ὑμῖν προδῶ τὴν τούτων πίστιν οἷα τὸν λοιπὸν
ὑπάρξει μοι βίον. νῦν μέν γε πάσης πράξεως ἧς ἂν
ἅψωμαι καθ' ὑμῶν συλλαμβάνουσί μοι, καὶ οὐδεμιᾶς
πείρας ἀποτυγχάνω. καὶ τοῦτο πηλίκον οἴεσθε εἶναι 1579
τεκμήριον εὐσεβείας τῆς ἐμῆς; εἰ γὰρ αὖ κατὰ τῆς
πατρίδος οὐχ ὅσιον ἐγὼ πόλεμον ἐνεστησάμην,
ἅπαντα ἐχρῆν ἐναντία μοι γίνεσθαι τὰ παρὰ θεῶν·
ὁπότε δ' οὐρίῳ πνεούσῃ κέχρημαι τῇ περὶ τοὺς πο-
λέμους τύχῃ, καὶ ὁπόσοις ἂν ἐπιβάλωμαι πράγμασι
κατ' ὀρθὸν ἅπαντά μοι χωρεῖ, δῆλον ὅτι εὐσεβής
εἰμι ἀνὴρ καὶ πράξεις προῄρημαι καλάς. τί οὖν, ἐὰν
μεταβάλωμαι καὶ τὰ μὲν ὑμέτερα αὔξειν, τὰ δὲ τού-
των ταπεινὰ ποιεῖν ζητῶ, γενήσεταί μοι; ἆρ' οὐχὶ
τἀναντία, καὶ πονηρὰν νέμεσιν ἕξω παρὰ τοῦ δαιμο-
νίου τοῖς ἠδικημένοις τιμωρόν, καὶ ὥσπερ ἐκ ταπει-
νοῦ μέγας διὰ τοὺς θεοὺς ἐγενόμην, οὕτως αὖθις ἐκ
μεγάλου ταπεινὸς γενήσομαι, καὶ τἀμὰ παθήματα
παιδεύματα γενήσεται τοῖς ἄλλοις; ἐμοὶ μὲν ταῦτα
παρίσταται περὶ τοῦ δαιμονίου φρονεῖν, καὶ πείθο-
μαί γε τὰς ἐρινύας ἐκείνας τὰς φοβερὰς καὶ ἀπαραι-
τήτους τοῖς ἀνόσιόν τι διαπραξαμένοις, ὧν καὶ σὺ
ἐμνήσθης, ὦ Μηνύκιε, τότε μοι παρακολουθήσειν 1580
ψυχήν τε καὶ σῶμα αἰκιζομένας, ὅταν ἐγκαταλίπω
καὶ προδῶ τοὺς σώσαντάς με ἀπολωλότα ὑφ' ὑμῶν
καὶ μετὰ τοῦ σῶσαι πολλὰς καὶ καλὰς προσθέντας
εὐεργεσίας, οἷς ἐγγυητὰς ἔδωκα θεούς, ὡς ἐπ' οὐδενὶ
κακῷ τὴν ἄφιξιν ποιησάμενος καὶ φυλάξων τὴν εἰς
τόδε χρόνου καθαρὰν καὶ ἀμίαντον συνοῦσάν μοι
πίστιν.

XXXIIII. Ὅταν δὲ φίλους ἔτι καλῇς, ὦ Μηνύκιε,
τοὺς ἐξελάσαντάς με καὶ πατρίδα τὴν ἀπαρνησαμέ-

νην, φύσεώς τε νόμους ἀνακαλῇ καὶ περὶ τῶν ὁσίων διαλέγῃ, φαίνῃ μοι τὰ κοινότατα καὶ ὑπὸ μηδενὸς ἀγνοούμενα μόνος ἀγνοεῖν· ὅτι τὸ φίλιον ἢ πολέμιον οὔτε ὄψεως ὁρίζει χαρακτὴρ οὔτε ὀνόματος θέσις, ἀλλὰ ταῖς χρείαις καὶ τοῖς ἔργοις δηλοῦται τούτων ἑκάτερον, φιλοῦμέν τε πάντες τὰ ὠφελοῦντα καὶ
1581 μισοῦμεν τὰ βλάπτοντα, οὐκ ἀνθρώπων τινῶν ἡμῖν τόνδε θεμένων τὸν νόμον, οὐδὲ ἀνελούντων ποτὲ αὐτὸν ἐὰν τἀναντία αὐτοῖς δοκῇ, ἀλλ' ὑπὸ τῆς κοινῆς φύσεως ἐξ ἅπαντος τοῦ χρόνου πᾶσι τοῖς αἰσθήσεως μετειληφόσι κείμενον καὶ εἰς ἀεὶ διαμενοῦντα παραλαβόντες· καὶ διὰ τοῦτο φίλους τε ἀπαρνούμεθα, ὅταν ἀδικήσωσι, καὶ ἐχθροὺς φίλους ποιούμεθα, ὅταν τις ἡμῖν παρ' αὐτῶν ὑπάρξῃ χάρις, πόλιν τε τὴν γειναμένην ἡμᾶς, ὅταν μὲν ὠφελῇ στέργομεν, ὅταν δὲ βλάπτῃ καταλείπομεν, οὐ διὰ τὸν τόπον ἀγαπῶντες αὐτήν, ἀλλὰ διὰ τὸ συμφέρον. καὶ οὐχὶ τοῖς μὲν ἰδι-
1582 ώταις οὕτως ἐπέρχεται καθ' ἕνα φρονεῖν, οὐχὶ δὲ καὶ πόλεσιν ὅλαις καὶ ἔθνεσιν, ὥστε ὁ ταύτῃ τῇ γνώμῃ χρώμενος οὐδὲν ἔξω τῶν θείων ἀξιοῖ νομίμων, οὐδὲ παρὰ τὴν κοινὴν ἁπάντων ἀνθρώπων ποιεῖ δικαίωσιν. ἐγὼ μὲν δὴ ταῦτα πράττοντα ἐμαυτὸν τά τε δίκαια ἡγοῦμαι πράττειν καὶ τὰ συμφέροντα καὶ τὰ καλὰ καὶ ἅμα ταῦτα καὶ [τὰ] πρὸς τοὺς θεοὺς ὁσιώτατα· καὶ οὐ δέομαι δικαστὰς ὑπὲρ αὐτῶν λαβεῖν τοὺς εἰκασμῷ καὶ δόξῃ τεκμαιρομένους τὴν ἀλήθειαν ἀνθρώπους, ἐπειδὴ θεοῖς ἀρέσκοντα πράττω. οὐ γὰρ ἀδυνάτοις ἐπιχειρεῖν ὑπολαμβάνω πράγμασι θεοὺς ἔχων αὐτῶν ἡγεμόνας, εἴγε δεῖ τεκμαίρεσθαι τοῖς γεγονόσιν ἤδη τὰ μέλλοντα.

XXXV. *Περὶ δὲ τῆς μετριότητος, ἐφ' ἣν παρακαλεῖτέ με, καὶ τοῦ μὴ πρόρριζον ἀνελεῖν τὸ Ῥω-*

μαίων γένος μηδ᾽ ἐκ βάθρων ὅλην ἀναστῆσαι τὴν
πόλιν, εἶχον μέν, ὦ Μηνύκιε, λέγειν, ὅτι οὐκ ἐγὼ
τούτου κύριος οὐδὲ πρὸς ἐμὲ περὶ τούτων ἐστὶ λόγος,
ἀλλ᾽ ἐγὼ στρατηγός εἰμι τῆς δυνάμεως, πολέμου δὲ
καὶ εἰρήνης οὗτοι κύριοι· ὥστε παρὰ τούτων αἰτεῖσθε
εἴτε ἀνοχὰς εἴτε διαλλαγάς, ἀλλὰ μὴ παρ᾽ ἐμοῦ. οὐ 1583
μὴν ταύτην γε δίδωμι τὴν ἀπόκρισιν, ἀλλὰ καὶ
θεοὺς σέβων τοὺς πατρῴους καὶ τάφους αἰδούμενος
προγόνων καὶ γῆν ἐξ ἧς ἔφυν γυναῖκάς τε καὶ παῖ-
δας ὑμῶν ἐλεῶν, οἷς οὐκ ἐπιτηδείοις οὖσι τὰ πατέ-
ρων καὶ ἀνδρῶν ἥξει σφάλματα, καὶ οὐχ ἥκιστα τῶν
ἄλλων καὶ δι᾽ ὑμᾶς, ὦ Μηνύκιε, τοὺς προχειρισθέν-
τας ὑπὸ τῆς πόλεως, τάδε ἀποκρίνομαι· ἐὰν ἀποδι- 1584
δῶσι Ῥωμαῖοι Οὐολούσκοις χώραν τε ὅσην αὐτοὺς
ἀφῄρηνται καὶ πόλεις ὅσας κατέχουσιν ἀνακαλεσά-
μενοι τοὺς ἐποίκους, φιλίαν τε ποιήσωνται πρὸς αὐ-
τοὺς εἰς τὸν ἀεὶ χρόνον καὶ ἰσοπολιτείας μεταδιδῶ-
σιν ὥσπερ Λατίνοις ὅρκους καὶ ἀρὰς κατὰ τῶν παρα-
βαινόντων τὰ συγκείμενα ποιησάμενοι, διαλύσομαι
πρὸς αὐτοὺς τὸν πόλεμον, πρότερον δὲ μή. ταῦτα
ἀπαγγέλλετε αὐτοῖς, καὶ τὸν αὐτὸν τρόπον ὅνπερ
πρὸς ἐμὲ καὶ πρὸς ἐκείνους περὶ τοῦ δικαίου πάνυ
ἐπιστρεφῶς ταῦτα διαλέγεσθε· καλόν τοι τὰς ἰδίας
ἕκαστον ἔχοντα κτήσεις ἐν εἰρήνῃ ζῆν, καὶ πολλοῦ
ἄξιον τὸ μηθένα δεδοικέναι μήτ᾽ ἐχθρὸν μήτε και-
ρόν· αἰσχρὸν δὲ τῶν ἀλλοτρίων περιεχομένους οὐκ
ἀναγκαῖον πόλεμον ὑπομένειν, ἐν ᾧ [δὴ] καὶ περὶ
τῶν ἰδίων ἁπάντων κινδυνεύσουσιν ἀγαθῶν· τά τε 1585
ἆθλα ἐπιδείκνυτε αὐτοῖς οὐκ ἴσα κατορθοῦσί τε καὶ
μὴ τυχοῦσι γινόμενα γῆς ἀλλοτρίας γλιχομένοις, εἰ
δὲ βούλεσθε, προστίθετε καὶ τὰς πόλεις τῶν ἠδικη-
μένων προσλαβεῖν βουλομένοις, ἐὰν μὴ κρατῶσι,

καὶ τὴν ἑαυτῶν γῆν τε καὶ πόλιν ἀφαιρεθῆναι, καὶ ἔτι πρὸς τούτῳ γυναῖκας ἐπιδεῖν αἴσχιστα πασχούσας καὶ παῖδας εἰς ὕβριν ἀγομένους καὶ γονεῖς δούλους ἀντ' ἐλευθέρων ἐπὶ γήρως ὁδοῦ γινομένους.
1586 καὶ ἅμα διδάσκετε τὴν βουλήν, ὅτι τούτων τῶν κακῶν οὐκ ἂν ἔχοιεν αἰτιάσασθαι Μάρκιον, ἀλλὰ τὴν ἑαυτῶν ἀφροσύνην. παρὸν γὰρ αὐτοῖς τὰ δίκαια ποιεῖν καὶ μηδενὶ δεινῷ περιπεσεῖν, τὸν ὑπὲρ τῶν ἐσχάτων κίνδυνον ἀναιρήσονται μέχρι παντὸς φιλοχωροῦντες ἐν τοῖς ἀλλοτρίοις. ἔχετε τὰς ἀποκρίσεις· τούτων οὐθὲν ἂν εὕροισθε παρ' ἐμοῦ πλέον· ἀλλ' ἄπιτε καὶ σκοπεῖτε ὅ τι πρακτέον ὑμῖν· ἕως δὲ βουλεύσησθε, δίδωμι χρόνον ὑμῖν ἡμερῶν τριάκοντα. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ χρόνῳ σήν τε χάριν, ὦ Μηνύκιε, καὶ τῶν ἄλλων ὑμῶν ἕνεκα τὴν στρατιὰν ἐκ τῆς χώρας ἀπάξω· μεγάλα γὰρ ἂν βλάπτοισθε μενούσης αὐτῆς ἐνθάδε. τῇ δὲ τριακοστῇ προσδέχεσθέ με ἡμέρᾳ τὰς ἀποκρίσεις ληψόμενον.

XXXVI. *Ταῦτ' εἰπὼν ἀνέστη καὶ διέλυσε τὸν σύλλογον. τῇ δ' ἐπιούσῃ νυκτὶ περὶ τὴν τελευταίαν φυλακὴν ἀναστήσας τὴν στρατιὰν ἦγεν ἐπὶ τὰς λοιπὰς τῶν Λατίνων πόλεις, εἴτε κατ' ἀλήθειαν πεπυσμένος, ὅτι μέλλοι τις ἐκεῖθεν ἐπικουρία Ῥωμαίοις*
587 *ἀφικέσθαι, ὡς τότε δημηγορῶν ἔφησεν· εἴτε αὐτὸς πλασάμενος τὸν λόγον, [ἢ] ἵνα μὴ δόξειε χαριζόμενος τοῖς ἐχθροῖς καταλελοιπέναι τὸν πόλεμον. ἐπιβαλὼν δὲ τῇ καλουμένῃ Λογγόλῃ, καὶ δίχα πόνου γενόμενος αὐτῆς ἐγκρατής, καὶ τὸν αὐτὸν τρόπον ὅνπερ τὰς ἑτέρας ἐξανδραποδισάμενός τε καὶ διαρπάσας, ἐπὶ τὴν Σατρικανῶν ἤλαυνε πόλιν. ἑλὼν δὲ καὶ ταύτην ὀλίγον ἀντισχόντων τῶν ἐν αὐτῇ χρόνον, καὶ τὰς ἐξ [αὐτῶν] ἀμφοτέρων τῶν πόλεων ὠφελείας μέρει τῆς*

στρατιᾶς κελεύσας ἀπάγειν εἰς Ἐχέτραν, τὴν λοιπὴν
ἀναλαβὼν δύναμιν ἦγεν ἐπὶ πόλιν ἄλλην τὴν κα-
λουμένην Κετίαν. γενόμενος δὲ καὶ ταύτης ἐγκρατὴς
καὶ διαρπάσας εἰς τὴν Πολυσκανῶν χώραν ἐνέβαλεν. 1588
οὐ δυνηθέντων δὲ ἀντισχεῖν τῶν Πολυσκανῶν, κατὰ
κράτος ἑλὼν καὶ τούτους ἐπὶ τὰς ἑξῆς ἐχώρει. Λαβι-
νιάτας μὲν οὖν καὶ Μογιλλανοὺς ἐκ τειχομαχίας
αἱρεῖ, † χωριελανοὺς δὲ καθ' ὁμολογίας παραλαμβά-
νει. γενόμενος δ' ἐν ἡμέραις τριάκοντα πόλεων ἑπτὰ
κύριος ἧκεν ἐπὶ τὴν Ῥώμην ἄγων πολὺ πλείω στρα-
τιὰν τῆς προτέρας, καὶ σταδίους ἀποσχὼν τῆς πό-
λεως ὀλίγῳ πλείους τῶν τριάκοντα παρὰ τὴν ἐπὶ
Τυσκλανοὺς φέρουσαν ὁδὸν κατεστρατοπέδευσεν. ἐν
ᾧ δὲ τὰς Λατίνων ἐξῄρει τε καὶ προσήγετο πόλεις,
Ῥωμαίοις πρὸς τὰς ἐπιταγὰς αὐτοῦ πολλὰ βουλευσα-
μένοις ἔδοξε μηδὲν ἀνάξιον ποιεῖν τῆς πόλεως, ἀλλ' 1589
ἐὰν μὲν ἀπέλθωσιν αὐτῶν ἐκ τῆς χώρας Οὐολοῦσκοι
καὶ τῆς τῶν συμμάχων τε καὶ ὑπηκόων γῆς, καὶ κα-
ταλυσάμενοι τὸν πόλεμον πρέσβεις ἀποστείλωσι τοὺς
διαλεξομένους περὶ φιλίας, προβουλεῦσαι τὸ συνέ-
δριον ἐφ' οἷς ἔσονται δικαίοις φίλοι, καὶ τὰ βουλευ-
θέντα εἰς τὸν δῆμον ἐξενεγκεῖν· ἕως δ' ἂν ἐν τῇ
χώρᾳ μένοντες αὐτῶν καὶ τῶν συμμάχων ἔργα πράτ-
τωσι πολεμίων, μηθὲν αὐτοῖς ψηφίζεσθαι φιλάνθρω-
πον. πολὺς γὰρ δὴ Ῥωμαίοις ἀεὶ λόγος τοῦ μηθὲν
δρᾶσαί ποτε ἐξ ἐπιτάγματος μηδὲ φόβῳ πολεμίων
εἴξαντας, σπεισαμένοις δὲ τοῖς διαφόροις καὶ πα-
ρασχοῦσιν ἑαυτοὺς ὑπηκόους χαρίζεσθαί τε καὶ ἐπι-
τρέπειν ὅτου δέοιντο τῶν μετρίων. καὶ τοῦτο τὸ φρό-
νημα ἐν [τοῖς] πολλοῖς καὶ μεγάλοις κινδύνοις φυλάτ-
τουσα ἡ πόλις κατά τε τοὺς ὀθνείους καὶ τοὺς ἐμφυ-
λίους πολέμους μέχρι τοῦ καθ' ἡμᾶς χρόνου διατετέλεκε.

1590 XXXVII. *Ταῦτα ψηφισαμένης τῆς βουλῆς, καὶ πρεσβευτὰς ἑτέρους ἑλομένης δέκα ἄνδρας ἐκ τῶν ὑπατικῶν τοὺς ἀξιώσοντας τὸν ἄνδρα μηθὲν ἐκφέρειν ἐπίταγμα βαρὺ μηδ᾽ ἀνάξιον τῆς πόλεως, ἀλλὰ καταλύσαντα τὴν ἔχθραν καὶ ἀναστήσαντα τὴν δύναμιν ἐκ τῆς χώρας πειθοῖ καὶ διὰ λόγων συμβατηρίων ταῦτα πειρᾶσθαι πράττειν, εἰ βούλεται βεβαίους τε καὶ εἰς ἀεὶ διαμενούσας ποιῆσαι τὰς ὁμολογίας τῶν πόλεων, ὡς τῶν γε ὑπ᾽ ἀνάγκης τινὸς ἢ καιροῦ συγχωρουμένων καὶ ἰδιώταις καὶ πόλεσιν ἅμα τῷ μεταπεσεῖν τοὺς καιροὺς ἢ τὰς ἀνάγκας εὐθὺς διαλυομένων· οἱ μὲν ἀποδειχθέντες ὑπ᾽ αὐτῆς πρέσβεις, ἅμα τῷ πυθέσθαι τὴν παρουσίαν τοῦ Μαρκίου πορευθέντες ὡς αὐτὸν πολλὰ ἐπαγωγὰ διελέγοντο,*
1591 *φυλάττοντες καὶ ἐν τοῖς λόγοις τὸ ἀξίωμα τῆς πόλεως. ὁ δὲ Μάρκιος ἄλλο μὲν οὐδὲν αὐτοῖς ἀπεκρίνατο, συνεβούλευε δὲ κρεῖττόν τι βουλευσαμένους ἥκειν τριῶν ἐντὸς ἡμερῶν· ταύτας γὰρ αὐτοῖς ἔσεσθαι μόνας ἀνοχὰς τοῦ πολέμου. βουλομένων δέ τι πρὸς ταῦτα λέγειν τῶν ἀνδρῶν οὐκ ἐπέτρεψεν, ἀλλ᾽ ἀπιέναι τὴν ταχίστην ἐκέλευσεν ἐκ τοῦ χάρακος, ἀπειλήσας ὡς εἰ μὴ ποιήσουσιν ὡς κατασκόποις χρήσεται· κἀκεῖνοι σιωπῇ ἀπιόντες εὐθὺς ᾤχοντο. μαθόντες δὲ οἱ βουλευταὶ παρὰ τῶν πρέσβεων τὰς αὐθάδεις ἀποκρίσεις τε καὶ ἀπειλὰς τοῦ Μαρκίου, στρατιὰν μὲν ὑπαίθριον ἐξάγειν οὐδὲ τότε ἐψηφίσαντο, εἴτε τὸ ἀπειροπόλεμον τῶν σφετέρων στρατιωτῶν· νεοσύλλεκτοι γὰρ οἱ πλείους ἦσαν αὐτῶν· εὐλαβηθέντες, εἴτε τὴν ἀτολμίαν τῶν ὑπάτων· ἥκιστα γὰρ ἐν αὐτοῖς τὸ δραστήριον ἦν· σφαλερὰν ἡγησάμενοι τηλικοῦτον ἀναιρεῖσθαι ἀγῶνα, εἴτε ἄρα καὶ τοῦ δαιμονίου σφίσιν ἐναντιουμένου πρὸς τὴν ἔξοδον*

δι' οἰωνῶν ἢ χρησμῶν Σιβυλλείων ἤ τινος ὀττείας 1592
πατρίου, ὧν οὐκ ἠξίουν οἱ τότε ἄνθρωποι καθάπερ οἱ νῦν ὑπερορᾶν· φυλάττειν δὲ τὴν πόλιν ἐπιμελεστέρᾳ φυλακῇ καὶ ἀπὸ τῶν ἐρυμάτων τοὺς ἐπιόντας ἀμύνεσθαι διέγνωσαν.

XXXVIII. Ταῦτα δὲ πράττοντες καὶ παρασκευαζόμενοι τῆς τε ἐλπίδος οὔπω ἀφιστάμενοι, ὡς δυνατὸν ὑπάρχον ἔτι μεταπεισθῆναι τὸν Μάρκιον, εἰ μείζονι καὶ τιμιωτέρᾳ πρεσβείᾳ δεηθεῖεν αὐτοῦ, ψηφίζονται τούς τε ἱεροφάντας καὶ τοὺς οἰωνοσκόπους καὶ τοὺς ἄλλους ἅπαντας, ὅσοι τιμήν τινα ἱερὰν ἢ λειτουργίαν περὶ τὰ θεῖα δημοτελῆ λαβόντες εἶχον· εἰσὶ δὲ παρ' αὐτοῖς ἱερεῖς καὶ θεραπευταὶ θεῶν πάνυ πολλοὶ καὶ αὐτοὶ οὗτοι διαφανέστατοι τῶν ἄλλων κατά τε οἴκους πατέρων καὶ ἀρετῆς οἰκείας
ἀξίωσιν· ἔχοντας ἅμ' αὐτοῖς τῶν ὀργιαζομένων τε 159
καὶ θεραπευομένων θεῶν τὰ σύμβολα καὶ τὰς ἱερὰς ἀμπεχομένους ἐσθῆτας, ἀθρόους ἐπὶ τὸν χάρακα τῶν πολεμίων πορεύεσθαι τοὺς αὐτοὺς φέροντας τοῖς προτέροις λόγους. ὡς δὲ ἀφίκοντο οἱ ἄνδρες καὶ ἔλεξαν ὅσα ἡ βουλὴ αὐτοῖς ἐπέστελλεν, οὐδὲ τούτοις ἔδωκεν ὁ Μάρκιος ἀπόκρισιν ὑπὲρ ὧν ἠξίουν, ἀλλ' ἢ τὰ κελευόμενα ποιεῖν συνεβούλευεν ἀπιόντας, εἰ θέλουσιν εἰρήνην ἄγειν, ἢ προσδέχεσθαι τὸν πόλεμον ἥξοντα πρὸς τὴν πόλιν, καὶ τὸ λοιπὸν ἀπεῖπε μὴ διαλέγεσθαι πρὸς αὐτόν. ὡς δὲ καὶ ταύτης ἀπέτυχον τῆς πείρας οἱ Ῥωμαῖοι, πᾶσαν ἐλπίδα διαλλαγῆς ἀπογνόντες, ὡς πολιορκησόμενοι παρεσκευάζοντο τοὺς μὲν ἀκμαιοτάτους ἐπὶ τῇ τάφρῳ καὶ παρὰ ταῖς πύλαις τάξαντες, τοὺς δὲ ἀφειμένους ἤδη στρατείας
οἷς ἔτι τὰ σώματα ἱκανὰ ἦν κακοπαθεῖν ἐπὶ τοῖς 1
τείχεσιν.

XXXVIIII. *Αἱ δὲ γυναῖκες αὐτῶν, ὡς ἐγγὺς ὄντος ἤδη τοῦ δεινοῦ, καταλείπουσαι τῆς οἴκοι μονῆς τὸ εὐπρεπές, ἔθεον ἐπὶ τὰ τεμένη τῶν θεῶν ὀλοφυρόμεναί τε καὶ προκυλιόμεναι τῶν ξοάνων· καὶ ἦν ἅπας μὲν ἱερὸς τόπος οἰμωγῆς τε καὶ ἱκετείας γυναικῶν ἀνάπλεως, μάλιστα δὲ τὸ τοῦ Καπετωλίου Διὸς ἱερόν. ἔνθα δή τις αὐτῶν γένει τε καὶ ἀξιώματι προὔχουσα καὶ ἡλικίας ἐν τῷ κρατίστῳ τότε οὖσα καὶ φρονῆσαι τὰ δέοντα ἱκανωτάτη, Οὐαλερία μὲν ὄνομα, Ποπλικόλα δὲ τοῦ συνελευθερώσαντος ἀπὸ τῶν βασιλέων τὴν πόλιν ἀδελφή, θείῳ τινὶ παραστήματι κινηθεῖσα ἐπὶ τῆς ἀνωτάτω κρηπῖδος ἔστη τοῦ νεώ, καὶ προσκαλεσαμένη τὰς ἄλλας γυναῖκας, πρῶτον μὲν παρεμυθήσατο καὶ παρεθάρρυνεν ἀξιοῦσα μὴ καταπεπλῆχθαι τὸ δεινόν· ἔπειτα ὑπέσχετο μίαν*
1595 *εἶναι σωτηρίας ἐλπίδα τῇ πόλει, ταύτην δὲ ἐν αὐταῖς εἶναι μόναις καταλειπομένην, ἐὰν ἐθελήσωσι πράττειν, ἃ δεῖ. καί τις εἶπεν ἐξ αὐτῶν· Καὶ τί πράττουσαι ἂν ἡμεῖς αἱ γυναῖκες διασῶσαι δυνηθείημεν τὴν πατρίδα τῶν ἀνδρῶν ἀπειρηκότων; τίς ἡ τοσαύτη περὶ ἡμᾶς τὰς ἀσθενεῖς καὶ ταλαιπώρους ἐστὶν ἰσχύς; Οὐχ ὅπλων, ἔφησεν ἡ Οὐαλερία, καὶ χειρῶν δεομένη· τούτων μὲν γὰρ ἀπολέλυκεν ἡμᾶς ἡ φύσις· ἀλλ' ἐννοίας καὶ λόγου. βοῆς δὲ μετὰ τοῦτο γενομένης, καὶ δεομένων ἁπασῶν φανερὰν ποιεῖν, ἥτις ἐστὶν ἡ ἐπικουρία, λέγει πρὸς αὐτάς· Ταύτην ἔχουσαι τὴν πιναράν τε καὶ ἄκοσμον ἐσθῆτα καὶ τὰς ἄλλας παραλαβοῦσαι γυναῖκας καὶ τὰ τέκνα ἐπαγόμεναι βαδίζωμεν ἐπὶ τὴν Οὐετουρίας τῆς Μαρκίου μητρὸς οἰκίαν· καὶ πρὸ τῶν γονάτων αὐτῆς τὰ τέκνα θεῖσαι, δεώμεθα μετὰ δακρύων ἡμᾶς τε οἰκτείρασαν τὰς μηθενὸς κακοῦ αἰτίας καὶ τὴν ἐν ἐσχάτοις κινδύνοις*

οὖσαν πατρίδα προελθεῖν ἐπὶ τὸν χάρακα τῶν πολεμίων, ἄγουσαν τούς τε υἱωνοὺς καὶ τὴν μητέρα αὐτῶν καὶ ἡμᾶς ἁπάσας· ἀκολουθῶμεν γὰρ αὐτῇ τὰ παιδία ἐπαγόμεναι· ἔπειτα ἱκέτιν γενομένην τοῦ τέκνου, ἀξιοῦν καὶ δεῖσθαι μηδὲν ἀνήκεστον κατὰ 1596 τῆς πατρίδος ἐξεργάσασθαι. ὀλοφυρομένης γὰρ αὐτῆς καὶ ἀντιβολούσης οἶκτός τις εἰσελεύσεται τὸν ἄνδρα καὶ λογισμὸς ἥμερος. οὐχ οὕτω στερρὰν καὶ ἄτρωτον ἔχει καρδίαν, ὥστε ἀνασχέσθαι μητέρα πρὸς τοῖς ἑαυτοῦ γόνασι κυλιομένην.

XXXX. Ὡς δ' ἐπῄνεσαν αἱ παροῦσαι τὸν λόγον, εὐξαμένη τοῖς θεοῖς πειθὼ καὶ χάριν αὐτῶν περιθεῖναι τῇ δεήσει προῆλθεν ἐκ τοῦ τεμένους, αἱ δ' ἠκολούθουν. καὶ μετὰ τοῦτο παραλαβοῦσαι τὰς ἄλλας γυναῖκας ἐπορεύοντο ἐπὶ τὴν οἰκίαν τῆς Μαρκίου μητρὸς ἀθρόαι. ἰδοῦσα δ' αὐτὰς προσιούσας ἡ τοῦ Μαρκίου γυνὴ Οὐολουμνία πλησίον καθημένη τῆς ἑκυρᾶς ἐθαύμασέ τε καὶ εἶπε· Τίνος δεόμεναι, γυναῖκες, ἐληλύθατε κατὰ πλῆθος εἰς οἰκίαν δύστηνον καὶ ταπεινήν; καὶ ἡ Οὐαλερία ἔλεξεν· Ἐν ἐσχάτοις οὖσαι κινδύνοις καὶ αὐταὶ καὶ τὰ νήπια ταῦτα καταπεφεύγαμεν ἱκέτιδες ἐπὶ σέ, ὦ Οὐετουρία, τὴν μόνην καὶ μίαν βοήθειαν, ἀξιοῦσαί σε πρῶ- 1597 τον μὲν οἰκτεῖραι τὴν κοινὴν πατρίδα, ἣν οὐθενὶ πώποτε γενομένην ὑποχείριον μὴ περιίδῃς ἀφαιρεθεῖσαν ὑπὸ Οὐολούσκων τὴν ἐλευθερίαν, εἰ δὴ καὶ φείσονται αὐτῆς κρατήσαντες, ἀλλ' οὐ πρόρριζον ἐπιχειρήσουσιν ἀνελεῖν· ἔπειτα ὑπὲρ ἡμῶν αὐτῶν ἀντιβολοῦσαι καὶ τῶν δυστήνων παιδίων τούτων, ἵνα μὴ πέσωμεν εἰς ἐχθρῶν ὕβριν οὐθενὸς οὖσαι τῶν συμβεβηκότων ὑμῖν κακῶν αἴτιαι. εἴ τις ἐστὶν ἐν σοὶ ψυχῆς ἡμέρου καὶ φιλανθρώπου καταλειπο-

μένη μερίς, ἐλέησον, ὦ Οὐετουρία, γυνὴ γυναῖκας κοινωνησάσας ἱερῶν ποτε καὶ ὁσίων, καὶ παραλαβοῦσα μετὰ σεαυτῆς Οὐολουμνίαν τε τὴν ἀγαθὴν γυναῖκα καὶ τοὺς παῖδας αὐτῆς καὶ τὰς ἱκέτιδας ἡμᾶς φερούσας τὰ νήπια [καὶ] ταυτὶ ἴθι, ὦ γενναία, ἴθι πρὸς τὸν υἱὸν καὶ πεῖθε καὶ λιπάρει καὶ μὴ ἀνῇς δεομένη, μίαν ἀντὶ πολλῶν χάριν αἰτοῦσα παρ' αὐτοῦ σπείσασθαι πρὸς τοὺς ἑαυτοῦ πολίτας καὶ κατελθεῖν εἰς τὴν δεομένην ἀπολαβεῖν αὐτὸν πατρίδα· πείσεις γάρ, εὖ ἴσθι, καὶ οὐ περιόψεταί σε ἐρριμμέ-
1598 *νην παρὰ τοῖς ἑαυτοῦ ποσὶν ἀνὴρ εὐσεβής. καταγαγοῦσα δὲ τὸν υἱὸν εἰς τὴν πόλιν, αὐτή τε ἀθάνατον ἕξεις κλέος ὥσπερ εἰκὸς ἐκ τηλικούτου κινδύνου καὶ φόβου ῥυσαμένη τὴν πατρίδα, καὶ ἡμῖν τιμῆς τινος αἰτία παρὰ τοῖς ἀνδράσιν ἔσῃ, ὅτι τὸν οὐ δυνηθέντα ὑπ' ἐκείνων διασκεδασθῆναι πόλεμον αὐταὶ διελύσαμεν· ἐκείνων τε ἀληθῶς ἔγγονοι τῶν γυναικῶν φανησόμεθα, αἳ τὸν συστάντα Ῥωμύλῳ πρὸς Σαβίνους πόλεμον αὐταὶ πρεσβευσάμεναι διέλυσαν καὶ συναγαγοῦσαι τούς τε ἡγεμόνας καὶ τὰ ἔθνη μεγάλην ἐκ μικρᾶς ἐποίησαν τὴν πόλιν. καλὸς ὁ κίνδυνος, ὦ Οὐετουρία, τὸν υἱὸν κομίσασθαι, ἐλευθερῶσαι τὴν πατρίδα, σῶσαι τὰς ἑαυτῆς πολίτιδας, κλέος ἀρετῆς ἀθάνατον ἐγγόνοις τοῖς ἐσομένοις καταλιπεῖν. δὸς ἡμῖν ἑκοῦσα καὶ μετὰ προθυμίας τὴν χάριν καὶ σπεῦσον, ὦ Οὐετουρία· βουλὴν γὰρ ἢ χρόνον ὁ κίνδυνος ὀξὺς ὢν οὐκ ἐπιδέχεται.*

1599 XXXXI. *Ἡ μὲν δὴ ταῦτα εἰποῦσα καὶ πολλὰ προεμένη δάκρυα ἐσίγησεν· ὀδυρομένων δὲ καὶ τῶν ἄλλων γυναικῶν καὶ πολλὰς δεήσεις ποιουμένων, μικρὸν ἐπισχοῦσα ἡ Οὐετουρία καὶ δακρύσασα εἶπεν· Εἰς ἀσθενῆ καὶ λεπτὴν ἐλπίδα καταπεφεύγατε, ὦ*

Οὐαλερία, τὴν ἐξ ἡμῶν τῶν ἀθλίων γυναικῶν βοήθειαν, αἷς ἡ μὲν εὔνοια ἡ πρὸς τὴν πατρίδα πάρεστι καὶ τὸ θέλειν σώζεσθαι τοὺς πολίτας οἷοί ποτέ εἰσιν, ἡ δὲ ἰσχὺς καὶ τὸ δύνασθαι ποιεῖν ἃ θέλομεν ἄπεστιν. ἀπέστραπται γὰρ ἡμᾶς, ὦ Οὐαλερία, Μάρκιος, ἐξ οὗ τὴν πικρὰν ἐκείνην ὁ δῆμος αὐτοῦ κατέγνω δίκην, καὶ μεμίσηκε τὴν οἰκίαν ὅλην ἅμα τῇ πατρίδι· τοῦτο δ' ὑμῖν οὐ παρ' ἄλλου τινὸς ἀλλὰ παρ' αὐτοῦ Μαρκίου μαθοῦσαι λέγειν ἔχομεν. ὅτε γὰρ ἁλοὺς τὴν δίκην ἦλθεν εἰς τὴν οἰκίαν προπεμπόμενος ὑπο τῶν ἑταίρων, καταλαβὼν ἡμᾶς καθημένας ἐν πενθίμοις τρύχεσι, ταπεινάς, κρατούσας ἐν τοῖς γόνασι 1600 *τὰ τέκνα αὐτοῦ στενούσας τε οἷα εἰκός καὶ ἀνακλαιομένας τὴν καθέξουσαν ἡμᾶς τύχην στερομένας ἐκείνου, στὰς μικρὸν ἄπωθεν ἡμῶν ἄδακρυς ὥσπερ λίθος καὶ ἀτενής· Οἴχεται, φησίν, ὑμῖν Μάρκιος, ὦ μῆτερ ἅμα καὶ σύ, ὦ Οὐολουμνία, κρατίστη γυναικῶν, ἐξελαθεὶς ὑπὸ τῶν πολιτῶν, ὅτι γενναῖος ἦν καὶ φιλόπολις καὶ πολλοὺς ὑπέμεινεν ὑπὲρ τῆς πατρίδος ἀγῶνας. ἀλλ' ὡς πρέπει γυναιξὶν ἀγαθαῖς, οὕτω φέρετε τὰς συμφορὰς μηδὲν ἄσχημον ποιοῦσαι μηδὲ ἀγεννές, καὶ τὰ παιδία ταῦτα παραμύθια τῆς ἐμῆς ἐρημίας ἔχουσαι τρέφετε ἀξίως ὑμῶν τε καὶ τοῦ γένους· οἷς θεοὶ δοῖεν εἰς ἄνδρας ἐλθοῦσι τύχην μὲν κρείττονα τοῦ πατρός, ἀρετὴν δὲ μὴ χείρονα·* 1601 *καὶ χαίρετε. ἀπέρχομαι γὰρ ἤδη καταλιπὼν τὴν οὐκέτι χωροῦσαν ἄνδρας ἀγαθοὺς πόλιν. καὶ ὑμεῖς, ὦ θεοὶ κτήσιοι καὶ ἑστία πατρῴα καὶ δαίμονες οἱ κατέχοντες τοῦτον τὸν τόπον, χαίρετε. ὡς δὲ ταῦτ' εἶπεν, ἡμεῖς μὲν αἱ δυστυχεῖς ἃς τὸ πάθος ἀπῄτει φωνὰς ἀναβοῶσαι καὶ παίουσαι τὰ στήθη περιεχύθημεν αὐτῷ τοὺς ἐσχάτους ἀσπασμοὺς κομιούμεναι·*

τῶν δὲ παιδίων τούτων ἐγὼ μὲν τὸν πρεσβύτερον ἦγον, ἡ δὲ μήτηρ τὸν νεώτερον εἶχεν ἐπὶ τῆς ἀγκάλης· ὁ δ' ἀποστραφεὶς καὶ παρωσάμενος ἡμᾶς εἶπεν· Οὔτε σὸς υἱὸς ἔτι, μῆτερ, ἔσται τὸν ἀπὸ τοῦδε χρόνον Μάρκιος, ἀλλ' ἀφήρηταί σε τὸν γηροβοσκὸν ἡ
1602 πατρίς· οὔτε σὸς ἀνὴρ ἀπὸ ταύτης, ὦ Οὐολουμνία, τῆς ἡμέρας, ἀλλ' εὐτυχοίης ἕτερον ἄνδρα λαβοῦσα εὐδαιμονέστερον ἐμοῦ· οὔθ' ὑμῶν, ὦ τέκνα φίλτατα, πατήρ, ἀλλ' ὀρφανοὶ καὶ ἔρημοι παρὰ ταύταις ἕως εἰς ἄνδρας ἔλθητε τραφήσεσθε. ταῦτα εἰπών, ἄλλο δ' οὐθὲν οὔτε διοικησάμενος οὔτ' ἐπιστείλας οὔθ' ὅποι πορεύεται φράσας, ἀπῆλθεν ἐκ τῆς οἰκίας μόνος, ὦ γυναῖκες, ἄδουλος, ἄπορος, οὐδὲ τὴν ἐφήμερον ὁ δύστηνος ἐκ τῶν ἑαυτοῦ χρημάτων τροφὴν ἐπαγόμενος. καὶ τέταρτον ἐνιαυτὸν ἤδη τοῦτον, ἐξ οὗ φεύγει τὴν πατρίδα, πάντας ἡμᾶς ἀλλοτρίους ἑαυτοῦ νενόμικεν, οὐ γράφων οὐθέν, οὐκ ἐπιστέλλων, οὐ τὰ περὶ ἡμᾶς εἰδέναι βουλόμενος. πρὸς δὴ τοιαύτην ψυχὴν οὕτω σκληρὰν καὶ ἄτρωτον, ὦ Οὐαλερία, τίνα ἰσχὺν ἕξουσιν αἱ παρ' ἡμῶν δεήσεις, αἷς οὔτε ἀσπασμῶν μετέδωκεν οὔτε φιλημάτων οὔτε ἄλλης φιλοφροσύνης οὐδεμιᾶς τὴν τελευταίαν πορευόμενος ἐκ τῆς οἰκίας ὁδόν;

XXXXII. Ἀλλ' εἰ καὶ τούτου δεῖσθε ὑμεῖς, ὦ γυναῖκες, καὶ πάντως θέλετε ἀσχημονούσας ἡμᾶς ἰδεῖν, ὑπολάβετε παρεῖναι πρὸς αὐτὸν κἀμὲ καὶ Οὐο-
1603 λουμνίαν ἀγούσας τὰ παιδία· τίνας ἐρῶ πρῶτον ἡ μήτηρ ἐγὼ πρὸς αὐτὸν λόγους, καὶ τίνα δέησιν ποιήσομαι τοῦ υἱοῦ; λέγετε καὶ διδάσκετέ με. φείσασθαι παρακαλῶ τῶν ἑαυτοῦ πολιτῶν, ὑφ' ὧν ἐκ τῆς πατρίδος ἐξελήλαται καὶ ταῦτα μηθὲν ἀδικῶν; οἰκτίρμονα δὲ καὶ συμπαθῆ πρὸς τοὺς δημοτικοὺς γενέσθαι, παρ'

ὧν οὔτ᾽ ἐλέου μετέσχεν οὔτε συμπαθείας; ἐγκαταλιπεῖν δὲ ἄρα καὶ προδοῦναι τοὺς ὑποδεξαμένους αὐτοῦ τὴν φυγήν, οἳ πολλὰ καὶ δεινὰ πεπονθότες ὑπ᾽ αὐτοῦ πρότερον, οὐ πολεμίων μῖσος, ἀλλὰ φίλων καὶ συγγενῶν εὔνοιαν εἰς αὐτὸν ἀπεδείξαντο; τίνα ψυχὴν λαβοῦσα ἀξιώσω τὸν υἱὸν τὰ μὲν ἀπολέσαντα φιλεῖν, τὰ δὲ σώσαντα ἀδικεῖν; οὐκ εἰσὶν οὗτοι μητρὸς ὑγιαινούσης λόγοι πρὸς υἱόν, οὐδὲ γυναικὸς ἃ δεῖ λογιζομένης πρὸς ἄνδρα· μηδ᾽ ὑμεῖς βιάζεσθε, γυναῖκες, ἃ μήτε πρὸς ἀνθρώπους δίκαιά ἐστι μήτε πρὸς θεοὺς ὅσια, ταῦτα ἡμᾶς αἰτεῖσθαι παρ᾽ αὐτοῦ, ἀλλ᾽ ἄφετε τὰς ἐλεεινὰς ὡς πεπτώκαμεν ὑπὸ 1604
τῆς τύχης κεῖσθαι ταπεινὰς μηθὲν ἔτι πλέον ἀσχημονούσας.

XXXXIII. *Παυσαμένης δ᾽ αὐτῆς τοσοῦτος ὀδυρμὸς ἐκ τῶν παρουσῶν γυναικῶν ἐγένετο, καὶ τηλικαύτη κατέσχε τὸν οἶκον οἰμωγή, ὥστε ἐπὶ πολὺ μέρος ἐξακουσθῆναι τῆς πόλεως τὴν βοὴν καὶ μεστοὺς γενέσθαι τοὺς ἐγγὺς τῆς οἰκίας στενωποὺς ὄχλου. ἔπειτα ἥ τε Οὐαλερία πάλιν ἑτέρας ἐξέτεινε μακρὰς καὶ συμπαθεῖς δεήσεις, αἵ τε ἄλλαι γυναῖκες αἱ κατὰ φιλίαν ἢ συγγένειαν ἑκατέρᾳ τῶν γυναικῶν προσήκουσαι, καὶ παρέμενον λιπαροῦσαί τε καὶ γονάτων ἁπτόμεναι, ὥστε οὐκ ἔχουσα ὅ τι πάθῃ πρὸς τοὺς ὀδυρμοὺς αὐτῶν καὶ τὰς πολλὰς δεήσεις, εἶξεν ἡ Οὐετουρία, καὶ τελέσειν τὴν πρεσβείαν ὑπὲρ τῆς πατρίδος ὑπέσχετο, τήν τε γυναῖκα τοῦ Μαρκίου παραλαβοῦσα καὶ τὰ τέκνα καὶ τῶν ἄλλων πολιτίδων τὰς βουλομένας. αἱ μὲν δὴ περιχαρεῖς γενόμεναι καὶ τοὺς θεοὺς ἐπικαλεσάμεναι συλλαβέσθαι 1605
σφίσι τῆς ἐλπίδος, ἀπῄεσαν ἐκ τῆς οἰκίας καὶ προσήγγειλαν τὰ γενόμενα τοῖς ὑπάτοις· οἱ δὲ τὴν προ-*

θυμίαν αὐτῶν ἐπαινέσαντες συνεκάλουν τὴν βουλήν, καὶ περὶ τῆς ἐξόδου τῶν γυναικῶν εἰ συγχωρητέον αὐταῖς γνωμηδὸν ἐπυνθάνοντο. πολλοὶ μὲν οὖν ἐλέχθησαν καὶ παρὰ πολλῶν λόγοι, καὶ μέχρι τῆς ἑσπέρας διετέλεσαν ἀποροῦντες ὅ τι χρὴ ποιεῖν. οἱ μὲν γὰρ οὐ μικρὸν ἀπέφαινον εἶναι τῇ πόλει κινδύνευμα γυναῖκας ἅμα τέκνοις εἰς πολεμίων στρατόπεδον πορευομένας ἐᾶσαι· εἰ γὰρ αὐτοῖς ὑπεριδοῦσι τῶν νενομισμένων ὁσίων περί τε πρεσβείας καὶ ἱκεσίας δόξειε μηκέτι προίεσθαι τὰς γυναῖκας, ἀμαχητὶ σφῶν ἁλώσεσθαι τὴν πόλιν· ἠξίουν τε αὐτὰς μόνον ἐᾶσαι
1606 τὰς προσηκούσας τῷ Μαρκίῳ γυναῖκας ἅμα τοῖς τέκνοις αὐτοῦ πορευομένας. ἕτεροι δὲ οὐδὲ ταύταις ᾤοντο δεῖν ἐπιτρέπειν τὴν ἔξοδον, ἐπιμελῶς δὲ καὶ ταύτας παρῄνουν φυλάττειν, ὅμηρα νομίσαντας ἔχειν παρὰ τῶν πολεμίων ἐχέγγυα τοῦ μηδὲν τὴν πόλιν ἀνήκεστον ὑπ' αὐτῶν παθεῖν. οἱ δὲ πάσαις συνεβούλευον συγχωρῆσαι ταῖς βουλομέναις γυναιξὶ τὴν ἔξοδον, ἵνα σὺν μείζονι ἀξιώματι αἱ τῷ Μαρκίῳ προσήκουσαι ποιήσωνται τὴν ὑπὲρ τῆς πατρίδος δέησιν. τοῦ δὲ μηθὲν αὐταῖς συμβήσεσθαι δεινὸν ἐγγυητὰς ἀπέφαινον ἐσομένους θεοὺς μὲν πρῶτον, οἷς καθοσιωθεῖσαι τὰς ἱκεσίας ποιήσονται· ἔπειτα τὸν ἄνδρα αὐτὸν πρὸς ὃν ἔμελλον πορεύεσθαι πάσης ἀδίκου τε καὶ ἀνοσίου πράξεως καθαρὸν καὶ ἀμίαντον ἐσχηκότα τὸν βίον. ἐνίκα δὲ ὅμως ἡ συγχωροῦσα γνώμη ταῖς γυναιξὶ τὴν ἔξοδον μέγιστον ἀμφοῖν ἐγκώμιον ἔχουσα, τῆς μὲν βουλῆς τοῦ φρονίμου, ὅτι κράτιστα τὰ γενη-
1607 σόμενα προείδετο οὐδὲν ὑπὸ τοῦ κινδύνου τηλικοῦδε ὄντος ἐπιταραχθεῖσα· τοῦ δὲ Μαρκίου τῆς εὐσεβείας, ὅτι πολέμιος ὢν ἐπιστεύετο μηδὲν ἀσεβήσειν εἰς τὸ ἀσθενέστατον τῆς πόλεως μέρος, κύριος αὐτοῦ

καταστάς. ὡς δὲ τὸ προβούλευμα ἐγράφη, προελθόντες οἱ ὕπατοι εἰς τὴν ἀγορὰν καὶ συναγαγόντες ἐκκλησίαν σκότους ὄντος ἤδη τὰ δόξαντα τῷ συνεδρίῳ διεσάφησαν, καὶ προεῖπον ἥκειν ἅπαντας ἕωθεν ἐπὶ τὰς πύλας προπέμψοντας ἐξιούσας τὰς γυναῖκας· αὐτοὶ δὲ τῶν κατεπειγόντων ἔλεγον ἐπιμελήσεσθαι.

XXXXIIII. *Ὅτε δὲ ἤδη περὶ τὸν ὄρθρον ἦν, αἱ μὲν γυναῖκες ἄγουσαι τὰ παιδία μετὰ λαμπάδων ἧκον ἐπὶ τὴν οἰκίαν, καὶ παραλαβοῦσαι τὴν Οὐετουρίαν προῆγον ἐπὶ τὰς πύλας· οἱ δὲ ὕπατοι ζεύγη τε ὀρικὰ καὶ ἁμάξας καὶ τἆλλα φορεῖα ὡς πλεῖστα παρασκευασάμενοι καθεζομένας αὐτὰς προὔπεμπον ἄχρι πολλοῦ. παρηκολούθουν δ' αὐταῖς οἵ τε ἐκ τοῦ*
συνεδρίου καὶ τῶν ἄλλων πολιτῶν συχνοὶ σὺν εὐχαῖς 1608
καὶ ἐπαίνοις καὶ δεήσεσι τὴν ἔξοδον ἐπιφανεστέραν αὐταῖς ποιοῦντες. ὡς δ' εὐσύνοπτοι πόρρωθεν ἔτι προσιοῦσαι τοῖς ἐκ τοῦ χάρακος αἱ γυναῖκες ἐγένοντο, πέμπει τῶν ἱππέων τινὰς ὁ Μάρκιος κελεύσας μαθεῖν, τίς ἐστιν ὁ προσιὼν ὄχλος ἐκ τῆς πόλεως, καὶ ἐπὶ τί παραγένοιντο. μαθὼν δὲ παρ' αὐτῶν, ὅτι Ῥωμαίων αἱ γυναῖκες ἥκουσιν ἐπαγόμεναι παιδία, προηγεῖται δ' αὐτῶν ἥ τε μήτηρ καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ καὶ τὰ τέκνα, πρῶτον μὲν ἐθαύμασε τῆς τόλμης τὰς γυναῖκας, εἰ γνώμην ἔσχον εἰς χάρακα πολεμίων ἄτερ ἀνδρῶν φυλακῆς ἐλθεῖν ἄγουσαι τὰ τέκνα, οὔτε αἰδοῦς ἔτι τῆς ἁρμοττούσης γυναιξὶν ἐλευθέραις καὶ σώφροσι προνοούμεναι τὸ μὴ ἐν ἀνδράσιν ἀσυνήθεσιν ὁρᾶσθαι, οὔτε κινδύνων λαβοῦσαι δέος, οὓς ἀναρριπτεῖν ἔμελλον, εἰ τὰ συμφέροντα πρὸ τῶν δικαίων ἑλομένοις
σφίσι δόξειε κέρδος αὐτὰς ποιήσασθαι καὶ ὠφέλειαν. 1609
ἐπεὶ δὲ ἀγχοῦ ἦσαν, ὑπαντᾶν τῇ μητρὶ προελθὼν ἐκ

τοῦ χάρακος ἔγνω σὺν ὀλίγοις, τούς τε πελέκεις οὓς προηγεῖσθαι τῶν στρατηγῶν ἔθος ἦν ἀποθέσθαι κελεύσας τοῖς ὑπηρέταις, καὶ τὰς ῥάβδους ὅταν ἐγγὺς τῆς μητρὸς γένηται καταστεῖλαι. ταῦτα δὲ Ῥωμαίοις ἐστὶ ποιεῖν ἔθος, ὅταν ὑπαντῶσι ταῖς μείζοσιν ἀρχαῖς οἱ τὰς ἐλάττους ἀρχὰς ἔχοντες, ὡς καὶ μέχρι τοῦ καθ' ἡμᾶς χρόνου γίνεται· ἣν δὴ τότε συνήθειαν φυλάττων ὁ Μάρκιος, ὡς ἐξουσίᾳ μείζονι μέλλων εἰς ταὐτὸ ἥξειν, πάντα ἀπέθετο τὰ τῆς ἰδίας παράσημα ἀρχῆς. τοσαύτη περὶ αὐτὸν ἦν αἰδὼς καὶ πρόνοια τῆς πρὸς τὸ γένος εὐσεβείας.

XXXXV. Ἐπεὶ δὲ σύνεγγυς ἀλλήλων ἐγένοντο, πρώτη μὲν αὐτῷ δεξιωσομένη προσῆλθεν ἡ μήτηρ πένθιμά τε ἠμφιεσμένη τρύχη καὶ τὰς ὁράσεις ἐκτετηκυῖα ὑπὸ τῶν δακρύων, ἐλεεινὴ σφόδρα. ἣν ὁ Μάρκιος ἰδὼν ἄτεγκτος τέως καὶ στερρός, οἷος ἅπασι
1610 τοῖς ἀνιαροῖς ἀντέχειν, οὐθὲν ἔτι τῶν λελογισμένων φυλάττειν ἱκανὸς ἦν, ἀλλ' ᾤχετο φερόμενος ὑπὸ τῶν παθῶν ἐπὶ τὸ ἀνθρώπινον, καὶ περιβαλὼν αὐτὴν ἠσπάζετο καὶ ταῖς ἡδίσταις φωναῖς ἀνεκάλει καὶ μέχρι πολλοῦ κλαίων τε καὶ περιέπων κατεῖχεν ἐκλελυμένην καὶ ῥέουσαν ἐπὶ τὴν γῆν. ὡς δὲ τῶν ἀσπασμῶν τῆς μητρὸς ἅλις εἶχε, τὴν γυναῖκα προσελθοῦσαν δεξιωσάμενος ἅμα τοῖς τέκνοις εἶπεν· Ἀγαθῆς γυναικὸς ἔργον ἐποίησας, ὦ Οὐολουμνία, μείνασα παρὰ τῇ μητρί μου, καὶ οὐκ ἐγκαταλιποῦσα τὴν ἐρημίαν αὐτῆς ἔμοιγε πασῶν ἡδίστην κεχάρισαι δωρεάν. μετὰ ταῦτα τῶν παιδίων ἑκάτερον προσαγόμενος καὶ τοὺς προσήκοντας ἀσπασμοὺς ἀποδούς, ἐπέστρεψεν αὖθις πρὸς τὴν μητέρα καὶ λέγειν ἐκέλευσε τίνος δεομένη πάρεστιν. ἡ δὲ πάντων ἀκουόντων ἔφησεν ἐρεῖν, οὐθενὸς γὰρ ἀνοσίου δεήσεσθαι, παρεκάλει

τε αὐτόν, ἐν ᾧ καθεζόμενος εἰώθει χωρίῳ δικάζειν
τοῖς ὄχλοις, ἐν τούτῳ καθίσαι. καὶ ὁ Μάρκιος ἄσ- 1611
μενος τὸ ῥηθὲν ἐδέξατο, ὡς δὴ περιουσίᾳ τε πολλῇ
τῶν δικαίων πρὸς τὴν ἔντευξιν αὐτῆς χρησόμενος,
καὶ ἐν καλῷ ποιούμενος τοῖς ὄχλοις τὴν ἀπόκρισιν.
ἐλθὼν δὲ ἐπὶ τὸ στρατηγικὸν βῆμα, πρῶτον μὲν ἐκέ-
λευσε τοῖς ὑπηρέταις καθελεῖν ἀπ᾽ αὐτοῦ τὸν δίφρον
καὶ θεῖναι χαμαί, μητρὸς ὑψηλότερον οὐκ οἰόμενος
δεῖν τόπον ἔχειν, οὐδ᾽ ἐξουσίᾳ χρῆσθαι κατ᾽ ἐκείνης
οὐδεμιᾷ· ἔπειτα παρακαθισάμενος τοὺς ἐπιφανεστά-
τους τῶν τε ἡγεμόνων καὶ λοχαγῶν, καὶ τῶν ἄλλων
ἐάσας παρεῖναι τὸν βουλόμενον, ἐκέλευσε τὴν μη-
τέρα λέγειν.

XXXXVI. *Καὶ ἡ Οὐετουρία παραστησαμένη τήν
τε γυναῖκα τοῦ Μαρκίου καὶ τὰ τέκνα καὶ τὰς ἐπι-
φανεστάτας τῶν ἐν Ῥώμῃ γυναικῶν, πρῶτον μὲν* 1612
*ἔκλαιεν εἰς τὴν γῆν ὁρῶσα μέχρι πολλοῦ, καὶ πολὺν
ἐκίνησεν ἐκ τῶν παρόντων ἔλεον. ἔπειτα ἀναλαβοῦσα
αὑτὴν ἔλεξεν· Αἱ γυναῖκες, ὦ τέκνον Μάρκιε, τὰς
ὕβρεις ἐνθυμούμεναι καὶ τὰς ἄλλας συμφορὰς τὰς
συμβησομένας αὐταῖς, ἐὰν ἡ πόλις ἡμῶν ὑπὸ τοῖς
πολεμίοις γένηται, πᾶσαν ἄλλην ἀπογνοῦσαι βοή-
θειαν, ἐπειδὴ τοῖς ἀνδράσιν αὐτῶν ἀξιοῦσι διαλύ-
σασθαι τὸν πόλεμον αὐθάδεις καὶ σκληρὰς ἔδωκας
ἀποκρίσεις, ἄγουσαι τὰ τέκνα καὶ τοῖς πενθίμοις
τούτοις ἠμφιεσμέναι τρύχεσι κατέφυγον ἐπ᾽ ἐμὲ τὴν
σὴν μητέρα καὶ Οὐολουμνίαν τὴν σὴν γυναῖκα δεό-
μεναι, μὴ περιιδεῖν αὐτὰς τὰ μέγιστα τῶν ἐν ἀν-
θρώποις κακῶν ὑπὸ σοῦ παθούσας· οὐθὲν μὲν οὔτε
μεῖζον οὔτ᾽ ἔλαττον εἰς ἡμᾶς ἐξαμαρτοῦσαι, πολλὴν
δὲ καὶ ὅτ᾽ εὐτυχοῦμεν ἔτι εὔνοιαν παρασχόμεναι,
καὶ ὅτε ἐπταίσαμεν συμπάθειαν. ἔχομεν γὰρ αὐταῖς*

μαρτυρεῖν, ἐξ οὗ σὺ ἀπῆρας ἐκ τῆς πατρίδος, ἡμεῖς δ' ἔρημοι καὶ τὸ μηθὲν ἔτι οὖσαι κατελειπό-
1613 *μεθα, συνεχῶς τε παραγινομέναις [πρὸς ἡμᾶς, καὶ παραμυθουμέναις] ταῖς συμφοραῖς ἡμῶν καὶ συναλγούσαις. τούτων δὴ λαμβάνουσαι μνήμην ἐγώ τε καὶ ἡ σὴ γυνὴ ἡ συνοικουροῦσα μετ' ἐμοῦ τὰς ἱκεσίας αὐτῶν οὐκ ἀπεστράφημεν, ἀλλ' ὑπεμείναμεν ὡς ἠξίουν ἡμᾶς ἐλθεῖν ἐπὶ σὲ καὶ τὰς ὑπὲρ τῆς πατρίδος ποιήσασθαι δεήσεις.*

XXXXVII. *Ἔτι δ' αὐτῆς λεγούσης ὑπολαβὼν ὁ Μάρκιος εἶπεν· Ἀδυνάτων δεομένη, μῆτερ, ἐλήλυθας ἀξιοῦσα προδοῦναί με τοῖς ἐκβαλοῦσι τοὺς ὑποδεξαμένους, καὶ τοῖς ἅπαντά με ἀφελομένοις τὰ ἐμαυτοῦ τοὺς χαρισαμένους τὰ μέγιστα τῶν ἐν ἀνθρώποις ἀγαθῶν· οἷς ἐγὼ τὴν ἀρχὴν τήνδε παραλαμβάνων θεούς τε καὶ δαίμονας ἐγγυητὰς ἔδωκα, μήτε προδώσειν τὸ κοινὸν αὐτῶν μήτε προκαταλύσεσθαι τὸν πόλεμον, ἐὰν μὴ Οὐολούσκοις ἅπασι δοκῇ. θεούς τε δὴ σεβόμενος οὓς*
1614 *ὤμοσα καὶ ἀνθρώπους αἰδούμενος οἷς τὰς πίστεις ἔδωκα πολεμήσω Ῥωμαίοις ἄχρι τέλους. ἐὰν δὲ ἀποδιδῶσι τὴν χώραν Οὐολούσκοις, ἣν κατέχουσιν αὐτῶν βίᾳ, καὶ φίλους αὐτοὺς ποιήσωνται πάντων αὐτοῖς μεταδιδόντες τῶν ἴσων ὥσπερ Λατίνοις, διαλύσομαι τὸν πρὸς αὐτοὺς πόλεμον· ἄλλως δὲ οὔ. ὑμεῖς μὲν οὖν, ὦ γυναῖκες, ἄπιτε καὶ λέγετε τοῖς ἀνδράσι ταῦτα καὶ πείθετε αὐτοὺς μὴ φιλοχωρεῖν τοῖς ἀλλοτρίοις ἀδίκως, ἀλλ' ἀγαπᾶν ἐὰν τὰ ἑαυτῶν ἔχειν τις αὐτοὺς ἐᾷ, μηδ' ὅτι πολέμῳ λαβόντες ἔχουσι τὰ Οὐολούσκων, περιμένειν ἕως πολέμῳ πάλιν αὐτὰ ὑπὸ τούτων ἀφαιρεθῶσιν. οὐ γὰρ ἀποχρήσει τοῖς κρατοῦσι τὰ ἑαυτῶν μόνον ἀπολαβεῖν, ἀλλὰ καὶ τὰ*

τῶν κρατηθέντων ἴδια ἀξιώσουσιν ἔχειν. ἐὰν δὲ περιεχόμενοι τῶν μηθὲν αὐτοῖς προσηκόντων πᾶν ὁτιοῦν πάσχειν ὑπομένωσι φυλάττοντες τὸ αὔθαδες, 1615 ἐκείνους αἰτιᾶσθε τῶν καταληψομένων κακῶν, οὐ Μάρκιον οὐδὲ Οὐολούσκους οὐδὲ ἄλλων ἀνθρώπων οὐδένα. σοῦ δέ, ὦ μῆτερ, ἐν μέρει πάλιν υἱὸς ὢν ἐγὼ δέομαι μὴ παρακαλεῖν εἰς ἀνοσίους πράξεις καὶ ἀδίκους, μηδὲ μετὰ τῶν ἐχθίστων ἐμοί τε καὶ σεαυτῇ τεταγμένην πολεμίους ἡγεῖσθαι τοὺς ἀναγκαιοτάτους· ἀλλὰ παρ' ἐμοὶ γενομένην ὥσπέρ ἐστι δίκαιον πατρίδα τε νέμειν ἣν ἐγὼ νέμω καὶ οἶκον ὃν ἐγὼ κέκτημαι, τιμάς τε καρποῦσθαι τὰς ἐμάς, καὶ δόξης ἀπολαύειν τῆς ἐμῆς, τοὺς αὐτοὺς ἡγουμένην φίλους τε [καὶ συγγενεῖς] καὶ πολεμίους οὕσπερ ἐγώ· ἀποθέσθαι τε ἤδη τὸ πένθος, ὃ διὰ τὰς ἐμὰς ὑπέμεινας, ὦ ταλαίπωρε, φυγάς, καὶ παύσασθαι τιμωρουμένην με τῷ σχήματι τούτῳ. ἐμοὶ γὰρ τὰ μὲν ἄλλα, ὦ μῆτερ, ἀγαθὰ κρείττονα ἐλπίδων καὶ μείζονα εὐχῆς 1616 παρὰ θεῶν τε καὶ ἀνθρώπων ἀπήντηται· ἡ δὲ περὶ σοῦ φροντίς, ᾗ τὰς γηροβοσκοὺς οὐκ ἀπέδωκα χάριτας, ἐντετηκυῖα τοῖς σπλάγχνοις πικρὸν ἐποίει καὶ ἀνόνητον ἁπάντων τῶν ἀγαθῶν τὸν βίον. εἰ δὲ σὺν ἐμοὶ τάξεις σεαυτὴν καὶ τῶν ἐμῶν κοινωνεῖν ἐθελήσεις ἁπάντων, οὐθενὸς ἔτι μοι δεήσει τῶν ἀνθρωπίνων ἀγαθῶν.

XXXXVIII. Παυσαμένου δ' αὐτοῦ, μικρὸν ἡ Οὐετουρία ἐπισχοῦσα χρόνον, ἕως ὁ τῶν περιεστηκότων ἔπαινος ἐπαύσατο πολύς τε καὶ μέχρι πολλοῦ γενόμενος, λέγει πρὸς αὐτόν· Ἀλλ' ἔγωγέ σε, ὦ Μάρκιε τέκνον, οὔτε προδότην Οὐολούσκων γενέσθαι ἀξιῶ, οἵ σε φεύγοντα ὑποδεξάμενοι τοῖς τε ἄλλοις ἐτίμησαν καὶ τὴν ἑαυτῶν ἡγεμονίαν ἐπίστευσαν,

οὔτε παρὰ τὰς ὁμολογίας καὶ τοὺς ὅρκους, οὓς ἔδω-
κας αὐτοῖς ὅτε τὰς δυνάμεις παρελάμβανες, ἄνευ
κοινῆς γνώμης ἰδίᾳ καταλύσασθαι τὴν ἔχθραν βού-
λομαι· μηδ' ὑπολάβῃς τὴν σεαυτοῦ μητέρα τοσαύτης
1617 ἀναπεπλῆσθαι θεοβλαβείας, ὥστε τὸν ἀγαπητὸν καὶ
μόνον υἱὸν εἰς αἰσχρὰς καὶ ἀνοσίους πράξεις παρα-
καλεῖν. ἀλλὰ μετὰ κοινῆς γνώμης ἀποστῆναί σε ἀξιῶ
τοῦ πολέμου, πείσαντα τοὺς Οὐολούσκους μετριάσαι
περὶ τὰς διαλλαγὰς καὶ ποιήσασθαι τὴν εἰρήνην
ἀμφοτέροις τοῖς ἔθνεσι καλὴν καὶ πρέπουσαν. τοῦτο
δὲ γένοιτ' ἄν, εἰ νῦν μὲν ἀναστήσας τὴν στρατιὰν
ἀπαγάγοις ἐνιαυσίους ποιησάμενος ἀνοχάς, ἐν δὲ
τῷ μεταξὺ χρόνῳ πρέσβεις ἀποστέλλων τε καὶ δεχό-
μενος ἀληθῆ φιλίαν πράττοις καὶ διαλλαγὰς βεβαίας.
καὶ εὖ ἴσθι· Ῥωμαῖοι μὲν ὅσα μήτε τὸ ἀδύνατον
μήτε ἄλλη τις ἀδοξία προσοῦσα κωλύσει πάντα
ὑπομενοῦσι πράττειν λόγῳ καὶ παρακλήσει πειθό-
μενοι, ἀναγκαζόμενοι δὲ ὥσπερ σὺ νῦν ἀξιοῖς οὐθὲν
ἂν πώποτε χαρίσαιντο ὑμῖν οὔτε μεῖζον οὔτ' ἔλαττον,
ὡς ἐξ ἄλλων τε πολλῶν πάρεστί σρι καταμαθεῖν, καὶ
τὰ τελευταῖα ἐξ ὧν Λατίνοις συνεχώρησαν ἀποστᾶσιν
ἀπὸ τῶν ὅπλων· Οὐολοῦσκοι δὲ πολὺ τὸ αὔθαδες
1618 ἔχουσιν, ὃ συμβαίνει τοῖς μεγάλα εὐτυχήσασιν. ἐὰν
δὲ διδάσκῃς αὐτούς, ὅτι πᾶσα μὲν εἰρήνη παντὸς
ἐστι πολέμου κρείττων, σύμβασις δὲ φίλων κατὰ τὸν
ἑκούσιον γινομένη τρόπον τῶν ὑπ' ἀνάγκης συγχω-
ρηθέντων βεβαιοτέρα, καὶ ὅτι σωφρόνων ἐστὶν ἀν-
θρώπων, ὅταν μὲν εὖ πράττειν δοκῶσι ταμιεύεσθαι
τὰς τύχας, ὅταν δ' εἰς ταπεινὰς καὶ φαύλας ἔλθωσι
μηθὲν ὑπομένειν ἀγεννές· καὶ τἆλλα, ὅσα εἰς ἡμε-
ρότητα καὶ ἐπιείκειαν ἐπαγωγὰ παιδεύματα εὕρηται
λόγων, οὓς ὑμεῖς οἱ τὰ πολιτικὰ πράττοντες μάλιστα

σπουδάζετε, εὖ ἴσθ' ὅτι τοῦ τε αὐχήματος ἐφ' οὗ νῦν εἰσιν ἑκόντες ὑποβήσονται καὶ ποιήσουσιν ἐξουσίαν σοι τοῦ πράττειν ὅ τι ἂν αὐτοῖς ὑπολαμβάνῃς συνοίσειν. ἐὰν δὲ ἀντιπράττωσί σοι καὶ τοὺς λόγους μὴ προσδέχωνται ταῖς διὰ σὲ καὶ διὰ τὴν ἡγεμονίαν τὴν σὴν γενομέναις περὶ αὐτοὺς τύχαις ὡς ἀεὶ διαμενούσαις ἐπαιρόμενοι, τῆς στρατηγίας αὐτοῖς ἀφίστασο φανερῶς, καὶ μήτε προδότης γίνου τῶν πεπιστευκότων 1619
μήτε πολέμιος τῶν ἀναγκαιοτάτων· ἀσεβὲς γὰρ ἑκάτερον. ταῦτα ἥκω δεομένη σου γενέσθαι μοι παρὰ σοῦ, Μάρκιε τέκνον, οὔτε ἀδύνατα, ὡς σύ φῃς, πάσης τε ἀδίκου καὶ ἀνοσίου συνειδήσεως καθαρά.

XXXVIIII. Φέρε, ἀλλὰ δόξαν αἰσχρὰν οἴσεσθαι δέδοικας, ἐὰν ἃ παρακαλῶ σε πράττῃς, ὡς ἀχάριστος εἰς τοὺς εὐεργέτας ἐξελεγχθησόμενος, οἵ σε πολέμιον ὄντα ὑποδεξάμενοι πάντων μετέδωκαν ὧν τοῖς φύσει πολίταις μέτεστιν ἀγαθῶν· ταῦτα γάρ ἐστιν, ἃ μεγάλα ποιεῖς τοῖς λόγοις ἀεί. οὐκ ἀποδέδωκας οὖν αὐτοῖς πολλὰς καὶ καλὰς ἀμοιβάς, καὶ νενίκηκας ἀπείρῳ δή τινι μεγέθει καὶ πλήθει χαρίτων τὰς ἐξ ἐκείνων εὐεργεσίας; οὓς ἀγαπητὸν ἡγουμένους καὶ πάντων μέγιστον ἀγαθῶν, ἐὰν ἐλευθέρας οἰκῶσι τὰς πατρίδας, οὐ μόνον ἑαυτῶν κυρίους εἶναι βεβαίως παρεσκεύακας, ἀλλὰ πεποίηκας ἤδη σκοπεῖν, πότερα καταλῦσαι τὴν Ῥωμαίων ἀρχὴν αὐτοῖς ἄμεινον, ἢ μετέχειν αὐτῆς ἐξ ἴσου κοινὴν καταστησαμένους πολιτείαν. 1620
ἐῶ γὰρ λέγειν ὅσοις κεκόσμηκας ἐκ τοῦ πολέμου λαφύροις τὰς πόλεις αὐτῶν, καὶ πηλίκους κεχάρισαι τοῖς συστρατευσαμένοις πλούτους. τοὺς δὴ τοσούτους διά σε γενομένους καὶ ἐπὶ τηλικαύτης βεβηκότας εὐτυχίας οὐ δοκεῖς ἀγαπήσειν οἷς ἔχουσιν

ἀγαθοῖς, ἀλλ᾽ ὀργιεῖσθαί σοι καὶ ἀγανακτήσειν, ἐὰν
μὴ καὶ τὸ τῆς πατρίδος αἷμα ταῖς χερσὶν αὐτῶν ἐπι-
σπείσῃς; ἐγὼ μὲν οὐκ οἴομαι. εἷς ἔτι μοι καταλείπεται
λόγος ἰσχυρὸς μέν, ἐὰν λογισμῷ κρίνῃς αὐτόν, ἀσθε-
νὴς δέ, ἐὰν μετ᾽ ὀργῆς, ὁ περὶ τῆς οὐ δικαίως μι-
σουμένης ὑπὸ σοῦ πατρίδος. οὔτε γὰρ ὑγιαίνουσα
καὶ τῷ πατρίῳ κόσμῳ πολιτευομένη τὴν οὐ δικαίαν
κατὰ σοῦ κρίσιν ἐξήνεγκεν, ἀλλὰ νοσοῦσα καὶ ἐν
πολλῷ κλύδωνι σαλευομένη, οὔτε ἅπασα τὴν αὐτὴν
γνώμην τότε ἔσχεν, ἀλλὰ τὸ κάκιον ἐν αὐτῇ μέρος
1621 πονηροῖς προστάταις χρησάμενον. εἰ δὲ δὴ μὴ τοῖς
κακίστοις μόνον, ἀλλὰ καὶ τοῖς ἄλλοις ἅπασιν ἐδόκει
ταῦτα, καὶ ὡς οὐ τὰ κράτιστα πολιτευόμενος ἀπηλά-
θης ὑπ᾽ αὐτῶν, οὐδ᾽ οὕτω σοι προσῆκε μνησικακεῖν
πρὸς τὴν σεαυτοῦ πατρίδα. πολλοῖς γὰρ δὴ καὶ ἄλ-
λοις τῶν ἀπὸ τοῦ βελτίστου πολιτευομένων τὰ πα-
ραπλήσια συνέβη παθεῖν· καὶ σπάνιοι δή τινές εἰσιν,
οἷς οὐκ ἀντέπνευσε πρὸς τὴν δοκοῦσαν ἀρετὴν φθό-
νος ἐκ τῶν συμπολιτευομένων ἀδίκως. ἀλλ᾽ ἀνθρω-
πίνως, ὦ Μάρκιε, φέρουσι καὶ μετρίως ἅπαντες οἱ
γενναῖοι τὰς συμφοράς, καὶ πόλεις μεταλαμβάνουσιν,
ἐν αἷς οἰκήσαντες οὐθὲν λυπήσουσι τὰς πατρίδας·
ὥσπερ καὶ Ταρκύνιος ἐποίησεν ὁ Κολλατῖνος ἐπικα-
λούμενος· [ἱκανὸν ἓν παράδειγμα καὶ οἰκεῖον·] ὃς
συνελευθερώσας ἀπὸ τῶν τυράννων τοὺς πολίτας,
ἔπειτα διαβληθεὶς πρὸς αὐτοὺς ὡς συμπράττων
1622 πάλιν τοῖς τυράννοις τὴν κάθοδον, καὶ διὰ τοῦτο
ἐξελαθεὶς αὐτὸς ἐκ τῆς πατρίδος, οὐκ ἐμνησικάκει
πρὸς τοὺς ἐκβαλόντας αὐτόν, οὐδ᾽ ἐπεστράτευε τῇ
πόλει τοὺς τυράννους ἐπαγόμενος, οὐδ᾽ ἐποίει τε-
κμήρια τῶν διαβολῶν τὰ ἔργα, ἀλλ᾽ εἰς τὴν μη-
τρόπολιν ἡμῶν Λαουΐνιον ἀπελθὼν ἐκεῖ πάντα

τὸν λοιπὸν ἐβίω χρόνον εὔνους ὢν τῇ πατρίδι καὶ φίλος.

L. Ἔστω δ' οὖν ὅμως, καὶ δεδόσθω τοῖς τὰ δεινὰ παθοῦσι μὴ διακρίνειν εἴτε φίλιον εἴη τὸ κακῶς δεδρακὸς εἴτε ἀλλότριον, ἀλλ' ἴσην πρὸς ἅπαντας ὀργὴν ἔχειν· ἔπειτα οὐχ ἱκανὰς εἰσπέπραξαι παρὰ τῶν ὑβρισάντων σε δίκας γῆν τε αὐτῶν τὴν ἀρίστην πεποιηκὼς μηλόβοτον καὶ πόλεις διαπεπορθηκὼς συμμαχίδας, ἃς πολλοῖς πόνοις κτησάμενοι κατέσχον, καὶ τρίτον ἤδη τοῦτ' ἔτος εἰς πολλὴν τῶν ἀναγκαίων κατακεκλεικὼς ἀπορίαν; ἀλλὰ καὶ μέχρι ἀνδραποδισμοῦ τῆς πόλεως αὐτῶν καὶ κατασκαφῆς τὴν ἀγριαίνουσαν καὶ μαινομένην ὀργὴν προάγεις· καὶ οὐδὲ τοὺς πεμφθέντας ὑπὸ τῆς βουλῆς πρέσβεις φέροντάς σοι τῶν τε ἐγκλημάτων ἄφεσιν καὶ κάθοδον ἐπὶ τὰ οἰκεῖα φίλους καὶ ἀγαθοὺς ἄνδρας ἐλθόντας ἐνετράπης, οὐδὲ τοὺς ἱερεῖς, οὓς τὸ τελευταῖον ἔπεμψεν ἡ πόλις, ἱερὰ στέμματα θεῶν ἔχοντας καὶ προτείνοντας γηραιοὺς ἄνδρας [τοὺς τῶν θεῶν σεβασμοὺς ἐδέξω·] ἀλλὰ καὶ τούτους ἀπήλασας, αὐθάδεις καὶ δεσποτικὰς ὡς κεκρατημένοις ἀποκρίσεις δούς. ἐγὼ μὲν οὐκ ἔχω πῶς ἐπαινέσω ταῦτα τὰ σκληρὰ καὶ ὑπέραυχα καὶ τὴν θνητὴν φύσιν ἐκβεβηκότα δικαιώματα, ὁρῶσα καταφυγὰς εὑρημένας ἅπασιν ἀνθρώποις καὶ παραιτήσεις, ὧν ἂν ἐξαμαρτάνωσι περὶ ἀλλήλους, ἱκετηρίας καὶ λιτὰς καὶ τὸ καταφυγεῖν ἐπὶ τοὺς ἠδικημένους τὸ ἀδικοῦν ταπεινόν, θεῶν ἡμῖν ταῦτα τὰ ἔθη καταστησαμένων· ὑφ' ὧν μαραίνεται πᾶσα ὀργὴ καὶ ἀντὶ τοῦ μισεῖν τὸν ἐχθρὸν ἐλεεῖ· τοὺς δὲ αὐθαδείᾳ χρησαμένους καὶ λιτὰς ἱκετῶν ὑβρίσαντας, ἅπαντας νεμεσωμένους ὑπὸ θεῶν καὶ εἰς συμφορὰς καταστρέφοντας οὐκ εὐτυχεῖς. αὐτοὶ γὰρ δὴ πρῶτον οἱ ταῦτα

καταστησάμενοι καὶ παραδόντες ἡμῖν θεοὶ συγγνώμονες τοῖς ἀνθρωπίνοις εἰσὶν ἁμαρτήμασι καὶ εὐδιάλλακτοι, καὶ πολλοὶ ἤδη μεγάλα εἰς αὐτοὺς ἐξαμαρτόντες εὐχαῖς καὶ θυσίαις τὸν χόλον ἐξιλάσαντο· εἰ μὴ σύ, ὦ Μάρκιε, ἀξιοῖς τὰς μὲν τῶν θεῶν ὀργὰς θνητὰς εἶναι, τὰς δὲ τῶν ἀνθρώπων ἀθανάτους. δίκαια μὲν οὖν ποιήσεις καὶ σεαυτῷ πρέποντα καὶ
1625 τῇ πατρίδι αὐτῇ, ἀφεὶς τὰ ἐγκλήματα μετανοούσῃ γε καὶ διαλλαττομένῃ καὶ ὅσα πρότερον ἀφείλετο σοὶ νῦν ἀποδιδούσῃ.

LI. Εἰ δὲ ἄρα πρὸς ἐκείνην ἀδιαλλάκτως ἔχεις, ἐμοὶ ταύτην δός, ὦ τέκνον, τὴν τιμὴν καὶ χάριν, παρ' ἧς οὐ τὰ ἐλαχίστου ἄξια ἔχεις οὐδ' ὧν ἀντιποιήσαιτ' ἄν τις καὶ ἕτερος, ἀλλὰ τὰ μέγιστα καὶ τιμιώτατα καὶ οἷς ἅπαντα τὰ λοιπὰ κέκτησαι, τὸ σῶμα καὶ τὴν ψυχήν. δανείσματα γὰρ ἔχεις ταῦτα ἐμά, καὶ οὐκ ἀφαιρήσεταί με ταῦτα οὐθεὶς οὔτε τόπος οὔτε καιρός, οὐδέ γε αἱ Οὐολούσκων οὐδὲ τῶν ἄλλων ἀνθρώπων εὐεργεσίαι συμπάντων καὶ χάριτες τοσοῦτον ἰσχύουσιν οὐδ' ἂν οὐρανομήκεις γένωνται, ὥστε τὰ τῆς φύσεως ἐξαλεῖψαι καὶ παρελθεῖν δίκαια· ἀλλ' ἐμὸς ἅπαντα τὸν χρόνον ἔσῃ, καὶ πρώτῃ πάντων τὰς τοῦ βίου χάριτας ὀφειλήσεις ἐμοί, καὶ ὧν ἂν
1626 δέωμαι δίχα προφάσεως ὑπουργήσεις. τοῦτο γὰρ ὁ τῆς φύσεως νόμος ὥρισεν ἅπασι τοῖς αἰσθήσεως καὶ λόγου μετειληφόσι τὸ δίκαιον· ᾧ πιστεύουσα, Μάρκιε τέκνον, κἀγὼ δέομαί σου μὴ ἐπάγειν πόλεμον τῇ πατρίδι, καὶ ἐμποδὼν ἵσταμαί σοι βιαζομένῳ. ἢ προτέραν οὖν ἐμὲ τὴν ἐναντιουμένην σοι μητέρα ταῖς ἐρινύσι προθυσάμενος αὐτοχειρίᾳ, τότε τοῦ κατὰ τῆς πατρίδος ἅπτου πολέμου· ἢ τὸ μητροκτόνον ἄγος αἰδούμενος εἶξον τῇ σεαυτοῦ μητρὶ καὶ δός, ὦ τέκνον,

τὴν χάριν ἑκών. νόμον μὲν οὖν τόνδε, ὃν οὐθεὶς πώποτε ἀνελεῖ χρόνος, τιμωρὸν καὶ σύμμαχον ἔχουσα οὐκ ἀξιῶ, Μάρκιε, μόνη τιμῶν ἃς οὗτός μοι δίδωσιν ἄμοιρος ἐκ σοῦ γενέσθαι· ἔργων δὲ χρηστῶν ὑπομνήσεις, ἵν' ἀφῶ τὸν νόμον, σκόπει πάλιν ὡς πολλὰς καὶ μεγάλας· ἥτις ὀρφανὸν ὑπὸ τοῦ πατρὸς καταλειφθέντα σε παραλαβοῦσα νήπιον διέμεινα ἐπὶ σοὶ 1627 χήρα καὶ τοὺς ἐπὶ τῆς παιδοτροφίας ἀνήντλησα πόνους, οὐ μήτηρ μόνον ἀλλὰ καὶ πατὴρ καὶ τροφὸς καὶ ἀδελφὴ καὶ πάντα τὰ φίλτατά σοι γενομένη. ἐπειδὴ δὲ εἰς ἄνδρας ἦλθες, ἐξόν μοι τότε ἀπηλλάχθαι τῶν φροντίδων ἑτέρῳ γημαμένην καὶ ἕτερα τέκνα ἐπιθρέψαι καὶ πολλὰς γηροβοσκοὺς ἐλπίδας ἐμαυτῇ καταλιπεῖν, οὐκ ἠβουλήθην, ἀλλ' ἔμεινα ἐπὶ τῆς αὐτῆς ἑστίας καὶ τὸν αὐτὸν ἔστερξα βίον, ἐν σοὶ μόνῳ πάσας τιθεῖσα τὰς ἐμαυτῆς ἡδονάς τε καὶ ὠφελείας· ὧν ἔψευσάς με τὰ μὲν ἄκων, τὰ δὲ ἑκών, καὶ πασῶν ἀτυχεστάτην ἐποίησας μητέρων. ποῖον γὰρ χρόνον, ἀφ' οὗ σε εἰς ἄνδρας ἤγαγον, ἄνευ λύπης ἢ φόβου διετέλεσα, ἢ πότε ἱλαρὰν ἔσχον ἐπὶ σοὶ τὴν ψυχήν, πολέμους ἐπὶ πολέμοις στέλλοντα ὁρῶσά σε καὶ μάχας ἐπὶ μάχαις ἀναιρούμενον καὶ τραύματα ἐπὶ τραύμασι λαμβάνοντα;

LII. Ἀλλ' ἐξ ὧν ἐπολιτεύου καὶ τὰ κοινὰ ἔπραττες ἡδονήν τινα ἐκαρπωσάμην ἡ μήτηρ ἐγὼ διὰ σέ; 1628 τότε μὲν οὖν τὰ μάλιστα ἠτύχουν στάσεως πολιτικῆς μέσον ὁρῶσά σε κείμενον. ἐν οἷς γὰρ ἀνθεῖν ἐδόκεις πολιτεύμασι καὶ πολὺς ἔπνεις ἐναντιούμενος ὑπὲρ τῆς ἀριστοκρατίας τοῖς δημοτικοῖς, ταῦτ' ἐμοὶ φόβου μεστὰ ἦν ἐνθυμουμένῃ τὸν ἀνθρώπινον βίον ὡς ἐπὶ μικρᾶς αἰωρεῖται ῥοπῆς, καὶ ἐκ πολλῶν ἀκουσμάτων τε καὶ παθημάτων μαθούσῃ, ὅτι τοῖς

ἐπισήμοις ἀνδράσι θεία τις ἐναντιοῦται νέμεσις ἢ
φθόνος τις ἀνθρώπινος πολεμεῖ· καὶ ἦν ἄρα μάντις
ἀληθὴς ὡς μήποτε ὄφελον τῶν ἐκβησομένων. κατη-
γωνίσατό γε οὖν σε πολὺς ἐπιρράξας ὁ πολιτικὸς
φθόνος καὶ ἀνήρπασεν ἐκ τῆς πατρίδος· ὁ δὲ μετὰ
ταῦτά μου βίος, εἰ δὴ καὶ βίον αὐτὸν δεῖ καλεῖν,
ἀφ' οὗ με καταλιπὼν ἔρημον ἐπὶ τοῖς παιδίοις τού-
τοις ἀπῆλθες, ἐν τούτῳ δεδαπάνηται τῷ ῥύπῳ καὶ
ἐν τοῖς πενθίμοις τρύχεσι τούτοις. ἀνθ' ὧν ἁπάντων
1629 ταύτην ἀπαιτῶ σε χάριν, μηδέποτέ σοι βαρεῖα γενο-
μένη μηδ' εἰς τὸν λοιπὸν ἐσομένη χρόνον ἕως ἂν ζῶ,
διαλλαγῆναι πρὸς τοὺς σεαυτοῦ πολίτας ἤδη ποτὲ
καὶ παύσασθαι τὸν ἀμείλικτον χόλον φυλάσσοντα
κατὰ τῆς πατρίδος· κοινὸν ἀγαθὸν ἀμφοτέροις ἡμῖν
ἀξιοῦσα λαβεῖν καὶ οὐκ ἐμαυτῆς ἴδιον μόνης. σοί τε
γάρ, ἐὰν πεισθῇς καὶ μηθὲν ἀνήκεστον ἐξεργάσῃ,
καθαρὰν καὶ ἀμίαντον ἔχειν συμβήσεται τὴν ψυχὴν
ἀπὸ παντὸς χόλου καὶ ταράγματος δαιμονίου· ἐμοί
τε ἡ παρὰ τῶν πολιτῶν τε καὶ πολιτίδων τιμὴ ζώσῃ
τε παρακολουθοῦσα βίον εὐδαίμονα ποιήσει, καὶ
μετὰ τὴν τελευτὴν ἀποδιδομένη καθάπερ εἰκὸς εὔ-
κλειαν ἀθάνατον οἴσει. καὶ εἴ τις ἄρα τὰς ἀνθρωπί-
νας ψυχὰς ἀπολυθείσας τοῦ σώματος ὑποδέξεται
τόπος, οὐχ ὁ καταχθόνιος καὶ ἀφεγγὴς ὑποδέξεται
τὴν ἐμήν, ἐν ᾧ φασι τοὺς κακοδαίμονας οἰκεῖν, οὐδὲ
τὸ λεγόμενον τῆς Λήθης πεδίον, ἀλλ' ὁ μετέωρος καὶ
καθαρὸς αἰθήρ, ἐν ᾧ τοὺς ἐκ θεῶν φύντας οἰκεῖν
λόγος εὐδαίμονα καὶ μακάριον ἔχοντας βίον· οἷς
1630 διαγγέλλουσα τὸ σὸν εὐσεβὲς καὶ τὰς σὰς χάριτας,
αἷς αὐτὴν ἐκόσμησας, ἀεί τινας αἰτήσεταί σοι παρὰ
θεῶν ἀμοιβὰς καλάς.

LIII. Ἐὰν δὲ προπηλακίσῃς τὴν σεαυτοῦ μητέρα

καὶ ἄτιμον ἀπολύσῃς, ὅ τι μὲν αὐτῷ σοι συμβήσεται διὰ ταῦτα παθεῖν οὐκ ἔχω λέγειν· μαντεύομαι δὲ οὐδὲν εὐτυχές. ὅτι δὲ ἐὰν καὶ τἄλλα πάντα εὐδαιμονῇς, ἔστω γάρ, ἡ δι' ἐμὲ καὶ τὰς ἐμὰς συμφορὰς παρακολουθήσουσά σοι καὶ οὐδέποτε ἀνήσουσα τὴν ψυχὴν ὀδύνη πάντων ἀγαθῶν σοι ἀνόνητον ποιήσει τὸν βίον, εὖ οἶδα. οὐ γὰρ ἀνέξεται Οὐετουρία τὴν δεινὴν καὶ ἀνήκεστον ὕβριν ἐν τοσούτοις μάρτυσιν ὑβρισθεῖσα τὸν ἐλάχιστον βιῶναι χρόνον· ἀλλ' ἐν τοῖς ἁπάντων ὑμῶν φίλων τε καὶ ἐχθρῶν ὄμμασιν ἐμαυτὴν διαχρήσομαι, βαρεῖαν ἀρὰν καὶ δεινὰς ἐριννύας ἀντ' ἐμαυτῆς καταλιποῦσά σοι τιμωρούς. ὧν μὴ δεήσειεν, ὦ θεοὶ τῆς Ῥωμαίων φύλακες ἡγεμονίας, ἀλλ' εὐσεβεῖς καὶ καλοὺς δοίητε Μαρκίῳ λογισμούς· καὶ ὥσπερ ἄρτι προσιούσῃ μοι τούς τε πε- 1631
λέκεις ἀπέθετο καὶ τὰς ῥάβδους ἔκλινε καὶ τὸν δίφρον ἀπὸ τοῦ βήματος ἔθηκε χαμαὶ καὶ πάντα τἄλλα, οἷς κοσμεῖσθαι τὰς αὐτοκράτορας ἀρχὰς νόμος, τὰ μὲν ἐμείωσε, τὰ δ' ἐκποδῶν εἰς τέλος ἐποίησε, δῆλον ἅπασι βουλόμενος ποιῆσαι, ὅτι τῶν μὲν ἄλλων ἄρχειν αὐτῷ προσῆκεν, ὑπὸ δὲ τῆς μητρὸς ἄρχεσθαι· οὕτω καὶ νῦν τιμίαν καὶ περίβλεπτόν με ποιήσειε, καὶ χαρισάμενος τὴν κοινὴν πατρίδα ἀντὶ κακοδαιμονεστάτης εὐδαιμονεστάτην ἀποδείξειέ με πασῶν γυναικῶν. εἰ δὲ ὅσιόν ἐστι καὶ θεμιτὸν υἱοῦ γόνασι μητέρα προσκυλίεσθαι, καὶ τοῦτο καὶ πᾶν ἄλλο ταπεινὸν σχῆμα καὶ λειτούργημα ὑπομενῶ σωτηρίας ἕνεκα τῆς πατρίδος.

LIIII. Ταῦτ' εἰποῦσα ἔρριψεν ἑαυτὴν χαμαί, καὶ περιπλέξασα ταῖς χερσὶν ἀμφοτέραις τοὺς πόδας τοῦ Μαρκίου κατεφίλησε. πεσούσης δ' αὐτῆς αἱ μὲν γυναῖκες ἀνεβόησαν ἅμα πᾶσαι κωκυτὸν ὀξὺν

1632 καὶ μακρόν, οἱ δ' ἐν τῷ συνεδρίῳ παρόντες Οὐολούσκων οὐκ ἠνέσχοντο τὴν ἀήθειαν τῆς ὄψεως, ἀλλ' ἀπεστράφησαν. αὐτὸς δὲ ὁ Μάρκιος ἀναλόμενος ἐκ τοῦ δίφρου καὶ περιπεσὼν τῇ μητρὶ ἀνίστησιν αὐτὴν ἀπὸ τῆς γῆς ὀλίγον ἐμπνέουσαν, καὶ περιβαλὼν καὶ πολλὰ ἐκχέας δάκρυα εἶπε· Νικᾷς, ὦ μῆτερ, οὐκ εὐτυχῆ νίκην οὔτε σεαυτῇ οὔτ' ἐμοί· τὴν μὲν γὰρ πατρίδα σέσωκας, ἐμὲ δὲ τὸν εὐσεβῆ καὶ φιλόστοργον υἱὸν ἀπολώλεκας. ταῦτα εἰπὼν ἐπὶ τὴν σκηνὴν ἀπῄει, κελεύσας ἀκολουθεῖν τήν τε μητέρα καὶ τὴν γυναῖκα καὶ τὰ παιδία, ἔνθα τὸν λοιπὸν τῆς ἡμέρας χρόνον σκοπούμενος σὺν αὐταῖς ὅ τι χρὴ πράττειν διετέλεσεν. ἦν δὲ τὰ δόξαντα αὐτοῖς τοιάδε· περὶ μὲν τῆς καθόδου μήτε τὴν βουλὴν τέλος μηθὲν ἐκφέρειν εἰς τὸν δῆμον μήτ' ἐκεῖνον ἐπιψηφίζειν, πρὶν ἂν τοῖς Οὐολούσκοις εὐτρεπῆ γένηται τὰ περὶ
1633 φιλίας καὶ καταλύσεως τοῦ πολέμου· αὐτὸν δὲ τὴν στρατιὰν ἀναστήσαντα ὡς διὰ φιλίας γῆς ἀπάγειν· ὑποσχόντα δὲ τῆς ἀρχῆς λόγον καὶ τὰς εὐεργεσίας ἀποδειξάμενον ἀξιοῦν τοὺς ἐπιτρέψαντας αὐτῷ τὴν στρατιάν, μάλιστα μὲν φιλίᾳ δέχεσθαι τοὺς πολεμίους καὶ συνθήκας ποιήσασθαι δικαίας, αὐτῷ τὴν ἰσότητα καὶ τὸ μὴ σφαλῆναι περὶ τὰς ὁμολογίας ἐπιτρέψαντας. εἰ δ' ἐπὶ τοῖς κατωρθωμένοις σφίσιν αὐθαδείας ἀναπιμπλάμενοι μὴ δέχοιντο τὰς διαλλαγάς, ἀφίστασθαι τῆς ἀρχῆς αὐτοῖς. ἢ γὰρ οὐχ ὑπομενεῖν αὐτοὺς ἄλλον τινὰ αἱρεῖσθαι στρατηγὸν δι' ἀπορίαν ἀγαθοῦ ἡγεμόνος, ἢ παρακινδυνεύσαντας ὁτῳδήτινι παραδοῦναι τὰς δυνάμεις σὺν μεγάλῃ διδαχθήσεσθαι βλάβῃ τὴν τοῦ συμφέροντος αἵρεσιν. τὰ μὲν δὴ βουλευθέντα αὐτοῖς καὶ δόξαντα δίκαιά τε καὶ ὅσια εἶναι, φήμης τε ἀγαθῆς ἐφ' ᾗ μάλιστα

ὁ ἀνὴρ ἐσπούδαξε παρὰ πᾶσι τευξόμενα, τοιάδε ἦν. ἐτάραττε δέ τις αὐτοὺς ὑποψία δέος ἔχουσα, μή ποτε ἀλόγιστος ὄχλος ἐν ἐλπίδι τοῦ καταπεπολεμηκέναι τὸ ἀντίπαλον ἤδη ὢν δι' ὀργῆς ἀκράτου λάβῃ τὴν 1634
ἀποτυχίαν, κἄπειτα ὡς προδότην αὐτὸν οὐδὲ λόγου μεταδοὺς αὐτοχειρίᾳ φθάσῃ διολέσας. ἐδόκει οὖν αὐτοῖς καὶ τοῦτο καὶ εἴ τι ἄλλο δεινότερον εἴη κινδύνευμα σὺν ἀρετῇ σώζουσι τὴν πίστιν ὑπομένειν. ἐπεὶ δὲ περὶ δύσιν ἡλίου ἦν ἤδη, ἀσπασάμενοι ἀλλήλους ἐξῄεσαν ἐκ τῆς σκηνῆς· ἔπειθ' αἱ μὲν γυναῖκες εἰς τὴν πόλιν ἀπῄεσαν, ὁ δὲ Μάρκιος ἐν ἐκκλησίᾳ τὰς αἰτίας ἀποδοὺς τοῖς παροῦσι, δι' ἃς ἔμελλε λύειν τὸν πόλεμον, καὶ πολλὰ τῶν στρατιωτῶν δεηθεὶς συγγνῶναί τε αὐτῷ καὶ ἐπειδὰν οἴκαδε ἀφίκωνται μεμνημένους ὧν ἔπαθον εὖ τοῦ μηθὲν ὑπὸ τῶν ἄλλων ἀνήκεστον παθεῖν συναγωνιστὰς γενέσθαι, καὶ ἄλλα πολλὰ καὶ ἐπαγωγὰ διαλεχθεὶς παρασκευάζεσθαι ἐκέλευσεν ὡς τῇ ἐπιούσῃ νυκτὶ ἀναστρατοπεδεύσοντας.

LV. Ῥωμαῖοι δὲ ὡς ἔμαθον, ὅτι λέλυται σφῶν ὁ κίνδυνος· ἔφθασε γὰρ τῶν γυναικῶν τὴν παρουσίαν προλαβοῦσα ἡ φήμη· σὺν πολλῇ χαρᾷ καταλι- 1635
πόντες τὴν πόλιν ἔθεον ἔξω καὶ ὑπήντων ταῖς γυναιξὶν ἀσπασμοὺς καὶ παιᾶνας καὶ πάνθ' ὅσα ἐκ μεγάλων κινδύνων εἰς ἀδόκητον εὐτυχίαν ἄνθρωποι καταστάντες πράττουσί τε καὶ λέγουσιν ὑπὸ χαρᾶς, τὰ μὲν ἀθρόοι, τὰ δὲ καθ' ἕνα ἕκαστον ἀποδεικνύμενοι. ἐκείνην μὲν οὖν τὴν νύκτα ἐν θαλείαις τε καὶ εὐπαθείαις διετέλεσαν· τῇ δ' ἑξῆς ἡμέρᾳ συναχθεῖσα ὑπὸ τῶν ὑπάτων ἡ βουλὴ περὶ μὲν τοῦ Μαρκίου γνώμην ἀπεδείξαντο, εἰς ἑτέρους ἀναβάλλεσθαι καιροὺς ἐπιτηδειοτέρους τὰς δοθησομένας αὐτῷ τι-

μάς· ταῖς δὲ γυναιξὶν ἔπαινόν τε ἀποδεδόσθαι τῆς
προθυμίας πάλιν δημοσίᾳ γραφῇ μνήμην οἴσοντα
ἐκ τῶν ἐπιγινομένων αἰώνιον, καὶ γέρας ὅ τι ἂν αὐ-
ταῖς λαβούσαις ἥδιστόν τε καὶ τιμιώτατον ἔσεσθαι
1636 μέλλῃ· καὶ ὁ δῆμος ἐπεκύρωσε ταῦτα. ταῖς δὲ γυ-
ναιξὶ βουλευσαμέναις εἰσῆλθεν ἐπιφθόνου μὲν δω-
ρεᾶς μηδεμιᾶς δεῖσθαι, ἀξιοῦν δὲ ἐπιτρέψαι σφίσι
τὴν βουλὴν [ἐπὶ] Τύχης γυναικεῖν ἱδρύσασθαι ἱερὸν
ἐν ᾧ τὰς περὶ τῆς πόλεως ἐποιήσαντο λιτὰς χωρίῳ,
θυσίας τε καθ᾽ ἕκαστον ἔτος αὐτῇ συνιούσας ἐπιτε-
λεῖν ἐν ᾗ τὸν πόλεμον ἔλυσαν ἡμέρᾳ. ἡ μέντοι βουλὴ
καὶ ὁ δῆμος ἀπὸ τῶν κοινῶν ἐψηφίσαντο χρημάτων
1637 τέμενός τε ὠνηθὲν καθιερωθῆναι τῇ θεῷ, καὶ ἐν
αὐτῷ νεὼν καὶ βωμὸν ὡς ἂν οἱ ἱερομνήμονες ἐξη-
1638 γῶνται συντελεσθῆναι, θυσίας τε προσάγεσθαι δη-
μοτελεῖς καταρχομένης τῶν ἱερῶν γυναικός, ἣν ἂν
ἀποδείξωσιν αὐταὶ λειτουργὸν τῶν ἱερῶν. ταῦτα τῆς
βουλῆς ψηφισαμένης, ἱέρεια μὲν ὑπὸ τῶν γυναικῶν
ἀπεδείχθη τότε πρῶτον ἡ τὴν γνώμην αὐταῖς εἰση-
γησαμένη περὶ τῆς πρεσβείας Οὐαλερία καὶ τὴν μη-
τέρα τοῦ Μαρκίου πείσασα συλλαβέσθαι σφίσι τῆς
ἐξόδου. θυσίαν δὲ πρώτην αἱ γυναῖκες ἔθυσαν ὑπὲρ
τοῦ δήμου καταρχομένης τῶν ἱερῶν τῆς Οὐαλερίας
ἐπὶ τοῦ κατασκευασθέντος ἐν τῷ τεμένει βωμοῦ, πρὶν
ἢ τὸν νεὼν καὶ τὸ ξόανον ἀνασταθῆναι, μηνὶ Δε-
κεμβρίῳ τοῦ κατόπιν ἐνιαυτοῦ, τῇ νέᾳ σελήνῃ, ἣν
Ἕλληνες μὲν νουμηνίαν, Ῥωμαῖοι δὲ καλάνδας κα-
λοῦσιν· αὕτη γὰρ ἦν ἡ λύσασα τὸν πόλεμον ἡμέρα.
1639 ἐνιαυτῷ δ᾽ ὕστερον δευτέρῳ μετὰ τὴν πρώτην θυ-
σίαν ὁ κατασκευασθεὶς ἐκ τῶν δημοσίων χρημάτων
νεὼς συνετελέσθη τε καὶ καθιερώθη, Κοιντιλίου μη-
νὸς ἑβδόμῃ μάλιστα κατὰ σελήνην· αὕτη δὲ κατὰ

Ῥωμαίους ἐστὶν ἡ προηγουμένη τῶν Κοιντιλίων νωνῶν ἡμέρα. ὁ δὲ καθιερώσας αὐτὸν ἦν Πρόκλος Οὐεργίνιος ἅτερος τῶν ὑπάτων.

LVI. Εἴη δ' ἂν ἁρμόττον ἱστορίας σχήματι καὶ ἐπανορθώσεως ἕνεκα τῶν οἰομένων μήτ' ἐπὶ ταῖς τιμαῖς ταῖς παρ' ἀνθρώπων χαίρειν τοὺς θεοὺς μήτ' ἐπὶ ταῖς ἀνοσίοις καὶ ἀδίκοις πράξεσιν ἀγανακτεῖν, τὸ δηλῶσαι τὴν γενομένην ἐπιφάνειαν τῆς θεοῦ κατ' ἐκεῖνον τὸν χρόνον οὐχ ἅπαξ, ἀλλὰ [καὶ] δίς, ὡς αἱ τῶν ἱεροφαντῶν περιέχουσι γραφαί, ἵνα τοῖς μὲν εὐλαβεστέροις περὶ τὸ συνέχειν ἃς παρὰ τῶν προ- 1640
γόνων δόξας ὑπὲρ τοῦ δαιμονίου παρέλαβον ἀμεταμέλητος ἡ τοιαύτη προαίρεσις καὶ βεβαία διαμένῃ· τοῖς δὲ ὑπερορῶσι τῶν πατρίων ἐθισμῶν καὶ μηθενὸς ποιοῦσι τὸ δαιμόνιον τῶν ἀνθρωπίνων λογισμῶν κύριον, μάλιστα μὲν ἀναθέσθαι ταύτην τὴν δόξαν, εἰ δ' ἀνιάτως ἔχουσιν ἔτι μᾶλλον αὑτοῖς ἀπέχθεσθαι καὶ κακοδαιμονεστέροις εἶναι. ἱστορεῖται τοίνυν ὅτι τῆς βουλῆς ψηφισαμένης ἐκ τοῦ δημοσίου πάσας ἐπιχορηγηθῆναι τὰς εἰς τὸν νεών τε καὶ τὸ ξόανον δαπάνας, ἕτερον δὲ ἄγαλμα κατασκευασαμένων τῶν γυναικῶν ἀφ' ὧν αὐταὶ συνήνεγκαν χρημάτων, ἀνατεθέντων τε αὐτῶν ἀμφοτέρων ἅμα ἐν τῇ πρώτῃ τῆς ἀνιερώσεως ἡμέρᾳ, θάτερον τῶν ἀφιδρυμάτων, ὃ κατεσκεύασαν αἱ γυναῖκες, ἐφθέγξατο πολλῶν παρουσῶν γλώττῃ Λατίνῃ φωνὴν εὐσύνετόν τε καὶ γεγωνόν· ἧς ἐστι φωνῆς ἐξερμηνευόμενος ὁ νοῦς εἰς τὴν Ἑλλάδα διάλεκτον τοιόσδε· Ὁσίῳ πόλεως νόμῳ γυναῖκες γαμεταὶ δεδώκατέ με. 1641
οἷα δὲ φιλεῖ γίνεσθαι περὶ τὰς παραδόξους φωνάς τε καὶ ὄψεις, πολλὴ ταῖς παρούσαις ἐνέπιπτεν ἀπιστία, μή ποτε οὐ τὸ ξόανον εἴη τὸ φθεγξάμενον, ἀνθρω-

πίνη δέ τις φωνή· μάλιστα δ' ὅσαι πρὸς ἄλλῳ τινὶ τὸν νοῦν ἔχουσαι τηνικαῦτα ἔτυχον, οὐκ ἰδοῦσαι τὸ φθεγγόμενον ὅ τι ποτε ἦν ταύτην εἶχον τὴν πρὸς τὰς ἰδούσας ἀπιστίαν. ἔπειτ' αὖθις πληθύοντος τοῦ νεὼ καὶ σιωπῆς πλείστης κατὰ δαίμονα γενομένης, ἐν μείζονι φωνῇ τὸ αὐτὸ ξόανον ἐφθέγξατο τὴν αὐτὴν λέξιν, ὥστε μηδὲν ἔτι εἶναι τὸ ἀμφίλογον. ἡ μὲν οὖν βουλὴ ὡς ταῦτ' ἔμαθεν ἐψηφίσατο θυσίας ἄλλας καὶ σεβασμοὺς οὓς ἂν οἱ τῶν ἱερῶν ἐξηγηταὶ
1642 παραδῶσι καθ' ἕκαστον ἔτος ἐπιτελεῖν. αἱ δὲ γυναῖκες ἐν ἔθει κατεστήσαντο τῇ τῆς ἱερείας χρησάμεναι γνώμῃ, τῷ ξοάνῳ τούτῳ μήτε στεφάνους ἐπιτιθέναι μήτε χεῖρας προσφέρειν γυναῖκας ὅσαι δευτέρων ἐπειράθησαν γάμων, τὴν δὲ τιμὴν καὶ θεραπείαν αὐτοῦ πᾶσαν ἀποδεδόσθαι ταῖς νεογάμοις. ἀλλὰ περὶ μὲν τούτων οὔτε παρελθεῖν τὴν ἐπιχώριον ἱστορίαν καλῶς εἶχεν, οὔτε πλείονα περὶ αὐτῆς ποιεῖσθαι λόγον. ἐπάνειμι δ' ὅθεν εἰς τοῦτον ἐξέβην τὸν λόγον.

LVII. *Μετὰ τὴν ἐκ τοῦ χάρακος ἀπαλλαγὴν τῶν γυναικῶν ὁ Μάρκιος περὶ τὸν ὄρθρον ἀναστήσας τὴν στρατιὰν ἀπῆγεν ὡς διὰ φιλίας, καὶ ἐπειδὴ ἐν τῇ Οὐολούσκων ἐγένετο, πάντα ὅσα ἐκ τῶν λαφύρων ἔλαβε δωρησάμενος τοῖς στρατιώταις, ἑαυτῷ δ' οὐδ'*
1643 *ὁτιοῦν ὑπολειπόμενος, ἀπέλυσεν ἐπὶ τὰ οἰκεῖα. ἡ μὲν οὖν κοινωνήσασα τῶν ἀγώνων αὐτῷ στρατιὰ πλούτῳ βαρεῖα ἀφικομένη τήν τε ἀνάπαυλαν οὐκ ἀηδῶς ἐδέξατο τοῦ πολέμου καὶ δι' εὐνοίας εἶχε τὸν ἄνδρα, συγγνώμης τε ἄξιον ἡγεῖτο, εἰ μὴ τέλος ἐπέθηκε τῷ πολέμῳ μητρὸς οἴκτους καὶ λιτὰς ἐντραπείς. ἡ δ' ἐν ταῖς πόλεσιν ὑπομείνασα νεότης, φθονοῦσα μὲν τοῖς ἐπὶ στρατοπέδου γενομένοις τῶν πολλῶν*

ὠφελειῶν, διημαρτηκυῖα δὲ ὧν ἤλπισεν, εἰ καθαιρεθείη τὸ Ῥωμαίων φρόνημα τῆς πόλεως ἁλούσης, ἐτραχύνετο πρὸς τὸν ἡγεμόνα καὶ πικρὰ σφόδρα ἦν· καὶ τελευτῶσα, ἐπειδὴ τοῦ μύσους ἡγεμόνας ἔλαβε τοὺς πλεῖστον ἐν τῷ ἔθνει δυναμένους, ἐξηγριώθη τε καὶ ἔργον ἔδρασεν ἀνόσιον. ἦν δὲ Τύλλος Ἄττιος ὁ τὰς ὀργὰς αὐτῶν παραθήξας, ἔχων περὶ αὐτὸν ἑταιρίαν ἐξ ἁπάσης πόλεως οὐκ ὀλίγην. τούτῳ δὲ ἄρα ἐδέδοκτο παλαίτερον ἔτι τὸν φθόνον οὐ δυναμένῳ κατέχειν, εἰ μὲν εὖ πράξας ὁ Μάρκιος καὶ τὴν 1644
Ῥωμαίων πόλιν διαφθείρας εἰς Οὐολούσκους ἔλθοι, κρύφα καὶ σὺν δόλῳ αὐτὸν ἀνελεῖν· εἰ δὲ διαμαρτὼν τῆς πείρας ἀτελὴς τοῦ ἔργου ἀναστρέψειεν, ὡς προδότην παραδόντα τῇ περὶ αὐτὸν ἑταιρίᾳ ἀποκτεῖναι· ὅπερ ἐποίει τότε, καὶ συναγαγὼν χεῖρα οὐκ ὀλίγην κατηγόρει τοῦ ἀνδρὸς ψευδῆ τεκμαιρόμενος ἀληθέσι καὶ οὐ γενησόμενα εἰκάζων γενησομένοις· ἐκέλευέ τε ἀποθέμενον αὐτὸν τὴν ἀρχὴν λόγον ὑπέχειν τῆς στρατηγίας. ἦν δὲ τῆς ὑπομενούσης στρατιᾶς ἐν ταῖς πόλεσιν ἡγεμών, ὡς καὶ πρότερον εἴ- 1645
ρηταί μοι, κύριος τοῦ τε συναγαγεῖν ἐκκλησίαν καὶ τοῦ καλεῖν ὃν βούλοιτο ἐπὶ δίκην.

LVIII. Ὁ δὲ Μάρκιος ἀντιλέγειν μὲν πρὸς οὐδέτερον τούτων ἐδικαίου, περὶ δὲ τῆς τάξεως αὐτῶν διεφέρετο λόγον ἀξιῶν ἀποδοῦναι πρότερον τῶν πεπραγμένων αὐτῷ κατὰ τὸν πόλεμον, ἔπειτα, ἐὰν ἅπασι δόξῃ Οὐολούσκοις, ἀποθήσεσθαι τὴν ἀρχήν. τούτων δὲ οὐ μίαν ᾤετο πόλιν δεῖν, ἐν ᾗ τὸ πλεῖον ὑπὸ τοῦ Τύλλου διέφθαρτο μέρος, γενέσθαι κυρίαν, ἀλλὰ τὸ ἔθνος ἅπαν εἰς τὴν ἔννομον ἀγορὰν συναχθέν, εἰς ἣν ἔθος ἦν αὐτοῖς ὅτε περὶ τῶν μεγίστων βουλεύεσθαι μέλλοιεν ἐξ ἁπάσης πόλεως προβούλους

ἀποστέλλειν. ὁ δὲ Τύλλος ἀντέλεγε πρὸς ταῦτα καλῶς εἰδώς, ὅτι δεινὸς εἰπεῖν ἀνὴρ πολλῶν καὶ καλῶν ἔργων λόγον ἀποδιδοὺς ἐν ἡγεμονικῷ ἀξιώματι μένων πείσει τὸ πλῆθος, καὶ τοσούτου δεήσει τιμωρίαν προδοτῶν ὑποσχεῖν, ὥστε καὶ λαμπρότερος ἔτι καὶ
1646 τιμιώτερος ὑπ' αὐτῶν ἔσται, τόν τε πόλεμον ὅπως ἂν βούληται καταλύσασθαι συγχωρησάντων ἁπάντων γενήσεται κύριος. καὶ ἦν μέχρι πολλοῦ λόγων τε καὶ ἀψιμαχιῶν τῶν ἐπ' ἀλλήλοις γινομένων καθ' ἑκάστην ἡμέραν ἐν ταῖς ἐκκλησίαις καὶ κατὰ τὴν ἀγορὰν πολὺς ἀγών· ἔργῳ γὰρ οὐχ οἷόν τε ἦν οὐδετέρῳ βιάσασθαι τὸν ἕτερον τῆς ἰσοτίμου ἀρχῆς ἀξιώσει κρατυνόμενον. ὡς δὲ οὐδὲν τῆς φιλονεικίας ἐγίνετο πέρας, ἡμέραν προειπὼν ὁ Τύλλος, ἐν ᾗ τὸν Μάρκιον ἐκέλευσεν ἥκειν τὴν ἀρχὴν ἀποθησόμενον καὶ δίκην ὑφέξοντα τῆς προδοσίας, θρασυτάτους τε ἄνδρας εὐεργεσιῶν ἐλπίσιν ἐπάρας ἀρχηγοὺς ἀνοσίου ἔργου γενέσθαι, παρῆν εἰς τὴν ἀποδειχθεῖσαν ἀγοράν· καὶ προελθὼν ἐπὶ τὸ βῆμα πολλῇ κατηγορίᾳ ἐχρήσατο τοῦ Μαρκίου, καὶ εἰ μὴ βούλοιτο ἀποθέσθαι τὴν ἀρχὴν ἑκών, τῷ δήμῳ παρεκελεύετο παύειν αὐτὸν ἁπάσῃ δυνάμει.

1647 LVIIII. Ἀναβάντος δὲ τοῦ ἀνδρὸς ἐπὶ τὴν ἀπολογίαν, βοή τε πολλὴ κωλύουσα τοὺς λόγους ἐκ τῆς ἑταιρίας τῆς περὶ τὸν Τύλλον ἐγίνετο· καὶ μετὰ ταῦτα Παῖε καὶ Βάλλε φωνοῦντες περιίστανται αὐτὸν οἱ θρασύτατοι καὶ συναράττοντες τοῖς λίθοις ἀποκτιννύουσιν. ἐρριμμένου δὲ αὐτοῦ χαμαὶ κατὰ τὴν ἀγοράν, οἵ τε παραγενόμενοι τῷ πάθει καὶ οἱ μετὰ ταῦτα ἤδη νεκροῦ ὄντος ἀφικόμενοι τόν τε ἄνδρα τῆς τύχης ὠδύροντο ὡς οὐ καλὰς εἰληφότα παρὰ σφῶν ἀμοιβάς, ἐπιλεγόμενοι πάντα ὅσα τὸ

κοινὸν ὠφέλησε, καὶ τοὺς δράσαντας τὸν φόνον ἐπόθουν λαβεῖν ὡς ἀνόμου ἔργου καὶ ἀσυμφόρου ταῖς πόλεσιν ἄρξαντας, ἄνευ δίκης ἐν χειρῶν νόμῳ τινὰ ἀποκτεῖναι καὶ ταῦτα ἡγεμόνα. μάλιστα δὲ ἠγανάκτουν οἱ ταῖς στρατείαις αὐτοῦ παραγενόμενοι, καὶ ἐπειδὴ ζῶντι αὐτῷ οὐχ ἱκανοὶ ἐγένοντο κωλυταὶ τῆς συμφορᾶς, τὰς μετὰ τὸν θάνατον ὀφειλομένας ἔγνωσαν ἀποδιδόναι χάριτας, συμφέροντες εἰς τὴν ἀγορὰν 1648 *ὅσων ἔδει τοῖς ἀγαθοῖς ἀνδράσιν εἰς τὴν ἀναγκαίαν τιμήν. ἐπειδὴ δὲ πάντα εὐτρέπιστο, θέντες ἐπὶ στρωμνῆς ἐκπρεπεστάτῳ ἠσκημένης κόσμῳ τὴν αὐτοκρατορικὴν ἔχοντα ἐσθῆτα, καὶ πρὸ τῆς κλίνης αὐτοῦ φέρεσθαι κελεύσαντες λάφυρά τε καὶ σκῦλα καὶ στεφάνους καὶ μνήμας ὧν εἷλε πόλεων, ἤραντο τὴν κλίνην οἱ λαμπρότατοι τῶν νέων ἐν τοῖς κατὰ πολέμους ἔργοις· καὶ κομίσαντες εἰς τὸ προάστειον ὃ μάλιστα ἦν ἐπιφανές, ἔθεσαν ἐπὶ τὴν παρεσκευασμένην πυράν, συμπροπεμπούσης τὸ σῶμα τῆς πόλεως ὅλης μετ᾽ οἰμωγῆς τε καὶ δακρύων. ἔπειτα κατασφάξαντές τ᾽ αὐτῷ πολλὰ βοσκήματα καὶ τῶν ἄλλων ἀπαρξάμενοι πάντων ὅσων ἄνθρωποι βασιλεῦσιν ἢ στρατιᾶς ἡγεμόσιν ἐπὶ πυραῖς ἀπάρχονται, παρέμειναν οἱ μάλιστα τὸν ἄνδρα ἀσπαζόμενοι μέχρι τοῦ μαρανθῆναι τὴν φλόγα, κἄπειτα συναγαγόντες τὰ λείψανα ἔθαψαν ἐν τῷ αὐτῷ χωρίῳ χώματι ὑψηλῷ διὰ πολυχειρίαν ἐργασθέντι μνῆμα ἐπίσημον ἐργασάμενοι.*

LX. *Μάρκιος μὲν δὴ τοιαύτης καταστροφῆς* 1649 *ἔτυχεν, ἀνὴρ καὶ τὰ πολέμια ἄριστος τῶν καθ᾽ ἡλικίαν, καὶ πρὸς ἁπάσας τὰς ἡδονὰς ὅσαι ἄρχουσι νέων ἐγκρατής, τά τε δίκαια οὐκ ἀπὸ νόμου μᾶλλον ἀνάγκης διὰ τιμωριῶν δέος ἀκούσιος ἀποδιδούς, ἀλλ᾽*

ἑκών τε καὶ πεφυκὼς πρὸς αὐτὰ εὖ, καὶ οὐδ' ἐν ἀρετῆς μοίρᾳ τὸ μηθὲν ἀδικεῖν τιθέμενος, οὐ μόνον τε αὐτὸς ἁγνεύειν ἀπὸ πάσης κακίας προθυμούμενος, ἀλλὰ καὶ τοὺς ἄλλους προσαναγκάζειν δικαιῶν· μεγαλόφρων τε καὶ δωρηματικὸς καὶ εἰς ἐπανόρθωσιν ὧν ἑκάστῳ δέοι τῶν φίλων ὁπότε γνοίη προχειρότατος, τά τε πολιτικὰ πράττειν οὐδενὸς χείρων τῶν ἀριστοκρατικῶν· καὶ εἰ μὴ τὸ στασιάζον τῆς πόλεως ἐμποδὼν αὐτοῦ τοῖς πολιτεύμασιν ἐγένετο, μεγίστην ἂν ἡ Ῥωμαίων πόλις ἐπίδοσιν εἰς ἡγεμονίαν ἐκ τῶν ἐκείνου πολιτευμάτων ἔλαβεν. ἀλλ' οὐ γὰρ ἐν δυνατῷ ἦν ἅμα πάσας τὰς ἀρετὰς ἐν ἀνθρώπου γενέσθαι φύσει, οὐδὲ φύεταί τις ἀπὸ θνητῶν καὶ ἐπικήρων σπερμάτων περὶ πάντα ἀγαθός.

1650 LXI. Ἐκείνῳ γε οὖν ταύτας ὁ δαίμων τὰς ἀρετὰς χαρισάμενος ἑτέρας οὐκ εὐτυχεῖς κῆράς τε καὶ ἄτας προσῆψε. τὸ γὰρ πρᾳὺ καὶ φαιδρὸν οὐκ ἐνῆν αὐτοῦ τοῖς τρόποις, οὐδὲ τὸ θεραπευτικὸν τῶν πέλας ἔν τε ἀσπασμοῖς καὶ προσαγορεύσει, οὐδὲ δὴ τὸ εὐδιάλλακτον καὶ μετριοπαθὲς ὁπότε δι' ὀργῆς τῳ γένοιτο, οὐδὲ ἡ πάντα τὰ ἀνθρώπινα ἐπικοσμοῦσα χάρις· ἀλλ' ἀεὶ πικρὸς καὶ χαλεπὸς ἦν. ταῦτά τε δὴ αὐτὸν ἐν πολλοῖς ἔβλαψε, καὶ πάντων μάλιστα ἡ περὶ τὰ δίκαια καὶ τὴν φυλακὴν τῶν νόμων ἄκρατός τε καὶ ἀπαράπειστος καὶ οὐθὲν τῷ ἐπιεικεῖ διδοῦσα ἀποτομία· ἔοικέ τε ἀληθὲς εἶναι τὸ ὑπὸ τῶν ἀρχαίων λεγόμενον φιλοσόφων, ὅτι μεσότητές εἰσιν ἀλλ' οὐκ ἀκρότητες αἱ τῶν ἠθῶν ἀρεταί, μάλιστα δὲ ἡ δικαιοσύνη. οὐ γὰρ μόνον ἐλλείπουσα τοῦ μετρίου πέφυκεν, ἀλλὰ καὶ ὑπερβάλλουσα, αὐτοῖς τε οὐ λυ-
1651 σιτελής, ἀλλ' ἔστιν ὅτε αἰτία μεγάλων συμφορῶν, καὶ εἰς θανάτους οἰκτροὺς καὶ λύμας ἀνηκέστους

καταστρέφουσα. Μάρκιόν γε οὐδὲν ἦν ἕτερον ἄρα ὃ τῆς πατρίδος ἐξήλασε καὶ τῶν ἄλλων ἀγαθῶν ἀνόνητον ἐποίησεν, ἢ τὸ ἀκριβὲς καὶ ἄκρον δίκαιον. τοῖς τε γὰρ δημόταις εἴκειν τὰ μέτρια δέον καὶ ἐφιέναι τι ταῖς ἐπιθυμίαις, καὶ τὰ πρῶτα φέρεσθαι παρ' αὐτοῖς, οὐκ ἠβουλήθη, ἀλλὰ πρὸς ἅπαντα τὰ μὴ δίκαια ἀντιλέγων μῖσος ἤγειρε καὶ ἐξηλάθη πρὸς αὐτῶν· τῆς τε Οὐολούσκων στρατηγίας εὐθὺς ἅμα τῷ διαλῦσαι τὸν πόλεμον ἀπαλλαγῆναι παρόν, καὶ μετενέγκασθαι τὸν οἴκησιν ἑτέρωσέ ποι, ἕως ἂν ἡ κάθοδος αὐτῷ δοθῇ ὑπὸ τῆς πατρίδος, καὶ μὴ παρασχεῖν αὐτὸν ἐχθρῶν ἐπιβουλαῖς καὶ ὄχλων ἀμαθίαις σκοπόν, οὐκ ἠξίωσεν, ἀλλ' ὑπεύθυνον οἰόμενος δεῖν τὸ σῶμα παρασχεῖν τοῖς πεπιστευκόσι τὴν ἀρχήν, καὶ λόγον ἀποδοὺς ὧν ἔπραξε κατὰ τὴν ἡγεμονίαν, 1652 εἴ τι φαίνοιτο ἀδικῶν τὴν κατὰ νόμους ὑποσχεῖν δίκην, τῆς ἄκρας δικαιοσύνης οὐ καλοὺς ἀπέλαβε μισθούς.

LXII. *Εἰ μὲν οὖν* ἅμα τοῖς σώμασι διαλυομένοις καὶ τὸ τῆς ψυχῆς, ὁτιδήποτ' ἐστὶν ἐκεῖνο, συνδιαλύεται, καὶ οὐδαμῇ οὐθὲν ἔτι ἐστίν, οὐκ οἶδ' ὅπως μακαρίους ὑπολάβω τοὺς μηθὲν μὲν ἀπολαύσαντας τῆς ἀρετῆς ἀγαθόν, δι' αὐτὴν δὲ ταύτην ἀπολομένους. εἰ δὲ ἄφθαρτοι μέχρι τοῦ παντὸς αἱ ψυχαὶ τυγχάνουσιν ἡμῶν οὖσαι καθάπερ οἴονταί τινες, ἢ χρόνον τινὰ μετὰ τὴν ἀπαλλαγὴν τῶν σωμάτων ἔτι διαμένουσι, μήκιστον μὲν αἱ τῶν ἀγαθῶν ἀνδρῶν, ἐλάχιστον δὲ αἱ τῶν κακῶν, ἀποχρῶσα τιμὴ φαίνοιτ' ἂν οἷς ἀρετὴν ἀσκοῦσιν ἠναντιώθη τὰ ἐκ τῆς τύχης ἡ παρὰ τῶν ζώντων εὐλογία καὶ μνήμη μέχρι πλείστου 1653 παραμείνασα χρόνου· ὃ καὶ τῷ ἀνδρὶ ἐκείνῳ συνέβη. οὐ γὰρ μόνον Οὐολοῦσκοι τὸν θάνατον ἐπέν-

θησαν αὐτοῦ, καὶ ὡς τῶν ἀρίστων γενόμενον ἐν τιμῇ ἔχουσιν· ἀλλὰ καὶ Ῥωμαῖοι, ἐπειδὴ τὸ πάθος ἐγνώσθη, μεγάλην συμφορὰν ὑπολαβόντες εἶναι τῆς πόλεως, πένθος ἐποιήσαντο ἰδίᾳ καὶ δημοσίᾳ· καὶ αἱ γυναῖκες αὐτῶν, ἃ νόμος ἐστὶν αὐταῖς ἐπὶ τοῖς ἰδίοις τε καὶ ἀναγκαίοις ποιεῖν κήδεσιν, ἀποθέμεναι χρυσόν τε καὶ πορφύραν καὶ τὸν ἄλλον ἅπαντα κόσμον μέλασιν ἀμφιεσμοῖς χρώμεναι τὸν ἐνιαύσιον ἐπένθησαν χρόνον. ἐτῶν δὲ μετὰ τὸ πάθος ὁμοῦ τι πεντακοσίων ἤδη διαγεγονότων εἰς τόνδε τὸν χρόνον, οὐ γέγονεν ἐξίτηλος ἡ τοῦ ἀνδρὸς μνήμη, ἀλλ' ᾄδεται καὶ ὑμνεῖται πρὸς πάντων ὡς εὐσεβὴς καὶ δίκαιος ἀνήρ. ὁ μὲν δὴ κατασχὼν Ῥωμαίους κίνδυνος ἐκ τῆς Οὐολούσκων τε καὶ Αἰκανῶν ἐπιστρατείας Μάρκιον λαβούσης ἡγεμόνα, μέγιστος τῶν πρὸ αὐτοῦ γενόμενος
1654 καὶ μικρὸν ἀποσχὼν τοῦ πᾶσαν τὴν πόλιν ἀνελεῖν ἐκ βάθρων, τοιούτου τέλους ἔτυχεν.

LXIII. Ἡμέραις δὲ ὀλίγαις ὕστερον ἐξελθόντες εἰς τὴν ὕπαιθρον Ῥωμαῖοι πολλῇ στρατιᾷ τῶν ὑπάτων ἀγόντων ἀμφοτέρων, καὶ προελθόντες ἄχρι τῶν ὅρων τῆς σφετέρας κατεστρατοπέδευσαν ἐπὶ λόφοις δυσίν, ἴδιον ἑκατέρου τῶν ὑπάτων στρατόπεδον ἐπὶ τοῖς ἐρυμνοτάτοις καταστησαμένου. οὐ μὴν ἔδρασάν γε οὔτε μεῖζον οὔτε ἔλαττον, ἀλλ' ἀνέστρεψαν ἄπρακτοι, καίτοι καλὰς ἀφορμὰς δόντων αὐτοῖς τῶν πολεμίων δρᾶσαί τι γενναῖον. πρότεροι γὰρ ἔτι τούτων Οὐολοῦσκοί τε καὶ Αἰκανοὶ στρατὸν ἐπὶ τὴν Ῥωμαίων γῆν ἤγαγον γνώμην ποιησάμενοι μὴ ἀνεῖναι τὸν καιρόν, ἀλλ' ἕως ἔτι καταπεπλῆχθαι τὸ ἀντίπαλον ἐδό-
1655 κουν χωρεῖν ἐπ' αὐτό, ὡς καὶ ἑκούσιον διὰ δέος παραστησόμενον. στασιάσαντες δὲ περὶ τῆς ἡγεμονίας κατ' ἀλλήλων, τὰ ὅπλα ἥρπασαν καὶ συμπεσόντες ἐμά-

χοντο, οὔτε κατὰ τάξιν οὔτε ἐκ παραγγέλματος, ἀλλὰ φύρδην καὶ ἀναμίξ, ὥστε πολὺν ἐξ ἀμφοῖν γενέσθαι φόνον· καὶ εἰ μὴ δὺς ὁ ἥλιος ἔφθασεν, ἅπασαι ἂν αὐτῶν αἱ δυνάμεις διεφθάρησαν. τῇ δὲ νυκτὶ λυούσῃ τὸ νεῖκος ἀκούσιοι εἴξαντες διεκρίθησάν τε ἀπ' ἀλλήλων καὶ ἐπὶ τοὺς ἰδίους χάρακας ἀπηλλάγησαν· ἕωθεν δὲ ἀναστήσαντες τὰς δυνάμεις ἀπῄεσαν ἑκάτεροι ἐπὶ τὰ σφέτερα. οἱ δὲ ὕπατοι παρά τε αὐτομόλων καὶ αἰχμαλώτων οἳ παρ' αὐτὸ τὸ ἔργον ἀπέδρασαν ἀκούσαντες, οἷα κατέσχε λύσσα καὶ θεοβλάβεια τὰ πολέμια, οὔτε συνεπέθεντο τῷ κατ' εὐχὴν δοθέντι καιρῷ τριάκοντα σταδίων οὐ πλεῖον ἀπέχοντες, οὔτε ἀπιόντας ἐδίωξαν ἐν ᾧ κεκμηκότας καὶ τραυματίας καὶ ὀλίγους ἐκ πολλῶν καὶ ἀτάκτους χω- 1656
ροῦντας ἀκραιφνεῖς αὐτοὶ καὶ σὺν κόσμῳ ἑπόμενοι ῥᾳδίως ἂν διέφθειραν πασσυδί. λύσαντες δὲ καὶ αὐτοὶ τοὺς χάρακας ἀπῄεσαν εἰς τὴν πόλιν· εἴτε ἀρκούμενοι τῷ παρὰ τῆς τύχης δοθέντι ἀγαθῷ, εἴτε οὐ πιστεύοντες ἀνασκήτῳ στρατιᾷ τῇ σφετέρᾳ, εἴτε περὶ πολλοῦ ποιούμενοι τὸ μηδὲ ὀλίγους τῶν σφετέρων ἀποβαλεῖν. ἀφικόμενοι δὲ εἰς τὴν πόλιν ἐν αἰσχύνῃ πολλῇ ἦσαν δειλίας δόξαν ἐπὶ τῷ ἔργῳ φερόμενοι· καὶ οὐδεμίαν ἔξοδον ἔτι ποιησάμενοι παρέδοσαν τοῖς μεθ' ἑαυτοὺς ὑπάτοις τὴν ἀρχήν.

LXIIII. Τῷ δ' ἑξῆς ἐνιαυτῷ Γάϊος μὲν Ἀκύλλιος καὶ Τίτος Σίκκιος, ἄνδρες ἔμπειροι πολέμων, τὴν ὑπατείαν παρειλήφεσαν. ἡ δὲ βουλὴ προθέντων λόγον περὶ τοῦ πολέμου τῶν ὑπάτων πρῶτον ἐψηφίσατο πρεσβείαν πέμψαι πρὸς Ἕρνικας αἰτήσουσαν ὡς παρὰ φίλων τε καὶ ἐνσπόνδων δίκας νομίμους· ἠδίκητο γὰρ ἡ πόλις ὑπ' αὐτῶν κατὰ τὴν Οὐολου- 1657
σκων τε καὶ Αἰκανῶν ἐπιστρατείαν λῃστείαις τε καὶ

καταδρομαῖς τῆς ὁμορούσης αὐτοῖς γῆς· ἕως δ' ἂν τὰς παρ' ἐκείνων λάβωσιν ἀποκρίσεις, στρατιὰν ὅσην δύνανται πλείστην καταγράφειν τοὺς ὑπάτους καὶ τοὺς συμμάχους πρεσβειῶν ἀποστολαῖς παρακαλεῖν σῖτόν τε καὶ ὅπλα καὶ χρήματα καὶ τἆλλα ὅσων ἔδει τῷ πολέμῳ διὰ πολυχειρίας παρασκευάσασθαι καὶ ἐν τάχει. ὡς δὲ ἀπήγγειλαν αὐτοῖς ἀναστρέψαντες οἱ πρέσβεις ἃς παρὰ τῶν Ἑρνίκων ἔλαβον ἀποκρίσεις, ὅτι συνθήκας μὲν οὔ φασιν αὐτοῖς εἶναι πρὸς Ῥωμαίους κοινῇ γενομένας οὐδέποτε, τὰς δὲ πρὸς βασιλέα Ταρκύνιον ὁμολογίας αἰτιῶνται λελύσθαι τήν τε ἀρχὴν ἀφαιρεθέντος ἐκείνου καὶ τεθνηκότος ἐπὶ τῆς ξένης· εἰ δέ τινες ἁρπαγαὶ καὶ καταδρομαὶ τῆς χώρας ἐγένοντο διὰ ληστηρίων οὐκ ἀπὸ κοινῆς γνώμης γεγονέναι λέγουσιν, ἀλλ' ἰδιωτῶν ἀδικήματα 1658 *μετιόντων τὰ ἴδια, καὶ οὐδὲ τοὺς ταῦτα δράσαντας παρέχειν οἷοί τ' εἰσὶν ἐπὶ δίκην, ἕτερα καὶ αὐτοὶ τοιαῦτα πεπονθέναι λέγοντες καὶ ἀντεγκαλοῦντες, ἄσμενοί τέ εἰσι δέχεσθαι τὸν πόλεμον· ταῦτα ἡ βουλὴ μαθοῦσα ἐψηφίσατο νείμασθαι τὴν καταγραφεῖσαν ἐκ τῶν νεωτέρων στρατιὰν τριχῇ· τούτων δὲ τὴν μὲν μίαν ἄγοντα Γάϊον Ἀκύλλιον τὸν ὕπατον ὁμόσε τῇ Ἑρνίκων στρατιᾷ χωρεῖν· καὶ γὰρ ἐκεῖνοι ἤδη ἦσαν ἐν τοῖς ὅπλοις· τὴν δὲ ἑτέραν Τῖτον Σίκκιον ἐπὶ Οὐολούσκους ἄγειν, τὸν ἕτερον τῶν ὑπάτων. τὴν δὲ λοιπὴν τρίτην μερίδα παραλαβόντα Σπόριον Λάρκιον, ὃς ἦν ἀποδεδειγμένος ὑπὸ τῶν ὑπάτων ἔπαρχος τὴν ἔγγιστα τῆς πόλεως χώραν φυλάττειν· τοὺς δὲ ὑπὲρ τὸν στρατιωτικὸν κατάλογον, ὅσοι δύναμιν εἶχον ἔτι βαστάζειν ὅπλα, ταχθέντας ὑπὸ σημαίαις τάς τε ἄκρας φρουρεῖν τῆς πόλεως καὶ τὰ τείχη, μή τις αἰφνίδιος πολεμίων γένηται ἔφοδος ἐξεστρα-*

τευμένης τῆς νεότητος ἀθρόας· ἡγεῖσθαι δὲ τῆς 1659
δυνάμεως ταύτης Αὖλον Σεμπρώνιον Ἀτρατῖνον,
ἄνδρα τῶν ὑπατικῶν. ἐγίνετο δὲ ταῦτα οὐ διὰ
μακροῦ.

LXV. Ἀκύλλιος μὲν οὖν ἅτερος τῶν ὑπάτων ἐν
τῇ Πραινεστηνῶν χώρᾳ τὸν Ἑρνίκων στρατὸν ὑπο-
μένοντα καταλαβὼν ἀντικατεστρατοπέδευσεν ὡς ἐδύ-
νατο μάλιστα ἀγχοτάτω, σταδίους ἀπὸ τῆς Ῥώμης
ἀποσχὼν ὀλίγῳ πλείους διακοσίων· τρίτῃ δὲ ἀφ' ἧς
κατεστρατοπέδευσεν ἡμέρᾳ, προελθόντων ἐκ τοῦ χά-
ρακος τῶν Ἑρνίκων εἰς τὸ πεδίον ἐν τάξει καὶ τὰ
σημεῖα ἀράντων τῆς μάχης, ἀντεξῆγε καὶ αὐτὸς τὴν
δύναμιν ἐν κόσμῳ τε καὶ κατὰ τέλη. ἐπεὶ δὲ ἀγχοῦ
ἐγένοντο ἀλλήλων ἔθεον ἀλαλάξαντες ὁμόσε, πρῶτον
μὲν οἱ ψιλοὶ σαυνίων τε βολαῖς καὶ τοξεύμασι καὶ
λίθοις ἀπὸ σφενδόνης μαχόμενοι, καὶ πολλὰ τραύ-
ματα ἔδοσαν ἀλλήλοις· ἔπειτα ἱππεῖς ἱππεῦσι συρ-
ράττουσι κατ' ἴλας ἐλαύνοντες καὶ τὸ πεζὸν τῷ πεζῷ
κατὰ σπείρας μαχόμενον. ἔνθα δὴ καλὸς ἀγὼν ἦν 1660
ἐκθύμως ἀμφοτέρων ἀγωνιζομένων, καὶ μέχρι πολλοῦ
διέμενον οὐδέτεροι τοῖς ἑτέροις τοῦ χωρίου ἐν ᾧ ἐτά-
χθησαν εἴκοντες. ἔπειτα ἡ Ῥωμαίων ἤρξατο κάμνειν
φάλαγξ, οἷα διὰ πολλοῦ τοῦ μεταξὺ χρόνου τότε
πρῶτον ἠναγκασμένη ὁμιλεῖν πολέμῳ. τοῦτο συνι-
δὼν Ἀκύλλιος ἐκέλευσε τοὺς ἀκμῆτας ἔτι καὶ εἰς
αὐτὸ τοῦτο φυλαττομένους ὑπὸ τὰ κάμνοντα τῆς
φάλαγγος ὑπελθεῖν μέρη, τοὺς δὲ τραυματίας καὶ
τοὺς ἀπειρηκότας ὀπίσω τῆς φάλαγγος ἀπιέναι. οἱ
δὲ Ἕρνικες ὡς ἔμαθον κινουμένους αὐτῶν τοὺς λό-
χους φυγῆς τε ἄρχειν τοὺς Ῥωμαίους ὑπέλαβον, καὶ
παρακελευσάμενοι ἀλλήλοις ἐμβάλλουσι πυκνοῖς τοῖς
λόχοις εἰς τὰ κινούμενα τῶν πολεμίων μέρη, καὶ οἱ

ἀκραιφνεῖς τῶν Ῥωμαίων ἐπιόντας αὐτοὺς δέχονται·
καὶ ἦν αὖθις ἐξ ὑπαρχῆς ἀμφοτέρων ἐκθύμως ἀγω-
νιζομένων μάχη καρτερά· καὶ γὰρ οἱ τῶν Ἑρνίκων
ἐξεπληροῦντο λόχοι τοῖς ἀκμῆσιν ὑποπεμπομένοις εἰς
1661 τὰ κάμνοντα ὑπὸ τῶν ἡγεμόνων. ἐπειδὴ δὲ περὶ δεί-
λην ὀψίαν ἦν ἤδη, παρακαλέσας τοὺς ἱππεῖς ὁ ὕπα-
τος νυνὶ δὴ ἄνδρας ἀγαθοὺς γενέσθαι, ἐμβάλλει τοῖς
πολεμίοις κατὰ τὸ δεξιὸν κέρας αὐτὸς ἡγούμενος τῆς
ἴλης. οἱ δὲ ὀλίγον τινὰ δεξάμενοι χρόνον αὐτοὺς
ἐγκλίνουσι, καὶ γίνεται φόνος ἐνταῦθα πολύς. τὸ μὲν
οὖν δεξιὸν τῶν Ἑρνίκων κέρας ἐπόνει τε ἤδη καὶ
ἐξέλειπε τὴν τάξιν, τὸ δ' εὐώνυμον ἔτι ἀντεῖχε καὶ
περιῆν τοῦ Ῥωμαίων δεξιοῦ· μετ' ὀλίγον μέντοι καὶ
τοῦτο ἐνέδωκεν. ὁ γὰρ Ἀκύλλιος τοὺς ἀρίστους τῶν
νέων ἐπαγόμενος παρεβοήθει κἀκεῖ παραθαρρύνων
τε καὶ ἐξ ὀνόματος ἀνακαλῶν τοὺς εἰωθότας ἐν ταῖς
πρὶν ἀριστεύειν μάχαις, τά τε σημεῖα τῶν λόχων,
ὅσοι μὴ ἐρρωμένως ἐδόκουν ἀμύνεσθαι, παρὰ τῶν
σημειοφόρων ἁρπάζων εἰς μέσους ἐρρίπτει τοὺς πο-
λεμίους, ἵνα τὸ δέος αὐτοὺς τῆς ἐννόμου τιμωρίας,
εἰ μὴ ἀνασώσαιντο τὰς σημαίας, ἄνδρας ἀγαθοὺς
εἶναι ἀναγκάσῃ· τῷ τε κάμνοντι αὐτὸς παρεβοήθει
1662 μέρει ἀεί, ἕως ἐξέωσε τῆς στάσεως καὶ θάτερον κέ-
ρας. ψιλωθέντων δὲ τῶν ἄκρων οὐδὲ τὰ μέσα παρ-
έμεινε. φυγὴ δὴ τῶν Ἑρνίκων τὸ μετὰ τοῦτο ἐγί-
νετο ἐπὶ τὸν χάρακα τεταραγμένη τε καὶ ἄκοσμος, καὶ
οἱ Ῥωμαῖοι αὐτοῖς κτείνοντες ἠκολούθουν. τοσαύτη
δ' ἄρα προθυμία παρὰ τὸν τότε ἀγῶνα τῇ Ῥωμαίων
στρατιᾷ ἐνέπεσεν, ὥστε καὶ τοῦ χάρακος τῶν πολε-
μίων πειρᾶσθαί τινας ἐπιβαίνειν ὡς ἐξ ἐφόδου χει-
ρωσομένους· ὧν οὐκ ἀσφαλῆ τὴν προθυμίαν οὐδ'
ἐν τῷ συμφέροντι γιγνομένην ὁρῶν ὁ ὕπατος, ση-

μαίνειν κελεύσας τὸ ἀνακλητικὸν κατεβίβασε τοὺς ὁμόσε χωροῦντας ἄκοντας ἀπὸ τῶν ἐρυμάτων, δείσας μὴ ἐξ ὑπερδεξιῶν βαλλόμενοι σὺν αἰσχύνῃ τε καὶ μετὰ μεγάλης βλάβης ἀναγκασθῶσιν ὑποχωρεῖν, ἔπειτα καὶ τὴν ἐκ τῆς προτέρας νίκης εὔκλειαν ἀφανίσωσι. τότε μὲν οὖν ἤδη· καὶ γὰρ ἦν περὶ δύσιν ἡλίου· χαίροντές τε καὶ παιανίζοντες οἱ Ῥωμαῖοι κατεστρατοπέδευσαν.

LXVI. Τῇ δ' ἐπιούσῃ νυκτὶ ψόφος τε ἠκούετο 1663
πολὺς ἐκ τοῦ χάρακος τῶν Ἑρνίκων καὶ βοή, καὶ πολλὰ ἐφαίνετο σέλα λαμπάδων. ἀπογνόντες γὰρ ἔτι ἀνθέξειν ἑτέρᾳ μάχῃ καταλιπεῖν τὸν χάρακα ἔγνωσαν αὐτοκέλευστοι· καὶ τὸ ποιῆσαν αὐτῶν τὴν ἀταξίαν καὶ βοὴν τοῦτο ἦν. ὡς γὰρ ἕκαστοι δυνάμεως εἶχον καὶ τάχους ἔφευγον ἐπιβοῶντές τε ἀλλήλους καὶ ἐπιβοώμενοι, τῶν δὲ ὑπολειπομένων διὰ τραύματα ἢ νόσους οἰμωγὰς καὶ λιτανείας ἐν οὐδενὶ λόγῳ τιθέμενοι. τοῦτο ἀγνοοῦντες οἱ Ῥωμαῖοι, πεπυσμένοι δὲ παρὰ τῶν αἰχμαλώτων πρότερον, ὅτι δύναμις Ἑρνίκων ἑτέρα μέλλοι βοηθὸς ἥξειν τοῖς σφετέροις, καὶ τὴν βοήν τε καὶ ταραχὴν ἐπὶ τῇ ἐκείνων ἀφίξει γεγονέναι νομίζοντες, τά τε ὅπλα ἀνέλαβον καὶ τὸν χάρακα περιστεφανώσαντες, μή τις ἔφοδος αὐτοῖς γένοιτο νύκτωρ, τοτὲ μὲν ὅπλων κτύπον ἐποίουν ἀθρόοι, τοτὲ δὲ ὥσπερ εἰς μάχην ὁρμώμενοι 1664
θαμινὰ ἐπηλάλαζον. τοῖς δὲ Ἕρνιξι καὶ ταῦτα δέος μέγα παρεῖχε, καὶ ὡς διωκόμενοι πρὸς τῶν πολεμίων σποράδες ἄλλοι κατ' ἄλλας ὁδοὺς ἔθεον. ἡμέρας δὲ γενομένης, ἐπειδὴ ἀπήγγειλαν αὐτοῖς οἱ πεμφθέντες ἐπὶ τὴν κατασκοπὴν ἱππεῖς, ὡς οὔτε δύναμις ἑτέρα παρήει σύμμαχος τοῖς πολεμίοις, οἵ τε τῇ προτέρᾳ παραταξάμενοι μάχῃ πεφεύγασιν, ἐξαγαγὼν τὴν δύ-

ναμιν ὁ Ἀκύλλιος τόν τε χάρακα τῶν πολεμίων αἱρεῖ μεστὸν ὄντα ὑποζυγίων τε καὶ ἀγορᾶς καὶ ὅπλων, καὶ τοὺς τραυματίας αὐτῶν οὐκ ἐλάττους ὄντας τῶν πεφευγότων λαμβάνει, τήν τε ἵππον ἐκπέμψας ἐπὶ τοὺς ἐσκεδασμένους ἀνὰ τὰς ὁδούς τε καὶ τὰς ὕλας πολλῶν γίνεται σωμάτων ἐγκρατής· καὶ τὸ λοιπὸν ἤδη τὴν Ἑρνίκων γῆν ἐπήει λεηλατῶν ἀδεῶς, οὐδενὸς ἔτι ὑπομένοντος εἰς χεῖρας ἰέναι. ταῦτα μὲν Ἀκύλλιος ἔδρασεν.

1665 LXVII. Ὁ δ' ἕτερος τῶν ὑπάτων Τῖτος Σίκκιος, ὁ πεμφθεὶς ἐπὶ Οὐολούσκους, ὅσον ἦν κράτιστον τῆς δυνάμεως μέρος ἀναλαβὼν εἰς τὴν Οὐελιτρανῶν χώραν εἰσέβαλεν. ἐνταῦθα γὰρ ἦν Τύλλος Ἄττιος ὁ τῶν Οὐολούσκων ἡγεμὼν τὴν ἀκμαιοτάτην συσκευασάμενος στρατιάν, γνώμην ἔχων τὰ συμμαχικὰ Ῥωμαίων κακῶσαι πρῶτον, ὥσπερ ὁ Μάρκιος ἔδρασεν ὅτ' ἤρχετο τοῦ πολέμου, δόξας ἐν τῷ αὐτῷ φόβῳ Ῥωμαίους ἔτι διαμένειν καὶ μηδεμίαν τοῖς ὑπὲρ αὐτῶν κινδυνεύουσι πέμψειν ἐπικουρίαν. ὡς δὲ ὤφθησάν τε καὶ εἶδον ἀλλήλας αἱ δυνάμεις, οὐδὲν ἔτι ἀναβαλόμεναι συνήεσαν εἰς τὸ αὐτό. ἦν δὲ ὁ χῶρος ὁ μεταξὺ τῶν στρατοπέδων, ἐν ᾧ τὴν μάχην ἔδει γενέσθαι, λόφος πετρώδης πολλαχῇ περικατεαγώς, ἔνθα οὐδετέροις ἡ ἵππος ἔμελλεν ἔσεσθαι χρησίμη. μαθόντες δὲ τοῦτο οἱ τῶν Ῥωμαίων ἱππεῖς καὶ ἐν αἰσχύνῃ θέμενοι, εἰ παρόντες τῷ ἀγῶνι μηδὲν προσωφελή-
1666 σουσιν, ἐδέοντο τοῦ ὑπάτου προσελθόντες ἀθρόοι, ἐᾶσαι σφᾶς καταβάντας ἀπὸ τῶν ἵππων μάχεσθαι πεζούς, εἰ τοῦτο αὐτῷ δοκεῖ κράτιστον εἶναι. κἀκεῖνος πολλὰ ἐπαινέσας αὐτοὺς καταβιβάζει τε ἀπὸ τῶν ἵππων, καὶ σὺν ἑαυτῷ τεταγμένους εἶχεν ἐπισκόπους τε καὶ ἐπανορθωτὰς τοῦ κάμνοντος ἐσομέ-

νους· καὶ ἐγένοντο τῆς τότε νίκης λαμπρᾶς σφόδρα
γενομένης οὗτοι Ῥωμαίοις αἴτιοι. τὸ μὲν γὰρ πεζὸν
ἀμφοτέρων πλήθει τε ἀνθρώπων ὡς μάλιστα ἦν
καὶ ὁπλισμοῖς ὁμοιότροπον, τάξεώς τε κόσμῳ καὶ
μάχης ἐμπειρίᾳ κατά τε ἐπαγωγὰς καὶ ὑποχωρήσεις
πληγάς τε αὖ καὶ φυλακὰς παραπλήσιον. μετέμαθον
γὰρ οἱ Οὐολοῦσκοι πάντα τὰ πολέμια, ἐξ οὗ Μάρκιον
ἔσχον ἡγεμόνα, καὶ εἰς τὰ Ῥωμαίων προσεχώρησαν
ἔθη. διέμενον οὖν ἐπὶ πλεῖστον χρόνον τῆς ἡμέρας
ἀγχωμάλως αἱ φάλαγγες ἀγωνιζόμεναι, καὶ ἡ τοῦ
χωρίου φύσις ἀνώμαλος οὖσα ἑκατέροις πολλὰ εἰς
τὸ πλεονεκτεῖν κατ' ἀλλήλων παρείχετο. οἱ δὲ ἱππεῖς 1667
τῶν Ῥωμαίων διχῇ νείμαντες ἑαυτούς, οἱ μὲν κατὰ
τὰ πλάγια τῶν πολεμίων ἀπὸ τοῦ δεξιοῦ κέρως ἐμ-
βάλλουσιν, οἱ δὲ περιελθόντες ἀπὸ τοῦ λόφου τοῖς
κατόπιν ἐπιρράττουσιν. ἔπειθ' οἱ μὲν εἰσακοντίζον-
τες τὰς λόγχας, οἱ δὲ τοὺς ὁμόσε χωροῦντας τοῖς
ἱππικοῖς ξίφεσι μακροτέροις οὖσι κατὰ βραχιόνων
παίοντες καὶ παρὰ τὰς ἀγκύλας καταφέροντες, πολ-
λῶν μὲν τὰς [ἀμυνομένας, ἢ σκεπούσας τὰ σώματα]
χεῖρας αὐτοῖς σκεπάσμασί τε καὶ ἀμυντηρίοις ἀπέ-
κοπτον, πολλοὺς δὲ γονάτων τε καὶ ἀστραγάλων
πληγαῖς βαθείαις ἀπὸ κρατίστης βάσεως ἐρρίπτουν
ἡμιθανεῖς. περιειστήκει τε πάντοθεν τοῖς Οὐολού-
σκοις τὸ δεινόν· ἐκ μὲν γὰρ τῶν κατὰ πρόσωπον οἱ
πεζοὶ αὐτοῖς ἐνέκειντο, ἐκ δὲ τῶν πλαγίων τε καὶ τῶν
κατόπιν οἱ ἱππεῖς, ὥστε ὑπὲρ δύναμιν ἀγαθοὶ γενό-
μενοι καὶ πολλὰ ἔργα τόλμης τε καὶ ἐμπειρίας ἀπο- 1668
δειξάμενοι, μικροῦ δεῖν πάντες οἱ τὸ δεξιὸν κέρας
ἔχοντες κατεκόπησαν. οἱ δ' ἐν μέσῃ τε τῇ φάλαγγι
τεταγμένοι καὶ ἐπὶ τοῦ ἑτέρου κέρως, ἐπειδὴ τὸ δε-
ξιόν τε παρερρηγμένον εἶδον καὶ τὸν αὐτὸν τρόπον

ἐπιόντας σφίσι τοὺς τῶν Ῥωμαίων ἱππεῖς, ἐξελίξαντες τοὺς λόχους βάδην ἀπεχώρουν ἐπὶ τὸν χάρακα, καὶ οἱ τῶν Ῥωμαίων ἱππεῖς ἐν τάξει ἠκολούθουν. ἐπεὶ δὲ πρὸς τῷ ἐρύματι ἦσαν, ἑτέρα γίνεται μάχη τῶν ἱππέων ἐπιβαινόντων τοῖς περισταυρώμασι κατὰ πολλὰ μέρη τοῦ χάρακος ὀξεῖα καὶ παλίντροπος. πονουμένων δὲ τῶν Ῥωμαίων ὁ ὕπατος κελεύσας τοῖς πεζοῖς ὕλην προσενέγκαντας ἀποχῶσαι τὰς τάφρους, πρῶτος ἐχώρει κατὰ τὸ ἐπίβατον ἔχων τοὺς ἀρίστους τῶν ἱππέων ἐπὶ τὰς ἐχυρωτάτας τοῦ χάρακος πύλας· ἀναστείλας δὲ τοὺς πρὸ αὐτῶν μαχομένους καὶ τοὺς καταρράκτας τῶν πυλῶν διακόψας ἐντὸς ἐγεγόνει τῶν ἐρυμάτων, καὶ τοὺς ἐπιόντας τῶν σφετέρων πεζῶν ἐδέχετο. Τύλλος δὲ Ἄττιος ἔχων τοὺς ἐρρωμενεστάτους καὶ εὐτολμοτάτους Οὐολούσκων ὁμόσε αὐτῷ χωρεῖ καὶ πολλὰ ἔργα γενναῖα ἀποδειξάμενος· ἦν γὰρ ἀγωνιστὴς μὲν πολέμων 1669 σφόδρα ἄλκιμος, στρατηγῆσαι δὲ οὐχ ἱκανός· ὑπὸ κόπου τε καὶ πλήθους τραυμάτων καταπονηθεὶς ἀποθνήσκει. τῶν δὲ ἄλλων Οὐολούσκων, ἐπειδὴ ὁ χάραξ ἡλίσκετο, οἱ μὲν ἀγωνιζόμενοι κατεκόπησαν, οἱ δὲ τὰ ὅπλα ῥίψαντες πρὸς ἱκεσίας τῶν κεκρατηκότων ἐτράποντο, ὀλίγοι δέ τινες ἐπὶ τὰ οἰκεῖα φεύγοντες ἀπεσώθησαν. ἀφικομένων δὲ εἰς τὴν Ῥώμην ἀγγέλων οὓς ἀπέστειλαν οἱ ὕπατοι μεγίστη χαρὰ τὸν δῆμον κατέσχε, καὶ αὐτίκα τοῖς μὲν θεοῖς χαριστηρίους ἐψηφίσαντο θυσίας, τοῖς δὲ ὑπάτοις τὴν τῶν θριάμβων τιμὴν προσέθεσαν· οὐ μέντοι τὴν αὐτήν γε ἀμφοτέροις· ἀλλὰ Σικκίῳ μέν, ἐπειδὴ φόβου μείζονος ἠλευθερωκέναι ἐδόκει τὴν πόλιν τὸν Οὐολούσκων ὑβριστὴν καθελὼν στρατὸν καὶ τὸν ἡγεμόνα αὐτῶν ἀποκτείνας τὴν μείζονα πομπὴν ἐψηφίσαντο· καὶ

εἰσήλασεν ὁ ἀνὴρ ἄγων τὰ λάφυρα καὶ τοὺς αἰχμαλώτους καὶ τὴν συναγωνισαμένην δύναμιν ἅρματι παρεμβεβηκὼς χρυσοχαλίνων ἵππων τὴν βασιλικὴν ἠμφιεσμένος ἐσθῆτα, ὡς περὶ τοὺς μείζονας θριάμβους νόμος. Ἀκυλλίῳ δὲ τὸν ἐλάττονα θρίαμβον 1670 *ἀπέδοσαν, ὃν αὐτοὶ καλοῦσιν οὐαστήν· δεδήλωται δέ μοι διὰ τῶν προτέρων, ἣν ἔχει διαφορὰν οὗτος πρὸς τὸν μείζονα· καὶ εἰσῆλθεν ὁ ἀνὴρ πεζὸς τὰ λοιπὰ τῆς πομπῆς ἐπαγόμενος. καὶ τὸ ἔτος τοῦτο ἐτελεύτα.*

LXVIII. *Οἱ δὲ παρὰ τούτων τὴν ὑπατείαν παραλαβόντες Πόπλιος Οὐεργίνιος καὶ Σπόριος Κάσσιος τὸ τρίτον τότε ἀποδειχθεὶς ὕπατος, τάς τε πολιτικὰς καὶ τὰς συμμαχικὰς ἀναλαβόντες δυνάμεις ἐξῆγον εἰς τὴν ὕπαιθρον, Οὐεργίνιος μὲν ἐπὶ τὰς Αἰκανῶν πόλεις, Κάσσιος δὲ ἐπὶ τὰς Ἑρνίκων τε καὶ Οὐολούσκων, κλήρῳ διαλαχόντες τὰς ἐξόδους. Αἰκα-* 1671 *νοὶ μὲν οὖν ὀχυρώσαντες τὰς πόλεις καὶ τὰ πλείστου ἄξια ἐκ τῶν ἀγρῶν ἀνασκευασάμενοι, τήν τε γῆν περιεώρων δῃουμένην καὶ τὰς αὐλὰς ἐμπιμπραμένας· ὥστε κατὰ πολλὴν εὐπέτειαν ὁ Οὐεργίνιος ὅσην ἐδύνατο πλείστην αὐτῶν γῆν κείρας τε καὶ λωβησάμενος, ἐπειδὴ οὐδεὶς ὑπὲρ αὐτῆς ἐξῄει μαχούμενος ἀπῆγε τὴν στρατιάν. Οὐολοῦσκοι δὲ καὶ Ἕρνικες ἐφ᾽ οὓς ὁ Κάσσιος ἐστράτευσε γνώμην μὲν ἐποιήσαντο δῃουμένης τῆς χώρας ὑπερορᾶν καὶ συνέφυγον εἰς τὰς πόλεις· οὐ μὴν ἔμεινάν γε ἐν τοῖς ἐγνωσμένοις χώρας τε ἀγαθῆς κειρομένης, ἣν οὐ ῥᾳδίως ἀνακτήσασθαι ἔτι ἤλπισαν, οἴκτῳ ὑπαχθέντες, καὶ τοῖς ἐρύμασιν οὐ σφόδρα ἐχυροῖς οὖσιν εἰς ἃ καταπεφεύγασιν ἀπιστοῦντες, ἀλλὰ πρεσβείας ἀπέστειλαν πρὸς τὸν ὕπατον ὑπὲρ καταλύσεως τοῦ πολέμου δεησό-*

1672 μενοι· Οὐολοῦσκοι μὲν πρότεροι· καὶ θᾶττον οὗτοι
τῆς εἰρήνης ἔτυχον, ἀργύριόν τε δόντες ὅσον αὐτοῖς
ὁ ὕπατος ἔταξε καὶ τἄλλα ὅσων ἔδει τῇ στρατιᾷ
πάντα ὑπηρετήσαντες· καὶ οὗτοι μὲν ὑπήκοοι Ῥω-
μαίοις ἔσεσθαι ὡμολόγησαν οὐθενὸς ἔτι μεταποιού-
μενοι τῶν ἴσων. Ἕρνικες δὲ ὕστεροι, ἐπειδὴ μεμο-
νωμένους ἑαυτοὺς εἶδον, ὑπὲρ εἰρήνης τε καὶ φιλίας
διελέγοντο πρὸς τὸν ὕπατον. ὁ δὲ Κάσσιος πολλὴν
κατηγορίαν πρὸς τοὺς πρέσβεις κατ᾽ αὐτῶν διαθέ-
μενος, πρῶτον ἔφη δεῖν αὐτοὺς τὰ τῶν κεκρατημέ-
νων τε καὶ ὑπηκόων ποιήσαντας, τότε διαλέγεσθαι
περὶ φιλίας· τῶν δὲ πρεσβευτῶν ποιήσειν τὰ δυ-
νατὰ καὶ μέτρια λεγόντων, ἐκέλευσεν αὐτοῖς ἀργύριόν
τε ὃ κατ᾽ ἄνδρα τοῖς στρατιώταις εἰς ὀψωνιασμὸν
ἔθος ἦν ἓξ μηνῶν δίδοσθαι καὶ διὰ μηνὸς τροφὰς
1673 ἀποφέρειν. ἕως δ᾽ ἂν ταῦτα συμπορίσωσι τάξας
τινὰ χρόνον ἡμερῶν, ἀνοχὰς αὐτοῖς ἐδίδου τοῦ πο-
λέμου. ὑπηρετησάντων δ᾽ αὐτοῖς ἅπαντα τῶν Ἑρνί-
κων διὰ τάχους καὶ μετὰ προθυμίας, καὶ τοὺς περὶ
τῆς φιλίας διαλεξομένους ἀποστειλάντων αὖθις, ἐπαι-
νέσας αὐτοὺς ὁ Κάσσιος ἀνέπεμψεν ἐπὶ τὴν βουλήν.
τοῖς δ᾽ ἐκ τοῦ συνεδρίου πολλὰ βουλευσαμένοις ἔδοξε
δέχεσθαι μὲν τοὺς ἄνδρας εἰς φιλίαν, ἐφ᾽ οἷς δὲ
γενήσονται δικαίοις αἱ πρὸς αὐτοὺς συνθῆκαι, Κάσ-
σιον τὸν ὕπατον γνῶναί τε καὶ στῆσαι· ὅ τι δὲ ἂν
ἐκείνῳ δόξῃ, τοῦτ᾽ εἶναι σφίσι κύριον.

LXVIIII. Ταῦτα τῆς βουλῆς ψηφισαμένης, ἀνα-
στρέψας εἰς τὴν πόλιν ὁ Κάσσιος θρίαμβον κατά-
γειν ἠξίου δεύτερον, ὡς τὰ μέγιστα τῶν ἐθνῶν κε-
1674 χειρωμένος, χάριτι μᾶλλον ἁρπάζων τὸ τίμιον ἢ τῷ
δικαίῳ λαμβάνων, ὃς οὔτε πόλεις κατὰ κράτος ἑλὼν
ἐκ τειχομαχίας, οὔτ᾽ ἐν ὑπαίθρῳ μάχῃ στρατιὰν πο-

λεμίων τρεψάμενος, αἰχμάλωτα καὶ σκῦλα οἷς κο-
σμεῖται θρίαμβος ἔμελλε κατάγειν. τοιγάρτοι δόξαν
αὐθαδείας καὶ τοῦ μηδὲν ἔτι τῶν ὁμοίων τοῖς ἄλλοις
φρονεῖν τοῦτο τὸ ἔργον αὐτῷ πρῶτον φθόνον ἤνεγκε.
διαπραξάμενος δὲ τὸν θρίαμβον αὐτῷ δοθῆναι τὰς
πρὸς Ἕρνικας ἐξήνεγκεν ὁμολογίας· αὗται δ' ἦσαν
ἀντίγραφοι τῶν πρὸς Λατίνους γενομένων. ἐφ' αἷς
πάνυ ἤχθοντο οἱ πρεσβύτατοί τε καὶ τιμιώτατοι καὶ
δι' ὑποψίας αὐτὸν ἐλάμβανον, οὐκ ἀξιοῦντες τῆς
ἴσης τιμῆς τοῖς συγγενέσι Λατίνοις τοὺς ἀλλοεθνεῖς
Ἕρνικας τυγχάνειν, οὐδὲ τοῖς πολλὰ εὐνοίας ἔργα
ἐπιδειξαμένοις τοὺς μηδ' ὁτιοῦν ἀγαθὸν δεδρακότας
τῶν αὐτῶν φιλανθρώπων μετέχειν, τῇ τε ὑπεροψίᾳ
τοῦ ἀνδρὸς ἀχθόμενοι, ὃς ὑπὸ τῆς βουλῆς τιμηθεὶς
οὐκ ἀντετίμησεν αὐτὴν τοῖς ἴσοις, οὐδὲ μετὰ κοινῆς 1675
γνώμης τῶν συνέδρων ἀλλ' ὡς αὐτῷ ἐδόκει γράψας
ἐξήνεγκε τὰς ὁμολογίας. ἦν τε ἄρα τὸ ἐν πολλοῖς
εὐτυχεῖν σφαλερὸν ἀνθρώπῳ χρῆμα καὶ ἀσύμφορον·
αὐχήματός τε γὰρ ἀνοήτου πολλοῖς αἴτιον γενόμενον
λανθάνει καὶ ἐπιθυμιῶν ἀρχηγὸν ἐκβαινουσῶν τὴν
ἀνθρωπίνην φύσιν· ὃ καὶ τῷ ἀνδρὶ ἐκείνῳ συνέβη.
τρισὶ γὰρ ὑπατείαις καὶ δυσὶ θριάμβοις μόνος τῶν
τότε ἀνθρώπων ὑπὸ τῆς πόλεως τετιμημένος, σεμνό-
τερον ἑαυτὸν ἦγε καὶ μοναρχικῆς ἐξουσίας ἐλάμβανε
πόθον· ἐνθυμούμενος δὲ ὅτι τοῖς βασιλείας ἢ τυραν-
νίδος ἐφιεμένοις ῥάστη τε καὶ ἀσφαλεστάτη πασῶν
ἐστιν ὁδὸς ἡ τὸ πλῆθος εὐεργεσίαις τισὶν ὑπαγομένη
καὶ ἐκ τῶν χειρῶν τοῦ διδόντος τὰ κοινὰ σιτεῖσθαι
ἐθίζουσα, ταύτην ἐτράπετο· καὶ αὐτίκα οὐθενὶ 1676
προειπών· ἦν γάρ τις χώρα δημοσία πολλὴ παρη-
μελημένη τε καὶ ὑπὸ τῶν εὐπορωτάτων κατεχομένη,
ταύτην ἔγνω τῷ δήμῳ διανέμειν. καὶ εἰ μὲν ἄχρι

τοῦδε ἐλθὼν ἠρκέσθη, τάχα ἂν αὐτῷ κατὰ νοῦν τὸ ἔργον ἐχώρησε· νῦν δὲ πλειόνων ὀρεγόμενος στάσιν οὐ μικρὰν ἤγειρεν, ἐξ ἧς οὐκ εὐτυχὲς τὸ τέλος αὐτῷ συνέβη. Λατίνους τε γὰρ ἠξίου τῇ καταγραφῇ τῆς χώρας συμπεριλαμβάνειν καὶ τοὺς νεωστὶ προσληφθέντας εἰς τὴν πολιτείαν Ἕρνικας.

LXX. Οἰκεῖα ἑαυτῷ παρασκευάσαι τὰ ἔθνη ταῦτα διανοηθεὶς τῇ μετὰ τὸν θρίαμβον ἡμέρᾳ συνεκάλεσε τὸ πλῆθος εἰς ἐκκλησίαν· καὶ παρελθὼν ἐπὶ τὸ βῆμα, ὡς ἔθος ἐστὶ ποιεῖν τοῖς τεθριαμβευκόσι, πρῶτον μὲν ἀποδέδωκε τὸν ὑπὲρ τῶν πραχθέντων αὐτῷ λόγον, οὗ κεφάλαια ἦν ταῦτα· ὅτι τῆς μὲν πρώτης
1677 ὑπατείας τυχὼν τὸ Σαβίνων ἔθνος ἀντιποιούμενον τῆς ἡγεμονίας μάχῃ νικήσας ὑπήκοον ἠνάγκασε Ῥωμαίοις γενέσθαι· ἀποδειχθεὶς δὲ τὸ δεύτερον ὕπατος τὴν ἐμφύλιον ἔπαυσε τῆς πόλεως στάσιν καὶ κατήγαγε τὸν δῆμον εἰς τὴν πατρίδα, Λατίνους δὲ συγγενεῖς μὲν ὄντας τῆς Ῥωμαίων πόλεως, ἀεὶ δὲ τῆς ἡγεμονίας καὶ τῆς δόξης αὐτῇ φθονοῦντας, εἰς φιλότητα συνήγαγε τῆς ἰσοπολιτείας μεταδούς, ὥστε μηκέτι ἀντίπαλον, ἀλλὰ πατρίδα τὴν Ῥώμην νομίζειν. τρίτον δὲ καταστὰς ἐπὶ τὴν αὐτὴν ἀρχὴν Οὐολούσκους τε ἠνάγκασε φίλους ἀντὶ πολεμίων γενέσθαι καὶ τὸ Ἑρνίκων ἔθνος μέγα τε καὶ ἄλκιμον καὶ πλησίον σφῶν κείμενον βλάπτειν τε καὶ ὠφελεῖν τὰ μέγιστα ἱκανώτατον ἑκούσιον ὑπηγάγετο. ταῦτά τε δὴ καὶ τὰ ὅμοια τούτοις διεξελθὼν ἠξίου τὸν δῆμον ἑαυτῷ προσέχειν τὸν νοῦν, ὡς παρὰ πάντας τοὺς ἄλλους πρόνοιαν ἔχοντι τοῦ κοινοῦ καὶ εἰς τὸν λοιπὸν ἔξοντι χρόνον. τελευτῶν δὲ τοῦ λόγου τοσαῦτα ἔφη καὶ τηλικαῦτα ἀγαθὰ ποιήσειν τὸν δῆμον, ὥστε
1678 ἅπαντας ὑπερβαλέσθαι τοὺς ἐπαινουμένους ἐπὶ τῷ

φιλεῖν καὶ σώζειν τὸ δημοτικόν· καὶ ταῦτα ἔφη ποιήσειν οὐκ εἰς μακράν. διαλύσας δὲ τὴν ἐκκλησίαν καὶ χρόνον οὐδὲ ἀκαριαῖον διαλιπὼν τῇ κατόπιν ἡμέρᾳ συνεκάλει τὴν βουλὴν εἰς τὸ συνέδριον ὀρθὴν καὶ περίφοβον οὖσαν ἐπὶ τοῖς ῥηθεῖσιν ὑπ' αὐτοῦ λόγοις· καὶ πρὶν ἑτέρου τινὸς ἄρξασθαι λόγου τὴν ἀπόρρητον ἐν τῷ δήμῳ φυλαχθεῖσαν γνώμην εἰς μέσον ἔφερεν, ἀξιῶν τοὺς βουλευτάς, ἐπειδὴ πολλὰ ὁ δῆμος τῇ πόλει χρήσιμος γέγονε τὰ μὲν εἰς τὴν ἐλευθερίαν τὰ δ' εἰς τὸ ἑτέρων ἄρχειν συλλαβόμενος, πρόνοιαν αὐτοῦ ποιήσασθαι, τήν τε χώραν αὐτῷ νείμαντας ὅση πολέμῳ κρατηθεῖσα λόγῳ μὲν ἦν δημοσία, ἔργῳ δὲ τῶν ἀναιδεστάτων τε καὶ σὺν οὐδενὶ δικαίῳ κατεσχηκότων πατρικίων, καὶ τῆς ὑπὸ Γέλωνος τοῦ Σικελίας τυράννου πεμφθείσης σφίσι δωρεᾶς σιτικῆς, ἣν προῖκα δέον ἅπαντας διανείμασθαι τοὺς πολίτας ὠνητὴν ἐλάμβανον οἱ πένητες, ἀποδοθῆναι τὰς τιμὰς τοῖς ὠνησαμένοις ἐξ ὧν εἶχε τὸ κοινὸν χρημάτων.

LXXI. Εὐθὺς μὲν οὖν ἔτι λέγοντος αὐτοῦ θόρυβος ἦν πολύς, ἀχθομένων ἁπάντων καὶ οὐχ ὑπο- 1679
μενόντων τὸν λόγον. ἐπειδὴ δὲ ἐπαύσατο, ὅ τε συνύπατος αὐτοῦ Οὐεργίνιος πολλὴν ἐποιήσατο κατηγορίαν ὡς στάσιν εἰσάγοντος, καὶ τῶν ἄλλων βουλευτῶν οἱ πρεσβύτατοί τε καὶ τιμιώτατοι, μάλιστα δὲ Ἄππιος Κλαύδιος· καὶ μέχρι πολλῆς ὥρας ἠγριωμένοι τε καὶ τὰ ἔσχατα κατ' ἀλλήλων ὀνείδη λέγοντες οὗτοι διετέλεσαν. ταῖς δὲ κατόπιν ἡμέραις ὁ μὲν Κάσσιος ἐκκλησίας συνεχεῖς ποιούμενος ἐξεδημαγώγει τὸ πλῆθος, καὶ τοὺς ὑπὲρ τῆς κληρουχίας λόγους εἰσέφερε, καὶ πολὺς ἦν ἐν ταῖς κατηγορίαις τῶν ἀντιπραττόντων. ὁ δ' Οὐεργίνιος τὴν βουλὴν ὁση-

μέραι συνάγων μετὰ κοινῆς γνώμης τῶν πατρικίων ἀντιπαρεσκευάζετο φυλακάς τε καὶ κωλύσεις νομίμους. καὶ ἦν στῖφος ἑκατέρῳ τῶν παρακολουθούν-
1680 των τε καὶ φυλακὴν τῷ σώματι παρεχόντων πολύ· τὸ μὲν ἄπορον καὶ ῥυπαρὸν καὶ πάντα τολμᾶν πρόχειρον ὑπὸ τῷ Κασσίῳ τεταγμένον, τὸ δ' εὐγενέστατόν τε καὶ καθαρώτατον ὑπὸ τῷ Οὐεργινίῳ [τιθέμενον]. τέως μὲν οὖν τὸ χεῖρον ἐν ταῖς ἐκκλησίαις ἐπεκράτει μακρῷ θατέρου προέχον, ἔπειτα ἰσόρροπον ἐγένετο προσνειμάντων ἑαυτοὺς τῶν δημάρχων τῇ κρείττονι μοίρᾳ· τάχα μὲν καὶ διὰ τὸ μὴ [ἐκείνοις] δοκεῖν ἄμεινον εἶναι τῇ πόλει δεκασμοῖς τε ἀργυρίου καὶ διανομαῖς τῶν δημοσίων διαφθειρόμενον τὸ πλῆθος ἀργὸν καὶ πονηρὸν εἶναι· τάχα δὲ καὶ διὰ τὸν φθόνον, ὅτι τῆς φιλανθρωπίας ταύτης οὐκ αὐτοὶ ἦρξαν οἱ τοῦ δήμου προεστηκότες ἀλλ' ἕτερος· οὐθὲν δὲ κωλύει καὶ διὰ τοῦτο τὸ δέος, ὃ πρὸς τὴν αὔξησιν τοῦ ἀνδρὸς ἐλάμβανον μείζονα γενομένην ἢ τῇ πόλει συνέφερεν. ἀντέλεγον οὖν ἤδη κατὰ κράτος ἐν ταῖς ἐκκλησίαις οὗτοι πρὸς τοὺς εἰσφερομένους ὑπὸ τοῦ Κασσίου νόμους, διδάσκοντες τὸν δῆμον, ὡς οὐκ εἴη δίκαιον ἃ διὰ πολλῶν ἐκτήσατο
1681 πολέμων, ταῦτα μὴ Ῥωμαίους νείμασθαι μόνους, ἀλλὰ καὶ Λατίνους αὐτοῖς ἰσομοιρεῖν τοὺς μὴ παραγενομένους τοῖς πολέμοις, καὶ τοὺς νεωστὶ προσελθόντας πρὸς τὴν φιλίαν Ἕρνικας, οἷς ἀγαπητὸν ἦν πολέμῳ προσαχθεῖσι τὸ μὴ τὴν ἑαυτῶν ἀφαιρεθῆναι χώραν. ὁ δὲ δῆμος ἀκούων τοτὲ μὲν τοῖς τῶν δημάρχων προσετίθετο λόγοις ἐνθυμούμενος, ὅτι μικρόν τι καὶ οὐκ ἄξιον ἔσται λόγου τὸ ἐκ τῆς δημοσίας γῆς ἐσόμενον ἑκάστῳ λάχος, εἰ μετὰ Ἑρνίκων τε καὶ Λατίνων αὐτὴν νεμήσονται· τοτὲ δὲ ὑπὸ τοῦ Κασσίου

*μετεπείθετο δημαγωγοῦντος, ὡς προδιδόντων αὐτοὺς
τοῖς πατρικίοις τῶν δημάρχων καὶ πρόφασιν ποιου-
μένων τῆς κωλύσεως εὐπρεπῆ τὴν Ἑρνίκων τε καὶ
Λατίνων ἰσομοιρίαν, ἣν αὐτὸς ἔφη νόμῳ περιλαβεῖν* 1682
*ἰσχύος τῶν πενήτων ἕνεκα καὶ εἴ τις ἀφαιρεῖσθαί
ποτε αὐτοὺς ἀξιώσαι τὰ δοθέντα κωλύσεως, κρεῖττον
ἡγούμενος εἶναι καὶ ἀσφαλέστερον τοῖς πολλοῖς μικρὰ
λαβοῦσιν ὁμοίως ἔχειν, ἢ πολλὰ ἐλπίσασιν ἁπάντων
ἀποτυχεῖν.*

LXXII. *Τούτοις δὴ τοῖς λόγοις τοῦ Κασσίου θα-
μινὰ μεταπείθοντος ἐν ταῖς ἐκκλησίαις τὸν ὄχλον,
παρελθὼν εἷς τῶν δημάρχων, Γάϊος Ῥαβολήιος ἀνὴρ
οὐκ ἄφρων, τήν τε διχοστασίαν τῶν ὑπάτων ὑπέσχετο
παύσειν οὐκ εἰς μακράν, καὶ τῷ δήμῳ ποιήσειν φα-
νερὸν ὅ τι χρὴ ποιεῖν. ἐπισημασίας δὲ γενομένης
αὐτῷ μεγάλης καὶ μετὰ τοῦτο σιωπῆς· Οὐχὶ ταῦτα,
εἶπεν, ὦ Κάσσιε, καὶ σὺ Οὐεργίνιε, τὰ κεφάλαιά ἐστι* 1683
*τοῦ νόμου; ἓν μὲν εἰ χρὴ τὴν δημοσίαν γῆν κατ᾽
ἄνδρα διανεμηθῆναι· ἕτερον δὲ εἰ χρὴ καὶ Λατίνους
καὶ Ἕρνικας μέρος αὐτῆς λαβεῖν. ὁμολογησάντων δὲ
αὐτῶν· Εἶεν δή· σὺ μέν, εἶπεν, ὦ Κάσσιε, ἀμφό-
τερα ταῦτα ἐπιψηφίζειν ἀξιοῖς τὸν δῆμον· σὺ δὲ
δὴ πρὸς θεῶν, ὦ Οὐεργίνιε, λέξον ἡμῖν, πότερα θά-
τερον ἀκυροῖς τῆς Κασσίου γνώμης μέρος τὸ κατὰ
τοὺς συμμάχους οὐκ οἰόμενος δεῖν ἰσομοίρους ἡμῖν
Ἕρνικάς τε καὶ Λατίνους ποιεῖν, ἢ καὶ θάτερον
ἀκυροῖς ἀξιῶν οὐδὲ ἡμῖν αὐτοῖς διανέμειν τὰ κοινά;
ταυτὶ γὰρ ἀπόκριναί μοι μηθὲν ἀποκρυψάμενος. εἰ-
πόντος δὲ τοῦ Οὐεργινίου· Τῇ Λατίνων τε καὶ Ἑρ-
νίκων ἀντιλέγειν ἰσομοιρίᾳ, τὸ δὲ κατὰ τοὺς πολίτας
εἰ πᾶσι δόξειε διανέμεσθαι συγχωρεῖν, ἐπιστρέψας
ὁ δήμαρχος εἰς τὸν ὄχλον εἶπεν· Ἐπεὶ τοίνυν τὸ μὲν*

ἕτερον τῆς γνώμης μέρος ἀμφοτέροις τοῖς ὑπάτοις συνδοκεῖ, τὸ δ' ἕτερον ἀντιλέγεται πρὸς θατέρου, ἰσότιμοι δὲ ἀμφότεροι, καὶ οὐχ οἷόν τε βιάσασθαι θατέρῳ τὸν ἕτερον, ὃ μὲν δίδοται παρ' ἀμφοτέρων ἤδη λάβωμεν, ὑπὲρ οὗ δὲ ἀμφισβητοῦσιν ἀναβαλώμεθα. ἐπισημήναντος δὲ τοῦ πλήθους ὡς τὰ κράτιστα ὑποθεμένῳ καὶ καταλύειν ἐκ τοῦ νόμου τὸ ποιοῦν διχοστασίαν μέρος ἀξιοῦντος, ἀπορῶν ὅ τι
1684 χρὴ πράττειν ὁ Κάσσιος, καὶ οὔτε ἀναθέσθαι τὴν γνώμην προαιρούμενος οὔτε μένειν ἐπ' αὐτῆς ἀντιπραττόντων τῶν δημάρχων δυνάμενος, τότε μὲν διέλυσε τὴν ἐκκλησίαν, ταῖς δὲ ἑξῆς ἡμέραις ἀρρωστίαν σκηπτόμενος οὐκέτι κατέβαινεν εἰς τὴν ἀγοράν, ἀλλ' ὑπομένων ἔνδον ἐπραγματεύετο βίᾳ καὶ χειροκρασίᾳ κυρῶσαι τὸν νόμον· καὶ μετεπέμπετο Λατίνων τε καὶ Ἑρνίκων ὅσους ἐδύνατο πλείστους ἐπὶ τὴν ψηφοφορίαν. οἱ δὲ συνήεσαν ἀθρόοι, καὶ δι' ὀλίγου μεστὴ ξένων ἦν ἡ πόλις. ταῦτα μαθὼν ὁ Οὐεργίνιος κηρύττειν ἐκέλευσε κατὰ τοὺς στενωποὺς ἀπιέναι τοὺς μὴ κατοικοῦντας ἐν τῇ πόλει, χρόνον ὁρίσας οὐ πολύν. ὁ δὲ Κάσσιος τἀναντία ἐκέλευσε κηρύττειν παραμένειν τοὺς μετέχοντας τῆς ἰσοπολιτείας, ἕως ἂν ἐπικυρωθῇ ὁ νόμος.

LXXIII. Ὡς δ' οὐδὲν ἐγίνετο πέρας, δείσαντες οἱ πατρίκιοι, μὴ ψήφων τε ἁρπαγαὶ καὶ χειρῶν ἐπιβολαὶ γένωνται καὶ ἄλλα ὅσα φιλεῖ βίαια συμβαίνειν
1685 ἐν ταῖς στασιαζούσαις ἐκκλησίαις εἰσφερομένου τοῦ νόμου, συνῆλθον εἰς τὸ συνέδριον ὡς ὑπὲρ ἁπάντων ἅπαξ βουλευσόμενοι. Ἄππιος μὲν οὖν πρῶτος ἐρωτηθεὶς γνώμην οὐκ εἴα συγχωρεῖν τῷ δήμῳ τὴν διανομὴν διδάσκων, ὡς χαλεπὸς ἔσται καὶ ἀλυσιτελὴς σύνοικος ὄχλος ἀργὸς ἐθισθεὶς τὰ δημόσια λιχνεύειν,

καὶ οὐθὲν ἐάσει ποτὲ τῶν κοινῶν οὔτε κτημάτων οὔτε
χρημάτων ἔτι κοινὸν μένειν· αἰσχύνης τε ἄξιον πρᾶγμα
εἶναι λέγων, εἰ Κασσίου κατηγοροῦντες ὡς πονηρὰ καὶ
ἀσύμφορα πολιτευομένου καὶ τὸν δῆμον διαφθείρον-
τος, ἔπειτ' αὐτοὶ κοινῇ γνώμῃ ταὐτ' ἐπικυρώσουσιν
ὡς δίκαια καὶ συμφέροντα· ἐνθυμεῖσθαί τε αὐτοὺς
ἀξιῶν, ὡς οὐδ' ἡ χάρις ἡ παρὰ τῶν πενήτων εἰ τὰ
κοινὰ διανείμαιντο τοῖς συγχωρήσασι καὶ ἐπιψηφισα-
μένοις ὑπάρχει, ἀλλ' ἑνὶ τῷ προθέντι τὴν γνώμην
Κασσίῳ καὶ δόξαντι ἠναγκακέναι τὴν βουλὴν ἄκου-
σαν ἐπικυρῶσαι. προειπὼν δὴ ταῦτα καὶ παραπλήσια
τούτοις ἕτερα τελευτῶν τάδε συνεβούλευσεν· ἄνδρας
ἐκ τῶν ἐντιμοτάτων βουλευτῶν ἑλέσθαι, οἵτινες ἐπελ- 1686
θόντες τὴν δημοσίαν γῆν ἀφοριοῦσι, καὶ εἴ τινα ἐξ
αὐτῆς κλέπτοντες ἢ βιαζόμενοί τινες ἰδιῶται κατα-
νέμουσιν ἢ ἐπεργάζονται διαγνόντες ἀποδώσουσι τῷ
δημοσίῳ· τὴν δὲ ὁρισθεῖσαν ὑπ' ἐκείνων γῆν διαι-
ρεθεῖσαν εἰς κλήρους ὅσους δή τινας καὶ στήλαις
εὐκόσμοις διαγραφεῖσαν τὴν μὲν ἀπεμποληθῆναι παρ-
ῄνει καὶ μάλιστα περὶ ἧς ἀμφίλογόν τι πρὸς ἰδιώ-
τας ἦν, ὥστε τοῖς ὠνησαμένοις εἶναι πρὸς τοὺς ἀντι-
ποιησομένους ὑπὲρ αὐτῶν κρίσεις, τὴν δὲ πενταετῆ
μισθοῦν χρόνον· τὸ δὲ προσιὸν ἐκ τῶν μισθώσεων
ἀργύριον εἰς τοὺς ὀψωνιασμοὺς τῶν στρατευομένων
ἀναλοῦσθαι καὶ εἰς τὰς μισθώσεις ὧν οἱ πόλεμοι
χορηγιῶν δέονται· Νῦν μὲν γάρ, ἔφη, ὁ φθόνος τῶν
πενήτων ὁ πρὸς τοὺς πλουσίους, ὅσοι σφετερισάμενοι
τὰ κοινὰ διακατέχουσι, δίκαιός ἐστι· καὶ οὐθὲν θαυ-
μαστόν, εἰ τὰ κοινὰ πάντας διανείμασθαι μᾶλλον 1687
ἀξιοῦσιν, ἢ τοὺς ἀναιδεστάτους τε καὶ ὀλίγους κατέ-
χειν. ἐὰν δὲ ἀφισταμένους αὐτῆς ὁρῶσι τοὺς νῦν
καρπουμένους καὶ τὰ κοινὰ ὄντως κοινὰ γινόμενα,

παύσονται φθονοῦντες ἡμῖν, τήν τε ἐπιθυμίαν τῆς κατ' ἄνδρα διανομῆς τῶν ἀγρῶν ἐπανήσουσι μαθόντες, ὅτι λυσιτελεστέρα τῆς μικρᾶς ἑκάστῳ μερίδος, ἡ κοινὴ μετὰ πάντων ἔσται κτῆσις. διδάσκομεν γὰρ αὐτούς, ἔλεγεν, ὅσον τὸ διάφορον, καὶ ὡς εἷς μὲν ἕκαστος τῶν πενήτων γήδιον οὐ μέγα λαβὼν καὶ εἰ τύχοι γείτονας ὀχληροὺς ἔχων οὔτε [γὰρ] αὐτὸς ἱκανὸς ἔσται τοῦτο γεωργεῖν δι' ἀπορίαν, οὔτε τὸν μισθωσόμενον ὅτι μὴ τὸν γείτονα εὑρήσει· εἰ δὲ μεγάλοι κλῆροι ποικίλας τε καὶ ἀξιολόγους ἔχοντες γεωργοῖς ἐργασίας ὑπὸ τοῦ κοινοῦ μισθοῖντο, πολλὰς οἴσουσι προσόδους· καὶ ὅτι κρεῖττον αὐτοῖς ἐστιν, ὅταν ἐξίωσιν ἐπὶ τοὺς πολέμους ἐκ τοῦ δημοσίου ταμιείου τὸν ἐπισιτισμόν τε καὶ ὀψωνιασμὸν λαμβάνειν,
1688 ἢ ἐκ τῶν ἰδίων οἴκων εἰς τὸ ταμιεῖον ἑκάστου τεθλιμμένων ἔστιν ὅτε τῶν βίων καὶ ἔτι μᾶλλον ἐν τῷ συμπορίζειν τὸ ἀργύριον ἐπιβαρησομένων.

LXXIIII. Ταύτην εἰσηγησαμένου τὴν γνώμην Ἀππίου καὶ σφόδρα δόξαντος εὐδοκιμεῖν, δεύτερος ἐρωτηθεὶς Αὖλος Σεμπρώνιος Ἀτρατῖνος ἔλεξεν· Ἄππιον μὲν οὐ νῦν ἔχω πρῶτον ἐπαινεῖν, ὡς φρονῆσαί τε ἱκανώτατον πρὸ πολλοῦ τὰ μέλλοντα καὶ γνώμας τὰς καλλίστας τε καὶ ὠφελιμωτάτας ἀποδεικνύμενον βέβαιόν τε καὶ ἀμετακίνητον ἐν τοῖς κριθεῖσι καὶ οὔτε φόβῳ εἴκοντα οὔτε χάρισιν ὑποκατακλινόμενον. ἀεὶ γὰρ ἐπαινῶν αὐτὸν καὶ θαυμάζων διατελῶ τοῦ τε φρονίμου καὶ τῆς γενναιότητος ἣν παρὰ τὰ δεινὰ ἔχει. γνώμην τε οὐχ ἑτέραν ἀλλὰ καὶ αὐτὸς ταύτην ἀποδείκνυμαι, μικρὰ ἔτι προσθεὶς
1689 αὐτῇ, ἅ μοι παραλιπεῖν Ἄππιος ἐδόκει. Ἕρνικας μὲν γὰρ καὶ Λατίνους, οἷς νεωστὶ δεδώκαμεν τὴν ἰσοπολιτείαν, οὐδ' αὐτὸς οἶμαι δεῖν κληρουχεῖν τὰ ἡμέτερα.

οὐ γὰρ ἐξ οὗ προσῆλθον εἰς τὴν φιλίαν ἡμῖν ταύτην τὴν γῆν κτησάμενοι ἔχομεν, ἀλλὰ παλαίτερον ἔτι τοῖς ἑαυτῶν κινδύνοις οὐθενὸς ἄλλου προσωφελήσαντος ἀφελόμενοι τοὺς ἐχθρούς. ἀποκρινώμεθά τε αὐτοῖς, ὅτι τὰς μὲν πρότερον ὑπαρχούσας ἡμῖν κτήσεις, ὅσας ἕκαστοι εἴχομεν ὅτε τὴν φιλίαν συνετιθέμεθα, ἰδίας τε καὶ ἀναφαιρέτους ἑκάστοις δεῖ μένειν, ὅσων δ' ἂν ἀφ' οὗ τὰς συνθήκας ἐποιησάμεθα κοινῇ στρατεύσαντες ἐκ πολέμου κύριοι γενώμεθα, τούτων ὑπάρξει τὸ ἐπιβάλλον ἑκάστοις λάχος. ταῦτα γὰρ οὔτε τοῖς συμμάχοις ὡς ἀδικουμένοις ὀργῆς παρέξει δικαίας προφάσεις, οὔτε τῷ δήμῳ δέος, μὴ δόξῃ τὰ κερδαλεώτερα πρὸ τῶν εὐπρεπεστέρων αἱρεῖσθαι. τῇ τε αἱρέσει τῶν ἀνδρῶν, οὓς Ἄππιος ἠξίου ὁριστὰς γενέσθαι τῆς δημοσίας γῆς, πάνυ εὐδοκῶ. πολλὴν γὰρ ἡμῖν τοῦτο οἴσει παρρησίαν πρὸς τοὺς δημοτικούς, ἐπεὶ νῦν γε ἄχθονται κατ' ἀμφότερα, καὶ ὅτι 1690
αὐτοὶ τῶν δημοσίων οὐθὲν ἀπολαύουσι κτημάτων, καὶ ὅτι ἐξ ἡμῶν τινες οὐ δικαίως αὐτὰ καρποῦνται. ἐὰν δὲ δημοσιωθέντα ἴδωσι καὶ τὰς ἀπ' αὐτῶν προσόδους εἰς τὰ κοινὰ καὶ ἀναγκαῖα δαπανωμένας, οὐδὲν ὑπολήψονται σφίσι διαφέρειν τῆς γῆς ἢ τῶν ἐξ αὐτῆς καρπῶν μετέχειν. ἐῶ γὰρ λέγειν, ὅτι τῶν ἀπόρων ἐνίους μᾶλλον εὐφραίνουσιν αἱ ἀλλότριαι βλάβαι τῶν ἰδίων ὠφελειῶν. οὐ μὴν ἀποχρῆν γε οἴομαι τούτων ἑκάτερον ἐν τῷ ψηφίσματι γραφέν, ἀλλὰ καὶ δι' ἄλλης τινὸς οἴομαι δεῖν θεραπείας μετρίας τὸν δῆμον οἰκειώσασθαί τε καὶ ἀναλαβεῖν· ἣν μετὰ μικρὸν ἐρῶ, τὴν αἰτίαν πρῶτον ὑμῖν ἀποδειξάμενος, μᾶλλον δὲ τὴν ἀνάγκην, δι' ἣν καὶ τοῦτο πρακτέον ἡμῖν.

LXXV. Ἴστε δήπου τοὺς ἐν τῇ ἐκκλησίᾳ ῥη-

θέντας ὑπὸ τοῦ δημάρχου λόγους, ὅτε ἤρετο τῶν
ὑπάτων τὸν ἕτερον τοῦτον Οὐεργίνιον, ἥντινα γνώ-
1691 μην ἔχει περὶ τῆς κληρουχίας, πότερα τοῖς μὲν πο-
λίταις συγχωρεῖ διανέμειν τὰ δημόσια, τοῖς δὲ συμ-
μάχοις οὐκ ἐᾷ, ἢ τῶν κοινῶν τῶν ἡμετέρων οὐδ'
ἡμῖν συγχωρεῖ μέρος λαγχάνειν. καὶ οὗτος ὡμολό-
γησε τὸ καθ' ἡμᾶς μέρος οὐ κωλύειν τῆς κληρουχίας,
ἐὰν πᾶσι ταῦτα κράτιστα εἶναι δοκῇ· καὶ ἡ συγχώ-
ρησις ἥδε τούς τε δημάρχους ἐποίησεν ἡμῖν συνα-
γωνιστὰς καὶ τὸν δῆμον ἐπιεικέστερον. τί οὖν μα-
θόντες ἃ τότε συνεχωρήσαμεν νῦν ἀναθησόμεθα;
ἢ τί πλέον ἡμῖν ἔσται τὰ γενναῖα καὶ τὰ καλὰ πολι-
τεύματα καὶ ἄξια τῆς ἡγεμονίας πολιτευομένοις, ἐὰν
μὴ πείθωμεν τοὺς χρησομένους; οὐ πείσομεν δέ,
καὶ τοῦτο οὐδεὶς ὑμῶν ἀγνοεῖ. χαλεπώτεροι γὰρ ἂν
1692 τῶν μὴ τυγχανόντων ἀπαντήσειαν οἱ ψευσθέντες
τῆς ἐλπίδος καὶ τὰ ὁμολογηθέντα μὴ κομιζόμενοι.
οἰχήσεται δὴ πάλιν φέρων αὐτοὺς ὁ τὰ πρὸς ἡδονὴν
πολιτευόμενος, καὶ οὐδὲ τῶν δημάρχων τις ἔτι μεθ'
ἡμῶν στήσεται. τί οὖν ὑμῖν πράττειν παραινῶ καὶ
τί προστίθημι τῇ Ἀππίου γνώμῃ μάθετε, ἀλλὰ μὴ
προεξαναστῆτε μηδὲ θορυβήσητε πρὶν ἅπαντα ἀκού-
σητε ἃ λέγω. τοῖς αἱρεθησομένοις ἐπὶ τὴν ἐξέτασιν
τῆς χώρας καὶ περιορισμὸν εἴτε δέκα ἀνδράσιν εἴθ'
ὁσοισδήποτε ἐπιτρέψατε διαγνῶναι, τίνα τε αὐτῆς
δεῖ καὶ ὁπόσην κοινὴν εἶναι πάντων καὶ κατὰ πεν-
ταετίαν μισθουμένην αὔξειν τὰς τοῦ ταμιείου προσ-
όδους· ὁπόσην τ' αὖ καὶ ἥντινα τοῖς δημόταις ἡμῶν
διαιρεθῆναι· ἣν δ' ἂν ἐκεῖνοι κληροῦχον ἀποδείξωσι
γῆν, ὑμᾶς διαγνόντας εἴτε ἅπασιν εἴτε οἷς δὴ οὐκέτ'
1693 ἔστι κλῆρος εἴτε τοῖς ἐλάχιστον ἔχουσι τίμημα εἴθ'
ὅπως ἂν βούλησθε κατανεῖμαι· τοὺς δὲ ὁριστὰς

αὐτῆς ἄνδρας καὶ τὸ ὑμέτερον ψήφισμα ὃ περὶ τῆς κληρουχίας ἐξοίσετε καὶ τἆλλα ὅσα δεῖ γενέσθαι, ἐπειδὴ βραχὺς ὁ λειπόμενός ἐστι τῆς ἀρχῆς τοῖς ὑπάτοις χρόνος, τοὺς εἰσιόντας ὑπάτους ὡς ἂν αὐτοῖς κράτιστα δοκῇ ἕξειν ἐπιτελέσαι. οὔτε γὰρ ὀλίγων τηλικαῦτα πράγματα δεῖται χρόνων, οὔτε ἡ νῦν στασιάζουσα ἀρχὴ φρονιμώτερον ἂν καταμάθοι τὰ συμφέροντα τῆς μετ' αὐτὴν ἀποδειχθησομένης, ἐὰν ἐκείνη γε ὥσπερ ἐλπίζομεν ὁμονοῇ. χρήσιμον δὲ πρᾶγμα ἐν πολλοῖς καὶ ἥκιστα σφαλερὸν ἀναβολή, καὶ πολλὰ ὁ χρόνος ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ μετατίθησι· καὶ τὸ μὴ στασιάζον ἐν τοῖς προεστηκόσι τῶν κοινῶν ἁπάντων ἀγαθῶν ἐν ταῖς πόλεσιν αἴτιον. ἐγὼ μὲν δὴ ταύτην ἀποφαίνομαι γνώμην· εἰ δέ τις ἄλλο κρεῖττον εἰσηγεῖται λεγέτω.

LXXVI. Παυσαμένου δὲ αὐτοῦ πολὺς ἔπαινος 1694
ἐκ τῶν παρόντων ἐγένετο, καὶ οὐθεὶς τῶν μετ' ἐκεῖνον ἐρωτηθέντων ἑτέραν γνώμην ἀποφαίνεται· γράφεται δὴ μετὰ ταῦτα τὸ τῆς βουλῆς δόγμα τοιόνδε· ἄνδρας ἐκ τῶν ὑπατικῶν ἀποδειχθῆναι δέκα τοὺς πρεσβυτάτους, οἵτινες ὁρίσαντες τὴν δημοσίαν χώραν ἀποδείξουσιν, ὅσην τε δεῖ μισθοῦσθαι καὶ ὅσην τῷ δήμῳ διαιρεθῆναι· τοῖς δὲ ἰσοπολίταις τε καὶ συμμάχοις, ἐάν τινα ὕστερον ἐπικτήσωνται κοινῇ στρατευσάμενοι, τὸ ἐπιβάλλον ἑκάστοις κατὰ τὰς ὁμολογίας ὑπάρχειν μέρος· τὴν δὲ αἵρεσιν τῶν ἀνδρῶν καὶ τὴν διανομὴν τῶν κλήρων καὶ τἆλλα ὅσα δεῖ γενέσθαι τοὺς εἰσιόντας ἐπιτελέσαι ὑπάτους. τοῦτο τὸ δόγμα εἰς τὸν δῆμον εἰσενεχθὲν τόν τε Κάσσιον ἔπαυσε τῆς δημαγωγίας, καὶ τὴν ἀναρριπιζομένην ἐκ τῶν πενήτων στάσιν οὐκ εἴασε περαιτέρω προελθεῖν.

LXXVII. Τῷ δ' ἑξῆς ἐνιαυτῷ τῆς ἑβδομηκοστῆς

καὶ τετάρτης ὀλυμπιάδος ἐνεστώσης, ἣν ἐνίκα στάδιον Ἄστυλος Συρακούσιος, Ἀθήνησι δὲ ἄρχων ἦν
1695 Λεώστρατος, Κοΐντου Φαβίου καὶ Σερουΐου Κορνηλίου τὴν ὑπατείαν παρειληφότων, ἄνδρες ἐκ τῶν πατρικίων νέοι μὲν ἔτι τὴν ἡλικίαν, ἐπιφανέστατοι δὲ τῶν ἄλλων κατά γε ἀξιώσεις προγόνων, καὶ διὰ τὰς ἑταιρίας τε καὶ πλούτους μέγα δυνάμενοι, καὶ ὡς νέοι τὰ πολιτικὰ πράττειν οὐδενὸς τῶν ἐν ἀκμῇ χείρους, Καίσων Φάβιος, ἀδελφὸς τοῦ τότε ὑπατεύοντος, καὶ Λεύκιος Οὐαλέριος Ποπλικόλας, ἀδελφὸς τοῦ καταλύσαντος τοὺς βασιλεῖς, τὴν ταμιευτικὴν ἔχοντες ἐξουσίαν κατὰ τὸν αὐτὸν χρόνον, καὶ διὰ τοῦτο ἐκκλησίαν συνάγειν ὄντες κύριοι, τὸν ὑπατεύσαντα τῷ πρόσθ' ἐνιαυτῷ Σπόριον Κάσσιον καὶ τολμήσαντα τοὺς περὶ τῆς διανομῆς εἰσηγήσασθαι νόμους εἰσήγγειλαν εἰς τὸν δῆμον ἐπὶ τυραννίδος αἰτίᾳ· καὶ προειπόντες ἡμέραν ῥητὴν ἐκάλουν αὐτὸν ὡς ἐπὶ τοῦ
1696 δήμου τὴν δίκην ἀπολογησόμενον. ὄχλου δὲ πλείστου συναχθέντος εἰς τὴν ἀποδειχθεῖσαν ἡμέραν, συγκαλέσαντες εἰς ἐκκλησίαν τὸ πλῆθος τά τε ἐμφανῆ τοῦ ἀνδρὸς ἔργα ὡς ἐπ' οὐδενὶ χρηστῷ γενόμενα διεξῄεσαν· ὅτι Λατίνοις μὲν πρῶτον, οἷς ἀπέχρη πολιτείας κοινῆς ἀξιωθῆναι μέγα εὐτύχημα ἡγουμένοις εἰ καὶ ταύτης τύχοιεν, οὐ μόνον ἣν ᾔτουν πολιτείαν ὕπατος ὢν ἐχαρίσατο, ἀλλ' ἔτι καὶ τῶν ἐκ τοῦ πολέμου λαφύρων ἐὰν κοινῇ γένηται στρατεία τὴν τρίτην ἐψηφίσατο δίδοσθαι· ἔπειτα Ἕρνικας, οὓς πολέμῳ χειρωθέντας ἀγαπᾶν ἐχρῆν εἰ μὴ καὶ τῆς αὐτῶν χώρας ἀφαιρέσει τινὶ ζημιωθεῖεν, φίλους μὲν ἀντὶ ὑπηκόων ἐποίησε, πολίτας δὲ ἀντὶ ὑποτελῶν, γῆς τε καὶ λείας, ἣν ἂν ἐκ παντὸς κτήσωνται, τὴν ἑτέραν ἔταξε λαμβάνειν τρίτην μερίδα. ὥστε μερι-

ζομένων εἰς τρεῖς κλήρους τῶν λαφύρων τοὺς μὲν
ὑπηκόους τε καὶ ἐπήλυδας διμοιρίας λαμβάνειν, τοὺς
δ' αὐθιγενεῖς καὶ ἡγεμόνας τρίτην μερίδα. ἐκ δὲ 1697
τούτου δυεῖν τῶν ἀτοπωτάτων θάτερον ἐπεδείκνυ-
σαν αὐτοῖς συμβησόμενον, ἐάν τινας ἑτέρους διὰ
πολλὰς καὶ μεγάλας εὐεργεσίας προέλωνται ταῖς αὐ-
ταῖς τιμῆσαι δωρεαῖς, αἷς Λατίνους τε ἐτίμησαν καὶ
τοὺς μηδ' ὁτιοῦν ἀγαθὸν ἀποδειξαμένους Ἕρνικας.
μιᾶς γὰρ καταλειπομένης αὐτοῖς τρίτης μερίδος, ἢ
οὐχ ἕξειν ὅτι δώσουσιν ἐκείνοις μέρος ἢ τὰ ὅμοια
ψηφισαμένους μηδὲν ἑαυτοῖς καταλείψειν.

LXXVIII. Πρὸς δὲ τούτοις διεξῄεσαν, ὅτι δη-
μεῦσαι τὰ κοινὰ τῆς πόλεως ἐπιβαλόμενος οὔτε τῆς
βουλῆς ψηφισαμένης οὔτε τῷ συνυπάτῳ δοκοῦν, βίᾳ
κυροῦν ἐμέλλησε τὸν νόμον, ὃς οὐ καθ' ἓν τοῦτο
μόνον ἦν ἀσύμφορός τε καὶ ἄδικος, ὅτι προβουλεῦ-
σαι δέον τὸ συνέδριον καὶ εἰ δόξειεν ἐκείνῳ κοινὴν
ἁπάντων εἶναι τῶν ἐν τέλει τὴν φιλανθρωπίαν ἑνὸς
ἀνδρὸς ἐποίει τὴν χάριν· ἀλλὰ καὶ κατ' ἐκεῖνο τὸ
πάντων σχετλιώτατον, ὅτι λόγῳ μὲν δόσις ἦν τοῖς
πολίταις τῆς δημοσίας χώρας, ἔργῳ δὲ ἀφαίρεσις,
Ῥωμαίων μὲν τῶν κτησαμένων αὐτὴν μίαν μοῖραν 1698
ληψομένων, Ἑρνίκων δὲ καὶ Λατίνων οἷς οὐθὲν αὐ-
τῆς μετῆν τὰς δύο· καὶ ὡς οὐδὲ τοῖς δημάρχοις
ἐναντιωθεῖσι καὶ παραλύειν ἐκ τοῦ νόμου θάτερον
ἀξιοῦσι μέρος τὸ κατὰ τὴν ἰσομοιρίαν τῶν ἐπηλύδων,
ἐπείσθη, ἀλλὰ καὶ δημάρχοις καὶ συνυπάτῳ καὶ
βουλῇ καὶ πᾶσι τοῖς ὑπὲρ τοῦ κοινοῦ τὰ κράτιστα
βουλευομένοις τἀναντία πράττων διετέλεσε. διεξελ-
θόντες δὲ ταῦτα, καὶ μάρτυρας αὐτῶν ἅπαντας
τοὺς πολίτας ποιησάμενοι, μετὰ τοῦτο ἤδη καὶ τὰς
ἀπορρήτους τῆς τυραννίδος παρείχοντο πίστεις, ὡς

χρήματά τε συνενέγκαιεν αὐτῷ Λατῖνοι καὶ Ἕρνικες καὶ ὅπλα παρασκευάσαιντο καὶ συμπορεύοιντο ὡς αὐτὸν οἱ θρασύτατοι τῶν ἐν ταῖς πόλεσι νέων ἀπόρρητά τε ποιούμενοι βουλευτήρια καὶ πολλὰ πρὸς τούτοις ἕτερα ὑπηρετοῦντες, καὶ παρείχοντο τοὺς τούτων μάρτυρας πολλοὺς μὲν ἀστούς, πολλοὺς δ' ἐκ τῶν ἄλλων συμμαχίδων πόλεων, οὔτε φαύλους
1699 οὔτε ἀφανεῖς. οἷς ἐπίστευσεν ὁ δῆμος, καὶ οὔτε λόγοις ἔτι ὑπαχθεὶς οὓς ὁ ἀνὴρ ἐκ πολλῆς παρασκευῆς συγκειμένους διέθετο, οὔτε οἴκτῳ ἐνδοὺς τριῶν μὲν αὐτῷ παίδων μεγάλην παρεχόντων εἰς ἔλεον ἐπικουρίαν, πολλῶν δ' ἄλλων συγγενῶν τε καὶ ἑταίρων συνολοφυρομένων, οὔτε τῶν κατὰ πολέμους ἔργων δι' οὓς ἐπὶ μήκιστον ἦλθε τιμῆς φειδὼ λαβών τινα, καταψηφίζεται τὴν δίκην. οὕτως τε ἄρα ἦν πικρὸς πρὸς τὸ τῆς τυραννίδος ὄνομα, ὥστε οὐδ' ἐν τῷ τιμήματι τῆς δίκης μετρίᾳ ὀργῇ ἐχρήσατο πρὸς αὐτόν, ἀλλὰ θανάτου ἐτίμησεν. εἰσῄει γὰρ αὐτὸν δέος, μὴ φυγὰς ἐλαθεὶς ἐκ τῆς πατρίδος ἀνὴρ στρατηγῆσαι πολέμους τῶν τότε δεινότατος, ὅμοια δράσαι Μαρκίῳ τά τε φίλια διαβάλλων καὶ τὰ ἐχθρὰ συνιστάς, καὶ πόλεμον ἄσπειστον ἐπάγοι τῇ πατρίδι. τοῦτο τὸ τέλος τῆς δίκης λαβούσης, ἀγαγόντες οἱ ταμίαι τὸν ἄνδρα ἐπὶ τὸν ὑπερκείμενον τῆς ἀγορᾶς κρημνόν, ἁπάντων ὁρώντων ἔρριψαν κατὰ
1700 τῆς πέτρας. αὕτη γὰρ ἦν τοῖς τότε Ῥωμαίοις ἐπιχώριος τῶν ἐπὶ θανάτῳ ἁλόντων ἡ κόλασις.

LXXVIIII. Ὁ μὲν οὖν πιθανώτερος τῶν παραδεδομένων ὑπὲρ τοῦ ἀνδρὸς λόγων τοιόσδε ἐστίν· δεῖ δὲ καὶ τὸν ἧσσον πιθανόν, ἐπειδὴ κἀκεῖνος πεπίστευται ὑπὸ πολλῶν καὶ ἐν γραφαῖς ἀξιοχρέοις φέρεται, μὴ παρελθεῖν. λέγεται δή τισιν, ὡς ἀδήλου

πᾶσιν οὔσης ἔτι τῆς ὑπ' αὐτοῦ συσκευαζομένης τυ-
ραννίδος, πρῶτος ὑποπτεύσας ὁ πατὴρ τοῦ Κασσίου
καὶ διὰ τῆς ἀκριβεστάτης βασάνου τὸ πρᾶγμα ἐξετά-
σας ἧκεν ἐπὶ τὴν βουλήν· ἔπειτα κελεύσας ἐξελθεῖν
τὸν υἱὸν μηνυτής τε καὶ κατήγορος αὐτοῦ ἐγένετο·
καταγνούσης δὲ καὶ τῆς βουλῆς, ἀγαγὼν αὐτὸν εἰς
τὴν οἰκίαν ἀπέκτεινε. τὸ μὲν οὖν πικρὸν καὶ ἀπαρ-
αίτητον τῆς τῶν πατέρων ὀργῆς εἰς τοὺς ἀδικοῦντας
υἱοὺς καὶ μάλιστα ἐν τοῖς τότε Ῥωμαίοις οὐδὲ ταύ-
την ἀπωθεῖται τὴν ἀπόφασιν· ἐπεὶ καὶ πρότερον
Βροῦτος ὁ τοὺς βασιλεῖς ἐκβαλὼν ἀμφοτέρους τοὺς
υἱοὺς ἐδικαίωσε κατὰ τὸν τῶν κακούργων νόμον 1701
ἀποθανεῖν, καὶ πελέκεσι τοὺς αὐχένας ἀπεκόπησαν,
ὅτι συμπράττειν τοῖς βασιλεῦσιν ἐδόκουν τὴν κάθο-
δον. καὶ μετὰ ταῦτα Μάλλιος, ὁ ἐν τῷ Γαλατικῷ
πολέμῳ στρατηγῶν, τὸν υἱὸν ἀριστεύοντα κατὰ πόλε-
μον τῆς μὲν ἀνδρείας ἕνεκα τοῖς ἀριστείοις στεφά-
νοις ἐκόσμησεν, ἀπείθειαν δὲ ἐπικαλῶν, ὅτι οὐκ ἐν
ᾧ ἐτάχθη φρουρίῳ ἔμεινεν, ἀλλὰ παρὰ τὴν ἐπιτα-
γὴν τοῦ ἡγεμόνος ἐξῆλθεν ἀγωνιούμενος, ὡς λειπο-
τάκτην ἀπέκτεινε. καὶ ἄλλοι πολλοὶ πατέρες, οἱ μὲν
ἐπὶ μείζοσιν αἰτίαις οἱ δ' ἐπ' ἐλάττοσιν, οὔτε φειδὼ
τῶν παίδων οὔτε ἔλεον ἔσχον. κατὰ μὲν δὴ τοῦτο
οὐκ ἀξιῶ, ὥσπερ ἔφην, προβεβλῆσθαι τὸν λόγον, ὡς
ἀπιθανόν· ἐκεῖνα δέ με ἀνθέλκει τεκμηρίων ὄντα 1702
οὔτ' ἐλάχιστα οὔτε ἀπίθανα, καὶ πρὸς τὴν ἑτέραν
ἄγει συγκατάθεσιν, ὅτι μετὰ τὸν θάνατον τοῦ Κασ-
σίου ἥ τε οἰκία κατεσκάφη, καὶ μέχρι τοῦδε ἀνεῖται
ὁ τόπος αὐτῆς αἴθριος ἔξω τοῦ νεὼ τῆς Γῆς, ὃν
ὑστέροις ἡ πόλις κατεσκεύασε χρόνοις ἐν μέρει τινὶ
αὐτῆς κατὰ τὴν ἐπὶ Καρρίνας φέρουσαν ὁδόν, καὶ
τὰ χρήματα αὐτοῦ τὸ κοινὸν ἀνέλαβεν· ἐξ ὧν ἀπαρ-

χὰς ἐν ἄλλοις τε ἱεροῖς ἀνέθηκε, καὶ δὴ καὶ τῇ Δή-
μητρι τοὺς χαλκέους ἀνδριάντας ἐπιγραφαῖς δηλοῦν-
τας ἀφ᾽ ὧν εἰσι χρημάτων ἀπαρχαί. εἰ δέ γε ὁ πατὴρ
1703 μηνυτής τε καὶ κατήγορος καὶ κολαστὴς αὐτοῦ ἐγέ-
νετο, οὔτ᾽ ἂν ἡ οἰκία αὐτοῦ κατεσκάφη οὔτε ἡ οὐσία
ἐδημεύθη. Ῥωμαίοις γὰρ οὐθὲν ἴδιόν ἐστι κτῆμα
ζώντων ἔτι τῶν πατέρων, ἀλλὰ καὶ τὰ χρήματα καὶ
τὰ σώματα τῶν παίδων ὅ τι βούλονται διατιθέναι
τοῖς πατράσιν ἀποδέδοται. ὥστε οὐκ ἂν δήπου τὴν
τοῦ πατρὸς οὐσίαν τοῦ μηνύσαντος τὴν τυραννίδα
ἐπὶ τοῖς τοῦ παιδὸς ἀδικήμασιν ἀφαιρεῖσθαι καὶ δη-
μεύειν ἡ πόλις ἠξίου. διὰ μὲν δὴ ταῦτα τῷ προτέρῳ
συγκατατίθεμαι τῶν λόγων μᾶλλον· ἔθηκα δὲ ἀμ-
φοτέρους ἵνα ἐξῇ τοῖς ἀναγνωσομένοις ὁποτέρῳ βού-
λονται τῶν λόγων προσέχειν.

LXXX. Ἐπιβαλλομένων δέ τινων καὶ τοὺς παῖ-
δας ἀποκτεῖναι τοῦ Κασσίου, δεινὸν τὸ ἔθος ἔδοξεν
εἶναι τῇ βουλῇ καὶ ἀσύμφορον· καὶ συνελθοῦσα
ἐψηφίσατο ἀφεῖσθαι τὰ μειράκια τῆς τιμωρίας καὶ
ἐπὶ πάσῃ ἀδείᾳ ζῆν, μήτε φυγῇ μήτε ἀτιμίᾳ μήτε
ἄλλῃ συμφορᾷ ζημιωθέντα. καὶ ἐξ ἐκείνου τὸ ἔθος
1704 τοῦτο Ῥωμαίοις ἐπιχώριον γέγονεν ἕως τῆς καθ᾽
ἡμᾶς διατηρούμενον ἡλικίας, ἀφεῖσθαι τιμωρίας ἁπά-
σης τοὺς παῖδας ὧν ἂν οἱ πατέρες ἀδικήσωσιν, ἐάν
τε τυράννων ὄντες υἱοὶ τύχωσιν, ἐάν τε πατροκτό-
νων, ἐάν τε προδοτῶν, ὃ μέγιστόν ἐστι παρ᾽ ἐκείνοις
ἀδίκημα. οἵ τε καταλῦσαι τὸ ἔθος τοῦτο ἐπιβαλό-
μενοι κατὰ τοὺς ἡμετέρους χρόνους μετὰ τὴν συντέ-
λειαν τοῦ Μαρσικοῦ τε καὶ ἐμφυλίου πολέμου, καὶ
τοὺς παῖδας τῶν ἐπικηρυχθέντων ἐπὶ Σύλλα πατέρων
ἀφελόμενοι τὸ μετιέναι τὰς πατρίους ἀρχὰς καὶ βου-
λῆς μετέχειν καθ᾽ ὃν ἐδυνάστευον αὐτοὶ χρόνον,

ἐπίφθονόν τε ἀνθρώποις καὶ νεμεσητὸν θεοῖς ἔργον
ἔδοξαν ἀποδείξασθαι. τοιγάρτοι δίκη μὲν ἐκείνοις
σὺν χρόνῳ τιμωρὸς οὐ μεμπτὴ παρηκολούθησε, δι'
ἣν ἐκ μεγίστου τέως αὐχήματος εἰς ταπεινότατον
πτῶμα κατήχθησαν, καὶ οὐδὲ γένος τὸ ἐξ αὐτῶν ὅτι
μὴ κατὰ γυναῖκας ἔτι λείπεται. τὸ δ' ἔθος εἰς τὸν
ἐξ ἀρχῆς κόσμον ὁ τούτους καθελὼν ἀνὴρ ἀποκατ-
έστησε. παρ' Ἕλλησι δὲ οὐχ οὕτως ἐνίοις ὁ νόμος 1705
ἔχει, ἀλλὰ τοὺς ἐκ τυράννων γενομένους οἱ μὲν συνα-
ποκτίννυσθαι τοῖς πατράσι δικαιοῦσιν, οἱ δ' ἀειφυ-
γίᾳ κολάζουσιν, ὥσπερ οὐκ ἐνδεχομένης τῆς φύσεως
χρηστοὺς παῖδας ἐκ πονηρῶν πατέρων ἢ κακοὺς ἐξ
ἀγαθῶν γενέσθαι. ἀλλ' ὑπὲρ μὲν τούτων εἴτε ὁ παρ'
Ἕλλησιν ἀμείνων νόμος εἴτε τὸ Ῥωμαίων ἔθος κρεῖττον,
ἀφίημι τῷ βουλομένῳ σκοπεῖν· ἐπάνειμι δὲ ἐπὶ τὰ ἑξῆς.

LXXXI. Μετὰ γὰρ τὸν τοῦ Κασσίου θάνατον
οἱ μὲν αὐξάνοντες τὴν ἀριστοκρατίαν θρασύτεροί τε
καὶ ὑπεροπτικώτεροι τῶν δημοτικῶν ἐγεγόνεσαν· οἱ
δ' ἐν ἀφανεῖ τε δόξῃ φερόμενοι καὶ βίῳ εἰς ταπεινὰ
συνεστάλησαν, καὶ ὡς ἄριστον ἀπολωλεκότες φύλακα
τῆς δημοτικῆς μερίδος πολλὴν ἄνοιαν ἑαυτῶν ἐπὶ τῇ
καταδίκῃ κατηγόρουν. τούτου δ' αἴτιον ἦν, ὅτι τὰ
δόξαντα τῇ βουλῇ περὶ τῆς κληρουχίας οὐκ ἔπραττον
οἱ ὕπατοι, δέον αὐτοὺς ἄνδρας τε ἀποδεῖξαι δέκα 1706
τοὺς ὁριοῦντας τὴν γῆν καὶ γνώμην εἰσηγήσασθαι
πόσην τε αὐτῆς καὶ τίσι δεήσει νεμηθῆναι. συνῄε-
σάν τε πολλοὶ κατὰ συστροφὰς περὶ τῆς ἀπάτης ἑκά-
στοτε διαλεγόμενοι, καὶ ἐν αἰτίᾳ τοὺς προτέρους εἶχον
δημάρχους, ὡς προδεδωκότας τὸ κοινόν· ἐκκλησίαι
τε συνεχεῖς ὑπὸ τῶν τότε δημάρχων ἐγίνοντο καὶ
ἀπαιτήσεις τῆς ὑποσχέσεως. ταῦτα συνιδόντες οἱ
ὕπατοι γνώμην ἐποιήσαντο πολέμων προφάσει τὸ

*παρακινοῦν ἐν τῇ πόλει μέρος καὶ ταραττόμενον κα-
ταστεῖλαι· ἔτυχε γὰρ ἐν τῷ αὐτῷ χρόνῳ ληστηρίοις
τε ὑπὸ τῶν πλησιοχώρων πόλεων καὶ καταδρομαῖς
τισιν ἡ γῆ βλαπτομένη. τιμωρίας μὲν δὴ τῶν ἀδι-
κούντων ἕνεκα προὔθεσαν τὰ τοῦ πολέμου σημεῖα,
καὶ τὰς δυνάμεις τῆς πόλεως κατέγραφον· οὐ προσ-
ιόντων δὲ τῇ καταγραφῇ τῶν ἀπόρων, ἀδύνατοι
ὄντες τὴν ἐκ τῶν νόμων ἀνάγκην τοῖς ἀπειθοῦσι
προσφέρειν· προειστήκεσαν γὰρ τοῦ πλήθους οἱ δήμ-*
1707 *αρχοι καὶ κωλύσειν ἔμελλον, εἴ τις ἐπιχειρήσειεν
ἢ τὰ σώματα τῶν ἐκλειπόντων τὴν στρατείαν ἄγειν
ἢ τὰ χρήματα φέρειν· ἀπειλαῖς χρησάμενοι πολλαῖς
ὡς οὐκ ἐπιτρέψοντες τοῖς ἀνασείουσι τὸ πλῆθος, λε-
ληθυῖαν ὑποψίαν κατέλιπον ὡς δικτάτορα ἀποδείξον-
τες, ὃς ἔμελλε καταλύσας τὰς ἄλλας ἀρχὰς τὴν
τυραννικὴν καὶ ἀνυπεύθυνον μόνος ἕξειν ἐξουσίαν.
ὡς δὲ ταύτην ἔλαβον τὴν ὑπόνοιαν οἱ δημοτικοί,
δείσαντες μὴ τὸν Ἄππιον ἀποδείξωσι πικρὸν ὄντα
καὶ χαλεπόν, πάντα πρὸ τούτου πάσχειν ὑπέμενον.*

LXXXII. *Ἐπεὶ δὲ κατεγράφη τὰ στρατεύματα,
παραλαβόντες οἱ ὕπατοι τὰς δυνάμεις ἐξήγαγον ἐπὶ
τοὺς πολεμίους. Κορνήλιος μὲν οὖν εἰς τὴν Οὐιεν-
τανῶν χώραν ἐμβαλὼν τὴν ἐγκαταληφθεῖσαν λείαν
ἐν αὐτῇ ἀπήλασε, καὶ μετὰ ταῦτα πρεσβευσαμένων
τῶν Οὐιεντανῶν τούς τε αἰχμαλώτους αὐτοῖς ἀπέ-
λυσε χρημάτων, καὶ ἀνοχὰς τοῦ πολέμου συνέθετο*
1708 *ἐνιαυσίους. Φάβιος δὲ τὴν ἑτέραν δύναμιν ἔχων εἰς
τὴν Αἰκανῶν γῆν ἐνέβαλεν· ἔπειτ᾽ ἐκεῖθεν εἰς τὴν
Οὐολούσκων. χρόνον μὲν οὖν τινα οὐ πολὺν ἠνέ-
σχοντο οἱ Οὐολοῦσκοι διαρπαζομένων αὐτοῖς καὶ κει-
ρομένων τῶν ἀγρῶν· ἔπειτα καταφρονήσαντες τῶν
Ῥωμαίων ὡς οὐ πολλῇ δυνάμει παρόντων, ἐξεβοή-*

θουν ἐκ τῆς Ἀντιατῶν χώρας τὰ ὅπλα ἁρπάσαντες
ἀθρόοι, ταχύτερα μᾶλλον ἢ ἀσφαλέστερα βουλευσά-
μενοι. εἰ μὲν οὖν ἔφθασαν ἐσκεδασμένοις τοῖς Ῥω-
μαίοις ἐπιφανέντες ἐκ τοῦ ἀπροσδοκήτου, μεγάλην
ἂν αὐτῶν εἰργάσαντο τροπήν· νῦν δὲ προαισθόμενος
τὴν ἔφοδον αὐτῶν ὁ ὕπατος διὰ τῶν ἀποσταλέντων
ἐπὶ τὰς κατασκοπάς, ἀνακλήσει ταχείᾳ τοὺς ἐν ταῖς
προνομαῖς ἐσκεδασμένους ἀναλαβών, τάξιν αὐτοῖς
ἀπέδωκε τὴν εἰς πόλεμον ἁρμόττουσαν. τοῖς δὲ
Οὐολούσκοις σὺν καταφρονήσει καὶ θάρσει χωροῦ-
σιν, ὡς παρὰ δόξαν ἐφάνη συνεστῶσα ἐν κόσμῳ
πᾶσα ἡ τῶν πολεμίων δύναμις, δέος ἐμπίπτει πρὸς
τὴν ἀδόκητον ὄψιν, καὶ τοῦ μὲν κοινοῦ τῆς ἀσφα-
λείας οὐδεμία φροντίς, τῆς δὲ ἰδίας ἑκάστῳ σωτη- 1709
ρίας πρόνοια. ὑποστρέψαντες δὴ ὡς εἶχον ἕκαστοι
τάχους ἔφευγον ἄλλοι κατ' ἄλλας ὁδούς· καὶ οἱ μὲν
πλείους ἀπεσώθησαν εἰς τὴν πόλιν, ὀλίγον δέ τι
στῖφος, ὃ μάλιστα ἦν συντεταγμένον, εἴς ὄρους τινὰ
κορυφὴν ἀναδραμὸν καὶ θέμενον ἐνταῦθα τὰ ὅπλα
τὴν ἐπιοῦσαν νύκτα διέμενε· ταῖς δ' ἑξῆς ἡμέραις
φρουρὰν περιστήσαντος τοῦ ὑπάτου τῷ λόφῳ καὶ
πάσας διακλείσαντος ὅπλοις τὰς ἐξόδους, λιμῷ βια-
σθὲν ὑποχείριον γίνεται καὶ παραδίδωσι τὰ ὅπλα.
ὁ δὲ ὕπατος τήν τε λείαν ὅσῃ ἐπέτυχε καὶ τὰ λάφυρα
καὶ τοὺς αἰχμαλώτους ἀποδόσθαι κελεύσας τοῖς τα-
μίαις, εἰς τὴν πόλιν ἀπήνεγκε τὸ ἀργύριον. καὶ μετ'
οὐ πολὺν χρόνον ἀναστήσας τὴν δύναμιν ἐκ τῆς πο-
λεμίας, ἀπῆγεν ἐπ' οἴκου τελευτῶντος ἤδη τοῦ ἔτους.
ἐπιστάντων δὲ τῶν ἀρχαιρεσίων, ἔδοξε τοῖς πατρι-
κίοις ἠρεθισμένον ὁρῶσι τὸν δῆμον καὶ μεταμελό-
μενον ἐπὶ τῇ Κασσίου καταδίκῃ, διὰ φυλακῆς αὐτὸν
ἔχειν μή τι παρακινήσειε πάλιν εἰς δεκασμῶν ἐλπίδα 1710

καὶ κλήρων διανομῆς ὑπαχθεὶς ὑπ' ἀνδρὸς δημαγωγῆσαι δυνατοῦ τὸ τῆς ὑπατείας λαβόντος ἀξίωμα. ἐφαίνετο δ' αὐτοῖς ῥᾷστα κωλυθήσεσθαι τούτων τινὸς ὀρεγόμενος, εἰ γένοιτο ὕπατος ἀνὴρ ἥκιστα δημοτικός. βουλευσάμενοι δὴ τοῦτο κελεύουσι μετιέναι τὴν ὑπατείαν τὸν ἕτερον τῶν κατηγορησάντων τοῦ Κασσίου, Καίσωνα Φάβιον ἀδελφὸν ὄντα τοῦ τότε ὑπατεύοντος Κοΐντου, καὶ ἐκ τῶν ἄλλων πατρικίων Λεύκιον Αἰμίλιον ἄνδρα ἀριστοκρατικόν. τούτων δὲ μετιόντων τὴν ἀρχὴν κωλύειν μὲν οὐχ οἷοί τ' ἦσαν οἱ δημοτικοί, καταλιπόντες δὲ τὰς ἀρχαιρεσίας ᾤχοντο ἐκ τοῦ πεδίου. τὸ γὰρ τῆς λοχίτιδος ἐκκλησίας κῦρος ἐν ταῖς ψηφοφορίαις περὶ τοὺς ἐπιφανεστάτους ἦν καὶ τὰ πρῶτα τιμήματα ἔχοντας, καὶ σπάνιόν τι ἦν, ὃ ἐπεκύρουν οἱ διὰ μέσου· ὁ δὲ τελευταῖος λόχος, ἐν
1711 ᾧ τὸ πλεῖστόν τε καὶ ἀπορώτατον τοῦ δημοτικοῦ μέρος ἐψηφοφόρει, μιᾶς ὡς καὶ πρότερον εἴρηταί μοι τῆς ἐσχάτης ψήφου κύριος ἦν.

LXXXIII. Παραλαμβάνουσι δὴ τὴν ὑπατείαν κατὰ τὸ ἑβδομηκοστόν τε καὶ διακοσιοστὸν ἔτος ἀπὸ τοῦ συνοικισμοῦ τῆς Ῥώμης Λεύκιος Αἰμίλιος Μαμέρκου υἱὸς καὶ Καίσων Φάβιος Καίσωνος υἱός, ἄρχοντος Ἀθήνησι Νικοδήμου. οἷς κατ' εὐχὴν συνέβη μηδὲν ὑπὸ τῆς πολιτικῆς ἐπιταραχθῆναι διχοστασίας, πολέμων τὴν πόλιν περιστάντων ἀλλοεθνῶν. ἐν ἅπασι μὲν οὖν ἔθνεσι καὶ τόποις Ἑλλήνων τε καὶ βαρβάρων φιλοῦσιν αἱ τῶν ἔξωθεν κακῶν ἀνάπαυλαι ἐμφυλίους τε καὶ ἐνδήμους ἐγείρειν πολέμους, μάλιστα δὲ τοῦτο πάσχουσιν, ὅσοι πολεμιστὴν καὶ κακόπαθον αἱροῦνται βίον ἐλευθερίας τε καὶ ἡγεμονίας πόθῳ. χαλεπαὶ γὰρ αἱ μαθοῦσαι τοῦ πλείονος ἐφίεσθαι φύσεις ἐξειργόμεναι τῶν συνήθων ἔρ-

γων καρτερεῖν· καὶ διὰ τοῦτο οἱ φρονιμώτατοι τῶν ἡγεμόνων ἀεί τινας ἐκ τῶν ἀλλοεθνῶν ἀναζωπυροῦσιν ἔχθρας, κρείττονας ἡγούμενοι τῶν ἐντοπίων πολέμων τοὺς ἀλλοδαπούς. τότε δ' οὖν, ὥσπερ ἔφην, 171 κατὰ δαίμονα τοῖς ὑπάτοις συνέπεσον αἱ τῶν ὑπηκόων ἐπαναστάσεις. Οὐολοῦσκοι γὰρ εἴτε τῇ πολιτικῇ Ῥωμαίων κινήσει πιστεύσαντες ὡς ἐκπεπολεμωμένου τοῦ δημοτικοῦ πρὸς τοὺς ἐν τέλει· εἴτε τῆς προτέρας ἥττης ἀμαχητὶ γενομένης αἰσχύνῃ παροξυνθέντες· εἴτε ἐπὶ ταῖς ἑαυτῶν δυνάμεσι πολλαῖς οὔσαις μέγα φρονήσαντες· εἴτε διὰ ταῦτα πάντα, πολεμεῖν Ῥωμαίοις διέγνωσαν, καὶ συναγαγόντες ἐξ ἁπάσης πόλεως τὴν νεότητα, μέρει μέν τινι τῆς δυνάμεως ἐπὶ τὰς Ἑρνίκων τε καὶ Λατίνων πόλεις ἐστράτευσαν, τῇ δὲ λοιπῇ, ἣ πλείστη τε ἦν καὶ κρατίστη, τοὺς ἐπὶ τὰς πόλεις σφῶν ἥξοντας δέχεσθαι ἤμελλον. ταῦτα μαθοῦσι Ῥωμαίοις ἔδοξε διχῇ νέμειν τὰς δυνάμεις, καὶ τῇ μὲν ἑτέρᾳ τὴν Ἑρνίκων τε καὶ Λατίνων διὰ φυλακῆς ἔχειν, τῇ δ' ἑτέρᾳ τὴν Οὐολούσκων λεηλατεῖν.

LXXXIIII. Διακληρωσαμένων δὲ τῶν ὑπάτων 1713 τὰς δυνάμεις ὡς ἔστιν αὐτοῖς ἔθος, τὸ μὲν ἐπικουρεῖν μέλλον τοῖς συμμάχοις στράτευμα Καίσων Φάβιος παρέλαβε· θάτερον δὲ Λεύκιος ἔχων ἐπὶ τὴν Ἀντιατῶν ἦγε πόλιν. γενόμενος δὲ πλησίον τῶν ὁρίων, καὶ κατιδὼν τὰς τῶν πολεμίων δυνάμεις, τότε μὲν ἀντικατεστρατοπέδευσεν ἐπὶ λόφου· ταῖς δ' ἑξῆς ἡμέραις ἐξιόντων εἰς τὸ πεδίον τῶν πολεμίων θαμινὰ καὶ προκαλουμένων εἰς μάχην, ἡνίκα τὸν οἰκεῖον ἔχειν καιρὸν ὑπελάμβανεν ἐξῆγε τὰς δυνάμεις· καὶ πρὶν εἰς χεῖρας ἐλθεῖν παρακλήσει τε πολλῇ καὶ ἐπικελεύσει χρησάμενος, ἐκέλευσε σημαί-

νειν τὸ πολεμικόν· καὶ οἱ στρατιῶται τὸ σύνηθες ἀλαλάξαντες ἀθρόοι κατὰ σπείρας τε καὶ κατὰ λόχους συνέβαλλον. ὡς δὲ τὰς λόγχας καὶ τὰ σαυνία καὶ ὅσα εἶχον ἑκηβόλα ἐξανάλωσαν, σπασάμενοι τὰ ξίφη συρράττουσιν ἀλλήλοις ἴσῃ τόλμῃ τε καὶ ἐπιθυμίᾳ τοῦ ἀγῶνος ἑκάτεροι χρώμενοι· ἦν τε, ὡς καὶ πρότερον ἔφην, παραπλήσιος αὐτοῖς ὁ τοῦ ἀγῶνος τρόπος,
1714 *καὶ οὔτε ἡ σοφία καὶ ἡ ἐμπειρία Ῥωμαίων περὶ τὰς μάχας, ᾗ χρώμενοι τὰ πολλὰ ἐπεκράτουν, οὔτε τὸ καρτερικὸν καὶ ταλαίπωρον ἐν τοῖς πόνοις διὰ πολλῶν ἠσκημένον ἀγώνων ἐπεκράτει· τὰ γὰρ αὐτὰ καὶ περὶ τοὺς πολεμίους ἦν, ἐξ οὗ Μάρκιον ἡγεμόνα Ῥωμαίων οὐ τὸν ἀφανέστατον στρατηλάτην ἔσχον· ἀλλ' ἀντεῖχον ἑκάτεροι τῆς χώρας ἐν ᾗ τὸ πρῶτον ἔστησαν οὐχ ὑφιέμενοι. ἔπειτα κατὰ μικρὸν οἱ Οὐολοῦσκοι ὑπεχώρουν ἐν κόσμῳ τε καὶ τάξει δεχόμενοι τοὺς Ῥωμαίους. στρατήγημα δὲ τοῦτ' ἦν, ἵνα διασπάσωσί τε αὐτῶν τὰς τάξεις καὶ ἐξ ὑπερδεξιοῦ γένωνται χωρίου.*

LXXXV. *Οἱ δ' ὑπολαβόντες αὐτοὺς ἄρχειν φυ-*
1715 *γῆς ἠκολούθουν βάδην μὲν ἀπιοῦσι καὶ αὐτοὶ σὺν κόσμῳ ἑπόμενοι, ἐπειδὴ δὲ δρόμῳ χωροῦντας ἐπὶ τὸν χάρακα ἐθεάσαντο, ταχείᾳ καὶ αὐτοὶ διώξει καὶ ἀσυντάκτῳ χρώμενοι. οἱ δὲ δὴ τελευταῖοί τε καὶ ὀπισθοφυλακοῦντες λόχοι νεκρούς τε ἐσκύλευον, ὡς κεκρατηκότες ἤδη τῶν πολεμίων, καὶ ἐφ' ἁρπαγὴν τῆς χώρας ἐτράποντο. μαθόντες δὲ οἱ Οὐολοῦσκοι ταῦτα, οἵ τε δόξαν παρασχόντες φυγῆς, ἐπειδὴ τοῖς ἐρύμασι τοῦ χάρακος ἐπλησίασαν, ὑποστραφέντες ἔστησαν, καὶ οἱ καταλειφθέντες ἐν τῷ στρατοπέδῳ τὰς πύλας ἀναπετάσαντες ἐξέδραμον ἀθρόοι κατὰ πολλὰ μέρη· γίνεταί τε αὐτῶν παλίντροπος ἡ μάχη·*

οἱ μὲν γὰρ διώκοντες ἔφευγον, οἱ δὲ φεύγοντες ἐδίωκον. ἔνθα πολλοὶ καὶ ἀγαθοὶ Ῥωμαίων θνήσκουσιν οἷα εἰκὸς ὠθούμενοι κατὰ πρανοῦς χωρίου καὶ ὑπὸ πολλῶν ὀλίγοι κυκλωθέντες. ἀδελφὰ δὲ τούτοις ἔπασχον, ὅσοι πρὸς σκῦλά τε καὶ ἁρπαγὰς τραπόμενοι τὸ ἐν κόσμῳ τε καὶ τάξει ἀποχωρεῖν ἀφῃρέθησαν· καὶ γὰρ οὗτοι καταληφθέντες ὑπὸ τῶν πολε- 171
μίων, οἱ μὲν ἐσφάγησαν, οἱ δ' αἰχμάλωτοι ἐλήφθησαν. ὅσοι δὲ τούτων τε καὶ τῶν ἀπὸ τοῦ ὄρους ἀπαραχθέντων διεσώθησαν, ὀψὲ τῆς ὥρας τῶν ἱππέων αὐτοῖς ἐπιβοηθησάντων, ἀπῆλθον ἐπὶ τὸν χάρακα. ἐδόκει τε αὐτοῖς συλλαβέσθαι τοῦ μὴ πασσυδὶ διαφθαρῆναι χειμὼν πολὺς ἐξ οὐρανοῦ καταρραγεὶς καὶ σκότος οἷον ἐν ταῖς βαθείαις ὁμίχλαις γίνεται, ὃ τοῖς πολεμίοις ὄκνον τῆς ἐπὶ πλέον διώξεως παρέσχεν οὐ δυναμένοις τὰ πόρρω καθορᾶν. τῇ δ' ἐπιούσῃ νυκτὶ ἀναστήσας τὴν στρατιὰν ὁ ὕπατος ἀπῆγε σιγῇ καὶ ἐν κόσμῳ, λαθεῖν τοὺς πολεμίους προνοούμενος· καὶ κατεστρατοπέδευσε παρὰ πόλει λεγομένῃ Λογγόλᾳ περὶ δείλην ὀψίαν, γήλοφον ἱκανὸν ἐρύκειν τοὺς ἐπιόντας ἐκλεξάμενος. ἔνθα ὑπομένων τούς τε ὑπὸ τραυμάτων κάμνοντας ἀνεκτᾶτο θεραπείαις, καὶ τοὺς ἀδημονοῦντας ἐπὶ τῇ παραδόξῳ τοῦ πάθους αἰσχύνῃ παραμυθούμενος ἀνελάμβανε.

LXXXVI. Ῥωμαῖοι μὲν οὖν ἐν τούτοις ἦσαν· 1717
Οὐολοῦσκοι δέ, ἐπειδὴ ἡμέρα τε ἐγένετο καὶ ἔγνωσαν τοὺς πολεμίους ἐκλελοιπότας τὸν χάρακα, προσελθόντες κατεστρατοπέδευσαν. σκυλεύσαντες δὲ τοὺς τῶν πολεμίων νεκροὺς καὶ τοὺς ἡμιθνῆτας οἷς σωθήσεσθαι ἐλπὶς ἦν ἀνελόμενοι, ταφάς τε ποιησάμενοι τῶν σφετέρων νεκρῶν, εἰς τὴν ἐγγυτάτω πόλιν Ἄντιον ἀνέζευξαν· ἔνθα παιανίζοντες ἐπὶ τῇ νίκῃ

καὶ θύοντες ἐν ἅπασιν ἱεροῖς εἰς εὐπαθείας καὶ
ἡδονὰς ταῖς ἑξῆς ἡμέραις ἐτράποντο. εἰ μὲν οὖν ἐπὶ
τῆς τότε νίκης διέμειναν καὶ μηδὲν ἐπεξειργάσαντο,
καλὸν ἂν αὐτοῖς εἰλήφει τέλος ὁ ἀγών. Ῥωμαῖοι γὰρ
οὐκ ἂν ὑπέμειναν ἔτι προελθεῖν ἐκ τοῦ χάρακος ἐπὶ
πολέμῳ· ἀγαπητὸν δ᾽ ἄν, εἰ ἀπῆλθον ἐκ τῆς πολε-
μίας, κρείττονα τοῦ προδήλου θανάτου τὴν ἄδοξον
ἡγησάμενοι φυγήν. νῦν δὲ τοῦ πλείονος ὀρεγόμενοι
1718 καὶ τὴν ἐκ τῆς προτέρας νίκης δόξαν ἀπέβαλον.
ἀκούοντες γὰρ παρά τε κατασκόπων καὶ τῶν ἐκ τοῦ
χάρακος ἀποδιδρασκόντων, ὅτι κομιδῇ τέ εἰσιν οἱ
σωθέντες Ῥωμαίων ὀλίγοι καὶ τούτων οἱ πλείους
τραυματίαι, πολλὴν αὐτῶν ἐποιήσαντο καταφρόνη-
σιν, καὶ αὐτίκα τὰ ὅπλα ἁρπάσαντες ἔθεον ἐπ᾽ αὐ-
τούς. πολὺ δὲ καὶ τὸ ἄνοπλον αὐτοῖς ἐκ τῆς πόλεως
εἵπετο κατὰ θέαν τοῦ ἀγῶνος καὶ ἅμα ἐφ᾽ ἁρπα-
γήν τε καὶ ὠφέλειαν. ἐπεὶ δὲ προσβαλόντες τῷ λόφῳ
τόν τε χάρακα περιέστησαν καὶ τὰ περισταυρώματα
διασπᾶν ἐπεχείρουν, πρῶτοι μὲν οἱ τῶν Ῥωμαίων
ἱππεῖς πεζοὶ μαχόμενοι διὰ τὴν τοῦ χωρίου φύσιν
1719 ἐξέδραμον ἐπ᾽ αὐτούς, ἔπειτα τούτων κατόπιν οἱ
καλούμενοι τριάριοι πυκνώσαντες τοὺς λόχους· οὗ-
τοι δ᾽ εἰσὶν οἱ πρεσβύτατοι τῶν στρατευομένων, οἷς
τὰ στρατόπεδα ἐπιτρέπουσι φυλάττειν, ὅταν ἐξίωσιν
εἰς τὴν μάχην, καὶ ἐφ᾽ οὓς τελευταίους, ὅταν ἀθρόα
γένηται τῶν ἐν ἀκμῇ φθορά, σπανίζοντες ἑτέρας
ἐπικουρίας καταφεύγουσι διὰ τὴν ἀνάγκην. οἱ δ᾽
Οὐολοῦσκοι κατ᾽ ἀρχὰς μὲν ἐδέξαντο τὴν ἔφοδον
αὐτῶν, καὶ μέχρι πολλοῦ διέμενον ἐκθύμως ἀγωνι-
ζόμενοι· ἔπειτα διὰ τὴν τοῦ χωρίου φύσιν μειονε-
κτοῦντες ὑπεχώρουν, καὶ τέλος ὀλίγα μὲν τοὺς πολε-
μίους καὶ οὐκ ἄξια λόγου ἐργασάμενοι, πλείω δ᾽ αὐ-

τοὶ παθόντες κακά, ὑπεχώρησαν εἰς τὸ πεδίον. ἔνθα
καταστρατοπεδευσάμενοι ταῖς ἑξῆς ἡμέραις ἐξέταττον τὴν δύναμιν καὶ προὐκαλοῦντο τοὺς Ῥωμαίους
εἰς μάχην· οἱ δ' οὐκ ἀντεξῄεσαν. ὡς δὲ τοῦτ' εἶδον καταφρονήσαντες αὐτῶν οἱ Οὐολοῦσκοι συνεκάλουν ἐκ τῶν πόλεων δυνάμεις, καὶ παρεσκευάζοντο
ὡς ἐξελοῦντες πολυχειρίᾳ τὸ φρούριον· ῥᾳδίως τε ἂν
ἐξειργάσαντο μέγα ἔργον ὑπάτου τε καὶ Ῥωμαϊκῆς 1720
δυνάμεως ἢ βίᾳ κρατήσαντες ἢ καθ' ὁμολογίας· οὐδὲ
γὰρ τῶν ἐπιτηδείων ἔτι εὐπόρει τὸ χωρίον· ἔφθη δὲ
πρότερον ἐπικουρία Ῥωμαίοις ἐλθοῦσα, ὑφ' ἧς
ἐκωλύθησαν οἱ Οὐολοῦσκοι τὸ κάλλιστον ἐπιθεῖναι τῷ
πολέμῳ τέλος. ὁ γὰρ ἕτερος τῶν ὑπάτων Καίσων
Φάβιος μαθὼν ἐν αἷς ἦν τύχαις ἡ παραταξαμένη
Οὐολούσκοις δύναμις, ἐβούλετο μὲν ὡς εἶχε τάχους
πᾶσαν ἄγων τὴν δύναμιν εὐθὺς ἐπιέναι τοῖς πολιορκοῦσι τὸ φρούριον. ὡς δὲ οὐκ ἐγίνετο αὐτῷ
θυομένῳ τε καὶ οἰωνοῖς χρωμένῳ τὰ ἱερὰ καλά, ἀλλ'
ἠναντιοῦτο πρὸς τὰς ἐξόδους αὐτοῦ τὸ δαιμόνιον,
αὐτὸς μὲν ὑπέμεινε, τὰς δὲ κρατίστας ἐπιλεξάμενος
σπείρας ἀπέστειλε τῷ συνάρχοντι. αἱ δὲ διά τε ὀρῶν
ἀφανῶς καὶ νύκτωρ τὰ πολλὰ ποιησάμεναι τὰς
ὁδοὺς εἰσῆλθον εἰς τὸν χάρακα τοὺς πολεμίους
λαθοῦσαι. ὁ μὲν οὖν Αἰμίλιος θρασύτερος ἐγεγόνει
τῇ παρουσίᾳ τῶν συμμάχων, οἱ δὲ πολέμιοι τῷ τε
πλήθει τῷ σφετέρῳ εἰκῇ πίσυνοι καὶ διὰ τὸ μὴ 1721
ἐπεξιέναι τοὺς Ῥωμαίους εἰς μάχην ἐπαρθέντες
ἀνέβαινον ἐπὶ τὸ ὄρος πυκνώσαντες τοὺς λόχους·
καὶ οἱ Ῥωμαῖοι παρέντες αὐτοὺς ἀναβῆναι καθ'
ἡσυχίαν, καὶ πολλὰ πονεῖν περὶ τῷ σταυρώματι
ἐάσαντες, ἐπειδὴ τὰ σημεῖα ἤρθη τῆς μάχης διασπάσαντες κατὰ πολλὰ μέρη τὸν χάρακα ἐμπίπτου-

σιν αὐτοῖς· καὶ οἱ μὲν εἰς χεῖρας καταστάντες τοῖς ξίφεσιν ἐμάχοντο, οἱ δ' ἀπὸ τῶν ἐρυμάτων λίθοις τε καὶ σαυνίοις καὶ λόγχαις τοὺς ἐπιόντας ἔβαλλον, βέλος δὲ οὐδὲν ἄσκοπον ἦν πεπιλημένων γε ἐν βραχεῖ χωρίῳ πολλῶν. ἀπαράττονται δὴ τοῦ λόφου πολλοὺς σφῶν ἀποβαλόντες οἱ Οὐολοῦσκοι, καὶ εἰς φυγὴν ὁρμήσαντες μόγις εἰς τὸν ἴδιον ἀποσώζονται χάρακα. Ῥωμαῖοι δὲ ὡς ἐν ἀσφαλεῖ τέως ὄντες ἤδη κατέβαινον ἐπὶ τοὺς ἀγροὺς αὐτῶν· ἐξ ὧν ἐπισιτισμοὺς καὶ τἆλλα ὅσων σπάνις ἦν ἐν τῷ χάρακι ἐλάμβανον.

2 LXXXVII. Ἐπειδὴ δὲ καθῆκεν ὁ τῶν ἀρχαιρεσιῶν καιρός, ὁ μὲν Αἰμίλιος ἔμεινεν ἐπὶ στρατοπέδου δι' αἰσχύνης ἔχων ἐπὶ συμφοραῖς οὐκ εὐσχήμοσιν εἰς τὴν πόλιν εἰσελθεῖν, τὸ κράτιστον ἀπολωλεκὼς τῆς στρατιᾶς. ὁ δὲ συνύπατος αὐτοῦ τοὺς ὑφ' ἑαυτὸν ἄρχοντας ἐπὶ στρατοπέδου καταλιπὼν εἰς τὴν Ῥώμην ᾤχετο· καὶ συγκαλέσας τὸν ὄχλον ἐπὶ τὰς ἀρχαιρεσίας, οἷς μὲν ὁ δῆμος ἐβούλετο δοθῆναι τὴν ὑπατείαν ἀνδράσιν ἐκ τῶν ὑπατευκότων, οὐ προὔθηκε τὴν ψηφοφορίαν, ἐπειδὴ οὐδ' αὐτοὶ μετήεσαν τὴν ἀρχὴν ἑκόντες, ὑπὲρ δὲ τῶν μετιόντων τούς τε λόχους ἐκάλεσε καὶ τὰς ψήφους ἀνέδωκεν. οὗτοι δ' ἦσαν, οὓς ἡ βουλὴ προείλετο καὶ οἷς παραγγέλλειν τὴν ἀρχὴν ἐκέλευσεν, οὐ σφόδρα τῷ δήμῳ κεχαρισμένοι. καὶ ἀπεδείχθησαν εἰς τὸν ἐπιόντα ἐνιαυτὸν ὕπατοι ὅ τε νεώτερος ἀδελφὸς τοῦ προθέντος τὰς ἀρχαιρεσίας ὑπάτου, Μάρκος Φάβιος Καίσωνος υἱὸς
1723 καὶ Λεύκιος Οὐαλέριος Μάρκου υἱός, ὁ τὸν τρὶς ὑπατεύσαντα Κάσσιον κρίνας ἐπὶ τῇ τυραννίδι καὶ ἀποκτείνας. οὗτοι τὴν ἀρχὴν παραλαβόντες ὑπὲρ τῶν ἀποθανόντων ἐν τῷ πρὸς Ἀντιάτας πολέ-

μῳ στρατιωτῶν ἠξίουν ἑτέρους καταγράφειν, ἵνα τὸ ἐλλιπὲς ἀναπληρωθῇ τῶν λόχων. καὶ δόγμα ποιησάμενοι βουλῆς προέγραψαν ἡμέραν, ἐν ᾗ παρεῖναι τοὺς ἔχοντας ἡλικίαν στρατεύσιμον ἔδει. μετὰ τοῦτο θόρυβος ἦν πολὺς κατὰ τὴν πόλιν ὅλην, καὶ λόγοι τῶν πενεστάτων στασιώδεις οὐκ ἀξιούντων οὔτε βουλῆς δόγμασιν ὑπηρετεῖν οὔτε ὑπάτων ἐξουσίᾳ πειθαρχεῖν, ὅτι τὰς περὶ τῆς κληρουχίας ὑποσχέσεις ἐψεύσαντο πρὸς αὐτούς· συνιόντες τε κατὰ πλῆθος ἐπὶ τοὺς δημάρχους ὠνείδιζον αὐτοῖς προδοσίαν, καὶ κατεβόων ἐπικαλούμενοι τὴν ἐξ ἐκείνων συμμαχίαν. τοῖς μὲν οὖν ἄλλοις οὐκ ἐδόκει καιρὸς ἁρμόττων εἶναι πολέμου συνεστῶτος ὑπερορίου τὰς πολιτικὰς 1724
ἔχθρας ἀναζωπυρεῖν· εἷς δέ τις ἐξ αὐτῶν Γάϊος Μαίνιος οὐκ ἔφη προδώσειν τοὺς δημοτικούς, οὐδ' ἐπιτρέψειν τοῖς ὑπάτοις στρατιὰν καταγράφειν, ἐὰν μὴ πρότερον ἀποδείξωσι τοὺς ὁριστὰς τῆς δημοσίας γῆς, καὶ τὸ περὶ τῆς κληρουχίας ψήφισμα γράψαντες εἰς τὸν δῆμον ἐξενέγκωσιν. ἀντιλεγόντων δὲ πρὸς ταῦτα τῶν ὑπάτων, καὶ πρόφασιν ποιουμένων τοῦ μηθὲν αὐτῷ συγχωρεῖν ὧν ἠξίου τὸν ἐν χερσὶν ὄντα πόλεμον, οὐκ ἔφη προσέξειν αὐτοῖς τὸν νοῦν, ἀλλὰ κωλύσειν ἁπάσῃ δυνάμει τὴν καταγραφήν. καὶ ἐποίει ταῦτα· οὐ μὴν ἴσχυσέ γε μέχρι τέλους. οἱ γὰρ ὕπατοι προελθόντες ἔξω τῆς πόλεως ἐν τῷ παρακειμένῳ πεδίῳ τοὺς στρατηγικοὺς δίφρους ἔθηκαν· ἐνταῦθα καὶ τὸν στρατιωτικὸν ἐποιοῦντο κατάλογον, καὶ τοὺς οὐχ ὑπακούοντας τοῖς νόμοις, ἐπειδὴ αὐτοὺς ἄγειν οὐχ οἷοί τ' ἦσαν, εἰς χρήματα ἐζημίουν· ὅσοις μὲν χωρία ὑπῆρχεν, ἐκκόπτοντες ταῦτα καὶ 1725
τὰς αὐλὰς καθαιροῦντες· ὅσων δὲ γεωργικὸς ὁ βίος ἦν ἐν ἀλλοτρίοις κτήμασι, τούτων ἄγοντές τε καὶ

φέροντες τὰ παρεσκευασμένα πρὸς τὴν ἐργασίαν ζεύγη τε βοϊκὰ καὶ βοσκήματα καὶ ὑποζύγια ἀχθοφόρα καὶ σκεύη παντοῖα, οἷς γῆ τ' ἐξεργάζεται καὶ καρποὶ συγκομίζονται. ὁ δὲ κωλύων τὴν καταγραφὴν δήμαρχος οὐθὲν ἔτι ποιεῖν ἦν δυνατός. οὐδενὸς γάρ εἰσι τῶν ἔξω τῆς πόλεως οἱ τὴν δημαρχικὴν ἔχοντες ἐξουσίαν κύριοι· περιγέγραπται γὰρ αὐτῶν τὸ κράτος τοῖς τείχεσι, καὶ οὐδὲ ἀπαυλισθῆναι τῆς πόλεως αὐτοῖς θέμις, ὅτι μὴ πρὸς ἕνα καιρόν, ἐν ᾧ πᾶσαι θύουσιν αἱ τῆς πόλεως ἀρχαὶ κοινὴν ὑπὲρ τοῦ Λατίνων ἔθνους τῷ Διὶ θυσίαν ἐπὶ τὸ Ἀλβανῶν ὄρος ἀναβαίνουσαι. τοῦτο διαμένει μέχρι τῶν καθ' ἡμᾶς χρόνων τὸ ἔθος, τὸ μηθενὸς εἶναι τῶν ἔξω τῆς πόλεως τοὺς δημάρχους κυρίους· καὶ δὴ καὶ τὸν ἐμφύλιον Ῥωμαίων πόλεμον τὸν ἐπὶ τῆς ἐμῆς
1726 ἡλικίας, ὃς μέγιστος τῶν πρὸ αὐτοῦ πολέμων ἐγένετο, ἡ κινήσασα πρόφασις ἐπὶ πολλαῖς ἄλλαις δόξασα μείζων εἶναι καὶ μόνη ἀποχρῶσα διαστῆσαι τὴν πόλιν ἥδε ἦν, ὅτι τῶν δημάρχων τινὲς ἐξεληλάσθαι τῆς πόλεως αἰτιώμενοι βίᾳ πρὸς τοῦ τότε κατέχοντος τὰ κατὰ τὴν Ἰταλίαν ἡγεμόνος, ἵνα μηδενὸς εἶεν ἔτι κύριοι, ἐπὶ τὸν ἐν τῇ Γαλατίᾳ τὰ στρατόπεδα κατέχοντα ὡς οὐκ ἔχοντες ὅποι τράπωνται κατέφυγον. ὁ δὲ τῇ προφάσει ταύτῃ χρησάμενος, ὡς ἀρχῇ δήμου παναγεῖ τὸ κράτος ἀφαιρεθείσῃ παρὰ τοὺς ὅρκους τῶν προγόνων αὐτὸς ὁσίως καὶ σὺν δίκῃ βοηθῶν, αὐτός τε σὺν τοῖς ὅπλοις ἦλθεν εἰς τὴν πόλιν καὶ τοὺς ἄνδρας ἐπὶ τὴν ἀρχὴν κατήγαγε.

LXXXVIII. Τότε δ' οὖν οἱ δημόται τῆς δημαρχικῆς ἐξουσίας οὐδὲν ἀπολαύοντες ὑφεῖντο τοῦ
1727 θράσους καὶ προσιόντες τοῖς ἐπὶ τῆς στρατολογίας τεταγμένοις τὸν ἱερὸν ὅρκον ὤμνυσαν, καὶ ὑπὸ τὰς

σημαίας κατεγράφοντο. ἐπεὶ δὲ τὸ ἐλλιπὲς τῶν λόχων ἐξεπληρώθη, διεκληρώσαντο τὰς ἡγεμονίας τῶν στρατοπέδων οἱ ὕπατοι· καὶ ὁ μὲν Φάβιος τὴν ἐπὶ τῇ βοηθείᾳ τῶν συμμάχων ἀποσταλεῖσαν δύναμιν παρελάμβανεν, ὁ δὲ Οὐαλέριος τὴν ἐν Οὐολούσκοις στρατοπεδεύουσαν ἄγων τοὺς νεωστὶ καταγραφέντας. μαθοῦσι δὲ τὴν παρουσίαν αὐτοῦ τοῖς πολεμίοις ἐδόκει στρατιάν τε ἑτέραν μεταπέμπεσθαι καὶ ἐν ἰσχυροτέρῳ τὸ στρατόπεδον ποιήσασθαι χωρίῳ, καὶ μηδὲν ἐκ τοῦ καταφρονεῖν αὐτῶν ἔτι προπετὲς κινδύνευμα ὡς πρότερον ὑπομένειν. ἐγεγόνει ταῦτα διὰ ταχέων, ἀμφοτέροις τε παρέστη τοῖς ἡγεμόσι τῶν δυνάμεων ὁμοία περὶ τοῦ πολέμου γνώμη, τὰ ἑαυτῶν φυλάττειν ἐρύματα ἐάν τις ἐπίῃ, τοῖς δὲ τῶν πολεμίων ὡς βίᾳ κρατηθησομένοις μὴ ἐπιχειρεῖν. καὶ ὁ διὰ μέσου χρόνος οὐκ ὀλίγος ἐγένετο ἐν φόβῳ τῶν ἐπιχειρήσεων τριβόμενος· οὐ μέντοι καὶ εἰς τέλος γε διαμένειν ἐν τοῖς ἐγνωσμένοις ἐδυνήθησαν. ὁπότε γὰρ ἐπισιτισμοῦ χάριν ἢ τῶν ἄλλων 1728
ἐπιτηδείων τινός, ὧν ἀμφοτέροις ἔδει, μοῖρά τις ἀποσταλείη τῆς στρατιᾶς, συμβολαί τε αὐτῶν ἐγίνοντο καὶ πληγαί, καὶ τὸ νικᾶν οὐκ ἀεὶ παρὰ τοῖς αὐτοῖς ἔμενε· πολλάκις δὲ συμπλεκομένων ἀλλήλοις ἀπέθνησκόν τε οὐκ ὀλίγοι καὶ τραυματίαι πλείους ἐγίνοντο. τοῖς μὲν οὖν Ῥωμαίοις τὸ ἀπαναλούμενον τῆς στρατιᾶς οὐδεμία οἴκοθεν ἐπιοῦσα ἐπικουρία ἐξεπλήρου, τὸ δὲ τῶν Οὐολούσκων στρατόπεδον ἄλλων ἐπ' ἄλλοις ἡκόντων πολλὴν αὔξησιν ἐλάμβανε· καὶ τούτῳ ἐπαρθέντες οἱ ἡγεμόνες ἐξῆγον ἐκ τοῦ χάρακος τὴν δύναμιν ὡς εἰς μάχην.

LXXXVIIII. Ἐξελθόντων δὲ καὶ τῶν Ῥωμαίων καὶ παραταξαμένων, ἰσχυρὰ μάχη γίνεται καὶ ἱπ-

πέων καὶ πεζῶν καὶ ψιλῶν ἴσῃ πάντων χρωμένων προθυμίᾳ τε καὶ ἐμπειρίᾳ, καὶ τὸ νικᾶν ἑκάστου παρ᾽ ἑαυτὸν μόνον τιθεμένου· ὡς δὲ νεκροί τε αὐτῶν πολλοὶ ἑκατέρωθεν ἐν ᾧ ἐτάχθησαν χωρίῳ πεσόντες ἔκειντο, καὶ ἡμιθνῆτες ἔτι πλείους τῶν νε-
1729 κρῶν, οἱ δὲ παρὰ τὸν ἀγῶνα καὶ τὰ δεινὰ ἔτι διαμένοντες ὀλίγοι ἦσαν, καὶ οὐδὲ οὗτοι δρᾶν τὰ πολέμου ἔργα δυνάμενοι, βαρυνόντων μὲν αὐτοῖς τῶν σκεπαστηρίων τὰς εὐωνύμους χεῖρας διὰ πλῆθος τῶν ἐμπεπηγότων βελῶν, καὶ οὐκ ἐώντων ὑπομένειν τὰς προσβολάς, τετριμμένων δὲ τῶν ἐγχειριδίων τὰς ἀκμάς, ἔστι δὲ ὧν καὶ κατεαγότων ὅλων, οἷς οὐθὲν ἔτι ἦν χρῆσθαι, τοῦ τε κόπου, ὃς δι᾽ ὅλης ἡμέρας ἀγωνιζομένοις αὐτοῖς πολὺς ἐγεγόνει, παραλύοντος τὰ νεῦρα καὶ τὰς πληγὰς ἀσθενεῖς ποιοῦντος, ἱδρῶτος δὲ καὶ δίψης καὶ ἄσθματος, οἷα ἐν πνιγηρᾷ ὥρᾳ ἔτους τοῖς πολὺν χρόνον ἀγωνιζομένοις συμπίπτειν φιλεῖ, παρ᾽ ἀμφοτέροις γινομένων, τέλος οὐδὲν ἔλαβεν ἀξιόλογον ἡ μάχη, ἀλλ᾽ ἀγαπητῶς ἀμφότεροι τῶν στρατηγῶν ἀνακαλουμένων ἀπῆλθον ἐπὶ
1730 τοὺς ἑαυτῶν χάρακας· καὶ οὐκέτι μετὰ τοῦτ᾽ ἐξῄεσαν εἰς μάχην οὐδέτεροι, ἀλλ᾽ καθήμενοι παρεφύλαττον ἀλλήλων τὰς ἕνεκα τῶν ἐπιτηδείων γινομένας ἐξόδους. ἔδοξε μέντοι καὶ λόγος ἦν ἐν τῇ Ῥώμῃ πολύς, ὡς δυναμένη τότε νικᾶν ἡ Ῥωμαίων δύναμις ἑκουσία μηδὲν ἐργάσασθαι λαμπρὸν διὰ μῖσός τε τοῦ ὑπάτου καὶ ὀργήν, ἣν εἶχε πρὸς τοὺς πατρικίους ἐπὶ τῷ φενακισμῷ τῆς κληρουχίας. αὐτοὶ δὲ οἱ στρατιῶται τὸν ὕπατον ὡς οὐχ ἱκανὸν στρατηγεῖν ᾐτιῶντο, γράμματα πέμποντες ὡς τοὺς ἐπιτηδείους ἑαυτῶν ἕκαστοι. καὶ τὰ μὲν ἐπὶ στρατοπέδου γινόμενα τοιαῦτα ἦν· ἐν αὐτῇ δὲ τῇ Ῥώμῃ

πολλὰ δαιμόνια σημεῖα ἐφαίνετο δηλωτικὰ θείου χόλου κατά τε φωνὰς καὶ ὄψεις ἀήθεις. πάντα δὲ εἰς τοῦτο συνέτεινεν, ὡς οἵ τε μάντεις καὶ οἱ τῶν ἱερῶν ἐξηγηταὶ συνενέγκαντες τὰς ἐμπειρίας ἀπεφαίνοντο, ὅτι θεῶν [χολοῦσθαι] τινες οὐ κομίζονται τὰς 1731 νομίμους τιμὰς οὐ καθαρῶς οὐδὲ ὁσίως ἐπιτελουμένων αὐτοῖς τῶν ἱερῶν. ζήτησις δὴ μετὰ τοῦτο πολλὴ ἐκ πάντων ἐγίνετο, καὶ σὺν χρόνῳ μήνυσις ἀποδίδοται τοῖς ἱεροφάνταις, ὅτι τῶν παρθένων μία τῶν φυλαττουσῶν τὸ ἱερὸν πῦρ, Ὀπιμία ὄνομα αὐτῇ, τὴν παρθενίαν ἀφαιρεθεῖσα μιαίνει τὰ ἱερά. οἱ δὲ ἔκ τε βασάνων καὶ τῶν ἄλλων ἀποδείξεων μαθόντες, ὅτι τὸ μηνυόμενον ἦν ἀδίκημα ἀληθές, αὐτὴν μὲν τῆς κορυφῆς ἀφελόμενοι τὰ στέμματα καὶ πομπεύσαντες δι' ἀγορᾶς ἐντὸς τείχους ζῶσαν κατώρυξαν· δύο δὲ τοὺς ἐξελεγχθέντας διαπράξασθαι τὴν φθορὰν μαστιγώσαντες ἐν φανερῷ ἀπέκτειναν. καὶ παραχρῆμα μετὰ τοῦτο καλὰ τὰ ἱερὰ καὶ τὰ μαντεύματα ὡς ἀφεικότων αὖθις τῶν θεῶν τὸν χόλον ἐγίνετο.

LXXXX. Ὡς δὲ καθῆκεν ὁ τῶν ἀρχαιρεσιῶν χρόνος, ἐλθόντων τῶν ὑπάτων πολλὴ σπουδὴ καὶ 1732 παράταξις ἐγένετο τοῦ δήμου πρὸς τοὺς πατρικίους περὶ τῶν παραληψομένων τὴν ἡγεμονίαν ἀνδρῶν. ἐκεῖνοι μὲν γὰρ ἐκ τῶν νεωτέρων ἐβούλοντο τοὺς δραστηρίους τε καὶ ἥκιστα δημοτικοὺς ἐπὶ τὴν ὑπατείαν προαγαγεῖν· καὶ μετήει τὴν ἀρχὴν κελευσθεὶς ὑπ' αὐτῶν ὁ υἱὸς Ἀππίου Κλαυδίου τοῦ πολεμιωτάτου τῷ δήμῳ δοκοῦντος εἶναι, μεστὸς αὐθαδείας ἀνὴρ καὶ θράσους, ἑταίροις τε καὶ πελάταις ἁπάντων πλεῖστον τῶν καθ' ἡλικίαν δυνάμενος· ὁ δὲ δῆμος ἐκ τῶν πρεσβυτέρων τε καὶ τῶν πεῖραν ἤδη δεδωκό-

των τῆς ἐπιεικείας τοὺς προνοησομένους τοῦ κοινῇ
συμφέροντος ὀνομάζων ἠξίου ποιεῖν ὑπάτους. αἵ
τε ἀρχαὶ διειστήκεσαν καὶ τὰς ἀλλήλων ἀνέλυον
ἐξουσίας. ὁπότε μὲν γὰρ οἱ ὕπατοι καλοῖεν τὸ πλῆ-
θος ὡς ἀποδείξοντες τοὺς μετιόντας τὴν ἀρχὴν
ὑπάτους, οἱ δήμαρχοι τοῦ κωλύειν ὄντες κύριοι
διέλυον τὰ ἀρχαιρέσια· ὁπότε δ᾽ αὖ πάλιν ἐκεῖνοι
καλοῖεν ὡς ἀρχαιρεσιάσοντα τὸν δῆμον, οὐκ ἐπέτρε-
1732 πον οἱ ὕπατοι, τὴν ἐξουσίαν ἔχοντες τοῦ συγκαλεῖν
τοὺς λόχους καὶ τὰς ψήφους ἀναδιδόναι. κατηγο-
ρίαι τε ἀλλήλων ἐγίνοντο καὶ συνεχεῖς ἀψιμαχίαι
καθ᾽ ἑταιρίας συνισταμένων, ὥστε καὶ πληγὰς ἀλ-
λήλοις διδόναι τινὰς ὑπ᾽ ὀργῆς, καὶ οὐ μακρὰν
ἀποσχεῖν τὴν στάσιν τῶν ὅπλων. ταῦτα μαθοῦσα
ἡ βουλὴ πολὺν ἐσκόπει χρόνον, ὅ τι χρήσεται τοῖς
πράγμασιν, οὔτε βιάσασθαι δυναμένη τὸν δῆμον
οὔτε εἶξαι βουλομένη. ἦν δὲ ἡ μὲν αὐθαδεστέρα
γνώμη δικτάτορα ἑλέσθαι τῶν ἀρχαιρεσιῶν ἕνεκα,
ὃν ἂν ἡγῶνται κράτιστον εἶναι· τὸν δὲ λαβόντα τὴν
ἐξουσίαν τούς τε νοσοποιοὺς ἐκ τῆς πόλεως ἐξελεῖν,
καὶ εἴ τι ἡμάρτηται ταῖς πρότερον ἀρχαῖς ἐπανορ-
θώσασθαι, τόν τε κόσμον τοῦ πολιτεύματος ὃν βού-
λεται καταστησάμενον ἀνδράσι τοῖς κρατίστοις ἀπο-
δοῦναι τὰς ἀρχάς. ἡ δὲ ἐπιεικεστέρα μεσοβασιλεῖς ἑλέ-
σθαι τοὺς πρεσβυτάτους τε καὶ τιμιωτάτους ἄνδρας,
οἷς ἐπιμελὲς ἔσται τὰ περὶ τὰς ἀρχὰς ὅπως κράτισται
[illegible]νται προνοηθῆναι, τὸν αὐτὸν τρόπον ὅνπερ
1733 ἐπὶ τῶν βασιλέων τῶν ἐκλιπόντων ἐγίνοντο. ταύτῃ
προσθεμένων τῇ γνώμῃ τῶν πλειόνων, ἀποδείκνυ-
ται πρὸς αὐτῶν μεσοβασιλεὺς Αὖλος Σεμπρώνιος
Ἀτρατῖνος· αἱ δὲ ἄλλαι κατελύθησαν ἀρχαί. οὗτος
ἐπιτροπεύσας τὴν πόλιν ἀστασίαστον ὅσας ἐξῆν ἡμέ-

ρας, ἕτερον ἀποδείκνυσιν ὥσπερ αὐτοῖς ἔθος ἦν Σπόριον Λάρκιον. κἀκεῖνος συγκαλέσας τὴν λοχῖτιν ἐκκλησίαν καὶ τὰς ψήφους κατὰ τὰ τιμήματα ἀναδούς, ἐκ τῆς ἀμφοτέρων εὐδοκήσεως ἀποδείκνυσιν ὑπάτους, Γάϊον Ἰούλιον τὸν ἐπικαλούμενον Ἴουλον ἐκ τῶν φιλοδημοτικῶν, καὶ Κόιντον Φάβιον Καίσωνος υἱὸν τὸ δεύτερον ἐκ τῶν ἀριστοκρατικῶν. καὶ ὁ μὲν δῆμος οὐδὲν ἐκ τῆς προτέρας ὑπατείας αὐτοῦ πεπονθὼς εἴασε τυχεῖν ταύτης τῆς ἐξουσίας τὸ δεύτερον, μισῶν τὸν Ἄππιον καὶ ὅτι ἐκεῖνος ἀτιμασθῆναι ἐδόκει σφόδρα ἡδόμενος· τοῖς δ' ἐν τέλει διαπεπραγμένοις δραστήριον ἄνδρα καὶ οὐθὲν ἐνδώσοντα τῷ δήμῳ μαλακὸν ἐπὶ τὴν ὑπατείαν παρελθεῖν, κατὰ γνώμην ἐδόκει κεχωρηκέναι τὰ τῆς διχοστασίας.

LXXXXI. *Ἐπὶ τῆς τούτων ἀρχῆς Αἰκανοὶ μὲν* 1735 *εἰς τὴν Λατίνων χώραν ἐμβαλόντες ἀπήλασαν ἀνδράποδα καὶ βοσκήματα πολλὰ λῃστρικῇ ἐφόδῳ χρησάμενοι· Τυρρηνῶν δὲ οἱ καλούμενοι Οὐιεντανοὶ τῆς Ῥωμαίων γῆς πολλὴν ἠδίκησαν προνομαῖς. τῆς δὲ βουλῆς τὸν μὲν πρὸς Αἰκανοὺς πόλεμον εἰς ἕτερον ἀναβαλομένης χρόνον, παρὰ δὲ Οὐιεντανῶν δίκας αἰτεῖν ψηφισαμένης, Αἰκανοὶ μὲν ἐπειδὴ τὰ πρῶτα αὐτοῖς κατὰ νοῦν ἐχώρησε, καὶ οὐθεὶς ὁ κωλύσων τὰ λοιπὰ ἐφαίνετο, θράσει ἐπαρθέντες ἀλογίστῳ, λῃστρικὴν μὲν οὐκέτι στρατείαν ἔγνωσαν ποιεῖσθαι, δυνάμει δὲ βαρείᾳ ἐλάσαντες ἐπὶ πόλιν Ὀρτῶνα κατὰ κράτος αἱροῦσι· καὶ διαρπάσαντες τά τε ἐκ τῆς χώ-* 1736 *ρας καὶ τὰ τῆς πόλεως ἀπῄεσαν εὐπορίαν πολλὴν ἀγόμενοι. Οὐϊεντανοὶ δὲ πρὸς τοὺς ἀπὸ τῆς Ῥώμης ἥκοντας ἀποκρινάμενοι, ὅτι οὐκ ἐξ αὐτῶν εἴησαν οἱ προνομεύοντες τὴν χώραν, ἀλλ' ἐκ τῶν ἄλλων Τυρρηνῶν, ἀπέλυσαν τοὺς ἄνδρας οὐθὲν τῶν δικαίων ποιή-*

σαντες· καὶ οἱ πρέσβεις ἐπιτυγχάνουσι τοῖς Οὐϊενταvοῖς λείαν ἐκ τῆς αὐτῶν χώρας ἄγουσι. ταῦτα παρ' αὐτῶν ἡ βουλὴ μαθοῦσα πολεμεῖν τε ἐψηφίσατο Οὐϊενταvοῖς καὶ τοὺς ὑπάτους ἀμφοτέρους ἐξάγειν τὴν στρατιάν. ἐγένετο μὲν οὖν περὶ τοῦ δόγματος ἀμφιλογία, καὶ πολλοὶ ἦσαν οἱ τὸν πόλεμον οὐκ ἐῶντες ἐκφέρειν τῆς τε κληρουχίας ὑπομιμνήσκοντες τοὺς δημοτικούς, ἧς γε πέμπτον ἔτος ἐψηφισμένης ὑπὸ τοῦ συνεδρίου κενῇ πιστεύσαντες ἐλπίδι ἐξηπάτηντο, καὶ κοινὸν ἀποφαίνοντες πόλεμον
1737 εἰ κοινῇ χρήσεται γνώμῃ πᾶσα Τυρρηνία τοῖς ὁμοεθνέσι βοηθοῦσα. οὐ μὴν ἴσχυσάν γε οἱ τῶν στασιαστῶν λόγοι, ἀλλ' ἐκύρωσε καὶ ὁ δῆμος τὸ τῆς βουλῆς δόγμα τῇ Σπορίου Λαρκίου γνώμῃ τε καὶ παρακλήσει χρησάμενος. καὶ μετὰ ταῦτ' ἐξῆγον τὰς δυνάμεις οἱ ὕπατοι· στρατοπεδευσάμενοι δὲ χωρὶς ἀλλήλων οὐ μακρὰν ἀπὸ τῆς πόλεως καὶ μείναντες ἡμέρας συχνάς, ἐπειδὴ οὐκ ἀντεξῆγον οἱ πολέμιοι τὰς δυνάμεις, προνομεύσαντες αὐτῶν τῆς γῆς ὅσην ἐδύναντο πλείστην ἀπῆγον ἐπ' οἶκον τὴν στρατιάν. ἄλλο δὲ ἐπὶ τῆς τούτων ὑπατείας λόγου ἄξιον οὐδὲν ἐπράχθη.

ΔΙΟΝΥΣΙΟΥ 1738

ΑΛΙΚΑΡΝΑΣΕΩΣ

ΡΩΜΑΙΚΗΣ ΑΡΧΑΙΟΛΟΓΙΑΣ

ΛΟΓΟΣ ΕΝΑΤΟΣ.

*Τῷ δὲ μετὰ τούτους ἔτει διαφορᾶς γενομένης τῷ
δήμῳ πρὸς τὴν βουλὴν περὶ τῶν ἀποδειχθησομένων
ὑπάτων· οἱ μὲν γὰρ ἠξίουν ἀμφοτέρους ἐκ τῶν ἀρι-
στοκρατικῶν ἐπὶ τὴν ἀρχὴν προαγαγεῖν, ὁ δὲ δῆμος
ἐκ τῶν ἑαυτῷ κεχαρισμένων· γνωσιμαχήσαντες πρὸς
ἀλλήλους ἡ βουλὴ καὶ ὁ δῆμος τέλος συνέπεισαν ἀλ-
λήλους ἀφ' ἑκάστης μερίδος ὕπατον αἱρεθῆναι· καὶ
ἀποδείκνυται Καίσων μὲν Φάβιος τὸ δεύτερον ὑπὸ* 1739
*τῆς βουλῆς ὁ τὸν Κάσσιον ἐπὶ τῇ τυραννίδι κρίνας,
Σπόριος δὲ Φούριος ὑπὸ τῶν δημοτικῶν, ἐπὶ τῆς
ἑβδομηκοστῆς καὶ πέμπτης ὀλυμπιάδος ἄρχοντος
Ἀθήνησι Καλλιάδου, καθ' ὃν χρόνον ἐστράτευσε
Ξέρξης ἐπὶ τὴν Ἑλλάδα. ἄρτι δὲ παρειληφότων αὐ-
τῶν τὴν ἀρχὴν Λατίνων τε πρέσβεις ἧκον ἐπὶ τὴν
βουλὴν δεόμενοι πέμψαι σφίσι τὸν ἕτερον τῶν ὑπά-
των μετὰ δυνάμεως, ὃς οὐκ ἐάσει προσωτέρω χωρεῖν
τὴν Αἰκανῶν καταφρόνησιν· καὶ Τυρρηνία πᾶσα*

ἠγγέλλετο κεκινημένη καὶ οὐ διὰ μακροῦ χωρήσουσα εἰς πόλεμον. συνήχθη γὰρ εἰς κοινὴν ἐκκλησίαν τὸ ἔθνος, καὶ πολλὰ Οὐιεντανῶν δεηθέντων συνάρασθαι σφίσι τοῦ κατὰ Ῥωμαίων πολέμου, τέλος ἐξήνεγκεν ἐξεῖναι τοῖς βουλομένοις Τυρρηνῶν μετέχειν τῆς στρατείας· καὶ ἐγένετο χεὶρ ἀξιόμαχος ἡ τοῖς Οὐιεντανοῖς ἑκουσίως τοῦ πολέμου συναιρομένη.
1740 ταῦτα μαθοῦσι τοῖς ἐν τέλει Ῥωμαίων ἔδοξε στρατιάς τε καταγράφειν καὶ τοὺς ὑπάτους ἀμφοτέρους ἐξιέναι, τὸν μὲν Αἰκανοῖς τε πολεμήσοντα καὶ Λατίνοις τιμωρὸν ἐσόμενον, τὸν δὲ ἐπὶ Τυρρηνίας ἄξοντα τὰς δυνάμεις. ἀντέπραττε δὲ πρὸς ταῦτα Σπόριος Ἰκίλιος τῶν δημάρχων εἷς· καὶ συνάγων εἰς ἐκκλησίαν τὸν δῆμον ὁσημέραι τὰς περὶ τῆς κληρουχίας ὑποσχέσεις ἀπῄτει παρὰ τῆς βουλῆς, καὶ οὐδὲν ἔφη συγχωρήσειν οὔτε τῶν ἐπὶ πόλεμον, οὔτε τῶν κατὰ πόλιν ὑπ' αὐτῆς ψηφιζομένων ἐπιτελεσθῆναι, ἐὰν μὴ τοὺς δέκα ἄνδρας ἀποδείξωσι πρότερον ὁριστὰς τῆς δημοσίας χώρας, καὶ διέλωσι τὴν γῆν ὡς ὑπέσχοντο τῷ δήμῳ. ἀπορουμένῃ δὲ τῇ βουλῇ καὶ ἀμηχανούσῃ τί χρὴ ποιεῖν Ἄππιος Κλαύδιος ὑποτίθεται σκοπεῖν, ὅπως διαστήσεται τὰ τῶν ἄλλων
1741 δημάρχων πρὸς αὐτόν, διδάσκων, ὅτι τὸν κωλύοντα καὶ ἐμποδὼν γινόμενον τοῖς δόγμασι τῆς βουλῆς ἱερὸν ὄντα καὶ νόμῳ τὴν ἐξουσίαν ἔχοντα ταύτην ἄλλως οὐκ ἔστι παῦσαι τῆς δυναστείας, ἐὰν μή τις ἕτερος τῶν ἀπὸ τῆς ἴσης τιμῆς καὶ τὴν αὐτὴν ἐξουσίαν ἐχόντων τἀναντία πράττῃ, καὶ οἷς ἂν ἐκεῖνος ἐμποδὼν γένηται ταῦτα μὴ κωλύῃ. συνεβούλευέ τε τοῖς αὖθις παραληψομένοις τὴν ἀρχὴν ὑπάτοις τοῦτο πράττειν καὶ σκοπεῖν, ὅπως ἕξουσί τινας ἀεὶ τῶν δημάρχων οἰκείους σφίσι καὶ φίλους· μίαν εἶναι λέ-

γων τῆς ἐξουσίας τοῦ ἀρχείου κατάλυσιν, ἐὰν στασιάζωσι πρὸς ἀλλήλους οἱ ἄνδρες.

II. Ταύτην εἰσηγησαμένου τὴν γνώμην Ἀππίου, δόξαντες αὐτὸν ὀρθῶς παραινεῖν οἵ τε ὕπατοι καὶ τῶν ἄλλων οἱ δυνατώτατοι, πολλῇ θεραπείᾳ διεπράξαντο τοὺς τέτταρας ἐκ τῶν δημάρχων οἰκείους τῇ βουλῇ γενέσθαι. οἱ δὲ τέως μὲν λόγῳ μεταπείθειν τὸν Ἰκίλιον ἐπεχείρουν ἀποστῆναι τῶν περὶ τῆς κληρουχίας πολιτευμάτων, ἕως οἱ πόλεμοι λάβωσι τέλος· ὡς δ' ἠναντιοῦτο καὶ διώμνυτο λόγον τε τὸν αὐθαδέστατον εἰπεῖν ἐτόλμησε τοῦ δήμου παρόντος, ὅτι μᾶλλον ἂν βούλοιτο Τυρρηνοὺς καὶ τοὺς ἄλλους πολεμίους κρατήσαντας τῆς πόλεως ἐπιδεῖν, ἢ τοὺς κατέχοντας τῆς χώρας τὴν δημοσίαν ἀφεῖναι, δόξαντες ἀφορμὴν εἰληφέναι καλὴν πρὸς αὐθάδειαν τοσαύτην τοῦ τἀναντία λέγειν τε καὶ πράττειν, οὐδὲ τοῦ δήμου τὸν λόγον ἡδέως δεξαμένου, κωλύειν αὐτὸν ἔφησαν, καὶ φανερῶς ἔπραττον ὅσα τῇ βουλῇ τε καὶ τοῖς ὑπάτοις δοκοίη· μονωθεὶς δὲ Ἰκίλιος οὐδενὸς ἔτι κύριος ἦν. μετὰ τοῦτο ἡ στρατιὰ κατε- 1743
γράφετο, καὶ ὅσων ἔδει τῷ πολέμῳ πάντα ὑπηρετεῖτο, τὰ μὲν ἐκ τῶν δημοσίων, τὰ δὲ ἐκ τῶν ἰδίων ἁπάσῃ προθυμίᾳ· καὶ διὰ τάχους οἱ ὕπατοι διακληρωσάμενοι τὰ στρατεύματα ἐξῄεσαν, Σπόριος μὲν Φούριος ἐπὶ τὰς Αἰκανῶν πόλεις, Καίσων δὲ Φάβιος ἐπὶ Τυρρηνούς. Σπορίῳ μὲν οὖν ἅπαντα κατὰ νοῦν ἐχώρησεν οὐχ ὑπομεινάντων εἰς χεῖρας ἐλθεῖν τῶν πολεμίων, καὶ πολλὰ ἐκ τῆς στρατείας ἐξεγένετο χρήματά τε καὶ σώματα λαβεῖν. ἐπῆλθε γὰρ ὀλίγου δεῖν πᾶσαν ὅσην οἱ πολέμιοι χώραν κατεῖχον ἄγων καὶ φέρων, καὶ τὰ λάφυρα τοῖς στρατιώταις ἅπαντα ἐχαρίσατο. δοκῶν δὲ καὶ τὸν πρὸ

τοῦ χρόνου εἶναι φιλόδημος, ἔτι μᾶλλον ἐκ ταύτης τῆς στρατηγίας ἐθεράπευσε τὸ πλῆθος. καὶ ἐπειδὴ παρῆλθεν ὁ χρόνος τῆς στρατείας ἄγων τὴν δύναμιν ὁλόκληρόν τε καὶ ἀπαθῆ, χρήμασιν εὔπορον κατέστησε τὴν πατρίδα.

1744 III. *Καίσων δὲ Φάβιος ὁ ἕτερος τῶν ὑπάτων, οὐδενὸς χεῖρον στρατηγήσας, ἀφῃρέθη τὸν ἐκ τῶν ἔργων ἔπαινον παρ' οὐδὲν ἁμάρτημα ἴδιον, ἀλλ' ὅτι τὸ δημοτικὸν οὐκ εἶχεν εὔνουν, ἐξ οὗ τὸν ὕπατον Κάσσιον ἐπὶ τῇ τυραννίδι κρίνας ἀπέκτεινεν. οὔτε γὰρ ὅσα δέοι σὺν τάχει στρατηγῷ κελεύσαντι τοὺς ὑπηκόους πειθαρχεῖν, οὔθ' ὅσα τῷ προθύμῳ καὶ ἐν πρέποντι χρησαμένους βίᾳ κατασχεῖν, οὔθ' ὅσα λάθρα τῶν ἀντιπολεμίων χωρία εἰς πλεονεξίαν εὔθετα σφετερίσασθαι, οὔτ' ἄλλο πράττειν οὐδὲν ἕτοιμοι ἦσαν, ἐξ οὗ τιμήν τινα ὁ στρατηγὸς καὶ δόξαν ἀγαθὴν ἐξοίσεσθαι ἔμελλε. καὶ τἆλλα μὲν αὐτῶν, ὅσα ὑβρίζοντες τὸν ἡγεμόνα διετέλουν, ἐκείνῳ τε ἧττον λυπηρὰ ἦν καὶ τῇ πόλει βλάβης οὐ μεγά-*
1745 *λης αἴτια· ὃ δὲ τελευτῶντες ἐξειργάσαντο κίνδυνον οὐ μικρὸν ἤνεγκε καὶ πολλὴν αἰσχύνην ἀμφοῖν. γενομένης γὰρ παρατάξεως ἐν τῷ μεταξὺ τῶν λόφων, ἐφ' οἷς ἦσαν ἐστρατοπεδευκότες ἀμφότεροι, πάσῃ τῇ παρ' ἑκατέρων δυνάμει, πολλὰ καὶ καλὰ ἔργα ἀποδειξάμενοι καὶ τοὺς πολεμίους ἀναγκάσαντες ἄρξαι φυγῆς, οὔτ' ἠκολούθησαν ἀπιοῦσι τοῦ στρατηγοῦ πολλὰ ἐπικελεύοντος οὔτε παραμείναντες ἐκπολιορκῆσαι τὸν χάρακα ἠθέλησαν, ἀλλ' ἐάσαντες ἀτελὲς ἔργον καλὸν ἀπῄεσαν εἰς τὴν αὐτῶν στρατοπεδείαν. ἐπιχειρησάντων δ' αὐτοκράτορα τὸν ὕπατον ἀναγορεῦσαί τινων μέγα ἐμβοήσαντες ἀθρόοι κακιζούσῃ τῇ [τε] φωνῇ τὸν ἡγεμόνα [καὶ] ἐλοιδόρουν, ὡς πολ-*

λοὺς σφῶν καὶ ἀγαθοὺς ἀπολωλεκότα δι' ἀπειρίαν 1746
τοῦ στρατηγεῖν· καὶ ἄλλῃ πολλῇ βλασφημίᾳ καὶ ἀγανακτήσει χρησάμενοι λύειν τὸν χάρακα καὶ ἀπάγειν σφᾶς εἰς τὴν πόλιν ἠξίουν, ὡς οὐχ ἱκανοὺς ἐσομένους ἐὰν ἐπίωσιν οἱ πολέμιοι δευτέραν ὑπομεῖναι μάχην. καὶ οὔτε μεταδιδάσκοντος ἐπείθοντο τοῦ ἡγεμόνος, οὔτε ὀλοφυρομένου καὶ ἱκετεύοντος ἔπασχόν τι πρὸς τὰς δεήσεις, οὔτε ἀπειλὰς καὶ ἀνατάσεις, ὁπότε καὶ ταύταις χρήσαιτο, δι' εὐλαβείας ἐλάμβανον, ἀλλὰ πρὸς ἅπαντα τραχυνόμενοι ταῦτα διέμενον. τοσαύτη δ' ἀναρχία καὶ καταφρόνησις τοῦ ἡγεμόνος πᾶσιν ἐξ αὐτῶν παρέστη, ὥστε περὶ μέσας νύκτας ἐξαναστάντες τάς τε σκηνὰς ἔλυον καὶ τὰ ὅπλα ἀνελάμβανον καὶ τοὺς τραυματίας ἐβάσταζον οὐδενὸς κελεύσαντος.

IIII. Ταῦτα ὁ στρατηγὸς μαθὼν ἠναγκάσθη πᾶσι δοῦναι τὸ παράγγελμα τῆς ἐξόδου, δείσας τὴν ἀναρχίαν αὐτῶν καὶ τὸ θράσος. οἱ δὲ ὥσπερ ἐκ φυγῆς ἀνασωζόμενοι τάχει πολλῷ, συνάπτουσι τῇ πόλει περὶ τὸν ὄρθρον. καὶ οἱ ἐπὶ τῶν τειχῶν ἀγνο- 1747
ήσαντες, ὅτι φίλιον ἦν στράτευμα, ὅπλα τ' ἐνεδύοντο καὶ ἀλλήλους ἀνεκάλουν, ἥ τ' ἄλλη πόλις, ὡς ἐπὶ συμφορᾷ μεγάλῃ, ταραχῆς ἐγεγόνει μεστὴ καὶ θορύβου· καὶ οὐ πρότερον ἀνέῳξαν αὐτοῖς τὰς πύλας οἱ φύλακες, ἢ [ἕως] λαμπράν τε ἡμέραν γενέσθαι καὶ γνωσθῆναι τὸ οἰκεῖον στράτευμα. ὥστε πρὸς τῇ αἰσχύνῃ, ἣν ἐκ τοῦ καταλιπεῖν τὸν χάρακα ἠνέγκαντο, καὶ κίνδυνον οὐ τὸν ἐλάχιστον αὐτοὺς ἀναρρίψαι, σκότους ἀπιόντας διὰ τῆς πολεμίας ἀτάκτως. εἴ γ' οὖν τοῦτο καταμαθόντες οἱ πολέμιοι ἐκ ποδὸς ἀπιοῦσιν αὐτοῖς ἠκολούθησαν, οὐδὲν ἂν ἐκώλυσεν ἅπασαν ἀπολωλέναι τὴν στρατιάν. τῆς δὲ ἀλό-

γου ταύτης ἀπάρσεως ἢ φυγῆς τὸ πρὸς τὸν ἡγεμόνα
ἐκ τοῦ δήμου μῖσος ὥσπερ ἔφην αἴτιον ἦν, καὶ ὁ
φθόνος τῆς ἐκείνου τιμῆς, ἵνα μὴ θριάμβου κατα-
γωγῇ κοσμηθεὶς ἐπιφανέστατος γένηται. τῇ δ' ἑξῆς
ἡμέρᾳ μαθόντες οἱ Τυρρηνοὶ τὴν ἄπαρσιν τῶν
Ῥωμαίων, νεκρούς τ' αὐτῶν ἐσκύλευσαν καὶ τραυ-
1748 ματίας ἀράμενοι ἀπήνεγκαν τάς τε καταλειφθεί-
σας ἐν τῷ χάρακι παρασκευάς· πολλαὶ δ' ἦσαν,
ὡς εἰς χρόνιον παρεσκευασμέναι πόλεμον· διε-
φόρησαν· καὶ ὡς δὴ κρατοῦντες τῆς χώρας τῶν
πολεμίων τὴν ἐγγυτάτω λεηλατήσαντες, ἀπῆγον τὴν
στρατιάν.

V. Οἱ δὲ μετὰ τούτους ἀποδειχθέντες ὕπατοι,
Γναῖος Μάλλιος καὶ Μάρκος Φάβιος τὸ δεύτερον
ἄρχειν αἱρεθείς, ψήφισμα τῆς βουλῆς ποιησαμένης
στρατὸν ἐξάγειν ἐπὶ τὴν Οὐιεντανῶν πόλιν ὅσον ἂν
πλεῖστον δυνηθῶσι, προὔθηκαν ἡμέραν ἐν ᾗ τὸν
κατάλογον ἔμελλον ποιήσεσθαι τῆς στρατιᾶς. γινο-
μένου δὲ αὐτοῖς ἐμποδὼν ἐπὶ κωλύσει τῆς καταγρα-
φῆς ἑνὸς τῶν δημάρχων, Τεβερίου Ποντοφικίου καὶ
τὸ περὶ τῆς κληρουχίας ψήφισμα ἀνακαλουμένου, θε-
ραπεύσαντες τῶν συναρχόντων αὐτοῦ τινας, ὥσπερ
1749 ἐποίησαν οἱ πρὸ αὐτῶν ὕπατοι, διέστησαν τὸ ἀρ-
χεῖον· καὶ μετὰ τοῦτ' ἔπραττον ἐπὶ πολλῆς ἐξου-
σίας τὰ δόξαντα τῇ βουλῇ. γενομένης δὲ τῆς κατα-
γραφῆς ἐν ὀλίγαις ἡμέραις, ἐξῄεσαν ἐπὶ τοὺς πολε-
μίους, δύο μὲν ἑκάτερος ἄγων Ῥωμαίων τάγματα
τῶν ἐξ αὐτῆς καταγραφέντων τῆς πόλεως, οὐκ ἐλάττω
δὲ ταύτης χεῖρα τὴν ὑπὸ τῶν ἀποίκων τε καὶ ὑπη-
κόων ἀποσταλεῖσαν. ἀφίκετο δ' αὐτοῖς παρὰ τοῦ
Λατίνων τε καὶ Ἑρνίκων ἔθνους διπλάσιον τοῦ κλη-
θέντος ἐπικουρικόν. οὐ μὴν ἐχρήσαντό γε παντί·

πολλὴν δὲ χάριν αὐτοῖς εἰδέναι φήσαντες τῆς προθυμίας, ἀπέλυσαν τῆς ἀποσταλείσης δυνάμεως τὴν ἡμίσειαν. ἔταξαν δὲ καὶ πρὸ τῆς πόλεως τρίτον ἐκ δυεῖν ταγμάτων τῶν ἐν ἀκμῇ στρατόν, φύλακα τῆς χώρας ἐσόμενον, εἴ τις ἑτέρα δύναμις πολεμίων ἐκ τοῦ ἀδοκήτου φανείη· τοὺς δὲ ὑπὲρ τὸν στρατιωτικὸν κατάλογον, οἷς ἔτι δύναμις ἦν ὅπλων χρήσεως, ἐν τῇ πόλει κατέλιπον ἄκρας τε καὶ τείχη φυλάξοντας. ἀγαγόντες δὲ πλησίον τῆς Οὐιεντανῶν πόλεως τὰς δυνάμεις, κατεστρατοπέδευσαν ἐπὶ λόφοις δυσὶν οὐ μακρὰν ἀφεστηκόσιν ἀπ' ἀλλήλων. ἦν δὲ καὶ ἡ 1750
τῶν πολεμίων δύναμις ἐξεστρατευμένη πρὸ τῆς πόλεως πολλή τε καὶ ἀγαθή. συνεληλύθεσαν γὰρ ἐξ ἁπάσης Τυρρηνίας οἱ δυνατώτατοι τοὺς ἑαυτῶν πενέστας ἐπαγόμενοι, καὶ ἐγένετο τοῦ Ῥωμαικοῦ στρατοῦ μεῖζον τὸ Τυρρηνικὸν οὐκ ὀλίγῳ. τοῖς δ' ὑπάτοις τό τε πλῆθος ὁρῶσι τῶν πολεμίων καὶ τὴν λαμπρότητα τῶν ὅπλων πολὺ δέος ἐνέπεσε, μή ποτε οὐχ ἱκανοὶ γένωνται στασιαζούσῃ δυνάμει τῇ σφετέρᾳ πρὸς ὁμονοοῦσαν τὴν τῶν πολεμίων ἀντιταξάμενοι ὑπερβαλέσθαι· ἐδόκει τε αὐτοῖς ἐχυρωσαμένοις τὰ στρατόπεδα τρίβειν τὸν πόλεμον ἐκδεχομένοις, εἴ τινα δώσει πλεονεξίας ἀφορμὴν αὐτοῖς τὸ τῶν πολεμίων θράσος ἀλογίστῳ καταφρονήσει ἐπαρθέν. ἀκροβολισμοὶ δὴ μετὰ τοῦτο συνεχεῖς ἐγίνοντο καὶ ψιλῶν συμπλοκαὶ βραχεῖαι, μέγα δὲ ἢ λαμπρὸν ἔργον οὐδέν.

VI. Οἱ δὲ Τυρρηνοὶ ἀχθόμενοι τῇ τριβῇ τοῦ πολέμου δειλίαν τε ὠνείδιζον τοῖς Ῥωμαίοις, ἐπειδὴ 1751
οὐκ ἐξῄεσαν εἰς μάχην, καὶ ὡς παρακεχωρηκότων αὐτῶν σφίσι τῆς ὑπαίθρου μέγα ἐφρόνουν. καὶ ἔτι μᾶλλον ἐπήρθησαν εἰς ὑπεροψίαν τοῦ ἀντιπάλου

στρατοῦ καὶ καταφρόνησιν τῶν ὑπάτων, δόξαντες καὶ τὸ θεῖον αὐτοῖς συμμαχεῖν. τοῦ γὰρ ἑτέρου τῶν ὑπάτων Γναΐου Μαλλίου κεραυνὸς εἰς τὸ στρατήγιον ἐμπεσὼν τήν τε σκηνὴν διέσπασε καὶ τὴν ἑστίαν ἀνέτρεψε· καὶ τῶν πολεμιστηρίων ὅπλων τὰ μὲν ἐσπίλωσε, τὰ δὲ περιέκαυσε, τὰ δ' εἰς τέλος ἠφάνισεν· ἀπέκτεινε δὲ καὶ τὸν λαμπρότατον αὐτοῦ τῶν ἵππων, ᾧ παρὰ τοὺς ἀγῶνας ἐχρῆτο, καὶ τῶν θεραπόντων τινάς. λεγόντων δὲ τῶν μάντεων τοῦ τε χάρακος ἅλωσιν προσημαίνειν τοὺς θεοὺς καὶ τῶν ἐπιφανεστάτων ἀνδρῶν ἀπώλειαν, ἀναστήσας τὴν δύναμιν ὁ Μάλλιος ἀπῆγε περὶ μέσας νύκτας ἐπὶ τὸν ἕτερον χάρακα καὶ μετὰ τοῦ συνάρχοντος κατεστρατοπέδευσε. μαθόντες οὖν οἱ Τυρρηνοὶ τὴν ἀπανάστασιν τοῦ στρατηγοῦ, καὶ δι' ἃς αἰτίας ἐγέ-
1752 *νετο παρά τινων αἰχμαλώτων ἀκούσαντες, ἐπήρθησάν τε ταῖς γνώμαις ἔτι μᾶλλον, ὡς πολεμοῦντος τοῖς Ῥωμαίοις τοῦ δαιμονίου, καὶ πολλὴν εἶχον ἐλπίδα κρατήσειν αὐτῶν· οἵ τε μάντεις ἀκριβέστερον τῶν ἄλλοθί που δοκοῦντες ἐξητακέναι τὰ μετάρσια, πόθεν τε αἱ τῶν κεραυνῶν γίνονται βολαὶ καὶ τίνες αὐτοὺς ὑποδέχονται μετὰ τὰς πληγὰς ἀπιόντας τόποι, θεῶν τε οἷς ἕκαστοι ἀποδίδονται καὶ τίνων ἀγαθῶν ἢ κακῶν μηνυταί, χωρεῖν ὁμόσε τοῖς πολεμίοις παρῄνουν διαιρούμενοι τὸ γενόμενον τοῖς Ῥωμαίοις σημεῖον κατὰ τάδε. ἐπειδὴ τὸ βέλος εἰς ὑπάτου σκηνὴν κατέσκηψεν, ἐν ᾗ τὸ στρατήγιον ἐνῆν, καὶ πᾶσαν αὐτὴν ἄχρι τῆς ἑστίας ἠφάνισεν, ὅλῃ προσημαίνειν τὸ δαιμόνιον τῇ στρατιᾷ τοῦ χάρακος ἔκλειψιν βίᾳ κρατηθέντος, καὶ τῶν ἐπιφανεστάτων ὄλεθρον. εἰ μὲν οὖν, ἔφασαν, ἔμειναν ἐν ᾧ*
1753 *κατέσκηψε χωρίῳ τὸ βέλος οἱ κατέχοντες αὐτό, καὶ*

μὴ μετηνέγκαντο τὰ σημεῖα ὡς τοὺς ἑτέρους, μιᾶς τε παρεμβολῆς ἁλώσει καὶ ἑνὸς ὀλέθρῳ στρατοῦ τὸ νεμεσῶν αὐτοῖς δαιμόνιον ἀπεπλήρωσεν ἂν τὸν χόλον· ἐπειδὴ δὲ σοφώτεροι τῶν θεῶν εἶναι ζητοῦντες εἰς τὸν ἕτερον χάρακα μετεστρατοπέδευσαν, καταλιπόντες ἔρημον τὸν τόπον, ὡς οὐ τοῖς ἀνθρώποις τοῦ θεοῦ προδηλοῦντος τὰς συμφοράς, ἀλλὰ τοῖς τόποις, κοινὸς ἅπασιν αὐτοῖς ὁ παρὰ τοῦ δαίμονος ἥξει χόλος, τοῖς τε ἀπαναστᾶσι καὶ τοῖς ὑποδεξαμένοις. καὶ ἐπειδὴ ἁλῶναι σφῶν τὸν ἕτερον χάρακα βίᾳ θείας ἐπιθεσπιζούσης ἀνάγκης οὐ περιέμειναν τὸ χρεών, ἀλλ' αὐτοὶ παρέδοσαν τοῖς ἐχθροῖς, ἐκεῖνος ὁ χάραξ ὁ τὸν ἐκλειφθέντα ὑποδεξάμενος ἀντὶ τοῦ καταλειφθέντος ἁλώσεται βίᾳ κρατηθείς.

VII. *Ταῦτα παρὰ τῶν μάντεων οἱ Τυρρηνοὶ ἀκούσαντες, μέρει τινὶ τῆς ἑαυτῶν στρατιᾶς τὴν ἐρημωθεῖσαν ὑπὸ τῶν Ῥωμαίων καταλαμβάνονται στρατοπεδείαν ὡς ἐπιτείχισμα ποιησόμενοι τῆς ἑτέρας· ἦν* 1754 *δὲ πάνυ ἐχυρὸν τὸ χωρίον καὶ τοῖς ἀπὸ Ῥώμης ἐπὶ τὸ στρατόπεδον ἰοῦσι κωλύσεως ἐν καλῷ κείμενον. πραγματευσάμενοι δὲ καὶ τἆλλα, ἐξ ὧν πλεονεκτήσειν τοὺς πολεμίους ἔμελλον, ἐξῆγον εἰς τὸ πεδίον τὰς δυνάμεις. μενόντων δὲ τῶν Ῥωμαίων ἐφ' ἡσυχίας, προσιππεύοντες ἐξ αὐτῶν οἱ τολμηρότατοι καὶ πλησίον τοῦ χάρακος ἱστάμενοι, γυναῖκάς τε ἀπεκάλουν ἅπαντας καὶ τοὺς ἡγεμόνας αὐτῶν τοῖς δειλοτάτοις τῶν ζώων ἐοικέναι λέγοντες ἐκάκιζον, καὶ δυεῖν θάτερον ἠξίουν· εἰ μὲν ἀντιποιοῦνται τῆς περὶ τὰ πολέμια ἀρετῆς, καταβάντας εἰς τὸ πεδίον μιᾷ τὸν ἀγῶνα κρῖναι μάχῃ· εἰ δὲ ὁμολογοῦσιν εἶναι κακοί, παραδόντας τὰ ὅπλα τοῖς κρείττοσι καὶ δίκας ὑποσχόντας ὧν ἔδρασαν, μηδενὸς ἔτι τῶν με-*

γάλων ἑαυτοὺς ἀξιοῦν. τοῦτ' ἐποίουν ὁσημέραι· καὶ ἐπεὶ οὐδὲν ἐπέραινον, ἀποτειχίζειν αὐτοὺς ἔγνωσαν
1755 ὡς λιμῷ προσαναγκάσοντες παραστῆναι. οἱ δὲ ὕπατοι περιεώρων τὰ γινόμενα μέχρι πολλοῦ, δι' ἀνανδρίαν μὲν ἢ μαλακίαν οὐδεμίαν· ἀμφότεροι γὰρ εὔψυχοί τε καὶ φιλοπόλεμοι ἦσαν· τὸ δὲ τῶν στρατιωτῶν ἐθελόκακόν τε καὶ ἀπρόθυμον, διαμένον ἐν τοῖς δημοτικοῖς, ἐξ οὗ περὶ τῆς κληρουχίας διεστασίασαν, ὑφορώμενοι· ἔτι γὰρ αὐτοῖς ἔναυλα καὶ πρὸ ὀμμάτων ἦν, ἃ τῷ παρελθόντι ἐνιαυτῷ κατὰ τὸ ἔγκοτον τῆς περὶ τὸν ὕπατον τιμῆς αἰσχρὰ καὶ ἀνάξια τῆς πόλεως εἰργάσαντο, παραχωρήσαντες τῆς νίκης τοῖς ἡττηθεῖσι καὶ φυγῆς ὄνειδος οὐκ ἀληθὲς ὑπομείναντες, ἵνα μὴ καταγάγῃ τὸν ἐπινίκιον θρίαμβον ὁ ἀνήρ.

VIII. Βουλόμενοι δὴ τὸ στασιάζον ἐκ τῆς στρατιᾶς ἐξελεῖν εἰς τέλος καὶ καταστῆσαι πάλιν εἰς τὴν ἐξ ἀρχῆς ὁμόνοιαν ἅπαν τὸ πλῆθος, καὶ εἰς ἓν τοῦτο πᾶσαν εἰσφερόμενοι βουλήν τε καὶ πρόνοιαν, ἐπειδὴ οὔτε κολάσει μέρους τινὸς σωφρονέστερον ἀπο-
1756 δοῦναι τὸ λοιπὸν ἦν πολὺ καὶ αὔθαδες ὑπάρχον καὶ τὰ ὅπλα ἐν ταῖς χερσὶν ἔχον, οὔτε πειθοῖ προσαγαγέσθαι λόγων τοὺς οὐδὲ πεισθῆναι βουλομένους, δύο ταύτας ὑπέλαβον ἔσεσθαι τῶν στασιαζόντων αἰτίας τῆς διαλλαγῆς, τοῖς μὲν ἐπιεικεστέρας μετειληφόσι φύσεως· ἐνῆν γάρ τι καὶ τοιοῦτον ἐν τῷ πολλῷ· τὴν ἐπὶ τοῖς ὀνειδισμοῖς τῶν πολεμίων αἰσχύνην· τοῖς δὲ δυσαγώγοις ἐπὶ τὸ καλόν, ἣν ἅπασα δέδοικεν ἀνθρώπου φύσις ἀνάγκην. ἵνα δὴ ταῦτα γένοιτο ἀμφότερα, ἐφῆκαν τοῖς πολεμίοις λόγῳ τε αἰσχύνειν κακίζοντας σφῶν ὡς ἄνανδρον τὴν ἡσυχίαν, καὶ ἔργοις ὑπεροψίας τε καὶ καταφρονήσεως

πολλῆς γινομένοις ἀναγκάζειν ἀγαθοὺς γενέσθαι τοὺς ἑκουσίως εἶναι μὴ βουλομένους. γινομένων γὰρ τούτων, πολλὰς ἐλπίδας εἶχον ἥξειν ἐπὶ τὸ στρατήγιον ἅπαντας ἀγανακτοῦντας καὶ καταβοῶντας καὶ κελεύοντας ἡγεῖσθαι σφῶν ἐπὶ τοὺς πολεμίους· ὅπερ καὶ συνέβη. ὡς γὰρ ἤρξαντο τὰς ἐξόδους τοῦ χάρακος ἀποταφρεύειν τε καὶ ἀποσταυροῦν οἱ πολέμιοι, δυσανασχετήσαντες οἱ Ῥωμαῖοι ἐπὶ τῷ 1757
ἔργῳ, τέως μὲν κατ' ὀλίγους, ἔπειτα ἀθρόοι συντρέχοντες ἐπὶ τὰς σκηνὰς τῶν ὑπάτων, ἐκεκράγεσάν τε καὶ προδοσίαν αὐτοῖς ἐνεκάλουν, καὶ εἰ μή τις ἡγήσεται σφίσι τῆς ἐξόδου, δίχα ἐκείνων αὐτοὶ τὰ ὅπλα ἔχοντες ἐπὶ τοὺς πολεμίους ἔλεγον ἐξελεύσεσθαι. ὡς δ' ἐξ ἁπάντων ἐγίνετο τοῦτο, παρεῖναι τὸν χρόνον ὃν περιέμενον οἱ στρατηγοὶ νομίσαντες, ἐκέλευον τοῖς ὑπηρέταις συγκαλεῖν τὸ πλῆθος εἰς ἐκκλησίαν· καὶ προελθὼν Φάβιος τοιάδε εἶπε·

VIIII. Βραδεῖα μὲν ἡ ἀγανάκτησις ὑμῶν γίνεται περὶ ὧν ὑβρίζεσθε ὑπὸ τῶν πολεμίων, ἄνδρες στρατιῶταί τε καὶ ἡγεμόνες· καὶ τὸ βουλόμενον ἑκάστου χωρεῖν ὁμόσε τοῖς ἐναντίοις πολὺ τοῦ δέοντος ὕστερον φαινόμενον ἄωρόν ἐστι. παλαίτερον γὰρ ἔτι τοῦθ' ὑμᾶς ἔδει πράττειν, ὅτε πρῶτον αὐτοὺς εἴδετε καταβαίνοντας ἐκ τῶν ἐρυμάτων καὶ μάχης ἄρχειν βουλομένους. τότε γὰρ δήπου καλὸς ὁ περὶ τῆς ἡγεμονίας ἦν ἀγὼν καὶ τοῦ Ῥωμαίων φρονήματος ἄξιος. νῦν δὲ ἀναγκαῖος ἤδη γίνεται, 1758
καὶ οὐδ' ἂν τὸ κράτιστον λάβῃ τέλος ὁμοίως καλός. εὖ δὲ καὶ νῦν ποιεῖτε ὅμως ἐπανορθώσασθαι τὴν βραδυτῆτα βουλόμενοι καὶ τὰ παραλειφθέντα ἀναλαβεῖν· καὶ πολλὴ χάρις ὑμῖν τῆς ἐπὶ τὰ κράτιστα ὁρμῆς, εἴτ' ὑπ' ἀρετῆς γίνεται· κρεῖττον γὰρ

[ἐστιν] ὀψὲ ἄρξασθαι τὰ δέοντα πράττειν ἢ μηδέ-
ποτε· εἴτ' οὖν ἅπαντες ὁμοίους ἔχετε περὶ τῶν συμ-
φερόντων λογισμούς, καὶ ἡ προθυμία τῆς ἐπὶ τὸν
ἀγῶνα ὁρμῆς ἅπαντας ἡ αὐτὴ κατείληφε. νῦν δὲ
φοβούμεθα, μὴ τὰ περὶ τῆς κληρουχίας προσκρού-
σματα τῶν δημοτικῶν πρὸς τοὺς ἐν τέλει μεγάλης
αἴτια τῷ κοινῷ γένηται βλάβης· ὑποψία τε ἡμᾶς
κατείληφεν, ὡς ἡ περὶ τῆς ἐξόδου καταβοὴ καὶ ἀγα-
νάκτησις οὐκ ἀπὸ τῆς αὐτῆς προαιρέσεως παρὰ
πάντων γίνεται· ἀλλ' οἱ μὲν ὡς τιμωρησόμενοι
1759 τοὺς πολεμίους προθυμεῖσθε τοῦ χάρακος ἐξελθεῖν,
οἱ δὲ ὡς ἀποδρασόμενοι. ἐξ ὧν δὲ παρέστηκεν
ἡμῖν ταῦτα ὑποπτεύειν, οὐ μάντεις εἰσὶν οὐδὲ
στοχασμοί, ἀλλ' ἔργα ἐμφανῆ καὶ οὐδὲ ταῦτα πα-
λαιά, ἀλλ' ἐν τῷ παρελθόντι ἐνιαυτῷ γενόμενα,
ὡς ἅπαντες ἴστε, ὅτε ἐπὶ τοὺς αὐτοὺς πολεμίους
τούτους πολλῆς καὶ ἀγαθῆς ἐξελθούσης στρατιᾶς,
καὶ τῆς πρώτης μάχης τὸ κράτιστον ἡμῖν λαβούσης
τέλος, δυνηθέντος ἂν τοῦ τότε ἄγοντος ὑμᾶς ὑπά-
του Καίσωνος, ἀδελφοῦ δὲ ἐμοῦ τουδὶ καὶ τὸν
χάρακα τῶν πολεμίων ἐξελεῖν καὶ νίκην τῇ πα-
τρίδι καταγαγεῖν λαμπροτάτην, φθονήσαντες αὐτῷ
δόξης τινές, ὅτι δημοτικὸς οὐκ ἦν, οὐδὲ τὰ κεχα-
ρισμένα τοῖς πένησι διετέλει πολιτευόμενος, τῇ
πρώτῃ νυκτὶ μετὰ τὴν μάχην ἀνασπάσαντες τὰς
σκηνὰς ἄνευ παραγγέλματος ἀπέδρασαν ἐκ τοῦ
χάρακος, οὔτε τὸν κίνδυνον ἐνθυμηθέντες τὸν κατα-
ληψόμενον αὐτοὺς ἀτάκτως καὶ χωρὶς ἡγεμόνος ἀπι-
1760 όντας ἐκ πολεμίας γῆς καὶ ταῦτα ἐν νυκτί, οὔτε τὴν
αἰσχύνην ὅση καθέξειν αὐτοὺς ἔμελλεν ὑπολογισά-
μενοι, ὅτι παρεχώρουν τοῖς πολεμίοις τῆς ἡγεμονίας,
τὸ γοῦν ἐφ' ἑαυτοῖς μέρος, καὶ ταῦτα οἱ νικήσαντες

τοῖς κεκρατημένοις. τούτους δὴ τοὺς ἄνδρας ὀρρωδοῦντες, ὦ ταξίαρχοί τε καὶ λοχαγοὶ καὶ στρατιῶται, τοὺς οὔτ' ἄρχειν δυναμένους οὔτε ἄρχεσθαι βουλομένους πολλοὺς καὶ αὐθάδεις ὄντας καὶ τὰ ὅπλα ἔχοντας ἐν χερσίν, οὔτε πρότερον ἐβουλόμεθα μάχην συνάπτειν οὔτε νῦν ἔτι θαρσοῦμεν ἐπὶ τοιούτοις συμμάχοις τὸν ὑπὲρ τῶν μεγίστων ἀγῶνα ἄρασθαι, μὴ κωλύματα καὶ βλάβαι γένωνται τοῖς ἅπαντα τὰ καθ' ἑαυτοὺς πρόθυμα παρεχομένοις. εἰ μέντοι κἀκείνων ὁ θεὸς ἐπὶ τὰ κρείττω τὸν νοῦν ἄγει νυνὶ καὶ καταβαλόντες τὸ στασιάζον, ὑφ' οὗ νῦν πολλὰ καὶ μεγάλα βλάπτεται τὸ κοινόν, ἥ γε δὴ εἰς τοὺς τῆς εἰρήνης ἀναβαλόμενοι καιρούς, [ἤδη] ἐπανορθώσασθαι βούλονται τὰ παρελθόντα ὀνείδη τῇ νῦν ἀρετῇ, μηδὲν ἔτι τὸ κωλῦσον ἔστω χωρεῖν ὑμᾶς ἐπὶ τοὺς πολεμίους, τὰς ἀγαθὰς προβαλλομένους ἐλπίδας. 1761
ἔχομεν δὲ πολλὰς μὲν καὶ ἄλλας ἀφορμὰς εἰς τὸ νικᾶν, μεγίστας δὲ καὶ κυριωτάτας ἃς τὸ τῶν πολεμίων ἀνόητον [ἡμῖν] παρέχει, οἵ γε πλήθει στρατιᾶς μακρῷ προὔχοντες ἡμῶν, καὶ τούτῳ μόνῳ δυνηθέντες ἂν πρὸς τὰς ἡμετέρας τόλμας τε καὶ ἐμπειρίας ἀντέχειν, ἀπεστερήκασι τῆς μόνης ὠφελείας ἑαυτοὺς ἀπαναλώσαντες τὸ πλεῖον τῆς δυνάμεως μέρος εἰς τὰς τῶν φρουρίων φυλακάς. ἔπειτα δέον αὐτοὺς σὺν εὐλαβείᾳ καὶ λογισμῷ σώφρονι πράττειν ἕκαστα, ἐνθυμουμένους πρὸς οἵους ἄνδρας καὶ πολὺ ἀλκιμωτέρους αὐτῶν ὁ κίνδυνος ἔσται, θρασέως καὶ ἀπερισκέπτως ἐπὶ τὸν ἀγῶνα χωροῦσιν, ὡς ἄμαχοι [δή] τινες καὶ ὡς ἡμῶν καταπεπληγότων αὐτούς. αἵ γοῦν ἀποταφρεύσεις καὶ αἱ μέχρι τοῦ χάρακος ἡμῶν καθιππεύσεις καὶ τὰ πολλὰ ἐν λόγοις τε καὶ ἔργοις ὑβρίσματα τοῦτο δύναται. ταῦτά τε δὴ ἐν- 1762

θυμούμενοι, καὶ τῶν προτέρων ἀγώνων μεμνημένοι πολλῶν ὄντων καὶ καλῶν ἐν οἷς αὐτοὺς ἐνικᾶτε, χωρεῖτε μετὰ προθυμίας καὶ ἐπὶ τόνδε τὸν ἀγῶνα· καὶ ἐν ᾧ ἂν ὑμῶν ἕκαστος χωρίῳ ταχθῇ, τοῦτο ὑπολαβέτω καὶ οἶκον εἶναι καὶ κλῆρον καὶ πατρίδα· καὶ ὅ τε σώζων τὸν παραστάτην ἑαυτῷ πράττειν τὴν σωτηρίαν ὑπολαβέτω, καὶ ὁ ἐγκαταλιπὼν τὸν πέλας ἑαυτὸν ἡγείσθω τοῖς πολεμίοις προδιδόναι. μάλιστα δ' ἐκεῖνο μεμνῆσθαι προσήκει, ὅτι μενόντων μὲν ἀνδρῶν καὶ μαχομένων ὀλίγον τὸ ἀπολλύμενόν ἐστιν, ἐγκλινάντων δὲ καὶ φευγόντων κομιδῇ βραχὺ τὸ σωζόμενον.

1763 X. Ἔτι δὲ αὐτοῦ λέγοντος τὰ εἰς τὸ γενναῖον ἐπαγωγά, καὶ πολλὰ μεταξὺ τῶν λόγων ἐκχέοντος δάκρυα, λοχαγῶν τε καὶ ταξιάρχων καὶ τῶν ἄλλων στρατιωτῶν ἕκαστον ᾧ συνῄδει τι λαμπρὸν ἔργον ἐν μάχαις ἀποδειξαμένῳ κατ' ὄνομα ἀνακαλοῦντος, καὶ πολλὰ καὶ μεγάλα τοῖς ἀριστεύσασι κατὰ τὴν μάχην φιλάνθρωπα δώσειν ὑπισχνουμένου πρὸς τὸ τῶν πράξεων μέγεθος, τιμάς τε καὶ πλούτους καὶ τὰς ἄλλας βοηθείας, ἀναβοήσεις ἐξ ἁπάντων ἐγίνοντο θαρρεῖν τε παρακελευομένων καὶ ἄγειν ἐπὶ τὸν ἀγῶνα ἀξιούντων. ἐπειδὴ δὲ ἐπαύσατο προέρχεταί τις ἐκ τοῦ πλήθους, Μάρκος Φλαβολήιος ὄνομα, ἀνὴρ δημοτικὸς μὲν καὶ αὐτουργός, οὐ μὴν τῶν ἀπερριμμένων τις, ἀλλὰ τῶν ἐπαινουμένων δι' ἀρετὴν καὶ τὰ πολέμια ἄλκιμος, καὶ δι' ἄμφω ταῦτα ἑνὸς τῶν ταγμά-
1764 των τῇ λαμπροτάτῃ ἀρχῇ κεκοσμημένος, ᾗ τὰς ἑξήκοντα ἑκατονταρχίας ἕπεσθαί τε καὶ τὸ κελευόμενον ὑπηρετεῖν κελεύει ὁ νόμος. τούτους Ῥωμαῖοι τοὺς ἡγεμόνας τῇ πατρίῳ γλώττῃ πριμοπίλους καλοῦσιν. οὗτος ὁ ἀνήρ· ἦν δὲ πρὸς τοῖς ἄλλοις μέγας τε καὶ

καλὸς ἰδεῖν· στὰς ὅθεν ἅπασιν ἔμελλεν ἔσεσθαι φανερός, Ἐπεὶ τοῦτο, ἔφησεν, ὦ ὕπατοι, δεδοίκατε μὴ τὰ ἔργα ἡμῶν οὐχ ὅμοια γένηται τοῖς λόγοις; ἐγὼ πρῶτος ὑμῖν ὑπὲρ ἐμαυτοῦ τὸ βέβαιον τῆς ὑποσχέσεως ἐκ τῆς μεγίστης πίστεως παρέξομαι· καὶ ὑμεῖς δέ, ὦ πολῖται τε καὶ τῆς αὐτῆς κοινωνοὶ τύχης, ὅσοι διεγνώκατε εἰς ἶσον καταστῆσαι τὰ ἔργα τοῖς λόγοις, οὐκ ἂν ἁμαρτάνοιτε τὸ αὐτὸ ποιοῦντες ἐμοί. Ταῦτ' εἰπὼν καὶ τὸ ξίφος ἀνατείνας, ὤμοσε τὸν ἐπιχώριόν τε Ῥωμαίοις καὶ κράτιστον ὅρκον, τὴν ἀγαθὴν ἑαυτοῦ πίστιν, νικήσας τοὺς πολεμίους ἥξειν εἰς τὴν πόλιν, ἄλλως δὲ οὔ. τοῦτον ὀμόσαντος τοῦ Φλαβοληίου τὸν ὅρκον, πολὺς ἐξ ἁπάντων ἔπαινος ἐγένετο· καὶ αὐτίκα οἵ τε ὕπατοι ἀμφότεροι τὸ αὐτὸ 1765
ἔδρων καὶ οἱ τὰς ἐλάττους ἔχοντες στρατηγίας χιλίαρχοί τε καὶ λοχαγοί, τελευτῶσα δὲ ἡ πληθύς. ἐπεὶ δὲ τοῦτ' ἐγένετο, πολλὴ μὲν εὐθυμία πᾶσιν ἐνέπεσε, πολλὴ δὲ φιλότης ἀλλήλων, θάρσος τε αὖ καὶ μένος· καὶ ἀπελθόντες ἐκ τῆς ἐκκλησίας, οἱ μὲν ἵπποις χαλινοὺς ἐνέβαλον, οἱ δὲ ξίφη καὶ λόγχας ἔθηγον, οἱ δὲ τὰ σκεπαστήρια τῶν ὅπλων ἐξέματτον· καὶ ὀλίγου πᾶσα ἦν ἕτοιμος εἰς τὸν ἀγῶνα ἡ στρατιά. οἱ δὲ ὕπατοι τοὺς θεοὺς εὐχαῖς τε καὶ θυσίαις καὶ λιταῖς ἐπικαλεσάμενοι τῆς ἐξόδου σφίσι γενέσθαι ἡγεμόνας, ἐξῆγον ἐκ τοῦ χάρακος ἐν τάξει καὶ κόσμῳ τὸν στρατόν. καὶ οἱ Τυρρηνοὶ κατιόντας αὐτοὺς ἐκ τῶν ἐρυμάτων ἰδόντες, ἐθαύμασάν τε καὶ ἀντεπεξῄεσαν ἁπάσῃ τῇ δυνάμει.

XI. Ὡς δὲ εἰς τὸ πεδίον ἀμφότεροι κατέστησαν, καὶ τὸ πολεμικὸν ἐσήμηναν αἱ σάλπιγγες, ἔθεον ἀλαλάξαντες ὁμόσε· καὶ συμπεσόντες ἀλλήλοις ἱππεῖς τε ἱππεῦσι καὶ πεζοὶ πεζοῖς ἐμάχοντο, καὶ

*πολὺς ἐξ ἀμφοτέρων ἐγίνετο φόνος. οἱ μὲν οὖν τὸ
1766 δεξιὸν ἔχοντες τῶν Ῥωμαίων κέρας, οὗ τὴν ἡγεμο-
νίαν εἶχεν ὁ ἕτερος τῶν ὑπάτων Μάλλιος, ἐξέωσαν
τὸ καθ' ἑαυτοὺς μέρος, καὶ καταβάντες ἀπὸ τῶν
ἵππων ἐμάχοντο πεζοί. οἱ δὲ ἐν τῷ εὐωνύμῳ κέ-
ρατι ταχθέντες ὑπὸ τοῦ δεξιοῦ τῶν πολεμίων ἐκυ-
κλοῦντο. ἦν γὰρ ἡ Τυρρηνῶν φάλαγξ κατὰ τοῦτο τὸ
χωρίον ὑπερπετής τε καὶ οὐκ ὀλίγῳ μείζων τῆς ἑτέ-
ρας. παρερρήγνυτο δὴ ταύτῃ τὸ Ῥωμαικὸν στρά-
τευμα καὶ πολλὰς πληγὰς ἐλάμβανεν. ἡγεῖτο δὲ
τούτου τοῦ κέρως Κόιντος Φάβιος, πρεσβευτὴς καὶ
ἀντιστράτηγος ὤν, ὁ δὶς ὑπατεύσας· καὶ μέχρι πολ-
λοῦ ἀντεῖχε τραύματα λαμβάνων παντοδαπά· ἔπειτα
λόγχῃ βληθεὶς εἰς τὰ στέρνα μέχρι τῶν σπλάγχνων
ἐλθούσης τῆς αἰχμῆς ἔξαιμος γενόμενος πίπτει.
ὡς δὲ τοῦτ' ἤκουσεν ὁ ἕτερος τῶν ὑπάτων, Μάρκος
Φάβιος· ἦν δὲ κατὰ μέσην τὴν φάλαγγα τεταγμέ-
νος· τοὺς κρατίστους τῶν λόχων ἀναλαβὼν καὶ τὸν
1767 ἕτερον τῶν ἀδελφῶν Καίσωνα Φάβιον ἀνακαλεσά-
μενος, παρήλαυνεν [ἐπὶ] τὴν ἑαυτοῦ φάλαγγα καὶ
μέχρι πολλοῦ προελθών, ἐπειδὴ παρήλλαξεν τὸ δε-
ξιὸν τῶν πολεμίων κέρας, ἤλαυνεν ἐπὶ τοὺς κυκλου-
μένους. ἐμπεσὼν δὲ αὐτοῖς, φόνον τε τοῖς ἐν
χερσὶ ποιεῖ πολὺν καὶ φυγὴν τῶν πρόσω· τόν τε
ἀδελφὸν ἔτι ἐμπνέοντα καταλαβὼν αἴρεται. ἐκεῖνος
μὲν οὖν οὐ πολὺν ἔτι χρόνον ἐπιβιοὺς ἀποθνήσκει·
τοῖς δὲ τιμωροῦσιν αὐτῷ θυμὸς ἔτι μείζων παρέστη
[καὶ μείζων] πρὸς τὸ ἀντίπαλον· καὶ οὐδὲν ἔτι τῆς
ἰδίας ψυχῆς προνοούμενοι σὺν ὀλίγοις εἰς μέσους
ἐμπεσόντες τοὺς μάλιστα συνεστηκότας τῶν πολε-
μίων, σωροὺς ἐξεπλήρουν νεκρῶν. κατὰ μὲν δὴ τοῦτο
τὸ μέρος ἔκαμεν ἡ Τυρρηνῶν φάλαγξ, καὶ οἱ πρότε-*

ρον ὠσάμενοι τοὺς πολεμίους ὑπὸ τῶν κεκρατημέ-
νων ἀνεκόπησαν. οἱ δὲ τὸ εὐώνυμον ἔχοντες κέρας
κάμνοντες ἤδη καὶ φυγῆς ἄρχοντες, ἔνθα ὁ Μάλλιος
ἦν, ἐτρέψαντο τοὺς καθ' ἑαυτούς. παλτῷ γάρ τις βα- 1768
λὼν τὸν Μάλλιον διὰ τοῦ γόνατος ἄχρι τῆς ἰγνύας δι-
ήρεισε τὴν λόγχην· καὶ τὸν μὲν οἱ πέριξ ἄραντες ἐπὶ
τὴν παρεμβολὴν ἀπεκόμιζον, οἱ δὲ πολέμιοι τὸν ἡγε-
μόνα τῶν Ῥωμαίων τεθνηκέναι δόξαντες ἐπερρώ-
σθησαν, καὶ παραβοηθησάντων αὐτοῖς τῶν ἑτέρων
ἐνέκειντο τοῖς Ῥωμαίοις οὐκ ἔχουσιν ἡγεμόνα. ἠναγ-
κάσθησαν δὲ πάλιν οἱ Φάβιοι καταλιπόντες τὸ εὐώ-
νυμον κέρας τῷ δεξιῷ βοηθεῖν· καὶ οἱ Τυρρηνοὶ
προσιόντας αὐτοὺς στίφει καρτερῷ μαθόντες τῆς μὲν
ἐπὶ πλέον διώξεως ἀποτρέπονται, πυκνώσαντες δὲ
τοὺς λόχους ἐμάχοντο ἐν τάξει, καὶ πολλοὺς μὲν τῶν
σφετέρων ἀπέβαλον, πολλοὺς δὲ καὶ τῶν Ῥωμαίων
ἀπέκτειναν.

XII. Ἐν ᾧ δὲ ταῦτ' ἐγίνετο, οἱ τὸν χάρακα τὸν
ἐκλειφθέντα ὑπὸ τοῦ Μαλλίου καταλαβόμενοι Τυρ-
ρηνοὶ συνθήματος ἀρθέντος ὑπὸ τοῦ στρατηγοῦ
σὺν τάχει πολλῷ καὶ προθυμίᾳ μεγάλῃ χωροῦντες
ἐπὶ τὸν ἕτερον ἠπείγοντο τῶν Ῥωμαίων χάρακα, 1769
ὡς οὐκ ἀξιοχρέῳ δυνάμει φυλαττόμενον. καὶ ἦν ἡ
δόξα αὐτῶν ἀληθής. ἔξω γὰρ τῶν τριαρίων καὶ ὀλί-
γων ἄλλων τῶν ἐν ἀκμῇ τὸ λοιπὸν πλῆθος ἐμπό-
ρων τε καὶ θεραπόντων καὶ χειροτεχνῶν ἦν ἐν αὐτῷ·
γίνεταί τε πολλῶν εἰς ὀλίγον συνελαθέντων χωρίον·
περὶ γὰρ ταῖς πύλαις ὁ ἀγὼν ἦν· ὀξεῖα καὶ χαλεπὴ
μάχη, καὶ νεκροὶ παρ' ἀμφοτέρων πολλοί. ἐν τού-
τῳ τῷ ἔργῳ ὅ τε [Μάλλιος] ὕπατος ἐκβοηθῶν ἅμα
τοῖς ἱππεῦσιν, ἐπειδὴ ὁ ἵππος ἔπεσε συγκατενεχθεὶς
καὶ ἀδύνατος ὢν ἀναστῆναι ὑπὸ πλήθους τραυμάτων,

ἀποθνήσκει καὶ πολλοὶ καὶ ἀγαθοὶ περὶ αὐτὸν
ἄλλοι νέοι. μετὰ δὲ τὸ πάθος τοῦτο εὐθὺς ὁ χάραξ
ἡλίσκετο, καὶ τέλος εἶχε τοῖς Τυρρηνοῖς τὰ μαν-
τεύματα. εἰ μὲν οὖν ἐταμιεύσαντο τὴν παροῦσαν
εὐτυχίαν καὶ διὰ φυλακῆς εἶχον τὸν χάρακα, τάς
1770 τε ἀποσκευὰς τῶν Ῥωμαίων κατέσχον καὶ αὐτοὺς
αἰσχρῶς ἀπελθεῖν ἠνάγκαζον· νῦν δὲ πρὸς ἁρπα-
γὴν τῶν ἀπολειφθέντων τραπόμενοι καὶ ἀναψύ-
χοντες τὸ λοιπὸν οἱ πλείους, καλὴν ἄγραν ἐκ τῶν
χειρῶν ἀφῃρέθησαν. ὡς γὰρ ἀπηγγέλθη θατέρῳ τῶν
ὑπάτων ἡ τοῦ χάρακος ἅλωσις, ἠπείγετο σὺν τοῖς
ἀρίστοις ἱππέων τε καὶ πεζῶν. καὶ οἱ Τυρρηνοὶ μα-
θόντες αὐτὸν ἐπιόντα περιεστεφάνωσαν τὸν χάρακα,
μάχη τε αὐτῶν γίνεται καρτερά, τῶν μὲν ἀνασώσα-
σθαι βουλομένων τὰ σφέτερα, τῶν δὲ μὴ πασσυδὶ
διαφθαρῶσιν ἁλόντος τοῦ χάρακος δεδοικότων.
χρόνου δὲ γινομένου πλείονος καὶ τῶν Τυρρηνῶν
πολλὰ πλεονεκτούντων· ἦν γὰρ αὐτοῖς ἐξ ὑπερδε-
ξίων τε χωρίων καὶ πρὸς ἀνθρώπους δι' ἡμέρας
ὅλης κεκμηκότας ἡ μάχη· Τῖτος Σίκκιος ὁ πρε-
σβευτὴς καὶ ἀντιστράτηγος, κοινωσάμενος τῷ ὑπά-
τῳ τὴν αὐτοῦ διάνοιαν τὸ ἀνακλητικὸν ἐκέλευε
1771 σημαίνειν, καὶ καθ' ἓν ἅπαντας γενομένους μιᾷ
προσβάλλειν πλευρᾷ τοῦ χάρακος, καθ' ὃ μάλιστα
τὸ χωρίον ἦν ἐπιμαχώτατον· τὰ δὲ κατὰ τὰς πύλας
εἴασε μέρη κατά τινα εἰκότα λογισμόν, ὃς οὐκ
ἐψεύσατο αὐτόν, ὅτι σωθήσεσθαι μὲν ἐλπίσαντες
οἱ Τυρρηνοὶ μεθήσονται τοῦ χάρακος, ἐν ἀπογνώ-
σει δὲ τούτου γενόμενοι κυκλώσεώς τε πάντοθεν ὑπὸ
τῶν πολεμίων γενομένης καὶ οὐδεμιᾶς ὑπαρχούσης
ἐξόδου ἀναγκαῖον ἕξουσι τὸ εὔτολμον. γενομένης δὲ
καθ' ἓν χωρίον τῆς προσβολῆς οὐκέτι πρὸς ἀλκὴν οἱ

Τυρρηνοὶ ἐτράποντο, ἀλλ' ἀνοίξαντες τὰς πύλας ἐπὶ τὸν ἑαυτῶν ἀνεσώζοντο χάρακα.

XIII. Ὁ δ' ὕπατος ἐπειδὴ τὸ δεινὸν ἀπεώσατο, παρεβοήθει πάλιν τοῖς ἐν τῷ πεδίῳ. αὕτη μεγίστη λέγεται τῶν πρὸ αὐτῆς γενέσθαι Ῥωμαίοις μάχη, πλήθει τε ἀνθρώπων καὶ μήκει χρόνου καὶ τῷ ἀγχιστρόφῳ τῆς τύχης. αὐτῶν μὲν γὰρ τῶν ἐκ τῆς πό- 1772
λεως Ῥωμαίων ἡ κρατίστη τε καὶ ἐπίλεκτος ἀκμὴ δισμυρίων μάλιστα πεζῶν ἐγένετο, καὶ τῶν συντεταγμένων τοῖς τέτταρσι τάγμασιν ἱππέων ὁμοῦ τι χιλίων καὶ διακοσίων, ἀποίκων δὲ καὶ συμμάχων ἑτέρα τοσαύτη. χρόνος δ' ἐμηκύνθη τοῦ ἀγῶνος ὀλίγῳ πρότερον τῆς μεσημβρίας ἀρξάμενος μέχρι δύσεως ἡλίου. τὰ δὲ τῆς τύχης μέχρι πολλοῦ τῇδε καὶ τῇδε νίκαις τε καὶ ἥτταις ταλαντευόμενα διέμεινεν· ὑπάτου δὲ θάνατος ἐγένετο καὶ πρεσβευτοῦ δὶς ὑπατεύσαντος καὶ ἄλλων πολλῶν ἡγεμόνων καὶ ταξιάρχων καὶ λοχαγῶν, ὅσων οὐδέπω πρότερον. τὸ μέντοι κράτος τοῦ ἀγῶνος ἐδόκει περὶ τοὺς Ῥωμαίους γεγονέναι κατ' ἄλλο μὲν οὐδέν, ὅτι δὲ τῇ ἐπιούσῃ νυκτὶ καταλιπόντες τὸν χάρακα οἱ Τυρρηνοὶ ἀνέζευξαν. τῇ δ' ἑξῆς ἡμέρᾳ πρὸς ἁρπαγὰς τῆς ἐκλειφθείσης ὑπὸ τῶν Τυρρηνῶν παρεμβολῆς οἱ Ῥωμαῖοι τραπόμενοι καὶ ταφὰς ποιησάμενοι τῶν σφετέρων νεκρῶν ἀπῆλθον εἰς τὸν 1773
ἑαυτῶν χάρακα. ἐκεῖ δ' ἐκκλησίαν ποιησάμενοι τοῖς ἀγωνισαμένοις λαμπρῶς τὰς ἀριστείους ἀπέδοσαν τιμάς, πρώτῳ μὲν Καίσωνι Φαβίῳ τῷ τοῦ ὑπάτου ἀδελφῷ μεγάλα καὶ θαυμαστὰ ἔργα ἀποδειξαμένῳ· δευτέρῳ δὲ τῷ Σικκίῳ, τῷ διαπραξαμένῳ τὸν χάρακα ἀνασεσῶσθαι· τρίτῳ δὲ Μάρκῳ Φλαβοληίῳ τῷ ἡγεμόνι τοῦ τάγματος, τοῦ τε ὅρκου χάριν καὶ τῆς παρὰ τὰ δεινὰ ῥώμης. διαπραξάμενοι δὲ ταῦτα καὶ μείναν-

τες ἡμέρας ὀλίγας ἐπὶ τοῦ χάρακος, ὡς οὐδεὶς ἀντεπεξῄει τῶν πολεμίων μαχησόμενος, ἀπῆεσαν ἐπ᾽ οἴκου. πάντων δὲ τῶν κατὰ τὴν πόλιν, ὡς ἐπὶ μεγίστῳ ἀγῶνι κάλλιστον τέλος εἰληφότι, τὴν ἐπινίκιον τιμὴν τοῦ θριάμβου τῷ περιόντι ὑπάτῳ προσθεῖναι βουλομένων, ἠρνήσατο τὴν χάριν αὐτῶν ὁ ὕπατος, οὔτε ὅσιον εἶναι λέγων οὔτε θεμιτὸν ἐπ᾽ ἀδελφοῦ θανάτῳ καὶ συνάρχοντος ἀποβολῇ πομπεύειν καὶ στεφανηφορεῖν· ἀποθεὶς δὲ τὰς σημαίας καὶ τοὺς στρατιώτας ἀπολύσας
1774 ἐπὶ τὰ οἰκεῖα τὴν ὑπατείαν ἀπωμόσατο, δυεῖν ἔτι μηνῶν εἰς τὸν ἐνιαύσιον χρόνον λειπομένων, ἀδύνατος ὢν τὰ τῆς ἀρχῆς ἔτι πράττειν. ἐταλαιπώρει γὰρ ὑπὸ τραύματος ἐξαισίου καὶ ἦν κλινοπετής.

XIIII. Ἑλομένης δὲ τῆς βουλῆς μεσοβασιλεῖς τῶν ἀρχαιρεσίων ἕνεκα, καὶ τοῦ δευτέρου μεσοβασιλέως συγκαλέσαντος εἰς τὸ πεδίον τοὺς λόχους, ἀποδείκνυται Καίσων Φάβιος ὁ τὰ ἀριστεῖα λαβὼν ἐκ τῆς μάχης, ἀδελφὸς δὲ τοῦ τὴν ἀρχὴν ἀποθεμένου, τὸ τρίτον ὕπατος· καὶ σὺν αὐτῷ Τῖτος Οὐεργίνιος. οὗτοι διαλαχόντες τὰς δυνάμεις ἐξῄεσαν εἰς τὴν ὕπαιθρον· Φάβιος μὲν Αἰκανοῖς πολεμήσων προνομεύουσι τοὺς Λατίνων ἀγρούς, Οὐεργίνιος δὲ Οὐιεντανοῖς. Αἰκανοὶ μὲν οὖν, ἐπειδὴ στρατὸν ἐλευσόμενον ἐπ᾽ αὐτοὺς ἔγνωσαν, ἀναστάντες ἐκ τῆς πολεμίας διὰ τάχους ἀπῆλθον εἰς τὰς ἑαυτῶν πόλεις· καὶ μετὰ ταῦτα
1775 λεηλατουμένης τῆς σφετέρας γῆς ἠνείχοντο, ὥστε πολλῶν κρατῆσαι χρημάτων τὸν ὕπατον καὶ σωμάτων καὶ ἄλλης λείας ἐξ ἐφόδου. Οὐιεντανοὶ δὲ κατ᾽ ἀρχὰς ἐντὸς τείχους μένοντες, ἐπειδὴ καιρὸν ἔχειν ἔδοξαν ἐπιτήδειον, ἐπέθεντο τοῖς πολεμίοις ἐσκεδασμένοις ἀνὰ τὰ πεδία καὶ πρὸς ἁρπαγὴν τετραμμένοις τῆς λείας. ἔχοντες δὲ πολλὴν καὶ συντεταγμένην δύναμιν

ἐμβάλλουσιν εἰς αὐτούς, καὶ τήν τε λείαν ἀφαιροῦν-
ται, καὶ τοὺς ὁμόσε χωροῦντας, οὓς μὲν ἀποκτείνου-
σιν, οὓς δ' εἰς φυγὴν τρέπουσι· καὶ εἰ μὴ Τῖτος
Σίκκιος πρεσβευτὴς τότε ὢν στίφει συντεταγμένῳ
πεζῶν τε καὶ ἱππέων παραβοηθήσας ἐπέσχεν αὐτούς,
οὐδὲν ἂν τὸ κωλῦσον ἦν πᾶσαν ἀπολέσθαι τὴν στρα-
τιάν. ἐκείνου δ' ἐμποδὼν γενομένου συνελθεῖν ἔφθα-
σαν οἱ λοιποὶ οἱ καθ' ἕνα διεσκεδασμένοι· πάντες
δὲ ἐν ταὐτῷ γενόμενοι λόφον τινὰ καταλαμβάνονται
περὶ δείλην ὀψίαν, καὶ τὴν ἐπιοῦσαν νύκτα ἐν τούτῳ
ἔμειναν. ἐπαρθέντες δὲ Οὐιεντανοὶ τῷ κατορθώματι
πλησίον τοῦ λόφου τίθενται τὰ ὅπλα, καὶ τοὺς ἐκ
τῆς πόλεως ἐκάλουν ὡς κατακεκλεικότες τοὺς Ῥωμαίους 1776
εἰς χωρίον, ἔνθα οὐδὲν τῶν ἐπιτηδείων ἔμελλον ἕξειν,
καὶ προσαναγκάσοντες οὐκ εἰς μακρὰν παραδοῦναι
σφίσι τὰ ὅπλα. γίνεταί τε αὐτῶν συχνοῦ ἐλθόντος
ὄχλου δύο στρατεύματα περὶ τὰς ἐπιμάχους λαγόνας
τοῦ λόφου, πολλὰ δὲ ἄλλα φρούρια βραχύτερα κατὰ
τοὺς ἧττον ἐπικαίρους τόπους· καὶ πάντα ἦν μεστὰ
ὅπλων. ὁ δ' ἕτερος τῶν ὑπάτων Φάβιος γραμμάτων
παρὰ τοῦ συνάρχοντος ἀφικομένων ἐπιγνοὺς [ὡς] ὅτι
ἐν ἐσχάτοις εἰσὶν οἱ κατακλεισθέντες ἐν τῷ λόφῳ,
καὶ κινδυνεύσουσιν εἰ μή τις αὐτοῖς βοηθήσει λιμῷ
ἁλῶναι, ἀναστήσας τὸν στρατὸν ἦγεν ἐπὶ τοὺς Οὐιεν-
τανοὺς σὺν τάχει· καὶ εἰ μιᾷ βραδύτερον ἡμέρᾳ διή-
νυσε τὴν ὁδόν, οὐδὲν ἂν ὤνησεν, ἀλλὰ διεφθαρμένην
τὴν ἐκεῖ στρατιὰν κατέλαβε. πιεζόμενοι γὰρ τῇ σπά-
νει τῶν ἀναγκαίων οἱ κατέχοντες τὸν λόφον ἐξῆλθον
ὡς τὸν εὐπρεπέστατον αἱρησόμενοι τῶν θανάτων,
καὶ συμβαλόντες τοῖς πολεμίοις ἐμάχοντο κεκμηκότες
οἱ πλείους τὰ σώματα λιμῷ τε καὶ δίψει καὶ ἀγρυπνίᾳ
καὶ τῇ ἄλλῃ κακώσει. μετ' οὐ πολὺ δὲ ὡς τὸ τοῦ 1777

Φαβίου στράτευμα προσιὸν ὤφθη πολύ τε καὶ συντεταγμένον, θάρσος μὲν ἔφερε τοῖς σφετέροις, δέος δὲ τοῖς πολεμίοις· καὶ οἱ Τυρρηνοὶ οὐκέτι ἀξιόμαχοι εἶναι νομίσαντες πρὸς ἀγαθήν τε καὶ ἀκμῆτα δύναμιν εἰς ἀγῶνα χωρεῖν, ᾤχοντο ἐκλιπόντες τοὺς χάρακας. ὡς δ' εἰς ταὐτὸ συνῆλθον αἱ τῶν Ῥωμαίων δυνάμεις ἀμφότεραι, στρατόπεδόν τε ποιοῦνται μέγα πλησίον τῆς πόλεως ἐν ἐχυρῷ, καὶ πολλὰς ἡμέρας αὐτόθι διατρίψαντες καὶ τὴν ἀρίστην τῶν Οὐιεντανῶν χώραν λεηλατήσαντες ἀπῆγον ἐπ' οἴκου τὴν στρατιάν. ὡς δ' ἔγνωσαν οἱ Οὐιεντανοὶ τὰς δυνάμεις τῶν Ῥωμαίων ἀφειμένας ἀπὸ τῶν σημαιῶν, τὴν εὔζωνον ἀναλαβόντες νεότητα, ἥν τε αὐτοὶ συντεταγμένην εἶχον καὶ τὴν παρὰ τῶν πλησιοχώρων παροῦσαν, ἐμβάλλουσιν εἰς τὰ προσκείμενα τῇ σφετέρᾳ χώρᾳ πεδία, καὶ διαρπάζουσι καρπῶν τε καὶ βοσκημάτων καὶ ἀνθρώπων ὄντα μεστά. κατέβησαν γὰρ ἐκ τῶν ἐρυμάτων οἱ γεωργοὶ χιλοῦ τε τῶν βοσκημάτων
1778 *ἕνεκα καὶ ἐργασίας τῶν ἀγρῶν, πιστεύοντες τῇ σφετέρᾳ στρατιᾷ προκαθημένῃ καὶ οὐ φθάσαντες ἀπελθούσης ἀνασκευάσασθαι πάλιν, οὐδ' ἐλπίσαντες τοσαῦτα κεκακωμένους τοὺς Οὐιεντανοὺς ταχεῖαν οὕτως ἀντεπιχείρησιν κατὰ τοῦ ἀντιπάλου ποιήσεσθαι. αὕτη χρόνου μὲν μήκει βραχεῖα ἐγένετο ἡ τῶν Οὐιεντανῶν εἰς τὴν Ῥωμαίων γῆν ἐμβολή, πλήθει δὲ χώρας ἣν ἐπῆλθον ἐν τοῖς πάνυ μεγάλη, καὶ ἀχθηδόνα σὺν αἰσχύνῃ Ῥωμαίοις ἀήθη παρέσχεν ἄχρι Τεβέρεώς τε ποταμοῦ καὶ ὄρους Ἰανίκλου στάδια τῆς Ῥώμης οὐδ' εἴκοσιν ἀφεστῶτος ἀφικομένη. [ἡ δὲ] κωλύσουσα γὰρ δύναμις ἐπὶ πλεῖον χωρεῖν τὰ πολέμια οὐκ ἦν ὑπὸ σημαίαις. ἔφθασε γοῦν τὸ τῶν*

Οὐιεντανῶν στράτευμα πρὶν συνελθεῖν τε καὶ λοχι- 1779
σθῆναι τοὺς Ῥωμαίους ἀπελθόν.

XV. Συναχθείσης δὲ μετὰ τοῦτο τῆς βουλῆς ὑπὸ
τῶν ὑπάτων, καὶ σκέψεως γενομένης τίνα χρὴ πολε-
μεῖν τοῖς Οὐιεντανοῖς τρόπον, ἡ νικῶσα ἦν γνώμη,
στράτευμα συνεστηκὸς ἔχειν ἐπὶ τοῖς ὁρίοις, ὃ διὰ
φυλακῆς ἕξει τὴν χώραν θυραυλοῦν καὶ αἰεὶ μένον
ἐν τοῖς ὅπλοις. ἐλύπει δ' αὐτοὺς ἥ τε εἰς τοὺς φρου-
ροὺς δαπάνη πολλὴ σφόδρα ἐσομένη, τοῦ τε κοινοῦ
ταμιείου διὰ τὰς συνεχεῖς στρατείας ἐξαναλουμένου
καὶ τῶν ἰδίων βίων ἀπειρηκότων ταῖς εἰσφοραῖς·
καὶ ἔτι μᾶλλον ἡ τῶν ἀποσταλησομένων φρουρῶν
καταγραφὴ τίνα τρόπον ἂν γένοιτο, ὡς οὐκ ἂν 1780
ἑκουσίων γέ τινων προκειμένων ἁπάντων, καὶ μὴ ἐκ
διαδοχῆς ἀλλὰ συνεχῶς ταλαιπωρεῖν ὑποστησομέ-
νων. ἀδημονούσης δ' αὐτῆς ἐπ' ἀμφοτέροις τούτοις,
συγκαλέσαντες οἱ δύο Φάβιοι τοὺς μετέχοντας τοῦ
σφετέρου γένους καὶ βουλευσάμενοι μετ' αὐτῶν
ὑπέσχοντο τῇ βουλῇ τοῦτο τὸ κινδύνευμα αὐτοὶ
περὶ πάντων ἑκόντες ὑπομενεῖν, πελάτας τε τοὺς
ἑαυτῶν ἐπαγόμενοι καὶ φίλους καὶ τέλεσι τοῖς ἰδίοις
ὅσον ἂν χρόνον ὁ πόλεμος διαμένῃ στρατευόμενοι.
ἀγασθέντων δ' αὐτοὺς ἁπάντων τοῦ γενναίου τῆς
προθυμίας, καὶ τὸ νικᾶν παρ' ἓν τοῦτο τὸ ἔργον
τιθεμένων, κλεινοὶ καὶ περιβόητοι καθ' ὅλην τὴν
πόλιν ὄντες ἐξῄεσαν ἀναλαβόντες τὰ ὅπλα σὺν
εὐχαῖς καὶ θυσίαις. ἡγεῖτο δ' αὐτῶν Μάρκος Φά-
βιος ὁ τῷ παρελθόντι ὑπατεύσας ἔτει καὶ νικήσας
τοὺς Τυρρηνοὺς τῇ μάχῃ, τετρακισχιλίους μάλιστα
ἐπαγόμενος, ὧν τὸ μὲν πλεῖον πελατῶν τε καὶ ἑταί-
ρων ἦν, ἐκ δὲ τοῦ Φαβίων γένους ἓξ καὶ τριακόσιοι
ἄνδρες. εἵπετο δ' αὐτοῖς μετ' οὐ πολὺ καὶ ἡ Ῥωμαίων 1781

δύναμις, ἧς ἡγεῖτο Καίσων Φάβιος ὁ ἕτερος τῶν ὑπάτων. γενόμενοι δὲ ποταμοῦ Κρεμέρα πλησίον, ὃς οὐ μακρὰν ἀπέχει τῆς Οὐιεντανῶν πόλεως, ὑπὲρ ὄχθου τινὸς ἀποτόμου καὶ περιρρῶγος ἐπετείχιζον αὐτοῖς φρούριον ἱκανὸν φυλάττεσθαι τοσαύτῃ στρατιᾷ τάφρους τε ὀρυξάμενοι περὶ αὐτὸ διπλᾶς καὶ πύργους ἐγείραντες πυκνούς· καὶ ὠνομάσθη τὸ φρούριον ἐπὶ τοῦ ποταμοῦ, Κρεμέρα. οἷα δὲ πολυχειρίας τε ἐργαζομένης καὶ ὑπάτου συλλαμβάνοντος, θᾶττον ἢ κατὰ δόξαν ἐτελέσθη τὸ ἔργον. καὶ μετὰ τοῦτο ἐξαγαγὼν τὴν δύναμιν παρήλασεν ἐπὶ θάτερα [τὰ] μέρη τῆς Οὐιεντανῶν χώρας τὰ πρὸς τὴν ἄλλην ἐστραμμένα Τυρρηνίαν, ἔνθα ἦν τοῖς Οὐιεντανοῖς τὰ βοσκήματα, οὐδέποτε στρατὸν ἥξειν Ῥωμαίων ἐκεῖ προσδεχομένοις. περιβαλόμενος δὲ πολλὴν λείαν ἀπῆγεν ἐπὶ τὸ νεόκτιστον φρούριον, χαίρων ἐπὶ τῇ ἄγρᾳ κατ᾽ ἀμφότερα,
1782 τῆς τε οὐ διὰ μακροῦ τῶν πολεμίων τιμωρίας ἕνεκα, καὶ ὅτι τοῖς φρουροῖς τοῦ χωρίου πολλὴν ἔμελλε παρέξειν εὐπορίαν. οὐδὲν γὰρ οὔτ᾽ εἰς τὸ δημόσιον ἀπήνεγκεν, οὔτε τοῖς στρατευομένοις ἰδιώταις ἀπένειμεν, ἀλλὰ καὶ πρόβατα καὶ ὑποζύγια καὶ ζεύγη βοικὰ καὶ σίδηρον καὶ τἆλλα ὅσα εἰς γεωργίαν ἐπιτήδεια ἦν τοῖς περιπόλοις τῆς χώρας ἐχαρίσατο. ταῦτα διαπραξάμενος ἀπῆγεν ἐπ᾽ οἴκου τὴν στρατιάν. τοῖς δὲ Οὐιεντανοῖς μετὰ τὸν ἐπιτειχισμὸν τοῦ χωρίου κακῶς πάνυ τὰ πράγματ᾽ εἶχεν, οὔτε τὴν γῆν ἔτι δυναμένοις ἀσφαλῶς γεωργεῖν οὔτε τὰς ἔξωθεν εἰσαγομένας ἀγορὰς δέχεσθαι. νείμαντες γὰρ εἰς τέτταρα μέρη τὴν στρατιὰν οἱ Φάβιοι, τῷ μὲν ἑνὶ διεφύλαττον τὸ χωρίον, τοῖς δὲ τρισὶ τὴν χώραν τῶν πολεμίων ἄγοντές τε καὶ φέροντες ἀεὶ διετέλουν· καὶ πολλάκις τῶν Οὐιεντανῶν ἐκ τοῦ φανεροῦ τε

αὐτοῖς ἐπιθεμένων χειρὶ οὐκ ὀλίγῃ καὶ εἰς χωρία
ἐνέδραις κατεχόμενα ὑπαγομένων, περιῆσαν ἀμφοτέ-
ρως καὶ πολλοὺς νεκροὺς ποιήσαντες ἀσφαλῶς ἀπήε-
σαν εἰς τὸ χωρίον. ὥστε οὐδ᾽ ὁμόσε χωρεῖν αὐτοῖς 1783
ἔτι οἱ πολέμιοι ἐτόλμων, ἀλλὰ τειχήρεις μένοντες τὰ
πολλὰ καὶ κλέπτοντες τὰς ἐξόδους διετέλουν, καὶ
ὁ μὲν χειμὼν ἐκεῖνος οὕτως ἐτελεύτα.

XVI. *Τῷ δὲ κατόπιν ἔτει Λευκίου τε Αἰμιλίου*
καὶ Γαίου Σερουιλίου τὴν ὑπατείαν παρειληφότων
ἀπηγγέλη Ῥωμαίοις, ὅτι Οὐολοῦσκοι καὶ Αἰκανοὶ
συνθήκας πεποίηνται στρατιὰς κατ᾽ αὐτῶν ἅμα
ἐξάγειν, καὶ οὐ διὰ μακροῦ εἰς τὴν χώραν ἐμβαλοῦσι·
καὶ ἦν ἀληθῆ τὰ λεγόμενα. θᾶττον γοῦν ἢ προσε-
δόκα τις ἀμφότεροι τὰς δυνάμεις ἔχοντες ἐδῄουν τὴν
κατὰ σφᾶς ἕκαστοι χώραν, ὡς οὐχ ἱκανῶν ἐσομένων
Ῥωμαίων τῷ τε Τυρρηνικῷ πολέμῳ ἀντέχειν καὶ
σφᾶς ἐπιόντας δέχεσθαι. καὶ ἕτεροι αὖθις ἥκοντες,
ἐκπεπολεμῶσθαι πρὸς αὐτοὺς Τυρρηνίαν ἀπήγγελλον
ὅλην καὶ παρεσκευάσθαι Οὐιεντανοῖς κοινὴν ἀποστέλ-
λειν συμμαχίαν. κατέφυγον γὰρ ὡς αὐτοὺς ἀδύνατοι 1784
ὄντες ἐξελεῖν δι᾽ ἑαυτῶν τὸ φρούριον Οὐιεντανοί,
συγγενείας τε ὑπομιμνήσκοντες καὶ φιλίας καὶ ὅσους
μετ᾽ αὐτῶν ἤραντο πολέμους διεξιόντες· ἀντὶ πάντων
δὲ τούτων ἀξιοῦντες συνάρασθαι σφίσι τοῦ κατὰ
Ῥωμαίων πολέμου, ὡς σφῶν τε προκαθημένων Τυρ-
ρηνίας ὅλης καὶ τὸν πόλεμον ἀνακωχευόντων τὸν
ἀπὸ Ῥώμης ῥέοντα κατὰ πάντων τῶν ὁμοεθνῶν. καὶ
οἱ Τυρρηνοὶ πεισθέντες ὑπέσχοντο πέμψειν αὐτοῖς
ὅσην ἠξίουν συμμαχίαν. ταῦτα ἡ βουλὴ μαθοῦσα
ἐψηφίσατο τρισσὰς ἐκπέμψειν στρατιάς, καὶ γενο-
μένων ἐν τάχει τῶν καταλόγων, Λεύκιος μὲν Αἰμίλιος
ἐπὶ Τυρρηνοὺς ἐπέμφθη· συνήρατο δ᾽ αὐτῷ τῆς

ἐξόδου Καίσων Φάβιος, ὁ νεωστὶ τὴν ἀρχὴν ἀποθέμενος, δεηθεὶς τῆς βουλῆς ἐπιτρέψαι αὐτῷ τοῖς ἐν Κρεμέρᾳ συγγενέσιν, οὓς ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ φρουρήσοντας τὸ χωρίον ἐξήγαγε, συνεῖναί τε καὶ τῶν αὐτῶν ἀγώνων μετέχειν· καὶ ἐξῆλθε σὺν τοῖς ἀμφ'
1785 αὐτὸν ἐξουσίᾳ κοσμηθεὶς ἀνθυπάτῳ. Γάιος δὲ Σέργιος ὁ ἕτερος τῶν ὑπάτων ἐπὶ Οὐολούσκους ἐστράτευσε· Σερούιος δὲ Φούριος ἀνθύπατος ἐπὶ τὸ Αἰκανῶν ἔθνος. ἑκάστῳ δ' αὐτῶν δύο μὲν τάγματα Ῥωμαίων εἵπετο, Λατίνων δὲ καὶ Ἑρνίκων καὶ τῶν ἄλλων συμμάχων οὐκ ἐλάττω τῆς Ῥωμαικῆς δυνάμεως. τῷ μὲν οὖν ἀνθυπάτῳ Σερουίῳ κατὰ νοῦν ὁ πόλεμος ἐχώρησε καὶ σὺν τάχει. μιᾷ γὰρ ἐτρέψατο τοὺς Αἰκανοὺς μάχῃ καὶ ταύτῃ δίχα πόνου, τῇ πρώτῃ τοὺς πολεμίους ἐκπλήξας ἐφόδῳ· καὶ τὸ λοιπὸν ἐδῄου τὴν γῆν αὐτῶν καταπεφευγότων εἰς τὰ ἐρύματα. Σερουιλίῳ δὲ θατέρῳ τῶν ὑπάτων ὑπὸ σπουδῆς τε καὶ αὐθαδείας ἐπὶ τὸν ἀγῶνα χωρήσαντι πολὺ τὸ παρὰ γνώμην ἀπήντησε, καρτερῶς πάνυ τῶν Οὐολούσκων ἀντιταξαμένων, ὥστε ἠναγκάσθη πολλοὺς καὶ ἀγαθοὺς ἄνδρας ἀπολέσας μηκέτι χωρεῖν ὁμόσε τοῖς πολεμίοις, ἀλλ' ἐν τῷ χάρακι ὑπομένων ἀκροβολισμοῖς καὶ ψιλῶν συμπλοκαῖς διαφέρειν ἔγνω τὸν πόλεμον. Λεύκιος δ' Αἰμίλιος ὁ πεμφθεὶς ἐπὶ Τυρ-
1786 ρηνίας, εὑρὼν ἐξεστρατευμένους πρὸ τῆς πόλεως τοὺς Οὐιεντανοὺς καὶ σὺν αὐτοῖς πολὺ τὸ παρὰ τῶν ὁμοεθνῶν ἐπικουρικόν, οὐδὲν ἔτι μελλήσας ἔργου εἴχετο· ἡμέραν δ' ἀφ' ἧς τὸν χάρακα ἔθετο μίαν διαλιπὼν ἐξῆγε τὰς δυνάμεις εἰς μάχην, θρασέως πάνυ τῶν Οὐιεντανῶν ὁμόσε χωρούντων. ἰσορρόπου δὲ τοῦ ἀγῶνος γινομένου, τοὺς ἱππεῖς ἀναλαβὼν ἐνσείει τοῖς πολεμίοις κατὰ τὸ δεξιὸν κέρας, καὶ ἐπειδὴ

τοῦτο διεσάλευσεν ἐπὶ θάτερον ἐχώρει, ὅπου μὲν ἱππάσιμον εἴη χωρίον ἀπὸ τῶν ἵππων μαχόμενος, ὅπου δὲ ἄνιππον ἀποκαταβαίνων τε καὶ πεζὸς ἀγωνιζόμενος. πονούντων δὲ τῶν κεράτων ἀμφοτέρων οὐδ' οἱ κατὰ μέσον ἔτι ἀντεῖχον, ἀλλ' ἐξεώσθησαν ὑπὸ τῶν πεζῶν, καὶ μετὰ τοῦτο πάντες ἔφυγον ἐπὶ τὸν χάρακα. ὁ δ' Αἰμίλιος ἠκολούθει τοῖς φεύγουσι συντεταγμένην τὴν δύναμιν ἔχων, καὶ πολλοὺς διέφθειρε. γενόμενος δὲ πλησίον τοῦ χάρακος καὶ προσβαλὼν ἐκ διαδοχῆς, ἐκείνην τε παρέμεινε τὴν ἡμέραν καὶ τὴν ἐπιοῦσαν νύκτα· τῇ δ' ἑξῆς ἡμέρᾳ κόπῳ τε καὶ τραύμασι τῶν πολεμίων καὶ ἀγρυπνίᾳ ἀπειρηκότων, 1787 ἐγκρατὴς γίνεται τοῦ χάρακος. οἱ δὲ Τυρρηνοί, ὡς εἶδον ἐπιβαίνοντας ἤδη τοὺς Ῥωμαίους τοῖς περισταυρώμασιν, ἐκλιπόντες τὸ στρατόπεδον ἔφευγον, οἱ μὲν εἰς τὴν πόλιν, οἱ δ' εἰς τὰ πλησίον ὄρη. ταύτην μὲν οὖν τὴν ἡμέραν ἐν τῷ χάρακι τῶν πολεμίων ἔμεινεν ὁ ὕπατος· τῇ δ' ἑξῆς ἡμέρᾳ στεφανώσας τοὺς ἀριστεύσαντας ἐν τῇ μάχῃ ταῖς ἐκπρεπεστάταις δωρεαῖς, πάντα τὰ ἐγκαταληφθέντα ἐν τῷ χάρακι ὑποζύγιά τε καὶ ἀνδράποδα καὶ σκηνὰς πολλῶν ἀγαθῶν γεμούσας τοῖς στρατιώταις ἐχαρίσατο. καὶ ἐγένετο ἐν πολλῇ εὐπορίᾳ τὸ τῶν Ῥωμαίων στράτευμα, ὡς ἐξ οὐδεμιᾶς ἑτέρας πώποτε μάχης. ἁβροδίαιτον γὰρ δὴ καὶ πολυτελὲς τὸ τῶν Τυρρηνῶν ἔθνος ἦν οἴκοι τε καὶ ἐπὶ στρατοπέδου, ὑπεραγάμενον ἔξω τῶν ἀναγκαίων 1788 πλούτου τε καὶ τέχνης ἔργα παντοῖα πρὸς ἡδονὰς μεμηχανημένα καὶ τρυφάς.

XVII. Ταῖς δ' ἑξῆς ἡμέραις ἀπειρηκότες ἤδη τοῖς κακοῖς οἱ Οὐιεντανοὶ τοὺς πρεσβυτάτους τῶν πολιτῶν ἱκετηρίας φέροντας ἀπέστειλαν ὡς τὸν ὕπατον ὑπὲρ τῆς εἰρήνης διαλεξομένους. καὶ οἱ ἄνδρες

ὀλοφυρόμενοί τε καὶ ἀντιβολοῦντες καὶ τἄλλ' ὅσα
ἐπαγωγὰ ἦν εἰς ἔλεον μετὰ πολλῶν δακρύων διεξ-
ιόντες, πείθουσι τὸν ὕπατον ἐπιτρέψαι σφίσι πρε-
σβευτὰς εἰς Ῥώμην τοὺς ὑπὲρ τῆς καταλύσεως τοῦ
πολέμου πρὸς τὴν βουλὴν διαλεξομένους ἀποστεῖλαι·
ἕως δ' ἂν οἱ πρέσβεις ἀφίκωνται φέροντες τὰς ἀπο-
κρίσεις, μηδὲν αὐτῶν κακουργεῖν τὴν χώραν. ἵνα δὲ
αὐτοῖς ἐγγένηται ταῦτα πράττειν, σῖτόν τε ὡμολόγη-
σαν τῇ Ῥωμαίων στρατιᾷ διμήνου παρέξειν, καὶ χρή-
ματα εἰς ὀψωνιασμὸν ἓξ μηνῶν, ὡς ὁ κρατῶν ἔταξε.
καὶ ὁ μὲν ὕπατος λαβὼν τὰ κομισθέντα καὶ διαδοὺς
τῇ στρατιᾷ ποιεῖται τὰς πρὸς αὐτοὺς ἀνοχάς. ἡ δὲ
1789 βουλὴ τῆς πρεσβείας ἀκούσασα, καὶ τὰ τοῦ ὑπάτου
γράμματα δεξαμένη πολλὴν ποιουμένου παράκλησιν
καὶ παραινοῦντος ὡς τάχιστα καταθέσθαι τὸν πρὸς
τοὺς Τυρρηνοὺς πόλεμον, δόγμα ἐξήνεγκε, διδόναι
τὴν εἰρήνην ὡς ᾐτοῦντο οἱ πολέμιοι· ἐφ' οἷς δὲ δι-
καίοις αὕτη γένηται τὸν ὕπατον καταστήσασθαι Λεύ-
κιον Αἰμίλιον, ὡς ἂν αὐτῷ φανῇ κράτιστα ἕξειν. ταύτας
λαβὼν τὰς ἀποκρίσεις ὁ ὕπατος σπένδεται πρὸς τοὺς
Οὐιεντανούς, ἐπιεικεστέραν μᾶλλον ἢ συμφορωτέραν
τοῖς κεκρατηκόσι ποιησάμενος εἰρήνην, οὔτε χώραν
αὐτῶν ἀποτεμόμενος οὔτε χρημάτων ἄλλων ἐπιθεὶς
ζημίαν, οὔτε ὁμήρων δόσει τὸ πιστὸν ἐν τοῖς συγκει-
μένοις βεβαιωσάμενος. τοῦτ' αὐτῷ μέγαν ἤνεγκε
φθόνον, καὶ τοῦ μὴ λαβεῖν παρὰ τῆς βουλῆς τὰς ἐπὶ
τοῖς κατωρθωμένοις χάριτας αἴτιον ἐγένετο. ἐνέστη-
σαν γὰρ αὐτῷ τὸν θρίαμβον αἰτουμένῳ τὴν αὐθά-
δειαν αἰτιώμενοι τῶν συνθηκῶν, ὅτι οὐ μετὰ κοινῆς
γνώμης αὐτὰς ἔπραξεν. ἵνα δὲ μὴ πρὸς ὕβριν ἢ πρὸς
ὀργὴν λάβῃ τὸ πρᾶγμα, ἐπὶ Οὐολούσκους αὐτὸν ἐψη-
1790 φίσαντο τὴν δύναμιν ἀπάγειν ἐπικουρίας τοῦ συνάρ-

χοντος ἕνεκα, εἰ δύναιτο κατορθώσας τὸν ἐκεῖ πόλεμον· ἦν γὰρ ἐν αὐτῷ πολὺ τὸ ἀνδρεῖον· ἀφανίσαι τὰς ἐπὶ τοῖς προτέροις ἁμαρτήμασιν ὀργάς. ὁ δὲ ἀνὴρ ἀγανακτῶν ἐπὶ τῇ ἀτιμίᾳ πολλὴν ἐποιήσατο τῆς βουλῆς ἐν τῷ δήμῳ κατηγορίαν, ὡς ἀχθομένης ἐπὶ τῷ λελύσθαι τὸν πρὸς τοὺς Τυρρηνοὺς πόλεμον. ἔφη δὲ τοῦτ᾿ αὐτοὺς ἐξ ἐπιβουλῆς καὶ ὑπεροψίας τῶν πενήτων ποιεῖν, ἵνα μὴ τῶν ὑπερορίων ἀπαλλαγέντες πολέμων ἀπαιτῶσι τὰς περὶ τῆς κληρουχίας ὑποσχέσεις, πολλοστὸν ἔτος ἤδη φενακιζόμενοι πρὸς αὐτῶν. ταῦτα καὶ πολλὰ τούτοις ὅμοια [καὶ] δι᾿ ὀργῆς ἀκράτου τῶν πατρικίων ὀνείδη κατασκεδάσας, τήν τε συστρατευσαμένην αὐτῷ δύναμιν ἀπέλυσε τῶν σημείων, καὶ τὴν μετὰ Φουρίου τοῦ ἀνθυπάτου διατρίβουσαν ἐν Αἰκανοῖς μεταπεμψάμενος ἀφῆκεν ἐπὶ τὰ σφέτερα· ἐξ ὧν πολλὴν πάλιν ἐποίησεν ἐξουσίαν τοῖς 1791
δημάρχοις κατηγορεῖν τῶν βουλευτῶν ἐν ταῖς ἐκκλησίαις καὶ διιστάναι τοὺς πένητας ἀπὸ τῶν εὐπόρων.

XVIII. Μετὰ δὲ τούτους παραλαμβάνουσι τὴν ὑπατείαν Γάιος Ὁράτιος καὶ Τῖτος Μενήνιος ἐπὶ τῆς ἑβδομηκοστῆς καὶ ἕκτης ὀλυμπιάδος, ἣν ἐνίκα στάδιον Σκάμανδρος Μιτυληναῖος ἄρχοντος Ἀθήνησι Φαίδωνος. τούτοις κατ᾿ ἀρχὰς μὲν ὁ πολιτικὸς θόρυβος ἐμποδῶν ἐγένετο πράττειν τὰ κοινά, ἠρεθισμένου τοῦ δήμου καὶ οὐδὲν ἐῶντος ἕτερον ἐπιτελεῖσθαι τῶν κοινῶν, ἕως ἂν μερίσηται τὴν δημοσίαν γῆν· χρόνῳ δ᾿ ὕστερον εἶξε τὰ παρακινοῦντα καὶ ταραττόμενα τῇ ἀνάγκῃ συγχωρήσαντα, καὶ ἐπὶ τὰς στρατείας ἑκούσια ἦλθε. Τυρρηνῶν γὰρ αἱ μὴ μετασχοῦσαι τῆς εἰρήνης ἕνδεκα πόλεις ἀγορὰν ποιησάμεναι κοινὴν κατηγόρουν τοῦ Οὐιεντανῶν ἔθνους, ὅτι τὸν πρὸς Ῥωμαίους πόλεμον οὐ μετὰ κοινῆς γνώμης κατε-

1792 λύσαντο, καὶ δυεῖν θάτερον αὐτοὺς ἠξίουν πράττειν, ἢ λύειν τὰ πρὸς Ῥωμαίους ὁμολογηθέντα, ἢ πολεμεῖν σφίσι μετ᾽ ἐκείνων. οἱ δὲ Οὐιεντανοὶ τῆς μὲν εἰρήνης τὴν ἀνάγκην ᾐτιῶντο, ὅπως δ᾽ ἂν αὐτὴν καταλύσαιντο εὐπρεπῶς εἰς κοινὸν ἐτίθεσαν σκοπεῖν. ἔπειτα ὑποτίθεταί τις αὐτοῖς ἔγκλημα ποιησαμένοις τὸν ἐπιτειχισμὸν τῆς Κρεμέρας καὶ τὸ μὴ ἀπανίστασθαι τοὺς φρουροὺς ἀπ᾽ αὐτῆς, λόγῳ μὲν πρῶτον ἀξιοῦν αὐτοὺς ἐκλιπεῖν τὸ χωρίον· ἐὰν δὲ μὴ πείθωσι πολιορκεῖν τὸ φρούριον, καὶ ταύτην ἀρχὴν ποιήσασθαι τοῦ πολέμου. ταῦτα συνθέμενοι ἀπηλλάττοντο ἐκ τοῦ συλλόγου· καὶ μετ᾽ οὐ πολὺ Οὐιεντανοὶ μὲν ἀποστείλαντες πρεσβείαν ὡς τοὺς Φαβίους ἀπῄτουν παρ᾽ αὐτῶν τὸ φρούριον, Τυρρηνία δὲ πᾶσα ἦν ἐν τοῖς ὅπλοις. ταῦτα Ῥωμαῖοι αἰσθόμενοι, Φαβίων αὐτοῖς ἐπιστειλάντων, ἔγνωσαν ἀμφοτέρους ἐκπορεύεσθαι τοὺς ὑπάτους ἐπὶ τὸν πόλεμον, τόν τε ἀπὸ Τυρρηνίας ἐπαγόμενον σφίσι καὶ τὸν ἔτι πρὸς Οὐολούσκους
1793 συνεστῶτα. Ὁράτιος μὲν οὖν ἄγων δύο τάγματα καὶ ἀπὸ τῶν ἄλλων συμμάχων τοὺς ἱκανοὺς ἐξήγαγε τὴν δύναμιν ἐπὶ Οὐολούσκους. Μενήνιος δὲ τοσαύτην στρατιὰν ἑτέραν ἄγων ἐπὶ Τυρρηνοὺς ἔμελλε ποιεῖσθαι τὴν ἔξοδον. παρασκευαζομένου δ᾽ αὐτοῦ καὶ τρίβοντος τὸν χρόνον, ἔφθη τὸ ἐν Κρεμέρᾳ φρούριον ἐξαιρεθὲν ὑπὸ τῶν πολεμίων, καὶ τὸ Φαβίων γένος ἅπαν ἀπολόμενον. περὶ δὲ τῆς κατασχούσης τοὺς ἄνδρας συμφορᾶς διττὸς φέρεται λόγος, ὁ μὲν ἧττον πιθανὸς, ὁ δὲ μᾶλλον τῆς ἀληθείας ἁπτόμενος. θήσω δὲ αὐτοὺς ἀμφοτέρους ὡς παρέλαβον.

XVIIII. Τινὲς μὲν οὖν φασιν, ὅτι θυσίας ἐπιστάσης πατρίου, ἣν ἔδει τὸ Φαβίων ἐπιτελέσαι γένος, οἱ μὲν ἄνδρες ἐξῆλθον ὀλίγους ἐπαγόμενοι πελάτας

ἐπὶ τὰ ἱερὰ, καὶ προῄεσαν οὔτε διερευνώμενοι τὰς
ὁδοὺς οὔτε ὑπὸ σημαίαις τεταγμένοι κατὰ λόχους, ῥα-
θύμως δὲ καὶ ἀφυλάκτως ὡς ἐν εἰρήνῃ τε καὶ διὰ
φιλίας γῆς πορευόμενοι. οἱ δὲ Τυρρηνοὶ προεγνω- 1794
κότες αὐτῶν τὴν ἔξοδον, ἐλόχησαν τῆς ὁδοῦ χωρίον
μέρει τῆς στρατιᾶς, τὴν δὲ λοιπὴν δύναμιν συντε-
ταγμένην ἔχοντες οὐ πολλῷ ὕστερον ἠκολούθουν. ὡς
δ' ἐπλησίασαν οἱ Φάβιοι ταῖς ἐνέδραις, ἐξαναστάντες
τοῦ λόχου οἱ Τυρρηνοὶ προσπίπτουσιν αὐτοῖς, οἱ μὲν
κατὰ μέτωπον, οἱ δ' ἐκ τῶν πλαγίων, καὶ μετ' οὐ
πολὺ ἡ τῶν ἄλλων Τυρρηνῶν δύναμις προσέβαλεν
ἐκ τῶν κατόπιν· καὶ περιστάντες αὐτοῖς πανταχόθεν,
οἱ μὲν σφενδόναις, οἱ δὲ τόξοις, οἱ δὲ σαυνίοις τε καὶ
λόγχαις στοχαζόμενοι, τῷ πλήθει τῶν βελῶν ἅπαντας
κατειργάσαντο. οὗτος μὲν οὖν ἧττον ἔμοιγε πιθανὸς
φαίνεται εἶναι λόγος. οὔτε γὰρ εἰκὸς ἀπὸ στρατοπέ-
δου θυσίας ἕνεκα τοὺς ὑπὸ ταῖς σημαίαις τοσούτους
ἄνδρας εἰς τὴν πόλιν ἀναστρέφειν ἄνευ ψηφίσματος
βουλῆς, δυναμένων τῶν ἱερουργιῶν καὶ δι' ἑτέρων
ἐπιτελεσθῆναι τῶν μετεχόντων μὲν τοῦ αὐτοῦ γένους,
προβεβηκότων δὲ ταῖς ἡλικίαις· οὔτ' εἰ πάντες ἀπε-
ληλύθεσαν ἐκ τῆς πόλεως, καὶ μηδεμία μοῖρα τοῦ 1795
Φαβίων γένους ἐν τοῖς ἐφεστίοις ὑπελείπετο, πάντας
εἰκὸς ἦν τοὺς κατέχοντας τὸ φρούριον ἐκλιπεῖν αὐτοῦ
τὴν φυλακήν· ἤρκουν γὰρ ἂν καὶ τρεῖς ἢ τέτταρες
ἀφικόμενοι συντελέσαι ὑπὲρ τοῦ γένους ὅλου τὰ ἱερά.
διὰ μὲν δὴ ταύτας τὰς αἰτίας οὐκ ἔδοξέ μοι πιστὸς
εἶναι [ὅδε] ὁ λόγος.

XX. Ὁ δὲ ἕτερος, ὃν ἀληθέστερον εἶναι νομίζω
περί τε τῆς ἀπωλείας τῶν ἀνδρῶν καὶ τῆς ἁλώσεως
τοῦ φρουρίου, τοιόσδέ τις ἐστίν. ἐξιόντων ἐπὶ τὰς
προνομὰς τῶν ἀνδρῶν πολλάκις καὶ διὰ τὸ κατορθοῦν

ἐν ταῖς πείραις συνεχῶς προσωτέρω προχωρούντων,
οἱ Τυρρηνοὶ παρεσκευασμένοι στρατιὰν συχνὴν ἐν
τοῖς ἔγγιστα χωρίοις λαθόντες τοὺς πολεμίους κατε-
στρατοπέδευσαν. ἔπειτ' ἀποστέλλοντες ἐκ τῶν χωρίων
ποίμνας τε καὶ βουκόλια καὶ φορβάδων ἀγέλας ἵππων
ἐπὶ νομὴν τῷ λόγῳ, προὐκαλοῦντο τοὺς ἄνδρας ἐπὶ
1796 ταῦτα· οἱ δ' ἐξιόντες τούς τε ἀνθρώπους συνήρπαζον
καὶ τὰ βοσκήματα περιήλαυνον. τοῦτο συνεχῶς οἱ
Τυρρηνοὶ ποιοῦντες καὶ προαγόμενοι τοὺς πολεμίους
ἀεὶ προσωτέρω τοῦ χάρακος, ἐπειδὴ διέφθειραν αὐ-
τῶν τὸ προνοητικὸν τοῦ ἀσφαλοῦς ταῖς συνεχέσιν
ὠφελείαις δελεάσαντες, ἐγκαθίζουσι λόχους ἐν τοῖς
ἐπικαίροις τῶν χωρίων νύκτωρ, καὶ ἕτεροι τὰς ὑπερ-
δεξίους τῶν πεδίων καταλαμβάνονται σκοπιάς· τῇ
δ' ἑξῆς ἡμέρᾳ προπέμψαντες ὀλίγους τινὰς ἐνόπλους,
ὡς δὴ φυλακῆς ἕνεκα τῶν νομέων, ἀφῆκαν ἐκ τῶν
χωρίων πολλὰς ἀγέλας. ὡς δ' ἀπηγγέλη τοῖς Φα-
βίοις, ὅτι τοὺς πλησίον ὑπερβαλόντες λόφους ἐν ὀλί-
γῳ δή τινι χρόνῳ μεστὸν εὑρήσουσι τὸ πεδίον παν-
τοίων βοτῶν, καὶ τὴν φυλάττουσαν αὐτὰ χεῖρα οὐχ
ἱκανήν, ἐξῆλθον ἐκ τοῦ φρουρίου φυλακὴν τὴν ἀρ-
κοῦσαν ἐν αὐτῷ καταλιπόντες· καὶ διανύσαντες
σπουδῇ καὶ μετὰ προθυμίας τὴν ὁδὸν ἐπιφαίνονται
τοῖς φύλαξι τῶν βοσκημάτων συντεταγμένοι· κἀκεῖνοι
οὐ δεξάμενοι αὐτοὺς ἔφευγον. οἱ δὲ Φάβιοι, ὡς ἐν
ἀσφαλεῖ δὴ ὄντες, τούς τε νομεῖς συνελάμβανον καὶ
1797 τὰ βοσκήματα περιήλαυνον. ἐν δὲ τούτῳ οἱ Τυρρηνοὶ
ἐκ τῆς ἐνέδρας ἀναστάντες κατὰ πολλὰ χωρία προσ-
πίπτουσι [αὐτοῖς] πανταχόθεν. καὶ οἱ μὲν πλείους
τῶν Ῥωμαίων ἐσκεδασμένοι καὶ ἀλλήλοις ἀμύνειν
οὐχ οἷοί τε ὄντες, ἐνταῦθα ἀπόλλυνται. ὅσοι δ' αὐτῶν
συνεστηκότες ἦσαν προθυμούμενοί τι καταλαβέσθαι

χωρίον ἀσφαλὲς καὶ πρὸς τὰ ὄρη σπεύδοντες, εἰς ἕτε-
ρον ἐμπίπτουσι λόχον ἐν ὕλαις καὶ νάπαις ὑποκαθή-
μενον. καὶ γίνεται αὐτῶν μάχη καρτερὰ καὶ φόνος
ἐξ ἑκατέρων πολύς. ἀπεώσαντο δ' οὖν καὶ τούτους
ὅμως, καὶ πληρώσαντες τὴν φάραγγα νεκρῶν ἀνέδρα-
μον ἐπὶ λόφον οὐ ῥᾴδιον ἁλῶναι· ἐν ᾧ τὴν ἐπιοῦσαν
νύκτα ἄποροι τῶν ἀναγκαίων ηὐλίσαντο.

XXI. Τῇ δ' ἑξῆς ἡμέρᾳ μαθόντες τὴν κατασχοῦ- 1798
σαν τοὺς σφετέρους τύχην οἱ κατέχοντες τὸ φρούριον,
καὶ ὅτι τὸ μὲν πλεῖον ἀπόλωλε τῆς στρατιᾶς μέρος ἐν
ταῖς ἁρπαγαῖς, τὸ δὲ κράτιστον ἐν ὄρει πολιορκεῖται
κατακεκλεισμένον ἐρήμῳ, καὶ εἰ μὴ ταχεῖά τις αὐτοῖς
ἔσται βοήθεια, σπάνει τῶν ἀναγκαίων φθάσουσιν
ἐξαιρεθέντες, ἐξῄεσαν κατὰ σπουδὴν ὀλίγους πάνυ
καταλιπόντες ἐν τῷ φρουρίῳ φύλακας. καὶ αὐτοὺς οἱ
Τυρρηνοὶ πρὶν ἢ συμμίξαι τοῖς ἑτέροις ἐπικαταδρα-
μόντες ἐκ τῶν χωρίων κυκλοῦνταί τε, καὶ πολλὰ γεν-
ναῖα ἔργα ἀποδειξαμένους διαφθείρουσιν ἅπαντας
σὺν χρόνῳ. μετ' οὐ πολὺ δὲ καὶ οἱ τὸν λόφον κατα-
λαβόμενοι λιμῷ τε καὶ δίψῃ πιεζόμενοι ὁμόσε χωρεῖν
τοῖς πολεμίοις ἔγνωσαν· καὶ συμπεσόντες ὀλίγοι πρὸς
πολλοὺς ἕωθεν ἀρξάμενοι μέχρι νυκτὸς ἐμάχοντο·
καὶ τοσοῦτον ἐποίησαν τῶν πολεμίων φόνον, ὥστε
τοὺς σωροὺς τῶν νεκρῶν ἐμποδὼν αὐτοῖς εἶναι τῆς
μάχης πολλαχῇ κεχυμένους. οἱ δὲ Τυρρηνοὶ πλεῖον 1799
ἢ τὸ τρίτον τῆς στρατιᾶς μέρος ἀπολωλεκότες καὶ
περὶ τοῦ λοιποῦ δείσαντες, μικρὸν ἀνασχόντες τὰ
ὅπλα διὰ τῶν ἀνακλητικῶν ἐπεκηρυκεύοντο πρὸς
τοὺς ἄνδρας, ἄδειαν αὐτοῖς ὑπισχνούμενοι καὶ δίοδον,
ἐὰν τὰ ὅπλα ἀποθῶνται καὶ τὸ φρούριον ἐκλίπωσιν.
οὐ προσδεξαμένων δὲ τῶν ἀνδρῶν τὰς προκλήσεις,
ἀλλὰ τὸν εὐγενῆ θάνατον αἱρουμένων, ἐπῄεσαν αὐ-

τοῖς αὖθις ἐκ διαδοχῆς, συστάδην μὲν καὶ ἐκ χειρὸς
οὐκέτι μαχόμενοι, πρόσωθεν δὲ βάλλοντες ἀθρόοι
λόγχαις καὶ χερμάσι· καὶ ἦν νιφετῷ παραπλήσιος ἡ
πληθὺς τῶν βελῶν. οἱ δὲ Ῥωμαῖοι συστρεφόμενοι
κατὰ λόχους προσέτρεχον αὐτοῖς οὐχ ὑφισταμένοις,
καὶ πολλὰς πληγὰς λαμβάνοντες ὑπὸ τῶν πέριξ ὑπέ-
μενον. ὡς δὲ τά τε ξίφη πολλοῖς ἄχρηστα ἦν, τὰ μὲν
ἀπεστομωμένα τὰς ἀκμάς, τὰ δὲ κατεαγότα, καὶ τῶν
ἀσπίδων τὰ πέριξ ἴτυος ἐχόμενα διετέθρυπτο, ἔξαι-
1800 μοί τε οἱ πλείους καὶ καταβελεῖς καὶ παράλυτοι τὰ
μέλη διὰ πλῆθος τραυμάτων ἦσαν, καταφρονήσαντες
αὐτῶν οἱ Τυρρηνοὶ χωροῦσιν ὁμόσε· καὶ οἱ Ῥωμαῖοι
προσπίπτοντες ὥσπερ θηρία δόρατά τε αὐτῶν ἐπι-
λαμβανόμενοι κατέκλων, καὶ ξίφη δραττόμενοι κατὰ
τὰς ἀκμὰς ἀπέσπων, καὶ περικυλίοντες εἰς τὴν γῆν
τὰ σώματα συνεφύροντο θυμῷ τὸ πλεῖον ἢ δυνάμει
διαγωνιζόμενοι. ὥστε οὐκέτι συνῄεσαν αὐτοῖς εἰς
χεῖρας οἱ πολέμιοι, τό τε καρτερικὸν ἐκπληττόμενοι
τῶν ἀνδρῶν, καὶ τὴν ἀπόνοιαν ἣν προσειλήφεσαν
κατὰ τὴν ἀπόγνωσιν τοῦ ζῆν δεδιότες· ἀλλ' ἀποστάν-
τες αὖθις ἔβαλλον ἀθρόοι καὶ ξύλοις καὶ λίθοις καὶ
ὅτῳ ἄλλῳ ἐντύχοιεν, καὶ τελευτῶντες ἐγκατέχωσαν
αὐτοὺς τῷ πλήθει τῶν βελῶν. διαφθείραντες δὲ τοὺς
ἄνδρας ἔθεον ἐπὶ τὸ φρούριον, ἔχοντες τὰς τῶν ἐπι-
φανεστάτων κεφαλάς, ὡς ἐξ ἐφόδου τοὺς ἐκεῖ παρα-
1801 ληψόμενοι. οὐ μὴν ἐχώρησέ γε αὐτοῖς κατὰ τὴν ἐλ-
πίδα τὸ ἔργον· οἱ γὰρ καταλειφθέντες ἐν αὐτῷ, ζηλώ-
σαντες τὸ εὐγενὲς τοῦ θανάτου τῶν τε ἑταίρων καὶ
τῶν συγγενῶν, ἐξῆλθον ὀλίγοι παντάπασιν ὄντες,
καὶ πολὺν ἀγωνισάμενοι χρόνον τὸν αὐτὸν τρόπον
τοῖς ἑτέροις ἅπαντες διεφθάρησαν· τὸ δὲ χωρίον
ἔρημον οἱ Τυρρηνοὶ παρέλαβον. ἐμοὶ μὲν δὴ ὁ λόγος

οὗτος πιστότερος ἐφαίνετο πολὺ τοῦ προτέρου· φέρονται δὲ ἐν γραφαῖς Ῥωμαίων ἀξιοχρέοις ἀμφότεροι.

XXII. Τὸ δὲ συναπτόμενον τούτοις ὑπό τινων, οὔτε ἀληθὲς ὂν οὔτε πιθανόν, ἐκ παρακούσματος δέ τινος πεπλασμένον ὑπὸ τοῦ πλήθους, ἄξιον μὴ παραλιπεῖν ἀνεξέταστον. λέγουσι γὰρ δή τινες, τῶν ἓξ καὶ τριακοσίων Φαβίων ἀπολομένων, ὅτι ἓν μόνον ἐλείφθη τοῦ γένους παιδίον, πρᾶγμα οὐ μόνον ἀπίθανον, ἀλλὰ καὶ ἀδύνατον εἰσάγοντες. οὔτε γὰρ ἀτέκνους τε καὶ ἀγάμους ἅπαντας εἶναι δυνατὸν ἦν τοὺς 1802 ἐξελθόντας εἰς τὸ φρούριον Φαβίους. ὁ γὰρ ἀρχαῖος αὐτῶν νόμος γαμεῖν τε ἠνάγκαζε τοὺς ἐν ἡλικίᾳ, καὶ τὰ γεννώμενα ἅπαντα ἐπάναγκες τρέφειν· ὃν οὐκ ἂν δήπου κατέλυσαν οἱ Φάβιοι μόνοι πεφυλαγμένον ἄχρι τῆς ἑαυτῶν ἡλικίας ὑπὸ τῶν πατέρων. εἰ δὲ δὴ καὶ τοῦτο θείη τις, ἀλλ' ἐκεῖνό γε οὐκ ἂν ἔτι συγχωρήσειε, τὸ μηδ' ἀδελφοὺς αὐτῶν εἶναί τισιν ἡλικίαν ἔτι παίδων ἔχοντας. μύθοις γὰρ δὴ ταῦτά γε καὶ πλάσμασιν ἔοικε θεατρικοῖς. οἱ δὲ πατέρες αὐτῶν, ὅσοι παῖδας ἔτι ποιεῖν εἶχον ἡλικίαν, τοσαύτης κατασχούσης τὸ γένος ἐρημίας οὐκ ἂν ἑκόντες τε καὶ ἄκοντες ἑτέρους παῖδας ἐποιήσαντο, ἵνα μήτε ἱερὰ ἐκλειφθῇ πατρῷα μήτε δόξα τηλικαύτη διαφθαρῇ γένους; εἰ μὴ ἄρα οὐδὲ πατέρες αὐτῶν τισιν ἐλείποντο, ἀλλὰ πάντα εἰς ταὐτὸ συνῆλθεν ἐπὶ τῶν ἓξ καὶ τριακοσίων ἀνδρῶν ἐκείνων ταῦτα τὰ ἀδύνατα· μὴ παῖδας αὐ- 1803 τοῖς καταλειφθῆναι νηπίους, μὴ γυναῖκας ἐγκύους, μὴ ἀδελφοὺς ἀνήβους, μὴ πατέρας ἐν ἀκμῇ. ταύτῃ μὲν δὴ τὸν λόγον ἐξετάζων οὐκ ἀληθῆ νενόμικα, ἐκεῖνον δ' ἀληθῆ· τῶν τριῶν ἀδελφῶν, Καίσωνός τε καὶ Κοΐντου καὶ Μάρκου τῶν ὑπατευσάντων τὰς συνεχεῖς ἑπτὰ ὑπατείας, ἐγκαταλειφθῆναι πείθομαι

Μάρκῳ παιδίον, καὶ τοῦτ' εἶναι τὸ λεγόμενον ἐκ τοῦ Φαβίων οἴκου λοιπόν. οὐδὲν δὲ κωλύει τῷ μηκέτι τῶν ἄλλων ἐπιφανῆ τινα καὶ λαμπρὸν ἔξω τοῦ ἑνὸς τοῦδε ἀνδρωθέντος γενέσθαι ταύτην παραστῆναι τοῖς πολλοῖς τὴν δόξαν, ὅτι μόνος ἐκεῖνος ἐκ τοῦ Φαβίων γένους ἐστὶ λοιπός· οὐχ ὡς μηδενὸς ἄλλου ὄντος, ἀλλ' ὡς μηδενὸς ἐκείνοις ὁμοίου· ἀρετῇ τεκμαιρομένοις τὸ συγγενές, οὐ φύσει· καὶ περὶ μὲν τούτων ταῦθ' ἱκανά.

XXIII. Οἱ γοῦν Τυρρηνοὶ τούς τε ἄνδρας διαφθείραντες καὶ τὸ ἐν τῇ Κρεμέρᾳ φρούριον παραλαβόντες, ἐπὶ τὴν ἄλλην στρατιὰν τῶν Ῥωμαίων ἦγον
1804 τὰς δυνάμεις. ἔτυχε δὲ οὐ μακρὰν κατεστρατοπεδευκὼς ὁ ἕτερος τῶν ὑπάτων Μενήνιος οὐκ ἐν ἀσφαλεῖ χωρίῳ· καὶ ὅτε ἡ Φαβίων συγγένεια καὶ τὸ πελατικὸν αὐτῶν ἀπώλλυντο, τριάκοντά που σταδίους ἀπεῖχεν ἀφ' οὗ τὸ πάθος ἐγένετο τόπου, δόξαν τε οὐκ ὀλίγοις παρέσχε, γνοὺς ἐν οἵοις κακοῖς ἦσαν οἱ Φάβιοι, μηδεμίαν αὐτῶν ποιήσασθαι φροντίδα τῆς τε ἀρετῆς καὶ δόξης τοῖς ἀνδράσι φθονῶν. τοιγαροῦν μετὰ ταῦτα ὑπαχθεὶς ὑπὸ τῶν δημάρχων εἰς δίκην ἐπὶ ταύτῃ μάλιστα τῇ αἰτίᾳ ἑάλω. σφόδρα γὰρ ἐπένθησεν ἡ Ῥωμαίων πόλις ἀνδρῶν τοσούτων καὶ τοιούτων ἀρετὰς ἀποκειραμένη, καὶ πρὸς ἅπαν τὸ δόξαν αὐτοῖς αἴτιον γεγονέναι τῆς τοιαύτης συμφορᾶς πικρῶς καὶ ἀπαραιτήτως εἶχεν· τὴν δὲ ἡμέραν ἐκείνην ἐν ᾗ τὸ πάθος ἐγένετο μέλαινάν τε καὶ ἀποφράδα τίθεται, καὶ οὐδενὸς ἂν ἔργου ἐν ταύτῃ χρηστοῦ ἄρξαιτο, τὴν τότε συμβᾶσαν αὐτῇ τύχην ὀττευομένη. ὡς δὲ πλησίον ἐγένοντο τῶν Ῥωμαίων οἱ Τυρρηνοί, συνιδόντες αὐτῶν τὸ στρατόπεδον· ἦν δ' ὑπὸ λαγόνι
1805 κείμενον ὄρους· τῆς τε ἀπειρίας τοῦ στρατηγοῦ κατε-

φρόνησαν, καὶ τὸ δοθὲν ὑπὸ τῆς τύχης [πλεονέκτημα] ἀγαπητῶς ἔλαβον. καὶ αὐτίκα τοὺς ἱππεῖς ἀναλαβόντες κατὰ τὴν ἑτέραν πλευρὰν τοῦ λόφου, οὐδενὸς κωλύοντος ἀνέβησαν ἐπὶ τὴν κορυφήν. καταλαβόμενοι δὲ τὸν ὑπὲρ [τῆς] κεφαλῆς τῶν Ῥωμαίων κόρυμβον, ἔθεντο ἐν τούτῳ τὰ ὅπλα, καὶ τὴν ἄλλην δύναμιν ἀσφαλῶς ἀναβιβάσαντες ὑψηλῷ χάρακι καὶ βαθείᾳ τάφρῳ τὴν παρεμβολὴν ὠχυρώσαντο. εἰ μὲν οὖν συνιδὼν ὁ Μενήνιος, οἷον ἔδωκε πλεονέκτημα τοῖς πολεμίοις, μετέγνω τε τὴν ἁμαρτάδα καὶ εἰς ἀσφαλέστερον ἀπῆγε χωρίον τὴν στρατιάν, σοφὸς ἂν ἦν· νῦν δὲ δι' αἰσχύνης λαμβάνων τὸ δοκεῖν ἡμαρτηκέναι, καὶ τὸ αὔθαδες πρὸς τοὺς μεταδιδάσκοντας φυλάττων, εἰς αἰσχύνης ἄξιον πτῶμα ἔπεσεν. οἷα γὰρ ἐξ ὑπερδεξίων αὐτοῦ τόπων οἱ πολέμιοι τὰς ἐξόδους ἑκάστοτε ποιούμενοι πολλὰ ἐπλεονέκτουν, ἀγορὰς τ' αὐτῶν ἀγομένας ὑπὸ τῶν ἐμπόρων ἁρπάζοντες, καὶ τοῖς ἐπὶ χιλὸν ἢ ὕδωρ ἐκπορευομένοις ἐπιτιθέμενοι· καὶ περιειστήκει τῷ μὲν ὑπάτῳ μήτε καιροῦ εἶναι 1806
κυρίῳ ἐν ᾧ τὸν ἀγῶνα ἔμελλε ποιεῖσθαι μήτε τόπου, ἃ δοκεῖ μεγάλα εἶναι κατηγορήματα ἡγεμόνων στρατηγίας ἀπείρων· τοῖς δὲ Τυρρηνοῖς ἀμφότερα ὡς ἐβούλοντο εἶχε ταῦτα. καὶ οὐδὲ τότε ἀπαναστῆναι τὴν στρατιὰν ὁ Μενήνιος ὑπέμεινεν, ἀλλ' ἐξαγαγὼν παρέταξεν ὡς εἰς μάχην, καταφρονήσας τῶν τὰ συμφέροντα ὑποτιθεμένων. καὶ οἱ Τυρρηνοὶ τὴν ἄνοιαν τοῦ στρατηγοῦ μέγα εὐτύχημα ἡγησάμενοι, κατέβαινον ἐκ τοῦ χάρακος οὐκ ἐλάττους ἢ διπλάσιοι τῶν πολεμίων ὄντες. ὡς δὲ συνέπεσον ἀλλήλοις, φόνος ἐγίγνετο τῶν Ῥωμαίων πολὺς οὐ δυναμένων ἐν τῇ τάξει μένειν. ἐξώθουν γὰρ αὐτοὺς οἱ Τυρρηνοὶ τοῦ τε χωρίου τὴν φύσιν ἔχοντες σύμμαχον καὶ τῶν

ἐφεστηκότων κατόπιν· ἐτάξαντο γὰρ ἐπὶ βάθος· ἐμπτώ-
1807 σει πολλῇ συνεργούμενοι. πεσόντων δὲ τῶν ἐπιφανεστάτων λοχαγῶν, ἡ λοιπὴ τῶν Ῥωμαίων δύναμις ἐγκλίνασα ἔφευγεν ἐπὶ τὸν χάρακα· οἱ δ' ἠκολούθουν, καὶ τάς τε σημαίας αὐτῶν ἀφαιροῦνται καὶ τοὺς τραυματίας συλλαμβάνουσι καὶ τῶν νεκρῶν γίνονται κύριοι. καὶ κατακλείσαντες αὐτοὺς εἰς πολιορκίαν καὶ δι' ὅλης τῆς λοιπῆς ἡμέρας προσβολὰς ποιησάμενοι πολλὰς καὶ οὐδὲ τὴν νύκτα ἀφέντες, αἱροῦσι τὸν χάρακα ἐκλιπόντων αὐτὸν τῶν ἔνδον, καὶ γίνονται πολλῶν σωμάτων τε καὶ χρημάτων ἐγκρατεῖς· οὐδὲ γὰρ ἀποσκευάσασθαι δύναμιν ἔσχον οἱ φεύγοντες, ἀλλ' ἀγαπητῶς αὐτὰ τὰ σώματα διέσωσαν, οὐδὲ τὰ ὅπλα πολλοὶ φυλάττοντες.

XXIIII. Οἱ δ' ἐν τῇ Ῥώμῃ τήν τε ἀπώλειαν τῶν σφετέρων καὶ τὴν ἅλωσιν τοῦ χάρακος μαθόντες· ἧκον γὰρ οἱ πρῶτοι διασωθέντες ἐκ τῆς τροπῆς πολλῆς ἔτι νυκτὸς οὔσης· εἰς μέγαν θόρυβον ὥσπερ εἰ-
1808 κὸς κατέστησαν· καὶ ὡς αὐτίκα δὴ μάλα τῶν πολεμίων ἐπὶ σφᾶς ἐλευσομένων, ἁρπάσαντες τὰ ὅπλα, οἱ μὲν τὰ τείχη περιεστεφάνουν, οἱ δὲ πρὸ τῶν πυλῶν ἐτάξαντο, οἱ δὲ τὰ μετέωρα τῆς πόλεως κατελαμβάνοντο. ἦν δὲ δρόμος ἄτακτος ἀνὰ τὴν πόλιν ὅλην καὶ βοὴ συμμιγής, καὶ ἐπὶ τοῖς στέγεσι τῶν οἴκων εἰς ἀλκὴν καὶ ἀγῶνα εὐτρεπὴς ὁ κατοικίδιος ὄχλος, πυρσοί τε συνεχεῖς, οἷα δὴ ἐν νυκτὶ σκοταίᾳ ὑπὸ λαμπάδων καὶ ἀπὸ τεγῶν τοσοῦτοι τὸ πλῆθος ᾕροντο, ὥστε συναφὲς εἶναι δοκεῖν τοῖς πρόσωθεν ὁρῶσι τὸ σέλας καὶ δόξαν ἐμπιμπραμένης πόλεως παρασχεῖν. καὶ εἰ τότε οἱ Τυρρηνοὶ τῶν ἐκ τοῦ χάρακος ὠφελειῶν ὑπεριδόντες ἐκ ποδὸς τοῖς φεύγουσιν ἠκολούθησαν, ἅπασα ἂν διέφθαρτο ἡ στρατεύσασα ἐπ' αὐτοὺς δύ-

ναμις· νῦν δὲ πρὸς ἁρπαγάς τε τῶν ἐγκαταλειφθέν- 1809
των ἐν τῷ χάρακι τραπόμενοι, καὶ ἀναπαύσει τὰ σώματα δόντες, μεγάλου εὐτυχήματος ἑαυτοὺς ἐστέρησαν. τῇ δ' ἑξῆς ἡμέρᾳ τὰς δυνάμεις ἄγοντες ἐπὶ τὴν Ῥώμην, καὶ σταδίους ἀμφὶ τοὺς ἑκκαίδεκα ἀποσχόντες, ὄρος ἐξ οὗ σύνοπτός ἐστιν ἡ Ῥώμη τὸ καλούμενον Ἰάνικλον καταλαμβάνονται· ὅθεν ὁρμώμενοι τὴν Ῥωμαίων χώραν ἦγόν τε καὶ ἔφερον ἀκώλυτοι κατὰ πολλὴν τῶν ἔνδον ὑπεροψίαν, μέχρι τοῦ παραγενέσθαι τὸν ἕτερον τῶν ὑπάτων Ὁράτιον ἄγοντα τὴν ἐν Οὐολούσκοις δύναμιν. τότε δὴ ἐν τῷ ἀσφαλεῖ Ῥωμαίοι νομίσαντες εἶναι, καὶ τὴν ἐν τῇ πόλει νεότητα καθοπλίσαντες, ἐξῆλθον εἰς τὴν ὕπαιθρον. ὡς δὲ τήν τε πρώτην μάχην ἀπὸ σταδίων ὀκτὼ τῆς πόλεως ποιησάμενοι παρὰ τὸ τῆς Ἐλπίδος ἱερὸν ἐνίκησάν τε καὶ ἀπεώσαντο τοὺς ἀντιταξαμένους, καὶ μετὰ ταύτην αὖθις ἑτέρᾳ πλείονι δυνάμει τῶν Τυρρηνῶν ἐπελθόντων παρὰ ταῖς Κολλίναις καλουμέναις πύλαις [ποιησάμενοι] λαμπρῶς ἠγωνίσαντο, [καὶ] ἀνέπνευσαν ἐκ τοῦ δέους καὶ τὸ ἔτος τοῦτο ἐτελεύτα.

XXV. Τῷ δ' ἑξῆς ἔτει περὶ τὰς θερινὰς μάλιστα 1810
τροπὰς Σεξτιλίου μηνὸς παραλαμβάνουσι τὴν ὑπατείαν ἄνδρες ἔμπειροι πολέμων, Σερούιός τε Σερουίλιος καὶ Αὖλος Οὐεργίνιος· οἷς ὁ πρὸς τοὺς Τυρρηνοὺς πόλεμος καίτοι μέγας καὶ χαλεπὸς ὢν χρυσὸς ἐφαίνετο παρὰ τὸν ἐντὸς τείχους ἐξεταζόμενος. ἀσπόρου γὰρ τῆς χώρας ἐν τῷ παρελθόντι χειμῶνι διὰ τὸν ἐπιτειχισμὸν τοῦ πλησίον ὄρους καὶ τὰς συνεχεῖς καταδρομὰς γενομένης, καὶ οὐδὲ τῶν ἐμπόρων ἔτι τὰς ἔξωθεν ἐπεισαγόντων ἀγοράς, σπάνις ἰσχυρὰ σίτου τὴν Ῥώμην κατέσχε μεστὴν οὖσαν ὄχλου τοῦ τε κατοικιδίου καὶ τοῦ συνερρυηκότος ἐκ τῶν ἀγρῶν. τῶν μὲν γὰρ

1811 ἐν ἥβῃ πολιτῶν ὑπὲρ τὰς ἕνδεκα μυριάδας ἦσαν, ὡς
ἐκ τῆς ἔγγιστα τιμήσεως εὑρέθη, γυναικῶν δὲ καὶ
παίδων καὶ τῆς οἰκετικῆς θεραπείας ἐμπόρων τε καὶ
τῶν ἐργαζομένων τὰς βαναύσους τέχνας μετοίκων·
οὐδενὶ γὰρ ἐξῆν Ῥωμαίων οὔτε κάπηλον οὔτε χειρο-
τέχνην βίον ἔχειν· οὐκ ἔλαττον ἢ τριπλάσιον τοῦ πο-
λιτικοῦ πλήθους· οὓς οὐκ ἦν παραμυθήσασθαι ῥᾴδιον,
ἀγανακτοῦντας ἐπὶ τῷ πάθει καὶ συντρέχοντας εἰς
τὴν ἀγορὰν καὶ καταβοῶντας τῶν ἐν τοῖς τέλεσιν,
ἐπί τε τὰς οἰκίας τῶν πλουσίων κατὰ πλῆθος ὠθου-
μένους, καὶ διαρπάζειν ἐπιχειροῦντας ἄτερ ὠνῆς τὰς
ἀποκειμένας αὐτοῖς τροφάς. οἱ δὲ δήμαρχοι συνά-
γοντες αὐτοὺς εἰς ἐκκλησίαν καὶ κατηγοροῦντες τῶν
πατρικίων ὡς αἰεί τι κακὸν ἐπὶ τοῖς πένησι μηχανω-
μένων, καὶ πάνθ' ὅσα πώποτε δεινὰ κατὰ τὴν ἀτέ-
κμαρτόν τε καὶ ἀφύλακτον ἀνθρώποις τύχην ἐκείνων
1812 ἔργα λέγοντες, ὑβριστὰς εἶναι πικροὺς ἐξειργάσαντο.
τοιούτοις συνεχόμενοι κακοῖς οἱ ὕπατοι πέμπουσι
τοὺς συνωνησομένους σῖτον ἐκ τῶν σύνεγγυς τόπων
μετὰ πολλῶν χρημάτων, καὶ τὸν ἐν ταῖς οἰκίαις ἔτα-
ξαν εἰς τὸ δημόσιον ἀναφέρειν τοὺς εἰς τὸν ἑαυτῶν
βίον πλείονα τοῦ μετρίου παραθεμένους, τιμὴν ὁρί-
σαντες ἀποχρῶσαν. ταῦτα δὴ καὶ ἄλλα πολλὰ μηχα-
νώμενοι τοιαῦτα, ἐπέσχον τῶν πενήτων τὰς παρανο-
μίας καὶ ἀναστροφὴν ἔλαβον τῆς εἰς τὸν πόλεμον
παρασκευῆς.

XXVI. Ἐπεὶ δ' αἱ μὲν ἔξωθεν ἐβράδυνον ἀγο-
1813 ραί, τὰ δ' ἐντὸς τείχους τροφῆς ἐχόμενα πάντα κατα-
νάλωτο, ἀποστροφὴ δὲ τῶν κακῶν οὐδεμία ἦν ἑτέρα,
ἀλλὰ δυεῖν θάτερον ἐχρῆν, ἢ τοὺς πολεμίους ἐκβαλεῖν
ἐκ τῆς χώρας ἁπάσῃ δυνάμει παρακινδυνεύσαντας,
ἢ τειχήρεις μένοντας ὑπὸ λιμοῦ τε καὶ στάσεως δια-

φθαρῆναι· τὸ κουφότερον αἱρούμενοι τῶν κακῶν
ἔγνωσαν ὁμόσε χωρεῖν τοῖς ἐκ τῶν πολεμίων δεινοῖς.
προαγαγόντες δὲ τὰς δυνάμεις ἐκ τῆς πόλεως περὶ
μέσας νύκτας διέβησαν τὸν ποταμὸν ἐπὶ σχεδίαις, καὶ
πρὶν ἡμέραν λαμπρὰν γενέσθαι πλησίον τῶν πολε-
μίων κατεστρατοπέδευσαν. τῇ δ' ἑξῆς ἡμέρᾳ προελ-
θόντες ἔταξαν ὡς εἰς μάχην τὸν στρατόν. εἶχε δὲ τὸ
μὲν δεξιὸν τῶν κεράτων Οὐεργίνιος, τὸ δ' εὐώνυμον
Σερουίλιος. ἰδόντες δ' αὐτοὺς εὐτρεπεῖς ὄντας οἱ
Τυρρηνοὶ πρὸς τὸν ἀγῶνα σφόδρα ἐχάρησαν, ὡς ἑνὶ
τῷ τότε κινδύνῳ κατὰ νοῦν χωρήσαντι τὴν Ῥωμαίων
καθελοῦντες ἀρχήν, εἰδότες ὅτι πᾶν ὅσον ἦν κράτι-
στον στρατιωτικὸν αὐτῶν εἰς τὸν ἀγῶνα ἐκεῖνον
ὥρμητο, καὶ δι' ἐλπίδος ἔχοντες, ἐν ᾗ πολὺ τὸ κοῦφον 1814
ἦν, ῥᾳδίως αὐτῶν κρατήσειν, ἐπειδὴ τὴν μετὰ Μενη-
νίου δύναμιν ἐν δυσχωρίαις παραταξαμένην σφίσιν
ἐνίκησαν. γενομένης δ' ἰσχυρᾶς καὶ πολυχρονίου
μάχης, πολλοὺς μὲν ἀποκτείναντες Ῥωμαίων, πολλῷ
δ' ἔτι πλείονας τῶν σφετέρων ἀποβαλόντες ἀνεχώ-
ρουν βάδην ἐπὶ τὸν χάρακα. ὁ μὲν οὖν Οὐεργίνιος
τὸ δεξιὸν κέρας ἔχων οὐκ εἴα διώκειν τοὺς σφετέρους,
ἀλλ' ἐπὶ τῷ κατορθώματι μένειν· ὁ δὲ Σερουίλιος ὁ
τεταγμένος ἐπὶ θατέρου κέρως ἐδίωκε τοὺς καθ' ἑαυ-
τὸν ἑπόμενος ἄχρι πολλοῦ. ὡς δ' ἐν τοῖς μετεώροις
ἐγένετο, ὑποστρέψαντες οἱ Τυρρηνοί, καὶ τῶν ἐκ τοῦ
χάρακος ἐπιβοηθησάντων, ἐνσείουσιν αὐτοῖς. οἱ δ'
ὀλίγον τινὰ δεξάμενοι χρόνον ἐγκλίνουσι τὰ νῶτα,
καὶ κατὰ τοῦ λόφου διωκόμενοι σποράδες ἀπώλλυντο.
μαθὼν δὲ Οὐεργίνιος ἐν οἵαις ἦν τύχαις ἡ τὸ ἀριστε-
ρὸν κέρας κατέχουσα στρατιά, πᾶσαν ἔχων τὴν δύνα-
μιν ἐν τάξει πλαγίαν ἦγε διὰ τοῦ ὄρους ὁδόν. γενό-
μενος δὲ κατὰ νώτου τῶν διωκόντων τοὺς σφετέρους, 1815

μέρος μέν τι ταύτῃ καταλείπει τῆς στρατιᾶς κωλύσεως
ἕνεκεν τῶν ἐκ τοῦ χάρακος ἐπιβοηθησόντων, τὸ δὲ
λοιπὸν αὐτὸς ἄγων ἐπεφέρετο τοῖς πολεμίοις. ἐν δὲ
τούτῳ καὶ οἱ μετὰ τοῦ Σερουιλίου θαρσήσαντες τῇ
παρουσίᾳ τῶν σφετέρων ὑποστρέφουσί τε καὶ κατα-
στάντες ἐμάχοντο. κυκλωθέντες δὲ ὑπ' ἀμφοῖν οἱ
Τυρρηνοὶ καὶ οὔτε πρόσω διεκπορευθῆναι δυνά-
μενοι διὰ τοὺς ὁμόσε χωροῦντας, οὔτε ὀπίσω φεύγειν
ἐπὶ τὸν χάρακα διὰ τοὺς κατόπιν ἐπιόντας, οὐκ ἀνάν-
δρως ἀτυχῶς δ' οἱ πλείους κατεκόπησαν. γενομένης
δ' οἰκτρᾶς νίκης περὶ τοὺς Ῥωμαίους, καὶ οὐ παντά-
πασιν εὐτυχὲς τέλος εἰληφότος τοῦ ἀγῶνος, οἱ μὲν
ὕπατοι πρὸ τῶν νεκρῶν καταστρατοπεδευσάμενοι
τὴν ἐπιοῦσαν νύκτα ηὐλίσαντο· οἱ δὲ κατέχοντες τὸ
Ἰάνικλον Τυρρηνοί, ἐπειδὴ οὐδεμία παρὰ τῶν οἴκοθεν
ἤρχετο ἐπικουρία, καταλιπεῖν ἔκριναν τὸ φρούριον·
καὶ ἀναστρατοπεδεύσαντες νυκτὸς ἀπῆραν εἰς τὴν
1816 Οὐιεντανῶν πόλιν ἐγγυτάτω σφίσι τῶν Τυρρηνίδων
πόλεων κειμένην. τοῦ δὲ χάρακος αὐτῶν οἱ Ῥωμαῖοι
κρατήσαντες τά τε χρήματα διαρπάζουσιν, ὅσα ὑπελεί-
ποντο ἀδύνατα ὄντα ἐν φυγῇ φέρεσθαι, καὶ τραυμα-
τίας λαμβάνουσι πολλούς, τοὺς μὲν ἐν ταῖς σκηναῖς
ἀπολειφθέντας, τοὺς δὲ ἀνὰ τὴν ὁδὸν ἅπασαν ἐστρω-
μένους. ἀντείχοντο γάρ τινες γλιχόμενοι τῆς οἴκαδε
ὁδοῦ καὶ διεκαρτέρουν παρὰ δύναμιν ἀκολουθοῦντες,
εἶτα βαρυνομένων αὐτοῖς τῶν μελῶν ἡμιθνῆτες κατ-
έρρεον ἐπὶ τὴν γῆν· οὓς οἱ τῶν Ῥωμαίων ἱππεῖς ἐπὶ
πολὺ τῆς ὁδοῦ προελθόντες ἀνείλοντο· καὶ ἐπειδὴ
οὐδὲν ἔτι πολέμιον ἦν καθελόντες τὸ φρούριον καὶ
τὰ λάφυρα ἄγοντες ἧκον εἰς τὴν πόλιν, τὰ σώματα
τῶν ἐν τῇ μάχῃ τελευτησάντων κομίσαντες, οἰκτρὰν
ὄψιν ἅπασι τοῖς πολίταις διὰ πλῆθός τε καὶ ἀρετὴν

τῶν ἀπολομένων. ὥστε ὁ μὲν δῆμος οὔτε ἑορτάζειν ὡς καλὸν ἀγῶνα κατορθώσας ἠξίου, οὔτε πενθεῖν ὡς ἐπὶ μεγάλῃ καὶ ἀνηκέστῳ συμφορᾷ· ἡ δὲ βουλὴ τοῖς μὲν θεοῖς τὰς ἀναγκαίους ἐψηφίσατο θυσίας, 1817 *τὴν δ' ἐπινίκιον τοῦ θριάμβου πομπὴν οὐκ ἐπέτρεψε ποιήσασθαι τοῖς ὑπάτοις. μετ' οὐ πολλὰς δ' ἡμέρας ἀγορᾶς ἐπλήσθη παντοδαπῆς ἡ πόλις, τῶν τε δημοσίᾳ πεμφθέντων καὶ τῶν εἰωθότων ἐμπορεύεσθαι πολὺν εἰσαγαγόντων σῖτον, ὥστ' ἐν τῇ προτέρᾳ πάντας εὐετηρίᾳ γενέσθαι.*

XXVII. *Καταλυθέντων δὲ τῶν ὑπαιθρίων πολέμων, ἡ πολιτικὴ στάσις αὖθις ἀνεκαίετο τῶν δημάρχων πάλιν ταραττόντων τὸ πλῆθος, καὶ τὰ μὲν ἄλλα πολιτεύματα διεσκέδασαν αὐτῶν ἀντιταττόμενοι πρὸς ἕκαστον οἱ πατρίκιοι· τὴν δὲ κατὰ Μενηνίου δίκην τοῦ νεωστὶ ὑπατεύσαντος καίτοι πολλὰ πραγματευθέντες ἀδύνατοι ἐγένοντο διαλῦσαι· ἀλλ' ὑπαχθεὶς ὁ ἀνὴρ εἰς δίκην ὑπὸ [τῶν] δυεῖν δημάρχων Κοΐντου Κωνσιδίου καὶ Τίτου Γενυκίου, καὶ λόγον ἀπαιτούμενος τῆς στρατηγίας τοῦ πολέμου τέλος οὔτ' εὐτυχὲς οὔτ' εὐπρεπὲς λαβούσης, μάλιστα δὲ διαβαλλόμενος ἐπὶ τῷ Φαβίων ὀλέθρῳ καὶ τῇ Κρεμέρας ἁλώσει, δικάζοντος τοῦ δημοτικοῦ ὄχλου κατὰ φυλάς, οὐ παρ'* 1818 *ὀλίγας ψήφους ὦφλεν, υἱὸς ὢν Ἀγρίππα Μενηνίου τοῦ καταγαγόντος ἐκ τῆς φυγῆς τὸν δῆμον καὶ διαλλάξαντος πρὸς τοὺς πατρικίους, ὃν ἀποθανόντα ἡ βουλὴ ἐκ τῶν δημοσίων χρημάτων λαμπροτάταις ἐκόσμησε ταφαῖς, αἱ δὲ γυναῖκες αἱ Ῥωμαίων ἐνιαύσιον ἐπένθησαν χρόνον πορφύραν καὶ χρυσὸν ἀποθέμεναι. οὐ μέντοι θανάτου γε αὐτῷ οἱ καταδικασάμενοι ἐτίμησαν, ἀλλ' ἐκτίσματος ὃ πρὸς μὲν τοὺς νῦν ἐξεταζόμενον βίους γέλωτος ἂν ἄξιον φανείη, τοῖς δὲ τότε*

*ἀνθρώποις αὐτουργοῖς οὖσι καὶ πρὸς αὐτὰ τὰ ἀναγκαῖα
ζῶσι, μάλιστα δ' ἐκείνῳ τῷ ἀνδρὶ πενίαν κληρονο-
μήσαντι παρὰ τοῦ πατρὸς ἀφυὲς ἦν καὶ βαρύ, δισχι-
λίων ἀριθμὸς ἀσσαρίων. ἦν δὲ ἀσσάριον τότε χάλκεον
νόμισμα βάρος λιτριαῖον, ὥστε τὸ σύμπαν ὄφλημα
1819 ταλάντων ἑκκαίδεκα εἰς ὁλκὴν χαλκοῦ γενέσθαι. καὶ
τοῦτο ἐπίφθονον ἐφάνη τοῖς τότε ἀνθρώποις· καὶ ἐπ-
ανορθώσασθαι βουλόμενοι αὐτό, τὰς μὲν χρηματικὰς
ἔπαυσαν ζημίας, μετήνεγκαν δ' εἰς προβάτων ἐκτί-
σματα καὶ βοῶν, τάξαντες καὶ τούτων ἀριθμὸν ταῖς
ὕστερον ἐσομέναις ὑπὸ τῶν ἀρχόντων τοῖς ἰδιώταις
ἐπιβολαῖς. ἐκ δὲ τῆς Μενηνίου καταδίκης ἀφορμὴν
αὖθις εἰλήφεσαν οἱ πατρίκιοι τῆς πρὸς τὸ δημοτικὸν
ὀργῆς, καὶ οὔτε τὴν κληρουχίαν ἐπέτρεπον ἔτι αὐτῷ
ποιεῖσθαι, οὔτ' ἄλλο ἐβούλοντο ἐνδιδόναι μαλακὸν
οὐδέν. μετ' οὐ πολὺ δὲ καὶ τῷ δήμῳ μετέμελε τῶν
δεδικασμένων, ἐπειδὴ τὴν τελευτὴν τοῦ ἀνδρὸς ἐπύ-
θετο· οὐδὲ γὰρ εἰς ἀνθρώπων ἔτι συνῆλθεν ὁμιλίας,
οὐδ' ἐν δημοσίῳ τινὶ πρὸς οὐδενὸς ὤφθη τόπῳ·
1820 ἐξόν τε αὐτῷ τὴν ζημίαν ἐκτίσαντι μηδενὸς ἀπελαύ-
νεσθαι τῶν κοινῶν· ἕτοιμοι γὰρ ἦσαν οὐκ ὀλίγοι τῶν
ἐπιτηδείων αὐτοῦ τὴν καταδίκην ἀπαριθμεῖν· οὐκ
ἠξίωσεν, ἀλλὰ θανάτου τὴν συμφορὰν τιμησάμενος
οἴκοι μένων καὶ οὐδένα προσιέμενος ὑπό τε ἀθυμίας
καὶ σίτων ἐποχῆς μαρανθεὶς ἀπέστη τοῦ βίου. καὶ
τὰ μὲν ἐν τούτῳ πραχθέντα τῷ ἐνιαυτῷ τοιάδε ἦν.*

XXVIII. *Ποπλίου δὲ Οὐαλερίου Ποπλικόλα καὶ
Γαΐου Ναυτίου παραλαβόντων τὴν ἀρχήν, ἕτερος
ἀνὴρ πάλιν τῶν πατρικίων Σερούιος Σερουίλιος, ὁ
τῷ παρελθόντι ὑπατεύσας ἔτει, μετ' οὐ πολὺν ἢ τὴν
ἀρχὴν ἀποθέσθαι χρόνον εἰς τὸν ὑπὲρ τῆς ψυχῆς ἀγῶνα
ἤχθη. οἱ δὲ προθέντες αὐτῷ τὴν ἐν τῷ δήμῳ δίκην*

δύο τῶν δημάρχων ἦσαν, Λεύκιος Καιδίκιος καὶ Τῖτος Στάτιος, οὐκ ἀδικήματος ἀλλὰ τύχης ἀπαιτοῦντες λόγον, ὅτι κατὰ τὴν πρὸς Τυρρηνοὺς μάχην ὠσάμενος ἐπὶ τὸν χάρακα τῶν πολεμίων ὁ ἀνὴρ θρασύτερον 1821 μᾶλλον ἢ φρονιμώτερον, ἐδιώχθη τε ὑπὸ τῶν ἔνδον ἀθρόων ἐπεξελθόντων καὶ τὴν κρατίστην νεότητα ἀπέβαλεν. οὗτος ὁ ἀγὼν ἁπάντων ἐφάνη τοῖς πατρικίοις ἀγώνων βαρύτατος, ἠγανάκτουν τε συνιόντες πρὸς ἀλλήλους καὶ δεινὸν ἐποιοῦντο, εἰ τὰς εὐτολμίας τῶν στρατηγῶν καὶ τὸ μηδένα κίνδυνον ὀκνεῖν, ἐὰν ἐναντιωθῇ ταῖς ἐπιβολαῖς αὐτῶν τὸ δαιμόνιον, εἰς κατηγορίαν ἄξουσιν οἱ μὴ στάντες παρὰ τὰ δεινά· δειλίας τε καὶ ὄκνου καὶ τοῦ μηδὲν ἔτι καινουργεῖν τοὺς ἡγεμόνας, ὑφ᾽ ὧν ἐλευθερία τε ἀπόλλυται καὶ ἡγεμονία καταλύεται, τοὺς τοιούτους ἀγῶνας αἰτίους ἔσεσθαι κατὰ τὸ εἰκὸς ἐλογίζοντο. παρακλήσει τε πολλῇ ἐχρῶντο τῶν δημοτικῶν μὴ καταγνῶναι τοῦ ἀνδρὸς τὴν δίκην, διδάσκοντες ὡς μεγάλα βλάψουσι τὴν πόλιν ἐπὶ ταῖς ἀτυχίαις τοὺς στρατηγοὺς ζημιοῦντες. ἐπεὶ δ᾽ ὁ τοῦ ἀγῶνος ἐνέστη χρόνος, παρελθὼν εἷς τῶν δημάρχων κατηγόρησε τοῦ ἀνδρός, Λεύκιος Καιδίκιος, ὅτι δι᾽ ἀφροσύνην τε καὶ τοῦ στρατηγεῖν 1822 ἀπειρίαν εἰς πρόδηλον ἄγων ὄλεθρον τὰς δυνάμεις ἀπώλεσε τῆς πόλεως τὴν κρατίστην ἀκμήν, καὶ εἰ μὴ ταχεῖα τοῦ κακοῦ γνῶσις ἐγένετο τῷ συνυπάτῳ, καὶ κατὰ σπουδὴν ἄγων τὰς δυνάμεις τούς τε πολεμίους ἀνέστειλε καὶ τοὺς σφετέρους ἔσωσε, μηδὲν ἂν γενέσθαι τὸ κωλῦσον ἅπασαν ἀπολωλέναι τὴν ἑτέραν δύναμιν καὶ τὸ λοιπὸν ἡμίσειαν ἀντὶ διπλασίας εἶναι τὴν πόλιν. τοιαῦτα εἰπὼν μάρτυρας ἐπηγάγετο λοχαγούς τε ὅσοι περιῆσαν, καὶ τῶν ἄλλων στρατιωτῶν τινας, οἳ τὸ ἑαυτῶν αἰσχρὸν ἐπὶ τῇ τότε ἥττῃ

τε καὶ φυγῇ ζητοῦντες ἀπολύσασθαι τὸν στρατηγὸν ἠτιῶντο τῆς περὶ τὸν ἀγῶνα δυσποτμίας. ἔπειτα οἶκτον ἐπὶ τῇ συμφορᾷ τῶν τότε τεθνηκότων καταχεάμενος πολὺν καὶ τὸ δεινὸν αὐξήσας, τά τε ἄλλα ὅσα εἰς φθόνον κοινῇ κατὰ τῶν πατρικίων λεγόμενα τοὺς μέλλοντας ὑπὲρ τοῦ ἀνδρὸς δεήσεσθαι ἀνείρξειν ἔμελλεν ἐκ πολλῆς ὑπεροψίας διελθών, παρέδωκε τὸν λόγον.

1823 XXVIIII. *Παραλαβὼν δὲ τὴν ἀπολογίαν ὁ Σερουίλιος εἶπεν· Εἰ μὲν ἐπὶ δίκην με κεκλήκατε, ὦ πολῖται, καὶ λόγον ἀπαιτεῖτε τῆς στρατηγίας, ἕτοιμός εἰμι ἀπολογήσασθαι· εἰ δὲ ἐπὶ τιμωρίαν κατεγνωσμένην, καὶ οὐδὲν ἔσται μοι πλέον ἀποδείξαντι ὡς οὐδὲν ὑμᾶς ἀδικῶ, λαβόντες τὸ σῶμα ὅ τι πάλαι βούλεσθε χρῆσθε. ἐμοί τε γὰρ κρεῖττον ἀκρίτῳ ἀποθανεῖν μᾶλλον, ἢ λόγου τυχόντι καὶ μὴ πείσαντι ὑμᾶς· δόξαιμι γὰρ σὺν δίκῃ πάσχειν ὅ τι ἄν μου καταγνῶτε· ὑμεῖς τ' ἐν ἐλάττονι αἰτίᾳ ἔσεσθε ἀφελόμενοί μου τὸν λόγον καὶ ἐν ᾧ καὶ εἴ τι ἀδικῶ ὑμᾶς ἄδηλόν ἐστιν ἔτι ταῖς ὀργαῖς χαρισάμενοι. ἔσται δέ μοι ἡ διάνοια ὑμῶν ἐκ τῆς ἀκροάσεως καταφανής,
1824 θορύβῳ τε καὶ ἡσυχίᾳ εἰκάζοντι, πότερον ἐπὶ τιμωρίαν ἢ ἐπὶ δίκην κεκλήκατέ με. Ταῦτ' εἰπὼν ἐπέσχε· σιγῆς δὲ γενομένης καὶ τῶν πλείστων ἐμβοησάντων θαρρεῖν τε καὶ ὅσα βούλεται λέγειν, παραλαβὼν τὸν λόγον πάλιν ἔλεξεν· Ἀλλ' εἴ τοι δικασταῖς ὑμῖν, ὦ πολῖται, καὶ μὴ ἐχθροῖς χρήσομαι, ῥᾳδίως πείσειν ὑμᾶς οἴομαι, ὅτι οὐδὲν ἀδικῶ. ποιήσομαι δὲ τὴν ἀρχὴν τῶν λόγων ἐξ ὧν ἅπαντες ἴστε. ἐγὼ κατέστην ἐπὶ τὴν ἀρχὴν σὺν τῷ κρατίστῳ Οὐεργινίῳ, καθ' ὃν χρόνον ἐπιτειχίσαντες ὑμῖν οἱ Τυρρηνοὶ τὸν ὑπὲρ τῆς πόλεως λόφον, πάσης ἐκράτουν τῆς ὑπαίθρου [ἀρχῆς],*

*καὶ ἐν ἐλπίδι ἦσαν τοῦ καταλύειν ἡμῶν τὴν ἀρχὴν
ἐν τάχει. λιμὸς δὲ πολὺς ἦν ἐν τῇ πόλει καὶ στάσις
καὶ τοῦ τί χρὴ πράττειν ἀμηχανία. τοιούτοις δὴ και–
ροῖς ἐπιστὰς οὕτως ταραχώδεσι καὶ φοβεροῖς, τοὺς
μὲν πολεμίους ἅμα τῷ συνάρχοντι ἐνίκησα διτταῖς
μάχαις καὶ ἠνάγκασα καταλιπόντας τὸ φρούριον ἀπελ-
θεῖν· τὸν δὲ λιμὸν οὐκ εἰς μακρὰν ἔπαυσα τροφῆς
ἀφθόνου πληρώσας τὰς ἀγοράς, καὶ τοῖς μετ' αὐτὸν* 1825
*ὑπάτοις τήν τε χώραν παρέδωκα ὅπλων πολεμίων
ἐλευθέραν, καὶ τὴν πόλιν ὑγιῆ πάσης νόσου πολιτι–
κῆς, εἰς ἃς κατέβαλον αὐτὴν οἱ δημαγωγοῦντες. τί–
νος οὖν ἀδικήματος ὑπεύθυνός εἰμι ὑμῖν; εἰ μὴ τὸ
νικᾶν τοὺς πολεμίους ἐστὶν ὑμᾶς ἀδικεῖν. εἰ δ' ἀπο-
θανεῖν τισι τῶν στρατιωτῶν κατὰ τὴν μάχην εὐψυχῶς
ἀγωνιζομένοις συνέπεσε, τί Σερουίλιος τὸν δῆμον
ἀδικεῖ; οὐ γὰρ δὴ θεῶν τις ἐγγυητὴς τοῖς στρατηγοῖς
τῆς ἁπάντων ψυχῆς τῶν ἀγωνιουμένων γίνεται, οὐδ'
ἐπὶ διακειμένοις καὶ ῥητοῖς τὰς ἡγεμονίας παραλαμ–
βάνομεν, ὥσθ' ἁπάντων κρατῆσαι τῶν πολεμίων καὶ
μηδένα τῶν ἰδίων ἀποβαλεῖν. τίς γὰρ ἂν ὑπομείνειεν* 1826
*ἄνθρωπος ὢν ἅπαντα καὶ τὰ τῆς γνώμης καὶ τὰ τῆς
τύχης εἰς ἑαυτὸν ἀναλαβεῖν; ἀλλὰ τὰ μεγάλα ἔργα
μεγάλων ἀεὶ κινδύνων ὠνούμεθα.*

XXX. *Καὶ οὐκ ἐμοὶ ταῦτα πρώτῳ πολεμίοις
ὁμόσε χωρήσαντι συνέβη παθεῖν, ἅπασι δ' ὡς εἰπεῖν
ὅσοι μάχας παρακεκινδυνευμένας σὺν ἐλάττοσι ταῖς
σφετέραις δυνάμεσι πρὸς μείζονας τὰς τῶν ἐχθρῶν
ἐποιήσαντο. ἐδίωξαν γὰρ ἤδη τινὲς ἐχθρούς, καὶ
αὐτοὶ ἔφυγον· καὶ ἀπέκτεινάν τε τῶν ἐναντίων πολ–
λούς, καὶ ἀπώλεσαν ἔτι πλείους τῶν σφετέρων. ἐῶ
γὰρ λέγειν, ὅτι πολλοὶ καὶ τὸ παράπαν ἡττηθέντες σὺν
αἰσχύνῃ τε καὶ βλάβῃ μεγάλῃ ἀνέστρεψαν, ὧν οὐδεὶς*

τῆς τύχης δέδωκε δίκας· ἱκανὴ γὰρ ἡ συμφορά, καὶ
τὸ μηδενὸς ἐπαίνου τυχεῖν, [ὡς δ'] εἰ καὶ μηδὲν
ἄλλο, μεγάλη τοῖς ἡγεμόσι καὶ χαλεπὴ ζημία. οὐ μὴν
ἀλλ' ἔγωγε τοσούτου δέω λέγειν, ὃ πάντες οἱ μέτριοι
δίκαιον εἶναι φήσουσιν, ὡς οὐ δεῖ με τύχης εὐθύνας
1827 ὑπέχειν, ὥστ' εἰ καὶ μηδεὶς ἄλλος τοιόνδε ἀγῶνα
ὑπέμεινεν εἰσελθεῖν, ἐγὼ μόνος οὐ παραιτοῦμαι,
ἀλλὰ συγχωρῶ τὴν τύχην ἐξετάζεσθαι τὴν ἐμὴν οὐχ
ἧττον τῆς γνώμης, ἐκεῖνο προειπών· ἐγὼ τὰς ἀν-
θρωπίνας πράξεις τάς τε δυστυχεῖς καὶ τὰς εὐτυχεῖς
οὐκ ἐκ τῶν κατὰ μέρος ἔργων πολλῶν ὄντων καὶ ποι-
κίλων ὁρῶ κρινομένας, ἀλλ' ἐκ τοῦ τέλους· καὶ ὅταν
μὲν τοῦτο χωρήσῃ κατὰ νοῦν, κἂν τὰ μεταξὺ πολλὰ
ὄντα μὴ καθ' ἡδονὰς γένηται, οὐδὲν ἧττον ἐπαινου-
μένας ὑπὸ πάντων ἀκούω καὶ ζηλουμένας καὶ τῆς
ἀγαθῆς νομιζομένας τύχης· ὅταν δὲ πονηρὰς λάβωσι
τελευτάς, καὶ ἐὰν ἅπαντα τὰ πρὸ τοῦ τέλους ἐκ τοῦ
ἀρίστου γένηται, οὐ τῇ σπουδαίᾳ τύχῃ τῶν πραξάν-
των ἀποδιδομένας, ἀλλὰ τῇ κακῇ. τοῦτον δὴ τὸν
σκοπὸν προελόντες αὐτοὶ ἐξετάζετε καὶ τὴν ἐμὴν τύ-
χην, ἣ παρὰ τοὺς πολέμους κέχρημαι. καὶ ἐὰν μὲν
1828 εὕρητε ἡττημένον με ὑπὸ τῶν πολεμίων πονηρὰν
καλεῖτέ μου τὴν τύχην· ἐὰν δὲ κεκρατηκότα τῶν
ἐχθρῶν ἀγαθήν· περὶ μὲν οὖν τῆς τύχης, οὐκ ἀγνοῶν
ὅτι φορτικοὶ πάντες εἰσὶν οἱ περὶ αὐτῆς λέγοντες,
ἔχων δ' ἔτι πλείω λέγειν παύσομαι.

XXXI. Ἐπειδὴ δὲ καὶ τῆς γνώμης κατηγοροῦσί
μου, προδοσίαν μὲν οὐ τολμῶντες ἐπικαλεῖν οὐδ'
ἀνανδρίαν, ἐφ' οἷς αἱ κατὰ τῶν ἄλλων στρατηγῶν
γίνονται κρίσεις, ἀπειρίαν δὲ τοῦ στρατηγεῖν καὶ
ἀφροσύνην, ὅτι κίνδυνον ὑπέμεινα οὐκ ἀναγκαῖον
ἐπὶ τὸν χάρακα τῶν πολεμίων ὠσάμενος, βούλομαι

καὶ περὶ τούτου λόγον ὑποσχεῖν ὑμῖν, προχειρότατον μὲν τοῦτ᾽ ἔχων εἰπεῖν, ὅτι τὸ μὲν ἐπιτιμᾶν τοῖς γενομένοις πάνυ ῥᾴδιον καὶ παντὸς ἀνθρώπου, τὸ δὲ παραβάλλεσθαι πράγμασι καλοῖς χαλεπὸν καὶ ὀλίγων· καὶ ὅτι οὐχ ὥσπερ τὰ γεγονότα φαίνεται ὁποῖά ἐστιν, οὕτω καὶ τὰ μέλλοντα ὁποῖα ἔσται· ἀλλ᾽ ἐκεῖνα μὲν αἰσθήσεσι καὶ πάθεσι καταλαμβανόμεθα, ταῦτα δὲ μαντείαις καὶ δόξαις εἰκάζομεν, ἐν αἷς πολὺ τὸ ἀπατηλόν 1829 *· καὶ ὅτι ῥᾷστον ἁπάντων ἐστὶ λόγῳ στρατηγεῖν πολέμους ἔξω τοῦ δεινοῦ βεβηκότας, ὃ ποιοῦσιν οἱ κατηγοροῦντες ἐμοῦ. ἀλλ᾽ ἵνα ταῦτ᾽ ἀφῶ, φέρε πρὸς θεῶν, εἴπατέ μοι, μόνος ἢ πρῶτος ὑμῖν ἐγὼ φαίνομαι βιάσασθαι φρούριον ἐπιβαλόμενος καὶ πρὸς ὑψηλὰ χωρία τὰς δυνάμεις ἀγαγών; ἢ πολλῶν μετ᾽ ἄλλων ὑμετέρων στρατηγῶν, ἐξ ὧν οἱ μὲν κατώρθωσαν, τοῖς δ᾽ οὐκ ἐχώρησεν ἡ πεῖρα κατὰ νοῦν; τί δήποτ᾽ οὖν τοὺς ἄλλους ἀφέντες ἐμὲ κρίνετε, εἰ ταῦτα ἀστρατηγησίας καὶ ἀφροσύνης ἔργα νομίζετε; πόσα δ᾽ ἄλλα τούτου τολμηρότερα τοῖς ἡγεμόσιν ἔπεισι πράττειν, ὅταν τὸ ἀσφαλὲς καὶ λελογισμένον ἥκιστα οἱ καιροὶ δέχωνται; οἱ μέν γε τὰς σημαίας ἁρπάσαντες τῶν σφετέρων ἔρριψαν εἰς τοὺς πολεμίους, ἵνα τοῖς βλακεύουσι καὶ ἀποδειλιῶσιν ἐκ τοῦ ἀναγκαίου παραστῇ τὸ εὔψυχον ἐπισταμένοις, ὅτι τοὺς μὴ ἀνασώσαντας* 1830 *τὰ σημεῖα ὑπὸ τῶν στρατηγῶν δεῖ σὺν αἰσχύνῃ ἀποθανεῖν· οἱ δ᾽ εἰς τὴν τῶν πολεμίων χώραν ἐμβαλόντες ἔλυσαν τὰ ζεύγματα τῶν ποταμῶν οὓς διέβησαν, ἵνα τοῖς φεύγειν διανοουμένοις ἄπορος ἡ τοῦ σωθῆναι ἐλπὶς φανεῖσα θάρσος παραστήσῃ καὶ μένος ἐν ταῖς μάχαις· οἱ δὲ τὰς σκηνὰς καὶ τὰ σκευοφόρα κατακαύσαντες ἀνάγκην ἐπέθηκαν τοῖς σφετέροις ἐκ τῆς πολεμίας ὅσων δέονται λαμβάνειν. ἐῶ τἆλλα μυρία*

ὄντα λέγειν, καὶ ὅσα τολμηρὰ ἔργα καὶ ἐνθυμήματα ἕτερα στρατηγῶν ἱστορίᾳ τε καὶ πείρᾳ παραλαβόντες ἔχομεν, ἐφ' οἷς οὐδεὶς πώποτε τῶν ψευσθέντων τῆς ἐλπίδος ὑπέσχε δίκας. εἰ μὴ ἄρα ἔχει τις ὑμῶν αἰτιάσασθαί με, ὅτι προβαλὼν τοὺς ἄλλους εἰς προὖπτον ὄλεθρον, αὐτὸς ἔξω τοῦ κινδύνου τὸ σῶμα εἶχον. εἰ δὲ μετὰ πάντων τε ἐξηταζόμην καὶ τελευταῖος ἀπηλλαττόμην καὶ τῆς αὐτῆς τοῖς ἄλλοις μετεῖχον τύχης, τί ἀδικῶ; καὶ περὶ μὲν ἐμοῦ ταῦθ' ἱκανὰ εἰρήσθω.

1831 XXXII. *Περὶ δὲ τῆς βουλῆς καὶ τῶν πατρικίων, ἐπειδὴ τὸ κοινὸν ὑμῶν μῖσος, ὃ διὰ τὴν κωλυθεῖσαν κληρουχίαν ἔχετε, καὶ ἐμὲ λυπεῖ, καὶ οὐδὲ ὁ κατήγορος αὐτὸ ἀπεκρύψατο, ἀλλὰ μέρος οὐκ ἐλάχιστον ἐποιήσατο τῆς ἐμῆς κατηγορίας, βούλομαι βραχέα εἰπεῖν πρὸς ὑμᾶς. ἔσται δὲ μετὰ παρρησίας ὁ λόγος· ἄλλως γὰρ οὔτ' ἂν ἐγὼ δυναίμην λέγειν οὔθ' ὑμῖν ἀκούειν συμφέροι. οὐ δίκαια ποιεῖτε οὐδ' ὅσια, ὦ δημόται, τῶν μὲν εὐεργεσιῶν ἃς εὕρεσθε παρὰ τῆς βουλῆς πολλῶν οὐσῶν καὶ μεγάλων οὐκ εἰδότες αὐτῇ χάριν· εἰ δέ τι δεομένοις ὑμῖν ἐξ οὗ συγχωρηθέντος μεγάλα βλάπτοιτ' ἂν τὸ κοινόν, οὐ φθονοῦσα ὑμῖν, ἀλλὰ τὸ συμφέρον τῆς πόλεως ὁρῶσα, ἠναντιώθη, τοῦτο δι' ὀργῆς λαμβάνοντες. ἔδει δὲ ὑμᾶς μάλιστα μὲν ὡς ἀπὸ τοῦ κρατίστου τὰ βουλεύματα αὐτῆς γενόμενα καὶ ἐπὶ τῷ πάντων ἀγαθῷ δεχομένους ἀπο-
1832 στῆναι τῆς σπουδῆς· εἰ δὲ ἀδύνατοι ἦτε κατασχεῖν ἀσύμφορον ἐπιθυμίαν λογισμῷ σώφρονι, μετὰ τοῦ πείθειν τῶν αὐτῶν ἀξιοῦν τυγχάνειν, ἀλλὰ μὴ μετὰ τοῦ βιάζεσθαι. αἱ γὰρ ἑκούσιοι δωρεαὶ τοῖς τε προεμένοις ἡδίους τῶν ἠναγκασμένων εἰσί, καὶ τοῖς λαμβάνουσι βεβαιότεραι τῶν μὴ τοιούτων. ὃ μὰ τοὺς θεοὺς οὐ λογίζεσθε ὑμεῖς, ἀλλ' ὑπὸ τῶν δημαγωγῶν,

ὥσπερ θάλαττα ὑπ' ἀνέμων ἄλλων ἐπ' ἄλλοις ἐπανι-
σταμένων, ἀνακινούμενοί τε καὶ ἀγριαινόμενοι οὐδὲ
τὸν ἐλάχιστον χρόνον ἐν ἡσυχίᾳ καὶ γαλήνῃ διακεῖ-
σθαι τὴν πόλιν ἐᾶτε. τοιγάρτοι περίεστιν ἡμῖν κρείτ-
τονα ἡγεῖσθαι τῆς εἰρήνης τὸν πόλεμον· ὅταν μέν γε
πολεμῶμεν τοὺς ἐχθροὺς κακῶς ποιοῦμεν, ὅταν δὲ
εἰρήνην ἄγωμεν τοὺς φίλους. καίτοι, ὦ δημόται, εἰ
μὲν ἅπαντα τὰ βουλεύματα τοῦ συνεδρίου καλὰ καὶ
συμφέροντα ἡγεῖσθ' εἶναι, ὥσπερ ἐστί, τί οὐχὶ καὶ
τοῦτο ἓν ἐξ αὐτῶν ὑπολαμβάνετ' εἶναι; εἰ δὲ μηδὲν
ἁπλῶς τὴν βουλὴν τῶν δεόντων οἴεσθε φρονεῖν, ἀλλ' 1833
αἰσχρῶς καὶ κακῶς τὴν πόλιν ἐπιτροπεύειν, τί δή
ποτε οὐχὶ μεταστησάμενοι αὐτὴν ἀθρόαν, αὐτοὶ ἄρ-
χετε καὶ βουλεύετε καὶ τοὺς ὑπὲρ τῆς ἡγεμονίας πο-
λέμους ἐκφέρετε, ἀλλὰ περικνίζετε αὐτὴν καὶ κατὰ
μικρὰ διαλύετε τοὺς ἐπιφανεστάτους ἀναρπάζοντες ἐν
ταῖς δίκαις; ἄμεινον γὰρ [ἦν] ἅπασιν ἡμῖν κοινῇ πο-
λεμεῖσθαι, ἢ καθ' ἕνα ἕκαστον ἰδίᾳ συκοφαντεῖσθαι.
ἀλλὰ γὰρ οὐχ ὑμεῖς αἴτιοι τούτων, ὥσπερ ἔφην, ἀλλ'
οἱ συνταράττοντες ὑμᾶς δημαγωγοὶ οὔτε ἄρχεσθαι
ὑπομένοντες οὔτε ἄρχειν εἰδότες. καὶ ὅσον μὲν ἐπὶ
τῇ τούτων ἀφροσύνῃ τε καὶ ἀπειρίᾳ πολλάκις ἂν ὑμῖν
τόδε τὸ σκάφος ἀνετράπη· νῦν δ' ἡ τὰ τούτων σφάλ-
ματα ἐπανορθοῦσα, καὶ ἐν ὀρθῇ πλεῖν παρέχουσα
ὑμῖν τῇ πόλει, ἡ πλεῖστα δεινὰ ὑπ' αὐτῶν ἀκούουσά
ἐστι βουλή. ταῦτα εἴτε ἡδέα ἐστὶν ὑμῖν ἀκούειν εἴτε
ἀνιαρά, μετὰ πάσης ἀληθείας εἴρηταί μοι καὶ τετόλ-
μηται· καὶ μᾶλλον αἱροίμην ἂν παρρησίᾳ συμφε- 1834
ρούσῃ τῷ κοινῷ χρώμενος ἀποθανεῖν, ἢ τὰ πρὸς ἡδο-
νὴν ὑμῖν λέγων σεσῶσθαι."

XXXIII. *Τοιούτους εἰπὼν λόγους καὶ οὔτε πρὸς ὀλοφυρμοὺς καὶ ἀνακλαύσεις τῆς συμφορᾶς τραπό-*

μενος, οὔτε ἐν δεήσεσι καὶ προκυλισμοῖς ἀσχήμοσι ταπεινὸς φανείς, οὔτ' ἄλλην ἀγεννῆ διάθεσιν ἀποδειξάμενος οὐδεμίαν, παρέδωκε τὸν λόγον τοῖς συναγορεύειν ἢ μαρτυρεῖν βουλομένοις. πολλοὶ μὲν οὖν καὶ ἄλλοι παριόντες ἀπέλυον αὐτὸν τῆς αἰτίας, μάλιστα δὲ Οὐεργίνιος ὁ κατὰ τὸν αὐτὸν ὑπατεύσας χρόνον καὶ τῆς νίκης αἴτιος εἶναι δοκῶν· ὃς οὐ μόνον ἀναίτιον αὐτὸν ἀπέφαινεν, ἀλλὰ καὶ ὡς κράτιστον ἀνδρῶν τὰ πολέμια καὶ στρατηγῶν φρονιμώτατον ἐπαινεῖσθαί τε καὶ τιμᾶσθαι ὑπὸ πάντων ἠξίου. ἔφη δὲ δεῖν, εἰ μὲν ἀγαθὸν οἴονται τέλος εἰληφέναι τὸν πόλεμον ἀμφοτέροις σφίσι τὴν χάριν εἰδέναι· εἰ δὲ πονηρὸν ἀμφοτέρους ζημιοῦν· κοινὰ γὰρ αὐτοῖς καὶ
1835 *τὰ βουλεύματα καὶ τὰ ἔργα καὶ τὰς ἐκ τοῦ δαιμονίου τύχας γεγονέναι. ἦν δὲ οὐ μόνον ὁ λόγος τοῦ ἀνδρὸς ἀλλὰ καὶ ὁ βίος πείθων, ἐν ἅπασιν ἐξητασμένος ἔργοις ἀγαθοῖς. προσῆν δὲ τούτοις, ὃ πλεῖστον ἐκίνησεν οἶκτον, ὄψεως σχῆμα συμπαθές, οἷον περὶ αὐτοὺς τοὺς πεπονθότας ἢ μέλλοντας πάσχειν τὰ δεινὰ γίνεσθαι φιλεῖ. ὥστε καὶ τοὺς προσήκοντας τοῖς ἀπολωλόσι καὶ δοκοῦντας ἀδιαλλάκτως ἔχειν πρὸς τὸν αἴτιον σφίσι τῆς συμφορᾶς, μαλακωτέρους γενέσθαι καὶ ἀποθέσθαι τὴν ὀργήν, ὡς ἐδήλωσαν. ἀναδοθεισῶν γὰρ τῶν ψήφων οὐδεμία φυλὴ τοῦ ἀνδρὸς κατεψηφίσατο. ὁ μὲν οὖν τὸν Σερουίλιον καταλαβὼν κίνδυνος τοιούτου τέλους ἔτυχεν.*

XXXIIII. *Οὐ πολλῷ δ' ὕστερον χρόνῳ στρατιὰ Ῥωμαίων ἐξῆλθεν ἐπὶ Τυρρηνοὺς ἄγοντος θατέρου τῶν ὑπάτων Ποπλίου Οὐαλερίου. συνέστη γὰρ αὖθις ἡ Οὐιενταναῶν δύναμις προσθεμένων αὐτοῖς Σαβίνων, οἳ τέως ὀκνοῦντες αὐτοῖς συνάρασθαι τοῦ πο-*
1836 *λέμου ὡς ἀδυνάτων ἐφιεμένοις, τότε ἐπειδὴ τήν τε*

Μενηνίου φυγὴν ἔγνωσαν καὶ τὸν ἐπιτειχισμὸν τοῦ πλησίον τῆς Ῥώμης ὄρους, τεταπεινῶσθαι νομίσαντες τάς τε δυνάμεις τὰς Ῥωμαίων καὶ τὸ φρόνημα τῆς πόλεως ἡττῆσθαι, συνελάμβανον τοῖς Τυρρηνοῖς πολλὴν ἀποστείλαντες δύναμιν. οἱ δὲ Οὐιεντανοὶ τῇ τε σφετέρᾳ δυνάμει πεποιθότες καὶ τῇ Σαβίνων νεωστὶ ἡκούσῃ καὶ τὰς παρὰ τῶν ἄλλων Τυρρηνῶν ἐπικουρίας περιμένοντες, προθυμίαν μὲν εἶχον ἐπὶ τὴν Ῥώμην ἐλαύνειν τῇ πλείονι τῆς σφετέρας στρατιᾶς, ὡς οὐδενὸς αὐτοῖς ὁμόσε χωρήσοντος, ἀλλὰ δυεῖν θάτερον, ἢ ἐκ τειχομαχίας αἱρήσοντες τὴν πόλιν ἢ λιμῷ κατεργασόμενοι. ἔφθασε δὲ τὴν ἐπιχείρησιν αὐτῶν ὁ Οὐαλέριος, ἐν ᾧ ἔτι ἔμελλον ἐκεῖνοι καὶ τοὺς ὑστερίζοντας συμμάχους ἀνέμενον, αὐτὸς ἀγαγὼν Ῥωμαίων τὴν κρατίστην ἀκμὴν καὶ τὸ παρὰ τῶν συμμάχων ἐπικουρικόν, οὐκ ἐκ τοῦ φανεροῦ ποιησάμενος τὴν ἔξοδον, ἀλλ᾽ ὡς μάλιστα λήσεσθαι αὐτοὺς ἔμελλε. προελθὼν γὰρ ἐκ τῆς Ῥώμης περὶ δείλην ὀψίαν καὶ διαβὰς τὸν Τέβεριν οὐ μακρὰν ἀποσχὼν τῆς πόλεως κατεστρατοπέδευσεν· ἔπειτ᾽ ἀναστήσας τὴν 1837
στρατιὰν περὶ μέσας νύκτας ἦγεν ἐν τάχει, καὶ πρὶν ἡμέραν γενέσθαι θατέρῳ χάρακι τῶν πολεμίων ἐπέβαλε. δύο γὰρ ἦν στρατόπεδα χωρὶς μὲν τὸ Τυρρηνῶν, ἑτέρωθι δὲ τὸ Σαβίνων, οὐ διὰ μακροῦ ἀλλήλων ἀπέχοντα. πρώτῃ δὲ προσαγαγὼν τὴν δύναμιν τῇ Σαβίνων στρατοπεδείᾳ, καθυπνωμένων ἔτι τῶν πλείστων καὶ οὐδεμιᾶς οὔσης ἀξιολόγου φυλακῆς, οἷα ἐν φιλίᾳ τε γῇ καὶ κατὰ πολλὴν ὑπεροψίαν τῶν πολεμίων οὐδαμῇ ἀγγελλομένων, ἐξ ἐφόδου γίνεται ταύτης ἐγκρατής. τῶν δὲ ἀνθρώπων οἱ μὲν ἐν ταῖς κοίταις ἔτι ὄντες κατεσφάγησαν, οἱ δὲ ἀνιστάμενοι ἀρτίως καὶ τὰ ὅπλα ἐνδυόμενοι, οἱ δὲ ὡπλισμένοι

μέν, σποράδες δὲ καὶ οὐκ ἐν τάξει ἀμυνόμενοι· οἱ δὲ πλεῖστοι φεύγοντες ἐπὶ τὸν ἕτερον χάρακα ὑπὸ τῶν ἱππέων καταλαμβανόμενοι διεφθάρησαν.

XXXV. Τοῦτον δὲ τὸν τρόπον ἁλόντος τοῦ τῶν
1838 Σαβίνων χάρακος, ἦγε τὴν δύναμιν ὁ Οὐαλέριος ἐπὶ τὸν ἕτερον, ἔνθα ἦσαν οἱ Οὐιενττανοὶ χωρίον οὐ πάνυ ἐχυρὸν κατειληφότες. λαθεῖν μὲν οὖν οὐκέτι ἐνεδέχετο τοὺς προσιόντας τῷ χάρακι· ἡμέρα τε γὰρ ἦν ἤδη λαμπρά, καὶ τῶν Σαβίνων οἱ φεύγοντες ἀπήγγειλαν τοῖς Τυρρηνοῖς τήν τε αὐτῶν συμφορὰν καὶ τὴν ἐπ' ἐκείνους ἔλασιν· ἀναγκαῖον δὲ ἦν ἐκ τοῦ καρτεροῦ τοῖς πολεμίοις συμφέρεσθαι. γίνεται δὴ μετὰ τοῦτο πάσῃ προθυμίᾳ τῶν Τυρρηνῶν ἀγωνιζομένων πρὸ τῆς παρεμβολῆς ὀξεῖα μάχη καὶ φόνος ἀμφοτέρων πολύς, ἰσορροπός τε καὶ μέχρι πολλοῦ ταλαντευομένη τῇδε καὶ τῇδε ἡ κρίσις τοῦ πολέμου. ἔπειτα ἐνέδοσαν οἱ Τυρρηνοὶ ὑπὸ τῆς Ῥωμαικῆς ἐξωσθέντες ἵππου καὶ ἀπεχώρησαν εἰς τὸν χάρακα, ὁ δ' ὕπατος ἠκολούθει, καὶ ἐπειδὴ πλησίον ἐγένετο τῶν ἐρυμάτων· ἦν δὲ φαύλως κατεσκευασμένα καὶ τὸ χωρίον ὥσπερ ἔφην οὐ πάνυ ἀσφαλές· προσέβαλε
1839 κατὰ πολλὰ μέρη τό τε λοιπὸν ἐκείνης τῆς ἡμέρας μέρος ἐπιταλαιπωρῶν καὶ οὐδὲ τὴν ἐπιοῦσαν νύκτα ἀναπαυσάμενος. οἱ δὲ Τυρρηνοὶ ταῖς συνεχέσι κακοπαθείαις ἀπειρηκότες ἐκλείπουσι τὸν χάρακα περὶ τὸν ὄρθρον· καὶ οἱ μὲν εἰς τὴν πόλιν ἔφευγον, οἱ δ' εἰς τὰς πλησίον ὕλας ἐσκεδάσθησαν. γενόμενος δὲ καὶ τούτου τοῦ χάρακος ἐγκρατής, ἐκείνην μὲν τὴν ἡμέραν ἀνέπαυσε τὴν στρατιάν, τῇ δ' ἑξῆς τά τε λάφυρα ὅσα ἐξ ἀμφοτέρων εἰλήφει τῶν στρατοπέδων διένειμε τοῖς ἀγωνισαμένοις πολλὰ ὄντα, καὶ τοὺς ἀριστεύσαντας ἐν ταῖς μάχαις τοῖς εἰωθόσιν ἐκόσμει

στεφάνοις. ἦν δ' ὁ κράτιστα πάντων ἀγωνίσασθαι δόξας
καὶ τρεψάμενος τὴν Οὐιεντανῶν δύναμιν Σερουίλιος
ὁ τῷ προτέρῳ ὑπατεύσας ἔτει καὶ τὴν ἐπὶ τοῦ δήμου
δίκην ἀποφυγών, πρεσβευτὴς τότε τῷ Οὐαλερίῳ συμ-
πεμφθείς, καὶ ἐπὶ τῇ ἀριστείᾳ τῇδε τὰς νομιζομένας
εἶναι μεγίστας παρὰ Ῥωμαίοις δωρεὰς οὗτος ἦν ὁ
πρῶτος ἐξενεγκάμενος. μετὰ ταῦτα τούς τε τῶν πο-
λεμίων σκυλεύσας νεκροὺς ὁ ὕπατος καὶ τῶν ἰδίων
ταφὰς ποιησάμενος, ἐξῆγε τὴν στρατιὰν καὶ πλησίον 1840
τῆς Οὐιεντανῶν πόλεως καταστήσας, προὐκαλεῖτο
τοὺς ἔνδον. ὡς δ' οὐδεὶς ἐξῄει μαχησόμενος ἄπορον
ὁρῶν χρῆμα ἐκ τειχομαχίας αὐτοὺς ἑλεῖν ἐχυρὰν
σφόδρα ἔχοντας πόλιν, τῆς γῆς αὐτῶν πολλὴν κατα-
δραμὼν εἰς τὴν Σαβίνων ἐνέβαλε. λεηλατήσας δὲ
κἀκείνην ἔτι ἀκέραιον οὖσαν ἐπὶ πολλὰς ἡμέρας καὶ
βαρεῖαν ἤδη τὴν ἀποσκευὴν ἔχων ταῖς ὠφελείαις,
ἀπῆγεν ἐπ' οἴκου τὴν δύναμιν· καὶ αὐτῷ ὁ μὲν δῆμος
πρὸ πολλοῦ τῆς πόλεως ὄντι ἐστεφανωμένος ὑπήντα
λιβανωτοῖς τε θυμιῶν τὴν πάροδον καὶ κρατῆρσι με-
λικράτου κεκραμένοις ὑποδεχόμενος τὴν στρατιάν·
ἡ δὲ βουλὴ τὴν τοῦ θριάμβου πομπὴν ἐψηφίσατο.
ὁ δὲ ἕτερος τῶν ὑπάτων Γάιος Ναύτιος, ᾧ προσέκειτο
κατὰ κλῆρον ἡ τῶν συμμάχων Λατίνων τε καὶ Ἑρνί-
κων φυλακή, βραδυτέραν ἐποιήσατο τὴν ἔξοδον· οὔτε
ἀπορίᾳ οὔτε ὄκνῳ τοῦ κινδύνου κρατηθείς, τὴν δ'
ἀδηλότητα τοῦ πρὸς Οὐιεντανοὺς πολέμου καραδο- 1841
κῶν, ἵν' ἐάν τι συμβῇ πταῖσμα περὶ τὴν ἐκεῖ στρα-
τιὰν ἐν ἑτοίμῳ τις ὑπάρχῃ τῇ πόλει συνεστῶσα δύ-
ναμις, ἢ κωλύσει τοὺς πολεμίους εἰς τὴν χώραν ἐμ-
βαλεῖν, ἐὰν ὥσπερ οἱ πρότερον ἐλάσαντες ἐπὶ τὴν
Ῥώμην ἐπιτειχίζειν τινὰ κατὰ τῆς πόλεως χωρία ἐπι-
βάλωνται. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ τούτου χρόνῳ καὶ ὁ κατὰ

τῶν Λατίνων πόλεμος, ὃν ἐπῆγον αὐτοῖς Αἰκανοί τε καὶ Οὐολοῦσκοι τέλος εὐτυχὲς ἔσχε· καὶ παρῆσάν τινες ἀγγέλλοντες μάχῃ νικηθέντας ἀπεληλυθέναι τοὺς πολεμίους ἐκ τῆς χώρας αὐτῶν, καὶ μηδεμιᾶς τοῖς συμμάχοις ἔτι δεῖν βοηθείας κατὰ τὸ παρόν· ὁ μέντοι Ναύτιος οὐδὲν ἧττον ἐπειδὴ τὰ ἐν τῇ Τυρρηνίᾳ πράγματα καλῶς σφίσιν ἐχώρησεν ἐξῆγε τὴν στρατιάν. ἐμβαλὼν δ' εἰς τὴν Οὐολούσκων χώραν καὶ πολλὴν αὐτῆς διεξελθὼν ἔρημον ἀφειμένην, ἀνδραπόδων μὲν καὶ βοσκημάτων ὀλίγων πάνυ ἐκράτησεν, ἀρούρας δὲ αὐτῶν ἐν ἀκμῇ τοῦ σίτου ὄντος ἐμπρήσας, καὶ ἄλλα οὐκ ὀλίγα τῶν ἐν τοῖς ἀγροῖς λωβησά-
1842 *μενος, οὐδενὸς ὁμόσε χωροῦντος ἀπῆγε τὴν στρατιάν· ταῦτα μὲν ἐπὶ τούτων τῶν ἀνδρῶν ἐπράχθη.*

XXXVI. *Οἱ δὲ διαδεξάμενοι τούτους ὕπατοι Αὖλος Μάλλιος καὶ Λεύκιος Φούριος, ψηφισαμένης τῆς βουλῆς τὸν ἕτερον αὐτῶν στρατιὰν ἐπὶ Οὐιεντανοὺς ἄγειν, ἐκληρώσαντο περὶ τῆς ἐξόδου καθάπερ αὐτοῖς ἔθος ἦν. καὶ λαχὼν Μάλλιος ἐξῆγε τὰς δυνάμεις διὰ ταχέων, καὶ πλησίον τῶν πολεμίων κατεστρατοπέδευσεν. οἱ δὲ Οὐιεντανοὶ τειχήρεις γενόμενοι τέως μὲν ἀντεῖχον, καὶ διεπρεσβεύοντο πρός τε τὰς ἄλλας τὰς ἐν Τυρρηνοῖς πόλεις, καὶ πρὸς τοὺς νεωστὶ συμμαχήσαντας αὐτοῖς Σαβίνους, βοήθειαν ἀξιοῦντες ἀποστεῖλαι σφίσι διὰ ταχέων. ὡς δ' ἀπάντων ἀπετύγχανον καὶ τὰς τροφὰς ἀπαναλώκεσαν, ὑπὸ τῆς ἀνάγκης τοῦ λιμοῦ βιασθέντες ἐξῆλθον ὡς τὸν ὕπατον, ἱκετηρίας φέροντες οἱ πρεσβύτατοί τε αὐτῶν καὶ τιμιώτατοι, περὶ καταλύσεως δεόμενοι τοῦ*
1843 *πολέμου. τοῦ δὲ Μαλλίου κελεύσαντος αὐτοῖς ἀργύριόν τε εἰς ὀψωνιασμὸν ἐνιαυτοῦ τῇ στρατιᾷ καὶ διμήνου τροφὰς ἀποφέρειν, ὅταν δὲ ταῦτα ποιήσωσιν εἰς*

Ῥώμην ἀποστέλλειν τοὺς διαλεξομένους τῇ βουλῇ περὶ τῶν διαλύσεων, ἐπαινέσαντες ταῦτα καὶ διὰ ταχέων τό τε ὀψώνιον τῇ στρατιᾷ καὶ τὸ ἀντὶ τοῦ σίτου συγχωρηθὲν ὑπὸ τοῦ Μαλλίου κατενεγκόντες ἀργύριον, ἧκον εἰς τὴν Ῥώμην· καὶ καταστάντες ἐπὶ τὴν βουλὴν συγγνώμης ἐπὶ τοῖς γεγονόσι τυχεῖν ἠξίουν, καὶ εἰς τὸν λοιπὸν χρόνον ἀπαλλαγῆς τοῦ πολέμου. πολλῶν δὲ λεχθέντων εἰς ἀμφότερα τὰ μέρη λόγων, ἐνίκησεν ἡ σπένδεσθαι παραινοῦσα τὸν πρὸς αὐτοὺς πόλεμον γνώμη, γίνονταί τ' ἀνοχαὶ τοῦ πολέμου πρὸς αὐτοὺς τεσσαρακονταετεῖς. καὶ οἱ μὲν ἀπῄεσαν, πολλὰς τῇ πόλει τῆς εἰρήνης χάριτας εἰδότες· ὁ δὲ Μάλλιος ἀφικόμενος εἰς τὴν πόλιν, ἐπὶ τῇ καταλύσει τοῦ πολέμου τὸν πεζὸν θρίαμβον αἰτησάμενος, ἔλαβεν. ἐγένετο δὲ καὶ τίμησις ἐπὶ τῆς τούτων ἀρχῆς, καὶ ἦσαν οἱ τιμησάμενοι πολῖται σφᾶς τε 1844 αὐτοὺς καὶ χρήματα καὶ τοὺς ἐν ἥβῃ παῖδας ὀλίγῳ πλείους τρισχιλίων τε καὶ δέκα μυριάδων.

XXXVII. Οἱ δὲ μετὰ τούτους παραλαβόντες τὴν ὕπατον ἀρχήν, Λεύκιος Αἰμίλιος Μάμερκος τὸ τρίτον, καὶ Οὐοπίσκος Ἰούλιος, ἐπὶ τῆς ἑβδόμης καὶ ἑβδομηκοστῆς ὀλυμπιάδος, ἣν ἐνίκα στάδιον Δάντης Ἀργεῖος, Ἀθήνησι δὲ ἄρχοντος Χάρητος, ἐπίπονον σφόδρα καὶ ταραχώδη τὴν ἀρχὴν διετέλεσαν, εἰρήνην μὲν ἄγοντες ἀπὸ τῶν ἔξωθεν πολέμων· ἐν ἡσυχίᾳ γὰρ ἦν πάντα τὰ διάφορα· ὑπὸ δὲ τῶν ἐν τῇ πόλει στάσεων αὐτοί τε εἰς κινδύνους ἀχθέντες καὶ τὴν πόλιν ὀλίγου δεήσαντες ἀπολέσαι. ὡς γὰρ ἀνεπαύσατο τῶν στρατειῶν τὸ πλῆθος, ἐπὶ τὴν διανομὴν εὐθὺς ὥρμησε τῶν δημοσίων ἀγρῶν. ἦν γάρ τις ἐν τοῖς δημάρχοις θρασὺς καὶ λέγειν οὐκ ἀδύνατος ἀνήρ, Γναῖος Γενύκιος, ὁ παραθήγων τὰς ὀργὰς τῶν πενήτων. 1845

οὗτος ἐκκλησίας συνάγων ἑκάστοτε καὶ ἐκδημαγωγῶν
τοὺς ἀπόρους, προσηνάγκαζε τοὺς ὑπάτους τὰ ὑπὸ
τῆς βουλῆς ψηφισθέντα περὶ τῆς κληρουχίας συντε-
λεῖν. οἱ δ' οὐχ ὑπήκουον, οὐ τῇ ἑαυτῶν ἀρχῇ λέγον-
τες ἐπιτετάχθαι τὸ ἔργον ὑπὸ τῆς βουλῆς, ἀλλὰ τοῖς
μετὰ Κάσσιον καὶ Οὐεργίνιον ὑπάτοις, πρὸς οὓς
[καὶ] τὸ προβούλευμα ἐγράφη· καὶ ἅμα οὐδ' εἶναι
νόμους εἰς ἀεὶ κυρίους ἃ ψηφίζεται τὸ συνέδριον,
ἀλλὰ πολιτεύματα καιρῶν ἐνιαύσιον ἔχοντα ἰσχύν.
ταύτας προβαλλομένων τῶν ὑπάτων τὰς αἰτίας, ἀδύ-
νατος ὢν ὁ Γενύκιος αὐτοὺς ἀναγκάσαι μείζονα
ἐξουσίαν ἔχοντας ἰταμὴν ὁδὸν ἐτράπετο. τοῖς γὰρ
ὑπατεύσασι τὸ ἔμπροσθεν ἔτος Μαλλίῳ τε καὶ Λευ-
1846 κίῳ δίκην ἐπήνεγκε δημοσίαν, καὶ προεῖπεν ἥκειν
ἐπὶ τὸν δῆμον ἀπολογησομένους, ὁρίσας ἄντικρυς τὴν
αἰτίαν τῆς δίκης, ὅτι τὸν δῆμον ἀδικοῦσιν οὐκ ἀπο-
δείξαντες τοὺς δέκα ἄνδρας, οὓς ἐψηφίσατο ἡ βουλή,
τοὺς ποιησομένους τὴν τῶν κλήρων διανομήν. τοῦ
δὲ μὴ τῶν ἄλλων τινὰς ὑπάτων ἄγειν ἐπὶ τὴν δίκην,
δώδεκα γενομένων τῶν μεταξὺ ἀρχείων, ἀφ' οὗ τὸ
προβούλευμα ἐγράφη, τούτους δὲ προβαλέσθαι τοὺς
ἄνδρας μόνους τῆς ψευσθείσης ὑποσχέσεως, ἐπιει-
κεῖς ἔφερεν αἰτίας· καὶ τελευτῶν ἔφη μόνως ἂν οὕ-
τως ἀναγκασθῆναι τοὺς ἐν ἀρχῇ τότε ὄντας ὑπάτους
κληρουχῆσαι τὴν γῆν, ἐὰν ἑτέρους τινὰς ἴδωσι δίκην
τῷ δήμῳ διδόντας, ἐνθυμηθέντας, ὅτι καὶ σφίσιν
αὐτοῖς συμβήσεται τὸ αὐτὸ παθεῖν.

XXXVIII. Ταῦτ' εἰπὼν καὶ παρακαλέσας ἅπαν-
τας ἥκειν ἐπὶ τὴν δίκην, καθ' ἱερῶν τε ὀμόσας ἦ μὴν
ἐμμενεῖν τοῖς ἐγνωσμένοις καὶ πάσῃ προθυμίᾳ τῶν
1847 ἀνδρῶν κατηγορήσειν, ἡμέραν προεῖπεν ἐν ᾗ τὴν
δίκην ἔμελλεν ἐπιτελέσειν. τοὺς δὲ πατρικίους ὡς

ἔμαθον ταῦτα πολὺ δέος εἰσέρχεται καὶ φροντίς, ὅτῳ χρὴ τρόπῳ τούς τε ἄνδρας ἐκλύσασθαι τῆς αἰτίας καὶ τοῦ δημαγωγοῦ τὸ θράσος ἐπισχεῖν. καὶ δὴ ἐδέδοκτο αὐτοῖς, εἴ τι ψηφίσαιτο κατὰ τῆς ἀρχῆς τῶν ὑπάτων ὁ δῆμος, μὴ ἐπιτρέπειν αὐτῷ κατὰ τὸ καρτερὸν ἐνισταμένους καὶ εἰ δέοι καὶ εἰς ὅπλα χωροῦντας. οὐ μὴν ἐδέησέ γε τῶν βιαίων οὐδενὸς αὐτοῖς, ταχεῖαν λαβόντος τοῦ κινδύνου καὶ παράδοξον τὴν λύσιν· μιᾶς γὰρ ἡμέρας οὔσης ἔτι λοιπῆς τῇ δίκῃ, νεκρὸς Γενύκιος ἐπὶ τῆς ἑαυτοῦ κοίτης εὑρέθη, σημεῖον οὐδὲν ἔχων οὔτε σφαγῆς οὔτε ἀγχόνης οὔτε φαρμάκου οὔτ' ἄλλου τῶν ἐξ ἐπιβουλῆς θανάτων οὐδενός. ὡς δ' ἐγνώσθη τὸ πάθος, καὶ προηνέχθη τὸ σῶμα εἰς τὴν ἀγοράν, δαιμόνιόν τι κωλύσεως συγκύρημα ἔδοξεν εἶναι, καὶ 1848
αὐτίκα ἡ δίκη διελέλυτο. τῶν γὰρ ἄλλων οὐδεὶς ἐτόλμα δημάρχων ἀνακαλεῖν τὴν στάσιν, ἀλλὰ καὶ τοῦ Γενυκίου κατεγίνωσκον πολλὴν μανίαν. εἰ μὲν οὖν μηδὲν ἔτι πολυπραγμονοῦντες οἱ ὕπατοι διετέλεσαν, ἀλλ' ἀφῆκαν ὡς ὁ δαίμων ἐκοίμησε τὴν στάσιν, οὐδεὶς ἂν αὐτοὺς ἔτι κατέλαβε κίνδυνος· νῦν δὲ εἰς αὐθάδειαν καὶ καταφρόνησιν τοῦ δημοτικοῦ τραπόμενοι καὶ τὸ τῆς ἀρχῆς κράτος ὅσον ἐστὶν ἐπιδεῖξαι βουλόμενοι, κακὰ ἐξειργάσαντο μεγάλα. προθέντες γὰρ στρατολογίαν καὶ τοὺς οὐχ ὑπακούοντας ταῖς τε ἄλλαις ζημίαις καὶ πληγαῖς ῥάβδων προσαναγκάζοντες, εἰς ἀπόνοιαν ἐποίησαν τραπέσθαι τοῦ δημοτικοῦ τὸ πλέον, ἀπὸ τοιαύτης μάλιστ' αἰτίας.

XXXVIIII. *'Ανήρ τις ἐκ τῶν δημοτικῶν τὰ πολέμια λαμπρός, Βολέρων Πόπλιος, ἡγεμονίαν ἐσχηκὼς λόχων ἐν ταῖς προτέραις στρατείαις, τότε ἀντὶ λοχαγοῦ στρατιώτης πρὸς αὐτῶν κατεγράφετο. ὡς δὲ* 1849
ἠναντιοῦτο καὶ οὐκ ἠξίου χώραν ἀτιμοτέραν λαβεῖν

*οὐδὲν ἡμαρτηκὼς ἐν ταῖς προτέραις στρατείαις, δυσ-
ανασχετοῦντες οἱ ὕπατοι τὴν παρρησίαν αὐτοῦ, τοῖς
ῥαβδούχοις ἐκέλευσαν τὴν ἐσθῆτα τε περικαταρρῆξαι
καὶ ταῖς ῥάβδοις τὸ σῶμα ξαίνειν. ὁ δὲ νεανίας τούς
τε δημάρχους ἐπεκαλεῖτο, καὶ εἴ τι ἀδικεῖ κρίσιν ἐπὶ
τῶν δημοτῶν ὑπέχειν ἠξίου. ὡς δ' οὐ προσεῖχον αὐτῷ
τὸν νοῦν οἱ ὕπατοι, ἀλλὰ τοῖς ῥαβδούχοις ἄγειν καὶ
τύπτειν ἐπεκελεύοντο, οὐκ ἀνασχετὸν ἡγησάμενος
εἶναι τὴν ὕβριν αὐτὸς ἑαυτῷ ταμίας τῆς δίκης γίνεται.
1850 τόν τε γὰρ πρῶτον προσελθόντα τῶν ῥαβδούχων παίων
εἰς τὸ πρόσωπον ἐναντίαις πυγμαῖς νεανίας καὶ ἐρρω-
μένος ἀνὴρ ἀνατρέπει καὶ τὸν ἐπὶ τούτῳ. ἀγανακτη-
σάντων δὲ τῶν ὑπάτων καὶ πᾶσιν ἅμα τοῖς ὑπηρέταις
προσελθεῖν κελευσάντων, δεινόν τι τοῖς παροῦσι τῶν
δημοτικῶν ἐφάνη· καὶ αὐτίκα συστραφέντες ἀθρόοι καὶ
ἀναβοήσαντες τὸ παρακλητικὸν τῆς ἀλλήλων ὀργῆς,
τόν τε νεανίσκον ἐξήρπασαν καὶ τοὺς ῥαβδούχους
ἀπέστησαν παίοντες καὶ τελευτῶντες ἐπὶ τοὺς ὑπά-
τους ὥρμησαν, καὶ εἰ μὴ καταλιπόντες ἐκεῖνοι τὴν
ἀγορὰν ἔφυγον, ἀνήκεστον ἄν τι κακὸν ἐξειργάσαντο.
ἐκ δὲ τούτου διειστήκει πᾶσα ἡ πόλις, καὶ οἱ τέως
ἡσυχάζοντες δήμαρχοι τότε ἠγριοῦντο καὶ τῶν ὑπάτων
κατηγόρουν. περιειστήκει τε ἡ περὶ τῆς κληρουχίας στά-
σις εἰς ἑτέραν μείζονα διὰ τὸν ὑπὲρ τοῦ κόσμου τῆς πολι-
1851 τείας ἀγῶνα. οἱ μέν γε πατρίκιοι τοῖς ὑπάτοις ὡς κατα-
λυομένης αὐτῶν τῆς ἐξουσίας συναγανακτοῦντες, τὸν
ἐπιβαλεῖν τοῖς ὑπηρέταις τολμήσαντα κατὰ κρημνοῦ
βαλεῖν ἠξίουν. οἱ δὲ δημοτικοὶ συστρέψαντες αὑτοὺς
κατεβόων τε καὶ παρεκελεύοντο μὴ προδιδόναι σφῶν
τὴν ἐλευθερίαν, ἀλλ' ἐπὶ τὴν βουλὴν τὸ πρᾶγμα ἄγειν
καὶ τῶν ὑπάτων κατηγορεῖν καὶ δίκης τινὸς παρ'
αὐτῶν ἠξίουν τυχεῖν, ὅτι τὸν ἐπικαλεσάμενον τὴν ἐκ*

τῶν δημάρχων βοήθειαν, καὶ ἐν τῷ δήμῳ κρίσιν ὑπέχειν εἴ τι πλημμελεῖ βουλόμενον, οὐδετέρου τυχεῖν εἴασαν τῶν δικαίων, ἀλλ' ἐν ἀνδραπόδου μοίρᾳ τὸν ἐλεύθερον καὶ πολίτην ἔθεντο παίειν ἐπικελευόμενοι. ἀντιτεταγμένων δὴ τούτων καὶ οὐδετέρων εἶξαι βουλομένων τοῖς ἑτέροις, ἅπας ὁ λοιπὸς τῆς ὑπατείας ἐκείνης ἐδαπανήθη χρόνος, οὔτε πολεμικαῖς πράξεσι κοσμηθεὶς καλαῖς οὔτε πολιτικαῖς λόγου ἀξίαις.

XXXX. Ἐπιστάντων δὲ τῶν ἀρχαιρεσίων ὕπατοι μὲν ἀπεδείχθησαν Λεύκιος Πινάριος καὶ Πόπλιος Φούριος. ἐν ἀρχῇ δὲ τοῦ ἔτους εὐθὺς ὀττείας τινὸς 1852
ἡ πόλις ἐπληρώθη καὶ φόβου δαιμονίου τεράτων τε καὶ σημείων πολλῶν γινομένων. καὶ οἵ τε μάντεις ἅπαντες καὶ οἱ τῶν ἱερῶν ἐξηγηταὶ χόλου δαιμόνων μηνύματα εἶναι τὰ γινόμενα ἀπέφαινον, ἱερῶν τινων οὐχ ὁσίως οὐδὲ καθαρῶς ἐπιτελουμένων. καὶ οὐ μετὰ πολὺ νόσος ἐνέσκηψεν εἰς τὰς γυναῖκας ἡ καλουμένη λοιμική, καὶ θάνατος ὅσος οὔπω πρότερον, μάλιστα δ' εἰς τὰς ἐγκύμονας. ὠμοτοκοῦσαί τε γὰρ καὶ νεκρὰ τίκτουσαι συναπέθνησκον τοῖς βρέφεσι, καὶ οὔτε λιτανεῖαι πρὸς ἕδεσι καὶ βωμοῖς γινόμεναι θεῶν, οὔτε καθαρτήριοι θυσίαι περί τε πόλεως καὶ οἴκων ἰδίων ἐπιτελούμεναι παῦλαν αὐταῖς ἔφερον τῶν κακῶν. ἐν τοιαύτῃ δὲ συμφορᾷ τῆς πόλεως οὔσης τοῖς ἐξηγηταῖς τῶν ἱερῶν γίνεται μήνυσις ὑπὸ δούλου τινός, ὅτι μία τῶν ἱεροποιῶν παρθένων τῶν φυλαττουσῶν τὸ ἀθάνατον πῦρ Ὀρβινία τὴν παρθενίαν ἀπολώλεκε καὶ τὰ ἱερὰ θύει τὰ τῆς πόλεως οὐκ οὖσα καθαρά. 1853
κἀκεῖνοι μεταστήσαντες αὐτὴν ἀπὸ τῶν ἱερῶν, καὶ προθέντες δίκην, ἐπειδὴ καταφανὴς ἐγένετο ἐλεγχθεῖσα, ῥάβδοις τε ἐμαστίγωσαν καὶ πομπεύσαντες διὰ τῆς πόλεως ζῶσαν κατώρυξαν. τῶν δὲ διαπραξα-

μένων τὴν ἀνοσίαν φθορὰν ὁ μὲν ἕτερος ἑαυτὸν διεχρήσατο, τὸν δὲ ἕτερον οἱ τῶν ἱερῶν ἐπίσκοποι συλλαβόντες ἐν ἀγορᾷ μάστιξιν αἰκισάμενοι καθάπερ ἀνδράποδον ἀπέκτειναν. ἡ μὲν οὖν νόσος ἡ κατασκήψασα εἰς τὰς γυναῖκας καὶ ὁ πολὺς αὐτῶν φθόρος μετὰ τοῦτο τὸ ἔργον εὐθὺς ἐπαύσατο.

XXXXI. *Ἡ δ' ἐκ πολλοῦ χρόνου διαμένουσα ἐν τῇ πόλει στάσις, ἣν οἱ δημόται πρὸς τοὺς πατρικίους ἐστασίαζον, ἀνίστατο πάλιν. ὁ δ' ἐξεγείρων αὐτὴν δήμαρχος ἦν Πόπλιος Βολέρων, ὁ τῷ πρόσθεν ἐνιαυτῷ τοῖς περὶ Αἰμίλιόν τε καὶ Ἰούλιον ὑπάτοις ἀπειθήσας, ὅτε αὐτὸν ἀντὶ λοχαγοῦ στρατιώτην κατ-*
1854 *έγραφον, οὐ δι' ἄλλο τι μᾶλλον ἀποδειχθεὶς ὑπὸ τῶν πενήτων τοῦ δήμου προστάτης· γένος τε γὰρ ἐκ τῶν ἐπιτυχόντων ἦν καὶ τεθραμμένος ἐν πολλῇ ταπεινότητι καὶ ἀπορίᾳ· ἀλλ' ὅτι τὴν ἀρχὴν τῶν ὑπάτων βασιλικὸν ἔχουσαν ἀξίωμα τέως, πρῶτος ἔδοξεν ἰδιώτης ἀνὴρ ἀπειθείᾳ ταπεινῶσαι, καὶ ἔτι μᾶλλον διὰ τὰς ὑποσχέσεις ἃς ἐποιεῖτο μετιὼν τὴν ἀρχὴν κατὰ τῶν πατρικίων, ὡς ἀφαιρησόμενος αὐτῶν τὴν ἰσχύν. ὃς ἐπειδὴ τάχιστα ἐξεγένετο αὐτῷ λωφήσαντος τοῦ δαιμονίου χόλου τὰ πολιτικὰ πράττειν, συναγαγὼν τὸν δῆμον εἰς ἐκκλησίαν νόμον εἰσφέρει περὶ τῶν δημαρχικῶν ἀρχαιρεσίων, μετάγων αὐτὰ ἐκ τῆς φρατριακῆς ψηφοφορίας, ἣν οἱ Ῥωμαῖοι κυριάτην καλοῦσιν, ἐπὶ τὴν φυλετικήν. τίς δὲ τούτων διαφορὰ τῶν ἀρχαιρεσίων ἐγὼ σημανῶ. τὰς μὲν φρατριακὰς ψηφοφορίας ἔδει*
1855 *προβουλευσαμένης τῆς βουλῆς καὶ τοῦ πλήθους κατὰ φράτρας τὰς ψήφους ἐπενέγκαντος, καὶ μετ' ἀμφότερα ταῦτα τῶν παρὰ τοῦ δαιμονίου σημείων τε καὶ οἰωνῶν μηδὲν ἐναντιωθέντων, τότε κυρίας εἶναι· τὰς δὲ φυλετικὰς μήτε προβουλεύματος γενομένου μήτε τῶν*

ἱερέων τε καὶ οἰωνοσκόπων ἐπιθεσπισάντων, ἐν ἡμέρᾳ μιᾷ τελεσθείσας ὑπὸ τῶν φυλετῶν τέλος ἔχειν. καὶ ἦσαν ἐκ τῶν λοιπῶν τεττάρων δημάρχων οἱ συνεισφέροντες αὐτῷ δύο δήμαρχοι τὸν νόμον· οὓς προσεταιρισάμενος ἐλαττόνων ὄντων τῶν μὴ ταὐτὰ βουλομένων περιῆν. οἱ δ' ὕπατοι καὶ ἡ βουλὴ καὶ πάντες οἱ πατρίκιοι κωλύειν ἐπεχείρουν τὸν νόμον· ἀφικόμενοί τε κατὰ πλῆθος εἰς τὴν ἀγορὰν, ἐν ᾗ προεῖπον οἱ δήμαρχοι κυρώσειν τὸν νόμον ἡμέρᾳ, παντοδαποὺς διῆλθον λόγους, τῶν τε ὑπάτων καὶ τῶν πρεσβυτάτων ἐκ τῆς βουλῆς καὶ ἄλλου παντὸς ὅτῳ βουλομένῳ ἦν τὰς ἐνούσας ἐν τῷ νόμῳ διεξιόντος ἀτοπίας. ἀντιλεξάντων δὲ τῶν δημάρχων καὶ αὖθις τῶν ὑπάτων, καὶ μέχρι πολλοῦ τῆς ἀψιμαχίας τῶν λόγων ἐκμηκυνθείσης, ἐκείνην μὲν τὴν ἐκκλησίαν διέλυσεν εἰς νύκτα 1856 συγκλεισθεὶς ὁ χρόνος. προθέντων δὲ πάλιν τῶν δημάρχων εἰς τρίτην ἀγορὰν τὴν περὶ τοῦ νόμου διάγνωσιν, καὶ συνελθόντος ἔτι πλείονος εἰς αὐτὴν ὄχλου, τὸ παραπλήσιον τῷ προτέρῳ συνέβη γενέσθαι πάθος. τοῦτο συνιδὼν ὁ Πόπλιος ἔγνω μήτε τοῖς ὑπάτοις ἐπιτρέπειν ἔτι τοῦ νόμου κατηγορεῖν, μήτε πατρικίους ἐᾶν τῇ ψηφοφορίᾳ παρεῖναι· καθ' ἑταιρείας γὰρ ἐκεῖνοι καὶ κατὰ συστροφὰς ἅμα τοῖς ἑαυτῶν πελάταις οὐκ ὀλίγοις οὖσι πολλὰ μέρη τῆς ἀγορᾶς κατεῖχον, ἐπικελεύοντές τε τοῖς κατηγοροῦσι τοῦ νόμου καὶ καταθορυβοῦντες τοὺς ἀπολογουμένους καὶ ἄλλα πολλὰ πράττοντες ἀκοσμίας τε καὶ βίας τῆς ἐν ταῖς ψήφοις μηνύματα.

XXXXII. Ἐπέσχε δὲ αὐτοῦ τὰ βουλεύματα ὄντα τυραννικὰ ἑτέρα συμπεσοῦσα θεήλατος συμφορά. νόσος γὰρ ἥψατο λοιμικὴ τῆς πόλεως, γενομένη μὲν καὶ κατὰ τὴν ἄλλην Ἰταλίαν, μάλιστα δὲ πλεονάσασα 1857

κατὰ τὴν Ῥώμην· καὶ οὔτε ἀνθρωπίνη βοήθεια ἤρκει τοῖς κάμνουσιν οὐδεμία, ἀλλ' ἐν τῷ ἴσῳ οἵ τε σὺν πολλῇ θεραπευόμενοι φροντίδι, καὶ οἷς μηδὲν ἐγίνετο τῶν δεόντων ἀπέθνησκον· οὔτε λιτανεῖαι θεῶν καὶ θυσίαι καὶ ἐφ' οὓς ἄνθρωποι τελευταίους ἐν ταῖς τοιαῖσδε ἀναγκάζονται καταφεύγειν συμφοραῖς, οἱ κατὰ ἄνδρα τε γινόμενοι καὶ ὑπὲρ τοῦ κοινοῦ καθαρμοί, τότε προσωφέλουν, οὔτε ἄλλο τι τῶν δοκούντων κουφίζειν τὴν νόσον, διέκρινέ τε τὸ πάθος οὐχ ἡλικίαν οὐ φύσιν οὐ ῥώμην ἢ ἀσθένειαν σωμάτων οὐ τέχνην, ἀλλὰ γυναιξί τε ἐνέπιπτε καὶ ἀνδράσι καὶ γηραιοῖς καὶ νέοις. οὐ [μὴν] πολὺν δὲ κατέσχε χρόνον· ὅπερ αἴτιον ἐγένετο τοῦ μὴ σύμπασαν διαφθαρῆναι τὴν πόλιν· ἀλλὰ ποταμοῦ δίκην ἢ πυρὸς ἀθρόα τοῖς ἀνθρώποις ἐμπεσοῦσα τήν τε προσβολὴν ὀξεῖαν καὶ
1858 *τὴν ἀπαλλαγὴν ταχεῖαν ἔλαβεν. ὡς δὲ τὸ δεινὸν ἐλώφησεν ἐπ' ἐξόδῳ τῆς ἀρχῆς ὢν ὁ Πόπλιος, ἐπειδὴ οὐκ ἐδύνατο κυρῶσαι τὸν νόμον ἐν τῷ περιόντι χρόνῳ τῶν ἀρχαιρεσίων ἐπιστάντων, μετῄει πάλιν τὴν δημαρχίαν εἰς τὸν ἐπιόντα ἐνιαυτόν, πολλὰ καὶ μεγάλα τοῖς δημόταις ὑπισχνούμενος· καὶ ἀποδείκνυται πάλιν δήμαρχος ὑπ' αὐτῶν καὶ δύο τῶν συναρχόντων. οἱ δὲ πατρίκιοι πρὸς τοῦτο ἀντεμηχανήσαντο πικρὸν ἄνδρα καὶ μισόδημον καὶ μηδὲν ἐλαττώσοντα τῆς ἀριστοκρατίας ἐπὶ τὴν ὑπατείαν προαγαγεῖν, Ἄππιον Κλαύδιον υἱὸν Ἀππίου τοῦ πλεῖστα τῷ δήμῳ περὶ τὴν κάθοδον ἐναντιωθέντος. καὶ αὐτὸν πολλὰ ἀντειπόντα καὶ οὐδ' εἰς τὸ πεδίον ἐλθεῖν βουληθέντα ἕνεκα τῶν ἀρχαιρεσίων, οὐδὲν ἧττον προεβούλευσάν τε καὶ ἐψηφίσαντο ἀπόντα ὕπατον.*

1859 XXXXIII. *Τελεσθέντων δὲ τῶν ἀρχαιρεσίων κατὰ πολλὴν εὐπέτειαν· οἱ γὰρ πένητες ἐξέλιπον τὸ πε-*

δίον, ἐπειδὴ τὸν ἄνδρα τόνδε ὀνομασθέντα ἤκουσαν· παραλαμβάνουσι τὴν ὑπατείαν Τῖτος Κοίντιος Καπιτωλῖνος καὶ Ἄππιος Κλαύδιος Σαβῖνος, οὔτε τὰς φύσεις οὔτε τὰς προαιρέσεις ἔχοντες ὁμοίας. Ἀππίου μὲν γὰρ ἦν γνώμη περισπᾶν περὶ τὰς ἔξω στρατείας τὸν ἀργὸν καὶ πένητα δῆμον, ἵνα τῶν τε καθ' ἡμέραν ἀναγκαίων ἐκ τῆς πολεμίας εὐπορῶν τοῖς αὐτοῦ πόνοις, ὧν ἐν χρείᾳ μάλιστα ὑπῆρχε, καὶ τὰ συμφέροντα τῇ πόλει διαπραττόμενος, ἥκιστα τοῖς ἐκ τοῦ συνεδρίου διοικοῦσι τὰ κοινὰ δυσμενής τε καὶ χαλεπὸς ᾖ· πολέμου δὲ πᾶσαν ἔσεσθαι πρόφασιν εὔλογον ἀπέφαινεν ἡγεμονίας ἀντιποιουμένῃ πόλει καὶ ὑπὸ πάντων ἐπιφθονουμένῃ, κατά τε τὸ εἰκὸς τοῖς γεγονόσιν ἤδη τὰ μέλλοντα εἰκάζειν ἠξίου, ἐπιλεγόμενος ὅσαι ἤδη κινήσεις ἐγένοντο ἐν τῇ πόλει, ὅτι πᾶσαι κατὰ τὰς ἀναπαύλας ἐγένοντο τῶν πολέμων. Κοιν- 1860
τίῳ δὲ οὐκ ἐδόκει πόλεμον ἐκφέρειν οὐδένα, ἀγαπητὸν ἀποφαίνοντι, εἰ πρὸς τοὺς ἀναγκαίους τε καὶ ἔξωθεν ἐπαγομένους κινδύνους καλούμενος ὁ δῆμος εὐπειθὴς γένοιτο, καὶ διδάσκοντι, ὡς εἰ βίαν προσάξουσι τοῖς μὴ πειθομένοις εἰς ἀπόνοιαν ἀναγκάσουσιν ἐλθεῖν τὸ δημοτικόν, ὥσπερ καὶ οἱ πρὸ αὐτῶν ἐποίησαν ὕπατοι· ἐξ ὧν κινδυνεύσειν αὐτοὺς δυεῖν θάτερον, ἢ δι' αἵματος καὶ φόνων καταπαῦσαι τὴν στάσιν, ἢ θεραπεύειν αἰσχρῶς ὑπομεῖναι τὸ δημοτικόν. ἦν δ' ἡ τοῦ μηνὸς ἐκείνου ἡγεμονία τῷ Κοιντίῳ προσήκουσα, ὥστε ἀναγκαῖον ἦν τὸν ἕτερον τῶν ὑπάτων μηδὲν ἄκοντος ἐκείνου ποιεῖν. οἱ δὲ περὶ τὸν Πόπλιον δήμαρχοι οὐθὲν ἔτι διαμελλήσαντες, τὸν ἐν τῷ πρόσθεν ἐνιαυτῷ οὐ δυνηθέντα ἐπικυρωθῆναι νόμον πάλιν εἰσέφερον, προσγράψαντες αὐτῷ καὶ τὸ τῶν ἀγορανόμων ἀρχεῖον ἐν ταῖς αὐταῖς ψηφοφορεῖσθαι

ἐκκλησίαις, καὶ πάντα τἆλλα ὅσα ἐν τῷ δήμῳ πράτ-
1861 τεσθαί τε καὶ ἐπικυροῦσθαι δεήσει ὑπὸ τῶν φυλε-
τῶν ἐπιψηφίζεσθαι κατὰ ταὐτό· ὅπερ ἦν ἄρα τῆς μὲν
βουλῆς κατάλυσις φανερά, τοῦ δὲ δήμου δυναστεία.
XXXXIIII. Τοῦτο μαθοῦσι τοῖς ὑπάτοις φροντὶς
εἰσῄει καὶ λογισμός, ὅπως ἂν ἐν τάχει καὶ σὺν τῷ
ἀσφαλεῖ τὸ παρακινοῦν καὶ στασιάζον ἐξαιρεθῇ. ὁ μὲν
οὖν Ἄππιος ἐπὶ τὰ ὅπλα καλεῖν γνώμην ἐδίδου τοὺς
βουλομένους σώζεσθαι τὴν πάτριον πολιτείαν· εἰ δέ
τινες ἐναντιωθήσονται σφίσι πρὸς τὰ ὅπλα, τούτους
ἐν πολεμίων ποιεῖσθαι μοίρᾳ. ὁ δὲ Κοίντιος λόγῳ
πείθειν ᾤετο δεῖν τοὺς δημοτικοὺς καὶ μεταδιδά-
σκειν, ὡς δι' ἄγνοιαν τοῦ συμφέροντος εἰς ὀλέθρια
βουλεύματα φερομένους· ἐσχάτης μανίας ἔργον εἶναι
λέγων, ἃ παρ' ἑκόντων ἔξεστι φέρεσθαι τῶν συμπο-
λιτευομένων, ταῦτα παρ' ἀκόντων βούλεσθαι λαμβά-
1862 νειν. ἐπαινεσάντων δὲ καὶ τῶν ἄλλων τῶν συμπαρα-
ληφθέντων εἰς τὸ συνέδριον τὴν Κοιντίου γνώμην,
παρελθόντες εἰς τὴν ἀγορὰν οἱ ὕπατοι λόγον ᾐτοῦντο
παρὰ τῶν δημάρχων καὶ χρόνον. μόλις δ' ἀμφοῖν
τυχόντες, ἐπειδὴ καθῆκεν ἣν ᾐτήσαντο παρ' αὐτῶν
ἡμέραν, ὄχλου παντοδαποῦ συνεληλυθότος εἰς τὴν
ἀγοράν, ὃν ἀμφότεραι παρεσκευάσαντο σύμμαχον
ἑαυταῖς ἐκ παρακλήσεως αἱ ἀρχαί, παρῆσαν ὡς κατη-
1863 γορήσοντες τοῦ νόμου. ὁ μὲν οὖν Κοίντιος, τά τε ἄλλα
ἐπιεικὴς ὢν ἀνὴρ καὶ δῆμον οἰκειώσασθαι λόγῳ πι-
θανώτατος, πρῶτος αἰτησάμενος τὸν λόγον, ἐπιδέξιόν
τινα καὶ κεχαρισμένην ἅπασι διεξῆλθε δημηγορίαν·
ὥστε τοὺς ὑπὲρ τοῦ νόμου λέγοντας εἰς πολλὴν ἐλ-
θεῖν ἀμηχανίαν, οὔτε δικαιότερα λέγειν ἔχοντας οὔτε
ἐπιεικέστερα. καὶ εἰ μηδὲν ἔτι πολυπραγμονεῖν ὁ
συνύπατος αὐτοῦ προείλετο, συγγνοὺς ἂν ὁ δῆμος ὡς

οὔτε δίκαια οὔτε ὅσια ἀξιῶν ἔλυσε τὸν νόμον· νῦν δ'
[ὑπ'] ἐκείνου λόγον διελθόντος ὑπερήφανον καὶ βα-
ρὺν ἀκουσθῆναι πένησι, χαλεπὸς εἰς ὀργὴν ἐγένετο
καὶ ἀμείλικτος καὶ εἰς ἔριν ἦλθεν ὅσην οὔπω πρότε- 1864
ρον. οὐ γὰρ ὡς ἐλευθέροις τε καὶ πολίταις ὁ ἀνὴρ
διαλεγόμενος, οἳ τοῦ θεῖναι τὸν νόμον ἢ λῦσαι κύ-
ριοι ἦσαν, ἀλλ' ὡς ἐν ἀτίμοις ἢ ξένοις ἢ μὴ βεβαίως
ἔχουσι τὴν ἐλευθερίαν ἐξουσιάζων, πικρὰς καὶ ἀν-
υπομονήτους ἐποιήσατο κατηγορίας, τῶν τε χρεῶν
τὰς ἀποκοπὰς αὐτοῖς ὀνειδίζων καὶ τῶν ὑπάτων τὴν
ἀπόστασιν προφέρων, ὅτε τὰ ἱερὰ σημεῖα ἁρπάσαν-
τες ᾤχοντο ἐκ τοῦ στρατοπέδου φυγὴν ἐπιβάλλοντες
ἑαυτοῖς ἑκούσιον· τούς τε ὅρκους ἀνακαλούμενος,
οὓς ὤμοσαν τὰ ὅπλα περὶ τῆς γειναμένης αὐτοὺς γῆς
ἀναλαμβάνοντες, οἷς κατ' αὐτῆς ἐκείνης ἐχρήσαντο.
τοιγάρτοι θαυμαστὸν οὐδὲν ἔφησεν αὐτοὺς ποιεῖν,
εἰ θεοὺς μὲν ἐπιορκήσαντες, ἡγεμόνας δὲ καταλι-
πόντες, πόλιν δ' ἔρημον εἶναι τὸ καθ' ἑαυτοὺς μέρος
ἀφέντες, ἐπὶ δὲ πίστεως συγχύσει καὶ νόμων ἀνα-
τροπῇ καὶ πολιτεύματος πατρίου φθορᾷ ποιησάμενοι
τὴν κάθοδον, οὐ μετριάζουσιν οὐδὲ χρηστοὺς δύναν-
ται πολίτας ἑαυτοὺς παρασχεῖν, ἀλλ' αἰεί τινος ὀρέ- 1865
γονται πλεονεξίας καὶ παρανομίας, τοτὲ μὲν ἀρχὰς
ἐξεῖναι σφίσιν ἀξιοῦντες αὐτοὺς ἐφ' ἑαυτῶν ἀποδει-
κνύναι, καὶ ταύτας ἀνυπευθύνους ποιοῦντες καὶ
παναγεῖς· τοτὲ δὲ εἰς ἀγῶνας ὑπὲρ τῶν ἐσχάτων κιν-
δύνων καθιστάντες οὓς αὐτοῖς δόξειε τῶν πατρικίων,
καὶ τὰ νόμιμα δικαστήρια, οἷς περὶ θανάτου καὶ φυ-
γῆς ἡ πόλις πρότερον ἐχρῆτο, μεταφέροντες ἐκ τῆς
καθαρωτάτης φυλῆς ἐπὶ τὸν ῥυπαρώτατον ὄχλον·
τοτὲ δὲ νόμους εἰσφέροντες οἱ θῆτες καὶ ἀνέστιοι 1866
κατὰ τῶν εὐπατριδῶν τυραννικοὺς καὶ ἀνίσους, καὶ

οὐδὲ τοῦ προβουλεῦσαι περὶ αὐτῶν ἐξουσίαν τῇ βουλῇ καταλείποντες, ἀλλ' ἀφαιρούμενοι καὶ ταύτην αὐτῆς τὴν τιμήν, ἣν ἐκ τοῦ παντὸς εἶχεν ἀναμφίλεκτον χρόνου, βασιλευομένης τε καὶ τυραννουμένης τῆς πόλεως. πολλὰ δὲ καὶ ἄλλα τούτοις ὅμοια προσθεὶς καὶ οὐδενὸς οὔτε πικροῦ πράγματος οὔτε βλασφήμου ὀνόματος φεισάμενος, τελευτῶν ἐκεῖνον ἔτι προσέθηκεν τὸν λόγον, ἐφ' ᾧ μάλιστα ἡ πληθὺς ἠγανάκτησεν, ὅτι χρόνον οὐδένα παύσεται στασιάζουσα περὶ παντὸς χρήματος ἡ πόλις, ἀλλ' αἰεί τινα καινὴν ἐπὶ παλαιᾷ νοσήσει νόσον, ἕως ἂν ἡ τῶν δημάρχων ἐξουσία διαμένῃ· διδάσκων, ὅτι πράγματος παντὸς πολιτικοῦ καὶ κοινοῦ τὰς ἀρχὰς προσήκει σκοπεῖν, ὅπως εὐσεβεῖς ἔσονται καὶ δίκαιοι. φιλεῖν γὰρ ἐκ μὲν τῶν ἀγαθῶν σπερμάτων χρηστοὺς γίγνεσθαι καὶ εὐ-
1867 τυχεῖς τοὺς καρπούς, ἐκ δὲ τῶν πονηρῶν κακοὺς καὶ ὀλεθρίους.

XXXXV. Εἰ μὲν οὖν, ἔφη, ἥδε ἡ ἀρχὴ μεθ' ὁμονοίας εἰσῆλθεν εἰς τὴν πόλιν ἐπὶ τῷ πάντων ἀγαθῷ παριοῦσα σὺν οἰωνοῖς τε καὶ ὀττείαις, πολλῶν ἂν ἡμῖν ἐγίνετο καὶ μεγάλων ἀγαθῶν αἰτία, χαρίτων ὁμοφροσύνης εὐνομίας ἐλπίδων χρηστῶν παρὰ τοῦ δαιμονίου μυρίων ἄλλων· νῦν δέ, [ἐπεὶ] βία γὰρ αὐτὴν εἰσήγαγε καὶ παρανομία καὶ στάσις καὶ πολέμου δέος ἐμφυλίου καὶ πάντα τὰ ἔχθιστα ἐν ἀνθρώποις, τί οὖν ἔτι καὶ μέλλει χρηστὸν ἔσεσθαί ποτε ἢ σωτήριον, τοιαύτας λαβούσης τὰς ἀρχάς; ὥστε περιττόν
1868 ἐστιν ἡμῖν ἴασιν καὶ ἀλεξήματα τῶν ἀναβλαστανόντων ἐξ αὐτῆς κακῶν ζητεῖν, ὁπόσα εἰς ἀνθρώπινον πίπτει λογισμόν, μενούσης ἔτι τῆς πονηρᾶς ῥίζης. οὐ γὰρ ἔσται πέρας οὐδ' ἀπαλλαγὴ τῶν δαιμονίων χόλων, ἕως ἂν ἥδε ἡ βάσκανος ἐρινὺς καὶ φαγέδαινα

ἐγκαθημένη πάντα σήπῃ καὶ διαφθείρῃ τὰ καλά.
ἀλλ' ὑπὲρ μὲν τούτων ἕτερος ἔσται λόγος καὶ καιρὸς
ἐπιτηδειότερος· νῦν δ' ἐπεὶ τὰ παρόντα εὖ τίθεσθαι
χρή, πᾶσαν εἰρωνείαν ἀφεὶς τάδε ὑμῖν λέγω· οὔτε
ὅδε ὁ νόμος οὔτ' ἄλλος οὐδείς, ὃν οὐχ ἡ βουλὴ προ-
βουλεύσει, κύριος ἐπὶ τῆς ἐμῆς ὑπατείας γενήσεται,
ἀλλὰ καὶ λόγοις ἀγωνιοῦμαι περὶ τῆς ἀριστοκρατίας,
κἂν εἰς τὰ ἔργα δέῃ χωρεῖν οὐδ' ἐν τούτοις τῶν
ἐναντιουμένων λελείψομαι· καὶ εἰ μὴ πρότερον
ἔγνωτε ὅσην ἰσχὺν ἔχει τὸ τῶν ὑπάτων κράτος, ἐπὶ
τῆς ἐμῆς ἀρχῆς μαθήσεσθε.

XXXXVI. Ἄππιος μὲν δὴ ταῦτα εἶπεν. ἐκ δὲ τῶν
δημάρχων ὁ πρεσβύτατος καὶ πλείστου ἀξιώματος
τυγχάνων, Γάιος Λαιτώριος, ἀνὴρ ἔν τε τοῖς πολέ- 1869
μοις ἐγνωσμένος εἶναι ψυχὴν οὐ κακὸς καὶ τὰ πολι-
τικὰ πράττειν οὐκ ἀδύνατος, ἀνίσταται πρὸς ταῦτα
ἀπολογησόμενος· καὶ διῆλθε ὑπὲρ τοῦ δήμου λόγον
πολὺν ἀπὸ τῶν ἄνωθεν ἀρξάμενος· ὡς πολλὰς μὲν
καὶ χαλεπὰς στρατείας οἱ βλασφημούμενοι πρὸς αὐ-
τοῦ πένητες ἐστρατεύσαντο, οὐ μόνον ἐπὶ τῶν βασι-
λέων, ὅτε τὴν ἀνάγκην ἄν τις ᾐτιάσατο, ἀλλὰ καὶ
μετὰ τὴν ἐκείνων ἐκβολὴν ἐλευθερίαν κτώμενοι τῇ
πατρίδι καὶ ἡγεμονίαν· ἀμοιβὴν δ' οὐδεμίαν ἐκομί-
σαντο παρὰ τῶν πατρικίων, οὐδ' ἀπήλαυσαν οὐδενὸς
τῶν κοινῶν ἀγαθῶν, ἀλλ' ὡς πολέμῳ ἁλόντες ἀφῃρέ-
θησαν ὑπ' αὐτῶν καὶ τὴν ἐλευθερίαν, ἣν ἀνασώσα-
σθαι βουλόμενοι καταλιπεῖν ἠναγκάσθησαν τὴν πα-
τρίδα πόθῳ γῆς ἑτέρας, ἐν ᾗ τὸ μὴ ὑβρίζεσθαι αὐτοῖς
ἐλευθέροις οὖσιν ὑπάρξει· καὶ οὔτε βιασάμενοι τὴν
βουλὴν οὔτε πολέμῳ προσαναγκάσαντες εὕροντο τὴν
ἐπὶ τὰ σφέτερα κάθοδον, ἀξιούσῃ δὲ καὶ δεομένῃ τὰ 1870
ἐκλειφθέντα ἀπολαβεῖν εἴξαντες ἔδωκαν. τούς τε

ὅρκους διεξῄει καὶ τὰς συνθήκας τὰς ἐπὶ τῇ καθόδῳ γενομένας ἀνεκαλεῖτο· ἐν αἷς ἦν ἀμνηστία μὲν πρῶτον ἁπάντων, ἔπειτα ἐξουσία τοῖς πένησιν ἀρχὰς ἀποδεικνύναι, τιμωροὺς μὲν ἐσομένας σφίσιν αὐτοῖς, τοῖς δὲ κατισχύειν βουλομένοις ἀντιπάλους. διεξελθὼν δὲ ταῦτα τοὺς νόμους ἐπεδείκνυτο, οὓς ὁ δῆμος ἐπεκύρωσεν οὐ πρὸ πολλοῦ, τόν τε περὶ τῶν δικαστηρίων τῆς μεταγωγῆς, ὡς ἔδωκεν ἡ βουλὴ τῷ δήμῳ τὴν ἐξουσίαν κρίνειν οὓς ἂν αὐτοῖς δόξειε τῶν πατρικίων, καὶ τὸν ὑπὲρ τῆς ψηφοφορίας, ὃς οὐκ ἔτι τὴν λοχῖτιν ἐκκλησίαν, ἀλλὰ τὴν κουριάτιν ἐποίει τῶν ψήφων κυρίαν.

1871 XXXXVII. Διεξελθὼν δὲ τὸν ὑπὲρ τοῦ δήμου λόγον, ἐπιστρέψας ἐπὶ τὸν Ἄππιον· Ἔπειτα σὺ τολμᾷς, εἶπε, λοιδορεῖσθαι τούτοις, δι' οὓς μεγάλη μὲν ἐκ μικρᾶς, ἐπιφανὴς δ' ἐξ ἀδόξου γέγονεν ἡ πόλις; καὶ στασιαστὰς ἑτέρους ἀποκαλεῖς καὶ φυγαδικήν τινα τύχην ὀνειδίζεις, ὥσπερ οὐχ ἁπάντων ἔτι τούτων μεμνημένων τὸ καθ' ὑμᾶς, ὅτι στασιάσαντες οἱ σοὶ πρόγονοι πρὸς τοὺς ἐν τέλει καὶ τὴν ἑαυτῶν πατρίδα καταλιπόντες ἐνθάδ' ἱδρύθησαν ἱκέται; εἰ μὴ ἄρα ὑμεῖς μὲν ἐκλιπόντες τὴν ἑαυτῶν πατρίδα πόθῳ τῆς ἐλευθερίας καλὸν ἔργον ἐπράττετε, Ῥωμαῖοι δὲ τὰ ὅμοια ὑμῖν δεδρακότες οὐ καλόν. τολμᾷς δὲ καὶ τὴν τῶν δημάρχων ἐξουσίαν ὡς ἐπὶ κακῷ παρεληλυθυῖαν εἰς τὴν πόλιν λοιδορεῖν, καὶ πείθεις τουτουσὶ καταλῦσαι τὴν τῶν πενήτων ἐπικουρίαν τὴν ἱερὰν καὶ ἀκίνητον καὶ μεγάλαις ἠσφαλισμένην ἐκ θεῶν τε καὶ ἀνθρώπων ἀνάγκαις, ὦ μισοδημότατε καὶ τυραν-
1872 νικώτατε; καὶ οὐδὲ τοῦτο ἄρα ἐδυνήθης μαθεῖν, ὅτι τῇ τε βουλῇ καὶ τῇ σεαυτοῦ ἀρχῇ ταῦτα λέγων λοιδορῇ; καὶ γὰρ ἡ βουλὴ διαναστᾶσα [πᾶσα] πρὸς

τοὺς βασιλεῖς, ὧν οὐκέτι τὰς ὑπερηφανίας καὶ τὰς ὕβρεις ὑποφέρειν ἠξίου, τὸ τῶν ὑπάτων ἀρχεῖον κατεστήσατο, καὶ πρὶν ἐκείνους ἐξελάσαι τῆς πόλεως ἑτέρους ἐποίησε τῆς βασιλικῆς ἐξουσίας κυρίους. ὥστε ἃ περὶ τῆς δημαρχίας λέγεις, ὡς ἐπὶ κακῷ παρεληλυθυίας, ἐπειδὴ τὴν ἀρχὴν ἀπὸ διχοστασίας ἔλαβε, ταῦτα καὶ κατὰ τῆς ὑπατείας λέγεις. οὐδὲ γὰρ ἐκείνην ἄλλη τις εἰσήγαγε πρόφασις, ἀλλ' ἡ πρὸς τοὺς βασιλεῖς τῶν πατρικίων στάσις. ἀλλὰ τί ταῦτά σοι διαλέγομαι, ὡς χρηστῷ καὶ μετρίῳ πολίτῃ, ὃν ἅπαντες ἴσασιν οὗτοι σκαιὸν ὄντα διὰ γένος καὶ πικρὸν καὶ μισόδημον καὶ τὸ θηριῶδες ὑπὸ φύσεως οὐδέποτε ἐξημερῶσαι δυνάμενον, ἀλλ' οὐχ ὁμόσε χωρῶ σοι τὰ ἔργα ἐπίπροσθεν ποιησάμενος τῶν λόγων, καὶ δείκνυμι ὅσην ἰσχὺν ὁ δῆμος ἔχων λέληθέ σε, ὃν οὐκ ᾐσχύνθης ἀνέστιον καὶ ῥυπαρὸν καλῶν, καὶ ὅσον ἥδε ἡ ἀρχὴ δυναμένη, ἥν σε ὁ νόμος ἐκτρέ- 1873
πεσθαι καὶ εἴκειν ἀναγκάζει; παρεὶς δὲ καὶ αὐτὸς ἅπασαν εἰρωνείαν ἔργου ἄρξομαι.

XXXXVIII. *Ταῦτ' εἰπών, ὅρκον ὅσπερ μέγιστος αὐτοῖς ἦν διομοσάμενος, ἢ τὸν νόμον ἐπικυρώσειν ἢ τοῦ ζῆν μεθήσεσθαι, σιωπῆς γενομένης ἐκ τοῦ πλήθους καὶ ἐναγωνίου προσδοκίας ἐφ' ᾧ μέλλει δρᾶν, ἐκέλευσε μεταχωρεῖν ἐκ τῆς ἐκκλησίας τὸν Ἄππιον. ὡς δ' οὐκ ἐπείθετο, ἀλλὰ τοὺς ῥαβδούχους παραστησάμενος καὶ τὸν ὄχλον, ὃν ἦγε παρασκευασάμενος οἴκοθεν, ἀπεμάχετο μὴ παραχωρῆσαι τῆς ἀγορᾶς, σιωπὴν ὑποκηρυξάμενος ὁ Λαιτώριος ἀνεῖπεν, ὅτι τὸν ὕπατον εἰς φυλακὴν κελεύουσιν ἀπάγειν οἱ δήμαρχοι. καὶ ὁ μὲν ὑπηρέτης κελευσθεὶς ὑπ' αὐτοῦ προσῆγεν, ὡς τοῦ σώματος ἐπιληψόμενος· τῶν δὲ ῥαβδούχων ὁ πρῶτος ἐπιτυχὼν παίων αὐτὸν ἀπήλασε.*

κραυγῆς δ' ἐκ τῶν παρόντων γενομένης μεγάλης καὶ
ἀγανακτήσεως, ἵεται αὐτὸς ὁ Λαιτώριος παρακελευ-
1874 σάμενος τοῖς ὄχλοις ἀμύνειν, καὶ οἱ περὶ τὸν Ἄππιον
στῖφος ἔχοντες νέων πολὺ καὶ καρτερὸν ὑφίστανται.
καὶ μετὰ τοῦτο λόγοι τε ἀσχήμονες ἐγένοντο εἰς ἀλ-
λήλους καὶ καταβοαὶ καὶ σωμάτων ὠθισμοί· καὶ
τελευτῶσα εἰς χεῖρας ἀπέσκηψεν ἡ ἔρις, καὶ εἰς λίθων
ἤρξατο προβαίνειν βολάς. ἐπέσχε δὲ ταῦτα καὶ τοῦ
μὴ προσωτέρω χωρῆσαι τὰ δεινὰ Κοίντιος ἅτερος
τῶν ὑπάτων αἴτιος ἐγένετο, δεόμενός τε ἁπάντων
καὶ λιπαρῶν σὺν τοῖς πρεσβυτάτοις τῶν ἐκ τοῦ συν-
εδρίου καὶ εἰς μέσους τοὺς ἀψιμαχοῦντας ὠθούμε-
νος. ἦν δὲ καὶ τῆς ἡμέρας τὸ λειπόμενον βραχὺ μέ-
ρος, ὥστε ἀκούσιοι ἀπ' ἀλλήλων διελύθησαν. ταῖς
δ' ἑξῆς ἡμέραις αἵ τε ἀρχαὶ ἀλλήλαις ἐνεκάλουν·
ὁ μὲν ὕπατος τοῖς δημάρχοις, ὅτι καταλύειν αὐτοῦ
τὴν ἀρχὴν ἠξίουν ἐς τὸ δεσμωτήριον τὸν ὕπατον
ἀπάγειν κελεύσαντες· τῷ δὲ ὑπάτῳ οἱ δήμαρχοι, ὡς
ἐμβεβληκότι πληγὰς σώμασιν ἱεροῖς καὶ καθωσιωμέ-
νοις ὑπὸ τοῦ νόμου· καὶ ὁ Λαιτώριος τὰ ἴχνη τῶν
πληγῶν εἶχεν ἐπὶ τῆς ὄψεως ἔτι φανερά· ἥ τε πόλις
1875 ὅλη διοιδοῦσα καὶ ἀγριαινομένη διειστήκει. ἔπειτα
ὁ μὲν δῆμος ἐφρούρει τὸ Καπιτώλιον ἅμα τοῖς δημ-
άρχοις, οὔτε ἡμέρας οὔτε νυκτὸς ἐκλείπων [αὐτοῦ]
τὴν φυλακήν· ἡ δὲ βουλὴ συνιοῦσα πολλὴν καὶ ἐπί-
πονον ἐποιεῖτο ζήτησιν, ὅπως χρὴ παῦσαι τὴν διχο-
στασίαν, τοῦ τε κινδύνου τὸ μέγεθος ἐνθυμουμένη,
καὶ ὅτι οὐδὲ τοῖς ὑπάτοις τὰ αὐτὰ παρειστήκει φρο-
νεῖν. ὁ μὲν γὰρ Κοίντιος εἴκειν τῷ δήμῳ τὰ μέτρια
ἠξίου, ὁ δ' Ἄππιος μέχρι θανάτου ἀντέχειν.

XXXXVIIII. Ὡς δ' οὐδὲν ἐγίνετο πέρας, χωρὶς
ἑκάστους ἀπολαμβάνων ὁ Κοίντιος, τούς τε δημάρχους

καὶ τὸν Ἄππιον, ἐδεῖτο καὶ ἐλιπάρει, καὶ τὰ κοινὰ τῶν ἰδίων ἀναγκαιότερα ἡγεῖσθαι ἠξίου. ὁρῶν δὲ τοὺς μὲν ἤδη πεπειροτέρους γεγονότας, τὸν δὲ συνάρχοντα ἐπὶ τῆς αὐτῆς αὐθαδείας μένοντα, πείθει τοὺς ἀμφὶ Λαιτώριον, ὑπὲρ ἁπάντων τῶν τε ἰδίων ἐγκλημάτων καὶ τῶν δημοσίων τὴν βουλὴν ποιῆσαι κυρίαν. ἐπεὶ δὲ τοῦτο διεπράξατο, συνεκάλει τὴν βουλὴν καὶ τοὺς δημάρχους πολλὰ ἐπαινέσας καὶ 1876
τοῦ συνάρχοντος δεηθεὶς μὴ ἀντιπράττειν τῇ σωτηρίᾳ τῆς πόλεως ἐκάλει τοὺς εἰωθότας ἀποφαίνεσθαι γνώμας. πρῶτος δὲ κληθεὶς Πόπλιος Οὐαλέριος Ποπλικόλας γνώμην ἀπεφήνατο τήνδε· ὅσα μὲν ἀλλήλοις ἐγκαλοῦσιν οἵ τε δήμαρχοι καὶ ὁ ὕπατος, ὑπὲρ ὧν ἔπαθον ἢ ἔδρασαν ἐν τῇ ταραχῇ, ἐπειδὴ οὐκ ἐξ ἐπιβουλῆς οὐδ' οἰκείας πλεονεξίας ἕνεκεν εἰς αὐτὰ κατέστησαν, ἀλλ' ὑπὲρ τῆς εἰς τὰ κοινὰ φιλοτιμίας, ἀφεῖσθαι δημοσίᾳ καὶ μηδεμίαν ὑπὲρ αὐτῶν εἶναι δίκην· περὶ δὲ τοῦ νόμου, ἐπειδὴ ὁ ὕπατος Ἄππιος οὐκ ἐᾷ νόμον ἀπροβούλευτον εἰς τὴν ἐκκλησίαν ἐκφέρειν, προβουλεῦσαι μὲν περὶ τούτου τὸ συνέδριον· τοὺς δὲ δημάρχους ἅμα τοῖς ὑπάτοις ἐπιμέλειαν ποιήσασθαι τῆς τε ὁμονοίας τῶν πολιτῶν, ὅταν ἡ ψῆφος περὶ αὐτοῦ διαφέρηται, καὶ τῆς εὐκοσμίας. ἐπαινεσάντων δὲ τὴν γνώμην ἁπάντων, εὐθὺς ἀνέδωκε τὴν 1877
ὑπὲρ τοῦ νόμου ψῆφον ὁ Κοίντιος τῷ συνεδρίῳ, καὶ πολλὰ μὲν Ἀππίου κατηγορήσαντος, πολλὰ δὲ τῶν δημάρχων ἀντιλεξάντων, ἐνίκα παρὰ πολλὰς ψήφους ἡ τὸν νόμον εἰσφέρειν ἀξιοῦσα γνώμη. ἐπικυρωθέντος δὲ τοῦ προβουλεύματος, αἵ τε ἴδιαι τῶν ἀρχόντων διαφοραὶ διελύθησαν, καὶ ὁ δῆμος ἀγαπητῶς δεξάμενος τὸ συγχώρημα τῆς βουλῆς ἐπεψήφισε τὸν νόμον. ἀπ' ἐκείνου τοῦ χρόνου τὰ τῶν δημάρχων

καὶ ἀγορανόμων ἀρχαιρέσια μέχρι τοῦ καθ' ἡμᾶς
χρόνου δίχα οἰωνῶν τε καὶ τῆς ἄλλης ὀττείας ἁπά-
σης αἱ φυλετικαὶ ψηφοφοροῦσιν ἐκκλησίαι. αὕτη
λύσις ἐγένετο τῆς τότε κατασχούσης ταραχῆς τὴν
πόλιν.

L. Καὶ μετ' οὐ πολὺ στρατιὰς ἐδόκει Ῥωμαίοις
καταγράφειν καὶ τοὺς ὑπάτους ἐκπέμπειν ἀμφοτέ-
ρους ἐπί τε Αἰκανοὺς καὶ Οὐολούσκους. δυνάμεις
γὰρ ἐξ ἑκατέρων τῶν ἐθνῶν ἐξεληλυθέναι ἠγγέλ-
λοντο μεγάλαι καὶ προνομεύειν τοὺς Ῥωμαίων συμ-
μάχους. παρασκευασθεισῶν δὲ τῶν δυνάμεων σὺν
1878 τάχει, Κοίντιος μὲν Αἰκανοῖς πολεμήσων ᾤχετο, Ἄπ-
πιος δὲ Οὐολούσκοις, κλήρῳ διαλαχόντες τὰς ἀρχάς.
συνέβη δὲ τῶν ὑπάτων ἑκατέρῳ τὰ εἰκότα πάσχειν·
ἡ μὲν γὰρ τῷ Κοιντίῳ προσνεμηθεῖσα στρατιὰ τὴν
ἐπιείκειάν τε καὶ μετριότητα τοῦ ἀνδρὸς ἀσπαζομένη,
πρόθυμος ἦν εἰς πάντα τὰ ἐπιταττόμενα, καὶ τὰ
πλεῖστα αὐτοκέλευστος ὑφίστατο κινδυνεύματα δόξαν
τῷ ἡγεμόνι καὶ τιμὴν πράττουσα· καὶ διεξῆλθε πολ-
λὴν τῆς Αἰκανῶν χώρας λεηλατοῦσα, οὐ τολμώντων
εἰς χεῖρας ἐλθεῖν τῶν πολεμίων, ἐξ ἧς λάφυρα πολλὰ
καὶ ὠφελείας μεγάλας ἐκτήσατο. χρόνον δὲ οὐ πολὺν
ἐν τῇ πολεμίᾳ διατρίψασα παρῆν εἰς τὴν πόλιν ἀπα-
θὴς κακῶν, λαμπρὸν ἐπὶ τοῖς ἔργοις τὸν στρατηγὸν
ἄγουσα. ἡ δὲ τῷ Ἀππίῳ συνεξελθοῦσα δύναμις, μίσει
τῷ πρὸς αὐτὸν πολλὰ ὑπερεῖδε τῶν πατρίων. τά τε
γὰρ ἄλλα ἐθελοκακοῦσα ἐν ὅλῃ τῇ στρατείᾳ καὶ ὀλι-
γωροῦσα τοῦ ἡγεμόνος διετέλεσε, καὶ ἐπειδὴ μάχε-
σθαι ἔδει τῇ Οὐολούσκων στρατιᾷ, κατασταθεῖσα ὑπὸ
τῶν ἡγεμόνων εἰς τάξιν οὐκ ἠξίωσε τοῖς πολεμίοις
1879 εἰς χεῖρας ἰέναι· ἀλλ' οἵ τε λοχαγοὶ καὶ οἱ πρόμαχοι
αὐτῶν, οἱ μὲν τὰ σημεῖα ῥίψαντες, οἱ δὲ τὴν τάξιν

ἐγκαταλιπόντες, ἐπὶ τὸν χάρακα ἔφευγον. καὶ εἰ μὴ
θαυμάσαντες τὸ παράλογον τῆς φυγῆς αὐτῶν οἱ πο-
λέμιοι καὶ δείσαντες μὴ ἐνέδρα τις ᾖ, τῆς ἐπὶ πλεῖον
διώξεως ἀπετράποντο, τὸ πλεῖον ἂν μέρος τῶν Ῥω-
μαίων διέφθαρτο. ἐποίουν δὲ ταῦτα φθόνῳ τοῦ ἡγε-
μόνος, ἵνα μὴ καλὸν ἀγώνισμα ὁ ἀνὴρ διαπραξάμενος
θριάμβῳ τε καὶ ταῖς ἄλλαις ἐπιλαμπρυνθῇ τιμαῖς.
τῇ δὲ κατόπιν ἡμέρᾳ τὰ μὲν ἐπιτιμῶντος αὐτοῖς τοῦ
ὑπάτου τῆς ἀδόξου φυγῆς, τὰ δὲ παρακαλοῦντος
αἴσχιστον ἔργον ἀναλύσασθαι καλῷ ἀγῶνι, τὰ δὲ
ἀπειλοῦντος, εἰ μὴ στήσονται παρὰ τὰ δεινά, χρήσε-
σθαι τοῖς νόμοις, ἀπειθείᾳ τε διεχρῶντο καὶ καταβοῇ
καὶ ἀπάγειν σφᾶς ἐκέλευον ἐκ τῆς πολεμίας, ὡς ἀδύ-
νατοι ἔτι ὄντες ὑπὸ τραυμάτων ἀντέχειν· κατεδή- 1880
σαντο γὰρ αὐτῶν οἱ πολλοὶ τοὺς ὑγιεῖς χρῶτας ὡς
τραυματίαι· ὥστε ὁ Ἄππιος ἠναγκάσθη ἀπάγειν τὸν
στρατὸν ἐκ τῆς πολεμίας, καὶ οἱ Οὐολοῦσκοι ἀποιοῦ-
σιν ἑπόμενοι πολλοὺς αὐτῶν ἀπέκτειναν. ὡς δ᾽ ἐν
τῇ φιλίᾳ ἐγένοντο, συναγαγὼν εἰς ἐκκλησίαν αὐτοὺς
ὁ ὕπατος, καὶ πολλὰ ὀνειδίσας, ἔφη χρήσεσθαι τῇ
πατρίῳ κατὰ τῶν λειποτακτῶν κολάσει. καὶ πολλὰ
δεομένων τῶν πρεσβευτῶν καὶ τῶν ἄλλων τῶν ἐν
τέλει μετριάσαι, καὶ μὴ συμφορὰν ἐπὶ συμφορᾷ
προσθεῖναι τῇ πόλει, λόγον οὐδενὸς αὐτῶν ποιησά-
μενος ἐκύρωσε τὴν κόλασιν. καὶ μετὰ τοῦτο οἱ λοχα-
γοί τε ὧν οἱ λόχοι ἔφυγον, καὶ οἱ πρόμαχοι τῶν ση-
μείων, ὅσοι τὰ σημεῖα ἀπολωλέκεσαν, οἱ μὲν πελέκει
τοὺς αὐχένας ἀπεκόπησαν, οἱ δὲ ξύλοις παιόμενοι
διεφθάρησαν· ἐκ δὲ τοῦ ἄλλου πλήθους ἀπὸ δεκάδος
ἑκάστης εἷς ἀνὴρ ὁ λαχὼν κλήρῳ πρὸ τῶν ἄλλων 1881
ἀπέθνησκεν. αὕτη Ῥωμαίοις πάτριός ἐστι κατὰ τῶν
λιπόντων τὰς τάξεις ἢ προεμένων τὰς σημείας ἡ κό-

λασις. καὶ μετὰ ταῦτα αὐτός τε μισούμενος ὁ στρατηγὸς καὶ τῆς στρατιᾶς ὅσον ἔτι περιῆν κατηφὲς καὶ ἄτιμον ἐπαγόμενος, τῶν ἀρχαιρεσίων καθηκόντων ἀνέστρεψεν εἰς τὴν πατρίδα.

LI. Ἀποδειχθέντων δὲ μετ' ἐκείνους ὑπάτων Λευκίου Οὐαλερίου τὸ δεύτερον καὶ Τιβερίου Αἰμιλίου, βραχύν τινα χρόνον ἐπισχόντες οἱ δήμαρχοι, τὸν ὑπὲρ κληρουχίας πάλιν εἰσῆγον λόγον· καὶ προσιόντες τοῖς ὑπάτοις ἠξίουν βεβαιῶσαι τῷ δήμῳ τὰς ὑποσχέσεις, ἃς ἐποιήσατο ἡ βουλὴ Σπορίου Κασσίου καὶ Πρόκλου Οὐεργινίου ὑπατευόντων, δεόμενοί τε καὶ λιπαροῦντες. καὶ οἱ ὕπατοι αὐτοῖς συνελάμβανον ἀμφότεροι, Τιβέριος μὲν Αἰμίλιος κότον τινὰ παλαιὸν εἰς τὴν βουλὴν οὐκ ἄλογον ἀναφέρων, ὅτι τῷ πατρὶ
1882 αὐτοῦ θρίαμβον αἰτουμένῳ κατάγειν οὐκ ἐπέτρεψεν· ὁ δὲ Οὐαλέριος ἀποθεραπεῦσαι τοῦ δήμου τὴν ὀργὴν βουλόμενος, ἣν εἶχε πρὸς αὐτὸν ἐπὶ τῷ Σπορίου Κασσίου θανάτῳ, ὃν ἀπέκτεινεν ὡς ἐπιχειροῦντα βασιλείᾳ ταμίας τότε ὢν Οὐαλέριος, ἄνδρα τῶν κατὰ τὴν αὐτὴν ἡλικίαν γενομένων ἐπιφανέστατον ἐν ἡγεμονίαις τε πολέμων καὶ πολιτικαῖς πράξεσιν, ὃς καὶ τὸ περὶ τῆς κληρουχίας πολίτευμα πρῶτος εἰσήγαγεν εἰς τὴν πόλιν, καὶ δι' αὐτὸ μάλιστα ὑπὸ τῶν πατρικίων, ὡς δῆμον αἱρούμενος πρὸ αὐτῶν, ἐμισήθη. τότε δ' οὖν ὑποσχομένων τῶν ὑπάτων αὐτοῖς προ-
1883 θήσειν ἐν τῇ βουλῇ τὸν ὑπὲρ τῆς διανομῆς τῶν δημοσίων κλήρων λόγον, καὶ τῆς ἐπικυρώσεως τοῦ νόμου συναρεῖσθαι, πιστεύσαντες αὐτοῖς οἱ δήμαρχοι παρῆσαν ἐπὶ τὴν βουλὴν καὶ λόγους διεξῆλθον ἐπιεικεῖς. οἷς οὐδὲν ἀντιλέξαντες οἱ ὕπατοι, ὡς μὴ φιλονεικίας δόξαν ἀπενέγκαιντο, γνώμην ἀποδείκνυσθαι τοὺς πρεσβυτάτους ἠξίουν. ἦν δ' ὁ πρῶτος ὑπ' αὐτῶν

κληθεὶς Λεύκιος Αἰμίλιος θατέρου τῶν ὑπάτων πατήρ· ὃς ἔφη δοκεῖν αὐτῷ καὶ δίκαιον καὶ συμφέρον ἔσεσθαι τῇ πόλει, πάντων εἶναι τὰ κοινὰ καὶ μὴ ὀλίγων· τῷ τε δήμῳ πείθοντι ὑπουργεῖν συνεβούλευεν, ἵνα χάρις ἡ παραχώρησις αὐτῶν γένηται. πολλὰ γὰρ καὶ ἄλλα μὴ δόντας αὐτῷ κατὰ προαίρεσιν, ὑπ' ἀνάγκης συγκεχωρηκέναι· τούς τε κατέχοντας τὰς 1884 *κτήσεις ὧν ἐκαρπώσαντο χρόνων λαθόντες ἠξίου χάριν εἰδέναι, κωλυομένους δὲ μὴ φιλοχωρεῖν. ἔφη τε, σὺν τῷ δικαίῳ, ὃ πάντες ὁμολογήσειαν ἰσχυρὸν εἶναι, τὰ μὲν δημόσια κοινὰ πάντων εἶναι, τὰ δ' ἴδια ἑκάστου τῶν νόμῳ κτησαμένων· καὶ ἀναγκαῖον ἤδη τὸ πρᾶγμα ὑπὸ τῆς βουλῆς γεγονέναι πρὸ ἐτῶν ἑπτακαίδεκα τὴν γῆν διανέμειν ψηφισαμένης. καὶ τοῦτ' ἀπέφηνεν ἐπὶ τῷ συμφέροντι τότε αὐτὴν βεβουλεῦσθαι, ἵνα μήτε γῆ χέρσος ᾖ, καὶ ὁ τὴν πόλιν οἰκουρῶν πένης ὄχλος μὴ ἀργός, ὥσπερ νῦν τοῖς ἀλλοτρίοις ἀγαθοῖς φθονῶν, ἐπιτρέφηται δὲ τῇ πόλει νεότης ἐν ἐφεστίοις καὶ κλήροις πατρῴοις, ἔχουσά τι καὶ ἐπὶ τῷ καλῶς τετράφθαι μέγα φρονεῖν· ἐπεὶ τοῖς γε ἀκλήροις καὶ ἐκ τῶν ἀλλοτρίων κτημάτων, ἃ μισθοῦ ἐργάζονται, γλίσχρως διατρεφομένοις, ἢ ἀρχῆθεν μὴ ἐμφύεσθαι ἔρωτα γενεᾶς τέκνων, ἢ ἐμφύντα πονηρὸν ἐκφέρειν καρπὸν καὶ οὐδ' εὐτυχῆ, ἐκ ταπεινῶν τε συμπορισθέντα οἷα εἰκὸς γάμων, καὶ ἐν κατ-* 1885 *επτωχευμέναις τραφέντα τύχαις. ἐγὼ μὲν οὖν, ἔφη, γνώμην ἀποδείκνυμαι, τά τε προβουλευθέντα ὑπὸ τοῦ συνεδρίου καὶ διὰ τὰς μεταξὺ ταραχὰς παρειλκυσμένα ἐμπεδοῦν τοὺς ὑπάτους, καὶ τοὺς ποιησομένους τὴν διανομὴν ἄνδρας ἀποδεικνύναι.*

LII. *Ταῦτ' εἰπόντος Αἰμιλίου, δεύτερος κληθεὶς Ἄππιος Κλαύδιος ὁ τῷ πρόσθεν ὑπατεύσας ἔτει τὴν*

ἐναντίαν γνώμην ἀπεφήνατο, διδάσκων, ὡς οὔθ᾽ ἡ
βουλὴ διανεῖμαι τὰ δημόσια [πράγματα] προαίρεσιν
ἔσχε· πάλαι γὰρ ἂν εἰληφέναι τὰ δόξαντ᾽ αὐτῇ τέλος·
ἀλλ᾽ εἰς χρόνον καὶ διάγνωσιν ἑτέραν ἀνεβάλετο,
παῦσαι προθυμουμένη τὴν τότε κατασχοῦσαν στάσιν,
ἣν εἰσῆγεν ὁ τῇ τυραννίδι ἐπιχειρῶν ὕπατος καὶ
μετὰ ταῦτα δίκας δοὺς καλάς· οὔτε οἱ μετὰ τὸ προ-
βούλευμα λαχόντες ὕπατοι τέλος τοῖς ἐψηφισμένοις
1886 *ἐπέθεσαν, ὁρῶντες ὅσων εἰσελεύσεται κακῶν εἰς τὴν*
πόλιν ἀρχὴ συνεθισθέντων τὰ κοινὰ τῶν πενήτων
διαλαγχάνειν· αἵ τε μετ᾽ ἐκείνους πεντεκαίδεκα ὑπα-
τεῖαι, πολλῶν αὐταῖς ἐπαχθέντων ὑπὸ τοῦ δήμου
κινδύνων, οὐδὲν ὑπέμειναν ὃ μὴ συνέφερε τῷ κοινῷ
πράττειν, διὰ τὸ μηδ᾽ ἐξεῖναι σφίσι κατὰ τὸ προβού-
λευμα τοὺς γεωμόρους ἀποδεικνύειν, ἀλλὰ τοῖς πρώ-
τοις ἐκείνοις ὑπάτοις. ὥστε οὐδ᾽ ὑμῖν, ἔφησεν, ὦ
Οὐαλέριε καὶ σὺ Αἰμίλιε, γῆς ἀναδασμοὺς εἰσφέρειν,
οὓς οὐκ ἐπέταξεν ὑμῖν τὸ συνέδριον, οὔτε καλῶς
ἔχει προγόνων οὖσιν ἀγαθῶν, οὔτε ἀσφαλῶς. καὶ
περὶ μὲν τοῦ προβουλεύματος, ὡς οὐ κρατεῖσθε ὑπ᾽
αὐτοῦ οἱ τοσούτοις ὕστερον ὑπατεύσαντες χρόνοις,
1887 *ταῦθ᾽ ἱκανά. περὶ δὲ τοῦ βιασαμένους τινὰς ἢ λα-*
θόντας σφετερίσασθαι τὰ δημόσια βραχὺς ἀπαρκεῖ
μοι λόγος. εἰ γάρ τις οἶδε καρπούμενόν τινα ὧν οὐκ
ἔχει κτῆσιν ἀποδεῖξαι νόμῳ, μήνυσιν ἀπενεγκάτω
πρὸς τοὺς ὑπάτους καὶ κρινάτω κατὰ τοὺς νόμους,
οὓς οὐ νεωστὶ δεήσει γράφειν· πάλαι γὰρ ἐγράφη-
σαν, καὶ οὐδεὶς αὐτοὺς ἠφάνικε χρόνος. ἐπεὶ δὲ καὶ
περὶ τοῦ συμφέροντος ἐποιεῖτο λόγους Αἰμίλιος, ὡς
ἐπὶ τῷ πάντων ἀγαθῷ τῆς κληρουχίας ἐσομένης,
οὐδὲ τοῦτο τὸ μέρος ἀνέλεγκτον ἐᾶσαι βούλομαι. ἐμοὶ
γὰρ δοκεῖ τὸ αὐτόθι μόνον οὗτός γε ὁρᾶν, τὸ δὲ μέλ-

λον οὐ προσκοπεῖν, ὅτι [τὸ] μικρὸν εἶναι δοκοῦν ἔτι
τῶν δημοσίων τοῖς ἀργοῖς καὶ ἀπόροις μεταδιδόναι,
πολλῶν ἔσται καὶ μεγάλων κακῶν αἴτιον. τὸ γὰρ
ἔθος τὸ συνεισπορευόμενον ἅμα τούτῳ καὶ διαμένον
ἐν τῇ πόλει καὶ μέχρι παντὸς ὀλέθριον ἔσται καὶ
δεινόν· οὐ γὰρ ἐξαιρεῖ τὰς πονηρὰς ἐπιθυμίας ἐκ τῆς
ψυχῆς τὸ τυγχάνειν αὐτῶν, ἀλλ᾽ αὔξει καὶ πονηρο-
τέρας ποιεῖ. τεκμήρια δ᾽ ὑμῖν γενέσθω τούτων τὰ 1888
ἔργα· τί γὰρ δεῖ τοῖς λόγοις ὑμᾶς τοῖς ἐμοῖς ἢ τοῖς
Αἰμιλίου προσέχειν;

LIII. Ἴστε δήπου πάντες, ὅσους ἐχειρωσάμεθα
πολεμίους, καὶ ὅσην γῆν προενομεύσαμεν, καὶ ὅσα
λάφυρα ἐκ τῶν ἁλόντων χωρίων ἐλάβομεν, ὧν οἱ
πολέμιοι στερόμενοι τέως εὐδαίμονες ὄντες ἐν πολλῇ
νῦν καθεστήκασιν ἀπορίᾳ· καὶ ὅτι τούτων οὐδενὸς
ἀπηλάθησαν οὐδὲ μεῖον ἐκτήσαντο ἐν ταῖς διανομαῖς
οἱ τὴν ἀπορίαν ὀδυρόμενοι. ἆρ᾽ οὖν διὰ ταύτας τὰς
ἐπικτήσεις ἐπανορθωσάμενοι φαίνονταί τι τῆς πα-
λαιᾶς τύχης καὶ προεληλυθότες εἰς ἐπιφάνειαν τοῖς
βίοις; ἐβουλόμην μὲν ἂν καὶ θεοῖς εὐξάμην, ἵνα ἧτ-
τον ἦσαν οἱ ἐπίσκηνοι λυπηροὶ τῇ πόλει. νῦν δὲ 1889
ὁρᾶτε γὰρ καὶ ἀκούετε αὐτῶν ὀδυρομένων, ὅτι ἐν
ἐσχάτῃ εἰσὶν ἀπορίᾳ. ὥστε οὐδ᾽ εἰ ταῦτα, ἃ νῦν αἰ-
τοῦνται, καὶ ἔτι πλείω τούτων λάβοιεν, ἐπανορθώ-
σονται τοὺς βίους. οὐ γὰρ ἐν ταῖς τύχαις αὐτῶν ἐνοι-
κεῖ τὸ ἄπορον, ἀλλ᾽ ἐν τοῖς τρόποις· οὓς οὐχ οἷον ὁ
βραχὺς οὗτος ἐκπληρώσει κλῆρος, ἀλλ᾽ οὐδ᾽ αἱ σύμ-
πασαι βασιλέων τε καὶ τυράννων δωρεαί. δράσομέν
τε, εἰ καὶ ταῦτα συγχωρήσομεν αὐτοῖς, ὅμοια τοῖς
πρὸς ἡδονὴν θεραπεύουσι τοὺς κάμνοντας ἰατροῖς.
οὐ γὰρ τὸ νοσοῦν ὑγιασθήσεται τῆς πολιτείας μέρος,
ἀλλὰ καὶ τὸ ὑγιαῖνον ἀπολαύσει τῆς νόσου. καθόλου

τε, ὦ βουλή, πολλῆς ὑμῖν δεῖ ἐπιμελείας τε καὶ φροντίδος, ὅπως ἂν σώσητε πάσῃ προθυμίᾳ διαφθειρόμενα τὰ ἤθη τῆς πόλεως. ὁρᾶτε γὰρ εἰς ἃ προελήλυθεν ἡ τοῦ δήμου ἀκοσμία, καὶ ὡς οὐκέτι ἄρχεσθαι πρὸς τῶν ὑπάτων ἀξιοῖ· ᾧ γε οὐ μετεμέλησε τῶν ἐνθάδε πραττομένων, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ στρατοπέδου τὴν αὐτὴν ἀπεδείξατο ἀκοσμίαν, ὅπλα τε ῥίψας καὶ τάξεις ἐκλιπὼν καὶ σημεῖα πολεμίοις προέμενος καὶ φυγῇ
1890 πρὶν εἰς χεῖρας ἐλθεῖν ἐπονειδίστῳ χρησάμενος, ὥσπερ ἐμοῦ μόνου ἀφαιρησόμενος τὴν ἐκ τῆς νίκης δόξαν, ἀλλ' οὐχὶ καὶ τῆς πατρίδος τὸ κατὰ τῶν ἐχθρῶν κράτος. καὶ νῦν Οὐολούσκοις κατὰ Ῥωμαίων ἵσταται τρόπαια, καὶ κοσμεῖται τοῖς ἡμετέροις λαφύροις τὰ ἐκείνων ἱερὰ καὶ ἐν αὐχήμασιν ἡλίκοις οὐπώποτε αἱ πόλεις αὐτῶν εἰσιν, [αἳ] τέως ὑπὲρ ἀνδραποδισμοῦ τε καὶ κατασκαφῆς τῶν ἡμετέρων δεόμεναι ἡγεμόνων. ἆρά γε δίκαιον ἢ καλὸν ἐπὶ τοιούτοις κατορθώμασι χάριν αὐτοῖς ὑμᾶς εἰδέναι, καὶ δημοσίαις ἐπικοσμεῖν
1891 δωρεαῖς κληρουχήσαντας τὴν γῆν, ἧς πολέμιοι κρατοῦσι τὸ κατὰ τούτους εἶναι μέρος; ἀλλὰ τί δεῖ τούτοις ἐγκαλεῖν, οἷς δι' ἀπαιδευσίαν τε καὶ δυσγένειαν ὀλίγος ἐστὶ τῶν καλῶν λόγος, ὁρῶντας, ὡς οὐδ' ἐν τοῖς ὑμετέροις ἤθεσι πᾶσιν ἔτι τὸ ἀρχαῖον οἰκεῖ φρόνημα, ἀλλ' αὐθάδεια μὲν ἡ σεμνότης καλεῖται πρὸς ἐνίων, μωρία δὲ ἡ δικαιοσύνη, μανικὸν δὲ τὸ ἀνδρεῖον, καὶ ἠλίθιον τὸ σῶφρον; ἃ δὲ μισητὰ παρὰ τοῖς προτέροις ἦν, ταῦτα πυργοῦταί τε νῦν καὶ θαυμάσια ἡλίκα φαίνεται τοῖς διεφθαρμένοις ἀγαθά,
1892 ἀνανδρία καὶ βωμολοχία καὶ κακοήθεια καὶ τὸ πανοῦργον [σοφὸν] καὶ τὸ πρὸς πάντα ἰταμὸν καὶ τὸ μηδενὶ τῶν κρειττόνων εὐπειθές· ἃ πολλὰς ἤδη πόλεις ἰσχυρὰς λαβόντα ἐκ βάθρων ἀνέτρεψε. ταῦθ'

ὑμῖν, ὦ βουλή, εἴτε ἡδέα ἐστὶν ἀκούειν εἴτε ἀνιαρά, μετὰ πάσης ἀληθείας καὶ παρρησίας εἴρηται, τοῖς μὲν πεισθησομένοις ὑμῶν ἐὰν ἄρα πεισθῆτε ἔν τε τῷ παρόντι χρήσιμα καὶ εἰς τὸ μέλλον ἀσφαλῆ· ἐμοὶ δέ, ὃς ὑπὲρ τοῦ κοινῇ συμφέροντος ἰδίας ἀπεχθείας ἀναιροῦμαι, πολλῶν ἐσόμενα κινδύνων αἴτια. προορᾶν γὰρ ἱκανός εἰμι τὰ συμβησόμενα ἐκ λογισμοῦ, καὶ παραδείγματα ποιοῦμαι τὰ ἀλλότρια πάθη τῶν ἐμαυτοῦ.

LIIII. Ταῦτ' εἰπόντος Ἀππίου, καὶ τῶν ἄλλων ὀλίγου δεῖν πάντων τὴν αὐτὴν γνώμην ἀποφηναμένων, ἡ μὲν βουλὴ διελύετο. οἱ δὲ δήμαρχοι δι' ὀργῆς ἔχοντες τὴν ἀποτυχίαν ἀπῄεσαν, καὶ μετὰ τοῦτ' ἐσκόπουν, ὅπως τιμωρήσονται τὸν ἄνδρα· ἔδοξεν 1893
οὖν αὐτοῖς πολλὰ βουλευσαμένοις δίκῃ τὸν Ἄππιον ὑπαγαγεῖν θάνατον ἐχούσῃ τὸ τίμημα. καὶ μετὰ ταῦτα ἐν ἐκκλησίᾳ τοῦ ἀνδρὸς κατηγορήσαντες, παρεκάλουν ἥκειν ἅπαντας εἰς τὴν ἀποδειχθησομένην ἡμέραν ὡς διοίσοντας ὑπὲρ αὐτοῦ ψῆφον. ἃ δὲ κατηγορεῖν ἔμελλον, ταῦτα ἦν· ὅτι πονηρὰς ἐτίθει κατὰ τοῦ δήμου γνώμας, καὶ στάσιν εἰσῆγεν εἰς τὴν πόλιν, καὶ δημάρχῳ χεῖρας ἐπήνεγκε παρὰ τοὺς ἱεροὺς νόμους, καὶ στρατιᾶς ἡγησάμενος σὺν βλάβῃ τε καὶ αἰσχύνῃ μεγάλῃ ἀνέστρεψε. ταῦτα προειπόντες ἐν τῷ πλήθει, καὶ ῥητήν τινα ἀποδείξαντες ἡμέραν, ἐν ᾗ τέλος ἔφησαν ἐπιθήσειν τῇ δίκῃ, παρήγγειλαν αὐτῷ παρεῖναι τότε ἀπολογησομένῳ. ἀγανακτούντων δὲ ἁπάντων τῶν πατρικίων καὶ παρεσκευασμένων ἁπάσῃ προθυμίᾳ σῴζειν τὸν ἄνδρα, καὶ τὸν Ἄππιον παρακαλούντων εἶξαι τῷ καιρῷ καὶ σχῆμα ταῖς παρούσαις τύχαις ἁρμόττον μεταλαβεῖν, οὐδὲν ἔφη ποιήσειν ὁ ἀνὴρ οὔτ' ἀγεννὲς οὔτε τῶν προγεγονότων

ἔργων ἀνάξιον, μυρίους δ' ἂν ὑπομεῖναι θανάτους πρότερον ἢ γονάτων ἅψασθαί τινος· τούς τε ὑπὲρ αὐτοῦ δεῖσθαι παρεσκευασμένους διεκώλυεν, εἰπών, ὡς διπλασίως ἂν αἰδεσθείη ταῦτα ὑπὲρ αὐτοῦ ποιοῦντας ἑτέρους ὁρῶν, ἃ μηδ' αὐτὸς ὑπὲρ ἑαυτοῦ πράττειν πρέποντα ἡγεῖται. ταῦτά τε δὴ καὶ πολλὰ ὅμοια τούτοις λέγων, καὶ οὔτε ἐσθῆτα ἀλλάξας οὔτε τὸ τῆς ὄψεως γαῦρον ἀλλοιώσας οὔτε φρονήματός τι ὑφέμενος, ὡς εἶδεν ὀρθὴν καὶ μετέωρον ἐπὶ τῇ προσδοκίᾳ τοῦ ἀγῶνος τὴν πόλιν, ὀλίγων ἔτι λειπομένων ἡμερῶν ἑαυτὸν διεχρήσατο. οἱ μὲν δὴ προσήκοντες αὐτῷ νόσον ἐσκήπτοντο γενέσθαι τοῦ θανάτου αἰτίαν· προενεχθέντος δὲ τοῦ σώματος εἰς τὴν ἀγοράν, ὁ μὲν υἱὸς αὐτοῦ προσιὼν τοῖς δημάρχοις καὶ τοῖς ὑπάτοις, ἠξίου τὴν νόμιμον ἐκκλησίαν αὐτῷ συναγαγεῖν καὶ τὸν ἐν ἔθει Ῥωμαίοις ὄντα ἐπὶ ταῖς ταφαῖς ἀγορεύεσθαι τῶν ἀγαθῶν ἀνδρῶν λόγον ἐπιτρέψαι περὶ τοῦ πατρὸς
1895 διελθεῖν. οἱ δὲ δήμαρχοι καλουμένης ἔτι τῆς ἐκκλησίας ὑπὸ τῶν ὑπάτων ἐνίσταντο, καὶ παρήγγελλον τῷ μειρακίῳ τὸν νεκρὸν ἀποφέρειν. οὐ μὴν ὁ δῆμός γε ἠνέσχετο οὐδὲ περιεῖδε τὴν ὕβριν, ἄτιμον ἐκβληθῆναι τὸ σῶμα, ἀλλ' ἐπέτρεψε τῷ μειρακίῳ τὰς νομιζομένας ἀποδοῦναι τῷ πατρὶ τιμάς. Ἄππιος μὲν οὖν τοιαύτης τελευτῆς ἔτυχεν.

LV. Οἱ δ' ὕπατοι καταγράψαντες τὰς δυνάμεις ἐξῆγον ἐκ τῆς πόλεως· Λεύκιος μὲν Οὐαλέριος Αἰκανοῖς πολεμήσων, Τιβέριος δὲ Αἰμίλιος Σαβίνοις. καὶ γὰρ οὗτοι κατὰ τὸν τῆς στάσεως καιρὸν ἐνέβαλον εἰς τὴν Ῥωμαίων χώραν, καὶ πολλὴν αὐτῆς κακώσαντες ἀπῆλθον λείαν ἄφθονον περιβαλόμενοι. Αἰκανοὶ μὲν οὖν πολλάκις εἰς χεῖρας ἐλθόντες καὶ πολλὰς πληγὰς λαβόντες, εἰς τὸν χάρακα ἐν ἐχυρῷ χωρίῳ

κείμενον κατέφυγον καὶ τὸ λοιπὸν οὐκέτι προήεσ εἰς μάχην. ὁ δὲ Οὐαλέριος ἐπεχείρησε μὲν ἐκπολιο κεῖν αὐτῶν τὸ στρατόπεδον, ἐκωλύθη δ' ὑπὸ τ δαιμονίου. προσιόντι γὰρ αὐτῷ καὶ ἤδη ἔργου ἐχ μένῳ, ζόφος ἐξ οὐρανοῦ γίνεται καὶ ὄμβρος πολυ ἀστραπαὶ δὲ καὶ βρονταὶ σκληραί διασκεδασθείσ δὲ τῆς στρατιᾶς ὅ τε χειμὼν εὐθὺς ἐπαύσατο κ πολλὴ κατέσχε τὸν τόπον αἰθρία. τοῦτό τε δὴ ἔργον ὀττευσάμενος ὁ ὕπατος, καὶ τῶν μάντε κωλυόντων ἔτι πολιορκεῖν τὸ χωρίον, ἀποτραπ τὴν γῆν αὐτῶν ἐκάκου, καὶ ὅση ἐπέτυχε λείᾳ τ στρατιώταις ἅπασαν ὠφελεῖσθαι ἐφείς, ἀπῆγεν ἐ οἴκου τὴν δύναμιν. Τιβερίῳ δὲ Αἰμιλίῳ διεξιό τὴν πολεμίαν σὺν πολλῇ καταφρονήσει κατ' ἀρχ καὶ οὐδὲν ἔτι προσδοκῶντι ἀντίπαλον, ἐπῆλθεν Σαβίνων δύναμις καὶ γίνεται μάχη αὐτῶν ἐκ παρ τάξεως μεσούσης μάλιστα τῆς ἡμέρας ἀρξαμέ μέχρι δύσεως ἡλίου. σκότους δ' ἐπιλαμβάνοντ ἀνεχώρουν αἱ δυνάμεις ἐπὶ τοὺς ἑαυτῶν χάρακ οὔτε νικῶσαι οὔτε λειπόμεναι. ταῖς δ' ἑξῆς ἡμέρα νεκρούς τε τοὺς ἑαυτῶν ἐκήδευσαν οἱ ἡγεμόνες κ χάρακας ἐξωρύξαντο, καὶ γνώμας τὰς αὐτὰς εἶχ ἑκάτεροι, διὰ φυλακῆς τὰ οἰκεῖα ἔχειν καὶ μηκέτι ἄ χειν μάχης. ἔπειτα σὺν χρόνῳ τὰς σκηνὰς λύσαντ ἀπῆγον τὰς δυνάμεις.

LVI. Ἐν δὲ τῷ μετὰ τούτους τοὺς ὑπάτους ἔτ κατὰ τὴν ἑβδομηκοστὴν καὶ ὀγδόην ὀλυμπιάδα, ἐνίκα στάδιον Παρμενίδης Ποσειδωνιάτης, Ἀθήνη [δὲ] τὴν ἐνιαύσιον ἀρχὴν ἔχοντος Θεαγενίδου, κατ στάθησαν ὕπατοι Ῥωμαίων Αὖλος Οὐεργίνιος Και μοντανὸς καὶ Τῖτος Νομίκιος Πρίσκος. ἄρτι δὲ α τῶν τὴν ἀρχὴν παρειληφότων, ἀγγέλλεται στρατ

Οὐολούσκων πολλὴ παροῦσα. καὶ μετ' οὐ πολὺ τῶν
περιπολίων τι τῶν Ῥωμαϊκῶν ἐξ ἐφόδου καταληφθὲν
ἐκαίετο· ἦν δὲ οὐ διὰ μακροῦ τῆς Ῥώμης, καὶ ὁ κα-
1898 πνὸς ἤγγελλε τοῖς ἐν τῇ πόλει τὸ πάθος. τότε μὲν οὖν,
καὶ γὰρ ἦν ἔτι νύξ, ἱππεῖς τινας ἀποστείλαντες ἐπὶ
κατασκοπὴν οἱ ὕπατοι καὶ φυλακὰς καταστήσαντες
ἐπὶ τοῖς τείχεσι καὶ αὐτοὶ ταξάμενοι πρὸ τῶν πυλῶν
σὺν τοῖς εὐζωνοτάτοις, ἐξεδέχοντο τὰς παρὰ τῶν ἱπ-
πέων ἀγγελίας· ὡς δὲ ἡμέρα τε ἐγένετο, καὶ συνή-
θροιστο αὐτοῖς ἡ ἐν τῇ πόλει δύναμις, ἦγον ἐπὶ τοὺς
πολεμίους. οἱ δὲ διαρπάσαντες καὶ κατακαύσαντες
τὸ φρούριον ἀπῄεσαν διὰ τάχους. τότε μὲν οὖν οἱ
ὕπατοι σβέσαντες τὰ ἔτι καιόμενα καὶ τοῦ χωρίου
φυλακὴν καταλιπόντες ἀπῄεσαν εἰς τὴν πόλιν· ὀλί-
γαις δ' ὕστερον ἡμέραις τάς τε οἰκείας ἔχοντες δυνά-
μεις καὶ τὰς παρὰ τῶν συμμάχων ἐξῄεσαν ἀμφότεροι,
Οὐεργίνιος μὲν ἐπὶ τὴν Αἰκανῶν, Νομίκιος δὲ ἐπὶ
τὴν Οὐολούσκων· καὶ αὐτοῖς ἀμφοτέροις κατὰ γνώ-
μην τὰ τοῦ πολέμου ἐχώρησεν. Οὐεργινίῳ τε γὰρ
Αἰκανοὶ δῃοῦντι τὴν χώραν αὐτῶν οὐκ ἐτόλμησαν εἰς
χεῖρας ἐλθεῖν, ἀλλὰ καὶ λόχον τινὰ ὑποκαθίσαντες ἐν
ὕλαις ἐπιλέκτων ἀνδρῶν, οἳ ἔμελλον ἐσκεδασμένοις
ἐπιθήσεσθαι τοῖς πολεμίοις, διήμαρτον τῆς ἐλπίδος
ταχείας γενομένης τοῖς Ῥωμαίοις αἰσθήσεως καὶ μά-
1899 χης καρτερᾶς, ἐξ ἧς πολλοὺς τῶν σφετέρων οἱ Αἰκα-
νοὶ ἀπέβαλον· ὥστε οὐδ' εἰς πεῖραν ἑτέρας μάχης ἔτ'
ἤρχοντο. Νομικίῳ τε ἄγοντι τὴν στρατιὰν ἐπὶ τὴν
Ἀντιατῶν πόλιν, ἣ ἐν ταῖς πρώταις τότε τῶν Οὐο-
λούσκων πόλεσιν ἦν, οὐδεμία ἠναντιώθη δύναμις,
ἀλλ' ἀπὸ τῶν τειχῶν ἠναγκάζοντο ἕκαστοι ἀμύνεσθαι.
ἐν δὲ τούτῳ ἥ τε γῆ αὐτῶν ἡ πολλὴ ἐτμήθη, καὶ
πολίχνη τις ἐπιθαλάττιος ἑάλω, ᾗ ἐπινείῳ τε καὶ

ἀγορᾷ τῶν εἰς τὸν βίον ἀναγκαίων ἐχρῶντο, ἐκ θα λάττης τε καὶ διὰ ληστηρίων τὰς πολλὰς ἐπαγόμεν ὠφελείας. ἀνδράποδα μὲν οὖν καὶ χρήματα καὶ β σκήματα καὶ τοὺς ἐμπορικοὺς φόρτους ἡ στρατ συγχωρήσει τοῦ ὑπάτου διήρπασε· τὰ δ' ἐλεύθερ σώματα, ὁπόσα μὴ ὁ πόλεμος ἔφθη διειργασμένο ἐπὶ τὸ λαφυροπώλιον ἀπήχθη. ἐλήφθησαν δὲ κ νῆες τῶν Ἀντιατῶν εἴκοσι καὶ δύο μακραὶ καὶ ἄλ νεῶν ὅπλα τε καὶ παρασκευαί. μετὰ ταῦτα κελε σαντος τοῦ ὑπάτου τάς τε οἰκίας ἐνεπίμπρασαν Ῥωμαῖοι καὶ τοὺς νεωσοίκους κατέσκαπτον καὶ τὸ τε χος ἤρειπον ἐκ θεμελίων· ὥστε μηδ' ἀπελθόντα σφῶν χρηστὸν ἔτι τοῖς Ἀντιάταις εἶναι τὸ φρούριο ταῦτά τε δὴ ἐπράχθη χωρὶς ἑκατέρῳ τῶν ὑπάτω καὶ ἀμφοτέροις ἔτι κοινῇ στρατεία τοῖς ἀνδράσιν ἐ τὴν Σαβίνων γῆν, ἣν δῃώσαντες ἀπῆγον ἐπ' οἴκο τὴν δύναμιν, καὶ ὁ ἐνιαυτὸς οὗτος ἐτελεύτα.

LVII. Τῷ δ' ἑξῆς ἔτει Τίτου Κοιντίου Καπετω λίνου καὶ Κοίντου Σερουιλίου Πρίσκου τὴν ὕπατ ἀρχὴν παρειληφότων, ἥ τε οἰκεία δύναμις Ῥωμαίω ἅπασα ἐν τοῖς ὅπλοις ἦν, καὶ τὰ συμμαχικὰ ἑκούσ παρῆν, πρὶν ἐπαγγελθῆναι αὐτοῖς στρατείαν. κ μετὰ τοῦτο εὐχάς τε ποιησάμενοι τοῖς θεοῖς οἱ ὕπα τοι καὶ καθήραντες τὸν στρατὸν ἐξῄεσαν ἐπὶ το πολεμίους. Σαβῖνοι μὲν οὖν, ἐφ' οὓς ὁ Σερουίλι ἤλασεν, οὔτ' εἰς μάχην κατέστησαν, οὔτ' ἐξῆλθον ε τὴν ὕπαιθρον· μένοντες δ' ἐν τοῖς φρουρίοις, ἠνε χοντο γῆς τε αὐτοῖς ἐκτεμνομένης καὶ οἰκιῶν ἐμπι πραμένων θεραπείας τε αὐτομολούσης· ὥστε κα πολλὴν εὐπέτειαν ἀπελθεῖν ἐκ τῆς χώρας αὐτῶν το Ῥωμαίους ὠφελείαις τε βαρεῖς καὶ αὐχήμασι λα προύς, καὶ ἡ μὲν Σερουιλίου στρατεία τοῦτ' ἔσ

τὸ τέλος· οἱ δὲ σὺν τῷ Κοιντίῳ στρατεύσαντες ἐπί
τε Αἰκανοὺς καὶ Οὐολούσκους· συνεληλύθεσαν γὰρ
εἰς τὸν αὐτὸν τόπον ἐξ ἀμφοτέρων τῶν ἐθνῶν οἱ
προαγωνιούμενοι τῶν ἄλλων, καὶ πρὸ τῆς Ἀντιατῶν
1902 πόλεως ἀντεστρατοπεδεύσαντο· θᾶττον ἢ βάδην χω-
ροῦντες ἐπιφαίνονται αὐτοῖς· καὶ οὐ πολὺν τόπον
τοῦ χάρακος αὐτῶν ἀποσχόντες, ἐν ᾧ πρῶτον ὤφθη-
σάν τε καὶ εἶδον ἐκείνους χωρίῳ ταπεινῷ ὄντι τὰς
ἀποσκευὰς ἔθεντο, τοῦ μὴ δεδοικέναι τὰ πολέμια
πλήθει μακρῷ προὔχοντα δόξαν ποιῆσαι βουλόμενοι.
ὡς δ' εὐτρεπῆ τὰ εἰς μάχην ἑκατέροις ἅπαντα ἦν,
ἐξῄεσαν εἰς τὸ πεδίον, καὶ συμπεσόντες ἠγωνίζοντο
μέχρι μεσούσης ἡμέρας οὔτε εἴκοντες τοῖς πολεμίοις
οὔτε ἐπιβαίνοντες, ἀεί τε τὸ κάμνον μέρος ἀνισοῦν-
τες τοῖς ἐπὶ ταῖς ἐφεδρείαις τεταγμένοις ἑκάτεροι. ἐν
δὲ τούτῳ μάλιστα οἱ Αἰκανοὶ καὶ Οὐολοῦσκοι πλήθει
τῶν Ῥωμαίων προὔχοντες ἀνέφερον καὶ περιῆσαν,
τῶν πολεμίων οὐκ ἐχόντων ἴσον τῇ προθυμίᾳ τὸ
πλῆθος. ὁ δὲ Κοίντιος ὁρῶν νεκρούς τε πολλοὺς
τῶν σφετέρων καὶ τῶν περιόντων τοὺς πλείους
τραυματίας, ἐμέλλησε μὲν ἀνακαλεῖσθαι τὴν δύναμιν,
δείσας δὲ μὴ δόξαν παράσχῃ τοῖς πολεμίοις φυγῆς
1903 παρακινδυνευτέον σφίσιν εἶναι ἔγνω. ἐπιλεξάμενος
δὲ τῶν ἱππέων τοὺς κρατίστους κατὰ τὸ δεξιὸν ᾧ
μάλιστα ἔκαμνον τοῖς σφετέροις παρεβοήθει. καὶ τὰ
μὲν ἐπιτιμῶν τοῖς ἡγεμόσιν αὐτοῖς τῆς ἀνανδρίας, τὰ
δ' ὑπομιμνήσκων τῶν προτέρων ἀγώνων, τὰ δὲ τὴν
αἰσχύνην ἐπιλεγόμενος καὶ τὸν κίνδυνον, ὃς κατα-
λήψεσθαι αὐτοὺς ἔμελλεν ἐν τῇ φυγῇ, τελευτῶν
εἶπεν οὐκ ἀληθές, ὃ μάλιστα μὲν τοῖς σφετέροις θάρ-
σος παρέστησε, τοῖς δὲ πολεμίοις δέος. ἔφη γὰρ ὅτι
θάτερον αὐτῶν ἤδη κέρας ἐξέωσε τοὺς πολεμίους καὶ

ἐγγὺς ἤδη ἐστὶ τοῦ ἐκείνων χάρακος. ταῦτ' εἰπὼ ἐνσείει τοῖς πολεμίοις, καὶ καταβὰς ἀπὸ τοῦ ἵππο σὺν τοῖς ἀμφ' αὐτὸν ἐπιλέκτοις τῶν ἱππέων συστα δην ἐμάχετο. ἐκ δὲ τούτου τόλμα τις ἐμπίπτει το κάμνουσι τέως, καὶ ὠθοῦνται ἅπαντες ὥσπερ ἕτερ τινὲς γεγονότες· καὶ οἱ Οὐολοῦσκοι, τῇδε γὰρ ἐκε νοι ἐτάξαντο, μέχρι πολλοῦ διακαρτερήσαντες ἐνέκλ ναν. ὡς δὲ τούτους ὁ Κοίντιος ἀπεώσατο, ἀναβα ἐπὶ τὸν ἵππον παρήλαυνεν ἐπὶ τὴν ἑτέραν τάξιν, κα ἐδείκνυε τοῖς ἐκεῖ πεζοῖς τὸ ἡττώμενον τῶν πολεμία μέρος, καὶ παρεκελεύετο μὴ λείπεσθαι ἀρετῇ τῶ ἑτέρων.

LVIII. *Καὶ μετὰ τοῦτο οὐδὲν ἔτι διέμενε τῶν πο λεμίων, ἀλλὰ πάντες εἰς τὸν χάρακα ξυνέφυγον.* ο μέντοι δίωξίς γε αὐτῶν ἐπὶ πολὺ ἐγένετο, ἀλλ' ευ θὺς οἱ Ῥωμαῖοι ἀπετράποντο, ὑπὸ κόπου τὰ σώματ παρειμένοι καὶ οὐδὲ τὰ ὅπλα ἔτι ὅρια ἔχοντες. ὀλ γων δὲ διελθουσῶν ἡμερῶν, ἃς ἐσπείσαντο ταφῆς τῶν οἰκείων νεκρῶν καὶ θεραπείας τῶν κεκμηκότα ἕνεκα, παρεσκευασμένοι τὰ εἰς τὸν πόλεμον ἐλλε ποντα, ἑτέραν ἠγωνίσαντο μάχην περὶ τῷ [τῶν] Ῥω μαίων χάρακι. προσελθούσης γὰρ ἄλλης δυνάμεω τοῖς Οὐολούσκοις τε καὶ Αἰκανοῖς ἐκ τῶν πέριξ χω ρίων οὐ διὰ μακροῦ ὄντων, ἐπαρθεὶς ὁ στρατηγ αὐτῶν, ὅτι καὶ πενταπλάσιοι τῶν πολεμίων ἦσαν σφέτεροι, τήν τε παρεμβολὴν τῶν Ῥωμαίων οὐκ ἐχυρῷ οὖσαν ὁρῶν, κράτιστον ὑπέλαβεν εἶναι καιρὸ ἐπιχειρεῖν αὐτοῖς. ἐνθυμηθεὶς δὲ ταῦτα περὶ μέσα νύκτας ἦγε τὴν δύναμιν ἐπὶ τὸν χάρακα τῶν Ῥω μαίων, καὶ κύκλῳ περιστήσας ἐφρούρει μὴ λάθοιε ἀπιόντες. ὁ δὲ Κοίντιος, ὡς ἔμαθε τῶν πολ μίων τὸ πλῆθος, ἀγαπητῶς ἐδέξατο καὶ περιμεῖνα

ἕως ἡμέρα τε ἐγένετο καὶ ὥρα πληθυούσης μάλιστα ἀγορᾶς, κάμνοντας ἤδη τοὺς πολεμίους αἰσθόμενος ὑπό τε ἀγρυπνίας καὶ ἀκροβολισμῶν, καὶ οὐ κατὰ λόχους οὐδὲ ἐν τάξει προσάγοντας, ἀλλὰ πολλαχῇ κεχυμένους καὶ σποράδας, ἀνοίξας τὰς πύλας τοῦ χάρακος ἐξέδραμεν ἅμα τοῖς ἐπιλέκτοις τῶν ἱππέων· καὶ οἱ πεζοὶ πυκνώσαντες τοὺς λόχους ἠκολούθουν. οἱ δὲ Οὐολοῦσκοι καταπλαγέντες αὐτῶν τὸ θράσος, καὶ τὸ μανικὸν τῆς ἐφόδου βραχὺν ἀνασχόμενοι χρόνον, ἀνακρούονται [τε] καὶ [ἅμα] ὑποχωροῦσιν ἀπὸ τοῦ χάρακος καί, ἦν γάρ τις οὐ πρόσω τοῦ στρατοπέδου λόφος ὑψηλὸς ἐπιεικῶς, εἰς τοῦτον
1906 [οὖν] ἀνατρέχουσιν ὡς ἀναπαυσόμενοί τε αὖθις καὶ εἰς τάξιν καταστησόμενοι. ἀλλ' οὐ γὰρ αὐτοῖς ἐξεγένετο καταστῆναί τε καὶ ἑαυτοὺς ἀναλαβεῖν, ἀλλ' ἐκ ποδὸς ἠκολούθησαν αὐτοῖς οἱ πολέμιοι πιλήσαντες ὡς μάλιστα ἦν δυνατὸν τοὺς λόχους, ἵνα μὴ καταρραχθῶσι πρὸς ἅναντες χωρίον βιαζόμενοι. καὶ γίνεται μέγας ἀγὼν ἐπὶ πολὺ μέρος τῆς ἡμέρας, νεκροί τε πίπτουσι πολλοὶ ἀφ' ἑκατέρων. καὶ Οὐολοῦσκοι πλήθει τε ὑπερέχοντες καὶ τὸ ἐκ τοῦ τόπου προσειληφότες ἀσφαλές, οὐδετέρου τούτων οὐδὲν ἀγαθὸν ἀπήλαυσαν, ἀλλ' ὑπὸ τῆς Ῥωμαίων προθυμίας καὶ ἀρετῆς ἐκβιασθέντες τόν τε λόφον ἐξέλιπον καὶ ἐπὶ τὸν χάρακα φεύγοντες οἱ πολλοὶ ἀπέθνησκον. οὐ γὰρ εἴασαν αὐτοὺς οἱ Ῥωμαῖοι διώκοντες, ἀλλ' ἐκ ποδὸς ἠκολούθησαν καὶ οὐ πρότερον ἀπετράποντο, ἢ τὴν παρεμβολὴν αὐτῶν ἑλεῖν κατὰ κράτος. γενόμενοι δὲ σωμάτων τε [ἐγκρατεῖς καὶ] ὅσα ἐγκατελήφθη τῷ χάρακι καὶ ἵππων καὶ ὅπλων καὶ χρημάτων παμπόλ-
1907 λων κύριοι, τὴν μὲν νύκτα ἐκείνην αὐτόθι κατεστρατοπέδευσαν, τῇ δ' ἐπιούσῃ ἡμέρᾳ τὰ εἰς πολιορκίαν

ἐπιτήδεια παρεσκευασμένος ὁ ὕπατος ἐπὶ τὴν ᾿Α τιατῶν πόλιν οὐ πλείω ἀπέχουσαν τριάκοντα στ δίων ἦγε τὴν δύναμιν. ἔτυχον δὲ φυλακῆς ἕνε τοῖς ᾿Αντιάταις Αἰκανῶν τινες ἐπίκουροι παρόν καὶ φυλάττοντες τὰ τείχη· οἳ τότε δείσαντες τὸ Ῥ μαίων τολμηρὸν δρασμὸν ἐκ τῆς πόλεως ἐπεχείρο ποιεῖσθαι. γενομένης δὲ τοῖς ᾿Αντιάταις γνώσει κωλυόμενοι πρὸς αὐτῶν ἀπιέναι γνώμην ἐποιοῦ παραδοῦναι Ῥωμαίοις ἐπιοῦσι τὴν πόλιν. τοῦτο θόντες ἐκ μηνύσεως οἱ ᾿Αντιάται τῷ τε καιρῷ εἴκου καὶ κοινῇ μετ᾿ ἐκείνων βουλευσάμενοι παραδιδό τῷ Κοιντίῳ τὴν πόλιν, ἐφ᾿ ᾧ Αἰκανοὺς μὲν ὑπ σπόνδους ἀπελθεῖν, ᾿Αντιάτας δὲ φρουρὰν δέξασ καὶ τὰ κελευόμενα ὑπὸ Ῥωμαίων ποιεῖν. ἐπὶ τούτ κύριος γενόμενος τῆς πόλεως ὁ ὕπατος, καὶ λαβ ὀψώνιά τε καὶ τἆλλα ὅσων ἔδει τῇ στρατιᾷ καὶ φρ ρὰν ἐγκαταστήσας, ἀπῆγε τὴν δύναμιν· ἀνθ᾿ αὐτὸν ἡ βουλὴ ὑπαντήσει τε φιλανθρώπῳ ἐδέξα καὶ θριάμβου πομπῇ ἐτίμησεν.

LVIIII. *᾿Εν δὲ τῷ μετὰ τούτους ἔτει ὕπατοι ἦσαν Τιβέριος Αἰμίλιος τὸ δεύτερον καὶ Κόιντος Φ βιος, ἑνὸς τῶν τριῶν ἀδελφῶν υἱὸς τῶν ἡγησαμέν τε τῆς ἀποσταλείσης φρουρᾶς εἰς Κρεμέραν, διαφθαρέντων ἐκεῖ σὺν τοῖς πελάταις. ἡ δὲ βου τῶν δημάρχων ἀνακινούντων πάλιν τὸ πλῆθος τῇ κληρουχίᾳ, καὶ συναγωνιζομένου θατέρου τ ὑπάτων αὐτοῖς Αἰμιλίου, δόγμα ἐπεκύρωσε, θεραπ σαί τε καὶ ἀναλαβεῖν τοὺς πένητας βουλομένη, δ νεῖμαι τινὰ μοῖραν αὐτοῖς ἐκ τῆς ᾿Αντιατῶν χώρ ἣν τῷ προτέρῳ ἔτει δόρατι ἑλόντες κατέσχον. ἀπεδείχθησαν ἡγεμόνες τῆς κληρουχίας Τίτος Κο τιος Καπιτωλῖνος, ᾧ παρέδοσαν ᾿Αντιάται σε*

1909 αὐτούς, καὶ σὺν αὐτῷ Λεύκιος Φούριος καὶ Αὖλος Οὐεργίνιος. ἦν δ' οὐκ ἀγαπῶσι τοῖς πολλοῖς καὶ πένησι Ῥωμαίων ἡ διανομὴ τῆς χώρας ὡς ἀπελαυνομένοις τῆς πατρίδος, ὀλίγων τε ἀπογραψαμένων ἔδοξε τῇ βουλῇ, ἐπειδὴ οὐκ ἀξιόχρεως ἦν ὁ ἀπόστολος, ἐπιτρέψαι Λατίνων τε καὶ Ἑρνίκων τοῖς βουλομένοις τῆς ἀποικίας μετέχειν. οἱ μὲν δὴ εἰς Ἄντιον ἀποσταλέντες κατένεμον τὴν γῆν τοῖς σφετέροις, μοῖράν τινα ἐξ αὐτῆς τοῖς Ἀντιάταις ὑπολειπόμενοι. ἐν δὲ τῷ μεταξὺ χρόνῳ στρατεία τῶν ὑπάτων ἀμφοτέρων ἐγένετο, Αἰμιλίου μὲν εἰς τὴν Σαβίνων χώραν, Φαβίου δὲ εἰς τὴν Αἰκανῶν. καὶ τῷ μὲν Αἰμιλίῳ πολὺν ἐν τῇ πολεμίᾳ μείναντι χρόνον οὐδεμία δύνα-
1910 μις ὑπήντησε μαχουμένη περὶ τῆς γῆς· ἀλλ' ἀδεῶς αὐτὴν κείρας ἐπειδὴ καθῆκεν ὁ χρόνος τῶν ἀρχαιρεσίων ἀπῆγε τὰς δυνάμεις. Φαβίῳ δὲ Αἰκανοὶ πρὶν εἰς ἀνάγκην ἐλθεῖν στρατιᾶς διαφθαρείσης ἢ τειχῶν ἁλισκομένων ἐπεκηρυκεύσαντο περὶ διαλλαγῶν καὶ φιλίας. ὁ δ' ὕπατος δύο τε μηνῶν τροφὰς τῇ στρατιᾷ καὶ δύο χιτῶνας κατ' ἄνδρα καὶ ἀργύριον εἰς ὀψωνιασμὸν ἑξαμήνου καὶ εἴ τι ἄλλο κατήπειγεν εἰσπραξάμενος, ἀνοχὰς ἐποιήσατο πρὸς αὐτούς, ἕως ἂν εἰς Ῥώμην ἀφικόμενοι παρὰ τῆς βουλῆς εὕρωνται τὰς διαλύσεις. ἡ μέντοι βουλὴ ταῦτα μαθοῦσα τῷ Φαβίῳ ἐπέτρεψεν αὐτοκράτορι διαλύσασθαι πρὸς τοὺς Αἰκανούς, ἐφ' οἷς ἂν αὐτὸς προαιρῆται. μετὰ τοῦτο συνθῆκαι γίνονται ταῖς πόλεσι μεσιτεύσαντος αὐτὰς τοῦ ὑπάτου τοιαίδε· Αἰκανοὺς εἶναι Ῥωμαίων ὑπηκόους πόλεις τε καὶ χώρας τὰς ἑαυτῶν ἔχοντας, ἀποστέλλειν δὲ Ῥωμαίοις μηδὲν ὅτι μὴ στρατιάν, ὅταν αὐτοῖς παραγγελθῇ, τέλεσι τοῖς ἰδίοις ἐκπέμποντας
1911 [αὐτάς]. ταῦτα συνθέμενος ἀπῆγε τὴν δύναμιν Φά-

βιος καὶ τὰς εἰς τὸν ἐπιόντα ἐνιαυτὸν ἀρχὰς ἅμα συνυπάτῳ κατέστησεν

LX. *Ἦσαν δ' οἱ ὑπ' αὐτῶν ἀποδειχθέντες ὕ τοι Σπόριος Ποστόμιος Ἀλβῖνος, καὶ Κόιντος Σερο λιος Πρίσκος τὸ δεύτερον. ἐπὶ τούτων ἔδοξαν Αἰ νοὶ παραβαίνειν τὰς πρὸς Ῥωμαίους νεωστὶ γενομέ ὁμολογίας ἀπὸ τοιαύτης αἰτίας· Ἀντιατῶν ὅσοι εἶχον ἐφέστια καὶ κλήρους ἔμειναν ἐν τῇ γῇ, τά ἀπομερισθέντα σφίσι καὶ τὰ ὑπὸ τῶν κληρούχ ἀφαιρεθέντα κτήματα γεωργοῦντες ἐπὶ ῥηταῖς καὶ τεταγμέναις μοίραις, ἃς ἐκ τῶν καρπῶν αὐτ ἐτέλουν· οἷς δ' οὐδὲν τούτων ἦν ἐξέλιπον τὴν πόλ καὶ ὑποδεχομένων αὐτοὺς προθύμως τῶν Αἰκαν ἐκεῖθεν ὁρμώμενοι τοὺς Λατίνων ἀγροὺς ἐλῄστευ ἐκ δὲ τούτου καὶ τῶν Αἰκανῶν ὅσοι τολμηροί τε ἄποροι ἦσαν συνελάμβανον αὐτοῖς τῶν λῃστηρί ταῦτα Λατίνων ἀποδυραμένων ἐπὶ τῆς βουλῆς, ἀξιούντων ἢ στρατιὰν πέμπειν, ἢ συγχωρῆσαι σ σιν αὐτοῖς τοὺς ἄρξαντας πολέμου ἀμύνασθαι, θόντες οἱ σύνεδροι στρατιὰν μὲν οὔτ' αὐτοὶ ἐψη σαντο πέμπειν οὔτε Λατίνοις ἐπέτρεψαν ἐξάγ πρεσβευτὰς δὲ ἑλόμενοι τρεῖς, ὧν ἡγεῖτο Κόιν Φάβιος ὁ τὰς πρὸς τὸ ἔθνος συνθήκας ποιησάμε ἐντολὰς αὐτοῖς δόντες πυνθάνεσθαι παρὰ τῶν ἡγ μένων τοῦ ἔθνους, πότερα κοινῇ γνώμῃ τὰ λῃστή ἐξαποστέλλουσιν εἴς τε τὴν τῶν συμμάχων καὶ τὴν τῶν Ῥωμαίων γῆν· ἐγένοντο γάρ τινες καὶ αὐτὴν καταδρομαὶ τῶν φυγάδων· ἢ τῶν πραττο νων οὐδενός ἐστι τὸ κοινὸν αἴτιον· καὶ ἐὰν φῶ ἰδιωτῶν ἔργα εἶναι μὴ ἐπιτρέψαντος τοῦ δήμου, τε ἡρπασμένα ἀπαιτεῖν καὶ τοὺς ἐργασαμένους τὰ κήματα ἐκδότους ἄγειν· ἀφικομένων δὲ τῶν π*

σβευτῶν ἀκούσαντες τοὺς λόγους οἱ Αἰκανοί, πλαγίας αὐτοῖς ἔδοσαν ἀποκρίσεις, τὸ μὲν ἔργον οὐκ ἀπὸ κοινῆς λέγοντες γνώμης γεγονέναι, τοὺς δὲ δράσαντας οὐκ ἀξιοῦντες ἐκδιδόναι, πόλιν τε ἀπολωλεκότας καὶ ἀλήτας γεγονότας σφῶν τε ἐν τῇ πενίᾳ ἱκέτας. ἐφ' οἷς ὁ Φάβιος ἀγανακτῶν καὶ τὰς ψευσθείσας πρὸς αὐτῶν ὁμολογίας ἀνακαλούμενος, ὡς εἶδεν εἰρωνευομένους τοὺς Αἰκανοὺς καὶ εἰς βουλὴν χρόνον αἰτουμένους ξενισμοῦ τε χάριν ἐπικατέχοντας αὐτόν, ὑπέμεινέ τε κατοπτεῦσαι τὰ ἐν τῇ πόλει πράγματα βουλόμενος· καὶ διεξιὼν πάντα τόπον κατὰ πρόφασιν θεωρίας δημόσιόν τε καὶ ἱερόν, τά τε ἐργαστήρια πλήρη ὁρῶν ἅπαντα πολεμικῶν ὅπλων, τῶν μὲν ἤδη συντετελεσμένων, τῶν δ' ἔτι ἐν χερσὶν ὄντων, ἔγνω τὴν διάνοιαν αὐτῶν. καὶ ἀφικόμενος εἰς τὴν Ῥώμην ἀπήγγειλε πρὸς τὴν βουλὴν ἅ τε ἤκουσε καὶ ἃ εἶδε.
1914 κἀκείνη οὐδὲν ἔτι ἐνδοιάσασα τοὺς εἰρηνοδίκας ἐψηφίσατο πέμπειν καταγγέλλοντας Αἰκανοῖς τὸν πόλεμον, ἐὰν μὴ τούς τε Ἀντιατῶν φυγάδας ἀπελάσωσιν ἐκ τῆς πόλεως καὶ δίκας τοῖς ἠδικημένοις ὑπόσχωνται. οἱ δὲ Αἰκανοὶ θρασυτέρας πρὸς τοὺς ἄνδρας ἐποιήσαντο τὰς ἀποκρίσεις, καὶ τὸν πόλεμον οὐκ ἀκούσιοι δέχεσθαι ὡμολόγησαν. ἀλλὰ γὰρ οὐκ ἐξεγένετο Ῥωμαίοις στρατιὰν ἐν ἐκείνῳ τῷ ἐνιαυτῷ ἐπ' αὐτοὺς ἀποστεῖλαι, εἴτε τοῦ δαιμονίου κωλύοντος, εἴτε διὰ τὰς νόσους, αἳ κατέσχον τὴν πληθὺν ἐπὶ πολὺ μέρος τοῦ ἔτους· ἀλλὰ φυλακῆς ἕνεκα τῶν συμμάχων ὀλίγη τις ἐξελθοῦσα δύναμις, ἧς ἡγεῖτο Κόϊντος Σερουίλιος ἅτερος τῶν ὑπάτων, ἐν τοῖς Λατίνων ὅροις διέτριψεν. ἐν δὲ τῇ πόλει τὸν νεὼν τοῦ Πιστίου Διὸς Σπόριος Ποστόμιος ὁ συνύπατος αὐτοῦ καθιέρωσε μηνὸς Ἰουνίου ταῖς καλουμέναις Νώναις ἐπὶ τοῦ

Ἐνυαλίου λόφου, κατασκευασθέντα μὲν ὑπὸ τοῦ λευταίου βασιλέως Ταρκυνίου, τῆς δὲ νομιζομ παρὰ Ῥωμαίοις ἀνιερώσεως οὐ τυχόντα ὑπ᾽ ἐκεί τότε δὲ τῇ βουλῇ δόξαν, ὁ Πυστόμιος ἔλαβεν αι τὴν ἐπιγραφήν. ἄλλο δὲ οὐδὲν ἐπὶ τῶν ὑπα τούτων λόγου ἄξιον ἐπράχθη.

LXI. Ἐπὶ δὲ τῆς ἐνάτης καὶ ἑβδομηκο ὀλυμπιάδος, ἣν ἐνίκα Ξενοφῶν Κορίνθιος ἄρχο Ἀθήνησιν Ἀρχεδημίδου, παραλαμβάνουσι τὴν ι τείαν Τῖτος Κοίντιος Καπιτωλῖνος καὶ Κόιντος βιος Οὐιβουλανός· Κοίντιος μὲν τὸ τρίτον ἐπὶ ἀρχὴν ἀποδειχθεὶς ὑπὸ τοῦ δήμου, Φάβιος δὲ τὸ τερον. οἷς ἡ βουλὴ ἀμφοτέροις στρατιὰς μεγ καὶ εὖ παρεσκευασμένας παραδοῦσα ἐξέπεμψε. Κ τιος μὲν οὖν ἐτάχθη φυλάττειν τὴν σφετέραν ὅση τοῖς πολεμίοις ὅμορος ἦν, Φάβιος δὲ τὴν Α νῶν δῃοῦν· καὶ καταλαμβάνει τοὺς Αἰκανοὺς τοῖς μεθορίοις ὑπομένοντας αὐτὸν σὺν δυνάμει πο καὶ ἐπειδὴ τὰς παρεμβολὰς ἐν τοῖς κρατίστοις ἑκ ροι χωρίοις κατεστήσαντο, προῄεσαν εἰς τὸ πε Αἰκανῶν προκαλεσαμένων καὶ ἀρξάντων τῆς μά καὶ διέμειναν ἐπὶ πολὺ τῆς ἡμέρας ἐκθύμως καὶ λοπόνως ἀγωνιζόμενοι, καὶ τὸ νικᾶν οὐ παρ᾽ ἄ τινὰ ἢ παρ᾽ ἑαυτὸν ἕκαστος τιθέμενος. ὡς δὲ τὰ τοῖς πλείοσιν αὐτῶν διὰ τὰς συνεχεῖς πληγὰς ἄχρ ἐγεγόνει, σημηνάντων τὸ ἀνακλητικὸν τῶν ἡγεμο ἀπῆλθον ἐπὶ τοὺς χάρακας. καὶ μετὰ τοῦτο τὸ ἕ ἀγὼν μὲν ἐκ παρατάξεως οὐκέτ᾽ αὐτῶν ἐγένετο, ἀ βολισμοὶ δέ τινες καὶ συμπλοκαὶ ψιλῶν περί τε ὕ καὶ ἐν ἀγορᾶς παραπομπαῖς συνεχεῖς· κἀν τοι μέντοι τὰ πολλὰ ἦσαν ἰσόρροποι. ἐν ᾧ δὲ ταῦτ᾽ νετο χρόνῳ μοῖρά τις ἀπὸ τῆς Αἰκανῶν στρα

παρελθοῦσα καθ' ἑτέρας ὁδοὺς ἀφυλάκτους, ἐνέβαλεν εἰς τὴν Ῥωμαίων γῆν, ἣ πλεῖστον ἀφειστήκει τῆς ὁμόρου καὶ διὰ τοῦτο ἀφύλακτος ἦν· ἐξ ἧς ἀνθρώπους τε πολλοὺς συνήρπασε καὶ χρήματα, λαθοῦσά τε τοὺς σὺν τῷ Κοιντίῳ περιπόλους τῆς σφετέρας γῆς ἀπῆλθεν ἐπὶ τὰ οἰκεῖα. τοῦτο συνεχῶς ἐγίνετο καὶ πολλὴν παρεῖχεν αἰσχύνην τοῖς ὑπάτοις. ἔπειτα μαθὼν διὰ κατασκόπων τε καὶ αἰχμαλώτων ὁ Φάβιος ἐξεληλυθυῖαν ἐκ τοῦ χάρακος τῶν Αἰκανῶν τὴν κρατίστην δύναμιν, ἐν τῇ παρεμβολῇ καταλιπὼν τοὺς πρεσβυτάτους αὐτὸς ἐξῆλθε νύκτωρ ἱππέων ἐπαγόμενος καὶ τοῦ πεζοῦ τὸ ἀκμαιότατον. οἱ μὲν οὖν Αἰκανοὶ διηρ-
1918 πακότες τὰ χωρία οἷς ἐνέβαλον ἀπῄεσαν, ἐπαγόμενοι πολλὰς ὠφελείας· ὁ δὲ Φάβιος οὐ πολὺ προελθοῦσιν αὐτοῖς ἐπιφαίνεται καὶ τήν τε λείαν ἀφαιρεῖται καὶ μάχῃ τοὺς ὑπομείναντας νικᾷ γενομένους ἄνδρας ἀγαθούς· οἱ δὲ λοιποὶ σποράδες ἐμπειρίᾳ ὁδῶν λαθόντες τοὺς διώκοντας κατέφυγον εἰς τὸν χάρακα. ἐπεὶ δὲ ταύτῃ ἀνεκρούσθησαν οἱ Αἰκανοὶ τῇ συμφορᾷ παρὰ δόξαν σφίσι γενομένῃ, λύσαντες τὴν παρεμβολὴν ὑπὸ νύκτα ᾤχοντο καὶ οὐκέτι τὸ λοιπὸν ἐξῄεσαν ἐκ τῆς πόλεως· ἀλλ' ἠνείχοντο σῖτόν τε ὃς ἐν ἀκμῇ τότε ἦν συγκομιζόμενον ὑπὸ τῶν πολεμίων καὶ ἀγέλας βοσκημάτων ἀπελαυνομένας ὁρῶντες, χρήματά τε διαρπαζόμενα καὶ αὐλὰς πυρὶ διδομένας καὶ αἰχμαλώτους πολλοὺς ἀγομένους. τοῦτο διαπραξάμενος ὁ Φάβιος, ἐπειδὴ παραδοῦναι τὰς ἀρχὰς ἑτέροις ἔδει, τὴν δύναμιν ἀναστήσας ἀπῆγε· τὸ δὲ αὐτὸ καὶ Κοίντιος ἐποίει.

LXII. Ἀφικόμενοι δ' εἰς τὴν Ῥώμην ἀπέδειξαν
1919 ὑπάτους Αὖλον Ποστόμιον Ἄλβον καὶ Σερούιον Φούριον. οἱ μὲν δὴ νεωστὶ παρειλήφεσαν τὴν ἀρχήν· παρὰ

δὲ τῶν συμμάχων Λατίνων ἄγγελοι Ῥωμαίοις κ σπουδὴν διαπεμφθέντες ἧκον. οὗτοι καταστάντες τὴν βουλὴν διεσάφουν Ἀντιατῶν τὰ πράγματα βέβαια εἶναι, κρύφα τε διαπρεσβευομένων πρὸς τοὺς Αἰκανῶν καὶ ἀναφανδὸν εἰσιόντων εἰς τὴν πό ἀγορᾶς προφάσει πολλῶν Οὐολούσκων, οὓς ἐπήγο οἱ πρότερον ἐκλιπόντες τὴν πόλιν Ἀντιατῶν ὅτ' ἐκ ρουχεῖτο διὰ πενίαν καὶ πρὸς Αἰκανοὺς ἀπαι μολήσαντες, ὥσπερ ἔφην. συνδιεφθάρθαι τε ἐπιχωρίοις ἅμα ἤγγελλον καὶ τῶν ἐποίκων συχνο καὶ εἰ μὴ προκαταληφθήσονται φυλακῇ ἀξιόχρ ἀναστήσεσθαί τινα ἔλεγον κἀκεῖθεν ἀπροσδόκη Ῥωμαίοις πόλεμον. τούτων οὐ πολλῷ ὕστερον ἕτε πεμφθέντες ὑπὸ Ἑρνίκων ἤγγελλον ἐξεληλυθέναι γάλην δύναμιν Αἰκανῶν καὶ ἐγκαθεζομένην ἐν τῇ σ τέρᾳ γῇ φέρειν τε πάντα καὶ ἄγειν, στρατεύειν δὲ τοῖς Αἰκανοῖς καὶ Οὐολούσκους τὴν πλείω τοῦ στ τοῦ μοῖραν παρεχομένους. πρὸς ταῦτα ἐψηφίσατ βουλὴ τοῖς μὲν Ἀντιατῶν ταράττουσι τὰ πράγμα ἧκον γὰρ ἀπολογησόμενοί· τινες ἐξ αὐτῶν καὶ κα φανεῖς ἐγένοντο οὐδὲν ὑγιὲς φρονοῦντες· φυλα ἑτέραν πέμψαι, ἣ ἔμελλε δι' ἀσφαλείας ἕξειν πόλιν· ἐπὶ δὲ Αἰκανοὺς ἄγειν τὴν στρατιὰν τὸν ἕ ρον τῶν ὑπάτων Σερούιον Φούριον· καὶ ἐγίν ταχεῖα ἀμφοῖν ἡ ἔξοδος. οἱ δὲ Αἰκανοὶ μαθόντες ληλυθυῖαν τὴν Ῥωμαίων στρατιάν, ἀναστάντες τῆς Ἑρνίκων ἐχώρουν αὐτοῖς ὁμόσε. ἐπεὶ δὲ εἰ ἀλλήλους, ἐκείνην μὲν τὴν ἡμέραν οὐ πολὺ διαστ τες κατεστρατοπέδευσαν· τῇ δ' ἑξῆς ἐπὶ τὸν χάρα τῶν Ῥωμαίων οἱ πολέμιοι ἧκον διάπειραν αὐτῶν γνώμης ληψόμενοι. ὡς δ' οὐκ ἐξῄεσαν εἰς μάχ ἀκροβολισμοῖς χρησάμενοι καὶ οὐδὲν ἀξιόλογον δ

σαντες σὺν μεγάλῳ αὐχήματι ἀπῆλθον. ὁ μέντοι Ῥωμαίων ὕπατος ἐκλιπὼν τὸν χάρακα τῇ ἐπιούσῃ· τὸ γὰρ χωρίον οὐ λίαν ἀσφαλὲς ἦν· μετεστρατοπεδεύσατο ἐν ἐπιτηδειοτέρῳ, ἔνθα τάφρον τε ὠρύξατο βαθυτέραν καὶ χάρακα ἐβάλετο ὑψηλότερον. τοῖς δὲ πολεμίοις ταῦτα ὁρῶσι πολὺ θράσος προσεγένετο· καὶ ἔτι μᾶλλον, ἐπειδὴ σύμμαχος αὐτοῖς ἀφίκετο στρατιὰ παρὰ τοῦ Οὐολούσκων τε καὶ Αἰκανῶν ἔθνους, οὐδὲν ἔτι διαμελλήσαντες ἐπῆγον τῷ Ῥωμαίων χάρακι.

LXIII. Ὁ δὲ ὕπατος ἐνθυμούμενος, ὅτι οὐκ ἀξιόμαχος ἔσται ἡ σὺν αὐτῷ δύναμις ἀγωνιζομένη πρὸς ἀμφότερα τὰ ἔθνη, πέμπει τινὰς ἐκ τῶν ἱππέων γράμματα εἰς τὴν Ῥώμην κομίζοντας, δι' ὧν ἠξίου ταχεῖαν αὐτοῖς ἐλθεῖν ἐπικουρίαν, ὡς κινδυνευούσης ὅλης διαφθαρῆναι τῆς σὺν αὐτῷ στρατιᾶς. ταῦτα ἐπιλεξάμενος ὁ συνύπατος αὐτοῦ Ποστόμιος· ἦσαν δὲ
1922 μέσαι νύκτες μάλιστα ὅτε οἱ ἱππεῖς ἀφίκοντο· διὰ κηρύκων πολλῶν τοὺς βουλευτὰς ἐκ τῶν οἰκιῶν συνεκάλει· καὶ γίνεται δόγμα βουλῆς πρὶν ἡμέραν λαμπρὰν γενέσθαι, Τῖτον μὲν Κοίντιον τὸν ὑπατεύσαντα τὸ τρίτον, ἔχοντα τοὺς ἀκμαιοτάτους τῶν νέων πεζούς τε καὶ ἱππεῖς, ἀρχῇ κοσμηθέντα ἀνθυπάτῳ χωρεῖν ἐπὶ τοὺς πολεμίους ἐξ ἐφόδου· Αὖλον δὲ Ποστόμιον τὸν ἕτερον τῶν ὑπάτων τὰς λοιπὰς δυνάμεις συναγαγόντα, ἃς ἔδει χρονιώτερον συνελθεῖν, ὡς ἂν αὐτῷ τάχους ἐγγένηται βοηθεῖν. ἡμέρα δὲ ἤδη διεπέφωσκε, καὶ ὁ Κοίντιος συνήγαγε τοὺς ἐθελοντὰς πεντακισχιλίους μάλιστα ἄνδρας· καὶ οὐ πολὺ ἐπισχών, ἐξῆγεν ἐκ τῆς πόλεως. τοῦτο ὑποπτεύσαντες
1923 ἔμελλον οἱ Αἰκανοὶ καὶ πρὶν ἐλθεῖν ἐπικουρίαν τοῖς Ῥωμαίοις προσβάλλειν τῷ χάρακι αὐτῶν, καὶ δια-

νοηθέντες ὡς βίᾳ καὶ πλήθει ἁλωσόμενον ἐξῆλθον ἀθρόοι διχῇ νείμαντες αὐτούς. γίνεταί τε μέγας ἀγὼν δι' ὅλης τῆς ἡμέρας, ἰταμῶς αὐτῶν ἐπιβαινόντων τοῖς προτειχίσμασι κατὰ πολλὰ μέρη, καὶ οὔτε παλτῶν οὔτε [βελῶν ἀπὸ] τόξων οὔτε χερμάδων ἀπὸ σφενδόνης ἀφιεμένων ἀδιαλείπτοις βολαῖς ἀνειργομένων. ἔνθα δὴ παρακελευσάμενοι ἀλλήλοις ὅ τε ὕπατος καὶ ὁ πρεσβευτὴς ὑφ' ἕνα καιρὸν ἀναπετάσαντες τὰς πύλας, ἅμα τοῖς ἀκμαιοτάτοις ἐκτρέχουσιν ἐπὶ τοὺς πολεμίους, κατ' ἄμφω τε τὰ μέρη τῆς προσβολῆς συρράξαντες αὐτοῖς ἀποτρέπουσι τοὺς ἐπιβαίνοντας τῷ χάρακι. τροπῆς δὲ γενομένης, ὁ μὲν ὕπατος ἐπ' ὀλίγον διώξας τοὺς καθ' ἑαυτὸν [τεταγμένους] ἀνέστρεψεν· ὁ δὲ ἀδελφὸς αὐτοῦ καὶ πρεσβευτὴς Πόπλιος Φούριος, ὑπὸ λήματός τε καὶ προθυμίας 1924 φερόμενος, ἄχρι τῆς παρεμβολῆς τῶν πολεμίων ἤλασε διώκων τε καὶ κτείνων. ἦσαν δὲ δύο σπεῖραι περὶ αὐτὸν οὐ πλείους ἀνδρῶν ἔχουσαι χιλίων. τοῦτο μαθόντες οἱ πολέμιοι περὶ πεντακισχιλίους μάλιστα γενόμενοι, χωροῦσιν ἐπ' αὐτὸν ἐκ τοῦ χάρακος· καὶ οὗτοι μὲν ἐξ ἐναντίας προσήεσαν, ἱππεῖς δ' αὐτῶν κύκλῳ περιελάσαντες κατὰ νώτου τοῖς Ῥωμαίοις ἐφίστανται. τούτῳ δὴ τῷ τρόπῳ κυκλωθέντες ὑπ' αὐτῶν οἱ σὺν τῷ Ποπλίῳ καὶ δίχα τῶν σφετέρων ἀποληφθέντες, ἐξὸν αὐτοῖς σώζεσθαι παραδοῦσι τὰ ὅπλα· προὐκαλοῦντο γὰρ αὐτοὺς εἰς τοῦτο οἱ πολέμιοι καὶ περὶ πολλοῦ ἐποιοῦντο χιλίους Ῥωμαίων τοὺς ἀρίστους αἰχμαλώτους λαβεῖν, ὡς διὰ τούτων διαλύσεις εὑρησόμενοι καλὰς τοῦ πολέμου· καταφρονήσαντες αὐτῶν καὶ παρακελευσάμεοι ἀλλήλοις μηδὲν ἀνάξιον πρᾶξαι τῆς πόλεως, μαχόμενοι καὶ πολλοὺς 1925 ἀποκτείναντες τῶν πολεμίων ἅπαντες ἀποθνήσκουσιν.

LXIIII. *Διαφθαρέντων δὲ τούτων, ἐπαρθέντες οἱ Αἰκανοὶ τῷ προτερήματι παρῆσαν ἐπὶ τὸν χάρακα τῶν Ῥωμαίων, τήν τε τοῦ Ποπλίου κεφαλὴν ἐπὶ δορατίου πεπηγυῖαν ἀνατείνοντες καὶ τῶν ἄλλων ἀνδρῶν τῶν ἐπιφανῶν, ὡς δὴ τούτῳ καταπληξόμενοι τοὺς ἔνδον καὶ ἀναγκάσοντες παραδοῦναι σφίσι τὰ ὅπλα. τοῖς δὲ ἄρα πρὸς μὲν τὴν συμφορὰν τῶν ἀπολωλότων ἔλεός τις παρέστη καὶ ἀνεκλάοντο αὐτῶν τὴν τύχην· πρὸς δὲ τὸν ἀγῶνα θράσος διπλάσιον ἐνέφυ, καὶ τοῦ νικᾶν ἢ τὸν αὐτὸν ἐκείνοις τρόπον ἀποθανεῖν, πρὶν εἰς πολεμίων χεῖρας ἐλθεῖν, καλὸς ἔρως. ἐκείνην μὲν οὖν τὴν νύκτα παρεστρατοπεδευκότων τῷ χάρακι τῶν πολεμίων, ἄγρυπνοί τε οἱ Ῥωμαῖοι καὶ ἐπισκευάζοντες τὰ πεπονηκότα τοῦ χάρακος διετέλεσαν,
1926 τά τε ἄλλα οἷς ἀπερύκειν ἔμελλον αὐτοὺς εἰ πειραθεῖεν πάλιν τειχομαχεῖν πολλὰ καὶ παντοῖα εὐτρεπιζόμενοι. τῇ δ' ἑξῆς αἵ τε προσβολαὶ πάλιν ἐγίνοντο, καὶ ὁ χάραξ διεσπᾶτο κατὰ πολλὰ μέρη· καὶ πολλάκις μὲν ὑπὸ τῶν ἐξιόντων κατὰ συστροφὰς ἐκ τοῦ χάρακος ἐξεκρούσθησαν οἱ Αἰκανοί, πολλάκις δ' ἀνεκόπησαν ὑπ' ἐκείνων οἱ θρασύτερον ἐπεξιόντες. καὶ τοῦτο δι' ὅλης τῆς ἡμέρας ἐγίνετο· ἔνθα ὅ τε ὕπατος ὁ τῶν Ῥωμαίων σαυνίῳ διὰ τοῦ θυρεοῦ διαπερονηθεὶς τιτρώσκεται τὸν μηρόν, καὶ ἄλλοι συχνοὶ τῶν ἐπιφανῶν ὅσοι περὶ αὐτὸν ἐμάχοντο· ἤδη δὲ τοῖς Ῥωμαίοις ἀπειρηκόσιν ἀπροσδόκητος ἐπιφαίνεται περὶ δείλην ὀψίαν προσιὼν Κοίντιος, ἄγων τὴν ἐθελούσιον ἐπικουρίαν τῶν ἀκμαιοτάτων, οὓς ἰδόντες οἱ πολέμιοι προσιόντας ἀνέστρεφον ἀφέντες τὴν πολιορκίαν ἀτελῆ· καὶ οἱ Ῥωμαῖοι ἐπεξελθόντες αὐτοῖς ἀπιοῦσι τοὺς ὑστερίζοντας ἐφόνευον. οὐ μέντοι ἐπὶ πολύν γε χρόνον ἐδίωξαν ἀσθενεῖς ὄντες οἱ πολλοὶ*

ὑπὸ τραυμάτων, ἀλλὰ διὰ τάχους ἀνέστρεψαν. καὶ
μετὰ ταῦτα διὰ φυλακῆς εἶχον ἑκάτεροι σφᾶς αὐτοὺς 1927
μένοντες ἐν ταῖς παρεμβολαῖς ἄχρι πολλοῦ.

LXV. Ἔπειτα Αἰκανῶν τε καὶ Οὐολούσκων ἑτέρα
δύναμις καλὸν ὑπολαμβάνουσα καιρὸν ἔχειν προνο-
μεῦσαι τὴν Ῥωμαίων γῆν, ἐξεστρατευμένης αὐτῶν τῆς
κρατίστης δυνάμεως, ἐξῆλθε νυκτός· καὶ ἐμβαλοῦσα
εἰς τὴν προσωτάτω χώραν, ἔνθα τοῖς γεωργοῖς δέος
οὐδὲν εἶναι ἐδόκει, πολλῶν γίνονται χρημάτων καὶ
σωμάτων ἐγκρατεῖς. οὐ μὴν καλάς γε οὐδ' εὐτυχεῖς
τὰς ἐσχάτας ἔσχον ἐκεῖθεν ἀπαλλαγάς. ὁ γὰρ ἕτερος
τῶν ὑπάτων Ποστόμιος ἄγων τὴν συναχθεῖσαν ἐπι-
κουρίαν τοῖς ἐν τῷ χάρακι πολιορκουμένοις, ὡς
ἔμαθε τὰ γινόμενα ὑπὸ τῶν πολεμίων, ἐπιφαίνεται
αὐτοῖς ἐκ τοῦ ἀνελπίστου. οἱ δ' οὔτε κατεπλάγησαν
οὔτε ἔδεισαν αὐτοῦ τὴν ἔφοδον, ἀλλ' ἀποθέμενοι
σχολῇ τὰς ἀποσκευὰς καὶ τὰ λάφυρα εἰς ἓν χωρίον
ἐχυρὸν καὶ φυλακὴν τὴν ἀρκοῦσαν ἐπὶ τούτοις κατα- 1928
λιπόντες, οἱ λοιποὶ συντεταγμένοι χωροῦσι τοῖς Ῥω-
μαίοις ὁμόσε· καὶ συμπεσόντες ἄξια λόγου ἔργα ἀπε-
δείκνυντο ὀλίγοι μὲν πρὸς πολλοὺς ἀγωνιζόμενοι·
συνέρρεον γὰρ ἐκ τῶν ἀγρῶν ἐπ' αὐτοὺς συχνοί, διε-
σκευασμένοι ψιλῇ ὁπλίσει πρὸς ἄνδρας ὅλα τὰ σώ-
ματα ἔχοντας ἐν φυλακῇ· ἐποίησάν τε πολλοὺς τῶν
Ῥωμαίων νεκροὺς καὶ μικροῦ ἐδέησαν ἐν ἀλλοτρίᾳ γῇ
καταληφθέντες τρόπαια τῶν ἐλθόντων ἐπὶ σφᾶς αὐ-
τοὺς ἀναστῆσαι. ἀλλ' ὅ γε ὕπατος καὶ οἱ σὺν αὐτῷ
Ῥωμαίων ἱππεῖς ἐπίλεκτοι, ἀχαλινώτοις ἐπελάσαντες 1929
τοῖς ἵπποις κατὰ τὸ καρτερώτατόν τε καὶ ἄριστα μα-
χόμενον αὐτῶν μέρος, διασπῶσι τὴν τάξιν καὶ κατα-
βάλλουσι συχνούς. διαφθαρέντων δὲ τῶν προμάχων,
καὶ ἡ λοιπὴ δύναμις ἀποτραπεῖσα ἐνέκλινεν εἰς φυγήν,

οἵ τε φυλάττοντες τὰς ἀποσκευὰς μεθέμενοι αὐτῶν ἀπιόντες ᾤχοντο ἀνὰ τὰ πλησίον ὄρη. κατ' αὐτὸν μὲν οὖν τὸν ἀγῶνα ὀλίγοι τινὲς αὐτῶν διεφθάρησαν, ἐν δὲ τῇ φυγῇ πάνυ πολλοί, χώρας τε ἄπειροι ὄντες καὶ ὑπὸ τῆς Ῥωμαίων ἵππου διωκόμενοι.

LXVI. Ἐν ᾧ δὲ ταῦτ' ἐγίνετο χρόνῳ, πεπυσμένος ἅτερος τῶν ὑπάτων Σερούιος ἐπὶ βοήθειαν αὐτῷ προσιόντα τ`ν συνύπατον δείσας μὴ ὑπαντήσωσιν αὐτῷ οἱ πολέμιοι καὶ διακλείσωσι τῆς πρὸς αὐτὸν ὁδοῦ,
1930 περισπᾶν αὐτοὺς διενοεῖτο προσβολὰς ποιούμενος τῷ χάρακι. ἀλλὰ γὰρ φθάσαντες αὐτὸν οἱ πολέμιοι, ἐπειδὴ ἔγνωσαν τὴν συμφορὰν τῶν σφετέρων, ἣν ἀπήγγειλαν οἱ περισωθέντες ἐκ τῆς προνομῆς, λύσαντες τὴν παρεμβολὴν ἐν τῇ πρώτῃ νυκτὶ μετὰ τὴν μάχην εἰς τὴν πόλιν ἀπῆραν, οὐχ ἅπαντα πεπραχότες ὅσα ἐβούλοντο. χωρὶς γὰρ τῶν ἀποθανόντων ἔν τε ταῖς μάχαις καὶ κατὰ τὰς προνομάς, τοὺς ὑστερήσαντας ἐν τῇ τότε φυγῇ πολλῷ πλείους τῶν προτέρων ἀπέβαλον. οἱ γὰρ ὑπὸ καμάτου τε καὶ τραυμάτων βαρυνόμενοι σχολῇ προβαίνοντες, ἐγκαταλιπόντων αὐτοὺς τῶν μελῶν ἔπιπτον, μάλιστα δὲ περὶ τὰ νάματα καὶ ποταμοὺς ὑπὸ δίψης φλεγόμενοι· οὓς οἱ Ῥωμαίων ἱππεῖς καταλαμβάνοντες ἐφόνευον. οὐ μὲν δὴ οὐδὲ Ῥωμαῖοι πάντα ἐκ τοῦ τότε ἀγῶνος εὐτυχηκότες ἀνέστρεψαν, ἄνδρας μὲν γὰρ ἀγαθοὺς καὶ πολλοὺς ἐν ταῖς μάχαις ἀπολωλέκεσαν, καὶ πρεσβευτὴν ἁπάντων
1931 λαμπρότατον γενόμενον ἐν τῷ ἀγῶνι· νίκην δ' οὐδεμιᾶς ἥττονα τῇ πόλει φέροντες ἀνέστρεψαν. ταῦτ' ἐπ' ἐκείνων τῆς ἀρχῆς ἐπράχθη.

LXVII. Τῷ δὲ κατόπιν ἔτει, Λευκίου Αἰβουτίου καὶ Ποπλίου Σερουιλίου Πρίσκου παρειληφότων τὴν ἀρχήν, οὐδὲν οὔτε κατὰ πολέμους ἔργον ἀπεδείξαντο

Ῥωμαῖοι λόγου ἄξιον οὔτε πολιτικόν, ὑπὸ νόσου κακωθέντες ὡς οὔπω πρότερον λοιμικῆς· ἣ τὸ μὲν πρῶτον ἵππων τε φορβάδων καὶ βοῶν ἀγέλαις προσῆλθεν, ἀπὸ δὲ τούτων εἴς τε αἰπόλια καὶ ποίμνας κατέσκηψε, καὶ διέφθειρεν ὀλίγου δεῖν πάντα τὰ τετράποδα· ἔπειτα τῶν νομέων τε καὶ γεωργῶν ἥψατο, καὶ διελθοῦσα διὰ πάσης τῆς χώρας εἰς τὴν πόλιν ἐνέπεσε. θεραπόντων μὲν οὖν καὶ θητῶν καὶ τοῦ πένητος ὄχλου πλῆθος ὅσον διέφθειρεν οὐ ῥᾴδιον ἦν εὑρεῖν. κατ᾽ ἀρχὰς μὲν γὰρ ἐπὶ ἁμάξαις σωρηδὸν οἱ θνήσκοντες ἀπεκομίζοντο· τελευτῶντες δὲ ὧν ἐλάχιστος ἦν ὁ λόγος εἰς τὸ τοῦ παραρρέοντος ποταμοῦ ῥεῖθρον ὠθοῦντο. τῶν δ᾽ ἐκ τοῦ βουλευτικοῦ συνεδρίου τὸ τέταρτον μέρος συνελογίσθη διεφθαρμένον, 1932
ἐν οἷς ἦσαν οἵ τε ὕπατοι ἀμφότεροι καὶ τῶν δημάρχων οἱ πλείους. ἤρξατο μὲν οὖν ἡ νόσος περὶ τὰς καλάνδας τοῦ Σεπτεμβρίου μηνός· διέμεινε δὲ τὸν ἐνιαυτὸν ἐκεῖνον ὅλον, ἅπασαν ὁμοίως καταλαμβάνουσα καὶ διεργαζομένη φύσιν τε καὶ ἡλικίαν. γενομένης δὲ τοῖς πλησιοχώροις γνώσεως τῶν κατεχόντων τὴν Ῥώμην κακῶν, καλὸν ἡγησάμενοι καιρὸν Αἰκανοί τε καὶ Οὐολοῦσκοι καταλῦσαι τὴν ἀρχὴν αὐτῆς, συνθήκας τε καὶ ὅρκους ἐποιήσαντο πρὸς ἀλλήλους περὶ συμμαχίας· καὶ παρασκευασάμενοι τὰ εἰς πολιορκίαν ἐπιτήδεια ὡς εἶχον ἀμφότεροι τάχους ἐξῆγον τὰς δυνάμεις. ἵνα δὲ τὴν ἀπὸ τῶν συμμάχων ἀφέλοιντο τῆς Ῥώμης ἐπικουρίαν εἰς τὴν Λατίνων τε καὶ Ἑρνίκων γῆν πρῶτον ἐνέβαλον. ἀφικομένης δὲ πρεσβείας ἐπὶ τὴν βουλὴν ἀφ᾽ ἑκατέρου τῶν πολεμουμένων ἐθνῶν ἐπὶ συμμαχίας παράκλησιν, ὁ μὲν ἕτερος τῶν ὑπάτων Λεύκιος Αἰβούτιος ἐκείνην ἔτυχε τὴν ἡμέραν τεθνηκώς, Πόπλιος δὲ Σερουίλιος ἐγγὺς

1933 ὧν τοῦ θανάτου· ὃς ἔτι ὀλίγον ἐμπνέων συνεκάλει
τὴν βουλήν. τῶν δ' οἱ πλείους ἡμιθνῆτες ἐπὶ κλινι-
δίων κομισθέντες καὶ συνεδρεύσαντες, ἀπεκρίναντο
τοῖς παροῦσιν ἀγγέλλειν τοῖς σφετέροις, ὅτι διὰ τῆς
ἑαυτῶν ἀρετῆς τοὺς πολεμίους ἀμύνεσθαι ἡ βουλὴ
αὐτοῖς ἐπιτρέπει, μέχρις ἂν ὁ ὕπατος ῥαίσῃ, καὶ ἡ
συναγωνιουμένη δύναμις αὐτοῖς συναχθῇ. ταῦτα
Ῥωμαίων ἀποκριναμένων Λατῖνοι μὲν ὅσα ἠδυνή-
θησαν ἐκ τῶν ἀγρῶν εἰς τὰς πόλεις ἀνασκευασάμε-
νοι φυλακὴν ἐποιοῦντο τῶν τειχῶν, τὰ δὲ ἄλλα πε-
ριεώρων ἀπολλύμενα. Ἕρνικες δὲ δυσανασχετοῦντες
ἐπὶ τῇ λύμῃ καὶ διαρπαγῇ τῶν ἀγρῶν, ἀναλαβόντες
τὰ ὅπλα ἐξῆλθον. ἀγωνισάμενοι δὲ λαμπρῶς καὶ
πολλοὺς μὲν ἀποκτείναντες τῶν πολεμίων, πολλῷ δ'
ἔτι πλείους ἀποβαλόντες τῶν σφετέρων, ἐκβιασθέντες
εἰς τὰ τείχη κατέφυγον, καὶ οὐκέτι μάχης ἐπειρῶντο.

LXVIII. *Αἰκανοὶ δὲ καὶ Οὐολοῦσκοι προνομεύ-
σαντες αὐτῶν τὴν χώραν, ἀδεῶς ἐπὶ τοὺς Τυσκλά-
1934 νων ἀγροὺς ἀφίκοντο. διαρπάσαντες δὲ καὶ τούτους
οὐδενὸς ἀμυνομένου παρῆσαν εἰς τοὺς Γαβίνων
ὅρους. ἐλάσαντες δὲ καὶ διὰ ταύτης ἀδεῶς τῆς γῆς
ἐπὶ τὴν Ῥώμην ἀφικνοῦντο. ἐθορύβησαν μὲν οὖν
ἱκανῶς τὴν πόλιν, οὐ μὴν κρατῆσαί γε αὐτῆς ἠδυνή-
θησαν· ἀλλὰ καίπερ ἐξασθενοῦντες οἱ Ῥωμαῖοι τὰ
σώματα καὶ τοὺς ὑπάτους ἀπολωλεκότες ἀμφοτέρους·
καὶ γὰρ ὁ Σερουίλιος ἐτεθνήκει νεωστί· καθοπλισά-
μενοι παρὰ δύναμιν τοῖς τείχεσιν ἐπέστησαν, τοῦ
περιβόλου τῆς πόλεως ὄντος ἐν τῷ τότε χρόνῳ ὅσος
Ἀθηναίων τοῦ ἄστεος ὁ κύκλος· καὶ τὰ μὲν ἐπὶ λό-
φοις κείμενα καὶ πέτραις ἀποτόμοις, ὑπ' αὐτῆς ἐστιν
ὠχυρωμένα τῆς φύσεως καὶ ὀλίγης δεόμενα φυλακῆς·
τὰ δ' ὑπὸ τοῦ Τεβέρεως τετειχισμένα ποταμοῦ, οὗ τὸ*

μὲν εὗρός ἐστιν τεττάρων πλέθρων μάλιστα, βάθος δὲ οἷόν τε ναυσὶ πλεῖσθαι μεγάλαις, τὸ δὲ ῥεῦμα ὥσπερ τι καὶ ἄλλο ὀξὺ καὶ δίνας ἐργαζόμενον μεγάλας· ὃν οὐκ ἔνεστι πεζοῖς διελθεῖν εἰ μὴ κατὰ γέφυραν, ἢ ἦν ἐν τῷ τότε χρόνῳ μία ξυλόφρακτος, ἣν ἔλυον ἐν τοῖς πολέμοις. ἓν δὲ χωρίον ὃ τῆς πόλεως ἐπιμαχώτατόν ἐστιν, ἀπὸ τῶν Αἰσκυλίνων καλουμένων πυλῶν μέχρι τῶν Κολλίνων, χειροποιήτως ἐστὶν ὀχυρόν. τάφρος τε γὰρ ὀρώρυκται πρὸ αὐτοῦ πλάτος ἡ βραχυτάτη μείζων ἑκατὸν ποδῶν, καὶ βάθος ἐστὶν αὐτῆς τριακοντάπουν· τεῖχος δὲ ὑπερανέστηκε τῆς τάφρου χώματι συνεχόμενον ἔνδοθεν ὑψηλῷ καὶ πλατεῖ, οἷον μήτε κριοῖς κατασεισθῆναι μήτε ὑπορυττομένων τῶν θεμελίων ἀνατραπῆναι. τοῦτο τὸ χωρίον ἑπτὰ μέν ἐστι μάλιστα ἐπὶ μῆκος σταδίων, πεντήκοντα δὲ ποδῶν ἐπὶ πλάτος· ἐν ᾧ τότε οἱ Ῥωμαῖοι τεταγμένοι κατὰ πλῆθος ἀνεῖρξαν τῶν πολεμίων τὴν ἔφοδον, οὔτε χελώνας χωστρίδας εἰδότων κατασκευάζειν τῶν τότε ἀνθρώπων, οὔτε τὰς καλουμένας ἑλεπόλεις μηχανάς. οἱ μὲν δὴ πολέμιοι ἀπογνόντες τῆς πόλεως τὴν ἅλωσιν ἀπῄεσαν ἀπὸ τοῦ τείχους, καὶ δῃώσαντες τὴν χώραν ὅσην διεξῆλθον ἀπῆγον ἐπ' οἴκου τὰς δυνάμεις.

LXVIIII. *Ῥωμαῖοι δὲ τοὺς καλουμένους ἀντιβασιλεῖς ἑλόμενοι τῶν ἀρχαιρεσίων ἕνεκα, ὃ ποιεῖν εἰώθασιν ὅταν ἀναρχία κατάσχῃ τὴν πόλιν, ὑπάτους ἀπέδειξαν Λεύκιον Λοκρήτιον, καὶ Τίτον Οὐετούριον Γέμινον. ἐπὶ τῆς τούτων ἀρχῆς ἥ τε νόσος ἐπαύσατο καὶ τὰ πολιτικὰ ἐγκλήματα ἀναβολῆς ἔτυχε, τά τε ἴδια καὶ τὰ κοινά, πειραθέντος μὲν αὖθις τὸ περὶ τῆς κληρουχίας πολίτευμα κινεῖν ἑνὸς τῶν δημάρχων Σέξτου Τιτίου, κωλύσαντος δὲ τοῦ δήμου καὶ εἰς*

ἐπιτηδειοτέρους ὑπερθεμένου καιρούς. προθυμία τε
1937 πολλὴ πᾶσιν ἐνέπεσε τιμωρήσασθαι τοὺς ἐπιστρα-
τεύσαντας τῇ πόλει κατὰ τὸν τῆς νόσου καιρόν· καὶ
αὐτίκα τῆς βουλῆς ψηφισαμένης καὶ τοῦ δήμου τὸν
πόλεμον ἐπικυρώσαντος κατεγράφοντο τὰς δυνάμεις,
οὐδενὸς τῶν ἐχόντων στρατεύσιμον ἡλικίαν οὐδ' εἴ
τινα ὁ νόμος ἀπέλυεν ἀξιοῦντος ἐκείνης ἀπολειφθῆ-
ναι τῆς στρατείας· νεμηθείσης δὲ τριχῇ τῆς δυνάμεως,
μία μὲν ὑπελείφθη φυλάττειν τὴν πόλιν, ἧς ἡγεῖτο
Κόιντος Φούριος ἀνὴρ ὑπατικός· αἱ δὲ δύο σὺν τοῖς
ὑπάτοις ἐξῆλθον ἐπί τε Αἰκανοὺς καὶ Οὐολούσκους.
τὸ δὲ αὐτὸ τοῦτο καὶ ὑπὸ τῶν πολεμίων ἔτυχεν ἤδη
γεγονός. ἡ μὲν γὰρ κρατίστη δύναμις ἀφ' ἑκατέρου
τῶν ἐθνῶν συνελθοῦσα ὑπαίθριος ἦν ὑπὸ δυσὶν ἡγε-
μόσι, καὶ ἔμελλεν ἀπὸ τῆς Ἑρνίκων γῆς ἐν ᾗ τότε ἦν
1938 ἀρξαμένη πᾶσαν ἐπελεύσεσθαι τὴν Ῥωμαίων ὑπήκοον·
ἡ δὲ ἧττον ἐκείνης χρησίμη τὰ οἰκεῖα πολίσματα ὑπε-
λείφθη φυλάττειν, μή τις ἔφοδος αἰφνίδιος πολεμίων
ἐπ' αὐτὰ γένηται. πρὸς ταῦτα βουλευομένοις τοῖς
Ῥωμαίων ὑπάτοις ἐδόκει κράτιστα εἶναι ταῖς πόλεσιν
αὐτῶν πρῶτον ἐπιχειρεῖν, κατὰ τοιόνδε τινὰ λογισμόν,
ὅτι διαλυθήσεται τὸ κοινὸν αὐτῶν στράτευμα, εἰ πύ-
θοιντο ἕκαστοι τὰ οἰκεῖα ἐν τοῖς ἐσχάτοις ὄντα κιν-
δύνοις, καὶ πολὺ κρεῖττον ἡγήσεται τὰ σφέτερα σώ-
ζειν, ἢ τὰ τῶν πολεμίων φθείρειν. Λοκρήτιος μὲν
οὖν εἰς τὴν Αἰκανῶν ἐνέβαλεν, Οὐετούριος δὲ εἰς τὴν
Οὐολούσκων. Αἰκανοὶ μὲν οὖν, τὰ ἔξω πάντα ἀπολ-
λύμενα περιορῶντες, τὴν πόλιν καὶ τὰ φρούρια εἶχον
ἐν φυλακῇ.

LXX. Οὐολοῦσκοι δὲ ὑπό τε θράσους καὶ αὐθα-
δείας προαχθέντες, τοῦ τε Ῥωμαϊκοῦ στρατεύματος ὡς
οὐκ ἀξιομάχου ὄντος πρὸς τὸ ἑαυτῶν πλῆθος συμφέ-

ρεσθαι καταφρονήσαντες, ἐξῆλθον ἀγωνιούμενοι πε
τῆς γῆς, καὶ πλησίον τοῦ Οὐετουρίου κατεστρατ
πέδευσαν. οἷα δὲ φιλεῖ πάσχειν στρατιὰ νεοσύλλ
κτος ἔκ τε πολιτικοῦ καὶ γεωργικοῦ πρὸς καιρὸν συνε
θόντος ὄχλου συναχθεῖσα, ἐν ᾗ πολὺ καὶ τὸ ἄ
οπλον ἦν καὶ κινδύνων ἄπειρον, οὐδ᾽ εἰς χεῖρας ἐ
θεῖν τοῖς πολεμίοις ἐθάρσησεν· ἀλλ᾽ ἅμα τῇ πρώ
τῶν Ῥωμαίων ἐφόδῳ διαταραχθέντες οἱ πολλοὶ κ
οὔτε ἀλαλαγμὸν οὔτε ὅπλων κτύπον ἀνασχόμεν
προτροπάδην ἔφευγον εἰς τὰ τείχη· ὥστε πολλο
μὲν ἐν ταῖς στενοχωρίαις τῶν ὁδῶν καταληφθέντ
ἀποθανεῖν, πολλῷ δὲ πλείους παρὰ ταῖς πύλα
ὠθουμένους τῶν ἱππέων ἐπιδιωκόντων. Οὐολοῦσκ
μὲν οὖν ταύτῃ χρησάμενοι τῇ συμφορᾷ, σφᾶς αὐτο
ᾐτιῶντο τῆς ἀφροσύνης, καὶ οὐδὲν ἔτι παρακινδ
νεύειν ἐπειρῶντο. οἱ δὲ τὰς ἐν ὑπαίθρῳ στρατι
Οὐολούσκων τε καὶ Αἰκανῶν ἔχοντες ἡγεμόν
πυνθανόμενοι τὰ οἰκεῖα πολεμούμενα, γενναῖόν
καὶ οὗτοι δρᾶν ἐβουλεύσαντο, ἀναστάντες ἐκ τ
Ἑρνίκων τε καὶ Λατίνων γῆς ἐπὶ τὴν Ῥώμην ἄγ
ὡς εἶχον ὀργῆς τε καὶ τάχους τὸν στρατόν, κατὰ τοιά
δε τινὰ καὶ αὐτοὶ δόξαν, ὅτι δυεῖν ἔργων καλῶν θάτ
ρον αὐτοῖς κατορθῶσαι ὑπάρξει, ἢ τὴν Ῥώμην ἀφ
λακτον οὖσαν ἑλεῖν, ἢ τοὺς πολεμίους ἐκ τῆς ἑαυτ
χώρας ἐκβαλεῖν, ὡς δὴ τῶν ὑπάτων ἀναγκασθησ
μένων πολεμουμένῃ τῇ πατρίδι βοηθεῖν. ταῦτα δε
νοηθέντες ἦγον τὴν στρατιὰν ἐπιταχύνοντες, ἵν᾽
ἀπροσδοκήτου τῇ πόλει συμμίξαντες εὐθὺς ἔργ
ἔχωνται.

LXXI. Ἀφικόμενοί τε μέχρι Τύσκλου πόλεω
μαθόντες τὸν περίβολον τῆς Ῥώμης ὅλον πληθύον
ὅπλων, καὶ πρὸ τῶν πυλῶν τέτταρας ἐξεστρατευμέν

σπείρας, ἀνδρῶν ἑξακοσίων ἑκάστην, τῆς μὲν ἐπὶ τὴν Ῥώμην ὁδοῦ ἀπετράποντο, τὴν δὲ ὑπὸ τῇ πόλει χώραν,
1941 ἣν ἐν τῇ προτέρᾳ παρέλιπον εἰσβολῇ, ἐγκαθεζόμενοι ἐδῄουν. ἐπιφανέντος δ' αὐτοῖς θατέρου τῶν ὑπάτων Λευκίου Λοκρητίου καὶ θεμένου τὴν παρεμβολὴν οὐ πρόσω, καλὸν ὑπολαβόντες εἶναι καιρόν, πρὶν ἐλθεῖν τῷ Λοκρητίῳ τὴν ἑτέραν Ῥωμαίων δύναμιν σύμμαχον ἧς Οὐετούριος ἡγεῖτο, συνάψαι μάχην, θέμενοι τὰς ἀποσκευὰς ἐπὶ λόφου τινὸς καὶ δύο σπείρας ἐπ' αὐταῖς καταλιπόντες, οἱ λοιποὶ προῆλθον εἰς τὸ πεδίον· καὶ συμβαλόντες τοῖς Ῥωμαίοις ἄνδρες ἀγαθοὶ κατὰ τὸν ἀγῶνα ἐγίνοντο μέχρι πολλοῦ. μαθόντες δ' ἐκ τῶν κατὰ νώτου φρουρῶν τινες καταβαίνουσαν ὑπὲρ ὄχθου στρατιάν ὑπέλαβον ἥκειν τὸν ἕτερον τῶν ὑπάτων ἄγοντα τὴν σὺν αὐτῷ δύναμιν, καὶ δείσαντες μὴ κυκλωθεῖεν ὑπ' ἀμφοῖν οὐκέτι διέμειναν, ἀλλ' εἰς φυγὴν τρέπονται. ἐν τούτῳ τῷ ἀγῶνι οἵ τε ἡγεμόνες αὐτῶν ἀμφότεροι γενναίων ἀνδρῶν ἔργα ἀποδειξά-
1942 μενοι πίπτουσι, καὶ ἄλλοι πολλοὶ μαχόμενοι περὶ αὐτοὺς ἀγαθοί· οἱ δὲ φυγόντες ἐκ τῆς μάχης, εἰς τὰς ἑαυτῶν ἕκαστοι πατρίδας σκεδασθέντες ἀνεχώρησαν. ἐκ δὲ τούτου πολλὴν ἄδειαν λαβὼν ὁ Λοκρήτιος ἔφθειρε τὴν Αἰκανῶν γῆν, καὶ Οὐετούριος τὴν Οὐολούσκων, ἕως ὁ τῶν ἀρχαιρεσίων ἐπέστη καιρός. τότε δ' ἀναστήσαντες τὰς δυνάμεις ἀπῆγον ἐπ' οἴκου καὶ κατήγαγον ἀμφότεροι τοὺς ἐπινικίους θριάμβους· Λοκρήτιος μέν, ἐπὶ τοῦ τεθρίππου παρεμβεβηκώς, Οὐετούριος δὲ πεζὸς εἰσελαύνων. δύο γὰρ οὗτοι θρίαμβοι δίδονται τοῖς ἡγεμόσιν ὑπὸ τῆς βουλῆς, ὥσπερ ἔφην, τὰ μὲν ἄλλα τίμια ἔχοντες ἴσα, τῷ δὲ τὸν μὲν ἱππικὸν εἶναι, τὸν δὲ πεζικόν, διαφέροντες.